भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२८/७३ पंजि० सं० P/RTK-४१ सृष्टिसंवत् १,९६, ०८,५३,०९३

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २० अंक ७ ७ जनवरी, १९९३ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

८ जनवरी को स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के जन्मदिवस

वजीर और फकीर—कुछ प्रेरक प्रसंग

ले०—प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेदसदन अबोहर

स्वामी स्वतन्त्रानन्द

चौ० छोटूराम

पंजाब तब सीमा प्रांत तक फैला हुआ था। पूर्व में इसकी सीमा देहली से लगती थी। शिमला, कांगड़ा, कालका और डलहौजी के पर्वतीय क्षेत्र भी पजाब में हुआ करते थे। केवल सात मन्त्री सारा शासन चलाते थे। चौधरी छोटूराम का सारे प्रांत में बड़ा रोब था। वह मुख्यमन्त्री तो नहीं थे, परन्तु यूनियनिस्ट पार्टी की नीतियों के सूत्रधार वही थे। चौधरी छोटूराम दीनानगर आये। वहां एक विराट् राजनैतिक सम्मेलन में उनका भाषण था।

सम्मेलन से पूर्व व सम्मेलन की समाप्ति पर वह दयानन्दमठ में पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के दर्शनार्थ आये। स्वामी जी कुटिया में बैठे हुए थे। चौधरी जी ने बूट पहन रखे थे। बूटों के तस्मे खोलने को झुके तो स्वामी जी महाराज ने कहा—"चौधरी जी फकीर की कुटिया है।"

तब उनके साथ आये एक नौकर ने बूटों के तस्मे खोले। चौधरी जी चरणस्पर्श करके देर तक स्वामी जी महाराज के साथ कुटिया में वार्तालाप करते रहे। सम्मेलन की समाप्ति पर चौधरी जी फिर मठ में आये। श्री पं० निरंजनदेव जी इतिहास केसरी उन दिनों मठ में ही पढ़ते थे। चौधरी जी के साथ सम्मेलन में भाग लेने वाले, कई बड़े-बड़े किसान आये। चौधरी जी स्वामी जी महाराज से कुछ विचार-विमर्श करके चले गये तो स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने उन लोगों से कहा—"तो आप निकट से वजीर को देखने आये। वहां सम्मेलन में तो दूरी से देख सके।"

उन लोगों में से एक ने कहा—"स्वामी जी हम वजीर को देखने नहीं आये, हम तो उसके दर्शन को आये हैं जिस महान् हस्ती को वजीर मिलने आया था।"

पाठकवृन्द ! जिस महामुनि के तप और बलिदान से आर्यसमाज की इतनी शान थी, उसका रिक्त स्थान कौन पूरा करेगा ? आज हम वजीरों के बिना कोई जलसा सम्मेलन नहीं कर पाते। आर्यसमाज को आज ऐसे फकीर चाहियें जिनको मिलने वजीर भाग-भागकर आयें।

रोहतक में चौधरी छोटूराम जी का जन्मोत्सव स्वामी जी की अध्यक्षता में रखा गया। महाराजा भरतपुर एक मुख्यवक्ता थे। वह थोड़ा विलम्ब से पहुंचे। उनके आने पर सारी सभा खड़ी होगई। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज सभापति के आसन को सुशोभित कर रहे थे। महाराज पूर्ववत् चुपचाप बैठे रहे। भरी सभा में सहस्रों की उपस्थिति में महाराजा ने जब स्वामी जी के चरण छूकर नमस्ते की तो सभास्थल पर उपस्थित सब जन इस दृश्य को देखकर भावविभोर हो गये। फकीरों की इसी में शान थी।

लाहौर में स्वामी जी ने श्री प० जगदेवसिंह जी सिद्धांती को कहा जाओ, जाकर चौधरी छोटूराम जी को बुलवाकर लाओ। श्री सिद्धांती जी ने प्रात काल चौधरी जी को महाराज का सन्देश सुनाया। वह तत्काल अपना कीकर का डण्डा लेकर पैदल ही चल पड़े। जब कार न ली तो सिद्धांती जी ने कहा—"मैं टांगा लाता हूं।"

चौधरी जी बोले—"नहीं स्वामी जी के चरणों में पैदल ही चलेंगे।"

श्री विश्वनाथ जी सुपुत्र धर्मवीर, महाशय राजपाल जी ने मुझे बताया कि मेरी आंखों में सदा बाल्यकाल का वह दृश्य उपस्थित रहता है जब लाहौर में तख्तपोश पर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी विराजमान होते थे। पत्रकारशिरोमणि महाशय कृष्ण, शहीद महाशय राजपाल, पं० ठाकुरदत्त जी, देशविख्यात विधिविशेषज्ञ दीवान बद्रीदास जैसे यशस्वी नेता गुरुदत्त भवन में आकर महाराज के सामने चटाई पर बैठा करते थे। वह साधु तो महान् था ही। ये आर्यनेता भी तो अपने समय की महान् विभूतियां थीं। उनका बड़प्पन उनकी श्रद्धा व विनम्रता से और निखरता था। उन नेताओं के इस धर्मभाव से आर्यसमाज का संगठन हर मोर्चे पर बढ़ता गया। ये सब लोग आर्यसमाज का गौरव व अभिमान थे।

देश का विभाजन हुआ तो स्वामी जी रोहतक चौधरी मातूसिंह

जी की कोठी पर कथा करने जारहे थे। आपने एक पत्र नरवाना समाज को लिखा कि मैं दोपहर की गाडी से नरवाना होता हुआ रोहतक आऊंगा। नरवाना में महात्मा आनन्द भिक्षु जी की कथा हो रही थी। प० निरंजनदेव जी के व्याख्यान हो रहे थे। ला० अनन्तराम समाज के मन्त्री थे। आपने अपने घर पर स्वामी जी के लिए भोजन बनवाया। स्वामी जी बारह बजे के बाद भोजन नहीं किया करते थे। ला० अनन्तराम जी ने इसी बात को सोचकर महाराज का भोजन तैयार करवाया और समाज में सूचना दी कि स्वामी जी दोपहर की गाडी से रोहतक के लिए निकलेंगे। मैं भोजन पहुंचाने जाऊंगा। जिसने भी स्वामी जी के दर्शन करने हों स्टेशन पर पहुंच जावें।

नरवाना के सब छोटे-बडे आर्यसमाजी शोभायात्रा के रूप में जयकारे लगाते हुए स्टेशन पर महाराज का भोजन पहुंचाने व दर्शन करने चल पड़े। आगे-आगे महात्मा आनन्द भिक्षु जी व प० निरंजनदेव जी थे। गाडी रुकी तो स्वामी जी आर्यों को देखकर नीचे उतर आये। अभिवादन का उत्तर दिया। आर्यों ने कहा कि यदि हर्ज न हो तो रात्रि आप रुक जायें। एक व्याख्यान हो जावेगा। स्वामी जी ने कहा कि टिकट ले रखा है। सबने कहा कि टिकट की चिंता मत करें। तब स्वामी जी ने कहा—"अच्छा रोहतक रात्रि तो कोई प्रोग्राम नहीं, आप केवल एक तार चौधरी मातूसिंह जी को करदें।"

स्टेशन मास्टर भी उस भव्यमूर्ति को देखकर महाराज के चरण छूने पास आया। उसने कहा तार तो मैं अभी कर देता हूं। गाडी कुछ अधिक देर रुकी रही। गाडी में से अनेक यात्री उस तेजस्वी, प्रतापी, ब्रह्मचारी आर्यनेता के दर्शनार्थ नीचे उतर आये। स्वामी जी ने सबको आशीर्वाद दिया। जब आर्यसमाज में धर्मभाव प्रबल था। वेद को परम-धर्म समझा जाता था तब आर्यसमाज मे ऐसे-ऐसे दृश्य देखने को मिलते थे। अब आर्यसमाज मकडी का जाला बुनकर उसमे फस गया है। यह जाला है स्कूलों व सस्थाओ का, भाडे की दुकानो का। अब आर्यसमाज की सम्पत्ति उसके लिए विपत्ति बन चुकी है। आर्यो! वही श्रद्धा फिर पैदा करो। अपने हृदयो मे वही अरमान पैदा करो। उसी उत्साह से अपने सोने गर्माओ तभी महाराज की याद मनाना सार्थक होगा।

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने जिधर भी, जहा भी पग धरा वहा इक इतिहास बना दिया। वे स्वय एक इतिहासकार थे, परन्तु इससे भी बडी बात यह है कि आपने हमारे इतिहास मे नये-नये अध्याय जोडे। आपने जीवन कभी भी धनसग्रह के लिए किसी के आगे झोली नहीं पसारी। अपने आश्रम के लिए कभी भी धनसंग्रह को न निकले। फ्रैंच व जर्मन भाषा के सत्यार्थप्रकाश के लिए भी पत्रों में ही अपील की। स्थूल अक्षरी सत्यार्थप्रकाश के लिए भी केवल पत्रों में अपील निकाली। ऐसे वीतराग सन्यासी का मूल्यांकन तो करिये।

आपने बडे-बडे शास्त्रार्थ समाज को दिये। बडे-बडे विद्वान् उप-देशक दिये। समाज को बलिदानी कार्यकर्ता दिये। आपने समाज को इतने साधु वानप्रस्थी दिये कि आपसे पूर्व किसी ने भी समाज को इतने संन्यासी शिष्य न दिये। हैदराबाद सत्याग्रह के फील्डमार्शल, तपस्वी सेनानी को समाज कदापि न भूल सकेगा।

लोहारू की धरती को लहू की धार से सींचनेवाले ब्रह्मचारी को हम सदा याद रखेंगे। भारतीय स्वाधीनता सग्राम में अमानवीय यात-नायें सहनेवाले इस तपोनिधि संन्यासी की साधना हमारे लिए सदा प्रेरणास्रोत रहेगी। सत्यव्रतधारी इस बालब्रह्मचारी ने विदेशों मे धर्म प्रचार व राष्ट्रीय गौरव के लिए जो कुछ किया वह सब हमारे लिए अविस्मरणीय रहेगा।

मलेरकोटला के नवाब से सनातनधर्म के मन्दिर की पवित्रता के लिए टक्कर लेनेवाले महामुनि की जाति सदा ऋणी रहेगी। शुद्धि के लिए, गोरक्षा के लिए, राष्ट्रभाषा के लिए, स्वदेशी आंदोलन के लिए इस वेदवेत्ता साधु ने जो सघर्ष किया वह स्वर्ण अक्षरों में लिखा जावेगा। प्रभु की वेदवाणी के लिए वैभवशाली परिवार को त्यागकर भिक्षा के भोजन पर जीवन बितानेवाले राजर्षि का वन्दन, अभिनन्दन करते हुए हम सच्चे वेदभक्त और प्रभुभक्त बनने का व्रत लें।

आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिरसा का वार्षिक समारोह

जिला सिरसा में शिक्षा के प्रसार में आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल के महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। यह विचार हरयाणा के उद्योग मन्त्री श्री लछमनदास अरोडा ने इस संस्था के वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह में व्यक्त किया। उल्लेखनीय है कि इस विद्यालय में ग्रामीण क्षेत्रों तथा सिरसा शहर के गरीब वर्ग के बच्चे मुख्यत: शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। श्री लछमनदास अरोडा ने आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल के लिए २ लाख रुपये की मैचिंग ग्रांट स्वीकृत की तथा २१,००० रुपये अपने स्वैच्छिक कोष से भी दिये।

इस अवसर पर एकल व समूहगान प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में ९ शिक्षण सस्थाओं ने भाग लिया। एकल गान मे राजकीय वरिष्ठ कन्या माध्यमिक विद्यालय सिरसा की छात्रा कु० अनामिका प्रथम, नरवाना के एस० डी० वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की छात्रा संगम शर्मा द्वितीय तथा विवेकानन्द हाई स्कूल सिरसा की छात्रा कु० रजनी तृतीय स्थान पर रहीं। इसी प्रकार समूह गान में भी राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिरसा प्रथम, एस० डी० वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नरवाना द्वितीय तथा कमला माहेश्वरी स्कूल सिरसा तृतीय स्थान पर रहा। उद्योग मन्त्री श्री लछमन-दास अरोडा ने चलविजयोपहार व पुरस्कार वितरित किये।

सिरसा नगरपालिका के प्रधान श्री ओमप्रकाश सेठी ने एक चल-विजयोपहार प्रदान किया। दूसरी ट्राफी (सील्ड) श्री राजेन्द्रप्रसाद सिंगला ने दी।

डा० आर एस. सागवान ने मुख्य अतिथि श्री लछमनदास अरोड़ा का स्वागत किया तथा संस्था के प्रबन्धक के रूप में विद्यालय की ओर से मान-पत्र प्रस्तुत किया।

विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री दलीपसिंह ने वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा आये हुए अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

—दलीपसिंह

अंग्रेजी हटाओ

आप संकल्प करें कि—

१ अपने हस्ताक्षर अंग्रेजी में नहीं करेंगे। अपनी मातृभाषा व राष्ट्रभाषा हिन्दी में करेंगे।

२. अपने पत्रों पर पता अंग्रेजी में नहीं लिखेंगे। अपनी मातृभाषा व राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखेंगे।

३ शासन से पत्र-व्यवहार अंग्रेजी में नहीं करेंगे। अपनी मातृभाषा व राष्ट्रभाषा हिन्दी में करेंगे।

४. दैनिक व्यवहार मे अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग नहीं करेंगे। अपनी आदत बनावेंगे कि मातृभाषा व राष्ट्रभाषा हिन्दी के शब्दों का प्रयोग करेंगे।

५ हम व्यापारी अपनी पावती व हिसाब अंग्रेजी में नहीं लिखेंगे। अपना समस्त कार्य मातृभाषा व राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखेंगे।

६ हम कारखानेदार हमारे द्वारा निर्मित सामान पर और उसके डब्बों पर गुलामी की निशानी अंग्रेजी नही लिखेंगे। प्रत्येक प्रांत की भाषा व राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखेंगे।

७. हम चिकित्सक, अभिभावक, मन्त्री, शासकीय सेवक अपनी आदत बनावेंगे कि अंग्रेजी का व्यवहार बन्द कर मातृभाषा व राष्ट्र-भाषा हिन्दी का व्यवहार करेंगे।

शोक समाचार

सिरसा नगर व सिरसा आर्यसमाज को [illegible] के दिनांक २७-१२-९० को आकस्मिक [illegible]। वह नगर के प्रसिद्ध आर्यसमाजी एवं आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल सिरसा के भूतपूर्व प्रिंसीपल स्व. नित्यानन्द जी आर्य [illegible]। वह आर्यसमाज सिरसा के साप्ताहिक कार्यक्रमों में नियमित [illegible]। उन्होंने सारा जीवन वैदिक सिद्धांतों पर चलते हुए [illegible]

कुरुक्षेत्र में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस एवं शराबबन्दी सम्मेलन

दिनांक २७ दिसम्बर, ९२ को सभा द्वारा संचालित गुरुकुल कुरुक्षेत्र में मनाया गया। इसकी तैयारी के लिए गुरुकुल के नवयुवक आचार्य श्री देवव्रत जी शास्त्री ने बहुत परिश्रम किया। सभा की प० ईश्वरसिंह तूफान की भजनमण्डली ने गुरुकुल के चारों ओर के ग्रामों में शराबबन्दी प्रचार किया। सभा की ओर से शराबबन्दी सम्मेलन में भाग लेने के लिए जिला कुरुक्षेत्र, कैथल, यमुनानगर के आर्यसमाजो के प्रतिनिधि महानुभावो को भी पत्र लिखे गये।

२७ दिसम्बर को प्रात यज्ञ के अवसर पर गुरुकुल के छात्रो को श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा किये गये समाज सुधार कार्यों बारे बताया गया और उनके बलिदान की चर्चा की गई। दोपहर को गुरुकुल के ऋषिलगर में बाहर से आनेवाले आर्यसमाज के प्रतिनिधियों तथा शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओ के लिए भोजन की सराहनीय व्यवस्था की गई। दोपहर बाद २ बजे शराबबन्दी सम्मेलन सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता मे आरम्भ हुआ। सर्वप्रथम प० ईश्वरसिंह तूफान की भजनमण्डली ने स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा शराबबन्दी पर प्रभावशाली गीत सुनाये। तत्पश्चात् गुरुकुल कुरुक्षेत्र के ब्रह्मचारी श्री राजेशकुमार ने शराब से होनेवाली सामाजिक बुराइयो पर बोलते हुए श्रोताओं को कहा कि यदि आपने शराब पर पाबन्दी लगवाने के लिए सघर्ष नहीं किया तो आनेवाली पीढिया इसके लिए आपको क्षमा नहीं करेगी। इसी प्रकार आर्य विद्यालय साकरा के एक विद्यार्थी ने शराबबन्दी की आवश्यकता पर अपने विचार रखे।

श्री सुलतानसिंह एडवोकेट कुरुक्षेत्र ने अपने भाषण मे कहा कि शराबरूपी जहर के विरुद्ध सबसे पूर्व आवाज आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने उठाई थी। किसान मजदूर इसके नशे में फसकर बर्बाद हो रहे हैं। जिला कुरुक्षेत्र का एक किसान शराब पीने के लिए अपनी १८ एकड उपजाऊ भूमि बेचकर दर-दर का भिखारी बन गया। उसे विवश होकर अपनी लडकी की शादी एक अपग से करनी पडी। किसान विवाह शादियो के अवसर पर शराब के सेवन को बढावा देकर हरयाणा की वैदिक सस्कृति को नष्ट कर रहे हैं। जैसा अन्न खायेंगे वैसा मन बनेगा।

चौ० अमरसिंह एडवोकेट कुरुक्षेत्र ने आर्यजनता का आह्वान किया कि आज शराबबन्दी समय की आवाज बनती जारही है। श्री विजयकुमार जी ने हरयाणा मे शराब पर पाबन्दी लगवाने के लिए उपायुक्त पद को लात मारकर इस महान् कार्य मे दिन-रात कार्य करके सराहनीय पग उठाया है। अत हम सभी को इस जनकल्याण कार्य में तन, मन तथा धन से सहयोग देना चाहिए। ग्रामो मे शराबबन्दी समितियां गठित करके शराब बेचने तथा पीनेवालो पर पचायती दण्ड लगाना चाहिए।

महिला सास्कृतिक सगठन की ओर से सुश्री रेखा तथा उषादेवी ने अपने भाषणों मे बताया कि हमारी बहनें काफी दिनो से बहन सुदेश के नेतृत्व में शराबबन्दी के कार्यक्रम में लगी हैं। ग्राम कामोदा तथा क्योडक में शराब के ठेको पर धरणे तथा प्रदर्शनो में अपने भाइयों के साथ सघर्ष कर रही हैं। हम सभा का आदेश मिलने पर शराब के ठेकों की नीलामी करनेवाले अधिकारियों का घेराव करने में पीछे नही रहेंगी। हम जहर की इन दुकानों को आग लगाने तक के लिए तैयार हैं।

इस अवसर पर सभामन्त्री श्री सूबेसिंह ने उपस्थित जनता को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमे स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान से प्रेरणा लेनी चाहिए। जिस महापुरुष ने सर्वप्रथम अपने जोवन की सभी बुराइयों को त्याग करके परोपकारी कार्य आरम्भ किये। वैदिक सस्कृति की रक्षा करने के लिए गुरुकुल कागडी, कुरुक्षेत्र, इन्द्रप्रस्थ आदि की स्थापना की और जोवन के अन्तिम सास तक सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने मे लगे रहे। आपने सरकार की आबकारी नोति की आलोचना करते हुए कहा कि शराब बेचकर धन कमानेवाली सरकार कल्याणकारी नही हो सकती। तमिलनाडु की मुख्यमन्त्री कु० जयललिता का उदाहरण देते हुए कहा कि अपनी मतदाताओ की माग पर इन्होंने अपने प्रदेश में शराबबन्दी लागू करदी। परन्तु शराब की लाबी अपनी अथाह धनशक्ति के आधार पर शराबबन्दी लागू करने वाली सरकारों को हटवाने के लिए पूरी शक्ति लगा देती है। भारत सरकार भूतपूर्व सैनिकों को यदि शराब की बोतल की बजाये अन्य सुविधाये दे तो सैनिकों का कल्याण हो सकेगा। परन्तु सरकार अपने पूर्व सैनिकों को भी शराब पिलाकर बेहोश रखना चाहती है। प्रो० शेरसिह जी गत ५-६ वर्ष से शराबबन्दी कार्य मे सघर्ष कर रहे हैं। अनेक स्थानों पर ठेको पर धरणे दिलवाकर तथा शराबबन्दी सम्मेलन आदि करवाने के लिए सभा के प्रचारको के साथ सारे हरयाणा प्रदेश मे भ्रमण किया है। इस प्रकार शराबबन्दी अभियान एक जनआदोलन बनता जारहा है। उच्चतम न्यायालय मे भी शराबबन्दी हेतु याचिका दायर करके राज्य सरकारो को चुनौती दी है। इनके इस ऐतिहासिक कार्य से प्रभावित होकर इस वर्ष प्रो० साहब को अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् का अध्यक्ष चुना गया है।

सभामन्त्री ने आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को अपील करते हुए कहा कि शराब के ठेको की नीलामी रुकवाने के लिए आज से ही तैयारी आरम्भ कर देवें। आपने जिला भिवानी के ग्राम बामला, जूई, धनाना, इमलोटा तथा झोझू आदि का उदाहरण देते हुए बताया इन ग्रामो ने अपने ग्राम से ठेके उठवाने के लिए सामूहिक रूप से सघर्ष किया है और ठेकेदारो व सरकार को लोकशक्ति के सामने झुकना पडा है। क्योडक जिला कैथल में ५ नवम्बर, ९२ से शराबबन्दी कार्यकर्त्ता ठेके के सामने धरणे पर बैठे हैं। ठेका बन्द पडा है। यह ठेका सरकार को हर अवस्था में हटाना पडेगा। इस चेतना तथा जागृति को सारे प्रदेश मे लाने के लिए हमें तन, मन तथा धन से सहयोग देना चाहिए।

श्री विजयकुमार सयोजक हरयाणा शराबबन्दी समिति ने मुख्यवक्ता के तौर पर बोलते हुए गुरुकुल कुरुक्षेत्र के सस्थापक एव आर्यसमाज के उच्चकोटि के नेता स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपनी श्रद्धाजलि दी और गुरुकुल के ब्रह्मचारियो को प्रेरणा करते हुए कहा कि जिस प्रकार स्वामी जी ने ऋषि दयानन्द के पदचिह्नो पर चलते हुए अपना सारा जोवन वैदिक शिक्षा-प्रणालो के प्रसार, शुद्धि प्रचार तथा स्वाधीनता सग्राम मे लगा दिया, इसी प्रकार उन्हे भी गुरुकुल का स्नातक बनकर आर्यसमाज के कार्यों मे लगाना चाहिए।

आपने हरयाणा मे शराबबन्दो आदोलन की चर्चा करते हुए कहा कि शराब के सेवन करने से मानव दानव बन रहा है। प्रत्येक क्षेत्र में शराब का प्रभाव बढ़ता जारहा है और दिन-प्रतिदिन भ्रष्टाचार बढ रहा है। सरकार शराब के प्रसार को बढावा देकर नवयुवको के चरित्र को बिगाड़ रही है और किसान मजदूरो की कमाई नष्ट करने पर तुली है जिससे वे जागरूक होकर अपने अधिकारो के लिए लड न सके। यही कारण है कि सरकार शराबबन्दी करनेवाली पचायतो को लालच अथवा धमकी देकर प्रस्तावो को वापिस करवाने का भरसक यत्न कर रही है। आपने हरयाणा के सभी सरपचो से अपील करते हुए उन्हे सावधान रहने तथा अपने शराबबन्दी के प्रस्तावो पर अडिग रहने को कहा। इस उद्देश्य हेतु प्रत्येक ग्राम, खण्ड तथा जिलेवार शराबबन्दी समितियां गठित करने का सुझाव दिया, जिससे शराब के ठेको की नीलामी के समय सामूहिक रूप से सरकार से शराबबन्दो लागू करवाने के लिए

(शेष पृष्ठ ४ पर)

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह सम्पन्न

गुडगाव आर्य केन्द्रीय सभा द्वारा आयोजित अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस समारोह भव्य शोभायात्रा के साथ सम्पन्न हुआ। समारोह मे पूज्य स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, सर्वश्री वेदप्रकाश आर्य मन्त्री आर्यवीर दल हरयाणा, सत्यपाल आर्य, वेदपाल आर्य कार्यकारी अभियन्ता, डा० मन्जु तालेकर, सत्येन्द्र शास्त्री आदि वक्ताओ ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन की अनेक घटनाओं का वर्णन करते हुए उनके जीवन से शिक्षा लेने की प्रेरणा दी। तत्पश्चात् प्रधान जी ने हाल मे हुई मेवात की घटनाओ की चर्चा करते हुए वहा हिन्दुओ की स्थायी सुरक्षा व्यवस्था हेतु जनता के समक्ष प्रस्ताव रखा। उपस्थित जनसमूह ने हाथ उठाकर इसका पूर्ण समर्थन किया। समारोह एव शोभायात्रा मे नगर की आर्यसमाजो, स्त्री आर्यसमाजो, शिक्षण सस्थाओं के अतिरिक्त ग्राम बसई बादशाहपुर, कार्टरपुरी तथा मेवात से सोहना, पुन्हाना, नगीना, फिरोजपुर झिरका आदि स्थानो से भारी सख्या में लोग पधारे। शोभायात्रा मे आर्यवीर दल फिरोजपुर झिरका का प्रदर्शन बहुत ही सराहनीय था।

—ओमप्रकाश चौटानी महामन्त्री

हरयाणा मे शराबबन्दी सम्मेलनों के कार्यक्रम

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से शराबबन्दी सत्याग्रह की तैयारी के लिए निम्नलिखित स्थानो पर शराबबन्दी सम्मेलनो का आयोजन किया गया है जहा सभा के अधिकारी, साधु संन्यासी, आर्य नेता तथा सभा के उपदेशक एव भजनमण्डलियां पधारेंगी।

स्थान		तिथि
गोशाला खन्नोरी निकट नरवाना		८ से १४ जनवरी
आर्यसमाज मुरथला जि० रेवाडी		८ से १० ,,
,,	परवालो जि० यमुनानगर	८ से १० ,,
,,	नीमली जि० भिवानी	९-१० ,,
,,	झज्जर जि० रोहतक	९ ,,
,,	कासनी जि० रोहतक	१२-१३ ,,
,,	रसूलपुर जिला महेन्द्रगढ	१४-१५ ,,
,,	हथवाला जि० पानीपत	१७ ,,
,,	कासण्डी जि० सोनीपत	१६-१७ ,,
,,	निडाना (ललितखेडा जि० जीद)	२० से २१ ,,

इस शराबबन्दी सम्मेलन की तैयारी हेतु स्वामी रत्नदेव जी महाराज सयोजक जिला जीद मण्डल द्वारा भजनमण्डलियो के साथ जीप के माध्यम से ४७ ग्रामो मे शराबबन्दी का प्रचार करेगे।

—सुदर्शनदेव सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन १४ फरवरी, ९३ रविवार को सभा कार्यालय सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक मे होना निश्चित हुआ है। अत सभा से सम्बन्धित आयसमाजो के अधिकारियो से निवेदन है कि वर्ष १९९२-९३ का वार्षिक वेदप्रचार, दशाश तथा सर्वहितकारी का प्राप्तव्य शुल्क यथाशीघ्र धनादेश (मनी-आर्डर) अथवा सभा के उपदेशकों द्वारा भेजने का कष्ट करें, जिससे उनके स्वीकृत प्रतिनिधि महानुभावो की सेवा में समय पर अधिवेशन का एजेण्डा आदि भेजा जासके। इस तिथि २४ फरवरी को कोई आर्य-समाज अपने उत्सव आदि न रखे। जो आर्यसमाज प्रचार करवाना चाहते हो, वे सभा को पत्र लिखकर उपदेशक/भजनोपदेशको का कार्यक्रम बनवा लेवें।

शराबबन्दी सत्याग्रह की तैयारी के लिए अपने आर्यसमाज से कम से कम ११ सत्याग्रहियो का सूची तथा ११०० रु० दान भी शीघ्र भेजने की कृपा करें।

—सभामन्त्री

सम्पादक के नाम पत्र

संग्रहणीय विशेषांक

सर्वहितकारी का स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान विशेषांक प्राप्त हुआ। विशेषांक वास्तव में काफी सुन्दर एव आकर्षक था। इसमें सभी लेख शिक्षाप्रद एव प्रेरणादायक थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी के सम्बन्ध में ढेर सारी सामग्री पढ़ने को मिली। नि सन्देह स्वामी जी आर्यसमाज के उन नेताओं में से एक थे जिन्होंने वैदिकधर्म के प्रचार-प्रसार को बढ़ाने के लिए तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के मिशन को पूरा करने के लिए अपना सारा जीवन लगा दिया। अत आर्यसमाज के प्रति उनकी सेवाओं को कदापि नही भुलाया जासकता। पत्रिका का यह अंक काफी सग्रहणीय एव पठनीय है। विशेषाक की सफलता के लिए बधाई।

—रामकुमार आर्य
वाटर सप्लाई वर्क्स जोशी चौहान, सोनीपत

(पृष्ठ ३ का शेष)

टक्कर ली जासके। उनकी अपील पर शाहबाद मारकण्डा, थानेसर, कौल, क्योडक, ठोल आदि स्थानो पर उसी समय शराबबन्दी समितियो का गठन किया गया।

प्रो० शेरसिंह जी सभाप्रधान ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपनी श्रद्धाजलि देते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द ने कुरुक्षेत्र में गुरुकुल की स्थापना इसी भावना से की थी कि यह धरती पवित्र रही है। यहीं वेदों के मन्त्रो का उच्चारण ऋषि मुनियों ने किया था तथा योगिराज कृष्ण ने इसी धरती पर गीता का उपदेश दिया था। यह ऐतिहासिक भूमि है। पजाब से पृथक् होकर हमने हरयाणा प्रदेश भी इसी उद्देश्य से बनवाया था कि यहा पुन. वैदिक संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया जावे। यहा के विश्वविद्यालय का नाम सस्कृत विश्वविद्यालय था, परन्तु बाद में सस्कृत शब्द हटा दिया गया। दुःख की बात है कि आज यह ऋषि-मुनियों की धरती शराब व मास के बढते हुए प्रचार से बदनाम हो रही है। हमने हरयाणा में शराबबन्दी आदोलन इसी कारण चलाया है कि हमारा यह प्रदेश एक आदर्श प्रदेश बने। परन्तु अब यह प्रदेश बुराइयों का गढ़ बनता जारहा है। राजनीति मे आया राम गया राम के नाम से हरयाणा की बडी बदनामी हुई। अब सरकार द्वारा सरपंचो को शराब की बोतल बेचने पर ईनाम दिये जाने पर हरयाणा बदनाम हो रहा है। किसी भी अन्य प्रदेश में शराब की दुकानें खुलवाने हेतु सरपचो को प्रोत्साहित नहीं किया जारहा। हमने धरणे आदि दिलवाकर जितने ठेके बन्द करवाये हैं अगले वष उस से दोगुनी सख्या में नये ठेके खोल दिये जाते हैं।

यदि किसी वस्तु के भाव बढते हैं तो जनता में उसके विरोध में हडताल तथा प्रदर्शन किये जाते हैं, परन्तु प्रतिवर्ष शराब की बोतल का मूल्य बढाया जाता है, परन्तु पीनेवालो पर इसका कोई प्रभाव नहीं पडता है और वे किसी प्रकार का विरोध तथा प्रदर्शन सरकार के विरुद्ध नही करते। इस प्रकार शराब के पीनेवाले इसके गुलाम होगये हैं। इसके बिना वे रह नही सकते। हमारे किसान भाई वर्षभर की कमाई बेचने जब मण्डी जाते हैं तो उस कमाई से शराब की बोतलें पीकर नशे मे झूमते हुए घर आते हैं और अपनी खून-पसीने की कमाई बर्बाद कर देते हैं। भारतीय सविधान के अनुसार सभी को जीने का मौलिक अधि-कार है, परन्तु सरकार अपनी नीति से शराब पिलाकर मरने के लिए विवश करती है। सभा ने इन्हीं मानव अधिकारों की रक्षा के लिए उच्चतम न्यायालय मे याचिका दायर की है। प्रो० साहब ने आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं से अपील करते हुए कहा कि हरयाणा प्रदेश से शराब का कलक समाप्त करने के लिए बडे से बडा बलिदान करने के लिए तयार रहें। यह महान् कार्य महिलाओं के सहयोग तथा समर्थन के बिना सफल नहीं हो सकता।

—केदारसिंह आर्य

पारिवारिक यज्ञ सम्पन्न

दिनांक १८-१२-९२ को प्रातः ८ बजे आर्य निवास नलवा (खेतो की ढाणी) में प० शिवकुमार जी शास्त्री पुरोहित आर्यसमाज हांसी द्वारा हवन किया गया। श्री सुरेन्द्रसिंह जी बी० ए० व श्रीमती सरोज आर्या (दम्पती) ने यजमान का स्थान ग्रहण किया। शास्त्री जी ने यज्ञोपवीत का महत्त्व, वर्णव्यवस्था तथा नवयुवकों के कर्तव्य पर विचार रखे। सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी जी ने सदाचार, सुखी गृहस्थ का जीवन जीने पर बल दिया। साथ में दोनो बच्चो को संस्कार विधि पढ़ने की प्रेरणा दी। ब्र० सत्यकाम सेवक आर्यसमाज नलवा के ईश्वरभक्ति के भजन हुए।

१० बजे आर्यसमाज मन्दिर नलवा में हवन किया गया। इस अवसर पर कुछ सज्जनों के अतिरिक्त गीता पब्लिक स्कूल नलवा के ३५ बच्चो ने भाग लिया। शास्त्री जी ने बच्चों को कुछ प्रेरक महापुरुषो के जीवन की कहानियों पर प्रकाश डाला। क्रांतिकारी जी ने बच्चों को बताया कि प्रतिदिन प्रातः उठकर व्यायाम करो। माता-पिता, आचार्य को नमस्ते करो तथा चोटी और यज्ञोपवीत धारण करो। साथ मे जोर देकर कहा कि सुबह-शाम स्कूल में आते समय तथा जाते समय गलियों में शराबबन्दी नारे लगाया करो। जैसे—शराब पीना छोड दो, शराब की बोतल फोड दो, बाप शराब पीता है, बच्चे भूखे मरते हैं, शराब हटाओ, देश बचाओ।

—बलेराम आर्य, नलवा

सोनीपत में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्यसमाज शान्तिनगर सोनीपत (हर०) मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर महात्मा प्रेमभिक्षु जी वानप्रस्थी, तेजभान नस्तर, श्रीमती सुनीता अरोडा, ब्रह्मदत्त नारंग एव हरिचन्द स्नेही ने स्वामी श्रद्धानन्द के आदर्शों पर चलने पर बल दिया।

आतंकवाद

आज देश में जगह-जगह आतंकवाद है।
मानवता कराह उठी हुआ आर्तनाद है॥

बुद्धि इनकी बिगड गई ना कोई चारा।
आपस मे ना प्रेम रहा ना भाईचारा।
सचमुच क्या अपने पुरुषो की यह औलाद है॥
आज देश में १

कोई भी ना इन दुष्टों का दीन-धर्म है।
दुनिया इनको क्या कहती ना इन्हे शर्म है।
पाप कर्म करते रहना बस यही याद है॥
आज देश मे — २

स्त्री, बूढे, बच्चो को गिन-गिनकर मारे।
दया नाम की चीज नही बिल्कुल हत्यारे।
दिल को जगह पत्थर का टुकडा और फौलाद है॥
आज देश मे ३

किसी और ने इनको देखो बहकाया है।
बुद्धि इनकी नष्ट करी और भरमाया है।
पागल कुत्तों जैसा इनका हुआ दिमाग है॥
आज देश मे —४

शासकवीरो शक्ति करो और इन्हें कुचल दो।
जनता के दुःखदर्दों को कुछ ठण्डा करदो।
'प्रभाकर' की ईश्वर से भी यही फरियाद है॥
आज देश मे — ५

रचयिता—कप्तान प० मातूराम शर्मा प्रभाकर
सभा उपदेशक

जिला वेदप्रचार मण्डल पानीपत के समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा गठित जिला पानीपत वेदप्रचार मण्डल के सयोजक एव सभा के कोषाध्यक्ष ला० रामानन्द जी सिंगल के निर्देशन मे प० रामकुमार आर्य की भजनमण्डली द्वारा निम्नलिखित ग्रामो मे प्रचार हुआ—

१ ग्राम पुठर मे प्रधान वेदराज, सुखबीरसिंह, धर्मजीत ड्राईवर, बलवीर आर्य ने अपना विशेष योगदान दिया। कुल राशि २७० रुपये धन्यवाद सहित दी। वेदप्रचारमण्डल जींद के सयोजक स्वामी रत्नदेव जी महाराज का प्रभावशाली भाषण हुआ। सामाजिक बुराई, शराब पर पूर्ण पाबन्दी लगवाने, सभा द्वारा चलाये जारहे अभियान को सफल करने और सत्याग्रह के लिए भी आकर्षित किया।

२ ग्राम माडी मे श्री राजसिंह आर्य सु० जागेराम जी ने अपना विशेष योगदान दिया।

३ ग्राम पलडी मे तीन दिन तक बहुत अच्छा प्रचार हुआ। रामफल सु० जयचन्द, हवासिह, प्रेमसिंह, प० रामेहर, प० पालेराम, जीतसिंह सु० निधाइयाराम जी ने विशेष योगदान देकर प्रचार को सफल किया। धन्यवाद सहित ३८७ रु० की राशि भेंट की।

४ ग्राम बलाना मे श्री धर्मपाल, राजेराम हवलदार सु० रतनसिंह जी ने प्रचार का सुन्दर प्रबन्ध किया। प्रचार शुरु होने के बाद अचानक जवान मौत के कारण प्रचार रोक दिया गया।

५ ग्राम डिडवाडी मे हैडमास्टर श्री सरूपसिंह आर्य, सुखबीरसिंह सु० अभेराम, बलकारसिंह, केशोराम आदि के विशेष सहयोग से प्रचार सफल हुआ। धन्यवाद सहित ३०५ रु० की राशि भेंट की गई।

६ परढाणा मे श्री राजसिंह सरपच, सतबीरसिंह, प्रतापसिह सु० सूरजमल नम्बरदार का अपना विशेष आर्थिक सहयोग रहा। २३३ रुपये की राशि भेंट की।

७ ग्राम खलीला रोडान मे मा० भरतसिह जी ने विशेष आर्थिक सहयोग दिया। १०१ रुपये की राशि धन्यवाद सहित दी।

८ ग्राम कुराना मे जवान मौत के कारण प्रचार नही हुआ।

९ इसराना मे श्री रामकुमार हरिजन सु० सरूपसिंह ने सहयोग दिया। सर्वहितकारी के ग्राहक भी हैं।

१० शाहपुर मे श्री प्रधान देईचन्द आर्य, कर्णसिंह आर्य, दयानन्द सरपच, महेन्द्रसिंह, धनपत जी आर्य ने विशेष आर्थिक सहयोग देकर प्रचार का सुन्दर प्रबन्ध किया। बडी श्रद्धा के साथ ४२९ रु० की राशि भेट की। वेदप्रचार से लोग बहुत प्रभावित हुए।

११ आर्यसमाज बिजावा मे बडा अच्छा प्रचार हुआ। श्री जीतसिंह आर्य सु० छैलूराम तथा जगबीरसिंह आर्य, चौ० सूबेसिंह आर्य ने विशेष आर्थिक सहयोग देकर प्रचार को सफल कराया। लोगों ने वेदप्रचार को शातिपूर्वक सुना। प्रचार का अच्छा असर रहा।

—रामानन्द सिंहल
सयोजक जिला वेदप्रचारमण्डल, पानीपत

नामकरण संस्कार सम्पन्न

दिनांक ६-१२-९२ को प्रात १० बजे आर्यसमाज मुकलान (हिसार) के प्रधान महाशय बदलूराम आर्य के पौत्र का नामकरण सस्कार प० रामस्वरूप शास्त्री जी आचार्य गुरुकुल आर्यनगर द्वारा वैदिकरीति से हवन करके किया गया। पिता श्री राजबीरसिंह आर्य व माता श्रीमती कौशल्या आर्या ने यजमान का स्थान ग्रहण किया। बच्चे का नाम सुधीरकुमार रखा गया। स्वामी सर्वदानन्द जी गुरुकुल धीरणवास, स्वतन्त्रता सेनानी भगत रामेश्वरदास हिसार, सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रातिकारी जी ने बच्चे को आशीर्वाद दिया। उपस्थित नरनारियो को सस्कारो का महत्त्व तथा शराब व धूम्रपान से होनेवाले नुकसान से अवगत कराया। हवन में काफी गणमान्य सज्जनो ने भाग लिया। शातिपाठ के बाद प्रीतिभोज का आयोजन भी किया गया।

—सूबेसिंह आर्य, मन्त्री आर्यसमाज, मुकलान

ऋषि दयानन्द स्मारक प्रथम व्याख्यान

गतवर्ष महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास की कार्यकारिणी ने निश्चय किया था कि आगामी वर्ष से ऋषि दयानन्द स्मारक व्याख्यानमाला का आयोजन किया जावे। इस निश्चय के अनुसार प्रथम व्याख्यान दिनाक २९ अक्तूबर, ९२ को न्यास भवन (भिनाय कोठी) मे आर्यसमाज के लब्ध प्रतिष्ठ लेखक, शोधकर्ता तथा विद्वान् डा० भवानीलाल भारतीय ने भारत के स्वराज्य सग्राम मे महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की भूमिका विषय पर हुआ। इस समारोह की अध्यक्षता राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष प्रो० जीवनलाल माथुर ने की। व्याख्यानमाला का परिचय देते हुए न्यास के मन्त्री पं० मदनमोहन शास्त्री ने निर्वाण स्मारक न्यास की विविध प्रवृत्तियों का परिचय दिया तथा ऋषि दयानन्द स्मारक व्याख्यानमाला की उपयोगिता बताई। तत्पश्चात् न्यास के अध्यक्ष महात्मा आर्यभिक्षु ने अपने आशीर्वचन मे ऋषि दयानन्द के व्यक्तित्व एव उनकी विभिन्न लोकोपकारक प्रवृत्तियों पर विस्तार से प्रकाश डाला।

आज के व्याख्यानदाता डा० भवानीलाल भारतीय ने ऋषि दयानन्द आविर्भावकाल की परिस्थितियां का विस्तारपूर्वक उल्लेख करते हुए स्वामी जी की राष्ट्रीय विचारधारा का सप्रमाण विवेचन किया। देश की स्वतन्त्रता मे आर्यसमाज के सक्रिय योगदान का विस्तृत विश्लेषण करते हुए उन्होंने स्वाधीनता के लिए किये गये क्रांतिकारी तथा विधेयात्मक प्रयत्नों मे स्वामी दयानन्द के अनुयायियों की सक्रिय भूमिका का विवेचन किया। अन्त मे अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रो० माथुर ने स्वामी दयानन्द को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

—मन्त्री न्यास

जिला वेदप्रचार मण्डल जींद के समाचार

वेदप्रचार मण्डल जीद की तरफ से निम्नलिखित ग्रामो में प्रचार किया गया। ६ नवम्बर से २ दिसम्बर तक श्री प० रामनिवास आर्य की भजनमण्डली द्वारा बडे क्रातिकारी ढग से देहात के लोगो को जागृत किया गया। जिसमे शराबबन्दी, दहेजप्रथा, गुरुकुलो की शिक्षा-प्रणाली, गोरक्षा एवं आर्यराष्ट्र कैसे बनाया जावे, इन सब विषयों पर खुलकर जनता को विचार दिये गये।

मैं स्वय भजनमण्डली के साथ रहकर प्रचार करवा रहा हूं जिससे आर्यसमाज की शक्ति दोबारा उभर कर नौजवानों के जीवन का निर्माण हो सके। सर्दी के कारण अब रात्रि को प्रचार करना कठिन है। अब दिन का प्रचार आरम्भ करेंगे। मैं चाहता हू कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का फिर से देहात एव शहरों में पूरी तरह से प्रभाव बन जाये। परमात्मा से विशेष प्रार्थना है कि इस ऋषियों की भूमि हरयाणा पर आर्यों का पूर्ण अधिकार हो।

गावो की सूची—ग्राम निडाना, रामलोकवा, ठिगाना, कलोई, निडानी, लुदाना, बिठमडा, गलाडी।

—स्वामी रत्नदेव
सयोजक वेदप्रचार मण्डल, जीद

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह सम्पन्न

दिनाक २३-१२-९२ को गुरुकुल धीरणवास, हिसार में स्वामी श्रद्धानन्द दिवस मनाया गया। प्रात ८ बजे हवन किया गया। तत्पश्चात् स्वामी सर्वदानन्द जी की अध्यक्षता मे एक सभा हुई, जिसमें गुरुकुल कार्यकारिणी के अध्यक्ष श्री रामजीलाल आर्य, म० दीवानसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज बालसमन्द, आचार्य प० अमरसिंह आदि ने स्वामी जी के जीवन एव कार्यों पर विस्तार से विचार रखे। विद्यार्थियों को स्वामी जी के बताये रास्ते पर चलने का आग्रह किया। अन्त में बच्चों को फलाहार भी बाटे गए।

—बलबीरसिंह आर्य

[illegible] सम्पन्न

[illegible] प्रारायण महोत्सव २१-११-९२ से २९-११-९२ तक श्रद्धेय श्री [illegible] श्री [illegible] [illegible] की सम्पन्नता [illegible] के लिए [illegible] का आयोजन किया गया। [illegible] एवं [illegible] श्री [illegible] के सुप्रसिद्ध [illegible] आर्य, भगत सुन्दरदास, महाशय रतनसिंह, ज्ञानेन्द्र शास्त्री, भोजराज शास्त्री, श्रीमद्दयानन्द [illegible] विद्यालय [illegible]नगर दिल्ली के ब्रह्मचारी आदि विद्वान् प्रमुख थे।

—हरिश्चन्द्र स्नेही

अन्धविश्वासी हिन्दू और भ्रान्तिनिवारण

रचियता—कविराज छाजूराम शर्मी शास्त्री, नई दिल्ली

हिन्दू अविद्याग्रस्त जन, सुनो मूढ़ मतिमन्द।
बिना वेद नहीं सुगति है, कह गये ऋषि दयानन्द॥
जड़ नहिं चेतन है सके, [illegible] चेतन जड़ नाहिं।
भेद न जो नर जानते, वे अज्ञान [illegible]॥
गौतम ऋषि के शाप से, अहिल्या हुई पाषाण।
जो इसको सच मानते, वे हैं स्वयं अजान॥
[illegible] बिल्ली को रहा, सत मिथ्या का ज्ञान।
नकली चूहे पर नहीं, करती झपट प्रमान॥
पर मानव को देख लो, कैसा है मतिमान।
समझ रहा पाषाण को, असली यह भगवान्॥

राम-कृष्ण महापुरुष थे, थे न ईश अवतार।
सकल सन्त दयानन्द ऋषि, कह गये बारम्बार॥
जग में जीव अनन्त है, ईश्वर केवल एक।
जो सब जग में रम रहा, समझो यह सविवेक॥
गीता के श्रीकृष्ण के, हो गये जन्म अनेक।
ईश्वर जन्म न ले सके, वही अजन्मा एक॥
महाभारत में देख लो, श्रीकृष्ण महाराज।
आप्त वीर विद्वान् थे, कहता आर्यसमाज॥
पर पुराण उसको कहें, छली-प्रपंची चोर।
सहस्रनाम गोपाल में, लिखा आप सिरमौर॥

रमण करें जो ईश में, सो तो भक्त कहायें।
राधा [illegible] गोविन्द हरि, जप का अर्थ बतायें॥
[illegible] कीर्तन करें, अर्थ न जाने लोग।
ऐसे राधा-कृष्ण का, भक्त लगावें भोग॥
यवन-ईसाई आदि सब, जग में हमी उडायें।
ऐसे कामी पतित को, हिन्दू ईश बतावें॥
ईश्वर के अवतार का, [illegible] जन देखें ख्वाब।
क्यों उसको व्यापक कहें, हमको देवें जवाब।
रामचन्द्र महाराज पर, मिथ्या दोष लगाहिं।
झूठे बेर खाये नहीं, [illegible] शबरी माहिं॥
[illegible] [illegible] को, आंख खोलकर देख।
[illegible] [illegible] [illegible] भेंट में, यह सच्चा लेख॥

अपने ही महापुरुष का करते जो अपमान।
प्रकट करें [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]॥
इस अन्धे विश्वास का, रहा दुखद परिणाम।
म्लेच्छों से पिटते रहे, उनके बने गुलाम।
अभी देश परतन्त्र है, हुवा न पूर्ण स्वतन्त्र
खान-पान व्यवहार में, चले विदेशी मन्त्र॥
'छाजूराम' संसार में, धनपति हुए अनेक।
खा-पीकर यों ही मरे, हुआ न सत्य विवेक॥

[illegible] (जिला सिरसा) में पारिवारिक सत्संग

६-१२-९२ को श्री अमरनाथ जी [illegible] ने अपने परि-[illegible] में श्री ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी गुरुकुल बठिण्डा द्वारा हवन यज्ञ सत्संग कराया। श्री वानप्रस्थी जी ने गृहस्थ सुधार पर अपना उपदेश दिया। इस अवसर पर श्री अमरनाथ जी ने एक सौ रुपये आर्यसमाज [illegible] को दान दिया। उपस्थित भाई बहिनों का चाय एवं मिठाई से सत्कार किया गया। —ओमप्रकाश वानप्रस्थी

तपोवन में आर्ष विद्या गुरुकुल का प्रारम्भ

देहरादून, २ दिसम्बर। वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून में "आर्ष विद्या गुरुकुल" चलाने का निश्चय किया गया है। इसमें समाजसेवी, राष्ट्रप्रेमी युवको को वर्णोच्चारण शिक्षा से लेकर महाभाष्य तक तथा वेदांगप्रकाश, सत्यार्थप्रकाश, आर्योपदेशक, धर्मप्रचारक, पुरोहित के रूप में तैयार किया जाएगा।

—देवदत्त बाली
मन्त्री वैदिक साधन आश्रम सोसायटी तपोवन

शराब ठेकों पर बसें रोकने से तंगी

करनाल, २३ दिसम्बर (जनसत्ता)। छोटे सम्पर्क मार्गों पर चलने वाली बसें रात के समय शराब के ठेकों पर रुकती हैं।

सूत्रों से मिली जानकारी अनुसार बसें करनाल बस अड्डे से निकली छह बजे के बाद सब सम्पर्क मार्गों पर पड़नेवाले ठेकों पर रोकी जाती है। वहां बहुत से लोग शराब लेते हैं। इससे यात्रियों जिनमें बच्चे और महिलायें होती हैं, पर गलत प्रभाव पड़ता है। हरयाणा राज्य परिवहन निगम के कई चालक रात के समय शराब का सेवन करके चलते हैं या ड्यूटी समाप्त करके अपने घर लौटने से पहले बस अड्डे पर शराब पीकर नशे की हालत में यात्रा करते हैं और अन्य यात्रियों के लिए परेशानी खड़ी करते हैं। सम्बन्धित विभाग जानकारी होते हुए भी चुप्पी साधे बैठा है।

ठेका उठवाने के लिए बच्चे भी अनशन पर

पुण्डरी, २४ दिसम्बर (निस)। आसपास के दर्जनों गावों मे धड़ल्ले की दुकानों पर शराब बिक रही है।

कई गांवों का दौरा करने के बाद पता चला है कि जिले के कई गांवों में ग्रामीणों द्वारा शराब विरोधी अभियान पूरे जोर-शोर से छेड़ रखा है। जिले के गांव क्योड़क के लोगों का आरोप है कि इस गांव में लगभग २५ दुकानें ऐसी हैं जिन पर सरेआम शराब पिलाई जाती है। कई धार्मिक स्थानों के साथ भी लोगो ने शराब के अहाते खोल रखे हैं। इसी गाव के एक नाजायज शराब बेचनेवाले ने जिसने अपना नाम बताने से इन्कार कर दिया, का कहना है कि मैं बी० ए० पास हू। मैंने रोजगार विभाग के कई वर्षों तक चक्कर काटे। उसके बाद भी बात नहीं बनी। तब से मैंने यह अवैध शराब बेचने का धन्धा शुरु किया है, इससे मुझे महीने में अच्छी आय हो जाती है। दूसरी ओर इस जिले की ५-७ पंचायतों द्वारा हर रोज उपायुक्त महासिंह मलिक को शराबबन्दी के लिए ज्ञापन दिया जारहा है।

लगभग दो माह से गाव क्योडक मे चल रही ग्रामीणो द्वारा ठेके का घेराव शुरु कर दिया है।

यहां के स्कूली बच्चे भी ठेके को हटाने की माग को लेकर हररोज अनशन पर बैठने शुरु होगये हैं। इस गांव में फैसला किया गया है कि जब तक शराब का ठेका नहीं उठाया जाता तब तक अनशन जारी रहेगा।

साभार—दैनिक ट्रिब्यून

धूम्रपान पर ५० प्रतिशत कर

अबुधाबी खाडी देशो मे धूम्रपान के अभ्यस्त लोगों को अगले वर्ष मार्च माह से पचास प्रतिशत कर चुकाना होगा। विश्व मे धूम्रपान करनेवालो को सम्भवत इतना अधिक कर अन्यत्र कही नहीं चुकाना पडता। खाडी देशो की सरकारें धूम्रपान को हतोत्साहित करने के लिए अनेक कदम उठा चुकी हैं और वहां अभी भी सिगरेट और तम्बाकू पर ३० प्रतिशत कर चुकाना पडता है। कर वृद्धि का निर्णय खाडी देशों की सहयोग परिषद् की पिछले सप्ताह यहा हुई शिखर बैठक में लिया गया। इन देशों में अनेक सरकारी कार्यालयों में धूम्रपान पर रोक है। जबकि होटल जैसे कई प्रतिष्ठानो में धूम्रपान नहीं करनेवालों के लिए पूरे-पूरे कक्ष आरक्षित कर दिये जाते हैं। मद्यपान पर भी ३० प्रतिशत कर की व्यवस्था है। पिछले कुछ वर्षों में यह भी बहुत अधिक खर्चीला नशा हो गया है। खाडी सहयोग परिषद् में सयुक्त अरब अमीरात, बहरीन, ओमान, कतर, सऊदी अरब और कुवैत शामिल हैं। इनमें से पहले चार देशो में शराब केवल गैर मुसलमानों को ही उपलब्ध हो पाती है।

साभार—नवभारत टाइम्स

नरवाना क्षेत्र की सभी पंचायतों द्वारा शराबबन्दी के प्रस्ताव

नरवाना, २१ दिसम्बर (भवदीय)। शराबबन्दी अभियान के तहत नरवाना उपमण्डल के लगभग सभी गांवों की पंचायतों ने अपने-अपने गांव में देसी शराब के ठेके तुरन्त हटाने के प्रस्ताव पास करके जिला आबकारी एवं कराधान आयुक्त श्री पी० डी० अग्रवाल को भेज दिये हैं। उन्होंने यह प्रस्ताव सरकार को भेजकर आगामी कार्यवाही करने की आज्ञा मांगी है। श्री अग्रवाल ने बताया कि सरकार इस पर गम्भीरता से विचार कर रही है तथा शीघ्र निर्णय ले लिया जाएगा।

लत बुरी महादुखदाई

कमला, कस्तूरी, किरण, गई चमेली पास।
सभी पूछने आई तू, कैसे रहे उदास॥
कहा चमेली ने बहिन, पिय हो रहा खराब।
क्या बतलाऊं सखि, पीते रोज शराब॥

नहीं छिपाई छिपे बुराई, सच बताऊं आज बहिन।
पीवें रोज शराब पति मेरा, रहे ना ठीक मिजाज बहिन॥

बोलूं तो करे लड़ाई। लत बुरी महादुखदाई॥
करता मेरी पिटाई अब तुम लगाओ अन्दाज बहिन।
जरा प्रेम सगीत वहां कहां बजें बेसुरे साज बहिन॥१

घर घर मद पियक्कड आते, खुद पीते और पिलाते।
चारों ओर मचाते नशे में बदल जाये आवाज बहिन।
नारी जाति तंग हो रही, बिगड़ा सकल समाज बहिन॥२

खुल रहे जगह-जगह पर ठेके। आते बोतल ले लेके॥
मनमाने पैसे देके इनको रही ना शर्म लिहाज बहिन।
रहे नशे में चूर बताओ कैसे होय इलाज बहिन॥३

नारी जाति दुखी है भारी, आर्यजनो से विनय हमारी।
आर्यजनों के बिना यहां कोई करे ना सही सुजान बहिन।
वैदिकधर्म महान् देश में, सबका है सरताज बहिन॥४

रचियता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, दिल्ली

सिरसा में बलिदान दिवस

दिनांक २३-१२-९२ को आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल सिरसा में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर गीत एवं भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता माननीय श्री बृजभूषण कौशिक एस डी एम सिरसा ने की। इस अवसर पर नौ विद्यालयों के छात्रों ने कार्यक्रम में भाग लिया। चल विजयोपहार जौनियस हाई स्कूल सिरसा ने प्राप्त किया।

इस अवसर पर विद्यालय के प्रबन्धक डा० आर० एस० सांगवान ने विद्यार्थियों को स्वामी जी के पदचिह्नों पर चलने के लिए प्रेरित किया। भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल के छात्र सुरेशकुमार ने और गीत प्रतियोगिता में प्रथम स्थान जौनियस हाई स्कूल सिरसा के सुदेश मेहता ने प्राप्त किया।

—दलीपसिंह प्रधानाचार्य

शराब हटाओ,

देश बचाओ

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन . ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० क्र० २३२०७/७३ रजि० नं० P/RTK-४६ सृष्टिसंवत् १ ९६, ०८, ५३, ०९३

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २० अंक ८ १४ जनवरी, १९९३ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

मकर संक्रान्ति पर्व क्यों ? और कैसे मनायें ?

हरिराम आर्य, पुस्तकाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा

सृष्टि को आयु मापने के लिए भारतीय ज्योतिष में १२ राशियों को आधार मानकर, क्रमश उन्हें, १-मेष, २-वृष, ३-मिथुन, ४-कर्क, ५-सिंह, ६-कन्या, ७-तुला, ८-वृश्चिक, ९-धनु, १०-मकर, ११-कुम्भ, १२-मीन नाम दिए हुए हैं। सृष्टि गणना की यह सौर पद्धति है। जितने समय में पृथ्वी सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करती है, उस काल को सौर का एक वर्ष माना जाता है। जिस वर्तुलाकार परिधि पर पृथ्वी परिभ्रमण करती है, उसका नाम क्रान्तिवृत्त रखा हुआ है। पृथ्वी के सक्रमण के साथ सूर्य से पृथ्वी की दूरी और निकटता होने पर ऋतुए बनती रहती हैं।

अपने सक्रमण में पृथ्वी जब उत्तर की ओर गमन करती है तो उसे उत्तरायण और दक्षिण की ओर गमन करती है तब दक्षिणायन कहते हैं। इसी आधार पर दिन और रात भी घटते और बढते हैं। पृथ्वी सक्रमण करती हुई जब दक्षिण दिशा की पूरी परिधि पर चली जाती है तब शीत अपनी चर्मसीमा तक बढ जाती है। मकर की सक्रान्ति १०वी सक्रान्ति है। मकर सक्रान्ति से पृथ्वी उत्तरायण का सक्रमण करना आरम्भ कर देती है। घोर शीत से त्राण पाने की आशा से भारतीय जीवन मे इसीलिए मकर सक्रान्ति को विशेष महत्त्व दिया गया है।

आर्यों के जीवन में ऋतु-विज्ञान के महत्त्व को मानकर उसके अनुकूल रहन-सहन, कृषि आदि व्यवसाय, विवाह इत्यादि आमोद-प्रमोद के समय निर्धारित हैं। क्योंकि प्रत्येक परिवर्तन के मोड को राशि नाम दिया गया है उसी क्रम से बारह मास भी बनते हैं। इन्ही बारह राशियों के नाम पर फलित ज्योतिष का ढोंग लगाकर धूर्त लोग, मीन, मेष, कुम्भ आदि के नाम पर शुभाशुभ फल जताकर मूर्खों को लूटा करते हैं। अन्यथा यह राशिया सौर संवत का आधार हैं। इसमे माघ मास की अथवा माघांत की मकर सक्रान्ति जीवन में हर्षोल्लास भरनेवाली होती है।

मकर सक्रान्ति स्थानीय उपलब्धियो के आधार पर पूरे देश के विभिन्न भागों में थोडी बहुत साम्यता के साथ मनाया जाता है परन्तु प्रात.काल मे स्नान, घर-द्वार की स्वच्छता, जीवमात्र की रक्षा का व्रत, गौवो को विशेष दाना घास चराना, खुले में अग्नि जलाकर तापना और परस्पर सामाजिक कार्यों का विश्लेषण इस पर्व के कार्यकलाप हैं। सर्वाधिक महत्त्व का कृत्य है दानशीलता की भावना का उद्रेक। देवियां बहुत सवेरे से पर्व की तैयारी में जुट जाती हैं। दोपहर बाद इकट्ठी हो सुन्दर परिधान धारणकर मधुर गीत गाती हुई कोई भी सामुदायिक सेवा नि स्वार्थ सामाजिक सेवा भावना से करती हैं। उत्तरी भारत मे पूरे दिन यज्ञ दान चलता रहता है।

अपने से बडो का मान बढाने के लिए उन्हें उत्तम भोजन कराने के उपरान्त सुन्दर वस्त्र, सौड सौडिया, कुछ नकद दान भी देते अथवा देती हैं। महिला इकट्ठी होकर पूज्य की स्तुति के गीत गाकर वातावरण को अत्यन्त रमणीय बना देती हैं। किस सम्बन्धी को इस बार क्या देना है यह पहले ही निर्धारित कर लिया जाता है। कई महिलाये दूसरे गांव चलकर अपने पूज्यो का मनाने के लिए जाती हैं। वृद्धजनों के लिए आदर का यह उदाहरण भारतीय परम्परा की अनुपम देन है।

गुड, अग्नि, तिल, तेल, तूल (रुई) के गुणो मे सर्दी की निरोधक शक्ति को मानते हुए मकर सक्रान्ति के अवसर पर जलस्नान, अग्निताप, गुड और तिल से बने लड्डू, रेवडिया, मूगफलिया आपस में बाटी जाती हैं। पजाब मे मकर सक्रान्ति की पूर्व सध्या को यह पर्व लोहडी के नाम से खूब धूम-धाम के साथ मनाया जाता है। भुनी मूगफली, रेवडी और तिल के लड्डू बाटे और खाये जाते हैं। हरयाणा मे मकर सक्रान्ति स्नान, अग्निताप, यज्ञ हवन, दान, सामुदायिक सेवा के साथ मनाया जाता है। भोजन मे मलीदा और शुद्ध घी, जो जितना घी खा सके होड लगाकर खाते थे।

आजकल लोग आलसी प्रमादी बनते जारहे हैं। व्यायाम करना छोड दिया है। चाय और सर्वनाशनी शराब की लत बढने लगी है। अनेक रोग और हाजमे की खराबी के कारण उतना घी पचा नहीं पाते इसलिए घी तोड मलीदे का स्थान दूसरे भोजन लेने लगे हैं।

हरयाणा के गावो मे अब भी सामूहिक कार्यों के निर्णय लेने के लिए मकर सक्रान्ति के दिन को महत्त्व देते हैं। प्राय आर्यसमाजो मे सदस्य लोग अपने परिवार के अन्य लोगो सहित इकट्ठे होकर यज्ञ हवन, प्रार्थनाए करते हैं। आर्यसमाज के कार्य तथा जमा खर्च का लेखा जोखा करते हैं। परम्परा से चला आरहा मकर सक्रान्ति पर्व पूर्णत राष्ट्रीय व सामाजिक मेल-मिलाप, सम्मान तथा आदर का प्रतीक है।

तदनुसार आर्यसमाजो को हर्षोल्लास तथा परोपकार और सामाजिक विकास एव एकता की कामना करते हुए मकर सक्रान्ति पर प्रात काल की शुभ वेला मे चार बजे बिस्तर त्याग, ईश्वर की वदना कर, नित्य नियमों से निवृत्त हो, सामूहिक स्थानो यथा आर्यसमाज मन्दिरो मे इकट्ठे बैठकर यज्ञ-हवन प्रार्थना के उपरान्त आर्यसमाज के विकास तथा प्रगति की समीक्षा करनी चाहिए। गृहस्थ तथा सामाजिक लेन-देन मे अथवा अन्य विषयो को लेकर कभी कभार जो आपसी मतभेद होजाते हैं उन्हें दूर कराने के लिए प्रयत्न करे। धर्मप्रचार का आगामी कार्यक्रम तैयार करें। आर्यों का जीवन, अपने लिए जीना ही नहीं है अपितु जीव मात्र, चराचर जगत् के लिए कल्याणकारी होना चाहिए।

आर्यकुमारो मे वेदमन्त्रोच्चारण, श्लोकगान प्रतियोगिताए, तथा योग क्रियाओ के प्रदर्शन और कबड्डी आदि खेल आयोजित किये जायें। अपने नगर विकास के कार्यों की रूपरेखा तैयार करे। देश मे घट रही सगतियों विसगतियो पर निष्पक्ष विचार करे और पूर्वजो की भाति अपने से बडो का आदर सत्कार दान दक्षिणा देकर उन्हे तृप्त करे। वैदिक आचार-विचारवाली परम्परा के मकर सक्रान्ति पर्व का पुण्य लाभ यही है कि हम अपने, मानसिक, धार्मिक, सामाजिक एव राष्ट्रीय उत्थान के लिए गत विश्लेषण कर आगामी कदम आगे बढाए।

दूध और शराब का अन्तर समझना होगा

यह कितनी आश्चर्य की बात है कि मनुष्य जीवन की उन तमाम मौलिक, प्राकृतिक, अनिवार्य एवं जीवन सुलभ ससाधनों की जानबूझकर उपेक्षा करके अपने सुखभोग, सुविधा और मनोरंजन जैसे क्षणिक भौतिकवादी साधनो के चक्कर मे बड़ी उत्सुकता और जोश के साथ बहने को तत्पर है।

मालूम नही आज आदमी को क्या हो गया है, वह विकास और आधुनिकता के नाम पर दिन-प्रतिदिन नए-नए विनाशकारी सुख के साधनों की खोज करता जा रहा है, जिसके विध्वंसकारी परिणाम भी वह हर क्षण देख रहा है, भुगत रहा है। अब इस क्षणिक सुख आनन्द ने सामाजिक-पारिवारिक एव राष्ट्रीय जीवन मे धीरे-धीरे घोलने वाले मीठे जहर के रूप मे फैलने हेतु लोगो के मन-मस्तिष्क को नकारात्मक एव उत्तेजक दिशा मे प्रवृत्त कर दिया है।

इन तमाम विडबनाओ के बीच जो सबसे चिंतित करनेवाली स्थिति है वह यह है कि लोग जाच-परख कर तथा परिणाम से पूर्णअवगत होकर भी अपनी सुखद जीवन के लिए दुखद मार्ग ही चुनते हैं—इस तथ्य से कोई अपरिचित नहीं हो सकता कि जीवन के लिए शराब कितनी विनाशकारी है और दूध कितना अनिवार्य। जिस दूध ने सृष्टि के तमाम शिशुओ को पालकर बडा किया, उसी ने दूध को दुत्कार दिया और शराब के सागर मे डुबकिया लगाकर सामाजिक माहौल को अपराध के गर्दिश मे उलझाने हेतु न्यौता दे दिया है।

आधुनिक विश्व के सामाजिक जीवन मे सुख-आनन्द के लिए उपयोग को जानेवाली तमाम वस्तुओ मे सबसे खतरनाक व तुरन्त परिणाम देनेवाली चीज शराब है। इसका प्रभाव जितना ही तीव्र है इसके प्रति लोगो का रुझान भी उतना ही बलवती है। शराब ग्रहण करना एक प्रगतिशील जमात या व्यक्ति की पहचान है। यह एक ऐसा फैशन है जिसे अपनाना प्रगतिशील कहलाने एव कुलीनता प्रदर्शित करने हेतु आवश्यक हो गया है। इसे निम्नस्तर से लेकर उच्चस्तर तक अपनी हैसियत के मुताबिक लोग उपयोग करते है। जो इसका प्रयोग नही करते उन्हे पुरातन पथी, साधु या गाधीवादी कहकर वे खिल्ली उडाते हैं। शराब तो आज के लोगो के बडप्पन का मापदण्ड है। स्टेटस सिंबल है।

हर इन्सान जानता है शराब की तुलना कभी भी दूध से नही की जा सकती। दूध जन्म के समय से लेकर वृद्धावस्था तक स्वस्थ, बलशाली और सक्रिय शारीरिक-मानसिक क्षमता प्रदान करता है। दीर्घायु बनाता है। मनुष्य जब शैशव अवस्था मे होता है तो दूध ही उसके जीने का एकमात्र आधार होता है, जबकि वह इसके अभाव मे काल-कवलित हो सकता है। जब शिशु दूध छोडता है तो यही दूध एक दूसरी मा या गो-माता से उसे प्राप्त होता है और यही दूध शिशु बालक को धरती माता को गोद मे खेलने-कूदने एवं होश सभालने के योग्य बना देता है। यह विचारणीय है कि उस दूध के प्रति आज हम कहा तक कृतज्ञ हैं?

दूध की तुलना अमृत से की गई। यह देवताओ के भोजन की मुख्य सामग्री है। यह पैदा होनेवाले शिशुओ का प्रथम पेय है, दूध ब्रह्म शक्तिदाता है। यह जीवन शक्ति प्रदान करता है। दूध एकमात्र और सवश्रेष्ठ ऐसा आहार है जिसमे सतुलित आहार के सभी गुण, तत्त्व विद्यमान है। अत यह शरीर की सभी प्रकार की आवश्यकताओ की पूर्ति करने मे सक्षम है। यह मनुष्य को दीर्घायु जीवन प्रदान करता है। इसके अलावा दूध ही वह खाद्य पदार्थ है जिसका सैकडो तरह से भिन्न-भिन्न रूपो मे मिष्ठान्न या अन्य पदार्थ बनाकर ग्रहण किया जा सकता है। तथापि इसके सभी गुण व तत्त्व अपना प्रभावशाली अस्तित्व बरकरार रखते है। दूध को उचित तरीके से सेवन करने से किसी प्रकार की हानि नही हो सकती है। यह मनुष्य को जीवन, सुख, सन्तोष, तृप्ति, प्रसन्नता, निरोगता, लम्बी उम्र, स्फूर्ति आदि प्रदान कर रहा है। अत स्पष्ट है कि मानव-जीवन मे दूध की महत्ता निर्विवाद है। फिर सवाल उठता है कि अमृत समान गुण रखनेवाले दूध को त्यागकर लोग शराब जैसे विनाशकारी पेय की ओर इस कदर क्यो आकर्षित होते हैं?

शराब ने न तो आज तक किसी को पाला, न शक्ति प्रदान की, न रोगी को स्वस्थ्य किया। बल्कि ठीक इसके विपरीत पीनेवाले के स्वास्थ्य को बर्बाद किया। परिवार मे कलह पैदा की तथा सम्पत्ति का नाश हुआ। घर और समाज की शान्ति को इसने खत्म कर दिया और पूरे समाज के लिए एक अत्यन्त हेय स्थिति पैदा की है।

शराब ने मदांधता फैलाई है। इसका प्रभाव हर जगह विनाशकारी रहा है। एक जापानी लोकोक्ति है—"आदमी पहले शराब पीता है, फिर शराब-शराब को पीती है—अर्थात् बार-बार पीने की इच्छा होती है और अन्त मे शराब आदमी को ही पीने लगती है।" लेकिन अफसोस है कि दूध की सुनिश्चित स्वास्थ्य और शक्तिवर्द्धकता को भूलकर शराब की मादकता लोगों को प्यारी लगने लगी है। यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण बात है। पल-दो पल के लिए गम और तनाव, चिंता को तो यह अवश्य दूर करती है किन्तु यही क्षणिक आनन्द आदमी को अपना स्थाई गुलाम बना लेता है और इन्सान बार-बार उसकी ओर प्रवृत्त होता है। मद्यपान कर नशे मे नियन्त्रण खोता है। कलह एव अपराधिक योजनाएं बनती हैं। नशाबाज या शराबी अपने धन, मान और जान तो खोता ही है, पूरे परिवेश को भी इससे बहकावे की प्रेरणा मिलती है। शराब आज की दुनिया मे अपराध का सबसे बडा कारण है। शराब से ही सेक्स, डाका, हत्या, षड्यन्त्र सम्बन्धी एव अन्य विध्वसकारी योजनाएं बनती और कार्यान्वित होती हैं। राज्य की कानून-व्यवस्था बिगडने का सबसे बडा कारण शराब या मद्यपान है।

शराब इन्सान को पशु बना देती है। अकबर की पंक्ति है—
मय उन्होने पी अब उनके पास क्यों कर दिल लगे।
जानवर इक रह गया इन्सान रुखसत हो गया॥
शेक्सपीयर ने जाम के प्याले का आकलन यों किया है—
"शराब का एक प्याला मनुष्य को बुद्धिहीन बनाता है, दूसरा प्याला पागल बना देता है और तीसरा डुबो देता है अर्थात् चेतनाहीन बना देता है।"

यह हकीकत है कि शराब अपराधो की जड है। इससे अपराध कर्म फैलता है। इस तथ्य से वाकिफ होने के बावजूद हर व्यक्ति वही कसूर करता है। इस विषय पर व्यवस्था और स्वयसेवी सगठनो को विचार करना चाहिए। हर नागरिक को इसके लिए जागरूक होना और पहल करनी होगी।

यह भी हकीकत है कि शराब अपराधो को जड है। इससे अपराध कर्म फैलता है। इस तथ्य से वाकिफ होने के बावजूद हर व्यक्ति वही कसूर करता है। इस विषय पर व्यवस्था और स्वयसेवी सगठनों को विचार करना चाहिए? किन्तु लोगो को कौन समझाए? यह भी तो सच है कि—"विनाशकाले विपरीतबुद्धि"।

हमारे देश के सामने भी आज यह स्थिति विद्यमान है। एक ओर गाधी, बुद्ध, विवेकानन्द, गुरुनानक, महावीर रामकृष्ण परमहस के विचार दुग्धवत् शीतलता स्वास्थ्य और प्रगति की गारन्टी देते हैं। दूसरी तरफ कट्टरपथियो और धर्मांधता फैलाने वालो की जहर से भरी शराब जैसी मादकता लो हुई उन्माद बातें भी जन-जन पर थोपी जा रही हैं। परिणामत समाज विनाश की ओर बढ रहा है। दुर्भाग्य यह है कि हमारे समाज पर दूध और इसका प्रभाव घट रहा है तो सतो की वाणी का असर भी लुप्त हो रहा है। शराब के नशे के पीछे हम पागल हो रहे हैं। इसीलिए कट्टरता, धर्मांधता, पशुता और अपराधकर्मों की ओर हम लिप्त हो रहे हैं। इससे कभी भी समाज का कल्याण सभव नही है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि हमे शराब और दूध के महत्त्व को इसके अन्तर को तुलना कर, इसके प्रभाव व महत्ता को पहचानना होगा। इसका आकलन कर समय को उचित मागो पर तर्क सगत व विवेकपूर्ण कदम उठाना होगा।

शराब कभी दूध नही हो सकती। सुबह-शाम शराब पीनेवाला स्वय परिणाम जानता है और लोग भी इससे अवगत हैं। घोर निराशा वाली स्थिति में आशा की यदि कोई किरण है तो यही कि शायद फिर कोई गाधी या बुद्ध पैदा हो जाए।

—दिनकर शर्मा

शराब के ठेकेदार भाइयों से अपील

आजकल शराब के धन्धे में लगे भाई हरयाणा सरकार पर अपनी आबकारी नीति मे परिवर्तन करने बारे जोर दे रहे हैं जिससे उन्हें अगले वर्ष के लिए सस्ते दामो पर ठेके मिल सकें और शराब की बिक्री बढाकर ज्यादा धन कमा सकें। उन्होंने यह भी धमकी दी है कि यदि सरकार उनकी इन मागो को स्वीकार नही करती तो वे अगले वर्ष के लिये की जानेवाली शराब के ठेको की नीलामी का बहिष्कार करेंगे। इन भाइयों मे कई ऐसे हैं जो एक लम्बे समय से शराब के ठेको को नीलामी मे लेते आ रहे हैं और कुछ नये लोग भी इस धन्धे मे आने लगे हैं। ये भाई भी समाज का ही अग हैं और अब इन्हें भी सोचना चाहिए कि जिस धन्धे से वे जुडे हैं, क्या वह अनैतिक नही है ? क्या शराब से लोगो के हो रहे सर्वनाश में भागीदार नही हैं। मुझे कुछ ऐसे भाई मिले हैं जो कहते हैं कि वे शराब के ठेके तो जरूर चला रहे हैं लेकिन वे स्वय कभी शराब नही पीते। जब वे खुद शराब पीने को अच्छा नहीं मानते और अपने ठेके के गद्दो पर, देवी-देवताओ के चित्र लटकाकर उन्हे धूप बत्ती देते हैं तो उन्हे अपने दूसरे भाइयो को शराब पिलाने का आकर्षण देकर, उन्हें उजाडने का क्या हक है ? शराब के ठेकेदार भाइयों को भी समझना चाहिये कि वे जिम पाप व अनैतिकता की कमाई में लगे हैं, वह उन्हे दूसरो को बर्बाद करके मिल रही है और उनके हाथों आने वाली पीढियों का भविष्य अन्धकारमय होता जा रहा है। ये भाई इस पाप व अनर्थ से यह कहकर नही बच सकते कि जब सरकार स्वय शराब को बढावा दे रही है तो इसमे उनका क्या दोष ? इसमे कोई दो राय नही कि सरकार स्वय शराब के उत्पादन व सेवन को लगातार बढावा दे रही है, लेकिन जब शराब को दुकानो को लेनें वाला कोई नही होगा तो सरकार इन्हें किसे देगी ? शराब के हाथो लाखो परिवार बर्बाद हो रहे हैं और वहा की सुख शान्ति खत्म हो चुकी है। इन परिवारो मे जो कलह, तनाव व अशान्ति है, उसके लिए सरकार के साथ-साथ शराब के ठेकेदार भाई भी बराबर के जिम्मेदार है। क्या इन भाइयों को नही मालूम कि बलात्कार, हत्याओं, चोरियो, डकैतियों जैसे जघन्य अपराधो का मुख्य कारण शराब ही है ? यही जननी है सब पापो एव अनाचार की।

शराब की बिक्री से मिलनेवाली पाप की कमाई से समाज का सर्वनाश तो उनके (ठेकेदारो के) व सरकार के हाथो हो ही रहा है, वे तथा उनकी अपनी सन्तानें भी इस अनैतिक कमाई को भोगते हुए कभी सुखी नही रह पायेगी। अब वक्त आ गया है कि शराब के व्यवसाय में लगे भाई, उस समाज के हित में भी कुछ सोचे जिसमें कि वे खुद भी रह रहे हैं और इस अनैतिक धन्धे को छोडकर कोई अन्य अच्छा व्यवसाय या व्यापार शुरू करें जिससे उन द्वारा किये जा रहे अनर्थ का बोझ कुछ कम हो सके। इससे उनके तथा सारे समाज के जीवन को एक नई एव स्वस्थ दिशा मिलेगी। सरकार को अपनी कमाई की पडी है और उसे कतई चिन्ता नहीं कि शराब की बिक्री से उन्हे जो राजस्व मिलता है, वह लोगों के सर्वनाश से निकलता है।

शराब के ठेकेदार भाई, अपना यह धन्धा छोडकर, कोई दूसरा समाज उपयोगी व्यवसाय अपनाकर, सरकार को भी शराबबन्दी लागू करने के लिए मजबूर कर सकते हैं। ऐसा करके वे अब तक किए अनर्थ के लिये सही पश्चाताप भी कर सकेंगे। यदि ये भाई अब भी समय की नब्ज को नहीं पहचानते तो लोग उनको यह बता देंगे कि शराब के ठेको की नीलामी उन्हें कितनी महगी पड सकती है। लोगो में अब यह स्वर गूज उठा है कि शराब ने उन्हें कहीं का नही छोडा और वे इस भयकर गुलामी से छुटकारा पाने के लिए कुछ भी कर गुजरने को तैयार हैं। सरकार को भी, आगामी वर्ष के लिए ठेकों की नीलामी करने में लोगो मे व्याप्त जिस गहरे रोष व गुस्से का सामना करना पडेगा, उसकी खबर शायद नही है।

आशा है कि हमारे ये भाई इस अपील पर गम्भीरता मे विचार करते हुए, समाज के व्यापक हित में, शराब जैसे घृणित एव जनविरोधी धन्धे को छोडकर, कोई अन्य समाज उपयोगी व्यवसाय अपनाकर, बुद्धिमत्ता का परिचय देंगे। यदि इतना कुछ कहने पर भी ध्यान नहीं दिया जाता तो हरयाणा के लोग इस भयानक स्थिति से स्वय निपटेंगे और फिर न कहना कि हम इस चेतावनी को सुन लेते तो अच्छा होता।

(विजयकुमार)
सयोजक, हरयाणा शराबबन्दी समिति,
आर्यप्रतिनिधि सभा, हरयाणा, रोहतक।

प्रश्न नारी शिक्षा का नहीं, सहशिक्षा का है, नारी सुरक्षा का है

आर्यसमाज अपने प्रारम्भिककाल से ही नारी शिक्षा का समर्थक रहा है। आर्यसमाज ने ही उन्हे वेदाध्ययन का भी अधिकार दिया है। आर्यसमाज के कन्याओं के लिए विभिन्न स्थानो पर जब स्कूल और गुरुकुल खोले थे, उस समय उन्हे घोर विरोध का भी सामना करना पडा था। आर्यसमाज को शिक्षाजगत् की गौरवपूर्ण सस्था गुरुकुल कागडी हरिद्वार है। जब इस सस्था के सस्थापकों ने यह गुरुकुल लडको के लिए खोला था, उस समय उनके मन मे कन्याओं के लिए भी गुरुकुल खोलने की भावना बलवती हो उठी थी और उसी का साकार रूप कन्या गुरुकुल देहरादून है। इसके बाद तो कन्याओं के लिए गुरुकुलों तथा पाठशालाओ की एक शृखला हो चल पडी।

पिछले दिनो समाचार पत्रो मे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय मे नारी शिक्षा को लेकर, अनेक भ्रामक समाचार प्रकाशित हुए हैं। गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के अन्तर्गत "आर्य कन्या महाविद्यालय देहरादून" द्वितीय परिसर के रूप मे पहले से ही चल रहा है। गुरुकुल कागडी की व्यवस्थापिका तथा अधिकारियो की हार्दिक इच्छा है कि हरिद्वार मे भी एक "आर्य कन्या महाविद्यालय" अलग परिसर मे चलाया जाए। इसके लिए आवश्यक है कि सरकार की ओर के मान्यता, अनुदान तथा नागरिकों की ओर से परिसर निर्माण मे सहयोग प्राप्त हो।

आर्यसमाज नारी शिक्षा के साथ-साथ नारी-सुरक्षा भी चाहता है। इसलिए सहशिक्षा का समर्थक नही है। हम चाहते हैं कि नारी शिक्षा अवश्य हो पर वह अलग परिसर मे हो, जिससे पिछले दिनो अजमेर मे हुई नारी-शोषण जैसी घटनाओ की पुनरावृत्ति न हो। गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार की अपनी परम्पराए हैं तथा इसकी विशिष्ट प्रवृत्तिया तथा सेवाओ को ध्यान मे रखकर ही इसे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने "मानित विश्वविद्यालय" के रूप में मान्यता प्रदान की है। इस विश्वविद्यालय की अपनी विशिष्ट शैक्षणिक पद्धति है अत इसको प्रवृत्तिया अन्य विश्वविद्यालयो को भाति सह-शिक्षा नही हो सकती। यह सिद्धान्त का प्रश्न है तथा इस सम्बन्ध में सभी अधिकारियो-परिद्रष्टा, कुलाधिपति, कुलपति तथा सभी सवैधानिक निकायों-शिष्ट परिषद्, कार्य परिषद्, विद्वत् परिषद्, का एक ही मत है कि यहा पर सहशिक्षा नहीं हो सकती तथा कन्याओ के लिए अलग परिसर मे शिक्षण-व्यवस्था की जानी चाहिए।

कुलपति श्री सुभाष विद्यालकार को आदेश दिए गए हैं कि नारी शिक्षा व्यवस्था के सम्बन्ध में अवाञ्छनीय घटनाओ की जाच हो तथा इस सम्बन्ध में अविलम्ब उचित कार्यवाही की जाए।

(प्रो० शेरसिंह)
कुलाधिपति

महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी का स्मृति समारोह

स्वतन्त्रता सेनानी एव सभा के पूर्व उपप्रधान महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी का प्रथम स्मृति समारोह १६ जनवरी ९३ को सैनी उच्च विद्यालय रोहतक मे प्रात ११ बजे आरम्भ होगा।

कामरेड ईश्वरसिंह सैनी

नीमली जिला भिवानी में शराब के ठेके पर धरणा आरम्भ

(निज संवाददाता)

दिनांक १० जनवरी ९३ को सतगामा की एक विशेष बैठक ग्राम नीमली (जिला भिवानी) में श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में हुई जिसमें सतगामा के अतिरिक्त बिरोहड़ के बारह ग्राम के प्रधान कप्तान छतरसिंह एवं श्री बलवीरसिंह पूर्व सरपंच आदि ने भाग लिया।

श्री बलवीरसिंह पूर्व मुख्याध्यापक तथा सरदारसिंह सरपंच नीमली ने इस बैठक में उपस्थित सभी का स्वागत एवं धन्यवाद किया और अपने ग्राम में इस समय चल रहे शराब के ठेकों को तुरन्त प्रभाव से बन्द करवाने हेतु निश्चय करने का सुझाव दिया।

श्री सुमेरसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज स्वरूपगढ़, श्री सूरतसिंह सरपंच बिगोवा, श्री बलवीरसिंह पूर्व सरपंच बिरोहड़ (बारह की ओर से) आदि ने शराब पर पूर्ण पाबन्दी लागू करने पर बल दिया तथा सभा द्वारा चलाये जा रहे शराबबन्दी अभियान को सफल करने का समर्थन किया और सतगामा के ग्रामों को शराबबन्दी ग्राम बनाने के पवित्र कार्यक्रम को सफल करने का संकल्प किया।

श्री विजयकुमार जी संयोजक हरयाणा शराबबन्दी समिति ने बैठक में बोलते हुए बताया कि शराब के बढ़ते हुए प्रचार तथा प्रसार से जनसाधारण का विनाश हो रहा है। अतः इस महामारी से छुटकारा पाने के लिए हम सभी को भरसक प्रयत्न करना होगा। अतः आप आज से ही इस ग्राम के शराब के जहररूपी ठेके को बन्द करवाने के लिए धरणा आरम्भ कर देवें। इस पवित्र कार्य में ग्रामीण महिलाओं को भी सम्मिलित करें जिससे सफलता आसान हो जावेगी। श्री सूबेसिंह सभामन्त्री ने इस बैठक में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए हरयाणा में शराबबन्दी गतिविधियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। आपने चण्डीगढ़ में हरयाणा के आबकारी एवं कराधान विभाग के आयुक्त के साथ श्री विजयकुमार जी के साथ ५ जनवरी को हुई भेंट का उल्लेख करते हुए बताया कि उन्हें स्पष्ट रूप से सचेत किया कि जिन पंचायतों ने शराबबन्दी के प्रस्ताव करके भेजे हैं, वहां शराब के ठेकों की नीलामी का पूरी शक्ति के साथ विरोध किया जावेगा। इस अवसर पर जिला भिवानी के अनेक ग्रामों से पहुंचे सरपंचों ने भी आयुक्त के सम्मुख बयान दिये कि हमने ग्राम की भलाई के हितों के लिए स्वेच्छा से शराबबन्दी के प्रस्ताव पारित करके भेजे हैं। अतः अपने ग्रामों में ठेकों की नीलामी का जमकर विरोध करेंगे। सतः सतगामा के ग्रामों में जहां भी ठेके हैं उन्हें बन्द करवाकर यश के भागी बनें।

सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह ने बैठक में अपनी दक्षिण भारत की यात्रा का विवरण बताते हुए कहा कि वहां की महिलाओं ने शराब के ठेकों को नीलामी बन्द करवाने के लिए पूरी शक्ति लगा दी और नीलामी करनेवाले सरकारी अधिकारियों का घेराव किया। अतः आप अपने अपने ग्रामों में महिलाओं को भी इस पवित्र कार्य में सम्मिलित करें। क्योंकि शराब पीनेवालों का अत्याचार इन्हें सहन करना पड़ता है।

आपने हरयाणा सरकार को शराब को बढ़ावा देने की नीति की आलोचना करते हुए कहा कि शराब की आमदनी से चलनेवाली सरकार कल्याणकारी नहीं हो सकती। आपने दोनों विश्वयुद्धों का उदाहरण देते हुए बताया कि इनमें शराब का सेवन करनेवाले सैनिकों की पराजय हुई थी। अतः हमें जनता को शराब पिलाने के लिए प्रोत्साहन करनेवाली सरकार का विरोध करना चाहिए और शराबबन्दी सत्याग्रह को सफल करना चाहिए।

श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने उपस्थित समूह को शराब से होनेवाली हानियों की चर्चा करते हुए कहा कि यदुवंशी, राजपूतों तथा मुगलों का राज्य शराब के नशे में फंसने पर समाप्त हुआ। आपने हरयाणा के अनेक ऐसे सम्पन्न परिवारों की कथा सुनाई जो शराबी बनने पर आज दर-दर की भीख मांग रहे हैं।

हरयाणा बनवाने के लिए हिन्दी सत्याग्रह आन्दोलन में ५० हजार सत्याग्रहियों ने जेलों में कैदों की सरकार द्वारा कष्ट सहन किये थे परन्तु आज के कुशासकों ने हरयाणा में दूध दही के स्थान पर शराब की नदियां बहाकर हरयाणा की पवित्रता मिट्टी में मिला दी है। अतः इन शराब समर्थक शासकों को हरयाणा की गद्दी से उतारने के लिए आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के शराबबन्दी आंदोलन को सफल करने हेतु कम से कम ११ सत्याग्रही तथा ११००) प्रत्येक ग्राम से सभा को भेजें। इस अवसर पर श्री हरध्यानसिंह ने भी शराबबन्दी पर प्रभावशाली गीत सुनाया। इन नेताओं की अपील पर नीमली की पंचायत की ओर से १४ सत्याग्रहियों की सूची तथा ११००) दान की राशि सभा को दी तथा उसी समय ग्राम के शराब के ठेके पर धरणा आरम्भ कर दिया।

झज्जर में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान समारोह

वैदिक कन्या उच्चविद्यालय झज्जर जिला रोहतक के प्रांगण में दिनांक ६ जनवरी ९३ को श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान समारोह धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें (१) स्वामी श्रद्धानन्द जी एक युगपुरुष, (२) मजहब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना, (३) वर्तमान शिक्षाप्रणाली विषयों पर झज्जर तथा आसपास के विद्यालयों की १६ टीमों ने भाग लिया। इनमें अधिकतर छात्राएं थीं। इस भाषण प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि श्री फतेहसिंह डागर उपमण्डल अधिकारी (नागरिक) झज्जर थे। विजयी टीमों को श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के करकमलों द्वारा पारितोषिक वितरित किये गये। इस गोष्ठी के आयोजन के लिए सभी ने विद्यालय के प्रबन्धकों की सराहना की। श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने इस अवसर पर उपस्थित नर-नारियों एवं छात्र-छात्राओं का शराब एवं अन्य नशों आदि से बचने का आह्वान किया और श्री स्वामी जी के कहने पर अपने हाथ उठाकर प्रतिज्ञा की वे अपने जीवन में नशों से दूर रहेंगे। सभा की ओर से शराबन्दी पोस्टर तथा अन्य साहित्य वितरित किया।

इस भाषण प्रतियोगिता के पश्चात् शराबबन्दी गोष्ठी की गई जिसमें आसपास के ग्रामों से आये सज्जन सम्मिलित हुए। श्री विजय कुमार जी संयोजक हरयाणा शराबबन्दी समिति ने सभी सज्जनों से अनुरोध किया कि वे फरवरी मास में शराब के ठेकों की नीलामी के समय नीलामी स्थल पर पहुंचकर अपने ग्रामों तथा निकट के किसी भी ग्राम में ठेका न खुलने के लिए जोरदार प्रदर्शन करके अपनी शक्ति का परिचय देवें। सभामन्त्री श्री सूबेसिंह ने सभा द्वारा चलाये जा रहे शराबबन्दी अभियान पर प्रकाश डालते हुए सभी को तन, मन और धन से सहयोग देने की मांग की।

श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने अपने अध्यक्षी भाषण में शराब जैसी सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने पर बल देते हुए कहा कि आर्यसमाज अपने प्रारम्भकाल से ही इन बुराइयों के विरुद्ध संघर्ष करता रहा है। अतः सभा द्वारा चलाये जा रहे शराबबन्दी अभियान को सफल करने के लिए प्रत्येक ग्राम से कम से कम ११-११ सत्याग्रही तथा ११००-११०० रुपये दान भेजकर सहयोग देवें।

इस समारोह के संयोजक आचार्य सुदर्शनदेव जी सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता ने अपने आर्य नेताओं तथा बाहर से आनेवालों का धन्यवाद करते हुए सुझाव दिया कि इस प्रकार के आयोजन सभी आर्य शिक्षण संस्थाओं में किए जाने चाहिएं जिससे छात्रों को वैदिक सिद्धान्तों तथा वर्तमान समस्याओं का ज्ञान हो सके।

मन्त्री आर्यसमाज झज्जर

शोक ! महाशोक !!

आप सभी को यह जानकर अत्यन्त दुःख होगा कि गुरुकुल झज्जर के तीन होनहार ब्रह्मचारी दिवगत हो गये।

ये तीनों ब्रह्मचारी गुरुकुल की ही गाडी से अपने २५ अन्य साथी ब्रह्मचारियों तथा गुरुकुल के अधिकारियों के साथ गुरुकुल आमसेना (उडीसा) के रजत जयन्ती महोत्सव में भाग लेने गये थे। गुरुकुल गौतम नगर के आचार्य एव १०० छात्र तथा कुछ अन्य सज्जन भी एक बस द्वारा इन छात्रों के साथ-साथ थे। जयन्ती समारोह मे भाग लेकर आते समय दिनाक ६-१-९३ को बिहार प्रान्त मे गुरुकुल झज्जर की टाटा गाडी तथा एक ट्रक के भिड जाने से यह दुर्घटना हो गई। ये तीनों ब्रह्मचारी शास्त्री कक्षा के छात्र थे। शरीर से अत्यन्त बलिष्ठ एवं विनयशील थे। दिवगत छात्रो के नाम इस प्रकार हैं—

ब्र० सत्यपाल, ग्राम शीशवाला (भिवानी) शास्त्री-३ (२१ वर्ष)
ब्र० महावीर, ग्राम चिमनावास (रेवाडी) शास्त्री-२ (१९ वर्ष)
ब्र० सत्यवीर, ग्राम मातनहेल (रोहतक) शास्त्री-१ (१८ वर्ष)

दिनाक ८-१-९३ को प्रात ११ बजे ब्र० सत्यवीर व महावीर का अन्तिम सस्कार गुरुकुल-भूमि मे ही किया गया तथा ब्र० सत्यपाल का गाव शीशवाला मे किया गया। —आचार्य गुरुकुल झज्जर

अनभ्र वज्रपात

दिनाक ६-१-१९९३ को गुरुकुल आमसेना (उडीसा) की रजत जयन्ती समारोह से वापसी पर गुरुकुल झज्जर के तीन होनहार ब्रह्मचारी सत्यपाल, ब्रह्मचारी सत्यवीर, ब्रह्मचारी महावीर की बिहार लालडगा के समीप सडक दुर्घटना से असामयिक दर्दनाक तत्काल मृत्यु हो गई। परमपिता परमात्मा गुरुकुल परिवार एव ब्रह्मचारियों के शोकाकुल परिवार को इस अनभ्र वज्रपात के असह्य कष्ट को सहने का सामर्थ्य प्रदान करें तथा दिवगत आत्माओं को सद्गति प्रदान करे। इस दुःख में समस्त स्नातक मण्डल शोक सवेदना प्रकट करता है।

—मन्त्री—स्नातक मण्डल
गुरुकुल झज्जर (रोहतक)।

कृपया अपने संस्मरण भेजिए

जैसा कि समाचार-पत्र पत्रिकाओ मे प्रकाशित हो चुका है कि गुरुकुल सिंहपुरा (सुन्दरपुर) एव आर्य योग आश्रम रोहतक सस्थापक महात्मा हरिदेव जी (महाशय हरद्वारीलाल आर्य) का गत २० दिसम्बर को निधन हो गया है।

महात्मा जी का जीवन जहा व्यक्तिगत रूप से एक सच्चे आर्य का जीवन रहा, वही सामाजिक क्षेत्र मे भी उस व्यक्तित्व का अपना एक विशिष्ट प्रेरणाप्रद स्थान रहा। इस प्रकार के महात्माओ के जीवन से पूरा समाज लाभ उठा सकता है। इसलिए महात्मा हरिदेव पतोरी देवी धर्मार्थ ट्रस्ट रोहतक की ओर से उनका जीवन चरित्र प्रकाशित कराने का निर्णय लिया गया है। अत महात्मा जी के सम्पर्क मे आने वाले आर्यसमाज के साधु-सन्यासियो, विद्वान् उपदेशको, एव कार्य-कर्त्ताओं से विनम्र निवेदन है कि कृपया वे अपने सस्मरण अधोलिखित पते पर भिजवाने का यथाशीघ्र कष्ट करें। —सहदेव शास्त्री
आदर्श नगर, सुभाष चौक, जीद।

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी द्वारा लिखित पुस्तक विज्डम आफ ऋषीज छप गई

वेदप्रेमी जनता को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि ऋषि दयानन्द के विख्यात विद्वान् शिष्य मुनिवर प० गुरुदत्त विद्यार्थी की पुस्तक विज्डम आफ ऋषीज श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के अथक परिश्रम तथा देखरेख मे छपकर तैयार होगई है। पुस्तक का कागज, छपाई तथा जिल्दसाजी आकर्षक है। इस पुस्तक मे ४७१ पृष्ठ हैं। पुस्तक का मूल्य ७२) है।

आर्यसमाजो, शिक्षण सस्थाओ आदि के पुस्तकालयो के लिए बहुत उपयोगी है। अत. आज ही ७२) मूल्य तथा डाक व्यय १८) कुल ९०) मनीआर्डर द्वारा भेजकर मगवा लेवें। पुस्तक रजिस्ट्री डाक द्वारा भेज दी जावेगी।

व्यवस्थापक
वैदिक साहित्य विभाग
आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

भयंकर सामाजिक अभिशाप—दहेज

"दहेज" आज के युग की सर्वाधिक मुखर समस्या है। दहेज दानव ने आज के तथाकथित सभ्य समाज को भयकर रूप से क्षतिग्रस्त कर दिया है। इस देहेज ने समस्त सामाजिक, धार्मिक तथा प्रशासनिक व्यवस्था को चरमरा कर रख दिया है। दहेज न दे पाने वाले न जाने कितने अभिभावक मानसिक सन्तुलन खो बैठे हैं। न जाने कितनी युवतिया अविवाहित जीवन बिता रही हैं ? न जाने कितनी युवतिया असमय मे ही काल-कवलित हो रही हैं। पूरा का पूरा समाज इस दहेज रूपी अग्नि मे धू-धू करके जल रहा और नारियों को देवी व पूज्या का स्थान देने वाला यह समाज अट्टहास कर रहा है।

दहेज न मिल पाने पर ससुराल वाले राक्षस बनकर नव-वधू को जलाकर मार डालने मे सकोच नही करते हैं। नव-वधू को जहा अपनी ससुराल मे प्यार व सम्मान मिलना चाहिए था वहा उसे असहनीय ताने, प्रताडना व धधकती चिता तक मिल जाती है। समस्त धार्मिक मान्यताओ व परम्पराओ को दहेज लोभी नर-पिशाचो ने तोड मरोड डाला है। इसी दहेज रूपी दानव ने आज समस्त प्रशासनिक व्यवस्थाओ पर कुठाराघात किया है। लडकी के बाप को शादी के लिए दहेज चाहिये। अब वह ईमानदारी से मात्र वेतन पर दहेज नही दे सकता, इसलिए आज प्रत्येक विभाग का कर्मचारी व अधिकारी अनैतिक व अनुचित तरीके से अन्धाधुन्ध घूस डकार रहा है। भयकर भ्रष्टाचार की चपेट में कसा हुआ प्रदेशीय व केन्द्रीय प्रशासन छटपटा रहा है। ऐसी विषम परिस्थिति मे नरता पशुता मे परिवर्तित हो गई है। आज का मानव दहेज के लोभ मे राक्षस बन गया है।

विवाह एक धार्मिक व पुण्य कृत्य है। हिन्दू (वैदिक) धर्म के अनुसार विवाह एक सस्कार है, जो इस सृष्टि के अनवरण सचालन का केन्द्र बिन्दु है। इस महानतम सत्कार्य के सम्पन्न होने में आज पापी धन आडे हाथों आ रहा है।

धन के लोभी इन नर-पिशाचों को कौन समझाए कि कन्या ही सबसे बडा और वास्तविक दहेज है। वैदिक परम्पराओ के अनुसार वर व कन्या की शैक्षिक योग्यता, स्वभाव, शारीरिक बनावट समान गुण आदि पर ही विचार होना चाहिये। लेकिन आज तो धन पर ही विचार हो रहा है, फिर चाहे परिवार मिट्टी मे ही क्यो न मिल जाय ! दहेज ने आज के मानव समाज को पशुओ का समाज बनाकर रख दिया है। मानवता चीत्कार कर रही है। लेकिन दहेज लोभियों के कानो पर जू तक नही रेग रही है। वे तो आख के अन्धे व कान से बहरे हो गये हैं, तभी तो नारी उत्पीडन की यह भयावह व सर्वनाशी चीत्कार नही सुन रहे हैं। यह भी विडम्बना ही है कि इस दहेज को नारिया भी हवा दे रही हैं। दहेज की माँग व नव-वधुओ की प्रताडना में नारियो का हाथ रहता है। आज लडकी की शादी मे सभी आदर्श की बात करते हैं, लेकिन लडके की शादी में असीमित धन की माग करते हैं।

इसी दहेज के कारण आने वाले दिनो में मानवता का अस्तित्व ही सकटग्रस्त होने जा रहा है। दहेज के डर से आज के माता पिता भ्रूण परीक्षण करवा कर लडकियो का गर्भ समापन करवा रहे हैं। दहेज के लोभी राक्षसो ! जरा सोचो यदि इसी तरह लडकियो की भ्रूण हत्यायें होती रही तो आने वाले पच्चीस वर्षों के बाद इस सृष्टि की नव-रचना का क्या होगा ? तब लडकियां कहां मिलेंगी ? तुम्हारी आसुरी प्रवृत्ति के कारण ही आज के मा-बाप को दहेज के भय से अपने कलेजे के टुकडे की हत्या करवानी पड रही है, आखिर यह पाप किसके सर पर चढ कर बोलेगा ? कुछ तो सोचो। ईश्वर से डरो ! प्रकृति से डरो ! मानवता के सर्वनाश का कारण मत बनो। नवजवान भाइयो व बहनो ! तुम ही कुछ सोचो। दहेज के लोभी मा-बाप को दुत्कार दो। दहेज लोभियो से शादी मत करो। मानवता की रक्षा के लिए यह क्रान्तिकारी कदम उठाना तुम्हारा कर्तव्य है। उसका पालन करो।

—राधेश्याम आर्य
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर उ०प्र०

सिर के बालों की हिफाजत

सिर के बाल चेहरे की शोभा बढाते हैं। बाल जितने काले होते हैं उतने ही सुन्दर लगते हैं। सिर के बालों को देखकर प्राय आयु का अनुमान लगाया जाता है। यदि सिर पर बाल न हों तो उसे गजा कहने लगते हैं।

आपको लम्बे-लम्बे बाल रखने का शौक है तो उनकी देखभाल करना भी आपका कर्त्तव्य है। यदि बालो को सवारकर नही रख सकते तो बालो को बढाना कोई आवश्यक नही है। अब तो महिलायें भी बालो से तग आकर कटवा रही हैं और काला करने के लिए रंगवा भी रही हैं। बहुत से लोग खिजाब लगाते रहते हैं। साराश यह है कि कोई भी सफेद बालो को पसन्द नही करता।

आजकल देखने मे आता है कि नवयुवक और युवतियों के बाल जवानी मे ही सफेद हो जाते हैं और नाना प्रकार के सुगन्धित तेल और शैम्पू आदि का प्रयोग करना आरम्भ कर देते हैं फिर भी बाल झड-झड कर गिर रहे हैं। क्या कारण है कि बाल जल्दी पकने और झडने लगते हैं ? निम्न चार अवस्थाओ मे बाल सफेद होकर गिरने लगते हैं —

१—उमर का तकाजा अर्थात् वृद्ध अवस्था आने पर बाल पकने लगते हैं।

२—फिकर या गम अर्थात् हर समय चिन्ता करते रहने पर भी बाल सफेद हो जाते हैं।

३—शारीरिक कमजोरी या नजला के प्रभाव से बाल सफेद हो जाते हैं। बाल हमारी अस्थियों के अग हैं और अस्थिया कैल्शियम (चूने) से बनती हैं। शरीर में कैल्शियम की कमी के कारण बाल झडने लगते हैं।

४—हर समय सिर पर सख्त पगडी बाधने या टोपी पहने रहने के कारण भी बाल झड जाते हैं। यही कारण है कि महिलाओं की अपेक्षा पुरुषो मे गजापन अधिक पाया जाता है।

बालो की सुरक्षा के लिए इन बातों पर ध्यान दीजिए —

१) बालो को गर्म पानी की बजाय ताजा पानी से धोना चाहिये। धोने के बाद धूप की बजाय छाया मे खुश्क करना चाहिये।

२) गीले बालो मे कभी तेल न लगावें। बालों के सूखने पर ही तेल लगाना चाहिये। तेल लगाकर बालों में बार-बार कघी करनी चाहिये।

३) बालो को धोने के लिये साबुन का अधिक प्रयोग न करे। साबुन से धोने की जब कभी आवश्यकता पडे तो उत्तम साबुन का प्रयोग करें जिसमें कास्टिक की मात्रा अधिक न हो। सिर के बालों को दही छाछ मुलतानी से धोना हितकर है। त्रिफला के पानी से धोना भी लाभदायक है। त्रिफला 50 ग्राम कूटकर एक किलो पानी में रात को किसी मिट्टी के बर्तन मे भिगो दो। प्रात छानकर सिर धो लो।

४) बालो मे लगाने के लिए गोले (नारियल) का तेल उत्तम है। इसके अतिरिक्त गर्मी मे ब्राह्मी आवला का तेल प्रयोग करें। यदि सिर मैं जू पड गई हों या फास-सी रहती हो तो शुद्ध सरसों के तेल मे काफूर मिलाकर लगायें या तेल मे नीम के पत्तों का रस मिलाकर लगावे।

५) बालों के पोषक तत्त्वों की कमी को दूर करने के लिये घी दूध, फलों का रस जैसे पौष्टिक पदार्थों का सेवन करे।

६) चिन्ता को छोडकर चिन्तन करना चाहिये।

७) ईर्ष्या द्वेष को त्यागकर प्रसन्न रहना चाहिये।

८) आजकल के फैशन के अनुसार बालों को झुण्ड की तरह खुश्क रखना नेत्रो के लिए हानिकारक है।

९) बालों को धूल गर्द से बचाने के लिए महिलाओं को सिर ढककर रखना चाहिये।

नोट—किसी प्रकार की कोई शका हो तो अपना पता लिखा हुआ डाक टिकट लगाकर लिफाफा भेजें या स्वय सम्पर्क करें।

देवराज आर्य मित्र वैद्य विशारद, आदर्श नगर,
डी० ब्लाक, मलेरना रोड, बल्लभगढ़-121004

वेद भानु की प्रखर रश्मियां, मुखरित हो नव स्यात।
वेदों की महिमा से मंडित, आए नया प्रभात॥
घनीभूत हो गहन तमिस्रा, क्षत विक्षत हो वसुधा की।
अभिसिंचित हो पूर्ण धरा यह, बरसे धार सुधा की॥
मिटे धरित्री के [illegible], छाया है [illegible] गहन कुहासा।
नव आलोक मिले जन-जन को, खिले मनुजता की नव आशा॥
कटुता कल्मषता का भू से, हटे पुन सम्पूर्ण [illegible]।
सत्य शिव सुन्दरता पूरित, आए भू पर नया सवेरा॥
मानवता की विजय पताका, फहरे लेकर मानव हित।
सुख समृद्धि सफलता सरसे, हो [illegible] बुद्धि प्रकाशित॥
सत्य धर्म के पथिक बने हम, आलोकित हो मार्ग हमारा।
ज्योतिर्मय हो वसुधा सारी, ज्योतिर्मय हो राष्ट्र हमारा॥
शौर्यवान हो, धैर्यवान हो, वीर व्रती हो सारे लोग।
खुशियां ही खुशियां हों भू पर, सारा मानव रहे निरोग॥
सदा लड़े अन्याय अनय से, 'आर्य' बने धरती के वासी।
मंगलमय हो नया वर्ष यह, सुखी बने सब भूमि निवासी॥

राधेश्याम 'आर्य' एडवोकेट
सुलतानपुर (उ० प्र०)

गायत्री मन्त्र का प्रचार करने वाले को पुलिस ने गिरफ्तार करके वेदों का अपमान किया है। उसे बर्खास्त किया जाय।

गायत्री के जप करने वाले सहारनपुर के हकीकत नगर के निवासी श्री डा० एम एल दत्ता जो ७५ वर्ष के हैं। वे बैंक के रिजनल मैनेजर रहे हैं। इस कार्य से सेवामुक्त होने पर अपना जीवन का उद्देश्य गायत्री मन्त्र का जाप और उसका प्रचार प्रसार करने का बनाया है। वे इस मन्त्र का मोटो आदि के द्वारा प्रचार प्रसार करते हैं।

इस सज्जन को निरपराध ही सहारनपुर सदर थाना की पुलिस ने साम्प्रदायिकता को भड़काने वाला कहकर २७ दिसम्बर को उन्हे गायत्री मन्त्र के मोटो सहित गिरफ्तार कर उन्हें न्यायालय मे पेश किया। न्यायाधीश ने उनपर लगे झूठे आरोपो को अस्वीकार करते हुए उन्हे तत्काल रिहा करने का आदेश दिया। लेकिन उस पुलिस वाले को कुछ भी दण्ड नही दिया गया, जो एक निरपराध व्यक्ति को गिरफ्तार कर अपमानित किया। सिर्फ व्यक्ति को ही नही अपमानित किया बल्कि वेद शास्त्र का अपमान किया है। ऐसे पुलिस वाले को तत्काल बर्खास्त करना चाहिए। मेरा केन्द्र सरकार से निवेदन है कि उस सज्जन, ईश्वर प्रेमी, गायत्री मन्त्र के जाप करने वाले को गिरफ्तार करने वाले पुलिस मैन को तत्काल बर्खास्त करे।

गायत्री मन्त्र कोई साम्प्रदायिकता को भड़काने वाला नही यह तो मनुष्यमात्र का कल्याण करनेवाला है। गायत्री मन्त्र सार्वदेशिक व सार्वभौमिक है। हम इसका अपमान सहन नही करेगे।

अशोककुमार शास्त्री
आर्य स० लाडवा कुरुक्षेत्र

२२०० ईसाइयों ने वैदिक धर्म की दीक्षा ली

गुरुकुल आश्रम आमसेना, खरियार रोड (उड़ीसा) का रजत जयन्ती महोत्सव बड़े उल्लास और सज-धज के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर देश के विभिन्न प्रान्तो से हजारो की सख्या मे आर्य नर-नारियों और विशेषकर युवा आर्य वीरो ने भाग लिया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने समारोह की अध्यक्षता की। ३० दिसम्बर को सुसज्जित पण्डाल मे ३ बड़े-बड़े यज्ञ कुण्डों के आसपास लगभग २२०० ईसाइयो को वैदिक धर्म की दीक्षा दी गई, जिनमें स्त्री, पुरुष तथा बच्चे सभी सम्मिलित थे। शुद्ध होने वाले बनवासियों को विदेशी ईसाई मिशनरियो ने कुछ समय पूर्व [illegible] की दीक्षा ली।

इस रजत जयन्ती समारोह मे स्वामी ओमानन्द, स्वामी दीक्षानन्द, प्रो० शेरसिंह, आचार्य हरिदेव, माता प्रेमलता शास्त्री तथा आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य भारत के अधिकारियो के अतिरिक्त आर्य जगत् की कई महान् हस्तियो ने भाग लिया। इस सारे समारोह का सफल संचालन स्वामी धर्मानन्द जी ने किया।

गुरुकुल के आचार्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती के अनुरोध पर सभी शुद्ध हुए बनवासियो को भारी सख्या मे वस्त्र तथा धोतियां वितरित की गईं। गुरुकुल के प्रधान श्री मित्रसेन जी आर्य ने ३ लाख रु० की राशि दानस्वरूप गुरुकुल को भेंट की। सार्वदेशिक सभा की ओर से १० हजार रु० की राशि की सहायता गुरुकुल को देने के लिये स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने घोषणा की। इस अवसर पर अनेक दानी महानुभावो ने दान देने की घोषणा की।

शुद्धि संस्कार सम्पन्न होने के पश्चात् खरियार रोड के बाजारो में एक शानदार शोभा यात्रा निकाली गई। शोभा यात्रा के पश्चात् स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे एक जनसभा हुई जिसे प्रो० शेरसिंह, आचार्य आर्य नरेश, ब्र० राजसिंह आर्य आदि महानुभावो ने सम्बोधित किया।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, सभा मन्त्री

पं० रामप्रसाद बिस्मिल का बलिदान दिवस

दिनाक १९-१२-९२ को गुरुकुल धीरणवास जि० हिसार मे प० रामप्रसाद बिस्मिल जी का बलिदान दिवस धूमधाम से मनाया गया। प्रातःकाल सध्या हवन के पश्चात् आचार्य प० अमरसिंह जी की अध्यक्षता मे एक सभा हुई। जिसमे मुख्य वक्ता के रूप मे सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी जी ने प० बिस्मिल के जीवन एव कार्यों पर विस्तार से विचार रखे। साथ मे गुरुकुल शिक्षा का महत्त्व तथा आदर्श आर्य युवक बनने पर बल दिया। आचार्य जी ने भी क्रान्तिकारियो की गतिविधियो पर प्रकाश डाला।

मा० रणवीरसिंह आर्य, गुरुकुल धीरणवास

टोहाना मे श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

दिनाक २३-१२-९२ को आर्यसमाज टोहाना द्वारा सचालित महर्षि दयानन्द उच्च विद्यालय मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बड़े हर्षोल्लास से मनाया गया। इस समारोह की अध्यक्षता विद्यालय के मैनेजर श्री ओमप्रकाश जी ने की। इस अवसर पर समाज के पुरोहित प० धर्मप्रकाश शास्त्री जी ने सभी बच्चो मे स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन के विषय मे प्रवचनो एव भजनो के माध्यम से प्रकाश डाला। सभी बच्चो एव स्टाफ ने बढ चढकर भाग लिया।

मुख्याध्यापक राजीव शर्मा

शराब हटाओ देश बचाओ।

दूरभाष ३४३७१८, ३१२११०

ओ३म्

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

जिला-राजकोट-३६३६५० (गुजरात)

उप-कार्यालय : आर्यसमाज, 'अनारकली' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण

एवं

आर्थिक सहायता की अपील

मान्यवर, सादर नमस्ते ।

इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव १८, १९, २० फरवरी १९९३ तदनुसार वीर, शुक्र, शनि को ऋषि जन्म-स्थली टंकारा में भव्य समारोह के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर एक सप्ताह तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ होगा जिसके ब्रह्मा प० सोमदेव जी शास्त्री होंगे। देश-देशान्तर से पधारे ऋषि भक्त आर्य विद्वान् तथा कलाकार इस सुअवसर पर ऋषि के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। इस वर्ष आर्यवानप्रस्थाश्रम के अध्यक्ष महात्मा आर्य भिक्षु जी, आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार, श्री ओमप्रकाश वर्मा भजनोपदेशक यमुनानगर पधार रहे हैं। कन्या गुरुकुल बड़ौदा, पोरबन्दर तथा जामनगर की कन्याएं, टंकारा उपदेशक विद्यालय के विद्यार्थी, आर्यवीर दल धांगध्रा एवं केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली तथा अन्य संस्थाओं के युवक, समारोह में कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे। पधारनेवालों के आवास, भोजन का पूर्ण प्रबन्ध टंकारा ट्रस्ट की ओर से निःशुल्क होगा, किन्तु बाहर से पधारनेवाले सज्जन ऋतु अनुकूल अपने-अपने बिस्तर अवश्य साथ लायें।

इस समय टंकारा के अधीन निम्न कार्य चल रहे हैं —

(१) अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय (२) दिव्य दयानन्द दर्शन चित्र गृह (३) आर्ष साहित्य प्रचार केन्द्र
(४) गो-संवर्धन केन्द्र (गोशाला) (५) अतिथि गृह (६) वेद प्रचार
(७) पुस्तकालय तथा सार्वजनिक वाचनालय

ऋषि जन्म स्थली टंकारा मे अभी और भी अनेक विशेष करणीय कार्य हैं जैसे—ऋषि जन्म गृह के मुख्य भाग को अपने अधिकार मे लेना, टंकारा की संस्थाओं का विकास तथा जन्मस्थली को विश्वदर्शनीय बनाना। टंकारा ट्रस्ट के अधिकारी जनता जनार्दन के सहयोग से टंकारा उत्सव की सफलता, टंकारा की संस्थाओं का विकास तथा अन्यान्य कठिनाइयों को दूर करने का प्रबल प्रयत्न कर रहे हैं। इन सब कार्यों के लिए कम से कम ११-१२ लाख रुपये की और आवश्यकता है।

टंकारा गोशाला मे आजकल २५ से अधिक गायें हैं। इस गोशाला से विद्यार्थियों को शुद्ध दूध मिलता है। परन्तु हर वर्ष इस गोशाला में घाटा हो जाता है। यह घाटा ऋषि-भक्तों और गोभक्तों के दान से ही पूरा होता है।

अत आपसे विनम्र निवेदन है कि ऋषि बोधोत्सव पर आप इष्ट मित्रों सहित टंकारा पधारिये और इस सारे कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनिए।

यह दानराशि आप क्रास चैक/ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर से महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के नाम से इसके दिल्ली, कार्यालय, आर्यसमाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ के पते पर भेजने की कृपा करें।

आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि आप अपनी ओर से अपनी आर्यसमाज, अपनी शिक्षण संस्था तथा अन्य सम्बन्धित संस्थाओं की ओर से अधिकाधिक राशि भेजकर ऋषि ऋण से अनृण होकर पुण्य के भागी बनिए।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि पर आय-कर की छूट है

निवेदक :

ओंकारनाथ	दरबारी लाल	शान्तिप्रकाश बहल	रामनाथ सहगल
मैनेजिंग ट्रस्टी	प्रधान	कार्यकारी प्रधान	मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजी० नं० २३२०७/७३ रजि० नं० P/RTK-४६ सृष्टिसंवत् १९६,०८,५३,०९४

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २० अंक ९ २१ जनवरी, १९९३ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

शहीदों के स्मरण का दिन

गणतन्त्र दिवस भारत माँ के उन लाखो अमर सपूतो के स्मरण का पुण्य दिवस है, जिन्होंने हसते-हसते इस महान् राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए अपना जोवन उत्सर्ग कर दिया। आज यह पावन पर्व याद दिलाता है, भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां तथा नेताजी सुभाषचन्द्र बोस सरीखे वीर सपूतो के अमर बलिदान का, जिन्होंने मा के बन्धन को काटने के लिए अपनी जवानी, तरुणाई, अपना सर्वस्व, स्वाधीनता के महान् सग्राम की पुण्य बलिवेदी पर समर्पित करके, स्वतन्त्रता का पावन पथ प्रशस्त किया। भारत की स्वाधीनता का सग्राम, जो अनवरत नब्बे वर्षों तक चलता रहा, त्याग व बलिदान, उत्सर्ग व समर्पण की गाथा बन गया।

इन्ही महानतम बलिदानियो के शोणित का प्रतिफल है—यह भारत की आजादी व भारत का गणतन्त्र। आज हमको आत्मविश्लेषण करना होगा कि जिन महान् उद्देश्यो की प्राप्ति के लिए उन लाखो नौजवानो ने अपने प्राण समर्पित किए, क्या उन उद्देश्यो की पूर्ति मे हम अपने को लगा पाए हैं। उत्तर मिलेगा—नही ! बिल्कुल नही। हम लोगो ने, उन महान् बलिदानियो के लहू के साथ खिलवाड किया है, विश्वासघात किया है और आज हम केवल अपनी जेबे गरम करने मे ही सलग्न होगए हैं। आज कर्मचारी, अधिकारी, राजनेता, शासक, प्रशासक सब के सब कर्तव्य-विमुख होकर उचित अनुचित, नैतिक-अनैतिक तरीके से मात्र धनसचय मे व्यस्त हैं। परिणामस्वरूप सारा राष्ट्र भयकर भ्रष्टाचार, अनाचार, कुव्यवस्था के चंगुल मे फसकर छटपटा रहा है। हमारी ही स्वार्थपरता तथा स्वार्थपरक नीतियो के कारण राष्ट्रीय एकता-अखण्डता सकटग्रस्त होगई है। सारे देश मे धर्म के नाम पर अधम, व्यवस्था के नाम पर कुव्यवस्था, सत्य के नाम पर असत्य व्याप्त होगया है। दानवी वृत्तियो के घनघोर तिमिर मे आज भारत का नागरिक किकर्तव्य-विमूढ बन गया है। त्याग तथा बलिदान की पावन परम्पराए व भावनाए तिरोहित हो जाने के कारण राष्ट्र की वह स्वाधीनता खतरे मे पड गई है जिसे असख्य नौजवानो के बलिदान से हमने प्राप्त किया था। आज महर्षियो का यह पुण्य देश, राम व कृष्ण जैसे महामानवों की यह धरती, राणा-शिव जैसे वीरों की भूमि, भगत, सुभाष, अशफाक जैसो की बलिदानी भूमि, महर्षि दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, गांधी, गौतम की यह कर्मभूमि रौरव नरक मे परिवर्तित होकर आसू बहा रही है। भारत मा अपने स्वार्थलोलुप, अकर्मण्य, कायर तथा मक्कार पुत्रो को धिक्कार रही है। लेकिन इन कायरो के कान पर जू तक नही रेंग रही है। इस महान् गणतत्र के गण का जीवन हमने घूसखोरी, भ्रष्टाचार, धनलोलुपता, झूठ, फरेब के माध्यम से नारकीय जीवन बना डाला है।

राजनैतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए मानव-मानव के मध्य जानलेवा खाई खोद डाली है। वोटो के लालचवश जात-पांत तथा साम्प्रदायिकता की धधकती अग्नि मे घी डालने का कार्य किया गया है। आज किसी को समाज व देश की चिन्ता न होकर अपनी ही चिन्ता सता रही है। महान् भारतीय सास्कृतिक मूल्यो को हमने गिरवी रख दिया है। मानवता की जनहितकारी सवाहक परम्पराओं को हमने तोड-मरोड डाला है। जन-जन में ईर्ष्या, द्वेष, लोभ, मोह की राक्षसी प्रवृत्तिया हिलोरें ले रही हैं।

ऐसे भयावह समय में आज हमारे समक्ष आसन्न सर्वनाश से सुरक्षित रहने का मात्र एक ही उपाय है कि हम पुण्य स्मरण करें उन अमर शहीदो का, उनके बलिदान का, उनकी भावनाओ का, उनके लाल लहू का। यह स्मरण शायद हमारे तिमिराश्रित पथ पर प्रकाश की कुछ किरणो को बिखेर सके और हम भी भारत मा का सच्चा सपूत बनने का प्रयास कर सके।

राधेश्याम 'आर्य'
मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर, उ० प्र०

आर्यसमाज बम्बई का प्रस्ताव

आर्यसमाज सान्ताक्रुज बम्बई-५४ मे देश की वर्तमान स्थिति जो कि राम मन्दिर एव बाबरी मस्जिद प्रकरण के कारण उत्पन्न हुई है—उस पर विचार हुआ। कैप्टन देवरत्न आर्य, श्री परसराम देओमल धमेजा, महाशय चमनलाल एवं श्री लाला रामचन्द्र आर्य आदि ने अपने विचार दिये। आर्यसमाज द्वारा श्री सुभाष आर्य का काम सेवा मे भाग लेने हेतु सम्मान भी किया गया एव आर्यसमाज के प्रधान तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य ने निम्न प्रस्ताव सभा के सामने रखा, जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया।

यह सभा भारत सरकार का वोटों की राजनीति के कारण मुसलिम तुष्टिकरण नीति का विरोध करती है। चार वर्ष पूर्व जम्मू-कश्मीर मे लगभग १०० मन्दिरों के तोडे जाने पर भी किसी शासक पार्टी या विरोधी नेताओं को आवाज नही उठी, जबकि एक खण्डहर हुए मस्जिद के ढाचे को जहा ५० वर्ष से कभी भी नमाज नही पढी गई है, तोडे जाने पर धर्मनिरपेक्ष सरकार ने स्वय ही अल्पसख्यको को उकसाकर पुन १९४७ की स्थिति मे ला खडा किया है।

जो इमारत अब खण्डहर नही रही है उसके पुनर्निर्माण का यह सभा घोर विरोध करती है एवं भारत सरकार से प्रार्थना करती है कि हिन्दुओ की भावनाओ का सम्मान कर वह स्थान श्रीराम मन्दिर के निर्माण हेतु हिन्दुओं को सौंप देवे। भगवान् श्रीराम भारतीय सस्कृति के प्रतीक हैं। यदि उस स्थान पर पुन मस्जिदी ढाचे को खडा किया तो वह सभा हर कीमत पर उसका विरोध करेगी।

यह सभा भारतीय नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी एव मुरली मनोहर जोशी आदि राष्ट्रीय हितों की रक्षा करनेवाले नेताओ की गिरफ्तारी की निन्दा करती है एव इस निर्णय को दूषित राजनैतिकता से प्रेरित निर्णय मानती है। यह सभा हिन्दुओ को सगठित करनेवाली सस्था विश्व हिन्दूपरिषद् एव राष्ट्रीयो भावनाओ से ओत-प्रोत राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ जैसी देशभक्त सस्थाओ पर प्रतिबन्ध लगाने की तीव्र भर्त्सना करतो है एव इस निर्णय को हिन्दू एव राष्ट्रीय हितो के विरुद्ध मानती है।

यह सभा भारत सरकार से प्रार्थना करती है कि उपरोक्त निणय पर पुनर्विचार कर एव राष्ट्रीय हितो को ध्यान मे रखते हुए उन्हें वापिस ले।

कल्याण का मार्ग

ले०–आचार्य देवव्रत एम० ए० बी० एड० गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ

ओ३म् सत्य बृहद्दतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञ पृथिवी धारयन्ति ।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरु लोक पृथिवी न कृणोतु ।।
अथर्ववेद १२-१-१

यह मन्त्र अथर्ववेद के पृथिवी-सूक्त का प्रथम मन्त्र है। वेद के सभी उपदेश ससार के सभी मनुष्यो के लिये कल्याणकारी हैं चाहे वे किसी भी देश के निवासी हो और किसी भी मत के माननेवाले हो। जो उनके अनुकूल अपना आचरण बनायेगा वही कल्याण को प्राप्त होगा।

ज्ञान का उद्देश्य तो जीवन के दोषो को दूर कर उसे पवित्र एव गुणो का भण्डार बनाना है और उसी उद्देश्य को लक्ष्य मे रखकर स्वाध्याय के द्वारा ज्ञान अर्जित करना नितान्त आवश्यक है। वेद तथा वेदानुकूल आर्ष साहित्य के अतिरिक्त निर्भ्रान्त ज्ञान अन्यत्र उपलब्ध नही हो सकता जो मनुष्य कल्याण के मार्ग पर ले जा सके।

जिस भूमि मे मनुष्य जन्म ले उसके प्रति क्या भावना होनी चाहिये, उसका अद्भुत वर्णन इस मन्त्र मे दिया गया है। ससार मे मनुष्य वर्तमान मे खडे होकर अपने भूत एव भविष्य को देखता है। उसका वर्तमान उसके भूत का परिणाम है और उसका भविष्य उसके वर्तमान का परिणाम होगा। जिस मातृभूमि पर जन्म लेकर उसके पदार्थों से अपने शरीर की पुष्टि की है तथा जहा पूर्वजो ने जन्म धारण करके अपने सुकर्मों से मातृभूमि के नाम को उज्ज्वल किया था उसी मातृभूमि के प्रति मेरे क्या कर्तव्य हैं ऐसा प्रत्येक मा के सुपुत्र को विचार करना चाहिए।

मनुष्य का जीवन कभी उन्नत और कभी अवनत होता रहता है। यह दशा उसके पूर्वजो के साथ भी घटी होती है जो इतिहास के पन्नो पर लिखी होती है। अपने इतिहास का एक-एक पन्ना जो हमारे पूर्वजो के जीवनो को प्रस्तुत करता है, वह हमारे नैतिक-पाठ की सामग्री है और उससे भविष्य का निर्माण करने एव उसको समुज्ज्वल करने मे विशेष सहायता ली जा सकती है। सच्चा सुपुत्र वही है जो अपने भूत से प्रेरणा लेकर उस काल की उन भूलो का सुधार कर, जिनसे वर्तमान में कुछ गिरावट आगई है भविष्य के निर्माण की साधना मे लग जाता है, क्योकि वर्तमान की साधना के परिणामस्वरूप भविष्य का निर्माण हुआ करता है। राष्ट्र के निर्माण के लिए एक अपेक्षित काल की आवश्यकता होती है, यह कार्य घण्टो, दिनो अथवा मासो मे नही हुआ करते, उसके लिये निरन्तर वर्षों तक साधना करनी पडती है, तब कही उसका फल दिखाई देता है।

प्रस्तुत मन्त्र मे उन्नति की ओर जाने का मार्ग बहुत ही स्पष्ट रूप में बतलाया गया है। उन्नति और अवनति मनुष्य के अपने हाथ मे है। उन्नति की ओर बढनेवाले पृथिवी से अन्तरिक्ष, अन्तरिक्ष से द्युलोक और वहा से स्वर्ज्योति मे पहुचते हैं। मातृभूमि की वन्दना करते समय मातृभूमि का सच्चा सुपुत्र जिस लोक मे पहुचने की इच्छा प्रकट करता है, मन्त्र मे "उरु" शब्द उसी के लिए आया है। हमारा शरीर भी एक छोटा ब्रह्माण्ड है। इसमे भी ब्रह्माण्ड के सभी लोक विद्यमान हैं। नाभिस्थ पृथिवीलोक हृदयस्थ अन्तरिक्षलोक, द्विस्थान द्युलोक और ब्रह्मरन्ध्र स्वर्लोक है जहां योगी प्रकाश देखते हैं। व्यक्ति की उन्नति मे ही राष्ट्र की उन्नति निहित है, क्योकि राष्ट्र व्यक्तियो से ही मिलकर बनता है। यदि राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति व्यक्तिगत और सामूहिक प्रयत्नों द्वारा उन्नति की ओर अग्रसर हो तो राष्ट्रीय उन्नति के स्वप्न साकार हो सकते हैं। इस उत्थान का क्रम इस वेद मन्त्र मे बहुत ही सुन्दर ढग से चित्रित है।

ससार मे मनुष्य के जीवन का उत्थान सत्य के आश्रय से प्रारम्भ होता है। यह उत्थान की आधारशिला है। असत्य के पर टिकी हुई उन्नति चिरस्थायी नही होती। वह बालू की दीवार के सदृश होती है और एक ही धक्के में धराशायी होजाती है। ससार यात्रा मे जब हम समन्वय की भावना पर दृष्टिपात करते हैं, शान्ति की आधारशिला खोजना चाहते हैं तो सत्य ही शान्ति का निर्मल स्रोत दिखाई देता है। जब सत्य का पालन होता है तो विषमता का जन्म ही नही होता। सत्य के अभाव मे ही अविश्वास की भावना जागृत होती है। आज राष्ट्रो मे यही अविश्वास की भावना दृष्टिगोचर होरही है। सब को सब की ओर से आशका मिश्रितभय लगा हुआ है। कारण यही है कि सत्य को सबने भुलाया हुआ है। "माता भूमि पुत्रोऽह पृथिव्या" वेद की इस सूक्ति ने भूमण्डल के सभी मानवो को यह पवित्र सन्देश दिया है कि यह भूमि हम सब की माता है और हम सब इसके पुत्र हैं। आज भाई को भाई समाप्त करने मे लगा हुआ है। यह विनाशलीला चलती रहेगी जब तक ससार वेद की शिक्षाओ पर नही चलेगा।

सत्य को प्रकाशमान एव उत्तम माना गया है फिर क्यो मनुष्य इससे दूर चला जाता है। कारण, व्यवहार मे सत्य का पालन करना अत्यन्त कठिन है। काम, क्रोध, लोभ, मोह के थपेडे जब उसे तपाना आरम्भ कर देते हैं तो वह डिग जाता है। तमोगुण उसे अन्धकार मे भटका देता है। उस समय सत्य पर डटे रहना अत्यन्त कठिन हो जाता है। इसीलिये मन्त्र मे आगे बताया है कि बृहत् को भी साथ लेकर चलो तभी सत्य पर रह सकते हो। बृहत् के अर्थ उद्यम के हैं। जिस समय सत्य के मार्ग मे चलते हुए प्रलोभन आकर विचलित करना आरम्भ करते हैं तब यदि मनुष्य उद्यम को पकड ले तो वह गिरने से बच सकता है। कर्महीन अकर्मण्य व्यक्ति से सत्य पर चलने का आशा ही नही की जा सकती।

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगा ।।

सस्कृत के इस श्लोक मे उद्यम की महत्ता का सुन्दर चित्रण किया गया है। उद्यम के द्वारा जिस उद्देश्य की ओर चलते हैं वह अवश्य प्राप्त होता है। जब हम भाग्य का रोना रोते हैं तो कर्तव्य को भूल जाते हैं। अपनी शक्ति को भी भुला देते हैं किन्तु कर्तव्यशील पुरुष पुरुषार्थ के आधार पर आगे ही बढता है। दैव को भुलाकर शक्ति का प्रयोग करो, यही आदेश है। क्योकि जब मनुष्य सत्य के पथ पर चलता है तो उसे सभालनेवाला उद्यम होना चाहिए, इसके अभाव मे पतन अवश्यम्भावी है।

"पुरुषार्थ ही इस दुनिया मे सब कामना पूरी करता है,
मनचाहा फल उसने पाया जो आलसी बनकर पडा न रहा।"

किन्तु उद्यम उसके पास ही रहता है जिसके पास ऋत हो। ऋत और सत्य ससार में प्रलय के उपरान्त (दोनो) साथ ही आये। प्रकृति का पहला परिणाम ही सत्य है। वह सत्व प्रधान तत्व होता है। उसी समय भगवान् का ज्ञान होता है। उसे ही वेद ज्ञान कहते हैं, क्योकि वहा से प्रकाश प्राप्त होता है। जब हम सयम से निर्णय अवस्था पर आते हैं, उस समय ऋतभरा प्रज्ञा उत्पन्न होती है। उसके द्वारा ही हम अपने पथ पर दृढ रह सकते हैं। उद्यम को कार्यशील बनाने के लिए तथा उसे अपनाने को शक्ति प्राप्त करने के लिए ऋत का सहारा लेना पडता है। क्योकि ऋत के द्वारा विचारशीलता प्राप्त होती है। इसलिये तो मन्त्र ने बृहत् के पश्चात् ऋत की आवश्यकता बतलाई है।

मन्त्र मे आगे बतलाया है कि ऋत को प्राप्त करने के लिये उग्र की आवश्यकता है। उग्र कहते हैं उत्कट इच्छा को। उत्कट इच्छा ही ऋत की प्राप्ति का साधन है। महत्वाकाक्षा इसी का दूसरा नाम है। जिस राष्ट्र के नागरिको मे महत्वाकाक्षा का अभाव होता है वे प्राय दूसरो के दास ही जाते हैं। उनमे दीनता एव कायरता की भावना रहती है और विजय उनसे कोसो दूर रहती है। वे अपने को दीन-हीन ही समझे रहते हैं। मध्यकाल मे भारतवासियो की यही दशा होगई थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पुन देशवासियो मे भारतीय गौरव को जगाया। उन्होने भारतीयो को झकझोरा, सारे विश्व मे पहले हमारा चक्रवर्ती साम्राज्य था और आज हम दूसरों के दास बने हुए हैं। देशवासियो मे स्वतन्त्रता का मन्त्र फूकनेवाले वे प्रथम महापुरुष थे, इसे सभी विचारशील भारतीय स्वीकार करते हैं।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

नशाबन्दी आन्दोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने हेतु

प्रो० शेरसिंह द्वारा उड़ीसा तथा तमिलनाडू प्रदेशों का भ्रमण

हरयाणा प्रदेश मे गत ६, ७ वर्षों से शराब के विरुद्ध आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से अभियान चलाया जा रहा है। आर्य जगत् के त्यागी तपस्वी सन्यासी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के निर्देशन तथा सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह के नेतृत्व में सभा के अन्य अधिकारियो, उपदेशक एव भजनोपदेशको ने हरयाणा के कोने-कोने मे शराब की बुराई के विरुद्ध जमकर प्रचार किया है। स्थान स्थान पर नशाबन्दी सम्मेलन करके जनता मे जागृति उत्पन्न की है तथा ग्राम पचायतो को प्रेरित करके शराबबन्दी के प्रस्ताव करवाकर हरयाणा सरकार को भिजवाये गये हैं। प्रतिवर्ष शराब के ठेकों की नोलामी के अवसर पर जिलामुख्यालयो पर विरोधप्रदर्शनो का भी आयोजन किया जाता है तथा शराबबन्दी प्रस्तावो की अवहेलना होने पर उन ग्रामो मे ग्रामीण नर-नारियो के सहयोग से वहा धरणे दिलवाये गये और ६, ७ वर्षों मे १०० के लगभग ग्रामो मे ठेके बन्द करवाये परन्तु सरकार शराब की बिक्री से अपनी आमदनी बढाने के लालच मे प्रतिवष अधिक सख्या मे अन्य ग्रामों मे ठेके खुलवा देती है। इसके विरोध मे सभा की ओर से महम से दिल्ली तक शराबबन्दी पदयात्रा करके राष्ट्रपति को शराबबन्दी लागू करने का ज्ञापन दिया गया।

इस प्रकार हरयाणा सरकार सभा द्वारा किये जारहे सघर्ष को असफल करने का भरसक प्रयत्न कर रही है। जो भी सरकार सत्ता मे आई उसने पूर्व सरकार से अधिक सख्या मे शराब का प्रचार तथा प्रसार किया तथा भोली-भाली जनता को शराब के नशे मे बेहोश करके अपना कुशासन चलाया। शराब के कारण गरीब किसान मजदूर कगाल तथा शराब के व्यापारी तथा ठेकेदार हराम की कमाई से मालामाल होते चले गये और प्रत्येक क्षेत्र में भ्रष्टाचार बढता रहा। जनता तथा सरकार शराब की गुलाम बन गई। कोई भी कार्य शराब के बिना पूरा होना कठिन होगया। किसी भी राजनैतिक दल ने चुनाव से पूर्व अपने घोषणापत्रो मे शराब पर पाबन्दी लगवाने की घोषणा करने का साहस नहीं किया और चुनाव मे लाखों रुपये की शराब अपने मतदाताओं को पिलाकर रिश्वते दी जाती है जो भी उम्मीदवार शराब नही पिला सकता वह विजयश्री प्राप्त नही कर पाता।

शराब के बढते हुए प्रचार का अनुचित लाभ उठाने के लिए हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल ने अपने दामाद का हिसार मे शराब बनाने का कारखना खुलवा दिया और श्री ओमप्रकाश चौटाला के सम्बन्धी इस कारखाने से बननेवाली शराब की बिक्री के सोलएजेन्ट (थोक विक्रेता) तथा श्री बसीलाल जी के नजदीकी भतीजे मास्टर श्रद्धानन्द शराब के ठेकेदारो के प्रमुख बन गये। इस प्रकार बाड ही खेत को खाने लग गई। मुख्यमन्त्री तथा मन्त्री कुर्सी पर बैठने से पूर्व शपथ लेते हैं कि वे जनता के कल्याण हेतु भारतीय सविधान की भावना के अनुसार कार्य करेंगे परन्तु वे कुर्सी पर बैठते ही जनता के कल्याण की बातें भूलकर अपना तथा अपने सगे सम्बन्धियों के कल्याण मे लग जाते हैं।

प्रो० शेरसिह के नेतृत्व मे आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा, दिल्ली तथा राजस्थान की ओर से उच्चतम न्यायालय दिल्ली मे भारतीय सविधान की धारा ४७ के आधार पर राज्य सरकारो द्वारा शराब के बढते हुए उत्पादन तथा खपत की गतिविधिया निरन्तर चालू रखने के विरुद्ध एक याचिका दायर की और उच्चतम न्यायालय ने केन्द्र तथा राज्य सरकारो को नोटिस दिया है और कहा है कि अवश्य ही इस याचिका मे महत्त्वपूर्ण मुद्दे उठाये गये हैं जिन पर राज्य सरकारो के विचार प्राप्त किये जाने चाहिए और निश्चित ही यह याचिका एकदम स्वीकार की जा सकती है। परन्तु अभी तक राज्य सरकार इसका उत्तर उच्चतम न्यायालय मे नही दे सकी क्योकि एक ओर उन्हे शराब की बिक्री से अधिक से अधिक आमदनी कमाने का मोह होगया है और दूसरी ओर शराबबन्दी की बनती जारही लहर से भी डर लगन लगा है।

प्रो० शेरसिह जी द्वारा हरयाणा मे चलाये जारहे शराबबन्दी अभियान के कार्यक्रम से प्रभावित होकर अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् ने रोहतक में आयोजित, ७, ८ नवम्बर' ९२ के वार्षिक अधिवेशन मे प्रो० शेरसिह को अपना अध्यक्ष सर्वसम्मति से चुन लिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने इस वर्ष और अधिक शक्ति के साथ शराबबन्दी अभियान को तेज कर दिया है। इस वर्ष गत वर्ष से अधिक सख्या मे जिलेवार ग्रामो मे शराबन्दी के प्रस्ताव करवाकर सरकार को भिजवाये हैं। प्रत्येक जिले मे शराबबन्दी सम्मेलन तथा प्रचार करवाकर शराबबन्दी सत्याग्रह की तैयारी की जारही है। जनमत तैयार करने के लिए सभा की ओर से शराबबन्दी पोस्टर तथा साहित्य मुफ्त वितरित किया जा रहा है।

प्रो० शेरसिंह जी ने अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् के अध्यक्ष का कार्यभार सम्भालने के पश्चात् शराबबन्दी आन्दोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने के लिए हरयाणा के अतिरिक्त अन्य प्रदेशो का भ्रमण करना आरम्भ किया है। उन्होने उदयपुर (राजस्थान), उडीसा, मध्यप्रदेश, आन्ध्रप्रदेश, गुजरात तथा बम्बई का भ्रमण करके उच्चतम न्यायालय मे चल रही शराबबन्दी याचिका हेतु समथन प्राप्त करने का यत्न किया है।

३१ दिसम्बर ९२ को प्रो० साहब उडीसा की राजधानी भुवनेश्वर गये तथा वहा के राज्यपाल से मिलकर अपने राज्य मे शराबबन्दी लागू करने मे सहयोग मागा। उनके साथ नशाबन्दी परिषद् का एक शिष्टमण्डल भी था। उसके पश्चात् कटक मे शराबन्दी कार्यकर्त्ताओं की बैठक मे सम्मिलित हुए। इस बैठक की असम उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश ने अध्यक्षता की। श्री मनमोहन चौधरी तथा त्रिलोचन कानूनगो, अध्यक्ष नगरपालिका कटक तथा विधायक और हरिहर वाहिनीपति अध्यक्ष प्रदेश नशाबन्दी समिति आदि भी उपस्थित थे। मई १९९२ मे कटक मे ३०० के लगभग जहरीली शराब पीकर मर गये थे। शराबबन्दी जनता द्वारा शराब की दुकानो के विरुद्ध प्रदर्शन करने के पश्चात् सरकार ने कटक के २० किलोमीटर दूर तक के क्षेत्र के शराब की दुकाने बन्द करनी पडी थी, परन्तु राज्य सरकार ने ठेकेदारो के दबाव मे आकर पुन शराब की दुकाने खोल दी। श्री त्रिलोचन कानूनगो ने इस कार्यवाही के विरुद्ध भूख हडताल की और परिणामस्वरूप शराब की दुकाने बन्द करनी पडीं। शराब के ठेकेदार एक बार फिर दुकानें खुलवाने का प्रयत्न कर रहे हैं। प्रो० शेरसिह जी इस सम्बन्ध मे उडीसा के मुख्यमन्त्री श्री बीजूपटनायक से भुवनेश्वर मे मिले तथा शराबन्दी के अभियान में सहयोग को माग को। उन्होने प्रो० साहब को बात ध्यानपूर्वक सुनकर आश्वासन दिया कि वे इस सम्बन्ध मे सारे देश मे शराबबन्दी लागू करवाने के लिए प्रधानमन्त्री द्वारा सभी दलो और मुख्यमन्त्रियो की बैठक बुलाने का अनुरोध करेंगे।

प्रदेश मे शराबबन्दी अभियान आरम्भ हो गया है। उडीसा के बालेश्वर तथा कटक जिलो मे शराबबन्दी कायकर्त्ताओ द्वारा शराब की दुकानो पर धरणे दिये जाने के कारण ९ दुकाने बन्द करवा दी गई हैं। कोटापुर मे महिलाओ में जागृति आचुकी है और आन्ध्रप्रदेश के साथ लगे होने के कारण वहा की महिलाओ का शराबन्दी आन्दोलन चल रहा है। इस मास के अन्त मे वहा बहुत बडा नशाबन्दी सम्मेलन हो रहा है।

प्रो० शेरसिह जी ने ६ से ८ जनवरी, ९३ तक तमिलनाडु का भ्रमण किया। इलाचूर श्री प्रेमबुदूर (जहा श्री राजीव गाधी की हत्या हुई थी), मरायम लायनगर, पुनीर आदि स्थानों पर शराबबन्दी जनसभाओ मे बोलते हुए जनता को शराब से होनेवाली बुराइयों से दूर रहने की अपील की। चिनाय एम जी आर जिले मे नशाबन्दी परिषद् की शाखाओ का गठन किया। इसके साथ ही दो तालुको मे भी नशाबन्दी की नई शाखाओ का उद्घाटन किया।

इलाच्नूर मे राष्ट्रीय जीवन शुद्धि आदोलन का उद्घाटन भी हुआ। श्रीमती प्रभातशोभा पडित उस आन्दोलन की अध्यक्षा चुनी गई।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

कालावाली मण्डी मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस पर श्री अमरनाथ गोयल कालावाली के परिवार मे हवन यज्ञ के पश्चात् श्री ओमप्रकाश वानप्रस्थी गुरुकुल बठिण्डा ने बताया कि मुन्शीराम से लाला मुन्शीराम फिर महात्मा मुन्शीराम, फिर स्वामी श्रद्धानन्द कैसे बने। उन्होने प्राचीन युग लाने के लिए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली चालू की—सर्वप्रथम अपने दोनो पुत्रो द्वारा गुरुकुल कागडी जारी किया। शुद्धि प्रचार—काग्रस के अध्यक्ष, अकाली आदोलन मे सहयोग देकर बडी भारी देश सेवा की।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का जन्म दिन

कालावाली मण्डी जिला सिरसा के प्रागण मे श्री मदनमनोहर जी की दुकान पर शाम को साढे सात बजे स्वर्गीय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्म दिन मनाया गया—जिसमे श्री ओमप्रकाश वानप्रस्थी, गुरुकुल बठिण्डा ने एक घण्टा तक उनके जीवन की मुख्य-मुख्य घटनाओ, तप, त्याग आर्यसमाज की सेवाओ को बताते हुए बडी श्रद्धा से अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। इस क्षेत्र मे रहकर खतरावा गाव देसू मलकाना गाव, रामा मण्डी कालावाली मे कितना काम किया। खतरावा गाव सारे का सारा आर्यसमाजी था। उस गाव में कोई बीडी आदि तक न पीता था। स्वामी जी के प्रचार का बडा भारी प्रभाव था।

तहसील नारायणगढ मे शराबबन्दी प्रचार

मास्टर रामनिरजन आर्य मन्त्री आर्यसमाज नारायणगढ जि० अम्बाला के प्रयत्नो से तहसील नारायणगढ मे शराब बन्दी अभियान सफलतापूर्वक चलाया जा रहा है। गत मास आर्यसमाज बरौली मे दिनाक २७ दिसम्बर ९२ को हवन यज्ञ के अवसर पर युवको ने यज्ञोपवीत ग्रहण करके शराब, मास आदि सेवन न करने का सकल्प किया। इस अवसर पर ग्रामीण नरनारी उपस्थित थे।

इससे पूर्व १३ दिसम्बर ९२ को गाव मे भी इसी प्रकार का आयोजन किया गया था। श्री बाबूराम जी मिस्त्री तथा श्री चन्द्रपाल शास्त्री ने भी विशेष सहयोग दिया। इस ग्राम मे राधास्वामी मत का प्रचार बढ रहा था। आर्यसमाज के सत्सग से प्रभावित होकर ग्रामीण वैदिक धर्म की ओर आकर्षित हुए हैं। ग्राम हुसैनी मे भी आर्यसमाज का प्रचार तथा शराबबन्दी अभियान चल रहा है। ग्राम बमोन्दी, ताहडपुर, दरसूलपुर, बुर्ज तथा तन्दवाल मे आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता भी सक्रिय है। प० नन्दलाल आर्य की भजन मण्डली इस क्षेत्र मे शराबबन्दी तथा वेदप्रचार के कार्यक्रम पर है।

(पृष्ठ ३ का शेष)

श्री रामचन्द्र मूर्ति डा० देवराज, थिरूवेंकेटश आदि नेता नशाबन्दी के कार्यों मे जी-जान से जुट गये है। ८ जनवरी को पाडीचेरी मे नशाबन्दी परिषद् की प्रदेश शाखा का उद्घाटन भी किया गया। उसके अध्यक्ष पाडीचेरी कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश बनाये गये। श्रीमती साई कुमारी मन्त्री और श्री अद्धनारी को कोषाध्यक्ष चुना गया। पाडीकेरी के नगरपालिका हाल मे एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया जिसमे प्रो० शेरसिह जी तथा श्रीमती प्रभातशोभा आदि नेताओ ने शराबन्दी की आवश्यकता पर विचार रखे। इस अवसर पर प्रो० साहब ने घोषणा करते हुए कहा कि नशाबन्दी परिषद् १५-८-१९९७ आजादी की स्वर्णजयन्ती के अवसर पर देश मे पूर्ण नशाबन्दी लागू करवाने के लिए देशव्यापी आन्दोलन करेगी। यहा ५० नवयुबको और नवयुवतियो ने स्वय शराब पीनी छोडकर सगठित होकर कार्य करने का सकल्प किया।

प्रो० शेरसिह ने १७ जनवरी को सर्वखाप पचायत अलीपुर दिल्ली मे भी नशाबन्दी कराने पर बल दिया।

केदारसिंह आर्य

पुस्तक विमोचन व जन्मोत्सव समारोह सम्पन्न

दीनानगर में लौहपुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्मोत्सव बडी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी स्वतन्त्रानन्द कालेज दीनानगर, दयानन्द मठ दीनानगर तथा आर्यसमाज दीनानगर के भव्य समारोहो मे आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान् प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु तथा डा० अशोक आर्य ने स्वामी स्वतन्त्रानन्द सरस्वती के जीवन पर प्रकाश डाला। दयानन्द मठ के समारोह मे स्कूलो के बच्चो ने भाषणो, कविताओ व भजनो द्वारा स्वामी जी का जीवन प्रस्तुत किया।

कालेज के समारोह मे डा० अशोक आर्यकृत पुस्तक चरित्र तथा प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासुकृत पुस्तक 'धरती हो गई लहू लुहान" का विमोचन स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने किया।

सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन दिनाक १४ फरवरी, १९९३ रविवार को सभा कार्यालय दयानन्दमठ सिद्धान्ती भवन रोहतक मे होना निश्चित हुआ है।

अत आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से सम्बन्धित आर्यसमाजो से निवेदन है कि गत वर्ष की भाति अपने आर्यसमाज की ओर से प्रातव्य वेदप्रचार, दशाश तथा सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क सभा के उपदेशको/भजनोपदेशको अथवा धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा यथाशीघ्र सभा कार्यालय मे भेजने की कृपा करें जिससे आपके आर्यसमाज के सभा द्वारा स्वीकृत प्रतिनिधि महानुभावो की सेवा मे सभा के अधिवेशन का एजेण्डा आदि समय पर भेजा जा सके।

इस अधिवेशन मे हरयाणा मे आर्यसमाज के सगठन को सुदृढ करने, वेदप्रचार के प्रसार, आर्यसमाज की सस्थाओ एव सम्पत्तियो की सुरक्षा एव हरयाणा मे पूर्ण शराबबन्दी लागू करवाने के लिए सत्याग्रह की तैयारी के कार्यक्रम पर विचार किया जावेगा।

निवेदक —

(सूबेसिंह)

सभामन्त्री

श्री रामलाल मलिक का देहान्त

दिल्ली के आर्यसमाज के नेता श्री रामलाल जी मलिक का गत मास लम्बी बीमारी के पश्चात् ६५ वर्ष की आयु मे देहान्त हो गया। वे आर्यसमाज के सभी कार्यों मे तन, मन तथा धन से सहयोग करते थे। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

शोक-समाचार

सुप्रसिद्ध समाजसेवी एव आर्य वीरदल हरियाणा के कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री लाजपत राम जी आर्य करनाल निवासी के पिता श्री खण्डाराम चौधरी का २६-१२-९२ को आकस्मिक निधन हो गया है। वह एक उत्साही, दानवीर, दयालु, नेक इन्सान थे।

आर्य वीरदल सोनीपत मण्डल, आर्यसमाज शान्ति नगर सोनीपत द्वारा उन्हे भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की गई।

हम सभी उस महान् आत्मा के महान् आदर्शों पर चलकर उनका नाम अमर रखें।

विनीत

हरिचन्द स्नेही

मण्डलपति (जिला अध्यक्ष)

आर्य वीरदल सोनीपत

रुकिये !

नशीली चीजों से परिवार की बर्बादी होती

'भारत के कर्णधारों के नाम खुला पत्र'

भारत छोडो आन्दोलन की इस स्वर्णजयन्ती के इस पावन वर्ष में जब एक लम्बे अन्तराल के पश्चात् देश की प्रजा को अपने सर्वोच्च पदाधिकारी राष्ट्रपति एव प्रधानमत्री सात्विक, शान्त, प्रतिभाशाली, विद्वान् तथा समन्वयवादी मिले हैं और उनकी हार्दिक भावनाएं, उनके समय समय पर दिए गए राष्ट्र के नाम सन्देशो तथा कार्यकलापो मे स्पष्ट दिखाई देती हैं। एकबारगी लगा कि भारत मे कुछ सुख-शान्ति एव समृद्धि का पावन वातावरण बनपाएगा। किन्तु क्या कहा जावे उन स्वार्थी, पदलोलुप एवं केवल वोटो को लुभानेवाले नेताओ के विषय मे जो भारत को जोडने के स्थान पर तोडने पर तुले हैं। जब जरा देश में शान्ति सी होती दिखाई देती है उन विघटनात्मक शक्तियो को वह फूटी आख नही भाती। कोई धर्म, सम्प्रदाय अथवा मजहबी जनून फैलाकर अफरातफरी मचाने पर तुला है तो कोई पुन जिस जातिवाद की सकुचित भावना ने सारे राष्ट्र को आग के ढेर पर खडा कर दिया जो मण्डल आयोग जातीयता के जहर का पुलन्दामात्र है, जिस आरक्षण की भावना ने एक परजीवी वर्ग को जन्म दिया है जिसने प्रतिभा तथा गुणवत्ता पर पानी फेर दिया है जिसके कारण नीचा बनने की, मंगता बनने की, अपने को पिछडा कहलवाने की गालियो को सुहाली समझ लिया है, का विष पुन बोया जा रहा है। यहा तक कि अब तो जातीय आधार पर जनगणना कराने की बात भी उठने लगी है। कोई आरक्षण का विरोध करके लोगो के वोट बटोरना चाहता है तो दूसरा उसको लागू करने के लिए देश भर मे यात्राओ का आयोजन कराना चाहता है। भाषा के नाम पर जगह जगह पुन आदोलन किए जा रहे हैं और इससे भी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति तो यह है कि धारा ३७० ही कश्मीर को इस स्थिति तक लाने के लिए सिरदर्द थी आज और अधिक स्वायत्तता की माग की जा रही है। कोई छोटे राज्यो का समर्थन कर रहा है तो कोई अलग देश की माग कर रहा है।

कही खालिस्तान मागा जा रहा है तो कही तेलगूदेशम तो कही देश हरयाणा, कही विशाल हरयाणा, बोडोलैंड तो कही झारखण्ड, कही तमिलनैड तो कही उत्तराचल। कोई दार्जिलिग को अलग बताता है तो कोई ब्रजखण्ड को। यहा तक कि कुछ जिले भी स्वायत्तता की माग करने लगे हैं।

इस स्वर्णजयन्ती के अवसर पर चाहिए तो था कि हम देश को एकता के सूत्र मे पिरोते। देश मे उठ रही प्रान्त, भाषा, जाति, सम्प्रदाय, बहुसख्यक, अल्पसख्यक आदि की दीवारो को ढहा देते। एक ओर कोरिया, जर्मन आदि हैं जो एकता के सूत्र मे बधने की डगर पर हैं और एक ओर हम है जो भारतीय भारतीय के बीच अपने निजी स्वार्थों की पूर्ति हेतु निरन्तर खाइया खोद रहे हैं। आखिर कहा तक बाटा जावेगा मानवता को?

चिरकाल के गहन चिंतन एव अवलोकन के पश्चात् यही निष्कर्ष सामने आता जा रहा है कि वे व्यवस्थाए (सविधान) अथवा कानून जिन्हे भारतीय मात्र को विकास के समान अवसर देने तथा अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार देश के उत्थान मे योगदान देने योग्य बनाने के लिए बनाया गया था, कुछ दशको तक उनकी छत्रछाया मे राष्ट्र ने अप्रत्याशित उन्नति भी की, आज हमारे लिए असगत कर दिये गए है। इस व्यवस्था को इस ढाचे को जिसमे रहकर यह सब खाइया खुदा हैं बदलना ही होगा। अब तो यह हमारे पैरो मे जजीर जसी बन गई है। बडे से बडा अधिकारी एव राष्ट्रभक्त भी चाहते हुए भी कुछ भी कर पाने मे अपने को असमर्थ पाता है। अत कुछ नवीनीकरण करना होगा। यदि निम्न बिन्दुओ पर चिन्तन करते हुए तदनुकूल सविधान मे परिष्करण किया जावे तो निश्चित रूप से देश की एकता, अखण्डता स्वतन्त्रता की रक्षा हो सकती है।

१ सर्वप्रथम हम अपनी शिक्षापद्धति, जिसके माध्यम से भावी भारत का निर्माण हो रहा है, को पूर्णरूप से राष्ट्रीयकृत करें तथा जाति, धर्म, सम्प्रदाय आदि के नाम पर चल रही शिक्षणसस्थाओ का भी तत्काल राष्ट्रीयकरण किया जावे।

२ देश को व्यवस्था की दृष्टि से उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम और मध्य केवल पाच भागो मे विभक्त किया जावे। सभी छोटे-छोटे राज्यो, प्रान्तो को मिला दिया जावे।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जो व्यक्ति "कार्यं वा साधयेय शरीर वा पातयेयम्" के आदर्श को सम्मुख रखकर कार्य मे जुटते हैं, वे कठिनाइयो मे भी विचलित नहीं होते । सफलता उनके चरणो को चूमा करती है। जब तक उत्कट भावना द्वारा ध्येय के प्रति दृढता उत्पन्न नहीं की जाती तब तक हम ऋत के प्रकाश से दूर रहते हैं। हमे अन्धकार ही चारो ओर से घेरे रहता है। इसलिए ऋत के प्रकाश को प्राप्त करके उसे अपने समीप रखने के लिए उग्रता को धारण करना पडेगा। उग्रता से कठोरता का जन्म होता है और फिर इससे अडिग भावना का प्रादुर्भाव होता है। किन्तु उग्रता के फलस्वरूप कठोरता से क्रोध का भी जन्म होता है और यह उत्थान के स्थान मे पतन का कारण बन जाता है। क्योकि क्रोध विचारशीलता को नष्ट कर देता है। यहा ऐसी उग्रता अभिप्रेत नही, तभी तो मन्त्र से उग्र के आगे "दीक्षा" का विधान किया गया है। अपने ध्येय के प्रति अविचलित रहना ही उग्रता से तात्पर्य है। उत्कट इच्छा से ध्येय के प्रति लगे रहना चाहिये।

सत्य का सुन्दर प्रकाश आखो से देख लिया, उद्यम को प्राप्त करके आगे कदम बढाया, किसी प्रकार पथ से भटक न जाये अत वेद ज्ञान की जाज्वल्यमान ज्योति को अपना प्रदर्शक बनाया और पथ पर दृढ रहने के लिये उग्रता को धारण किया तब वह दीक्षित हो जाता है। दीक्षा का अर्थ है व्रत को धारण करना। अध्ययन के लिये गुरु के समीप जाकर उनके बताये आदेशो को पालन करना। देखी व सुनी हुई जीवन निर्माण की बातो को हृदय पर अकित करना। दीक्षा प्राप्त करने के लिये उत्तम भावना से गुरु के समीप किसी आदेश पालन का व्रत लें। व्यक्ति दीक्षा के पश्चात् जिन नियमों के पालन का व्रत अग्नि को साक्षी करके समाज के सामने ग्रहण करता है, उनके पालन करने मे बहुत कठिनाई आती है। समाज मनुष्य को पीछे ढकेलता है। यही उसकी परीक्षा का समय है। ऐसी स्थिति मे यदि वह व्रत और नियमो पर अटल रहते हुए, ससार के थपेडो को भी सहते हुए आगे ही बढता गया तो वह सफलता को वरण कर लेता है। इसलिये मन्त्र में आगे कहा कि उसके लिए तप करना पडेगा। तप के बहुत अंग हैं। किन्तु जो विरोधी भावना आवें, उन्हें झटककर दूर कर दिया जाये। विरोधी तत्त्वों के आने पर अपने स्थान से विचलित न हो, इसमे जो भी आपदाये एव कष्ट आवें उन्हे सहन करे, यही तप है। महर्षि दयानन्द का जीवन तप का ज्वलन्त उदाहरण है। राम और कृष्ण का जीवन भी तप के उदाहरणो से भरपूर है। तप ही मनुष्य को ध्येय तक पहुचाने का साधन है। सफलता के अभिलाषी तप के क्षेत्र में अपने को पीछे नही हटाते, बल्कि उसके द्वारा अपने दोषो को भस्मसात् कर लेते हैं। किन्तु तप के लिये भी कोई सहारा चाहिये। हमारे सामने कोई मधुर फल दिखाई दे रहा हो जो तप के पश्चात् हमे मिलेगा तभी हम तप के कठोर अनुष्ठान को महान् कष्ट सहकर भी पालन करने मे दृढ रह सकते हैं। मन्त्र कहता है कि तप के अनुष्ठान के पश्चात् बडा ही मधुर फल खाने को मिलेगा, सारे कष्ट दूर हो जायेंगे और इसके खाने मे जो आनन्द आयेगा ऐसा आनन्द अन्यत्र मिलना असभव ही है और उस फल को प्राप्त करना ही मानव जीवन का परम उद्देश्य है। वह है ब्रह्म। उसकी प्राप्ति के पश्चात् कुछ प्राप्त करना शेष नही रहता। ब्रह्म की समीपता सारे कष्टो को दूर कर देती है एवं आनन्द से भरपूर कर देती है। मनुष्य ब्रह्मलोक का प्राणी बन जाता है। किन्तु यदि यह मधुर फल प्राप्त होकर हमसे पृथक् हो जाये तो फिर हम जैसा अभागा कौन रहेगा। प्राय मनुष्य सफलता प्राप्ति पर अभिमान से अन्धा हो जाता है और अपने कर्तव्य को छोड देता है। यह कायहीनता ही उसके पतन का कारण होती है। तभी तो मन्त्र ने आदेश दिया कि यज्ञ को न छोडो, श्रेष्ठतम कर्मों का अनुष्ठान करते रहो तो फिर कभी ब्रह्म से पृथक् नहीं होना पडेगा। निष्काम भाव से परोपकार मे रत रहना, यह ब्रह्म की समीपता को चिरस्थायी बनाने का सुन्दर साधन है। मनुष्य के हृदय मे प्राणिमात्र के लिये कल्याण की कामना होनी चाहिये। प्राणिमात्र की आत्मा मे अपनी आत्मा को एव अपनी आत्मा मे प्राणिमात्र की आत्मा को अनुभव करके एकरसता एव एकरूपता की भावना से अपना हृदय ओत-प्रोत करले तो वह ब्रह्म को साक्षात् अनुभव करेगा। इन गुणो के सहारे पृथिवी टिकी हुई है। इन गुणो से भूषित व्यक्ति ही मातृभूमि के सच्चे सपूत होते हैं, जो भूतकाल से प्रेरणा लेकर केवल वर्तमान का निर्माण नहीं करते बल्कि भविष्य की भी सुदृढ नीव रख देते हैं। अत मातृभूमि को सच्ची सेवा के लिये हम मन्त्र मे बतलाये गुणों को धारण करें तभी वह हमारे लिये विशाल लोको का सेवादान करेगी और वही हमारे भूत एव भविष्य की स्वामिनी होगी।

राष्ट्र आज पुकार रहा है अपने सुपुत्रो को, राष्ट्रद्रोहियो ने हमे ललकारा है। सर से कफन बाधकर वीरो रणभूमि मे कूद पडो, तभी राष्ट्र की रक्षा हो सकेगी।

(पृष्ठ ५ का शेष)

३ आरक्षण को कम से कम किया जावे तथा उसका आधार जाति, धर्म, सम्प्रदाय आदि पर न हो अपितु गरीबी की रेखा से नीचे जी रहे सभी को सहारा, वह भी सीमित समय के लिए जीवन मे एक बार दिया जावे और उन्हे कम से कम साधनो का सदुपयोग करने का ज्ञान दिया जावे तथा दुर्व्यसनो से बचाया जावे। सरकारी सहायता को काम से जोडा जावे तथा निकम्मे, आलसी तथा अकर्मण्य लोगों को हेय समझा जावे। ऐसी परिस्थितिया तैयार की जावें जिससे आरक्षी इसे राष्ट्र का अहसान समझे और उस हीन अवस्था से जल्दी से जल्दी त्राण पाकर सामान्य कोटि मे आने में गर्व अनुभव करे।

४ कानून की दृष्टि मे सब समान हो, धर्म,सम्प्रदाय, अल्पसख्यक आदि का कोई भेदभाव न रखा जावे।

५ चुनाव प्रणाली से धन तथा बल के वर्चस्व को समाप्त किया जावे तथा सभी दलो के समझदार नेताओं को राष्ट्रहित मे कुछ रचनात्मक कार्य करने की जिम्मेदारी सौंपी जावे अर्थात् सभी की सहमति एव दलगत भावना से ऊपर उठकर काम करने का वातावरण बनाया जावे।

अन्त मे देश के सभी मनीषियो चिन्तनशील नागरिको तथा देशभक्त नेताओं से सानुरोध प्रार्थना है कि भारत को जोडकर इस स्वर्णजयन्ती वर्ष में अपना कर्तव्य निभाकर अपने जीवन को कृतार्थ करें।

डॉ॰ सत्यदेव
३ ए/१२४, न्यू टाउन,
फरीदाबाद
मन्त्री आर्यसमाज नं॰ ३

भारत मां के रक्षक

भारत मा के रक्षक हैं हम आगे कदम बढायेंगे,
देश पे बलि-बलि जायेंगे हम देश के लिए मर जायेंगे।
ऊचे ऊचे पर्वत आयें नदिया गहरी गहरी हों
फिर भी हम सब जन की आखें मजिल पर ही ठहरी हो॥
तूफानो का चीरकर सीना कश्ती पार लगायेंगे ...
रुकना झुकना नही जानते नही जानते कायरता,
लोभ झूठ अन्याय मिटाकर दलन करेंगे दानवता,
चाहे मुश्किल जितनी आयें आगे कदम बढायगे ...
आज हिमालय की चोटी से फिर हमने ललकारा है,
इस सागर से उस सागर तक हिन्दुस्तान हमारा है,
हम से जो टकरायेंगे वो अपने मुह की खायेंगे ......
हम देश पे ... .

रचनाकार—शान्तिप्रिय "सौरभ"
५-१२६ पचशील पार्क, नई दिल्ली

"खुशी का खजाना"

यदि आप हमेशा खुश रहना चाहते हो तो निम्नलिखित तथ्यों पर ध्यान दीजिये और आप उचित समझते हों तो अमल करना आरम्भ कर दो। आपके जीवन में, घर में खुशियां आने लगेंगी। देखते-देखते महीनों, वर्षों में आप खुशहाल हो जाओगे। चारों ओर खुशी का ही वातावरण नजर आएगा और दुःख में भी सुख का ही अनुभव करोगे :-

१ यह प्रकृति का अटल नियम है, यदि आप खुश रहना चाहते हो तो अन्य प्राणियों को भी खुश देखना पसन्द करो। किसी के प्रति मन में ईर्ष्या-द्वेष का भाव मत रखो। जलचर, थलचर, नभचर, किसी भी प्राणी को मत सताओ। सबके प्रति हृदय में प्यार रखो। यदि आप किसी दुखिया की सहायता नहीं कर सकते तो उसके दुःख में दुःखी होकर उसका कष्ट शीघ्र दूर करने के लिए प्रभु से विनम्र प्रार्थना ही करो। कोई प्राणी आपको कष्ट देता है या नुकसान पहुंचाता है तो उससे बचने के लिए रक्षा का यथायोग्य प्रबन्ध करो।

२ कभी झूठ मत बोलो। झूठ को छोड़कर सच बोलो। सच कहने में बड़ा आनन्द है। यदि आप से कोई गलती या अपराध होगया है, वह छोटा है या बड़ा है, उसे स्वीकार कर लो। सच-सच बताने में अपना अपमान मत समझो। यदि आप झूठ बोलकर उसे छुपाने की कोशिश करोगे तो एक झूठ के साथ अनेक झूठ बोलते रहोगे फिर भी सचाई का एक दिन पता चल ही जाता है। सच बताने में एक बार ही कष्ट होता है। उसमें शर्म भी आती है परन्तु बार-बार लज्जित नहीं होना पड़ेगा। इन्सान गलती का पुतला है। अज्ञानता और अल्पज्ञता के कारण प्रायः जाने-अनजाने में गलती हो ही जाती है मगर उस गलती का जो पश्चात्ताप करता है और भविष्य में फिर कभी न करने की प्रतिज्ञा है वही वास्तव में मनुष्य है। सत्य के ग्रहण करने और असत्य को त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

३ कभी किसी की वस्तु को चुराने, उठाने और छूने तक की चेष्टा मत करो। सारे दिन मेहनत करो। परिश्रम और पुरुषार्थ से जो प्राप्त होता है उसमें ही सन्तुष्ट होकर निर्वाह करो। पराई वस्तु को देखकर कभी लालच मत करो। यह लालच बुरी बला है। देखो थोड़े लालच के पीछे व्यक्ति फंस जाता है और अपनी मेहनत की कमाई भी खो देता है। चोरी-जारी और जुआरी करनेवालों के अनेक जीवित उदाहरण हैं जो दण्ड भुगत रहे हैं। विषय विस्तार के कारण यहां वर्णन नहीं कर रहा, शिक्षा ग्रहण करने के लिए निम्न दोहे पर विचार करो—

मक्खी बैठी शहद पर पंख लिये लिपटाय।
हाथ मले, सिर धुने, लालच बुरी बलाय॥

नीति कहती है "परद्रव्येषु लोष्टवत्" अर्थात् दूसरे की वस्तु को मिट्टी के समान समझो। जब आप ऐसी भावना रखोगे तो आपकी वस्तु को भी कोई नहीं उठाएगा और उठाएगा तो सजा पाएगा।

४ इस संसार में सबसे पहला सुख है निरोगी काया। काया कब निरोग रहेगी जब शरीर में नया खून बनता रहेगा। नया खून कब बनेगा जब पाचन क्रिया (हाजमा) ठीक रहेगा। हाजमा कब ठीक रहेगा जब सख्त मेहनत करोगे। मेहनत करोगे तो भूख लगेगी, खाया-पीया शीघ्र पच जाएगा। रात को नींद भी गहरी आएगी चाहे पत्थरों पर ही सोना पड़े वहां नींद आ जाएगी जबकि धनवान् नींद के लिए तरसते हैं, नींद आनेवाली गोलियां खाते हैं। आप सख्त मेहनत तब ही कर सकते हो जब शरीर में शक्ति होगी, बल होगा। शक्ति और बल प्राप्त करने के लिए ब्रह्मचर्य का पालन करो। ब्रह्मचर्य का पालन करने-वाला, सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास और बड़ी से बड़ी विपत्ति को भी सहन कर सकता है। लोग क्षणिक स्वाद के लिए संयम को खोकर मूल्यवान् धातु को शरीर से निकालकर अपने पांव पर आप कुल्हाड़ी मारते हैं। ब्रह्मचर्य का पालन करने से वृद्ध अवस्था नहीं आती और आती है तो फिर भी युवा जैसा ही नजर आता है। देखने सुनने की समस्त इन्द्रियां आजीवन अपना काम करती रहती है। जीवन में उत्साह बना रहता है और शरीर में सुख का अनुभव होता है।

५ खुश रहने का अन्तिम लक्ष्य है, अपनी इच्छाओं को कम करो और आवश्यकताओं को बढ़ने मत दो अर्थात् अपनी आय की सीमा में रहो। आय से अधिक खर्च करनेवाला ही भिखारी बनकर दुःखी रहता है। सदैव कर्जदार बना रहता है। जीवन को शुद्ध और सरल बनाओ। जितनी आपकी इच्छाएं और आवश्यकतायें कम होंगी उतना ही जीने का मजा आएगा। हम यात्री हैं, जीवन एक यात्रा है। यात्रा के दौरान हमारे पास जितना सामान कम होगा उतना ही यात्रा में सुविधा रहेगी। अधिक सामानवाला हमेशा परेशान ही रहता है। अपने पास उतना ही सामान रखो जो बहुत जरूरी है। उर्दू में कवि लिखता है—

आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं।
सामान सौ वर्ष का, पल की खबर नहीं॥

प्रिय सज्जनो! भौतिकता की दौड़ में होड़ करना छोड़ दो। यदि संग्रह करना चाहते हो तो अपने अन्दर शारीरिक और आत्मिक बल का संग्रह करो। यही सबसे बड़ी दौलत है जिसे कोई चोर चुरा सकता नहीं, कोई बदमाश छीन सकता नहीं। यह वह दौलत है जो मरते दम तक ही नहीं, मरने के बाद भी आपकी ही रहेगी।

लेखक—देवराज आर्य मित्र
आर्य आश्रम, आदर्शनगर डी ब्लाक
मलेरना रोड, बल्लबगढ
जि० फरीदाबाद (१२१००४)

जिला वेदप्रचार मण्डल पानीपत के समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा गठित वेद प्रचार मण्डल पानीपत के संयोजक एवं सभा के कोषाध्यक्ष लाला रामानन्द जी सिंगल के निर्देशन में प० रामकुमार जी आर्य की भजनमण्डली द्वारा जिन-जिन ग्रामों में प्रचार हुआ वह इस प्रकार है।

जैसे—नौल्था, बलाना, माण्डी, चमराडा, बल्ली, मनाना, डोडपुर इत्यादि।

१ ग्राम नौल्था में—श्री कर्मसिंह जी भूतपूर्व सरपंच ने विशेष योगदान दिया।

२ ग्राम बलाना—श्री धर्मपाल जी, राजेराम जी, मेहरसिंह जी सु० रतनसिंह तथा वीरसिंह जी हवलदार ने विशेष योगदान दिया।

३ माण्डी—श्री राजसिंह सु० श्री जागेराम जी आर्य, श्री बदलूराम जी आदि ने विशेष सहयोग दिया।

चमराडा—श्री बलवानसिंह जी आर्य, डा० श्री चन्दगीराम ने विशेष योगदान दिया।

५ बल्ली—श्री नफेसिंह जी आर्य प्रधान तथा नफेसिंह नम्बरदार, श्री सुल्तानसिंह ड्राईवर, हुकमसिंह नहरा, दलीपसिंह जी, मास्टर भीमसिंह जी, रणवीरसिंह, सतीशकुमार जी आदि ने प्रचार में अपना-अपना विशेष योगदान दिया।

६ डोडपुर में—श्री मेघराज जी, रामसिंह जी मेम्बर पंचायत ने अपना विशेष योगदान दिया।

संयोजक
रामकुमार आर्य भजनोपदेशक,
जिला वेद प्रचार मण्डल, पानीपत

आर्यसमाज थानेसर (कुरुक्षेत्र) का चुनाव

१ डा० रामप्रसाद मलहौत्रा प्रधान, २ श्री अमरसिंह, ३ डा० ओ० पी० ललित उपप्रधान, ४. श्री आ० के० सेठी मन्त्री, ५ श्री पूर्णचन्द सहायक मन्त्री, ६ श्री सुल्तानसिंह, ७ श्री प्रकाश उपमन्त्री, ८ श्री हरबन्सलाल पुस्तकाध्यक्ष, ९ श्री दिवेन्द्रपाल कोषाध्यक्ष, १० श्री अमृतपाल शास्त्री प्रचार मन्त्री।

शोक समाचार

सभा के पूर्व उपदेशक श्री अर्जुनदेव आर्य ग्राम दहकोरा जिला रोहतक की धर्मपत्नी श्रीमती रामदेवी आर्या का लम्बी बीमारी के के कारण १८ नवम्बर ९२ को ७३ वर्ष की आयु में निधन होगया।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सद्गति तथा शोक सतप्त परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति देवें।

—सम्पादक

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् प० क्षितीशकुमार वेदालंकार का स्वर्गवास

आर्यसमाज के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान्, पत्रकार तथा स्वतन्त्रता सेनानी प० क्षितीशकुमार वेदालंकार का निधन ७६ वर्ष की आयु में लम्बी बीमारी के पश्चात् २४ दिसम्बर ९२ को दिल्ली में स्वर्गवास होगया।

आपका जन्म कनीना जिला महेन्द्रगढ (हरयाणा) में हुआ था। आपने स्वामी श्रद्धानन्द जी के चरणों में गुरुकुल कांगडी में शिक्षा ग्रहण की। आप प्रभावशाली वक्ता, लेखक तथा विचारक थे।

भजन के दामाद की फैक्टरी के खिलाफ केंद्र को पत्र : जनसत्ता

हिसार, जनवरी। लोकराज सुरक्षा समिति. हरियाणा ने प्रधानमन्त्री, राष्ट्रपति व केन्द्रीय पर्यावरण मन्त्री कल्पनाथ राय को पत्र लिखकर हरयाणा के मुख्यमन्त्री भजनलाल के दामाद की हिसार स्थित शराब फैक्टरी द्वारा फैलाए जा रहे प्रदूषण की ओर उनका ध्यान दिलाया है।

समिति के अध्यक्ष दीपचन्द राजलीवाला और उपाध्यक्ष कंवरसिंह की ओर से लिखे गए पत्र की प्रतियां लोकसभा अध्यक्ष, उपराष्ट्रपति, सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश व हिसार छावनी के समान्य आदेशक अधिकारी को भी भेजी गई हैं।

पत्र में कहा गया है कि मुख्यमन्त्री के दामाद की शराब फैक्टरी द्वारा वायु प्रदूषण के अलावा जलप्रदूषण भी फैलाया जा रहा और हिसार शहर के अलावा हिसार छावनी, सात रोड व मयड के लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड रहा है। पत्र में शराब फैक्टरी के निदेशकों, प्रबन्धको व मालिकों के अलावा मुख्यमन्त्री के खिलाफ भी कार्यवाई किए जाने की मांग की गई है।

आर्यकुमार सभा (रादौर) चुनाव

प्रधान—सजीवकुमार आर्य
उपप्रधान—बृजेश कुमार आर्य
मन्त्री—विजयकुमार आर
कोषाध्यक्ष—महेशकुमार आर्य
खेल मन्त्री—पवनकुमार आर्य।

आर्यसमाज ओड कालोनी रादौर का चनाव

प्रधान—हरिश्चन्द्र आय, कार्यकर्ता प्रधान—दयालचन्द, सुन्दरलाल, दयोपाल, रामगोपाल, मन्त्री—वीरेन्द्रसिंह, उपमन्त्री—पवनकुमार, प्रचारमन्त्री—अर्जुनदेव, कोषाध्यक्ष—रमेशचन्द आर्य, कर्मसिंह।

आर्य पर्वों की सूची (१९९३)

१	मकर संक्रान्ति	१४ १ ९३	गुरुवार
२	बसन्त पचमी	२८ १ ९३	गुरुवार
३	सीताष्टमी	१४ २ ९३	रविवार
४	महर्षि दयानन्द जन्म दिवस	१६ २ ९३	मगलवार
५	दयानन्द बोध रात्रि	१९ २ ९३	शुक्रवार
६	लेखराम तृतीया	२४ २ ९३	बुधवार
७	होली	७ ३ ९३	रविवार
८	नवसस्येष्टि	८ ३ ९३	सोमवार
९	आर्यसमाज स्थापना दिवस	२४ ३ ९३	बुधवार
१०	श्री रामनवमी	१ ४ ९३	गुरुवार
११	हरि तृतीया	२२ ७ ९३	गुरुवार
१२	श्रावणी उपाकर्म	२ ८ ९३	सोमवार
१३.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	११ ८ ९३	बुधवार
१४	विजया दशमी (सिद्धान्ती जयन्ती)	२४ १० ९३	रविवार
१५	गुरु विरजानन्द दिवस	२७ १० ९३	बुधवार
१६	महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस	१३ ११ ९३	शनिवार
१७	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	२३ १२ ९३	गुरुवार

आर्यसमाज तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं से निवेदन है कि इन पर्वों को मानकर इन्हें आर्यसमाज के प्रचार का साधन बनावें।

शराब हटाओ देश बचाओ।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ पंजि० नं० P/RTK-४१ सृष्टिसंवत् १,९६, ०८,५३, ०९३

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २० अंक १० २८ जनवरी, १९९३ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

युगप्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

लेखक—यशपाल आर्यबन्धु, आर्य निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद २४४०३२

लोग कहते हैं जमाना बदलता है अक्सर,
मर्द वे हैं जो जमाने को बदल देते हैं ॥

उन्नीसवी शताब्दी भारतीय पुनर्जागरण के काल से जानी जाती है। इस काल मे अनेक महापुरुषों ने नवजागरण का शंख फूका था। उन्होंने समाज मे नई चेतना और नवीन जागृति उत्पन्न करने का भरसक प्रयत्न किया था। आर्यसमाज के यशस्वी संस्थापक महर्षि दयानन्द उनमे अग्रणी थे। जागृति के जो स्वर वे फूक गये, उनकी कोई उपमा नहीं मिलती। वस्तुत उनका जागृतिनाद युगप्रवर्त्तक सिद्ध हुआ। प्रसुप्त राष्ट्रीयता को जगाने की दिशा मे उनका विशेष योगदान रहा है। इतिहास साक्षी है कि भारत में प्रसुप्त राष्ट्रीयता को जगाने वाले वही महामानव थे। उन्होंने ही सर्वप्रथम स्वराज्य की कल्पना की थी और स्वदेशी तथा स्वभाषा की भावनाओं को उजागर किया था। वे मात्र एक धर्मसंस्थापक अथवा समाज सुधारक ही नहीं थे अपितु मूलत वे प्रबल राष्ट्रवादी थे और राष्ट्रवादी भी क्रान्तिकारी राष्ट्रवादी। उन्नीसवीं शती के अन्य सुधारक सुधारकमात्र थे युगप्रवर्त्तक नही पर महर्षि दयानन्द क्रान्ति के वेग से आये थे, इसीलिए वे युगप्रवर्त्तक सिद्ध हुए। परिवर्तन जब धीरे-धीरे आता है, तब वह सुधार कहलाता है किन्तु वही जब तीव्र गति धारण कर लेता है, तो परिवर्तन या सुधार नहीं क्रान्ति कहलाने लगता है। सुधार तो त्रुटियों के संशोधन मात्र का नाम है जबकि क्रान्ति तीव्रतर एवं प्रबलतम परिवर्तन का नाम है।

जहा तक महर्षि का प्रश्न है, वे सर्वतोमुखी क्रान्ति के अग्रदूत थे। अन्य सुधारक युग-सधि के द्वार तक ही पहुच कर रह गये वास्तविक परिवर्तन वे नहीं करा पाये। पर महर्षि परिवर्तन के सभी द्वारों को लांघते चले गये। यही कारण है कि वे युगप्रवर्त्तक कहलाये। जो युग को नई दिशा दे डाले, वही युगप्रवर्त्तक कहलाता है। महर्षि ने अपने युग को एक नई दिशा, एक नया मोड़ दिया था। फिर वे युग-प्रवर्त्तक क्यों न कहलाते ?

युग-परिवर्तन का भाव लिये महर्षि जब कार्यक्षेत्र में उतरे तो लोग उन्हें पहचान नही पाये। महर्षि ही नही, संसार के प्राय सभी महापुरुषों के साथ ऐसा ही होता चला आया है कि लोग उन्हें पहचान ही नहीं पाते। किसी विद्वान् का यथार्थ कथन है कि—"महापुरुष होने का अर्थ गलत समझा जाना है।" महापुरुषों को संसार प्राय. गलत ही समझता चला आया है। उनके जीवन-काल में तो लोग उन्हें प्राय पहचान ही नहीं पाते। महामानव दयानन्द इसके अपवाद नहीं थे। संसार ने उन्हें समझने में बडी भूल की है। कोई उन्हे केवल एक समाज-सुधारक ही समझता रहा है तो कोई मात्र एक धर्म-प्रचारक। कोई केवल एक कुरीति-निवारक, तो कोई एक पाखण्ड-निवारक। कोई एक सामान्य साधु तो कोई क्रान्तिकारी। यहा तक कि कोई उन्हें नास्तिक समझता रहा तो कोई अंग्रेजों का एजेन्ट। जबकि स्वय अंग्रेज उन्हें सदैव शंका की दृष्टि से देखते रहे हैं और उन्हें बागी फकीर मानते रहे हैं। मतवादी लोग उन्हें अपना प्रबल शत्रु समझते रहे हैं। पर खेद है कि महर्षि दयानन्द का वास्तविक सत्य स्वरूप जग समझ ही नहीं पाया। आचार्य नरदेव शास्त्री ठीक ही लिखते हैं कि—"संसार चकित है कि उसने स्वामी दयानन्द को समझने मे इतनी भूल क्यो की ? उस समय संसार यदि स्वामी दयानन्द को न समझ सका, तो इतने आश्चर्य की बात नही है। सबसे बडा आश्चर्य यह है कि स्वामी दयानन्द के अनुयायी भी अब तक स्वामी जी के पूर्व स्वरूप को नही समझ सके हैं।" (दयानन्द कोमेमोरेशन वाल्यूम, पृष्ठ ३८६)

आचार्य नरदेव शास्त्री ने यह शब्द महर्षि निर्वाण अर्द्ध शताब्दी के अवसर पर लिखे थे, पर लगता है कि ये शब्द आज के लिये लिखे गये हो। यह वास्तविकता है कि अधिकाश आर्यगण महर्षि के सत्य स्वरूप को आज भी पूर्णतया नही समझ पाये। क्षुद्रदृष्टि वाले हम लोग भला महर्षि का समग्र स्वरूप समझ भी कसे सकते हैं ? वस्तुत महर्षि का यथार्थ स्वरूप अभी समझा जाना शेष है। फिर भी जैसा कि विश्वविख्यात विद्वान् ट्योनबी लिखता है कि—"विकट परिस्थिति आने पर प्रत्येक व्यक्ति उस परिस्थिति से निकलने के लिये जूझना चाहता है, परन्तु स्वार्थ अथवा भीरुता के कारण जूझ नही पाता। उस समय कोई महापुरुष होता है जो सबकी पीडा को अपने हृदय मे खींच कर परिस्थिति की विषमता से लडने के लिये उठ खडा होता है। और जब कोई ऐसा महापुरुष सामने आता है तब सबके सिर उसके पैरों पर झुक जाते हैं।" महामानव दयानन्द ऐसे ही महापुरुष थे कि जिन्होंने सबकी पीडा खींचकर अपने हृदय मे समेट ली थी।

महर्षि दयानन्द एक दिग्विजयी वीर विजेता थे। इतिहास साक्षी है कि जिस किसी भी दिशा मे उन्होंने अपना पग बढाया, दिशायें नमती चली गयी और वे विजय दुन्दुभि बजाते, विजय पताका फहराते आगे ही आगे बढ़ते चले गये। तभी कोई उन्हे नेपोलियन की उपमा देने लगा तो कोई सिकन्दर की, कोई अर्जुन को, कोई अभिमन्यु की, पर वे इन सबसे महान् थे, ऐसे अनुपम योद्धा एव दिग्विजयी वीर विजेता की उपमा संसार भर के इतिहास के पन्नों में ढूंढने से कहीं नही मिलती'। खदीजा बेगम ठीक ही लिखती हैं कि—"नेपोलियन और सिकन्दर जैसे अनेक सम्राट् एव विजेता ससार मे हो चुके हैं, परन्तु स्वामी दयानन्द इन सबसे बढ़कर थे।" वस्तुत वे अपने काम मे और अपनी शान में निराले ही थे। कविवर प्रकाश का यथार्थ कथन है कि—

यू तो कितने ही महापुरुष हुए दुनिया मे,
कोई गुरुदेव दयानन्द सा देखा न सुना।
ऐसे युगप्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द को कोटि-कोटि प्रणाम हो।

शराब हटाओ,

देश बचाओ

आर्यसमाज के नेता स्व० पं० क्षितीश वेदालंकार का महान् व्यक्तित्व जो हमें सदा प्रेरणा देता रहेगा

यद्यपि प० क्षितोश जी वेदालकार (७६) गत डेढ़ वर्ष से अस्वस्थ थे, निरन्तर क्षीणता अनुभव कर रहे थे तो भी ऐसा नहीं लगता था कि वे इतनी जल्दी (२४ दिसम्बर १९९२) हम सबको छोडकर चल जाएगे। कठोर परिश्रम और भावुकतापूर्ण स्वभाव के कारण वे अपनी आयु को पकडकर नही रख सके।

छोटा कद, सावला रग, सामान्य से दिखाई देनेवाले प० क्षितीश जी वेदालकार अपने सौम्य स्वभाव, कठिन साधना, विद्वत्ता तथा अपनी सहज मुस्कान से अपने सम्पर्क में आनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को सहज ही अपनी ओर आकृष्ट कर लेते थे।

प० क्षितोश जी वेदालकार का जन्म १६ सितम्बर १९१६ तद-नुसार आश्विन शुक्ल एकादशी के दिन सम्वत् १९७३ विक्रमी मे पुरानी दिल्ली के जोगीवाडा मुहल्ले मे हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा कमर्शियल स्कूल चर्खेवालान मे हुई। सन् १९२५ में आप गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर मे, सन् १९२७ मे कुरुक्षेत्र में, वहा से गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ तथा सन् १९३२ मे आपने गुरुकुल कागडी में शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रवेश लिया। १९३९ मे आपको गुरुकुल कागडी से वेदालकार उपाधि प्राप्त हुई। यहा यह उल्लेखनीय है कि हैदराबाद सत्याग्रह मे प्रथम जत्थे में ही जेल चले जाने के कारण वे वेदालकार की परीक्षा नही दे सके थे, पर गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय ने उनको बिना परोक्षा दिये ही उनकी अनुपस्थिति मे ही उन्हें उक्त उपाधि प्रदान कर दी। वे अपनी कक्षा मे सदा प्रथम स्थान प्राप्त करते थे। बाद मे आपनें १९५४ में मेरठ कालिज (आगरा विश्वविद्यालय) से प्रथम श्रेणी में एम०ए० (सस्कृत) की परीक्षा भी उत्तीर्ण की।

आपका बचपन का नाम छोटेलाल या जो कि गुरुकुल में क्षेत्रपाल कर दिया गया था। आपको शैशव से ही लेखन का शौक था। आप किंजल्क नाम से कविताए, चक्रधारण नाम से यात्रा वृत्तान्त तथा बडे होने पर आपने क्षितीश कुमार नाम से साहित्य व पत्रकारिता के क्षेत्र में पदार्पण किया। आपका क्षितोश कुमार नाम इतना लोकप्रिय हुआ कि अब लोग इसी नाम से परिचित हैं। छात्रावस्था में ही आपको भाषण व अभिनय का शौक था। अभिनय करते हुए आपने मुद्राराक्षस नाटक के चाणक्य की अत्यन्त सफल भूमिका की थी।

स्नातक होते ही प० जी आर्यसमाज के उपदेशक के रूप मे नागपुर को केन्द्र बनाकर मध्यप्रदेश और विदर्भ में कार्यरत हो गये। १९४१ को जनगणना में वहा के लोग अपने नाम के साथ आर्य लिखाए, इसके लिए उन्होने अलख जगायी। तभी आप भाषण देने के लिए जालना (हैदराबाद) गये, पर आपके क्रान्तिकारी विचारों से घबराकर निजाम ने आपकी गिरफ्तारी का वारन्ट जारी कर दिया। तभी आपको सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने उपदेशक के ही रूप में पजाब, सिंध तथा बिलोचिस्तान मे वदिक धर्म और आर्यसमाज के प्रचार के लिए भेजा।

२३ जून १९४४ को आपका विवाह कन्या गुरुकुल हाथरस की स्नातिका 'विद्याविभूषिता' ब्यावर (राजस्थान) की एक आर्यसमाजी परिवार की कन्या पवित्रा देवी से हुआ। यह अन्तर्जातीय व अन्त प्रांतीय विवाह था। विवाह मे पवित्रा जी बिना परदे के थीं और वेदमंत्रों का उच्चारण कर रहीं थी। कट्टरपंथी पौराणिकों व तोस ग्राम पचायतों ने इस विवाह का तीव्र विरोध और बहिष्कार किया। पर उनके विवाह पर समाज सुधारकों के प्रशंसा के इतने पत्र आए कि उनको पढ़ने में दो घण्टे लग गये। वह विवाह क्या था, आर्यसमाज का एक वार्षिकोत्सव था। उसमे स्वय क्षितोश जी ने जातिभेद के अभिशाप के विरुद्ध जोरदार भाषण दिया, जिससे जनता मे नई जागरित हुई। समय साक्षी है कि पवित्रा जी का साथ उनके जीवन के लिए वरदान सिद्ध हुआ।

आपका व्यावसायिक जीवन पत्रकारित का रहा। देश विभाजन के उपरान्त १६ अक्तूबर १९४७ को आपने प० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति के निर्देशन में अर्जुन दैनिक मे उपसम्पादक के रूप में तथा कुछ समय तक साप्ताहिक अर्जुन के मम्पादक के रूप में कार्य किया। १५ मार्च १९५३ मे दैनिक हिन्दुस्तान में आपकी नियुक्ति हुई। वहा आपने उपसम्पादक, मुख्य उपसम्पादक, सहायक सम्पादक और साहित्य सम्पादक के रूप मे कार्य किया। एशिया के प्रागण मे भारत के झरोखे से, विश्व वातायन, यत्र-तत्र-सर्वत्र आदि लोकप्रिय स्तम्भों के आप लेखक रहे श्रेष्ठ पत्रकारिता के लिए आप तीन बार पुरस्कृत हुए।

१९७९ मे दैनिक हिन्दुस्तान से सेवानिवृत्त होने के बाद आपने आर्यजगत् का सम्पादन प्रारम्भ किया। अब तक आर्यजगत् डी०ए०वी सस्थाओ के प्रचार का माध्यम था। आपके संपादन से आर्यजगत् में एक चमक उत्पन्न हो गई। यह न केवल आर्यसामज का वरन् राष्ट्रोय विचारधारा का प्रमुख पत्र बन गया। आर्यजगत् से जितनी अच्छी सामग्री उसमे दी जा सकतो थी और उसका जो स्वरूप हो सकता था, वह उसने प्राप्त किया। इसकी प्रसार सख्या १ हजार से बढकर ३६ हजार हो गयी और यह राष्ट्र का सवाहक हो गया।

क्षितोश जो की पत्रकारिता के क्षेत्र मे सदा विरोधों का सामना करना पडा। दैनिक हिन्दुस्तान में थे तो अपने आर्य सिद्धान्तो का खुल-प्रचार नही कर सकते थे, पर फिर भी आपको लेखनी ने एक ठीक दिशा का अनुसन्धान कर लिया, जिसमे आर्यसमाज का प्रत्यक्ष प्रचार वे भले ही न कर सके पर एक विशाल फलक पर अपनी ओजस्वी व साहित्यिक लेखनी से राष्ट्रनिर्माण का कार्य उन्होंने किया। आर्यजगत् का कार्य सभाला तो उन्हें एक साथ कई चुनौतियों का सामना करना पडा— डी०ए०वी० सस्थाओं के आदर्शों व क्रियात्मकरूप में आया बदलाव, आर्यसमाज की वर्तमान स्थिति मे उसकी भूमिका का जटिल प्रश्न, विशेष रूप में वर्तमान युग में उसकी सार्थकता, गुरुकुल व डी०ए०वी० सस्थाओं में अन्तर तथा साथ ही आर्यसमाजियों व आर्यसमाज का प्रचार जैसा असाहित्यिक कार्य। प० जो के सम्पादन में प्रकाशित आर्यजगत् को देखकर आश्चर्य होता था कि वे इन सब चुनौतियो का सामना भी करते रहे और आर्यसमाज का दिशा निर्देश का जो उन्होंने कार्य किया। यह सत्र वेद, भारतीय सस्कृति, भारतीय भाषाओं और भारतीयता के सैद्धान्तिक ज्ञान के अतिरिक्त राजनीतिक व सामाजिक स्तर पर भी भारतीयता का सरक्षक बना।

विशेष रूप से आर्यजगत् के सम्पादकोय अत्यन्त लोकप्रिय हुए। पाठक उनके सम्पादकीयो को पढने की प्रतीक्षा करते थे। ये सम्पादकीय तत्कालीन किसी सामाजिक व राष्ट्रीय समस्या से भी जुड़े होते थे और उनमे उस समस्या के समाधान का कोई शाश्वत समाधान भी रहता था। इनके अनेक सम्पादकीय दैनिक हिन्दुस्तान तथा नवभारत टाइम्स में लेखों के रूप मे प्रकाशित हुए, यह उनके महत्त्व का एक प्रमाण है।

आप द्वारा सम्पादित अभिन्दन ग्रन्थो व स्मारिकाओ का विशेष महत्त्व है, वे सग्रहणीय हैं। सातवलेकर अभिनन्दन ग्रन्थ (१९६८), मौरिशस स्मारिका (१९७३), सत्यार्थप्रकाश शताब्दी स्मारिका (१९७९), लदन स्मारिका (१९८०), महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारिका (१९८३), डो०ए०वी० शताब्दी स्मारिका (१९७६) आदि आर्यजगत् की अमूल्य निधि हैं। संस्कृत रक्षा विशेषाक में सस्कृत के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है। संस्कृत की भारतीय शिक्षा व भाषाओं के विकास में कितनी आवश्यता है, यह इससे स्पष्ट हो जाता है।

प० क्षितीस जी वेदों के विद्वान् थे। वे भारतीय दर्शनों के ज्ञाता थे। उन्होंने संस्कृत और हिन्दी साहित्य का गहन अध्ययन किया था। वे भारतीय इतिहास के पण्डित थे। उनका रामायण, महाभारत, चाणक्य के अर्थशास्त्र आदि पर पूर्ण अधिकार था। सम्पूर्ण ज्ञान उनको कण्ठस्थ था। विश्व के अन्य विचारको के मतों को भी वे भली प्रकार जानते थे। उनकी पत्रकारिता और लेखन में उनका अगाध ज्ञान

(शेष पृष्ठ ७ पर)

साधारण सभा के सदस्यों की सेवा में वार्षिक साधारण तथा असाधारण सभा की बैठक की कार्य-सूची (एजेण्डा)

माननीय प्रतिनिधि महोदय, नमस्ते

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण तथा असाधारण अधिवेशन दिनांक १४ फरवरी, १९९३ रविवार को प्रातः ११ बजे सभा कार्यालय सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, गोहाना मार्ग रोहतक में होना निश्चित हुआ है। अत सभा के सभी प्रतिनिधियों से निवेदन है कि समय पर पधारें।

विचारणीय विषय साधारण अधिवेशन

१. गतवर्ष दिवगत हुए आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ताओ को श्रद्धांजलि।

२. गत सभा अधिवेशन दिनाक २ फरवरी ९२ कार्यवाही की सम्पुष्टि।

३ सभा कार्यालय वेद प्रचार विभाग, सर्वहितकारी साप्ताहिक, शराबबन्दी, आर्य विद्या परिषद्, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, गुरुकुल कुरुक्षेत्र, दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर, महर्षि दयानन्द वैदिकधाम कुरुक्षेत्र, श्रीमद्दयानन्द धर्मार्थ औषधालय अम्बाला आदि के कार्यवृत्तान्त तथा आय-व्यय की सम्पुष्टि एवं आगामी वर्ष के प्रस्तावित आनुमानिक आय व्यय (बजट) की स्वीकृति।

४ वेदप्रचार के प्रसार, आर्यसमाज के सगठन को सुदृढ करने, सभा तथा आर्यशिक्षण सस्थाओ की सम्पत्तियों की सुरक्षा तथा शराबबन्दी सत्याग्रह को सफल करने पर विचार।

५. पं० रघुवीरसिंह शास्त्री यज्ञशाला के निर्माण को पूरा करने तथा आर्यवानप्रस्थ आश्रम की स्थापना करने पर विचार।

६ मेवात क्षेत्र में अल्पसख्यकों की जानमाल की सुरक्षा पर विचार।

असाधारण अधिवेशन

७. सभा के विधान में प्रस्तावित सशोधन करने पर विचार।

८ अन्य आवश्यक विषय सभाप्रधान जी की अनुमति से।

सभाप्रधान जी को विचारणीय विषयों के क्रम में आवश्यक परिवर्तन करने का अधिकार होगा।

नोट—१ जिन आर्यसमाजों ने अभी तक वेदप्रचार दशाश आदि की राशि अभी तक नहीं भेजी है, वे अपने प्रतिनिधियों द्वारा भेजने का कष्ट करें।

२ जिन आर्यसमाजों के साथ अचल सम्पत्ति अथवा शिक्षण सस्था है, उसका विवरण लिखकर भेजें जिससे उसकी सुरक्षा पर विचार हो सके।

भवदीय
सूबेसिंह
सभामन्त्री

नरेला में शराब के कारखाने की परियोजना का पंचायत द्वारा विरोध

दिनांक १ जनवरी ९३ को अलीपुर ग्राम में १२ बजे से ३ बजे तक नरेला के आसपास के ८० ग्रामों की पचायत, प्रोफेसर शेरसिंह, अध्यक्ष, अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद की अध्यक्षता में हुई। निम्न प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया :

पंचायत ने १७.११.१९९२ को प्रोफेसर शेरसिंह द्वारा गांधी संग्रहालय, राजघाट में की गयी प्रेस कान्फ्रेंस के सन्दर्भ में विचार किया जिसमें दिल्ली प्रशासन से अपील की थी कि नरेला में डी०एस० आई० डी० सी० द्वारा बनाये जानेवाले शराब के कारखाने की परियोजना को रद्द किया जाये, क्योंकि इससे मद्यपान को बढ़ावा मिलने के साथ-साथ वहां का देहात प्रदूषण का शिकार हो जायेगा। बोतलें भरने के प्लान्ट का नाम लेकर शराब का कारखाना लगाने की कुचेष्टा का यह पचायत घोर विरोध करती है। आज के हिन्दुस्तान टाइम्स में खबर छपी है कि शराब का कारखाना नहीं लगाया जा रहा है बल्कि शराब की बोतल भरने का प्लान्ट ही लगाया जा रहा है, यह केवल धोखा और छलावा मात्र है, ताकि पचायत को गुमराह किया जा सके। इस खबर में यह बात भी आई है कि न्यायमूर्ति जगदीशचन्द्र आयोग (जो "सुराकाण्ड" की जांच के लिए बना था) का सहारा लेकर गरीबों और देहात की बस्तियों में शराब की दूकानें और अधिक संख्या में खोली जायेंगी।

यह पचायत दिल्ली प्रशासन आदि के समक्ष स्पष्ट कर देना चाहती है कि यदि आवश्यक हुआ तो देहात मे शराब की नई दूकान खोलने तथा शराब का कारखाना बनाने से उन्हें रोकने के लिये सत्याग्रह भी किया जायेगा। आज लोगों मे दिल्ली प्रशासन के इन फैसलो के विरोध में उतनी ही तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त की जा रही है जैसी कुछ वर्ष पूर्व एसेक्स फार्म द्वारा बूचडखाना खोलने पर कुण्डली गाव के पास हुई थी।

पचायत उप-राज्यपाल तथा दिल्ली प्रशासन से साग्रह अनुरोध करती है कि वे शराब का प्लान्ट लगाने तथा शराब की दुकानें खोलने के फैसले और पचायत से आमने-सामने टक्कर लेने की बात छोड। क्या विकास के नाम पर दिल्ली की देहात को उन्नति क साधनो की जगह शराब के कारखानें और बूचडखान ही दिये जायगे ?

(कृष्णामूर्ति गुप्ता)
महामन्त्री अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् नई दिल्ली

आर्यसमाजों तथा गुरुकुलो के वार्षिक उत्सवों एवं शराबबन्दी सम्मेलनों की सूचना

आर्यसमाज	औरगाबाद मित्रोल जिला फरीदाबाद	५,६,७	फरवरी
	कन्या गुरुकुल मोर माजरा जि० पानीपत	६,७ ८	,,
,,	छाता (मथरा)	७ ८,९	,,
,	गवालडा जिला पानीपत	९ १०	,,
	कन्या गुरुकुल खरल जि०	१२ १३	,,
,,	गोहाना मण्डी जिला सोनीपत	१६	,,
,,	कालावाली मण्डी जिला सिरसा	१५ से १९	,,
,,	शाहबाद मारकण्डा जिला कुरुक्षत्र	१८,१९	,,
	गुरुकुल धीरणवास जिला हिसार	२०,२१	,,
	गुरुकुल भज्जर जिला रोहतक	२० २१	,,
	कन्या गुरुकुल खानपुर जिला सोनीपत	२० २१	,,
	वैदिक आश्रम गोलड जिला सोनीपत	१९,२० २१	
	गुरुकुल डिकाडला जिला पानीपत	२६ २७,२८	,,
,,	नारनौल जिला महेन्द्रगढ	६ ७	मार्च
	गुरुकुल गदपुरी जिला फरीदाबाद	१२ से १४	,
,,	सोहना जिला गुडगांव	२६ से २८	,,
	गुरुकुल कुम्भाखेडा जिला हिसार	२६ से २८	,,
,,	ठोल जिला कुरुक्षेत्र	२६ से २८	,,
,,	घरोण्डा जि० करनाल	२ से ४	अप्रेल
,,	सोनीपत शहर	१६ से १८	,,

नोट—१४ फरवरी को सभा का वार्षिक अधिवेशन दयानन्दमठ, रोहतक मे हो रहा है। अत आर्यसमाज इस दिन उत्सव आदि का कायक्रम न रखें और अपने प्रतिनिधियो को सभा अधिवेशन में रोहतक भेजने की कृपा करें।

—सभामन्त्री

पिहोवा के पास दो गांवो मे पूर्ण शराबबन्दी लागू

पिहोवा, २० जनवरी। नववर्ष को, हर नागरिक ने अपने ढंग से मनाया तथा नववर्ष का अलग-अलग ढग से अभिवादन किया। परन्तु यहा से ५ किलोमीटर दूर दो गावों ककराला, गुजरान तथा ककराली के लोगो ने नये वर्ष का अभिवादन गाव मे शराबबन्दो लगाकर किया। इन दोनो गावो की कुल आबादी २८०० के लगभग है। गाव मे लोगों को शराब पोने की लत था। इस कार्य मे युवा वर्ग भी सलिप्त होता जा रहा था। अचानक गाव के सरपच रामदिया तथा ब्लाक समिति पिहोवा के वाइस चेयरमैन बचना भल्ला ने गाव में पचायत बुलाई तथा गाववासियो के सहयोग मे शराब पीने पर पाबन्दी लगा दी। पचायत ने शराब पीनेवाले व्यक्ति पर ५०० रुपया जुर्माना करने का फैसला किया। शराब पीनेवाले व्यक्ति के बारे मे बतानेवाले को १०० इनाम दिया जायेगा।

दिलचस्प बात यह है कि गाव के पचो व सरपचो को इस जुर्माना राशि से अलग रखा गया है। पचो व सरपचो को शराब पीने की छूट नही है, बल्कि उन पर जुर्माने की राशि १००० रुपये है। अब गाववालो ने भविष्य मे दहेज तथा विवाह से फिजूलखर्च पर भी प्रतिबन्ध लगाने का फैसला किया है। (दै० ट्रि०)

खीर की दावत कराने का नियम

महेन्द्रगढ, स्थानीय सिटी पुलिस ने अपने थाना परिसर मे शराब पीकर आनेवाले पुलिस कर्मियो पर जुर्माना लगाने का नियम बनाकर एक उदाहरण स्थापित किया है। अब तक इस थाने के दो-तीन पुलिस कर्मियो द्वारा अपने इस नियम का उल्लंघन करने पर अपने सभी साथियो को खीर खिला कर जुर्माना अदा करना पडा है।

सिटी पुलिस ने उक्त नियम पिछले दो मास से लागू किया हुआ है। इस थाने के कर्मचारियो की आम सहमति से बनाये गये नियम के अनुसार जो कर्मचारी शराब पीकर सिटी थाना मे प्रवेश करेगा उसे जुर्माने के रूप मे अपने साथियो को खीर की दावत देनी पडेगी। फलस्वरूप अनेक पुलिस कर्मियो ने अपने रवैये मे सुधार कर लिया है। (नभाटा)

श्री राममेहर एडवोकेट का भ्रातृशोक

श्री राममेहर एडवोकेट के छोटे भाई श्री रणधीरसिंह का ग्राम मकडौली कला जिला रोहतक मे १६ जनवरी, ९३ को ५० वर्ष की आयु मे अचानक बीमार होने पर स्वर्गवास होगया। वे महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक मे कार्यरत थे। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सद्गति देवे एव सतप्त परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति देवे।

सत्यवान आर्य, मकडौली कला (रोहतक)

शोक समाचार

१—स्वामी धर्मानन्द जी के छोटे भाई श्री रणवीरसिंह का निधन दिनांक ८-१-९३ को होगया। श्री रणवीरसिंह अपने पीछे ३ पुत्र तथा १ पुत्री छोड गये।

२-प्रसिद्ध उद्योगपति तथा आर्यसमाज, बडा बाजार, पानीपत के सदस्य श्री ओमप्रकाश जी सिंहल का १५ जनवरी ९३ को निधन होगया। वे काफी दिनो से अस्वस्थ थे। उनके अन्तिम सस्कार मे सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी, मन्त्री श्री सूबेसिंह जी, प्रि० लाभसिंह जी के अतिरिक्त अन्य गणमान्य नेता भारी सख्या में सम्मिलित हुए। आपका आर्यसमाज की शिक्षण सस्थाओ के सचालन मे प्रमुख योगदान रहा है।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सद्गति तथा उनके दुखी परिजन को इस दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

—सम्पादक

शराब के लिए धन न मिलने पर..

धार, २० जनवरी नशे की लत पड जाने पर व्यक्ति कुछ भी कर सकता है।

शराब पीने के लिए रुपये नहीं मिलने पर मध्य प्रदेश के धार जिले के पिपानी गाव के नन्द लाल सिरवी ने स्वय अपने तथा अपने भाई के मकान मे आग लगा दी तथा कुए मे कूदकर आत्महत्या करने का प्रयास किया।

भाई हीरा लाल की रपट पर पुलिस ने आगजनी एव आत्महत्या के प्रयास का मामला दर्ज किया है।

शराबियों की खबर लेगा शराबबंदी अभियान

पूडरी, २१ जनवरी। जिला कैथल के दर्जनो गावो मे शराबबदी अभियान पूरे जोर-शोर से चल रहा है। जिला के सबसे बडे गाव पाई, जिसकी आबादी लगभग ३६००० है, इस गाव मे हर गली, हर मोहल्ले व छोटे-छोटे दूकानदार शराब बेचने मे सलिप्त थे।

गत २५ दिसबर से स्कूली छात्र इस गाव में एक जोरदार अभियान छेडे हुए हैं। अब तक शराब बेचने वालो और शराब खरीदने वालो तथा पीने वालो से १०००/– रुपये तक लगभग जुर्माना वसूल किया जा चुका है। इस सभा के सफल प्रयासों से शराब के प्रति गाव के वर्तमान हालात को देखते हुए शराबबदी का सफल अभियान चल रहा है।

गाव के ३६ बिरादरी के लोगो ने यह भी प्रण लिया है कि शराबी रिश्तेदारो को भोजन व चारपाई नही देगे। गाववासियों ने ठेके का घेराव किया हुआ है। ठेके के पास टेंट लगा दिया गया है जिसमे गाव के सभी मोहल्लो के लोग बारी-बारी दिन-रात पहरा दे रहे हैं।

शराबबंदी का नायाब तरीका

कैथल, २२ जनवरी। जिले के ग्योग गांव की ग्राम सुधार सभा ने शराबबंदी लागू करने के लिए एक नया तरीका निकाला है।

गाव के देशी शराब के ठेके के बाहर एक टेंट लगाया गया है, जिस मे कुल जिम्मेदार व्यक्ति दिन-रात पहरा देते हैं। टेंट मे स्थायी तौर पर एक गधे एक जूतो की माला, एक लहगे और एक चुन्नी का प्रबध किया गया है। जो कोई आदमी ठेके पर शराब लेने आता है, उसे लहगा व चुन्नी पहना कर उसके गले में जूतो की माला डालकर उसका जुलूस निकाला जाता है।

सभा के प्रधान बनारसी दास सगडोया के अनुसार उनकी योजना सफल सिद्ध हुई है। उन्होने यह भी बताया कि सभा ने एक प्रस्ताव भी पास किया है, जिसके मुताबिक शराब पीनेवाले व्यक्ति को ६०० रुपए जुर्माना, शराबी व्यक्ति की सूचना देने वाले को एक सौ रुपए का इनाम शराब पीकर हुडदग मचाने वाल के खिलाफ पुलिस मे मुकदमा दर्ज करवाने व ऐसे व्यक्ति को पुलिस से छुडवाने वाले व्यक्ति पर ११०० रुपए का जुर्माना लगाने का प्रावधान है।

सगडोया ने बताया कि सभा व ग्राम पचायत कैथल के उपायुक्त को एक लिखित आवेदन दिया है कि अगले वित्तीय वर्ष के लिए उनके गाव मे शराब के ठेके की नीलामी न की जाए।

भगवानपुर नशा मुक्त गाव बना

बावैन २३ जनवरी। कहते हैं सुबह का भूला अगर साय घर आ जाये तो वह भूला नही कहलाता है" यह कहावत यहा से ३ किलोमीटर दूर गाव 'भगवानपुर" के निवासियो ने चरितार्थ करके दिखा दी है पिछले कई वर्षों से शराब पीने मे अग्रणी इस गाव मे इस समय पूर्ण नशाबदी है गाव के बुजुर्गों ने बताया कि हमारे गाव मे काफी किसान जो साधन सम्पन्न थे परन्तु शराब की आदत के कारण उनकी काफी बुरी हालत हो गई थी, वैसे यहां पर शराब का ठेका कभी नही खुला कुछ दुकानदार बाहर या आसपास के ठेकों से शराब लाकर बेचते थे जिसके कारण १० से १५ वर्ष तक के बच्चे भी इस बीमारी से ग्रस्त हो गये थे। काफी विचार करके गाव के बुद्धिजीवियों ने इकट्ठे होकर गांव वालो को समझाया इसके बाद सभी की सहमति से गांव में पूर्ण नशा बंदी लागू कर दी गई और प्रत्येक पीने और बेचनेवालों पर जुर्माने का भी निर्णय लिया गया है लगभग दो महीने से गाव में पूर्ण नशाबंदी है।

आर्य विद्वान प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता मे भाग लें और पारितोषिक प्राप्त करें

अवैदिकों की ओर से वेद तथा सत्यार्थप्रकाश से सम्बन्धित अनेक आपत्तिजनक प्रश्न उठाये गये हैं। जिनके समुचित उत्तर अभी तक नहीं दिये गये हैं। ऐसे कुछ आलोचनात्मक प्रश्न हमारे पास हैं। वेद व सत्यार्थप्रकाश की रक्षार्थ उनका विज्ञान सम्मत उत्तर देना अत्यावश्यक है। प्रश्नो के कुछ शीर्षक इस प्रकार हैं—

वेदो के विषय मे

१ ईश्वर क्या है ? (ईश्वर की अमान्यता मे सतर्क विचार)
२ वेद ईश्वरकृत नही मनुष्यकृत हैं।
३ वेद त्रेतायुगीन ऋषियो की रचना है, आदि सृष्टि की रचना नही है।
४ वेदो की नियोग व्यवस्था सर्वथा अनुचित है।
५ वेदो मे इतिहास है (आलोचको ने प्रमाण दिये हैं)
६ वेदों मे पुनरुक्ति दोष है—सप्रमाण समालोचना

सत्यार्थप्रकाश के विषय मे

१ ईश्वर जगतस्रष्टा नही है (ईश्वर सर्वश्रेष्ठ सर्वशक्तिमान्, सर्वाधार, दयालु, अनन्त व असीम आदि गुणो वाला भी नही है)
२ सत्यार्थप्रकाश मे असत्यार्थप्रकाश।
३ सत्यार्थप्रकाश मे सृष्टिक्रम विरुद्ध सिद्धान्त।
४ (क) मुक्ति मीमासा (क्या मुक्ति से जीव वापिस लौटता है।)
(ख) वैदिक मुक्तिवाद की नि सारता व सृष्टि-प्रलय।
५ आत्मा और पुनर्जन्म मिथ्या विश्वास है।

प्रत्येक शीर्षक की आलोचना हमारे पास है। जिसका विज्ञान सम्मत उत्तर देना है। जो विद्वान् जिस शीर्षक का उत्तर देना चाहे, वे एक या दो शीर्षक की आलोचना मगाने के लिये ५ रुपये के डाक टिकट या रुपये भेजे। अकाट्य उत्तर देने पर समाधाता को पुरस्कृत किया जाएगा और उत्तरदाता के लेख को आर्य पत्रिकाओ मे प्रकाशित कराया जाएगा। निष्पक्ष तथा स्वतन्त्र विचार के विद्वान् निम्नलिखित पते पर लिखें।

कविराज छाजूराम शर्मा वैद्य शास्त्री
१३८ जनता डी डी ए फ्लैट
पावर हाउस, बदरपुर
नई दिल्ली—११००४४

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्यसमाज सैक्टर-२२ ए चण्डीगढ मे नगर की सभी समाजो द्वारा "हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस" समारोह पूर्वक दिनाक २७-१२-९२ को मनाया गया। इस अवसर पर दिनाक २१-१२-९२ से श्रद्धेय ओमप्रकाश जी आर्य द्वारा स्वामी जी के जीवन-वृत्त से उनके बहुमुखी व्यक्तित्व सम्बन्धी घटनाओ को प्रस्तुत किया गया तथा उनके माध्यम से वेद कथा का समापन भी दिनाक २७-१२-९२ को किय गया। स्वामी जी के देश व जाति के लिए बलिदान का स्मरण कराते हुए उनके पदचिन्हो पर चलने का आह्वान किया गया। इस अवसर पर इतिहास केसरी श्री निरजनदेव जी द्वारा भी स्वामी जी के जीवन बारे खोजपूर्ण सामग्री प्रस्तुत की गई। स्थानीय विद्वान् वक्ताओ द्वारा स्वामी जी के प्रति भावभीनी श्रद्धाजलि दी गई। हरयाणा प्रतिनिधि सभा की भजनमण्डली द्वारा मधुर गीत प्रस्तुत किये जाते रहे।

"स्वामी श्रद्धानन्द"

सोया देश यह जगाया, स्वामी श्रद्धानन्द ने।
कहा ऋषि का पुगाया, स्वामी श्रद्धानन्द ने॥
देश में अज्ञानता थी अपने पग फैला रही।
ऋषियो की सन्तान थी उल्टे पथ पर जा रही॥
मार्ग सीधा सा दिखाया, स्वामी श्रद्धानन्द ने।
कहा ऋषि का पुगाया, स्वामी श्रद्धानन्द ने॥

हजारों लाल जाति के थे, उससे बिछडे जा रहे।
ईसाई व मुसलमान थे वे बनते जा रहे॥
बिछड भटकों को मिलाया, स्वामी श्रद्धानन्द ने।
कहा ऋषि का पुगाया, स्वामी श्रद्धानन्द ने॥

दासता से गैरो की मुक्त प्यारा देश हो।
आजादी के युद्ध में था, ललकारा अंग्रेज को॥
भय न सगीनों से खाया, स्वामी श्रद्धानन्द ने॥
कहा ऋषि का पुगाया, स्वामी श्रद्धानन्द ने।

समझ लिया था स्वामी ने, मैकाले की चाल को।
क्षेत्र में वे "पाल" कूदे, काटने उस जाल को॥
गुरुकुल शिक्षा को चलाया, स्वामी श्रद्धानन्द ने।
कहा ऋषि का पुगाया, स्वामी श्रद्धानन्द ने॥

धर्म पाल आर्य, नरवाना

आर्य जनता गोरक्षा की अपील

मेवात के ४५० मुस्लिम बहुल ग्रामों के मध्य ३ दर्जन से अधिक ऐसे स्थान हैं जहां नियमित रूप से राजनेताओं की छत्रछाया में बेरोक-टोक गायें काटी जाती हैं। गोभक्तो तथा अनेक गोभक्त पुलिस अधिकारियों के प्रयास से कभी-कभी काफी गाय कसाइयों (हत्यारों) से बचा ली जाती हैं। ऐसे गोरक्षा के प्रयासो को प्रोत्साहित करने के लिए अब से १२ वर्ष पूर्व रावतों के पर्चों के प्रयत्नों से ग्राम बहीन में होडल नूह नहर के किनारे शहीद कान्हा गोशाला की स्थापना की गई। श्री हेतराम आर्य, हरिश्चन्द्र शास्त्री, महाशय रूपचन्द के अथक परिश्रम से इस गोशाला ने अब तक हजारों गौओ की रक्षा करी है।

गोशाला के तीन ओर मुस्लिम बहुल क्षेत्र हैं इस कारण चुनौतियां बनी रहती हैं। अपना कोई स्थायी साधन न होने के कारण अधिक सख्या में गौ होने पर अनेक बार गाय हमें जनता में वितरित करनी पडती हैं। पर्याप्त भवन भी नहीं है। गोशाला के पास अपना ट्रैक्टर आदि वाहन हो तो ग्रामीण क्षेत्र से अधिक चारा सग्रह हो सकता है। सुरक्षा के साधनों की व्यवस्था शीघ्र करनी पडेगी। हमे आवश्कता है कुछ नियमित दानियो की।

मेवात मे वर्तमान साम्प्रदायिक भीषण दगो से हमारे सहित तमान गोप्रमी जनता के दिलों पर जो गहरे घाव लगे हैं उनको हम चुनौती के रूप में स्वीकार करके गोरक्षा के कार्य को और अधिक तेज करना चाहते हैं। आप में से अनेक साधन-सम्पन्न धनी-मानी श्रेष्ठ दानी गोरक्षा के यज्ञ मे आहुति देकर हमारी प्रार्थना को स्वीकार करेंगे। संकट की घडी मे हमने आपकी तरफ आशा की दृष्टि से देखा है।

आशा है आप प्रबन्धक शहीद कान्हा गोशाला बहीन जिला फरीदाबाद के पते पर अवश्य पत्र-व्यवहार करेगे। हम आप के द्वार पर अवश्य आपको कष्ट देंगे। आप बैंक ड्राफ्ट या मनी आर्डर द्वारा भी गोरक्षा के पुनीत कार्य मे सहयोग दे सकते हैं। धन्यवाद

सचिव
रामजीलाल आर्य
अमर शहीद कान्हा गोशाला,
ग्राम बहीन, त० हथीन, जिला फरीदाबाद, हरयाणा

यज्ञ करने से बड़े-बड़े रोगों से छुटकारा

यज्ञ में तीन चीजें मुख्य होती हैं।
(१) 'होता' अर्थात् आहुति देने वाला,
(२) 'हवि' अर्थात् जिस चीज की आहुति दी जाती है।
(३) 'अग्नि' जिसमें आहुति दी जाती है।

यह प्रक्रिया एक उदाहरण से स्पष्ट हो जाएगी। मान लीजिए एक व्यक्ति रोजाना एक छटांक घी खाता है। यह खाना क्या है? जठर की अग्नि में घी की आहुति देना, यही खाना है। इसी प्रकार जब हम भोजन करते हैं तो अन्न को 'हवि' बनाकर इस जठर की अग्नि में डालते चले जाते हैं। जठर की अग्नि अन्न को प्राप्त करके अपनी शक्ति से उस अन्न के तत्वों को अलग-अलग कर देती है। और जो तत्व शरीर के जिस तत्व का पोषण करता है उसके पास उस तत्व को पहुंचा देती है। अन्न का प्राण तत्व प्राण को, जलीय तत्व रुधिर को अन्य पोषक तत्व हड्डी आदियो को मिल जाता है। जिसमें जो बीज आदि शक्ति रूप तत्व होता है वह वीर्य को मिल जाता है। जिसमें ओज आदि बनते हैं उस अन्न को प्राप्त करने और खाते समय मन की जो भावना होती है वह तत्व भी उसके साथ सम्मिलित होता है और यह भाव तत्व हमारे अन्त करण को बनाता चला जाता है। इस प्रकार रोजाना एक छटाक घी नियमित रूप से खानेवाले को लगभग ४०-४५ दिन बाद जाकर उसके पोषक तत्वों की प्राप्ति होती है। और यदि इतने समय में कहीं वह बीमार पड गया तो इस अन्न से, इस घी से जो पोषक तत्व मिलता था वह भी नही मिल पाता बल्कि जो पिछला बना था। वह भी खत्म हो जाता है।

ऊपर हमने देखा कि जठर की अग्नि में घी की आहुति देना लाभ-प्रद अवश्य है परन्तु इसमें कई कमियां भी हैं। इसकी तुलना यदि हम अग्नि में डाले गये घृत की आहुति से करें तो हमें निम्नलिखित लाभ दृष्टि गोचर होगा।

(१) यज्ञकुण्ड की अग्नि में डाले हुए घृत को भी वह अग्नि नाना तत्वों में उस घृत को बांट देती है। परन्तु इसमे घृत के पोषक तत्वों के शरीर के पोषक तत्वों के साथ मिलाने की प्रक्रिया में जरा-सी भिन्नता है। खाया हुआ अन्न प्राण तत्व को पोषक तत्व प्रदान करे इससे पहले उसे बहुत सी और स्थूल प्रक्रियाओं में से गुजरना पड़ता है। जबकि यज्ञकुण्ड की अग्नि से प्राप्त घृत का पोषक तत्व सीधे नासिका में गंध के द्वारा जाकर प्राण और मस्तिष्क को परिपुष्ट करता है। प्राण तत्व (वीटाल फेस) यदि पुष्ट है तो कोई बीमारी आ ही नहीं सकती, आई हुई बीमारी से मुक्ति पाने में यही प्राण शक्ति काम करती है।

'होमियो पैथिक' प्रक्रिया में इसी प्राण शक्ति को पुष्ट किया जाता है। यज्ञ भी इसी प्राण-शक्ति को पुष्ट करता है। आज का वैज्ञानिक भी इस बात को मानता है कि औषधि का सर्वोत्तम रूप वह है। जो नाक में छिडककर प्राणों के द्वारा शरीर में पहुचाई जाती है। यज्ञ यही काम करता है। इसलिए बहुत से यज्ञविशेषज्ञ विद्वानों ने 'क्षय' आदि बडे-बडे रोगों के लिए यज्ञ चिकित्सा का अनुसंधान कर लिया है और इस प्रकार के यज्ञों से बड़ी बीमारियों को दूर करने में इन्होंने बड़ी सफलता प्राप्त की है।

(२) खाया हुआ घृत बहुत कालांतर में एक ही व्यक्ति को पोषण प्रदान करता है जबकि यज्ञ की अग्नि में डाला हुआ घृत अनेक लोगों को दूर-दूर तक पोषक तत्व प्रदान करता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि जो व्यक्ति यह कहते हैं कि घी को यज्ञ रूप में आग में फूकने से अच्छा है कि आदमी खाले, उनको यज्ञों के इस प्रयोजन का ज्ञान नहीं है और वे अज्ञानपूर्ण बातें कर रहे हैं। यज्ञ के सम्बन्ध से इतनी विवेचना करने के पश्चात् यज्ञ के माध्यम से सारे रोगों से छुटकारा पा सकते हैं।

लेखक :—अशोककुमार आर्य
निवासी बी ३/३० मन्द नगरी दिल्ली-९३

शराब हटाओ देश बचाओ।

(पृष्ठ ९ का शेष)

[illegible] था। महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज तो उनके हृदय और मस्तिष्क में रक्त की तरह समाहित था। उन्होंने अपनी लेखनी से जिस राष्ट्रवाद की स्थापना की वह वेदानुमोदित था। उनकी हिन्दुत्व के प्रति निष्ठा थी, पर वे 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के उद्घोषक थे। वे प्रत्येक बात अत्यन्त युक्ति व प्रमाणपूर्वक तथा तटस्थता से प्रतिपादित करते थे।

वे लेखक थे और साथ ही वे एक कुशल वक्ता भी थे। आर्य-समाजों में उनके भाषणों की धूम रहती थी। उनके भाषणों में ओजस्विता थी। उनकी भाषा साहित्यिक थी। सुन्दर शैली थी। विषय के प्रतिपादन में विश्लेषणात्मकता रहती थी। डेढ घण्टा भी भाषण करते तो श्रोता मन्त्रमुग्ध होकर उसे सुनते रहते थे। वे वेद मन्त्रो की सुन्दर व्याख्या करते थे। भारतीय संस्कृति और आर्यसमाज का सैद्धान्तिक विवेचन तथा उसका वर्तमान समाज व राजनीति के सन्दर्भ में उन विचारों की सार्थकता का उसमे प्रतिपादन होता था। अनेक दृष्टान्तो व आख्यानो से उसमे रोचकता रहती थी। पर सम्पूर्ण व्याख्यान में विद्वत्ता स्पष्ट झलकती थी वह अनेक उद्धरणों से युक्त होता था।

प० जी को पर्यटन मे अत्यधिक अभिरुचि थी। अपने विद्यार्थी जीवन में १९३७ मे आपने कैलाश मानसरोवर की तथा १९३८ मे चकरौता से शिमला, कुल्लू, डलहौजी, चम्बा, पठानकोट की यात्रा की। १९४० मे अमरकण्टक तथा बस्तर गये। १९४१ मे पश्चिम के प्रथम भारतीय पर्वतारोहण अभियान में भाग लिया। १९४४ में कश्मीर से नुनीकुस और कोसरपीर की यात्रा की। १९६१ मे पागी की दुर्गम यात्रा, कश्मीर से कन्याकुमारी तथा द्वारका से इम्फाल तक भारत दर्शन किया, १९८३ मे यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ तथा बद्रीनाथ गये। १९८४ मे रिवालसर, मण्डी, कुल्लू, मनाली, रटागजीत को आपने अपने कदमों से नापा तथा साथ ही तिब्बत, नेपाल, बंगलादेश, मारीशस, कीनिया-नैरोबी व लन्दन (ब्रिटेन) आदि की विदेश यात्राए भी की। इन यात्राओं से उन्होंने अगाध अनुभव प्राप्त किये, जो उनकी यात्रा पुस्तकों व संस्मरणों में संगृहीत हैं।

उनका जीवन सामाजिक जीवन था। वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री (१९६१), आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पुस्तकाध्यक्ष, (१९६३), आर्यसमाज नयाबास के प्रधान (१९५९-६१), सार्वभौम आर्य महासम्मेलन लन्दन के प्रचार मन्त्री, कार्यक्रम तथा सघ व्यवस्थापक, भारतीय साहित्यकार संघ के तीन वर्ष तक प्रधान हिन्दी हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रचारमंत्री और कार्यकारणी के सदस्य, पुरुषोत्तम हिन्दी भवन न्यास के सदस्य, रत्नाकार मण्डल (आनन्दलोक) के सदस्य, नागरी लिपि परिषद् और अन्त्यत्व निवारण समिति के अजीवन सदस्य—रहकर निरन्तर वे सामाजिक, भाषायी, साहित्यिक व आर्यसमाज के क्षेत्र मे सक्रिय रहे।

आपका लेखन अत्यन्त विस्तृत है। आर्य सत्याग्रह में गुरुकुल की आहुति (हैदराबाद सत्याग्रह पर आधारित), जातिभेद का अभिशाप, जलबिन्दु, आर्यसमाज की विचारधारा, श्वेतलाना (उपन्यास), श्रीकृष्ण सन्देश, गांधी जी का हास्य विनोद, बंगलादेश, स्वतन्त्रता के बाद (यात्रा वर्णन), ईश्वर वैज्ञानिकों की दृष्टि में (अंग्रेजी से अनुवाद), दयानन्द दिव्य दर्शन, ओ मेरे राजहंस, फिर इस अन्दाज से बहार आई, देवता कुर्सी के, भारत को हिन्दू (आर्य) राज्य घोषित करो, निजाम की जेल में, तूफान के दौर से पंजाब, हिन्द की चादर में दाग, झुलसता स्वर्ग (कश्मीर समस्या), यवनिका आदि रचनाओं के माध्यम से उन्होंने हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं से समृद्ध किया। उनमें से कुछ पुस्तकें विचारपूर्ण हैं। कुछ इतिहास हैं। कुछ यात्रा वृत्तान्त और संस्मरण है, कुछ उपन्यास हैं, कुछ व्यंग्य व ललित निबन्ध हैं। यदि पं० जी ने आर्यसमाज के स्थान पर साहित्य लेखन को ही अपना 'कर्म' निश्चित किया होता तो उनकी महान् साहित्यकारों मे गिनती होती। पंजाब व कश्मीर पर लिखी उनकी पुस्तकें वर्तमान राजनीति को नई दिशा देती हैं। बंगलादेश पर लिखे उनके यात्रा वृत्तान्त को हरियाणा सरकार ने पुरस्कृत किया, उसमें बंगलादेश की स्थिति का गहन अध्ययन किया गया है।

पं० जी के जीवनकाल में तो अनेक छोटे बड़े सम्मान हुए, पर वे कभी सम्मान कराने के इच्छुक नही रहे। सत्य तो यह है कि वे सम्मानों से बचते रहे। कभी किसी नेता के इर्द-गिर्द नहीं घूमे। केवल उनके कार्य की सराहना अपने सम्पर्क में आनेवाले व्यक्ति अथवा अपने पाठको से प्राप्त प्रशसा को ही उन्होने वास्तविक सम्मान माना।

उनके सम्मान में उनके ७३वे जन्म दिवस पर 'राष्ट्रीय पत्रकारिता के पुरोधा व्यक्तित्व एवं कृतित्व' पुस्तक प्रकाशित हुई तो उनके प्रशंसकों ने जहा उनके पत्रकार, साहित्यकार व वक्ता रूप की प्रशसा की वहा उनको एक महान् व्यक्ति भी कहा। स्नेही मित्र, एक खरा व्यक्तित्व, एक निष्काम कर्मयोगी, लगन के धनी, इतने सरल, वेद पथानुयायी, सहृदय और साहसी आदि विशेषणों से सम्बोधित करके उनके व्यक्तित्व के विविध पक्षो पर प्रकाश डाला गया। वे आजतशत्रु थे, मित्रो के मित्र थे, इन्होंने पडोसियों तथा परिवार मे सात्विक वातावरण का निर्माण किया था। इनके चले जाने पर भाभी पवित्रा जी, दो पुत्रिया, जामाता, पुत्र पुत्रवधुए व नाती पोते महान् अभाव का अनुभव कर रहे हैं। केवल उनका परिवार ही नही उनके मित्र भी एक ऐसा रिक्तता देख रहे हैं, जिनको कमी वर्षों तक खटकती रहेगी।

उनके दिवगत होने पर अन्त्येष्टि (२५ दिसम्बर) व शान्ति यज्ञ (२७ दिसम्बर) मे स्वामी आनन्द बोध जी, स्वामी ओमानन्द जी, डा० श्यामसिंह शशि, प्रो० शेरसिंह, प्रो० बलराज मधोक, श्री मनोहर विद्यालकार, प० सत्यदेव जी भारद्वाज, श्री सुभाष विद्यालकार, धर्मपाल, श्री सूर्यदेव, श्री रामनाथ सहगल, श्री सोमनाथ मरवाह आदि अनेक गणमान्य आर्यवृन्द तथा गोपाल प्रसाद जी व्यास, श्री केजरीवाल, श्री बालेश्वर अग्रवाल आदि अनेक पत्रकार उपस्थित हुए।

वे इस देश के मेधावी चिन्तक तथा महान् कर्मशील व्यक्ति थे। देश की विशेष रूप से आर्यसमाज की सेवा में अहर्निश लगे रहते थे। उनके जाने से आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति हुई है। आर्यसमाज को उनकी अक्षुण्ण रखने के लिए इनका बड़ा स्मारक बनाना चाहिए। प० क्षितीश जी का एक सपना था कि कभी आर्यसमाज भी एक दैनिक पत्र तथा एक साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन करे। उनके जीवनकाल में उनको किसी संस्था तथा पूंजीपति ने उनके इस सपने को पूरा न होने दिया। पर उनकी स्मृति मे उनका यह सपना अवश्य पूरा होना चाहिए।

वस्तुत आर्यसमाज के पास प० क्षितीश जी जैसे निष्ठावान् कार्यकर्त्ता, नेता तथा मार्गदर्शक पहले ही नही हैं, उनके जाने से तो एक गहन अन्धकार छा गया है। आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता, उपदेशक और लेखक उनके गुणो को ग्रहण करने की प्रेरणा प्राप्त कर सकें, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। हम उनको बारम्बार प्रणाम करते हैं। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व हम सबके लिए सदा प्रेरक रहेगा। उन्होंने जो हमे मार्ग दिखाया है, हम उसी पर चलेंगे।

डा० प्रशान्त वेदालंकार
७/२, रूपनगर, दिल्ली-११०००७

महान क्रान्तिकारी- लाला हरदयाल एम. ए. जिन्होंने भारत वर्ष को आजाद करवाने के लिए अमरीका में गदर पार्टी बनाई, अंग्रेजी तानाशाही के विरुद्ध भारी संघर्ष किया

लेखक—डा० शान्तिस्वरूप शर्मा पत्रकार कुरुक्षेत्र

भारत के स्वतन्त्रता के इतिहास मे महान् देशभक्त लाला हरदयाल का नाम स्वर्ण अक्षरो मे लिखा गया है । जिन्होने विदेशो में जाकर गदर पार्टी की स्थापना करके अंग्रेजी साम्राज्य को देश से उतार फेंकने के लिये भारी संघर्ष किया और अंग्रेजी सरकार की नींद हराम कर दी । कई क्रान्तिकारियो ने आपसे प्रेरणा लेकर अपने देश की स्वतन्त्रता पर अपना बलिदान दे दिया ।

लाला हरदयाल एम० ए० जहा एक बडे फिलोसफर थे वहा एक महान् त्यागी और क्रान्तिकारी व सच्चे देशभक्त थे । उन्होंने अंग्रेजो की गुलामी के विरुद्ध उस समय आवाज उठाई जब ब्रिटिश साम्राज्य पूरी तौर यौवन पर था ।

इस महापुरुष ने १४ अक्तूबर सन् १८७४ को लाला गौरीदयाल के घर दिल्ली में जन्म लिया । लाहौर मे अंग्रेजो और इतिहास मे सारे प्रदेश में प्रथम पोजीशन प्राप्त की और अंग्रेजी सरकार के वजीफे पर ऊची शिक्षा प्राप्त करने लन्दन गये । आपकी स्मरण शक्ति इतनी तीव्र थी कि जो भी पुस्तक एक बार पढ लेते वह उन्हे जबानी याद हो जाती थी । ससार के बडे-बडे विद्वान् उनकी स्मरण शक्ति को देखकर चकित रह जाते थे ।

जब भारत के दो महान् नेताओ लोकमान्य बालगगाधर तिलक और पजाब केसरी लाला लाजपतराय को अंग्रेजों के विरुद्ध होने के कारण काला पानी भेजकर कैद कर दिया तो उस समय इस बहादुर नवयुवक ने बतौर प्रोटेस्ट अंग्रेजो से वजीफा लेना बन्द कर दिया । आपने आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी से इतिहास और साईस मे पी०एच०डी० की ऊची शिक्षा प्राप्त की ।

इंगलेंड मे रहते हुए आपको देशभक्त वीर सावरकर और भाई परमानन्द मिले जिनसे आपने देशभक्ति की प्रेरणा ली । जब आप भारत लौटे तो इनका जीवन बदल चुका था और देशभक्ति के रूप बन चुके थे ।

आप सन्त स्वभाव के महापुरुष थे । आपने सन्यास धारण कर लिया और यह प्रण लिया कि एक सन्यासी के रूप मे ही देश की सेवा करेंगे । आपने कानपुर में रहना आरम्भ कर दिया । देशभक्त आपके चारो ओर जमा होने लगे । अंग्रेजी सरकार ने अपनी सी०आई०डी० आपके पीछे लगा दी । आप अपनी लेखनी के द्वारा देशभक्ति का प्रचार देशभर में करते रहे ।

पजाब केसरी लाला लाजपतराय के कहने पर आप लाहौर आ गये और वन्देमातरम् अखबार में बतौर आडीटर काम करने लगे । आपने योग्यतापूर्ण अपने लेखों द्वारा ब्रिटिश साम्राज्य को खूब झझोडा । आपसे प्रभावित होकर कई नवयुवक स्वतन्त्रता सग्राम मे कूद पडे । अंग्रेजी सरकार आपको गिरफ्तार करना चाहती थी ।

यह नवयुवक हरदयाल चाहता था कि विदेशी साम्राज्य को भारतीयों का मजबूत सगठन बनाकर जबरदस्त झटका दिया जाये । इसलिये वह फ्रास पहुच गया और वन्देमातरम् अखबार निकाल कर देशभक्तों को जो विदेशो मे रहते थे एक प्लेटफार्म पर इकट्ठा किया ।

आप फ्रास से अमरीका चले गये, वहा पर जाकर आपने एक तजबूत सगठन "गदर पार्टी" जिसका मिशन अंग्रेजों को भारत से भगाना था और देश को स्वतन्त्र कराना था । पार्टी ने अपना अखबार भी निकाला । आपने लार्ड होर्डिंग पर भारत में जो बम फेंका गया के बारे में अपने अखबार में एक बडा प्रभावशाली लेख लिखा जिसमे भारत में खूनी क्रान्ति को स्पोर्ट किया । जिस पर अमरीका सरकार ने आपको गिरफ्तार कर लिया और आप पर मुकदमा चलाया गया । आपको जेल मे बन्द कर दिया । अमरीका से आप जर्मनी पहुचने में सफल होगये । उन्होंने जर्मन में काफी हथियार और गोला बारूद लेकर भारत के क्रान्तिकारियों को भेजने का प्रोग्राम बनाया । परन्तु जर्मन सरकार की सी०आई०डी० ने आपको गिरफ्तार कर लिया । आखिर आपको जर्मन छोडकर स्वीडन जाना पडा । वहां पर आप एक विश्व-विद्यालय में प्रोफेसर का कार्य करने लग गये ।

कुछ समय बाद आप इंगलैंड पहुच गये जहां आपने कई किताबें लिखीं जिससे आपकी योग्यता और विद्वत्ता को ख्याति सारे संसार में फैली । आप इंगलैंड से फिर अमरीका पहुच गये और वहां पर गदर पार्टी के काम मे लग गये । सन् १९३७ मे उन्हें भारत आने की इजाजत दी गई । वे अपनी मातृभूमि के दर्शन करने आना चाहते थे कि अचानक बीमार होगये और सदैव के लिये उस महान् देशभक्त को मृत्यु ने हमसे छीन लिया । हम उन्हें अपनी श्रद्धांजलि भेंट करते हैं ।

नारनौल मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

आर्यसमाज नारनौल जि० महेन्द्रगढ़ की ओर से स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस २७ दिसम्बर, ९२ को श्रद्धापूर्वक मनाया गया । इसकी अध्यक्षता बा० उदमीराम एडवोकेट ने की । इस अवसर पर श्री दुलीचन्द जी आदि ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धाजलि देते हुए उनके मार्ग पर चलने की प्रेरणा की । समारोह मे ग्रामों के नर-नारी भी उपस्थित थे ।

मन्त्री आर्यसमाज

छत्तीसगढ़ आर्ष गुरुकुल की स्थापना

रायपुर जिले में हवाई अड्डे के समीप ग्राम आयनगर नवागांव में २५ अक्तूबर ९१ में छत्तीसगढ आर्ष गुरुकुल की स्थापना की गई । इस गुरुकुल की आधारशिला आर्यजगत् के मूर्धन्य सन्यसी, स्वतंत्रता सेनानी, प्राचीन पद्धति के अनेक गुरुकुलों के जन्मदाता स्वामी ओमानन्द सरस्वती द्वारा १ जनवरी, ९३ में रखी गई । आधारशिला के समय ग्रामों के हजारों व्यक्ति देखने के लिए उमड पडे, वैदिक यज्ञ को देखकर ग्रामवासी पुलकित हो रहे थे । यह अत्यन्त पिछडा और ईसाई बाहुल्य क्षेत्र है, विदेशी पादरियों ने यहा पर विधर्मी हेतु धूम मचा रखी है ।

लाला आदित्यप्रकाश आर्य
पानीपत

सुभाष !

नाज सोनीपती

ढूंढती फिरती हैं आंखें, आज का तारा सुभाष ।
ढूढने पर भी नहीं मिलता हमें प्यारा सुभाष ।।

राह तकते हैं तुम्हारी देश के पीरो-जवां ।
चालिए हिन्दोस्तां, तू छुप के बैठा है कहां ?

आके फिर 'जयहिन्द' के पुरजोश वे नारे लगा ।
सोई किस्मत को जगा और कौम की बिगड़ी बना ।।

काफिला भटका हुआ है रहनुमा तेरे बगैर ।
बढ़ गई हैं, मुश्किलें, मुश्किलकुशा तेरे बग़ैर ।।

कौम का महबूब लीडर, जिन्दादिल, जादूनवा ।
जीनते मुल्कोवतन, और उसकी अज्मत का निशां ।।

मौत पर तेरी मुझे, आता नहीं काबिल यकीं ।
तुझ अमर इन्सान को तो मौत आ सकती नहीं ।।

हिन्द के हर इक बशर को उस बशर पर नाज है ।
'नाज' को बगाल के शेरे बबर पर नाज है ।।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित ।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०७/७३ रजि० न० P/RTK-४६ सृष्टिसंवत् १,६६, ०८, ५३, ०९३

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक— सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २० अंक ११ ७ फरवरी १९९३ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

हरयाणा के आर्यों एवं शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं से निवेदन

१४ फरवरी को भारी संख्या में शराबबन्दी सम्मेलन रोहतक में पहुंचें

हरयाणा प्रदेश के सभी आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं, प्रतिनिधियों एवं शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा आयोजित सभा के वार्षिक अधिवेशन एवं शराबबन्दी सम्मेलन में दिनाक १४ फरवरी १९९३ को भारी सख्या में दयानन्द मठ, रोहतक पहुचने की कृपा करें।

हरयाणा प्रदेश में शराब का प्रचार तथा प्रसार प्रतिवर्ष बढता जा रहा है। सरकार शराब रूपी जहर बेचकर अपनी आमदनी बढ़ाने के लालच में प्रतिवर्ष अधिक से अधिक शराब के ठेके तथा उसकी शाखाए खोलकर भोली-भाली जनता को शराब के नशे में धुत्त रखकर शासन करना चाहती है, उसे शराब से होनेवाले विनाश की चिन्ता नहीं है। शराब का सेवन करने के कारण ही प्रत्येक क्षेत्र में भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। प्राय सरकारी कार्यालयों में जब तक भ्रष्ट कर्मचारियों को शराब की बोतल की भेंट नही चढ़ाई जाती तब तक छोटे से छोटा कार्य भी करवाना कठिन हो गया है। शराब के नशे में ही अधिकतर दुर्घटनाए, आपसी झगडे तथा मुकद्दमेबाजी आदि में करोडों रुपये की हानि होती है। शराबियो के उत्पात से शरीफ व्यक्तियों तथा महिलाओ की इज्जत खतरे मे पड जाती है। स्कूल कालिजों में पढ़नेवाले युवक भी शराब की लत मे फंसने लगे हैं। यही कारण है कि अन्तर्राष्ट्रीय खेलों मे हमारे नवयुवक हार जाते हैं। आज हमारा राष्ट्र चारों ओर से शत्रु देशों से घिरा हुआ है। पाकिस्तान में शराब पीने पर प्रतिबन्ध है। वह अपने युवकों को शराब के नशे से दूर रखने का यत्न कर रहा है। यदि हमारी सरकार इसी प्रकार शराब की नीति को बढावा देती रही तो हमारे वीर सैनिक शत्रु सैनिकों का मुकाबला कैसे कर सकेंगे ? अत शराब के बढ़ते प्रचार से राष्ट्र की सुरक्षा भी खतरे में पड़ सकती है।

हरयाणा प्रदेश पहले जहा दूध, दही के लिए सारे ससार में प्रसिद्ध था, आज वह ऋषि-मुनियों का हरयाणा शराब की नदिया बहाने पर बदनाम हो रहा है। हरयाणा सरकार उन सरपचों को इनाम दे रही है जो अपने ग्राम मे शराब बेचते हैं। सरपचों का कार्य ग्रामीण जनता के कल्याणकारी कार्य करना होता है, परन्तु सरकार उन्हें लालच में फसाकर भ्रष्टाचारी बना रही है।

विवाह शादियों के पवित्र अवसरों पर महमानों का शराब पिलाकर स्वागत किया जाने लगा है। भंगडा नाच तथा अश्लील गानों से हरयाणा की वैदिक सभ्यता तथा संस्कृति नष्ट हो रही है। युवक शराब के नशे में बेहोश होकर बहन तथा माता की पहचान भूलकर नीचता का परिचय देते हैं। इस प्रकार की घटनाए प्राय समाचार पत्रों में छपती रहती हैं।

इस चिन्ताजनक स्थिति को देखकर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा गत ६ वर्षों से शराबबन्दी अभियान चला रही है। सारे हरयाणा में शराबबन्दी सम्मेलनों का आयोजन किया गया। शराबबन्दी साहित्य तथा पोस्टर आदि छपवाकर मुफ्त वितरित किये गये। सभी ग्राम पचायतों को पत्र लिखकर शराबबन्दी के प्रस्ताव करने की प्रेरणा की गई। जिलेवार भ्रमण करके जिन-जिन ग्रामो मे शराब के ठेके चल रहे हैं, वहां व्यक्तिगत सम्पर्क करके शराबबन्दी प्रस्ताव करवाने की प्रेरणा की गई और ३०० से अधिक पचायतो के प्रस्ताव हरयाणा सरकार के कानून के अनुसार समय पर भिजवाये गये हैं। उच्चतम न्यायालय मे शराब के उत्पादन तथा खपत पर भारतीय सविधान की धारा ४४ के अनुसार रोक लगवाने की याचिका दायर की गई है।

हरयाणा सरकार ग्रामीण पंचायतो के सर्वसम्मति से पारित किये गये प्रस्तावों को रद्दी की टोकरी मे डालकर पचायतो को चुनौती दे रही है और जबरदस्ती ग्रामों में शराब के ठेकों की नीलामी करना चाहती है। सरकार की इस जनकल्याण विरोधी नीति के विरुद्ध आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने शराब रूपी जहर के ठेको की नीलामी रुकवाने के लिए सत्याग्रह करने का निश्चय किया है।

मैंने अपने जीवन में हैदराबाद सत्याग्रह, हिन्दी रक्षा सत्याग्रह तथा गोरक्षा आदोलन मे सघर्ष किया है। मुझे अब शराबबन्दी सत्याग्रह की कमान सम्भालनी पडी है। मैंने निश्चय किया है कि अपने जीवन का अन्तिम सघर्ष करते हुए अपना बलिदान देकर इस सत्याग्रह को सफल करूं।

अत मैं हरयाणा की आर्य जनता से अपील करता हू कि सत्याग्रह का कार्यक्रम बनाने तथा सभा का सहयोग करने के लिए प्रत्येक आर्यसमाज से अधिक से अधिक सख्या मे १४ फरवरी को ऐतिहासिक स्थान दयानन्द मठ, रोहतक मे पधारे।

निवेदक .

ओमानन्द सरस्वती
कार्यकर्ता प्रधान, परोपकारिणी सभा

प्रो० शेरसिंह
प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा

आर्यों की दुर्बलता का मूल कारण संस्कारों की उपेक्षा

आचार्य वेदभूषण, अधिष्ठाता, अन्तर्राष्ट्रीय वेदप्रतिष्ठान, हैदराबाद-२७

जिस प्रकार भवन की दृढता और परिपक्वता का आधार उसकी नींव पर ही होता है वैसे ही मनुष्य के स्वस्थ, बुद्धिमान् और दीर्घायु होने का आधार गर्भाधान संस्कार पर ही होता है। किन्तु आज समाज में सर्वाधिक उपेक्षित कोई संस्कार है तो वह है गर्भाधान संस्कार।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने संस्कारविधि का प्रणयन बड़ी आशाओं से किया था। यदि आर्य परिवारों में संस्कारविधि के पठन पाठन पर जोर दिया जाता तो आज आर्यों के रूप में एक विकसित नस्ल की मानव जाति का निर्माण हो जाता। कुछ मन्त्रों का अशुद्ध पाठ कर आत्म-तुष्टि करने, कुछ नारे लगा लेने या जोशीले भाषणों से उन्नत प्रकार का आर्य बन सकता है सोचना एक आत्म-प्रवचना मात्र है।

आर्यसमाजों मे सत्संग करने या आर्य शिक्षण संस्थाओं के खोल लेने भर से संसार आर्य बन जाएगा सोचना दिवास्वप्न है। हम आर्यसमाज के सदस्य बनने से आर्य नहीं बन सकते। आर्य बनने बनाने की प्रक्रिया गर्भाधान संस्कार को ठीक-ठीक विधि से संकल्पपूर्वक सन्तान को जन्म देने से ही संभव है।

मानव जीवन का मूल आधार स्वस्थ शरीर, तीव्र बुद्धि युक्त पावनमन और सुस्वभाव युक्त आत्मा के संयोजन से ही होता है। स्वस्थ देह में ही स्वस्थ मन और स्वस्थ मन में ही संस्कारित आत्मा विकासोन्मुख होती है।

गर्भाधान संस्कार मानव निर्माण की अत्यन्त वैज्ञानिक अद्भुत विधि है।

यह निर्विवाद सत्य है कि—संसार में सदा बुद्धिमान् व्यक्ति ही उन्नति करता है और सुख भोगता है। बुद्धि एक शारीरिक यन्त्र है। बुद्धि यन्त्र जितना स्वस्थ व सशक्त सूक्ष्म होगा मनुष्य भी उतना ही उन्नत व सुखी होगा।

बुद्धिमान् सन्तान के लिए महर्षि ने अपनी संस्कार विधि में स्पष्ट रूप से उत्तम औषधि का उल्लेख करते हुए सन्तान को बुद्धिमान् बनाने का श्रेष्ठ उपाय प्रस्तुत किया है। परन्तु इस संस्कार की उपादेयता और उक्त संस्कार के रहस्यों को स्वयं पुरोहितों ने भी नहीं समझा।

हम बहुत अनुरोधपूर्वक यह सुझाव प्रस्तुत कर रहे हैं कि—हमें विवाह संस्कार के अवसर पर नवदम्पती को संस्कारविधि उपहारस्वरूप देनी चाहिए और वर एवं वधू को प्रथम संस्कार की विधि को ध्यानपूर्वक पढने की प्रेरणा भी देनी चाहिए।

आर्यसमाज के अपने ही क्षेत्र में अनेक आयुर्वेदिक फार्मेसियां हैं जो लाखों-करोड़ों रुपयों का व्यवसाय करती हैं पर किसी फार्मेसीवाले ने महर्षि द्वारा उल्लिखित सर्वौषधि बनाने का यत्न नहीं किया। जबकि हमारी आर्य फार्मेसियों को चाहिए कि-वे मानवमात्र की नस्ल की सुधार के लिए सर्वौषधि का प्रचुर मात्रा में निर्माण करें और इसके विज्ञापन पर विशेष बल दें।

प्रत्येक आर्यपरिवार के दम्पतियों को सन्तान के उत्तम निर्माण के लिए इस सर्वौषधि का सेवन करना चाहिए तथा बारह दिन का व्रत करके विधिवत् गर्भाधान संस्कार करके पुनः गर्भस्थापन करना चाहिए।

नाना प्रकार के अवैदिक कर्मों को करने और आर्य होकर चाय काफी का सेवन करते हमें लज्जा नहीं आती पर गर्भाधान संस्कार कराने में हमें लज्जा अनुभव होती है।

प्रायः हम समझते हैं कि-संस्कार विधि पुस्तक तो गृहस्थाश्रम केवलमात्र पुरोहितों के कार्य की पुस्तक है जबकि संस्कार विधि पुस्तक तो गृहस्थाश्रम की गीता है। प्रत्येक गृहस्थी को इस पुस्तक का गहराई से अध्ययन करना चाहिए तथा मानव जाति के उन्नत नस्ल निर्माण की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए।

संस्कार डालने अथवा भरने का काल मुख्य रूप से केवल मात्र नौ वर्ष का है। गर्भाधान करने के एक वर्ष पूर्व से लेकर बच्चे का आठ वर्ष की आयु तक का काल संस्कारित करने का उत्तम काल है। यह वह अवस्था है कि-जब तक बालक माता-पिता के संरक्षण में रहता है। आठ वर्ष से सोलह वर्ष की आयु तक उसमें वे संस्कार परिपक्व होने लगते हैं जो उसने आरम्भ के आठ वर्षों में ग्रहण किये थे। सोलह वर्ष की आयु के बाद संस्कार बड़ी कठिनाई से पड़ते हैं। संस्कार पड़ने की गति मन्द पड़ जाती है। चौबीस वर्ष की आयु के बाद जब यौवन काल आरम्भ होता है तब वृक्ष पर जैसे फल लगने आरम्भ होते हैं वैसे ही मनुष्य जीवन में भी संस्कारफलित होने लग जाते हैं।

आयु जितनी छोटी होगी संस्कार उतना ही शीघ्र और उतना ही गहरा पड़ता है। शिशु को संस्कारित करने का सर्वश्रेष्ठ काल गर्भकाल है कि-जब शिशु माता के पेट में होता है।

इस बात को समझने के लिए आटे का उदाहरण बहुत उपयुक्त है। आटे में जब हम पानी डालते हैं और उसे गीला करते हैं तब आटे में सरलता से बाहरी वस्तु का प्रभाव उसमें भरा जा सकता है। चाहे उसे खारा कर दें या मीठा बना लें। गूंथ लेने के बाद फिर उसमें नमक मिलाने या शक्कर मिलाने में जरा विशेष यत्न करना पड़ेगा। किन्तु जब आटे को रोटी बना हम तवे पर डाल देते हैं और रोटी सिक जाती है तब उसकी स्थिति परिपक्वता की हो जाती है। गीले आटे को रोटी पर आप चाहे उस पर अपना नाम अंकित करना चाहें तो अंकित किया जा सकता है। किन्तु रोटी सिक जाने के बाद फिर उस पर रेखा खींचना कठिन हो जाता है। आजकल अनेक गुरुकुलों में छठी श्रेणी से बालकों को प्रवेश दिया जाने लगा है। यही कारण है कि हम उस पर अपने संस्कार गहरे नहीं डाल पाते हैं। जितनी छोटी आयु का शिशु होता है उतने अधिक गहरे संस्कार उस पर डाले जा सकते हैं।

इसलिए छान्दोग्योपनिषद् में कहा है मातृवान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद। यदि मातृमान् पितृमान् न होगा तो केवल आचार्यवान् से कार्य सफल नहीं हो सकता।

अतः उत्तम सन्तान के निर्माण के लिए माता व पिता की भूमिका बहुत अधिक महत्त्व रखती है।

यही कारण है कि-प्राचीन काल में जब माता गर्भवती हो जाती तो उसे कहीं कन्याओं के आश्रम में भेज दिया जाता था। सीता को घर से राम ने निकाल दिया कहना अज्ञान है। सीता को गर्भवती होने के कारण आश्रम में भेज दिया गया था जिससे गर्भस्थ शिशु पर अच्छे संस्कार पड़ सकें।

आज माता-पिता अपनी सारी शक्ति सुन्दर मकान बनाने अथवा मोटर-कार खरीदने या अन्य यान्त्रिक सुख-सुविधाओं के संचयन में ही लगे रहते हैं। सन्तान के निर्माण की प्रक्रिया से ही वे अनभिज्ञ होते हैं।

इसका स्पष्ट प्रमाण है कि-स्वतन्त्र भारत के संविधान निर्माताओं को भी सन्तान निर्माण की वैज्ञानिक प्रक्रिया का बोध न था। यदि उन्हें यह ज्ञान होता कि-पूर्णिमा-अमावस्या-अष्टमी-चतुर्दशी आदि तिथियों में गर्भाधान नहीं करना चाहिए तो वे भारत में ईस्वी सन् की तारीखों का प्रचलन व रविवासरीय अवकाश को मान्यता न देकर विक्रम संवत् व वैदिक तिथियों को ही मान्यता प्रदान करते।

पूर्णिमा अमावस्या के दिन धरती पर रात्रि में सूर्य का तापक्रम घटता-बढ़ता रहता है। इससे हमारे शरीर में विशेष ऊर्जा काम करती है। ऐसे समय में कामातुरता से हमारे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। और उसका दुष्प्रभाव संतान के स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है। इसीलिए भारत देश में पूर्णिमा, अमावस्या, अष्टमी के दिनों में सार्वजनिक अवकाश दिया जाता था जिससे माता-पिता को तिथियों का ज्ञान रहे।

उत्तम नस्ल व संस्कारित सन्तान निर्माण की प्रक्रिया जीवन निर्माण की महत्वपूर्ण साधना है। इसी साधना और तप के आधार पर यह भारत देश ऋषि-मुनियों की क्रीडास्थली बना।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्यसमाजों तथा गुरुकुलों के वार्षिक उत्सवों की सूचना

१	आर्यसमाज छाता (मथुरा)	७, ८, ९ फरवरी
२	आर्यसमाज गवालडा, जिला पानीपत	९, १० फरवरी
३	कन्या गुरुकुल मोर माजरा, जिला पानीपत	६, ७ ८ फरवरी
४	कन्या गुरुकुल खरल, जिला जीन्द	१२, १३ फरवरी
५	आर्यसमाज जवाहरनगर पलवल, फरीदाबाद	१५ से १९ फरवरी
६	आर्यसमाज गोहाना मण्डी, जिला सोनीपत	१६ फरवरी
७	आर्यसमाज रेलवे रोड, अम्बाला शहर	१५ से १९ फरवरी
८	आर्यसमाज कालावाली मण्डी जिला सिरसा	१५ से १९ फरवरी
९	आर्यसमाज शाहबाद मारकण्डा, जिला कुरुक्षेत्र	१८ से १९ फरवरी
१०	गुरुकुल धीरणवास, जिला हिसार	२० से २१ फरवरी
११	गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक	२० से २१ फरवरी
१२	कन्या गुरुकुल खानपुर कला, जिला सोनीपत	२० से २१ फरवरी
१३	वैदिक आश्रम गोरड (सोनीपत)	१९ से २१ फरवरी
१४	आर्यसमाज घोघडीपुर (करनाल)	२० से २२ फरवरी
१५	आर्यसमाज सैनीपुरा, रोहतक	२१ फरवरी
१६	आर्यसमाज मानपुर (फरीदाबाद)	२७, २८ फरवरी
१७	आर्यसमाज आदमपुर (हिसार)	१९ फरवरी
१८	आर्यसमाज नारनौल (महेन्द्रगढ)	५, ६ मार्च
१९	आर्यसमाज मन्धार (यमुनानगर)	८, ९ मार्च
२०	गुरुकुल गदपुरी (फरीदाबाद)	१२ से १४ मार्च
२१	आर्यसमाज बदरपुर (करनाल)	१९ से २१ मार्च
२२	आर्यसमाज मुरादपुर टेकना (रोहतक)	१४ मार्च
२३	गुरुकुल लोवा कलां (रोहतक)	१३, १४ मार्च
२४	आर्यसमाज सोहना जिला गुडगांव	२६ से २८ मार्च
२५	गुरुकुल कुम्भाखेडा (हिसार)	२६ से २८ मार्च
२६	आर्यसमाज ठोल (कुरुक्षेत्र)	२६ से २८ मार्च
२७	आर्यसमाज घरोंडा (करनाल)	२, ३, ४ अप्रैल
२८	आर्यसमाज, सोनीपत शहर	१६ से १८ अप्रैल

(डा० सुदर्शनदेव आचार्य
वेदप्रचार अधिष्ठाता

कुरुक्षेत्र जिले के गांवों मे शराबबंदी अभियान

कुरुक्षेत्र, ३१ जनवरी (निस) कुरुक्षेत्र जिले मे गांवों के लोगों ने पूर्ण शराबबंदी की ओर कदम उठाया है। शराब के ठेके किसी भी गाव में न खुलें, जो खुले हैं उनको बन्द करवाने तथा कोई भी व्यक्ति शराब न पिये, यह सुनिश्चित करने के लिए गत दिवस यहा से १५ किलोमीटर दूर पिंडारसी गाव में खुले शराब के ठेके के सामने आस पास के सैकडो किसानों की एक सभा हुई।

लोगों ने निर्णय लिया कि वे गांव गांव जाकर शराब न पीने का प्रचार करेंगे और सरकार को इस बात के लिए मजबूर करेंगे कि गांवों में शराब के ठेके न खोले जायें। एकत्रित लोगों ने पिंडारसी के शराब के ठेकेदार को भी चेतावनी दी है कि वह या तो अपना ठेका स्वयं बन्द कर दे नहीं तो लोग जबरन ठेका बन्द करवा देंगे। सभा के बाद ठेके के सामने धरना भी दिया गया। इस समय पर आम लोगों को या चेतावनी दी गई कि यदि कोई व्यक्ति शराब बेचता या पीता पकडा गया तो उसका जुलूस निकाला जायेगा, और उसे जुर्माना भी किया जायेगा। ये भी घोषणा की गई कि कोई भी व्यक्ति गाँव में देसी शराब भी नहीं निकालेगा।

इससे पूर्व लगभग दो सौ ग्रामीणों ने ट्रैक्टर ट्रालियों में बैठकर आस पास के गांवों में शराबबंदी का प्रचार किया। इस प्रचार में गावो के प्रमुख लोग शामिल थे। उन्होंने पिंडारसी, घरौडसी, झींझपुर, बारना, मेंडी, मांघरा तथा पबनावा इत्यादि गांवों का दौरा किया। दौरे के दौरान शराब न पीने तथा न पिलाने संबंधी प्रचार किया गया।

पबनावा गाव में दो ठेके के सामने ग्रामीणों ने तो पहले से ही धरना दिया हुआ है। पबनावा ठेके से गत सप्ताह से एक भी बोतल शराब की बिक्री नहीं हुई। ठेके के बाहर ग्रामीणो ने जूतो का हार तथा महिलाओं की घांघरी टांगी हुई है। यदि गलती से कोई व्यक्ति वहां शराब खरीदने आ जाता है। तो उसका जूतो की माला डालकर तथा घांघरी पहनाकर जुलूस निकाला जाता है।

धरने पर उपस्थित लोगो के अनुसार कैथल जिला के दर्जनों गावो में ये अभियान पिछले १५ दिनों से जोरो पर है। वहा के पाई, सोंगला, भाणा, माजरा कसान इत्यादि गावो मे शराब के ठेको पर शराब की बिक्री बिल्कुल बन्द है। उन्होने बताया कि ये ऐसे गाव हैं जहाँ दिन-रात शराब खरीदी तथा पी जाती थी। उन्होंने जानकारी दी कि ऐबला-ऐबली गाव मे तो महिलाए वहा के शराब के ठेके के खोखे को ट्रैक्टर-ट्राली मे रखकर थाने मे छोड आई हैं।

वैसे भी इस शराबबन्दी अभियान मे महिलाओ की ओर से भारी योगदान मिल रहा है। महिलाएं बिन मागे, अभियान चलाने वालो को चन्दा दे रही है। एक किसान ने बताया कि कई स्थानों पर ऐसा हुआ है कि जब अभियान चलाने के लिए चन्दा लेने के लिए पुरुषो से पाच रुपये मागे गये तो उनकी महिलाओ ने पचास रुपये दिये और प्रार्थना की कि इस अभियान को तेजी से चलाया जाये।

ग्रामीणों द्वारा चलाये गये शराबबन्दी अभियान को भी भारतीय किसान यूनियन द्वारा किये गये असहयोग आन्दोलन की कडी बताया जा रहा है इस शराब बन्दी अभियान के पीछे उनकी सोच है कि गाव-गाव मे शराब के ठेके बन्द होने से सरकार को कर के रूप मे पैसा कम मिलेगा और सरकार को मजबूरन किसानो की बात सुननी पडेगी।

—दैनिक ट्रिब्यून

आर्यनेता श्री कन्हैयालाल मेहता दिवंगत

आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध नेता श्री कन्हैयालाल जी मेहता का लम्बी बीमारी के पश्चात् ७० वर्ष की आयु मे बसन्तपचमी के दिन २८जनवरी ९३ को दिवगत हो गये। आपका जन्म सयुक्त पजाब (वर्तमान पाकिस्तान) मे हुआ था। आप बचपन से ही आर्यसमाज के रग में रंगे गये। भारत विभाजन के पश्चात् जालन्धर तथा बाद मे फरीदाबाद मे निवास किया तथा राजकीय सेवा मे अध्यापक पद पर कार्य आरम्भ किया, परन्तु आर्यसमाज की सेवा करने तथा महर्षिदयानन्द जी के सिद्धान्तो के अनुसार बच्चों को वैदिकधर्म की शिक्षा देने की भावना से दयानन्द शिक्षासंस्थान की स्थापना करके हरयाणाके प्रसिद्ध नगर फरीदाबाद के विभिन्न सैक्टरो मे दयानन्द विद्यालयो का सचालन आरम्भ किया। आज १७ सैक्टरों मे अपने भवन हैं। प्रत्येक विद्यालय में वैदिकधर्म की शिक्षा अनिवार्य है। इन विद्यालयो को सुचारु रूप से चलाने के लिए सरकारी सेवा से त्याग-पत्र देकर सारा समय आर्यसमाज के कार्यों में लगा दिया। आप आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान, आर्य प्रतिनिधिसभा हरयाणा के कोषाध्यक्ष तथा उपप्रधान पद पर रहे तथा सभा के सिद्धान्ती भवन रोहतक में एक कमरे का निर्माण किया। आपने वेदप्रचार्थ आर्यसमाज के उपदेशकों की सुख सुविधा के लिए अनेक बार उदारतापूर्वक दान दिया। इनके निधन पर सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने गहरा शोक व्यक्त किया है और अपने सन्देश में कहा है कि श्री मेहताजी के निधन से आर्यसमाज को जो क्षति पहुंची है, उसकी पूर्ति होना कठिन है। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके परिवार तथा दयानन्द विद्यालयों के कार्यकर्त्ताओं को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

केदारसिंह आर्य

रुकिये !
नशीली चीजों से परिवार की बर्बादी होती है।

आनन्द का मार्ग

संसार में कौन सा ऐसा प्राणी है जो सुख नहीं चाहता? चाहे वह पशु है, पक्षी है या इन्सान है? सभी सुख की ओर भागते हैं। इनमें मनुष्य अधिक बुद्धिमान् होने के कारण रात-दिन सुख सामग्री जुटाने में लगा हुआ है।

बुजुर्ग बताते है सुख कई प्रकार के होते हैं। उनका कहना है कि सबसे पहला सुख है "निरोगी काया" दूसरा सुख हो घर में माया इत्यादि। यह सभी भौतिक सुख हैं जो क्षणभंगुर हैं। इन सबसे ऊपर एक और सुख है जिसे आध्यात्मिक सुख कहते हैं जो शाश्वत है अर्थात् सदैव बना रहता है बशर्ते इसे एक बार प्राप्त कर लो। इसके प्राप्त करने पर अन्य सुख आप ही आप सुलभ हो जाते हैं।

आप यह जानना चाहते हैं कि यह शाश्वत सुख कैसे मिलेगा? इसको प्राप्त करना आसान भी है और मुश्किल भी है। आसान तो इस लिए है कि इसे प्राप्त करने के लिए कहीं भाग दौड नहीं करनी पडती, कोई पैसा नहीं खर्च करना पडता, कोई विशेष परिश्रम नहीं करना पडता। मुश्किल इसलिए है कि मन और इन्द्रियों को संयम में रखकर नियन्त्रण करना पडता है।

यह मन बडा चंचल है। कन्ट्रोल करते-करते फिसल जाता है, जरा सी देर में ही बेईमान हो जाता है। इन्द्रियों को भडकाता है। जीभ से कहता है गुलाब जामुन खायगी, दही भल्ले बडे स्वादिष्ट हैं इसी प्रकार आंख, कान, नाक आदि को विषयवासना में फंसाने के लिए उकसाता है। मनुष्य मन के वशीभूत होकर इतने खोटे कर्म करा जाता है जिन्हें बताने में भी लज्जा आती है। आप प्रतिदिन समाचार पत्रों में बलात्कार के केस पढ़ते हैं। मनुष्य अपने आचरण से इतना गिर गया है कि पशु भी ऐसा नहीं करता। इसका कारण है तामसिक भोजन। मनुष्य अपना भोजन छोडकर मीट, मछली, अण्डे इत्यादि पाशविक भोजन खाता है। जैसा भोजन खायगा वैसे ही मन से विचार उत्पन्न होंगे और मनुष्य जैसा सोचता है वैसा ही बन जाता है। विचार ही मनुष्य को उठाते हैं या गिराते हैं।

आज मानवता समाप्त होती जा रही है। चारों ओर दानवता का बोलबाला है। यही कारण है कि समय पर वर्षा नहीं होती, जब होती है तो विनाश करती है और अनेक प्राकृतिक विपदाएं सताती हैं।

सत्यार्थप्रकाश में स्वामी दयानन्द जी ने लिखा है कि मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है परन्तु फल भोगने में परतन्त्र अर्थात् ईश्वराधीन है। परमपिता परमात्मा का न्यायचक्र चल रहा है। जैसे कोई कर्म करेगा उसके अनुसार ही फल भोगना पडेगा। यह अटल सत्य है।

अपने आपको मनुष्य कहने वालो, यदि सुख से जीवन व्यतीत करना चाहते हो तो श्रेष्ठ कर्म करो, खोटे कर्मों को छोड दो। किसी से ईर्ष्या द्वेष मत करो। यदि आप खुश रहना चाहते हो तो दूसरों को भी खुश देखना पसन्द करो। जितना आप से हो सके, दूसरों के दुःख दूर करने में सहायता करो।

विद्वानों का कथन है "मनुष्य पुरुषार्थ से शिव बन जाता है और प्रमाद से शव हो जाता है"। प्रातःकाल सूर्य उदय होने से कम से-कम एक घण्टा पूर्व उठ जाओ। ईश्वर को याद करो। यही आनन्द का मार्ग है। इस पर एक-दो वर्ष चलकर देखो और अपने दैनिक अनुभव नोट करते जाओ। आपकी सभी समस्याएं हल होती चली जायेंगी और जीवन में आनन्द आने लगेगा।

देवराज आर्य मित्र
आर्यसमाज बल्लभगढ़,
जिला फरीदाबाद

भारतीय किसान यूनियन द्वारा शराबबन्दी का समर्थन

दिनांक ३१ जनवरी, ९३ को महम जिला रोहतक में एक विशाल पंचायत का आयोजन श्री सूरतसिंह प्रधान चौबीसी पंचायत की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इसमें भारतीय किसान यूनियन, सर्वखाप पंचायत तथा आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने भारी संख्या में भाग लिया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की शराबबन्दी समिति के संयोजक श्री विजयकुमार जी ने हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी लागू करने का प्रस्ताव रखते हुए ग्रामीण जनता का आह्वान किया कि इस वर्ष अपने-अपने ग्रामों में शराब के ठेकों की नीलामी किसी भी अवस्था में न होने देवें। और नीलामी करने के अवसर पर अधिक से अधिक संख्या में नीलामी स्थल पर पहुंचकर डटकर विरोध प्रदर्शन करें। सभामन्त्री श्री सूबेसिंह ने प्रस्ताव का समर्थन करते हुए उपस्थित जनता को बताया कि सभा ने कानून के अनुसार पंचायतों को प्रेरित करके शराबबन्दी के प्रस्ताव पास करवाकर समय पर सरकार को भिजवाये गये हैं। परन्तु हरयाणा सरकार ने कोई न कोई बहाना बनाकर पंचायतों के अधिक संख्या में प्रस्ताव रद्द कर दिये हैं। और वहां शराब के ठेकों की नीलामी करने का कार्यक्रम बनाया है। इस प्रकार पंचायतों को और जनता को हरयाणा सरकार ने चुनौती दी है। अतः हमें सरकार की इस चुनौती को स्वीकार करते हुए शराब के ठेकों की नीलामी रुकवाने के लिए संघर्ष करना चाहिए। इनके प्रस्ताव को सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया।

सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने चौबीसी महम पंचायत द्वारा शराबबन्दी का प्रस्ताव करने पर हार्दिक धन्यवाद किया और भारतीय किसान यूनियन के नेताओं को सुझाव दिया कि वे अपनी मांगों को मनवाने के लिए शान्तिपूर्वक संघर्ष करें। आपने उत्तर प्रदेश के किसान नेता श्री भोपालसिंह के भाषण पर अपनी प्रतिक्रिया करते हुए कहा कि पंजाब के अकाली नेताओं की भान्ति रावी व्यास का पानी हरयाणा को न देने तथा गंगा का पानी हरयाणा को दिलवाने की बात कहकर हरयाणा को हानि पहुंचाने का यत्न कर रहे हैं और अकालियों की बोली बोल रहे हैं। आपने हरयाणा सरकार की आलोचना करते हुए कि सभा ने उच्चतम न्यायालय में शराबबन्दी की जो याचिका की है, उसका उत्तर अभी तक नहीं दिया है, जबकि अन्य आठ प्रदेश सरकारों ने अपने उत्तर भेज दिये हैं। हरयाणा सरकार पंचायतों के शराबबन्दी प्रस्तावों की अवहेलना करके जबरदस्ती ठेकों की नीलामी करना चाहती है। इसी कारण प्रो० शेरसिंह जी सभा प्रधानजी के भाषण के दौरान हरयाणा सरकार के कर्मचारियों ने (सादा भेष में) शराब के व्यापारियों तथा शराबी लोगों के साथ मिलकर शोरशराबा किया। इस प्रकार हरयाणा में शराबबन्दी सत्याग्रह की तयारी को देखकर बौखला गई और सभा प्रधानजी के भाषण में रुकावट डालने के लिए पूर्व ही षड्यन्त्र रचा गया था। इस षड्यन्त्र में वेशपन्थ के कार्यकर्त्ता तथा किसान यूनियन में घुसे शराबी तत्त्व भी सम्मिलित थे। हरयाणा की जनता शराब से तंग आ चुकी है और सरकार द्वारा शराब के ठेकों की नीलामी का जमकर विरोध किया जावेगा। इसी उद्देश्य से १४ फरवरी को सभा के अधिवेशन में कार्यक्रम बनाया जावेगा।

इस पंचायत में सभा के महोपदेशक पं० सुखदेव शास्त्री तथा भजनोपदेशक श्री जयपालसिंह ने भी शराब जैसी सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने की प्रभावशाली ढंग से प्रेरणा की। केदारसिंह आर्य

आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत में तदर्थ समिति का गठन

आर्य प्रतिनिधिसभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने सभा से सम्बन्धित आर्यसमाज बडा बाजार पानीपत के कार्यों को सुचारु रूप से संचालित करने तथा सम्पत्ति की सुरक्षार्थ पूर्व संगठन को भंग करके तदर्थ समिति का गठन निम्नप्रकार किया है —

प्रधान–श्री प्रेमचन्द जी, उपप्रधान–डॉ० अश्विनीकुमार,
मन्त्री–श्री देवराज डाबर, उपमन्त्री–श्री अश्वनीकुमार
प्रचारमन्त्री–श्री सुलेखचन्द, कोषाध्यक्ष–श्री शशिकान्त,
पुस्तकाध्यक्ष–श्री राममोहनराय एडवोकेट,
सदस्य–श्री सुधीरकुमार मित्तल, श्री महेन्द्रसिंह एडवोकेट।

॥ ओ३म् ॥

सरपंचों के नाम पत्र

शराब की लत, मौत का खत

शराब सब पापों व अनाचार की जननी है।

शराब से बुद्धि का नाश होता है।

आदरणीय सरपंच जी,

नमस्ते।

आपकी पचायत ने कुछ महीने पहले अपने गाव के शराब के ठेके को बन्द करने बारे प्रस्ताव पास करके सरकार को भेजा था। लेकिन खेद है कि सरकार ने आपके इस प्रस्ताव को नही माना है और इसलिए अगले साल के लिए भी सरकार इस जहर के अड्डे को आपके गाव मे खोले रखना चाहती है। कैसी दुर्भाग्य की बात है कि लोग चाहते हैं कि उनके यहा शराब का ठेका न हो और सरकार पचायत के प्रस्ताव को न मानकर, ठेका कायम रखकर, लोगो को शराब पिलाकर उनका सर्वनाश करने पर तुली है। अगले महीने से ठेको की नीलामी फिर शुरु हो जायेगी। जब तक शराब के ठेके चलेंगे, लोग बर्बाद होते रहेंगे। लोगों की ईमानदारी व गाढे पसीने की कमाई जब शराब जैसे खतरनाक पदार्थ पर खर्च होतो है तो इससे अधिक दुख की बात और क्या हो सकती है? इस भयानक स्थिति का मुकाबला किया जा सकता है यदि गाव के लोग एकजुट होकर, बारी-बारी से शराब के ठेके के सामने अभी से धरने पर बैठे ताकि वहा से शराब की बिक्री ही न हो। इसके अलावा, ठेको की नीलामी वाले दिन, बडी संख्या मे पुरुष, युवक व महिलाये, ट्रैक्टरो आदि मे चढकर, अपने जिला मुख्यालय पर, नीलामी की जगह जाये और वहा पर शराब के विरुद्ध जबरदस्त प्रदर्शन करते हुए, ठेको की नीलामी ही न होने द। लोगो की ताकत के सामने सरकार को आखिर झुकना पडेगा। लाखो बहन, भाइयो ने देश की आजादी के लिए बडे से बडा बलिदान किया और तब जाकर हम गुलामी की जजीरो को तोड सके। आज हम शराब के भी गुलाम हो चुके हैं और इससे मुक्ति पाने के लिए भी हमे कडा सघर्ष करना होगा। कुछ त्याग करके ही बात बनेगी, घर बैठकर बातें करने से या एक दूसरे को कोसने से कुछ नही होगा। यदि हमे आने वाली पीढियो की जरा भी चिन्ता है तो शराब की बाढ को तुरन्त रोकना होगा। क्या हम नही जानते कि शराब के बढते हुए प्रचलन ने हमारी बुद्धि, विवेक, आचरण, नैतिकता व विचार शक्ति का ही अपहरण कर लिया है? क्या इतने पर भी हम चुप बैठे रहेगे? हमारे लिए यह परीक्षा एव चुनौती की घडी है और अब कुछ कर गुजरने का वक्त आ गया है। इस 'करो या मरो' की घडी मे आओ कुछ कर दिखायें और अपनी डूबती जीवन नैया को बचाले। गाव की बैठक बुलाकर, सब लोगो से शराब न पीने का सकल्प करवाये और यदि फिर भी कोई शराब पाये हुए या बेचता हुआ मिल जाये तो उसका सामाजिक बहिष्कार किया जायेगा अथवा अन्य तरीके से उसे सही रास्ते पर लाने का प्रयास करे। मुझे विश्वास है कि आप इस बारे गम्भीरता से विचार करके और आपसी मतभेद भुलाकर, अपनी पूरी ताकत झोककर शराब के कलक को सदा के लिए धो डालेगे। इस सघर्ष मे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा आपके जिला के सभी आर्यसमाजो के कार्यकर्त्ता आपके साथ रहेगे। यदि आवश्यक हो तो सभा कार्यालय से सम्पर्क भी करते रहें। ठेको की नीलामी की तारीख व स्थान बारे आपको समय से पहले ही सूचित कर दिया जायेगा। एक काम यह भी करे कि सरकार द्वारा पचायत के प्रस्ताव को न मानने के लिए, ग्राम पचायत की तरफ से, कोर्ट मे केस दायर करके, अगले वर्ष के लिये शराब के ठेके को नीलाम किये जाने के विरुद्ध 'स्टे आर्डर' लिया जाये। इस केस पर होनेवाले सारे खर्च को नियमानुसार ग्राम पचायत के फण्ड मे से हो किया जा सकता है। समय रहते आपको सचेत किया जा रहा है, कही ऐसा न हो कि बाद मे हम सब को पछताना पडे।

दिनाक ३०-१-९३

(विजय कुमार)
आई० ए० एस० रिटायर्ड
सयोजक, हरयाणा शराबबन्दी समिति,
दयानन्द मठ, रोहतक

हरयाणा के राकेशसिंह को मरणोपरांत 'अशोक चक्र'

नभाटा समाचार रोहतक २५ जनवरी। गणतन्त्र दिवस पर शांति काल मे वीरता के लिये सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार 'अशोक चक्र' से सम्मानित किये जा रहे युवा सेना अधिकारी सेकंड लेफ्टिनेंट स्व० राकेश सिंह का, रोहतक मे माडल टाउन स्थित घर एक ओर जहा अन्तहीन गम मे डूबा है तो दूसरी ओर सारे परिवार के चेहरे पर एक गौरवमयी आभा भी है। अपने बहादुर बेटे के कारनामे पर सारे परिवार को फक्र है कि राष्ट्र ने उनके बेटे के बलिदान को उचित सम्मान दिया है।

सरकार द्वारा उनके बेटे को मरणोपरात अशोक चक्र से सम्मानित किये जाने पर जब इस सवाददाता ने स्व० राकेश के पिता अवकाश प्राप्त ले० कर्नल राजसिह से उनकी प्रतिक्रिया जाननी चाही, तो डब-डबाती आखो से वे बोले, 'मुझे व मेरे परिवार को अपने सपूत पर गर्व है, जिसने अपनी जान की परवाह किये बिना अपना कर्तव्य निभाया। सुखद है कि सरकार ने उसके बलिदान के महत्त्व को समझा और अशोक चक्र प्रदान करने की घोषणा की। सरकार के इस कदम से अन्य सैनिक भाइयो मे भी कर्तव्य पालन के लिए एक नयी उमग जगेगी।'

स्व० राकेश का जन्म १६ सितम्बर १६७० को हुआ था। उनका पैतृक गाव सुवाणा जिले को झज्जर तहसील मे है। उनके दादा रतन-सिंह सेना मे कैप्टन रहे, तो नाना आर० एस० देशवाल सेना से लेफ्टिनेंट जनरल के पद से सेवानिवृत्त हुए। सैन्य परम्पराओ के इस परिवार मे स्व० राकेश का मन शुरु से ही सेना मे एक अधिकारी के रूप मे जाने का था। रोहतक के मॉडल स्कूल मे उन्होने प्राथमिक शिक्षा ली तो दस जमा दो की कक्षा जाट कॉलिज से पास की। आगे मेहनत के बल पर राष्ट्रीय रक्षा अकादमी पूना मे उनका चयन हो गया। कालेज के समय में भी स्व० राकेश न केवल पढाई मे होशियार थे, बल्कि एन०सी०सी० की साहसिक गतिविधियो मे वे बराबर हिस्सा लेते रहे और 'बेस्ट केडेट' रहे। स्कूल और कॉलिज के उनके अध्यापक आज भी अपने इस साहसिक छात्र की गौरवमयी स्मृतियां अपने जहन मे सजोये हुए हैं।

२२ वर्षीय इस युवा अधिकारी ने पूना के बाद राष्ट्रीय सेना कॉलेज देहरादून से सैन्य प्रशिक्षण लिया था और सिर्फ ६ महीने पहले ही उनकी प्रथम नियुक्ति श्री नागर मे हुई थी।

२२ ग्रिनेडियर कम्पनी का यह साहसिक लेफ्टिनेंट घटना के समय दक्षिणी कश्मीर के गाव पढारपुर मे आतकवादियो के खिलाफ एक कार्रवाई मे २२ जवानों की एक कम्पनी का नेतृत्व कर रहा था कि उसे सूचना मिली कि कश्मीरी आतकवादियो का एक गिरोह गाव मे छुपा हुआ है। राकेशसिंह इस गाव की ओर बढ गये, जहा वे आतकवादी मौजूद थे और उन पर हमला कर दिया। जिससे दो आतकवादी वही मौके पर मारे गये। दोनों ओर से उडकर गोलाबारी शुरु हो गयी। श्री सिंह ने देखा कि उनका एक साथी सैनिक आतकवादियों से घिर गया है और उसकी जान खतरे में है। वे अपनी जान की परवाह किये बिना इन आतकवादियों से सीधे भिड गये। इस दौरान उन्हें दाहिनी बाह और बाये कन्धे पर गोलिया लगी। इस सबके बावजूद राकेशसिंह फिर उठ खडे हुए और अपनी पिस्तौल से तीन आतकवादियों को और मार गिराया। वे बुरी तरह जख्मी हो चुके थे मगर फिर भी उन्होंने तब तक गोलिया चलाई जब तक वे शहीद नही हो गये।

तीन भाइयों मे राकेशसिंह सबसे छोटे थे। हरयाणा के इस वीर को वीरता का सर्वोच्च सम्मान किये जाने पर सारे रोहतक में सद्भाव की लहर दौड गयी।

शराब हटाओ, देश बचाओ

शराबबन्दी प्रचार से प्रभावित होकर नशों से छुटकारा

श्री आदराम तथा श्री सुलतानसिंह ग्राम उज्ज्वलवास तहसील नोहड जिला श्री गगानगर (राजस्थान) ने सभा को पत्र लिखकर सूचित किया है कि हमने आर्यसमाज द्वारा किये जा रहे शराबबन्दी प्रचार से प्रभावित होकर शराब, धूम्रपान तथा चाय पीना सदा के लिए छोड दिया है। इस प्रकार हमारे जीवन में एक ऐसा परिवर्तन आया है कि जैसे हमें २० वर्ष के पश्चात् नया जीवन मिला है।

नौरग लाल आर्य भजनोपदेशक

सालवान जि० करनाल में शराब के ठेके पर धरना

शराबबन्दी समिति सालवन जिला करनाल की ओर से स्थानीय शराब के ठेके के विरोध मे ५ जनवरी से शान्तिपूर्ण धरना दिया जा रहा है। इसमें ग्राम के बुजर्ग, महिलाएं तथा नवयुवक प्रतिदिन धरना पर बैठते हैं।

आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में दिनाक १० जनवरी को श्री ओमप्रकाश आर्य की प्रधानता मे अन्तरग सभा की बैठक सम्पन्न हुई। जिसमें निर्णय लिया गया कि शराब तथा मांस आदि की बुराइयों से ग्राम के प्रत्येक नागरिक पर बुरा प्रभाव पडता है। शराब का ठेका बडे स्कूल तथा बस अड्डे के सामने खुला है, इसे हटवाने के लिए आर्य नर-नारी संघर्ष करेंगे।

शराब का बन्द प्रचार करो

रहना अगर आराम मे, तो अपने ग्राम-ग्राम में,
शराब का बन्द प्रचार करो।
शराब पीकर पागल बनता, बड-बड करता रहता है,
पागल कुत्ते की ज्यों फिरता, कभी आराम न करता है,
शारीरिक सुख शान्ति चाहते, महापुरुषों की शांति चाहते,
तो शराब का बन्द प्रचार करो ॥ १ ॥

टूम ठेकरी बर्तन भाण्डे सारा नं गिरवी धर दे।
पशु धरती सब कुछ बिकज्या धेला पास न रहने दे॥
आलीशान मकान चाहते, समाज मे सम्मान चाहते,
तो शराब का बन्द प्रचार करो ॥ २ ॥

शराबी की हो बुरी दशा, कोई भी न बात करं।
भूखे, नंगे बालक फिरते, शिक्षा की क्या बात करं॥
सभी मुखो को एक दवाई प्रभाकर की यह सीख भाई।
शराब का बन्द प्रचार करो ॥ ३ ॥

प्रेषक —हरिसिंह प्रभाकर
कण्या गुरुकुल पचगाव डा० गोपी

जन्मदिन की बधाई

शुभ दिन समय आज, सुन्दर है आया।
हम सबने मिल करके, जन्म दिन मनाया॥

१ यही कामना है, हम सब जनों की।
फूले फले ये हुवा हम सबों को॥
इसी कामना से, है [illegible] [illegible]।

२ कहें सभी [illegible], बहन [illegible] मिलकर।
रहे सदा फूलों की, भांति ही खिलकर॥
दुखें न कभी दुःख, रहे सुख समाया।

३ जीवन में हैर सारी, खुशिया सजाये।
मिले [illegible] [illegible] हो शुभ कामकार्ये॥
रहे शुभ बुद्धि व निरोग काया।

४ करे धैर्य धीरज से, हर काम अपने।
पराये भी जीवन में, हों सभी अपने॥
"रामसुफल" के यही मन को भाया॥

रचयिता—रामसुफल शास्त्री विद्यावाचस्पति, आर्यसमाज, सगकर

आर्य वन में योग शिविर

आर्य वन विकास फार्म में २४ मार्च से २ अप्रेल १९९३ तक दस दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। ३-४ अप्रेल को उत्सव मनाया जायेगा। शिविर में क्रियात्मक योग प्रशिक्षण के साथ योगादि दर्शनों के चुने हुए सूत्रों का अध्यापन भी किया जायेगा। शिविर शुल्क २५० रुपये रखा गया है। जो आर्थिक दृष्टि से असमर्थ होंगे उनको योग्य जानकर शुल्क में छूट दी जा सकेगी। अपनी योग्यता, व्यवसाय आयु सहित आवेदनपत्र में निम्न पते पर लिखकर स्वीकृति ले लेवें तथा मन्त्री आर्य वन के पास शुल्क जमा करवा देवें।

विशेष जानकारी के लिए निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें।

आचार्य, दर्शन योग महाविद्यालय, आर्य वन विकास, रोजड, पो० सागपुर, जिला साबरकाठा, गुजरात ३८३६०७।

स्वामी सत्यपति, (शिविराध्यक्ष)

मैकाले पद्धति समाप्त करने के लिए हस्ताक्षर अभियान

गोहाना, २२ जनवरी। मैकाले शिक्षा पद्धति के उन्मूलन के लिए पिछले दिनों यहा हस्ताक्षर अभियान प्रारम्भ किया गया, जिसके अन्तर्गत एक लाख विद्यार्थियों उनके अभिभावकों और अध्यापकों के ज्ञापन पर हस्ताक्षर करवाए जायेंगे। ज्ञापन प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री को भेट किए जाएगे। यह अभियान दो वर्ष तक चलेगा।

हस्ताक्षर अभियान का श्रीगणेश स्थानीय राजकीय कन्या माध्यमिक विद्यालय में आयोजित उस प्रतियोगिता से हुआ जो 'सत्यार्थ प्रकाश' के तीसरे समुल्लास के प्रश्नो पर आधारित थी। इस प्रतियोगिता में १७ विद्यालयो की टोमे प्रतिभागी थी।

आर्यसमाज दामला का जि० यमुनानगर का चुनाव

प्रधान होशियारसिंह, उपप्रधान श्री रमेश, मन्त्री श्री पूर्णचन्द्र आर्य, उपमन्त्री श्री राकेश कुमार, श्री श्रीपालसिंह, प्रचारमन्त्री श्री शेरसिंह।

भूल सुधार

सर्वहितकारी के २१ जनवरी ९३ के अक मे प्रकाशित गुरुकुल कुरुक्षेत्र मे आवश्यकता के विज्ञापन मे साक्षात्कार की तिथि २८ जनवरी के स्थान पर २९ जनवरी छप गई। भूल के लिए खेद है।

—सम्पादक

बैल के मरने पर यज्ञ किया

श्री रामगोपाल त्यागी ग्रा० ददसिया जि० फरीदाबाद सच्चे आर्य हैं। ये गऊओ से बडा प्रेम रखते हैं बैलो से खेती करते हैं और यज्ञ प्रेमी तो इतने हैं कि एक बैल इनका लगभग १२ वर्ष खेती कराके मर गया तो इन्होने यज्ञ कराया और स्वामी देवानन्द को सभा के लिये ५१ रु० दान दिया।

मँहगाई

नाक में दम हुआ है हमारा।
मौत के मुह में है जिन्दगानी॥
यह कमरतोड़-महगाई, तोबा।
फिर गया है उम्मीदों पे पानी॥
आखरश नाज होकर रहेगा।
दूध का दूध, पानी का पानी॥

(नाज सोनीपत)

विद्यार्थियों ने वध के लिए ले जाई जा रही गौओ को छुड़ाया

यमुनानगर —श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय, यमुनानगर के विद्यार्थियों ने तीन कसाइयो से सात गौए व दो बछडे छुडाए। ये कसाई हरयाणा सीमा से इन गौओं व बछडो को वध के लिए उत्तर प्रदेश ले जा रहे थे। दिनाक १० जनवरी को घटित यह घटना पूरे क्षेत्र मे वनाग्नि की तरह फैल गई व सेकडो लोग तत्काल महाविद्यालय के पास एकत्रित हो गए। सूचना देने पर जिलाधीश व पुलिस अधिकारी भी कुछ पुलिस कर्मचारियो को लेकर महाविद्यालय मे पहुच गए। महाविद्यालय की प्रबन्ध समिति के प्रधान श्री जयपालसिंह आर्य, केन्द्रीय सनातन धर्म सभा के प्रधान श्री शिवप्रताप व कुछ अन्य लोगो ने इस अवसर पर जमा भीड को शान्त किया व विद्यार्थियो की भूरि-भूरि प्रशसा की। कसाइयो मे दो मुसलमान व एक हिन्दू है तथा पुलिस ने इन्हे बन्दी बनाकर मामला दर्ज कर लिया है। कसाइयो ने बताया कि यह काम पहले से चल रहा है।

इन्द्रजित देव, उपमन्त्री

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

नलवा (हिसार) की पंचायत धन्यवाद की पात्र

गत अप्रेल मास से मेरे सुझाव से नलवा पचायत ने गांव में बस अड्डे पर शिक्षण संस्थाओं के बीच से शराब का ठेका बन्द करवाने के लिए प्रस्ताव पास किया। तथा हिसार में ठेकों की नीलामी के समय प्रदर्शन में बढ़-चढकर भाग लिया। पहले गाव इकट्ठा करके गाव में शराबबन्दी लागू की। कोई गाव में शराब बेचेगा नहीं। न गलियों में पीकर हुल्डबाजी करेगा। ठेकेदार भी कई बार गांव में सरपच को ५० हजार रुपये का लालच देने गया। विवाह शादी में जीप का इस्तेमाल करने तथा सारे वर्ष मुफत शराब पीने की पेशकश की। लेकिन बहादुर सरपच श्री महेन्द्रसिंह कसमा ने साफ कह दिया कि हम किसी कीमत पर शिक्षण संस्थाओं के बीच गाव मे शराब का ठेका नहीं खुलने देंगे।

कई महीनों के बाद दिनाक २६-१२-९२ को दिन के ११ बजे एक रोचक दृश्य देखने को मिला। गाव के असामाजिक तत्त्व निकट के रतेरा गाव के ठेके से पाच-पाच बोतल शराब की लेकर आए। श्री जयबीर साईकिल पर तथा दुला फोरव्हीलर मे, सरपच साहब व श्री रणसिंह मठारवाले सुराख लगने पर बस अड्डे पर उनकी इन्तजार में खड़े थे। सरपच ने दोनो को बुलाकर बोतलें काबू कर ली। बस अड्डे पर कालेज स्कूल आई टी आई के काफी विद्यार्थी मौजूद थे। सरपच ने गाव इकट्ठा किया, सब हकीकत बताई। पचयात ने पहले तो उनको यह गलत काय करने पर धमकाया और सोच विचार कर उनका एक-एक जामन लिया और ११-११ रुपये केवल मात्र दण्ड किया। सरपच ने पचायत के सामने सब बोतलें गन्दी नाली में उडेल दी। उपरोक्त दोनो महानुभावो ने हाथ जोडकर गाव से माफी मागी और भविष्य में ऐसा गलत कार्य न करने की शपथ ली। वास्तव मे नलवा गाव में एक वर्ष से रामराज है। इस प्रकार गाव की अन्य पचायतें भी अपने-अपने गाव मे शराबबन्दी लागू कर सकती हैं ताकि हम आर्थिक एव नैतिक पतन से बच सकें। वास्तव मे नलवा गाव की पचायत धन्यवाद एव बधाई की पात्र है। अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी सभा उपदेशक

पुस्तक-समीक्षा

पुस्तक-एकता के सूत्रधार श्रद्धानन्द
लेखक—डा० धर्मपाल
प्रकाशक—सूर्यदेव, मन्त्री आर्यसमाज दीवानहाल, दिल्ली—६
आकार $\frac{18\times22}{8}$, पृष्ठसख्या ७६, मूल्य १५ रुपये

प्रस्तुत पुस्तक मे विद्वान् लेखक ने आदर्श बलिदानी, महान् क्रान्तिकारी सर्वस्वत्यागी, गुरुकल शिक्षा प्रणाली को मूर्तरूप देनेवाले वीर सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी के सक्षिप्त जीवन-वृत्त को बहुत सुन्दर एवं प्रेरणादायक शब्दो मे पाठको के समक्ष उपस्थित किया है। पुस्तक का कागज और छपाई उत्तम है किन्तु मुद्रण की त्रुटियां शशी में शशाक की भान्ति दिखाई देती हैं। पुस्तक का मूल्य कुछ कम होता तो इस आदर्श जीवन चरित्र का अधिक प्रचार प्रसार सम्भव होता। —वेदव्रत शास्त्री

वैदिक राष्ट्रीय मन्च की घोषणा

२१ जनवरी १९९३ को गाव निडाना जीन्द में स्वामी रत्नदेव सरस्वती-कुलपति कन्या गुरुकुल खरल व कुम्भाखेडा द्वारा-वैदिक राष्ट्रीय मच की घोषणा कर दी गई है। जनजागरण अभियान के बाद राजनीति मे प्रवेश पर विचार किया जाएगा। मंच की मान्यताएं निम्न है—

१ मच का सविधान वेद के अनुसार होगा जिसमें वर्णव्यवस्था व आश्रमव्यवस्था लागू की जाएगी।

२ इसके सदस्य सत्य सनातन वैदिक धर्म को माननेवाले होंगे। इस मच से कोई भी सन्यासी चुनाव नही लड सकेगा।

मन्च का मुख्य कार्यालय जीन्द मे होगा।

बात सांच है

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

बेशक कोई बुरा कहे पर हमको कहनी बात सांच है।
मिले धार्मिक शिक्षा वह संतान बिगड़ने ना पाये॥
इसीलिये आर्य विद्यालय कन्या गुरुकुल खुलवाये।
आज वहां छात्र छात्रायें घुघरु बांधे करें नाच हैं॥ १॥

है यह नाच मगर गरबा कहता गुजरात प्रान्त है।
पिता सामने पुत्री मटके क्या वैदिक सिद्धान्त है।
हैं हठधर्मी नहीं मानते करते रहते तीन पांच है॥ २॥

अगर नाच रगों में आर्यो अपना समय लगाओगे।
वैदिक नाव भवर में डूबे कैसे पार लगाओगे।
लिखा ऋषि ने जरा विचार लो सत्यार्थप्रकाश दाच है॥ ३॥

बन्द कराओ ये कुरीतियां रहो नहीं चुपचाप है।
मौका पाकर डस जायेगा आस्तीन का साप है।
नहीं किसी से डरो आर्यो नहीं सांच को आंच है॥ ४॥

विषययुक्त नाच और गाना सदाचार को खोयेगा।
जो इसमे आनन्द मगन है नैया वही डुबोयेगा।
तन के उजले मन के काले बेशक करलो खूब जाच है॥ ५॥

(पृष्ठ २ का शेष)

भावी सन्तान के निर्माण की प्रक्रिया पर विशेष बल देने के कारण ही हमारा देश ससार का गुरु कहलाता था।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसी मानव निर्माण की वैज्ञानिक प्रक्रिया को सस्कार विधि में प्रस्तुत किया है। सस्कार विधि श्रेष्ठ जाति के मानव निर्माण की योजना का सविधान है। यदि आर्यपरिवार ही महर्षि के इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ की ओर ध्यान देकर संस्कार विधि को जाम लेते तो सारा ससार आर्यों को संस्कार विधि का अनुसरण करने लगता। संस्कार विधि के विधान पर चलकर ही आर्य नस्ल के पुरुषों को पैदा किया जा सकता है। इस रहस्य को जानने की आवश्यकता है। आर्य नस्ल या जाति से अभिप्राय है श्रेष्ठ सस्कारों से युक्त अच्छी नस्ल व श्रेष्ठ गुण कर्म स्वभावयुक्त मनुष्य का निर्माण।

मानव जीवन निर्माण में संस्कारों का अनिवार्य स्थान है। इस अनिवार्यता को जानकर हमे अनिवार्य रूप से संस्कारों की परम्परा का दृढता से पालन करना चाहिए।

सस्कारो के रहस्य को जाननेवाला ही पुरोहित कहलाता है। वह परिवार के वश को उन्नति की ओर अग्रसर करनेवाला मानव निर्माता होता है। गृहस्थरूपी उद्योग मे वह कर्मविशेषज्ञ के रूप मे वैसे ही प्रतिष्ठित होता है जैसे कारखाने में इन्जिनियर का महत्त्व होता है। गृहस्थ जीवन हो या कारखाना ये दोनों कर्मकाण्ड के ही अग हैं।

इसीलिए ससार के मनुष्यो को श्रेष्ठ सस्कार व उत्तम प्रजाति का निर्माण करने के लिए श्रेष्ठ पुरोहितों के निर्माण की व्यवस्था करनी होगी। तभी कृण्वन्तो विश्वमार्यम् रचनात्मक रूप मे संभव होगा।

प्रत्येक आर्यपरिवार मे सुयोग्य पुरोहित का होना आवश्यक है। इसके अभाव के कारण ही हम ह्रास एवं अवनति के गर्त में गिरते चले जा रहे हैं।

हमारा यह पुनीत कर्त्तव्य है कि—परमात्मा की इस सृष्टि को हम सुन्दर से सुन्दर बनाये रखें। यह काय मन्दिरों व मस्जिदों से संभव नही है। यह कार्य तो सस्कार विधि के महत्त्व को जानकर उसे क्रियात्मक रूप मे आचरण में लाने से ही सभव होगा। जो कर्मकाण्ड में दक्ष होता है आचार्य सज्ञा भी उसी की होती है।

पाठक गण अपने परिवार निर्माण के लिए संस्कार विधि को जरा ध्यानपूर्वक पढने का सकल्प करें और इस विधि से अपने परिवारों में सस्कार करें। एक भी सस्कार की उपेक्षा न करें। अन्यथा सन्तान में उपेक्षित सस्कार का दुष्प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होगा।

ससार के श्रेष्ठ निर्माण के लिए सस्कार विधि को पढो और उसे क्रियात्मक रूप प्रदान करें।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ रजि० नं० P/RTK-४९ सृष्टिसंवत् १,९६, ०८, ५३ ०९३

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २० अंक १२ २१ फरवरी, १९९३ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की साधारण सभा के महत्त्वपूर्ण निश्चय

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की साधारण सभा की बैठक दिनांक १४ फरवरी, ९३ रविवार को प्रातः ११ बजे दयानन्दमठ रोहतक सभा के प्रधान प्रा० शेरसिंह जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। बैठक हरयाणा के प्रत्येक जिले के प्रतिनिधियो ने भाग लिया। इस अवसर पर निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण निश्चय सर्वसम्मति से किये गये —

१—दिनांक ६ दिसम्बर ९२ तथा उसके बाद मे व बहुसंख्यक क्षेत्र में शरारती मेवों द्वारा वैदिक आश्रम भादस तथा आर्यसमाज एवं अन्य मन्दिरों, गोशालाओं की सम्पत्तियों को नष्ट करने पर सभा ने गहरी चिन्ता प्रकट की है। इस काण्ड में जिन मन्त्रियों तथा विधायकों ने शरारती मेवों को भड़काया तथा उन्हें संरक्षण दिया, उनकी सभा ने घोर निन्दा करते हुए हरयाणा के मुख्यमन्त्री से मांग की कि उन्हें तुरन्त गिरफ्तार करके कानून के अनुसार उनके विरुद्ध कड़ी कार्यवाही करें। सभा ने यह भी मांग की कि निर्दोष सत्याग्रही श्री सूरजपाल ग्राम उजीना एवं उनके साथियों को तुरन्त रिहा किया जावे और ठाकुर किशनसिंह तथा श्री कुन्दनलाल के हत्यारों को यथाशीघ्र गिरफ्तार किया जावे।

मेवों ने मेवात क्षेत्र के हिन्दुओं का जो सामाजिक एवं आर्थिक बहिष्कार कर रखा है, इसमें हरयाणा सरकार तुरन्त हस्तक्षेप करके इस बहिष्कार को समाप्त कराये। अन्यथा स्थिति और अधिक विस्फोटक हो सकती है।

सभा ने यह भी अनुरोध किया कि दोनों समुदायों के बीच फिर से सद्भाव बहाल करने हेतु सभी द्वारा प्रयास किये जायें। इसलिए मेवात तथा इसके साथ लगते क्षेत्र की पालों की संयुक्त पंचायतें तुरन्त आयोजित की जायें ताकि आपस के वैमनस्य और सामाजिक एवं आर्थिक बहिष्कार को समाप्त किया जा सके। सभा ने हरयाणा सरकार से यह भी मांग की कि जिन पूजा स्थलों की अभी तक पूरे तौर से मरम्मत आदि नहीं की जा सकी है, वह बिना और देरी किये तुरन्त करवाई जावे तथा जिनकी सम्पत्ति को लूटा गया है या हानि पहुंचाई गई है, उसके लिए सम्बद्ध व्यक्तियों को पूरे मुआवजे का भुगतान भी तुरन्त किया जावे।

सभा ने हरयाणा सरकार से यह भी मांग की है कि मेवात क्षेत्र मे गोहत्या करने वालों तथा बाहर से आकर मेवों को उकसाने वालों के विरुद्ध भी कड़ी कार्यवाही करके शान्ति भंग होने से रोका जावे।

२—सभा की साधारण सभा ने वेदप्रचार, शराबबन्दी, गोरक्षा, सर्वहितकारी साप्ताहिक, वैदिक आश्रम कुरुक्षेत्र तथा गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ आदि के कार्यों के संचालन हेतु वर्ष १९९३-९४ के लिए ७० लाख रुपयों का बजट स्वीकार किया है। सभा द्वारा संचालित दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर में वैदिक संस्कार करवाने का प्रशिक्षण देकर पुरोहित तथा उपदेशक तैयार करके हरयाणा के प्रत्येक जिले में वेदप्रचार मण्डलों का गठन किया जावेगा तथा वहां पुरोहित, उपदेशक एवं भजनमण्डलियों की नियुक्तियां की जावेंगी। वेदप्रचार के कार्य में सेवानिवृत्त आर्य अध्यापकों, सन्यासी तथा वानप्रस्थों का सहयोग लिया जावेगा।

३—हरयाणा सरकार द्वारा विद्यालयो में जो पढ़ाने के लिए पाठ्य-पुस्तकें प्रकाशित कर रखी हैं, उनमें इतिहास को गलत रूप में प्रस्तुत करते हुए आर्यों को शराब तथा मांस का सेवन करते थे, लिखा है।

अतः सभा ने हरयाणा सरकार से मांग की है कि इस प्रकार की विद्यालयो मे पढ़ाई जानेवाली इतिहास की पुस्तकों में यथाशीघ्र संशोधन करे।

४—हरयाणा प्रदेश में आर्यसमाज द्वारा चलाये जा रहे आर्य-विद्यालयों मे धार्मिक शिक्षा को अनिवार्य रूप मे पढ़ाने के लिए धार्मिक अध्यापकों की व्यवस्था की जावेगी जिससे छात्र तथा छात्राओं को वैदिक धर्म की जानकारी दी जा सके। सभा की ओर से इस सम्बन्ध मे सभी आर्यविद्यालयों को आवश्यक निर्देश दिये जावेंगे।

५—सभा ने दूरदर्शन पर अश्लील फिल्मों तथा नाच गानों के प्रसारण की निन्दा करते हुए भारत सरकार से अनुरोध किया है कि जिन अश्लील फिल्मों तथा अर्धनग्न नाच गानों को माता-पिता तथा भाई बहनें एक साथ बैठकर नहीं देख सकते, उन पर रोक लगाई जावे क्योंकि अश्लील फिल्मों के देखने पर युवक तथा युवतियों के आचरण पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है।

सभा के मुखपत्र सर्वहितकारी द्वारा शराबबन्दी के लिए किये जा रहे निरन्तर प्रचार कार्य की साधारण सभा ने सराहना करते हुए कहा है कि हरयाणा प्रदेश में शराबबन्दी की जो लहर बनती जा रही है, उसमें सर्वहितकारी की प्रमुख भूमिका है। अतः आर्य प्रतिनिधियों से अनुरोध किया गया है कि वे अपने अपने ग्राम की पंचायतों में सर्वहितकारी चालू करवाने की प्रेरणा करें और यह भी निश्चय किया गया कि नये वर्ष से इसका वार्षिक शुल्क ४०) कर दिया जावे।

७—पंजाब हरयाणा का बटवारा पंजाबी तथा हिन्दी भाषा आधार पर किया गया था। परन्तु पंजाब सरकार के दबाव मे आकर हरयाणा सरकार हरयाणा में पंजाबी भाषा को विद्यालयों में दूसरी भाषा के रूप में जबरदस्ती थोंपने का यत्न कर रही है। साधारण सभा ने हरयाणा सरकार को स्मरण करवाया है कि यदि हिन्दीभाषी हरयाणा प्रदेश में जबरदस्ती पंजाबी भाषा को दूसरी भाषा के रूप में थोंपा गया तो १९५६, ५७ के हिन्दी रक्षा आन्दोलन की भांति सरकार को इस नीति का विरोध किया जायेगा।

भारतवर्ष में सबसे पूर्व रेवाड़ी में स्थापित गोशाला की अवस्था आजकल शोचनीय है। उस समय के राजा ने महर्षि दयानन्द की प्रेरणा से गोशाला के संचालन हेतु कृषिभूमि भी प्रदान की थी। वहां एक तालाब की छतरी पर बैठकर महर्षि दयानन्द ने जनता को वेदामृत का

(शेष पृष्ठ २ पर)

पानीपत जिले के कई गांवों में ठेकों पर धरना जारी

पानीपत १६ फरवरी। जिले के गाव अहर, कुराना, सींक, पाथरी, नारा, मडलौडा व इसराना मे शराब के ठेको के सामने भारतीय किसान यूनियन को इस आन्दोलन मे आस पास के ग्रामीणों का खूब साथ मिल रहा है।

धरने पर बैठे किसानों का कहना है कि जब तक शराब के ठेके बन्द नही हो जाते तब तक वे धरने पर बैठे रहेंगे। शराब बन्द करवाने के अलावा इन किसानो ने लोगों से अपील की है कि वे विवाह-शादी के मौकों पर नाचने गाने की परम्परा पर भी पाबन्दी लगायें व दहेज न लें।

जहां किसानो को अपार समर्थन मिल रहा है वही ठकेदारों को भारी नुकसान उठाना पड रहा है। ठेकेदारो का कहना है कि रोजाना करीब २० हजार रुपये की शराब बिकती थी। लेकिन जब से किसान धरने पर बठे हैं 'एक पव्वा' तक नही बिका। इसके अलावा पियक्कड़ों का कहना है कि वैसे तो ठीक है पर पिये बिना नही रहा जाता। पियक्कड शराब के ठेके के चारो ओर मडराते रहते हैं।

अब तक शराबबन्दी आन्दोलन को ढीला करने के ठेकेदारों व प्रशासन के सभी हथकडे फेल हुए हैं। गोहाना—स्थानीय जागसी गाव मे शराब के ठके के समक्ष उसे बन्द करवाने की माग को लेकर धरना प्रारम्भ हो गया। इस गाव मे दो पचायतें हैं। धरने का नेतृत्व दोनों सरपच धर्मपाल (सहरावत) व भजनसिंह (सूरा) सयुक्त रूप से कर रहे हैं। गाव के ठेके पर ताला लगा दिया गया है तथा यह फैसला किया गया है कि जो ग्रामीण शराब पीयेगा, उसे 'घाघरी' पहनाकर उसका जलूस निकाला जायगा तथा उसे २०० रुपए से दण्डित किया जायेगा। घाघरी को घटनास्थल पर टाग दिया गया है।

पिहोवा पुलिस द्वारा बाखलो गाव मे शराबबन्दी अभियान के अन्तर्गत शराब के ठेके के समक्ष धरने पर बैठे कुछ युवकों के विरुद्ध केस दर्ज करने तथा उन्हे पकडने की कोशिश से क्रुद्ध ग्रामीणों ने रोष प्रकट किया। ग्रामीणों के इस रोष प्रकट करने में पिहोवा उपमण्डल के गांवो के लोगो के अतिरिक्त कथल तथा गुहला ब्लाक के पबनावा, क्योडक, थाना, बलवन्ती दसवन्ती, उझाना, चीका, पीडल, भागल, सारसा, बलबेडा आदि लगभग चालीस गांवों से लगभग १५०० लोगो ने भाग लिया। नशाबन्दी कमेटी हरयाणा के कार्यकर्त्ता बतानेवाले बलबेडा गांव के फतेसिंह ने बताया कि इस समय पिहोवा उपमण्डल के अतिरिक्त कैथल उपमडल मे तथा गुहला उपमडल में शराब विरोधी अभियान अपनी चरम सीमा पर चल रहा है। परन्तु पुलिस हर जगह ठेकेदारों का साथ दे रही है। शातिपूर्वक चल रहे धरनों में हस्तक्षेप कर रही है। पुलिस ने ११ युवको के खिलाफ केस दर्ज किया है।

(दनिक ट्रब्यून)

पिहोवा मे शराब के खिलाफ तेज हवा चली

पिहोवा, १६ फरवरी (निस)। पिहोवा उपमण्डल में इन दिनो शराबबदी की मुहिम जोर पकडती जा रही है। ककराला गुजरान तथा ककराली गावो से चली इस शराबबन्दी की हवा ने पूरे उपमडल के अनेक गावों में शराबबन्दी की आंधी को गांव के लोग तूफान में बदलना चाहते हैं।

इस उपमंडल के ककराली तथा ककराला गांव मे शराबबन्दी पचायत ने नये वर्ष में शुरू की है। शराब पीनेवालों को जुर्माने की सजा तय की गई। इन दोनों गांवों में यह मुहिम पूरी तरह सफल रही है। क्योंकि अब तक केवल एक व्यक्ति को ही जुर्माना अदा करना पड़ा है। यहां भी शराब पीनेवालों पर जुर्माना करने का फैसला किया गया। गाव के लोग पिछली २१ जनवरी से गाव के बाहर शराब के ठेके के सामने धरना दे रहे हैं। ठेका भी यहा से कुछ दूर हटा दिया गया है। जबकि गाव वाले चाहते है कि ठेका यहा से बिल्कुल हटवा दिया जाये। मौके पर जाकर सवाददाताओं की टीम ने देखा कि ठेके के सामने महिलाये बैठी हुई हैं।

५५ वर्षीय सुनहरी देवी ने बताया कि शराब के कारण उसका सब कुछ तबाह हो चुका है। सडक के किनारे एक वृद्ध साजनराम ने बताया कि गांव में शराबबन्दी सभी लोगों के एकमत होने पर की गई है। उन्होंने बताया कि गांव में शराब पर पूर्ण प्रतिबन्ध। यह प्रतिबंध विवाह आदि उत्सवों पर भी लागू है। जगदीश नामक एक युवक ने बताया कि उसके पिता के पियक्कड होने के कारण उसकी पढाई भी शराब निगल गई।

शराब विरोध अभियानी ने जोर पकड़ा

रामसरनमाजरा, १६ फरवरी। कुरुक्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्रों में आजकल शराब विरोधी अभियान अपने पूरे यौवन पर है, वहीं इसका ग्रामीण क्षेत्रों में पूरा स्वागत हो रहा है, विशेषकर महिलाओं को इस अभियान से विशेष राहत मिली है और वे अब इस अभियान में पुरुषों से अधिक बढ-चढ़ कर भाग ले रही है। आजकल यह अभियान बाबैन में भी फैलने लगा है। रोजाना शराब पीनेवालों की नींद हराम होगई है, बाबैन के शराब के ठेके पर जहां शाम के समय शराब पीनेवालों का भारी जमघट रहता है, वहीं शराब पीकर यहा हुल्लडबाजी आम होती रहती है। जिसकी वजह सरेआम नागरिको को कई बार काफी कठिनाइयों का सामना करना पडता है।

वैदिक रीति से विवाह संस्कार सम्पन्न

दिनाक ७-२-९३ को आर्यसमाज मुकलान जि० हिसार के प्रधान श्री बदलुराम जी आर्य के सुपुत्र श्री यज्ञवीर आर्य का विवाह ग्राम जाण्डवाला बागड श्री हरिदेव जी आर्य की सुपुत्री श्रीमती राजबाला आर्य स्नातिका गु कु नरेला से वैदिक रीति से विवाह सस्कार आचार्य दयानन्द शास्त्री हिसार ने करवाया। इस अवसर पर सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी चौ० धनसिंह आर्य रिटार्ड तहसीलदार (हिसार) श्री राजेन्द्र आर्य (उपमन्त्री आर्यसमाज हांसी) आदि महानुभावो ने दम्पती को आशीर्वाद दिया। क्रान्तिकारी जो ने विशेष रूप से पर्दा हटाने व सस्कार विधि पढने पर बल दिया।

सूबेसिंह आर्य
मन्त्री आर्यसमाज मुकलान

(पृष्ठ १ का शेष)

पान करवाया था। परन्तु यह ऐतिहासिक स्थान तथा गोशाला के भवन अब नष्ट होते जारहे हैं। अत सभा ने हरयाणा सरकार से माग की है कि इस गोशाला तथा इसकी सम्पत्ति की सुरक्षा के लिए उदयपुर के उस नोलखा महल जहा ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश की रचना की थी की भांति रेवाडी गोशाला को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को सौंपा जावे।

९—हरयाणा सरकार ने ग्राम पचायतो द्वारा शराबबन्दी के लिए किये गये ९० प्रतिशत प्रस्ताव रद्दी की टोकरी मे डालकर उन ग्रामों मे ठकों की नीलामी करने उन्हे अगले वर्ष भी चलाने का निश्चय किया है। सरकार ने अनेक पचायतो पर अनुचित दबाव डालकर उन्हें प्रस्ताव वापिस लेने पर विवश किया है। तथापि हरयाणा के कई जिलो मे शराब के चल रहे ठेकों पर धरणे प्रारम्भ किये हैं। सभा ने ठेकों पर धरणा देनेवाले शराबबन्दी नर-नारियों का समर्थन करते हुए उनके कार्य की सराहना की है और हरयाणा के आर्यसमाज तथा शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं को निर्देश दिया है कि वे अन्य सामाजिक सगठनों के कार्यकर्ताओं से भी सहयोग लेकर जिलावार होनेवाली नीलामी को किसी भी अवस्था में न होने देवें। इस उद्देश्य के लिए अधिक से अधिक सख्या में युवक तथा नर-नारी नीलामी स्थान पर पहुंचकर गिरफ्तारी देने के लिए भी तैयार रहें।

सभा मन्त्री

सर्वहितकारी के ग्राहक बन्धु ध्यान दें—

अपनी पत्रिका पर लिखे पते में पिन कोड चैक करें। डाक विभाग द्वारा इसे अनिवार्य कर दिया गया है। ठीक पिन कोड मार्च ९३ तक 'सर्वहितकारी' कार्यालय को पत्र लिखकर अवश्य सूचित करें। अन्यथा पत्रिका समय पर नहीं पहुंच सकेगी।

—सम्पादक

शराब की बढ़ती खपत और सरकारी नीति

भारतीय समाज, स्वास्थ्य विभाग और कानून चाहे मदिरापान एव उसके प्रचार-प्रसार को कितना ही हतोत्साहित करता हो, लेकिन 15 प्रतिशत की दर से फिर भी इसकी खपत का दायरा बढ़ता ही जा रहा है। अब शराब पाच सितारा होटलों की नही रहकर शहरो और गावो के हर वर्ग और हर आयु के लोगों को अपनी लपेट मे ले चुकी है। एक अनुमान के अनुसार प्रतिवर्ष १३०० करोड रुपए की अकेली व्हिस्की हम भारतीय गटक जाते हैं।

आज यह बीते जमाने की बाते हैं जब विदेशी शराब, राजाओं, बड़े-बड़े अधिकारियों और नामी-गिरामी कलाकारों व उद्योगपतियो के पीने की चीज मानो जाती थी। उस छोटे से संसार से निकलकर शराब आज बहुत बड़े दायरे में प्रवेश कर चुकी है और आज के समय मे पीने वालों के लिए आधुनिकता का प्रतीक बन चुकी है। भैरों बाबा के प्रमुख पेय शराब के बिना अब महफिल और पार्टिया अधूरी लगती हैं और शादिया सूनी। आदिवासी समुदाय में तो कोई उत्सव बिना शराब के पूरा हो ही नहीं सकता। होली के त्योहार पर हुड़दंग मचाने के लिए दारू पी ही जाती है लेकिन दीपावली, गणेश चतुर्थी और क्रिसमस का त्योहार भी बिना शराब के नहीं मनाये जाते। नव वर्ष की पूर्व संध्या की तो बस बात ही निराली है, उस दिन तो बिना शराब के काम ही नहीं चलता।

हमारे देश मे पहले ब्राह्मणों, वैश्यो, सिखो और मुसलमानो मे शराब का प्रचलन नही था। शराब पाना बुरा समझा जाता था लेकिन कोई धर्म और कोई जाति अब इससे अछूती नही है। शराब ने अपने पीने वालों मे जातिवाद की दीवार को पूरी तरह ढहा दिया है। शराब की एक बोतल के साथ भिन्न-भिन्न जातियो के लोग अब एक ही प्याला हमनिवाला बन जाते हैं। बड़ी-बड़ी पार्टियो मे जो लोग शराब नही पीते वह पिछड़े विचारो के समझे जाते हैं और हेय दृष्टि से देखे जाते हैं।

भारतीय महिलाए भी तुलनात्मक रूप से विदेशो मे शराब पीने वाली महिलाओ से तो पीछे हैं, लेकिन थोड़ी बहुत पीने मे परहेज नही करती। निम्न वर्ग की कुछ महिलाए तो खुलेआम शराब के ठेके पर शराब लेने पहुंच जाती हैं। अस्पताल के आकड़ों के अनुसार शराब की लत से पीडित होकर आने वाले पाच हजार रोगियो मे से ५० महिलाए भी होती हैं। एक भारत-अमरीकी अध्ययन के अनुसार भारत मे शराब पीने वाली महिलाओ की सख्या मात्र ५ प्रतिशत है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार साठ के दशक में शराब पीने वाले प्रति ३०० व्यक्तियो मे एक व्यक्ति इसकी लत का शिकार था, लेकिन १९८० तक इनकी सख्या मे भारी इजाफा हुआ है और शराब पीने वाले ८ करोड लोगो मे से लगभग 30 लाख लोग शराब के नशे के आदी हो चुके थे। वर्तमान मे उनकी सख्या क्या होगी इन आकड़ों के आधार पर सहज ही अनुभव लगाया जा सकता है।

भारतीय चिकित्सा अनुसधान की हाल ही की रिपोर्ट के अनुसार देश में शराब की लत का शिकार होनेवालों मे ग्रामीण पृष्ठभूमि से बड़े लोगों की सख्या अधिक होती है। शहरों मे शराब पीनेवालो मे जहा २० प्रतिशत आदी होते हैं वही ग्रामीण पृष्ठभूमि में यह ४० प्रतिशत है। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान सस्थान के मनोचिकित्सक देविन्दर मोहन के अनुसार अब मनोचिकित्सा विभाग में इलाज के लिए आनेवाले रोगी में २५ प्रतिशत शराबी होते हैं, जबकि १९८० में इनका प्रतिशत मात्र ०२ था।

उत्तर भारत में तुलनात्मक रूप से शराब पीनेवालों में हरयाणा अग्रणी है। एक सर्वे रिपोर्ट के अनुसार इस प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों मे देशी शराब की खपत बहुत तेजी से बढ़ रही है। रिपोर्ट के अनुसार इस प्रदेश मे ४० प्रतिशत से कुछ ज्यादा ही व्यक्ति शराब पीनेवाले हैं, जिनमें से १७ प्रतिशत लोग इसके आदी हैं। देश में सरकारी ठेको का शराब पाकर सबसे ज्यादा लोग हरयाणा में ही मरते हैं।

उत्तर प्रदेश में बड़े नगरो को छोड दिया जाए तो पूर्वी भाग की तुलना मे पश्चिम भाग मे शराब की खपत ज्यादा है। १९९ -९२ के आकडो के अनुसार प्रति वर्ष देशी शराब की खपत जहा १८ करोड २० लाख बोतल हैं जो अंग्रेजी शराबके मुकाबले ६ गुना ज्यादा है। भारतीय संस्कृति को बचाने का दावा करनेवाली भारतीय जनता पार्टी की उत्तर प्रदेश सरकार ने राजस्व जुटाने के लिए आबकारी विभाग को कामधेनु समझकर यह सब कुछ किया, जो अनैतिकता की पराकाष्ठा कही जा सकती है। आज इस प्रदेश के २० जिलो मे ५४ सचल वाहनों के माध्यम से जनता को घर-घर जरूरी सामान पहुचानेवाले 'खाद्य एव आवश्यक' वस्तु निगम की आधी से अधिक गाडियां शराब बेचने में लगी हैं।

दिल्ली प्रशासन ने भी आबकारी नीति मे कुछ समय पूर्व व्यापक परिवर्तन किया है। नया आबकारी नीति के तहत ही दिल्ली मे अब धड़ाधड दुकाने खुल रही हैं।

गत दो वर्षों मे प्रशासन ने जहां क्रमश १० और १२ दुकाने खोलने की अनुमति दी थी वही गत वर्ष मे अप्रैल से सितम्बर के अन्त तक २२ नयी दुकाने खोली जा चुकी थी और २० नई दुकाने खुलने के लिए प्रतीक्षारत थीं।

दिल्ली मे इस समय अंग्रेजी शराब की १५२ दुकाने हैं। इसके अलावा दिल्ली प्रशासन द्वारा सचालित १६ देशी शराब के ठेके अलग चल रहे हैं। नयी आबकारी नीति के तहत आबकारी विभाग पोलिथिन की थैलियो मे अब अलग से शराब बेचने की सोच रहा है। इसके अलावा कैम्पा कोला, रिमझिम जसे पेयो की तरह कोला और रम की खुली बिक्री पर विचार हो रहा है।

दिल्ली मे जहां तक शराब की खपत का सवाल है तो इसकी खपत बहुत तेजी के साथ बढी है। प्राप्त आकडो के अनुसार १९८२-८३ मे दिल्ली मे देशी शराब की १८ ९९ करोड बोतल और अंग्रेजी शराब की ८,९० करोड बोतलों की खपत थी जो १९९१-९२ मे बढकर क्रमश ३३ ९५ और २८ ३५ करोड बोतल हो चुकी है। इसके अलावा पड़ोसी राज्यों से चोरी-छिपे बेची जाती हैं वह अलग। १९९० मे चार बड़े महानगरो में ६० करोड रुपये नकली स्कॉच की बिक्री हुई थी। इससे सहज ही दिल्ली के अवैध शराब की बिक्री का अन्दाजा लगाया जा सकता है।

दिल्ली मे शराब की खपत बढने के कारण राजस्व मे भी भारी इजाफा हुआ है। वर्ष १९८२-८३ मे दिल्ली मे शराब की बिक्री से ८० करोड रु की आमदनी हुई, जो १९९ -९२ मे बढकर २१५ करोड ४८ लाख रु हो गयी। चालू वर्ष मे ही आबकारी विभाग यह राशि ३०० करोड रु तक पहुचाना चाह रहा है।

भारत मे इस समय व्हिस्की २०० से अधिक ब्राड रम के ५०, ब्राडी के 30, जिन के १० वाइन के १५ और बीयर के ५० ब्राड उपलब्ध हैं। इनके अलावा २५० तरह की देशी शराब मिलती है। देश में विशुद्ध एल्कोहल की खपत प्रति व्यक्ति १ २५ लीटर है जबकि आस्ट्रेलिया मे १ ९ लीटर और अमरीका मे ४ ७ लीटर है। इन आंकडो मे अन्य दूसरे देशों में शराब पीनेवाली महिलाए भी शामिल हैं जबकि अपने देश मे अधिकाश महिलाए शराब नहीं पीती। ऐसी स्थिति में केवल पुरुषों के आधार पर एल्कोहल की मात्रा तय की जाए तो अपने देश मे प्रति व्यक्ति खपत २ लीटर है। इस गणना मे भी अवैध शराब शामिल नही है। पंजाब और हरियाणा जैसे कुछ राज्यों मे विशुद्ध एल्कोहल की प्रति व्यक्ति खपत ६ ५ लीटर से अधिक है।

प्राप्त आंकड़ों के अनुसार १९७६ मे शराब निर्माताओ ने १६९.४ मिलियन लीटर शुद्ध एल्कोहल का प्रयोग किया, जो ३५० करोड बोतल रम तैयार करने के लिए पर्याप्त है। १३८५ मे ३३ १ मिलियन लीटर एल्कोहल का प्रयोग किया गया, जिससे एक अरब १३ करोड ४० लाख बोतल रम तैयार की जा सकती है। गत वष ४५९ मिलियन लीटर एल्कोहल का उपयोग किया गया, जिसमे एक अरब ९८ करोड ६० लाख बोतल रम तैयार की जा सकती है।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

हरयाणा के कालेजों में हिन्दी विषय के साथ भेदभाव

प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य, अध्यक्ष–हिन्दी विभाग, दयालसिंह कालेज करनाल (हरयाणा)

हरयाणा हिन्दीभाषी राज्य है तथा हिन्दी यहां की सरकारी भाषा है। वसे तो हरयाणा सरकार कार्यालयों में तथा प्रशासन सम्बन्धी कामकाज मे हिन्दी को बढावा दे रही है किन्तु कालेजों में हिन्दी विषय के साथ भेदभाव बरता जा रहा है। यहा अग्रेजी विषय के अधिक पीरियड दिये जाते हैं और हिन्दी विषय मे कम, जबकि दोनों विषयों के अक बराबर हैं और दोनों ही विषय विद्यार्थियों के लिए पढने आवश्यक हैं।

कालेजो मे दस जमा दो कक्षाओं में हिन्दी (कोर) के लिए प्रति सप्ताह तीन से चार पीरियड (Periods) दिये जाते हैं किन्तु अग्रेजी विषय के लिए आठ से नौ-दस पीरियड प्रति सप्ताह दिए जाते हैं। कुछ कुछ राजकीय महाविद्यालयो में दस जमा दो कक्षाओ में हिन्दी के लिए चार से छ पीरियड भी दिए गये हैं किन्तु अधिकाश ९० प्रतिशत कालेजों मे हिन्दी के लिए प्रति सप्ताह तीन पीरियड ही दिए जाते हैं। यही कारण है कि कालेजो मे अग्रेजी विषय के प्राध्यापको की सख्या हिन्दी के प्राध्यापकों से दुगुनी होती है। जैसे दयालसिह कालेज, करनाल मे अग्रेजी विषय मे तेरह अध्यापक हैं जबकि हिन्दी विषय मे केवल छ (६) अध्यापक हैं जबकि हिन्दी विषय मे भी एम०ए० कक्षायें हैं। करनाल के स्थानीय अन्य कालेजो मे भी यही स्थिति है। डी०ए०वी० कालेज (सहशिक्षा) मे हिन्दी के दो अध्यापक हैं तो अग्रेजी विषय के चार। गुरुनानक खालसा कालेज, करनाल मे यही २ ४ का हिन्दी के चार-पाच अध्यापक हैं तो अग्रेजी के दस प्राध्यापक हैं।

इसका कारण है अग्रजी विषय मे हिन्दी से दो-तीन गुणा पीरियड अधिक दिए जाते है। उदाहरणस्वरूप दयालसिह कालेज (करनाल) मे दस जमा दो कक्षाओ मे अग्रेजी के लिये प्रति सप्ताह ८० पीरियड दिए जाते हैं जबकि हिन्दी के लिए प्रति सप्ताह कुल तीस (३०) पीरियड ही दिए गए है। इसी प्रकार बी०ए० (I, II, III) कक्षाओ मे अग्रेजी के लिए प्रति सप्ताह नब्बे (९०) से अधिक पीरियड दिए गए हैं किन्तु हिन्दी विषय के लिये कुल सत्ताईस (२७) पीरियड ही दिए गये हैं। इसी प्रकार बी०कॉम (भाग-I) तथा बी०एस सी० (B Sc) II मे अग्रेजी के लिए छ-छ पीरियड दिये जाते हैं और हिन्दी के लिये प्रति सप्ताह तीन-तीन पीरियड दिये जाते हैं जबकि दोनो विषयो के लिए अक (Marks) बराबर हैं।

करनाल से हटकर पानीपत, कैथल, अम्बाला और यमुनानगर के कालेजो की ओर ध्यान दें तब वहा भी लगभग यही स्थिति है। आर०के०एस०डी० कालेज-कैथल मे हिन्दी के ८ प्राध्यापक है तो अग्रेजी के तेरह अध्यापक है। एस०डी० कालेज—अम्बाला छावनी में हिन्दी के सात अध्यापक हैं तो अग्रेजी के बारह अध्यापक हैं जबकि उक्त दोनों ही कालेजो मे हिन्दी मे स्नातकोत्तर (एम०ए०) कक्षाये भी हैं। एस०ए० जैन कालेज अम्बाला शहर मे हिन्दी के चार अध्यापक हैं तो अग्रेजी में सात। डी०ए०वी० कालेज अम्बाला शहर मे हिन्दी के पाच अध्यापक हैं तो अग्रेजी मे नौ (९) प्राध्यापक हैं। आर्य गर्ल्स कालेज अम्बाला शहर मे हिन्दी के ढाई प्राध्यापक हैं तो अग्रेजी विषय मे पाच प्राध्यापक है। जी०एम०एन० कालेज अम्बाला छावनी मे हिन्दी के चार प्राध्यापक हैं जबकि अग्रेजी विषय में बारह अध्यापक हैं। एम०एल०एन० कालेज यमुनानगर मे हिन्दी के सात अध्यापक हैं तो अग्रेजी विषय में पन्द्रह (१५) अध्यापक हैं। डी०ए०वी० कालेज, सढोरा मे हिन्दी के दो अध्यापक हैं तो अग्रेजी के चार। डी०ए०वी० कालेज, पेहवा में भी यही अनुपात है। आई०बी० कालेज, पानीपत में हिन्दी के पाच प्राध्यापक हैं तो अग्रेजी विषय मे नौ (9) जबकि वहां हिन्दी में स्नातकोत्तर कक्षायें भी हैं। एस०डी० कालेज पानीपत में हिन्दी के तीन अध्यापक हैं जबकि अग्रेजी विषय मे छ। आर्य कालेज पानीपत में भी लगभग यही अनुपात है।

अग्रेजी विषय मे इतने अधिक पीरियड एव प्राध्यापक होने के बावजूद अग्रेजी का परीक्षा फल निराशाजनक रहता है। हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड द्वारा मार्च ९२ में आयोजित बारहवी (XII) परीक्षा का अग्रेजी विषय का परिणाम बोर्ड के गजट के अनुसार ३६ ५४ प्रतिशत रहा। इसी प्रकार मार्च १९९२ की बोर्ड की दसवी (X) परीक्षा मे अग्रेजी विषय में प्राइवेट तथा नियमित छात्र मिलाकर हुए। १९१९९१ परीक्षार्थी थे। उनमें १३१७६३ पास हुए तथा ६०२२८ फेल लगभग एक तिहाई छात्र अग्रेजी मे अनुत्तीर्ण हुए।

हरयाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड से हटकर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की जून १९९१ की बी०ए० परीक्षाओं के अग्रेजी के परिणाम देखें तो निराशा ही होगी। विश्वविद्यालय के गजट के अनुसार जून १९९१ में बी०ए०/बी०एस-सी० भाग-I अग्रेजी का परिणाम ५५ २६ प्रतिशत रहा। इसी वर्ष बी०ए०-II अंग्रेजी का परिणाम ५० ५९ प्रतिशत रहा जबकि बी०ए० III का अग्रेजी का परिणाम ५६.२० प्रतिशत रहा। 1992 में भी विश्वविद्यालय की बी०ए०/बी०एस-सी० (I) के अग्रेजी के परिणाम ५४ १३ हैं जबकि अन्य कक्षाओ की पास प्रतिशत (Pass percentage) गजट मे उपलब्ध नही है।

हमें अग्रेजी विषय या अग्रेजी भाषा से कोई विरोध नहीं। अग्रेजी के अध्यापकों से भी कोई रोष नही, कालेजो से भी कोई शिकायत नही। हा, जबरदस्ती अग्रेजी पढाने से विरोध है। सारा साल विद्यार्थी अग्रेजी पढते हैं। पीरियड भी अग्रेजी के अधिक हैं, अग्रेजी में ट्यूशन भी करते हैं, नकल भी करते हैं परन्तु फिर भी परिणाम वही के वही। इसके लिए स्वय सरकार तथा विश्वविद्यालय एव बोर्ड जिम्मेवार है। दूसरी ओर हिन्दी के लिए अतिरिक्त प्राध्यापको की व्यवस्था नही की जाती। उच्चतर शिक्षा निदेशालय, हरयाणा इनकी स्वीकृति नही देता। विश्वविद्यालय हिन्दी विषय के लिए जितने पीरियड निर्धारित करता है, उच्चतर शिक्षा निदेशालय उनको नही मानता। इस कारण हिन्दी विषय की भारी उपेक्षा हो रही है। अग्रेजी के साथ-साथ अब हिन्दी मे भी विद्यार्थी फेल होने लगे हैं।

अत हरयाणा सरकार तथा शिक्षामत्री, हरयाणा को शीघ्र इस ओर ध्यान देना चाहिए और कालेजो मे कम से कम हिन्दी के लिये अग्रेजी के बराबर पीरियड तथा अध्यापक देने की व्यवस्था करनी चाहिए। इसके साथ-साथ कुरुक्षेत्र तथा रोहतक विश्वविद्यालयो के कुलपति भी इस ओर ध्यान दे ताकि हिन्दी विषय के साथ भेदभाव एव उपेक्षा का व्यवहार समाप्त किया जा सके।

शोक समाचार

गुरुकुल धीरणवास (हिसार) की कार्यकारिणी के पूर्व प्रधान श्री प्रह्लादसिंह का १६-१-९३ को स्वर्गवास हो गया। वे ७४ वर्ष के थे। चार बार गांव धीरणवास के सरपच चुने गये। एक बार ब्लाक समिति के चेयरमैन रहे। गाव मे अनेक विकास के कार्य किये। वे साधनसम्पन्न किसान परिवार से थे। अतिथि सेवा में उनकी पूरी श्रद्धा थी। आपति समय मे गुरुकुल के परम हितैषी रहे। समस्त गुरुकुल परिवार की ओर से हम भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शान्ति मिले तथा शोकाकुल परिवार को दुःख सहन करने की शक्ति दे।

अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी सहायक मुख्याधिष्ठाता गु कु धीरणवास

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव का चुनाव

प्रधान ओमप्रकाश आर्य, उपप्रधान श्री चन्द्रसिंह, महामन्त्री श्री ओमप्रकाश चुटानी, मन्त्री श्री जगदीश आर्य, कोषाध्यक्ष श्री श्यामसुन्दर आर्य, लेखानिरीक्षक श्री हीरानन्द आर्य, भण्डारी श्री अमीरचन्द ओबर।

शराब हटाओ,
देश बचाओ

आर्यसमाज राजपुर जिला सोनीपत, चुनाव

प्रधान श्री बालकिशन, उपप्रधान श्री सुखलाल, मन्त्री श्री धर्मसिंह कोषाध्यक्ष श्री सुभाष, पुस्तकाध्यक्ष श्री सुरेश, लेखानिरीक्षक श्री बलबीरसिंह।

(पेज ४ का शेष)

देश में शराब बनाने के लिए पर्याप्त मात्रा मे एल्कोहल उपलब्ध है एल्कोहल से शराब बनाने में देश की नामी-गिरामी कम्पनिया लगी हैं जिसके परिणामस्वरूप विदेशों में भारतीय व्हिस्की, रम और बीयर अपनी छटा बिखेर रही है। भारतीय शैम्पेन फ्रांस के शराबघरों में रग जमा रही है। पश्चिमी एशिया और खाडी के देशों मे लोग भारतीय रम के दीवाने हैं। भारतीय शराब का नशा अब अमरीका, जापान और आस्ट्रेलिया जैसे विकसित देशों में भी शिकजा कसने लगा है।

एक तरफ भारतीय शराब विदेशो मे अपना रग दिखा रहो है, वही दूसरी ओर अपने देश मे अवैध शराब पीने से प्रतिवर्ष सैकडों लोगों की जानें जा रही हैं। दो वर्ष पूर्व नववर्ष की सन्ध्या पर जश्न मनाने वाले सौ से अधिक लोगो को मुम्बई मे जहरीली शराब निगल गई थी और जाने कितने लोगो को जिन्दगी भर के लिए अन्धा लंगडा या गम्भीर रोगो का शिकार बना गयी। इसके अतिरिक्त दिल्ली मे हुए जहरीली शराब काण्ड मे सैकडो लोग काल के ग्रास बन गए थे। एक अनुमान के अनुसार प्रतिवर्ष एसी ही जहरीली शराब पीने से हजारो लोग काल के गाल मे समा जाते हैं। एक तरफ सरकार शराब की बोतलो पर शराब स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है जैसे लेबल लगाकर शराब पीनेवालों को सावधान करती है, वही दूसरी तरफ आबकारी शुल्क के रूप मे करोडो अरबों रुपया कमाने के लालच में 'शराब' बेचने के लिए नित नए तरीके अपनाती जाती है। सरकार की इस दो मुही नीति के चलते ही न जाने कितने घर बरबाद हो रहे हैं, फिर भी सरकार शराब को बढावा दे रही है। क्या सिर्फ राजस्व कमाने के लिए।

श्यामकुमार सारस्वत
(सहारा इण्डिया सामाजिक अनुसधान प्रकोष्ठ के माध्यम से)

शराब, दहेज, बालविवाह के बारे मे प्रचार अभियान जोरों पर

लोहारु—आर्यसमाज लोहारु के प्रधान एव युवा नेता श्री रामअवतार आर्य के सहयोग से श्री जबरसिंह खारी रेडियो सिंगर हासी की भजन मण्डली का शराब, दहेज व बालविवाह के बारे मे प्रचार अभियान जोरो पर चल रहा है। यह प्रचार रामअवतार आर्य स्वयं गाव गाव में जाकर करवा रहे हैं। जिन गावो मे प्रचार हो चुका है वह निम्न हैं। फरटिया भीमा सोहासरा, गिगनाऊ, लोहारु, विसलवास, बारवास गागडवास, ढाणी ढोला खेडा अहमद, ढाणी रहीमपुर, लाड झूपा कला इन गावो मे श्री प्रधान जी ने कहा कि शराब से हमेशा दूर रहना चाहिए। शराब पाप और दुराचार की जननी है। यह धन, इज्जत एव शरीर का नाश करती है। दहेज हमे न तो लेना है और न ही देना है। आप भीष्म प्रतिज्ञा करें कि हम महर्षि दयानन्द सरस्वती के सपनों को साकार करेंगे। बाल-विवाह से बढ़कर और कोई हानि नही है। इसलिए हम अपने बच्चो का कम से कम २५ वर्ष तक विवाह नही करेंगे यही मेरा सन्देश है।

हवासिंह आर्यसमाज, लोहारु

मेवात की घटनाओ की निन्दा

दिनाक ३१ १ ९३ दिन रविवार को आर्यसमाज थानेसर की बैठक डा रामप्रसाद मल्होत्रा जी की अध्यक्षता में हुई जिसमे मेवात, गुडगावा मे जो साम्प्रदायिक घटनायें ७ १२ ९२ को हुई है उस पर बडा रोष प्रकट किया गया और इसकी सर्वसम्मति से भर्त्सना की गई और यह भी माग की गई कि दोषियो को दण्ड दिया जाये। मेवात निवासियो के प्रति सहानुभूति प्रकट की गई तथा इस सब मामले की न्यायिक जाच कराई जावे। सरकार से अनुरोध किया जावे कि इस घटनाओ की न्यायिक जाच कराए। मेवात मे एक सैनिक छावनी बनाई जाये।

रामकृष्ण सेठी आर्यसमाज, थानेसर

शराब सागर मे हरयाणा

लेखक सुदामा आर्य (अध्यापक) गुरुकुल आर्यनगर हिसार

सम्भलो ! सम्भलो ! हरयाणा के नर और नारी,
शराबपान और धूम्रपान है बुरी बीमारी।

यह है बाधक जीवन मे,
युवाओ को भटकाती हैं।
अल्पायु और निर्बलता से,
भयकर रोग फैलाती है।

हो रही है क्षति भयकर इससे हमारी भारी
सम्भलो !

यह है जीवन विनाशिनी,
करती है खूब शैतानी
तडपा-तडपाकर है मारती
जब तक आत्मा है रहती
दूर रहो सुरापान सम नागिनकारी।
सम्भलो ! सम्भलो !

अर्थात् कवि हरयाणा की दुर्दशा को देखते हुए नर नारियो को सचेत कर रहा है कि तुम सम्भल जाओ। शराबपान सबसे भयकर रोग है जो युवको को शक्तिहीन बना देती है अल्पायु मे उसे यमलोक पहुचा देती है इस शराब के कारण ही तो युवा इधर-उधर के जालो मे फसकर इस अमूल्य जीवन को नष्ट कर रहे हैं। इसके नशे मे युवक आकर अपना सब कुछ भूल जाता है। उसे पता नहीं चलता है कि हमे क्या करना चाहिए। बस ! इसके नशे मे उसे मात्र केवल बुराई ही नजर आती है इसके नशे में कभी कही पर चोरी करता है, कही पर अन्याय करता है तो कही पर व्यभिचार। अर्थात् इससे मनुष्य अनेक बुराइयो मे फस जाता है। आज युवको का चरित्र इसी शराब के कारण नष्ट हो रहा है। आज का युवक राम, कृष्ण, दयानन्द की सन्तान कहलाने के लायक नही रहा है। इनका आचरण रावण, कस, जरासन्ध, दुर्योधन के सदृश बना हुआ है जो अहर्निश माताओ एव बहनो का चरित्र हनन करने पर तुले हुए हैं। आज हमे घर-घर लका नजर आरही है और जन-जन रावण दिख रहा है। परन्तु राम का पता नही कि कहा पर चला गया है। अत हमे रावणरूपी शराब का हनन राम बनकर करना होगा। परन्तु प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या इस शराब नागिन का हनन कराने हेतु जनता हाथ बटायेगी ? नही ! नही ! इसके हल हेतु सरकार को विशेष रूप से हाथ बटाना होगा। तब जाकर कुकृत्य से हरयाणा को मुक्ति मिल सकती है।

पुन प्रश्न उठता है कि क्या इस काम मे सरकार कदम उठाएगी ? तो मुक्तकण्ठ से मुझे कहना पडेगा कि नही उठायेगी, क्योकि इसकी स्वय की फैक्टरी है। शराब से जो करोडो रुपये कमाते हैं और बहाना है कि राज्य पर ऋण लद जायेगा। जिसकी ऐसी प्रवृत्ति हो वह क्या शराब बन्द कर सकती है ? कदापि नही ? परन्तु हम यह सोचकर बैठ जायें कि सरकार नही कर रही है तो क्या इससे शराब बन्द हो जायेगी। इससे हे हरयाणा के नर एव नारियो सचेत हो जाओ और अपने हाथो मे मशाल लेकर खडे हो इस 'शराबबन्दी' आन्दोलन में। अपने पूर्वजों की मान-मर्यादा कायम रखने हेतु क्रान्ति का मशाल लेकर आगे बढ़ो और जो सामने आवे उसका मुख जलाकर भस्म कर दो ताकि वह भी जाने कि किसी के पाला पडा है और एक स्वर में मिलकर कहो हम हैं राम-कृष्ण की सन्तानें, हरयाणा प्रान्त मे धूम मचा देंगे। कोई आवे राह रोकने उसे मिट्टी में मिला देंगे। अत मेरे युवा साथियो एवं हरयाणा प्रान्त के शुभचिन्तको आज हमारी आवश्यकता है इस राज्य की रक्षा करना। तुम्हारा परम कर्तव्य है इस 'शराबबन्दी' आन्दोलन मे भाग लेकर अपने को सौभाग्यशाली बनाना। समझो कि इस पावन कार्य मे हिस्सा लोगे तो जीवन सार्थक बन जायेगा किसी ने ठीक लिखा है—

राष्ट्रोद्धार मे जिसने तन-मन-धन लुटाया,
समझो कि दुनिया मे सब कुछ पाया।

अब मैं अन्त मे यही कहूगा—
हरयाणा के नर एव नारियो जागृत होकर,
शराबबन्दी के लिए उठ जाओ मशाल लिए।
इस अन्यायी दुष्टाचारी काले अंग्रेज शासक को,
मार भगाओ, दूर भगाओ शान लिए ॥

दृढ़ निश्चय

सादगी से बात हम दिल की सुनाते जाएगे।
जो कहा है मुह से, वह कर के दिखाते जाएगे ॥
नूर बनकर सबकी आखों मे समाते जाएगे।
और अपने देश को ऊंचा उठाते जाएगे।
वेद के प्रकाश से हो जाएगे रौशन दिमाग।
जीहलो-बातिल के अन्धेरो को मिटाते जाएंगे ॥
भूले भटके गुमराहों को राह पे लाते, जाएगे।
रास्ती को राह पे लाते जाएंगे ॥
उनकी आखे फोड देंगे दम अदन में, देखना।
वे, जो हमको बेवजह आखें दिखाते जाएगे ॥
जा बजा गाएगे नगमे वेद के हम रात-दिन।
नाद वैदिक धर्म का हर सू बजाते जाएंगे ॥
'नाज' ! अपने देश की तस्वीर न बिगडे कहीं।
देश की बिगडी कोहम हरदम बनाते जाएगे ॥ 'नाज' सोनीपती

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१ मैसर्ज परमानन्द साईंदित्तामल, भिवानी स्टैंड, रोहतक।
२ मैसर्ज फूलचन्द सीताराम, गांधी चौक, हिसार।
३ मैसर्ज सन-अपन्ट्रेडज, सारन रोड, सोनीपत।
४ मैसर्ज हरीश एजेंसीज, ४६६/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत।
५ मैसर्ज भगवानदास देवकीनन्दन, सर्राफा बाजार, करनाल।
६ मैसर्ज घनश्यामदास सीताराम बाजार, भिवानी।
७ मैसर्ज कृपाराम गोयल, रुडी बाजार, सिरसा।
८ मैसर्ज कुलवन्त पिक्कल स्टोर्स, शाप न० ११५, मार्किट नं० १, एन०आई०टी० फरीदाबाद।
९ मैसर्ज सिंगला एजेंसीज, सदर बाजार, गुडगांव।

ये शराब के खिलाफ अलख जगाएंगे

कुरुक्षेत्र, १२ फरवरी (नि०) हरयाणा के मुख्यमन्त्री भजनलाल और [illegible] सभा के [illegible] द्वारा अनेकों बार कुरुक्षेत्र को 'धर्मक्षेत्र' घोषित करने के बावजूद कुरुक्षेत्र धर्मक्षेत्र जैसे पवित्र क्षेत्र में लोगों/महिलाओं का जीवन, बरबाद और तबाह कर देने वाली शराब की बिक्री व सप्लाई पर सख्ती से पाबन्दी लगाने के के लिए यहां विभिन्न सामाजिक संगठनों के सक्रिय प्रतिनिधियों ने अपने अपने लंगोट कस लिए हैं और जगह-जगह जनसभाओं के माध्यम से जनता को अदालत में जन-जागृति अभियान भी चलाने का दृढ़ संकल्प लिया है जिसकी शुरुआत में विगत दिवस स्थानीय जाट धर्मशाला, कुरुक्षेत्र में हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा और महिला सांस्कृतिक संगठन, कुरुक्षेत्र के वरिष्ठ व सक्रिय कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया और अपने-अपने क्रान्तिकारी विचार भी रखे। आयोजित इस हंगामी बैठक में करीब ५० कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया, महिलाओं की संख्या सर्वाधिक रही।

बैठक में सर्व सम्मति से पारित निर्णय के अनुसार दोनों सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि जिला के प्रत्येक गाव मे जाकर शराब विरोधी अभियान की अलख जगायेंगे। युवा पीढ़ी को इस आन्दोलन मे कूदने के लिए प्रेरित किया जायेगा। तथा जिन स्थानो/गावों मे पहले से ही शराब के ठेके प्रशासन या सरकार ने आमदनी के उद्देश्य से खोल रखे हैं, वहां जलसे जुलूस और प्रदर्शन आदि करके हरयाणा के मुख्यमन्त्री को उनके पूर्व वायदों की याद ताजा कराई जायेगी। उन्होंने कई बार कुरुक्षेत्र को धर्मक्षेत्र घोषित किये जाने की घोषणायें कर डाली हैं, लेकिन अभी उनकी यह घोषणा सही मायनों में सिरे नही चढ पाई है।

आयोजकों से मिली जानकारी के अनुसार उनके संयुक्त सगठनों द्वारा जिस दिन शराब के ठेकों की नीलामी होगी, उसी दिन एक विशाल प्रदर्शन किया जायेगा। कुमारी सुदेश, जो महिला सास्कृतिक सगठन की सचिव भी है, ने बताया कि कुछ गावों ने अपने यहा शराब के ठेके न खोलने देने के लिए जिला प्रशासन के प्रस्ताव भी भेजे थे। लेकिन प्रशासन ने उन सभी प्रस्तावो को रद्दी की टोकरी में डाल दिया है। हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के जिला कुरुक्षेत्र के सयोजक चौधरी सुलतानसिंह, जो पुराने सक्रिय कमठ कार्यकर्ता भी हैं ने एक प्रश्न के उत्तर मे बताया कि वे व्यक्तिगत तौर पर शराब को बहुत बुरा मानते हैं, क्योंकि ये बसे बसाये घरों को बर्बाद कर देती है, इसलिए वे इस बुरी वस्तु का डाक्टर विरोध करने को आतुर हैं।

कु० सुदेश ने यह भी बताया कि शराब विरोधी आन्दोलन उनके संगठन का अकेला या व्यक्तिगत आन्दोलन नहीं है, यह तो साझा आन्दोलन है। समाज में फैली किसी भी बुराई का सभी वर्गों व समुदायों के लोगों को डटकर विरोध करना चाहिए। इसलिए उन्होंने सभी को आमन्त्रित किया कि सभी ऐसे लोग जो शराब को जहर मानते उनके आन्दोलन में अपनी जिम्मेदारी निभायें।

सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार कहने को तो शराब के ठके पालिका सीमा से बाहर रखे गये हैं, लेकिन धार्मिक क्षेत्र अभी भी पूरी तरह से शराब में डूबा है, हर छोटी बडी गली या मुहल्ले में धडल्ले से शराब बिक रही है। प्राचीन श्मशान घाट के निकटवर्ती गांधी नगर बनाम धक्काबस्ती इसकी एक जीती-जागती मिसाल है। वहा के लोग अनेक बार स्थानीय विधायक एव विज्ञान एव तकनीकी राज्य मन्त्री, हरयाणा डा. रामप्रकाश को अपना दुखडा सुना चुके हैं और डा रामप्रकाश इस भारी धरकम शिकायत को तुरन्त दूर करने के लिए प्रशासन को कह चुके हैं। पता चला है कि उपायुक्त ने उन्हें इस मामले में सख्त कार्यवाही करने का आश्वासन दिया है। (दैनिक जनसत्ता)

शराब से मुक्त है नीरपुर गांव

मंडी अटेली—एक तरफ जहा प्रदेश में आर्यसमाज तथा सामाजिक संगठनों द्वारा शराबबन्दी अभियान युद्धस्तर पर चलाया हुआ है वहीं दूसरी तरफ इस तहसील का एक गांव नीरपुर ऐसा भी है, जिसने शराब का स्वाद नहीं चखा है।

हैरत इस बात की होती है कि राजपूतों को लेकर युगों से चली आ रही सुरा सेवन की बात, गांव नीरपुर (राजपूत) में मिथ्या सिद्ध हो रही है। सैकड़ों वर्ष पुराने [illegible] इस गांव में एक ग्रामीण के सिवाय भी [illegible] पीकर गांव में आने का साहस नहीं कर पाते हैं।

शराब बन्द होने पर ही चैन की सांस लेंगे

जींद, १६ फरवरी। जहां एक ओर प्रदेश में शराबबन्दी अभियान [illegible] पर जोरों पर है, वहीं दूसरी ओर शराब के ठेकेदारों ने भी सघर्ष करने का ऐलान कर दिया है।

गौरतलब है कि पिछले वर्ष हरयाणा शराबबन्दी सघर्ष समिति के आह्वान पर पूरे प्रदेश में जिला स्तर पर धरने दिए गये थे। जिनमे हजारों लोगों ने भजनलाल सरकार से अनुरोध किया था कि वह प्रदेश में बिक रही शराब पर अविलम्ब पाबन्दी लगायें। लेकिन उस समय सरकार के कानों पर जू नहीं रेंगी। पर प्रदेश मे जारी यह आन्दोलन उग्र रूप धारण कर रहा है। केवल कुरुक्षेत्र के बाद जीद जिले मे भी लोगों ने यह आन्दोलन तेज कर दिया है। जिनमें पिल्लूखेडा बागड, हाट, ऐचरा कला, डिडवाडा, पीपडा, सिंगोहा गावों मे शराब के ठेकों के आगे लोगों ने धरना देना शुरू किया है।

धरने मे सैकडो लोग जिनमे महिलाए भी शामिल हैं, धरने पर बैठ हुए लोगों का कहना है कि जब तक गावो से शराब का ठका नहीं हटा लिया जाता, तब तक वह लोग यही पर धरने पर बैठे रहेगे।

इस समय शराब के ठकेदार परेशान हैं। उनका कहना है कि सरकार द्वारा उनसे ३१ मार्च १९९३ तक की किस्तें भरवा ली हैं। दूसरी ओर प्रशासन इस बात को लेकर कोई मदद नही कर रहा है। क्योकि हम लोगो की जेबो से पैसे जा चुके हैं। शराब के ठकेदारो का कहना है कि धरने पर जो लोग बठे हैं, कही वह हमारे कमचारियो की पिटाई न कर दें।

सवाददाताओ ने जीद के करीब चालीस गावो का दौरा करके लोगो से प्रतिक्रियाए जानी। वह लोग अब जागरूक हो चुके हैं। अब वह तब तक चैन की नीद नही सोयगे जब तक उनके गावो से शराब की बिक्री पर पाबन्दी नही लगाई जाती। लोगो के इस गुस्से मे महिलाए ज्यादा हाथ बटा रही हैं।

पोपडा गाव मे सन्तरो नामक महिला ने बताया कि उन्हे अब शाति मिल रही है। उसने कहा कि गाव में बिक रही शराब की पाबन्दी से मुझ बहुत खुशी हुई है। इसो गाव की बिमलादेवी का कहना था कि गावो में ज्यादा शराब की बिक्री भजनलाल की नीतियो से ज्यादा हुई है। क्योकि भजन के दामाद की शराब की फैक्ट्री है। बिमला के हाथ मे शराब की बोतल था जो भजन के दामाद के कारखाने की निर्मित थी।

हाट गाव मे ठके के बाहर बैठ हुए लोगों मे ज्यादातर युवा वग के लोग बैठ थे। उन्होंने वही घाघरे टागे हुए थे। जब उनसे सवाल किया गया तो उन्होने बताया कि घाघरे उन लोगो के लिये हैं जो शराब खरीदगे उसे ये घाघरे पहनायें जायगे और उनका जुलूस निकला जायेगा।

पिल्लूखेडा कस्बे मे ठके के सामने सैकडो व्यक्ति धरने पर बैठ थे, जिनमे जामनी गाव के अधिक थे। लोगो में सरकार के प्रति रोष व्याप्त था। धरने पर बठ लोगो ने बताया कि शराब का ठकेदार जो है उसे एक राज्यमत्री का आशीर्वाद प्राप्त है इसलिये ठकेदार पुलिस की शह पर कुछ व्यक्तियो को शराब पिलाकर दगा-फसाद करवाने की योजना बना रहा है।

दक्षिण अफ्रीका से सम्पादक के नाम पत्र

भारत में आर्यसमाज द्वारा मानवीय सेवाओं की सराहना

मैं दक्षिण अफ्रीका तथा भारत में विस्तृत रूप से फैले आर्यसमाज आन्दोलन तथा श्री विमल बधावन की निःस्वार्थ सेवा के लिए मुझे रूप से धन्यवाद करती हू जिनकी सहायता अमूल्य थी।

मैं तथा मेरे पति छुट्टियो में भ्रमण के लिए १४ दिसम्बर को डरबन से भारत यात्रा पर चले। २६ दिसम्बर १९९२ को मेरे पति का नई दिल्ली में दिल का दौरा पड़ने से देहावसान हो गया। मैंने डरबन में अपने परिचितो और रिश्तेदारों को टेलीफोन द्वारा इस दुर्घटना की सूचना दी, जिन्होंने दक्षिण अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री काशीराम बादल से सम्पर्क किया। श्री बादल ने टेलीफोन द्वारा आर्य समाज के सर्वोच्च अन्तर्राष्ट्रीय कार्यालय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को यह सूचना प्रेषित की।

सूचना प्राप्त होने के कुछ ही घण्टो में सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, वरिष्ठ उपप्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव तथा श्री विमल बधावन और उनकी पत्नी श्रीमती पूनम बधावन मुझे मिलने दिल्ली के करोलबाग स्थित होटल मे पहुच गये।

श्री विमल बधावन ने मुझ तथा मेरे पति के पार्थिव शरीर को दक्षिण अफ्रीका भेजने तथा अन्य प्रत्येक काय मे मेरी सहायता क। श्री बधावन की यह नि स्वार्थ सहायता उस क्षण तक निरन्तर चलती रही जब तक मैं और मेरे पति का पार्थिव शरीर दक्षिण अफ्रीका जाने के लिए हवाई जहाज में न चढा दिया गया।

इन सेवाओं के प्रतीक रूप में मैंने श्री विमल बधावन से कुछ राशि लेने का अनुरोध किया परन्तु उन्होंने यह कहते हुए इस राशि का लेने से इन्कार कर दिया कि आर्यसमाज का मिशन केवल धार्मिक ही नहीं अपितु मानवतावादी भी है।

शीला लीलावती शिवजतन दक्षिण अफ्रीका (डरबन)

सर्वहितकारी पत्रिका के आजीवन सदस्य बनाएंगे

गत कई वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की प्रसिद्ध एवं प्रमुख साप्ताहिक पत्रिका सर्वहितकारी मे शराबन्दी एवं अन्य सामाजिक बुराइयों पर विशेष कार्यक्रम एवं लेख प्रकाशित हो रहे हैं। शराबबन्दी कार्यक्रम में अमिट छाप छोडी है। और अनेक अज्ञानी एवं भूले भटके नवयुवकों को रास्ता दिखाया है। इसके अतिरिक्त अन्य विषयों पर विद्वत्ता पूर्ण लेख भी समय-समय पर छपते रहते हैं। अनेक कार्यक्रमों की जानकारी शराबबन्दी सम्मेलन पदयात्राए तथा वार्षिक उत्सवों की रिपोर्ट प्रकाशित होती रहती है।

हमारी विशेष प्रेरणा से इस पत्रिका को पढने की लोगों में विशेष इच्छा रहती है। कई मित्र स्वईच्छा से कई सुझाव पर पत्रिका के आजीवन एव वार्षिक शुल्क देकर सदस्य बनते रहते हैं। गत दिनों पांच आजीवन तथा अनेक सदस्य वार्षिक सदस्य बनाए हैं।

आजीवन सदस्य—१ श्री सुखलालचन्द्र आर्य, कलकत्ता, २ श्री आर्यसमाज नागोरी गेट हिसार, ३ श्री अभिषेक आर्य ए-१५ विवेक विहार दिल्ली ४ श्री मदनलाल शर्मा हरयाणा होटल सिलीगुडी, ५ श्री मन्त्री जी आर्यसमाज सिलीगुडी।

एक बार पुन मेरा बन्धुओ तथा अन्य सम्पन्न लोगो से नम्र निवेदन है कि आप सबका हित चाहनेवाला सर्वहितकारी पत्र के सदस्य स्वय बन तथा अन्य को बनायें। श्रद्धा से इस पत्रिका को पढ़कर अपने जीवन का नवनिर्माण करें।

अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी सभा उपदेशक

[illegible] परायणा माता

[illegible] आर्य [illegible] गुरुकुल [illegible] के संस्थापक श्री [illegible] की आर्य और उनके छोटे भाई श्री [illegible]सिंह ने अपनी माता [illegible] के स्वर्गवास होने पर अपने गांव [illegible] में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ करवाया और आसपास के पांच-चार गांवों तथा स्कूलों को खिलाया। लगभग दो-तीन हजार रुपया [illegible] में गुरुकुलों, आश्रमों व समाजों को दान दिया। माता [illegible] ने अपनी ओर से अपने बूढ़ों तथा गरीबों को ११ कम्बल दान किये। इस प्रकार दोनों भाइयों और उनकी पत्नियों ने माता [illegible] देवी के स्वप्न को साकार किया। क्योंकि स्वर्गवास होने से पहले उनकी यह हार्दिक इच्छा थी कि मेरे गांव में यज्ञ किया जाय और सहभोज दिया जाये। इससे अन्य माताओं को भी शिक्षा लेनी चाहिए। इतना ही नहीं अन्य नौजवानों को भी अपनी माताओं के प्रति कर्तव्य निभाना चाहिए।

महिला आर्यसमाज हावड़ा मे साप्ताहिक सत्संग सम्पन्न

दिनाक २३ १-९३ को आर्यसमाज हावडा में गत सप्ताह की भांति महिला आर्यसमाज सत्सग का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। दोपहर बाद दो बजे यज्ञशाला में पुरोहित प० ओमप्रकाश जी आर्य ने हवन करवाया। तत्पश्चात् सत्सग हाल में आचार्य ब्रह्मदत्त शास्त्री जी की अध्यक्षता में एक सभा हुई। सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी जी ने स्त्री शिक्षा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के उपकार, सुखी गृहस्थ का जीवन एव आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को शराबबन्दी विषयों पर विस्तार से विचार रखे। स्वामी सर्वदानन्द जी ने भी सुखी जीवन जीने की कला तथा ईश्वर जीव प्रकृति पर उत्तम ढग से प्रकाश डाला। सभा मे माताओं बहिनों की उपस्थिति सराहनीय थी। साथ में वैदिक उपदेशक विद्यालय के छात्रों ने भी भाग लिया। कार्यक्रम प्रभावशाली रहा।

मधुसूदन शास्त्री आर्यसमाज हावडा

आर्यसमाज सिल्लीगुड़ी के साप्ताहिक सत्संग में विशेष कार्यक्रम

दिनाक 17 1-93 को आर्यसमाज सिल्लीगुडी के सत्सग में परोपकारिणी सभा के महामन्त्री श्री गजानन्द जी आर्य (कलकत्ता), श्री सत्यानन्द जी आर्य(दिल्ली), श्री प्रकाशानन्द जी आर्य(बम्बई), अचानक इस परिवार पधारे। इसी अवसर पर स्वामी सर्वदानन्द जी गुरुकुल-धीरणवास (हिसार), आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा के उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी तथा महाशय रामजीलाल जी आर्य (बालसमन्द) भी गुरुकुल की सहायतार्थ आए हुए थे। आर्यसमाज के अधिकारियों ने सभी विद्वानों का हवन के बाद सत्सग हाल में पुष्प-मालाओ द्वारा स्वागत किया। श्री गजानन् जी आर्य ने सत्सग का महत्त्व तथा आर्यसमाज के दूसरे नियम की। व्याख्या की स्वामी सर्वानन्द जी ने सुखी जीवन जीने के लिए तीन सुत्रीय का उपयोग तथा परमात्मा को मानना। कार्यक्रम बहुत ही प्रेरणादायक रहा। सत्सग में हाजरी भी सराहनीय थी।

रतीराम जी आर्य, सिल्लीगुडी

आर्यसमाज जीन्द शहर का चुनाव

प्रधान श्री० बद्रीप्रसाद आर्य, उपप्रधान वैद्य [illegible]राम, श्री [illegible]सिंह एडवोकेट मंत्री, श्री कृष्णदेव [illegible], उपमन्त्री डा० रमेश वर्मा, कुंवर महावीरसिंह, कोषाध्यक्ष श्री रविन्द्र आर्य, पुस्तकाध्यक्ष श्री प्रो० दयासागर, सेना निदेशक श्री सूर्यप्रकाश।

रुकिये!

नशीली चीजों से परिवार की बर्बादी होती है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर
सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा [illegible] रजि० नं० P/RTK-४ सृष्टिसंवत् १,६६, ११

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २० अंक १३ २८ फरवरी, १९९३ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

शराब के ठेकों की नीलामी पर विरोध प्रदर्शनों का कार्यक्रम

आर्यसमाज तथा शराबबन्दी कार्यकर्ताओं की ओर से हरयाणा सरकार द्वारा शराब के ठेकों की नीलामी के अवसर पर विरोध प्रदर्शन करने का कार्यक्रम निम्नप्रकार बनाया गया है

क्रमांक	जिले का नाम	नीलामी का स्थान	नीलामी की तिथि
१	अम्बाला व यमुनानगर	अम्बाला कैन्ट	१-३-१९९३
२	सोनीपत	सोनीपत	२-३-१९९३
३	नारनौल व रिवाडी	रिवाडी	३-३-१९९३
४	गुडगाव	गुडगाव	४-३-१९९३
५	फरीदाबाद (पूर्व) व (पश्चिम)	फरीदाबाद	५-३-१९९३
६	पानीपत	पानीपत	६-३-१९९३
७	करनाल	करनाल	६-३-१९९३
८	कुरुक्षेत्र	कुरुक्षेत्र	९-३-१९९३
९.	कैथल	[illegible]	९-३-१९९३
१०	जींद	जींद	९-३-१९९३
११	सिरसा	सिरसा	१०-३-१९९३
१२.	हिसार	हिसार	१०-३-१९९३
१३.	भिवानी	भिवानी	११-३-१९९३
१४.	रोहतक	रोहतक	११-३-१९९३

आर्यसमाज तथा शराबबन्दी कार्यकर्ताओं से अनुरोध है कि अपने-अपने जिलों के आबकारी एव कराधान कार्यालय पर जहा पर निलामी स्थल है ऊपरलिखित तिथियों पर प्रात १० बजे तक अपने अधिक से अधिक सहयोगियों के साथ शराब रूपी जहर के ठेको की नीलामी रुकवाने के लिए विरोध प्रदर्शन करके हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी लागू करने की माग करें।

सूबेसिंह मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ, रोहतक

शराबबन्दी सत्याग्रह के लिए दान सूची

1-चौ० सुमेरसिंह आर्य सरूपगढ जिला भिवानी ने २,२०० रुपए २-प्रो० शेरसिंह जी सभा प्रधान २,१०० रुपए तथा १,१०० रुपए दान देनेवाले १-सर्वश्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, गुरुकुल झज्जर, २-वेदपाल आर्य, बरहाणा जिला रोहतक, ३-आर्यसमाज रोहणा जिला रोहतक, ४-आर्यसमाज कैथल, ५-आर्यसमाज शिवाजी कालोनी रोहतक, ६-आर्यसमाज दूबलधन जिला रोहतक, ७-कपिलदेव शास्त्री पूर्व सांसद, सोनीपत रोड रोहतक, ८-महताबसिंह प्राध्यापक रोहतक, ९-ग्राम पंचायत सिकाना (बेरी ब्लाक) रोहतक, १०-मनफूलसिंह सरपच ग्राम माजरा जि० रोहतक, ११-सूरतसिंह सरपंच ग्राम बिगोवा जि० भिवानी, १२ बख्शी बहादुरगढ जि० रोहतक, १३-आर्यसमाज सफीदों जि० जींद, १४-प्रि० गुगनसिंह जी, ग्राम मोखरा जि० रोहतक, १५-आर्यसमाज नरवाना जि० जींद, १६-जसवन्तसिंह अरबन स्टेट न० २ हिसार, १७-मा० रामेश्वरदयाल डाबडा रोड हिसार, १८-आर्यसमाज नारायणगढ़ जि० अम्बाला, १९-आर्यसमाज बेरी जि० रोहतक, २०-सत्यवीर आर्य ग्राम मदाना, २१-आर्यसमाज कालका जि० अम्बाला, २२-आर्यसमाज घण्टाघर जि० भिवानी, २३-आर्यसमाज बवानीखेडा जि० भिवानी, २४-गुरुकुल कुरुक्षेत्र, २५-गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, २६-आर्यसमाज क्योंडक जि० कैथल, २७-आर्यसमाज समालखा मण्डी जि० पानीपत, २८-आर्यसमाज माडल टाउन सोनीपत, २९-श्री सुरेन्द्रसिंह जी ग्राम बिलोर जि० यमुनानगर, ३०-श्रीमती हरनन्दन देवी ग्राम नंगला सैदान, ३१-श्री कप्तानसिंह मलिक—कृष्णा खाण्डसारी इण्डस्ट्री छूछकवास (रोहतक), ३२-ग्राम पचायत नीमला जि० भिवानी, ३३-श्री बहादरसिंह ठेकेदार ग्राम सौहली जि० महेन्द्रगढ, ३४-आर्यसमाज कासडी जि० सोनीपत। (क्रमश)

आर्यसमाज अधिकारियों से निवेदन है कि शराबन्दी सत्याग्रह की तैयारी के लिए कम से कम ११ सत्याग्रहियो तथा ११००) दान यथाशीघ्र आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक मे भेजकर अपना योगदान देने की कृपा करें।

आर्यसमाज के अधिकारियो एव कार्यकर्ताओं के सहयोग से ही सत्याग्रह सफल होगा। अत इस सूची मे अपना नाम लिखवाकर यश के भागी बने।

—सभामन्त्री

शराबबंदी समिति ठेकों की नीलामी नहीं होने देगी

सिरसा, १६ फरवरी (निस). हरयाणा शराबबंदी समिति के संयोजक विजयकुमार ने घोषणा की है कि उनकी समिति मार्च में होने वाली शराब के ठेकों की नीलामी का विरोध करेगी।

उन्होंने कहा कि हरयाणा सरकार अपने स्वार्थों के लिए सभी नियमों व नैतिकता को ताक पर रखकर शराब की बिक्री मे लगी हुई है। विजयकुमार ने कहा कि हरयाणा की ५६६ पचायतो ने ३० सितम्बर १९९२ तक तक उनके गावो मे शराब के ठेके न खोलने की मांग की। जिनमे से सरकार ने ९० प्रतिशत प्रस्ताव रद्द कर दिये हैं। उन्होंने सरकार की ये प्रस्ताव रद्द करने पर कडी निन्दा करते हुए कहा कि उनकी समिति इन गावों में शराब के ठेके नही खोलने देगी चाहे उन्हें आन्दोलन ही क्यों न करना पडे।

श्री विजयकुमार ने कहा कि जब गुजरात, नागालैंड व तमिल जैसे प्रदेशों मे गावों मे शराबबन्दी हो सकती है तो हरयाणा मे नही हो सकती। उन्होंने माग की है कि गाधी के नाम पर मत करने वाली कांग्रेस उनके चलाए रास्ते पर चलते हुए एकमत से शराबबन्दी लागू करे।

(शेष पृष्ठ २ पर)

आर्यसमाज छानी बड़ी के अष्टम उत्सव की एक झलक

आर्यसमाज के वयोवृद्ध सन्यासी स्वामी ईशानन्द जी की प्रेरणा से आर्यसमाज छानी बडी त भादरा जि श्रीगंगानगर (राज) का वार्षिक उत्सव दिनाक ७-८-९ फरवरी १९९३ को धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर मूर्धन्य सन्यासी स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी सर्वदानन्द जी (गु कु घोरणवास) स्वामी सुमेधानन्द जी (राज) स्वामी परमानन्द जी, ब्र आचार्य धर्मपाल जी (गु कु किरठल) प भरतसिंह जी शास्त्री (कन्या गु कु पचगाव) श्रीमति करुणा शास्त्री, सभा उपदेशक श्री भरतसिंह जी आर्य क्रान्तिकारी आदि विद्वानों ने आदर्श गुरुकुल शिक्षा चरित्र निर्माण, क्रान्तिकारियों का इतिहास, देश की आजादी मे आर्यसमाज का योगदान, गोरक्षा, नारी शिक्षा तथा शराबबन्दी पर प्रकाश डाला। स्वामी ओमानन्द जी ने स्वामी ईशानन्द जी के कार्यों एव अनेक आन्दोलनो मे भाग लेने की जानकारी दी।

क्रान्तिकारी जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की शराबबन्दी कार्यक्रम की जानकारी दी। साथ में छानी गाव के लोगो से गाव मे स्थित दो अग्रेजी व देशी शराब के ठेकों को बन्द कराकर अपने गाव के माथे से यह कलक हटाने का आह्वान किया। शराबियो को बुरी तरह से लताडा। एक शराबी सभा मे बौखलाया। आर्य वीरों ने उसे धमकाया। प्रात हवन पर १५ नवयुवकों ने जनेऊ लिए और रात्रि वाला शराबी श्री ओमप्रकाश जी व श्री सत्यवीरसिंह आर्य सहपत्निक यज्ञ मान बने तथा यज्ञोपवीत धारण किया। शराब न पीने की प्रतिज्ञा की। श्री महावीरसिंह ने चाय छोडी। इसी समय एक रायचन्द नाम का हरिजन जो शराबी कबाबी था। एक नम्बर पाखण्डी, झाडे लगाना, मूर्खों के भूत निकालना आदि अनेक दुर्व्यसनो में फसा हुआ था। गाव मे जूते गाठने का कार्य भी करता था। स्वेच्छा से हवन पर आया और कहा मुझे जनेऊ दे दो। मुझे बचाओ। मैं ही इस गाव मे सबसे बुरा एव पापी आदमी हू। आज सब बुराई एव पाखण्ड छोडता हू। मेरे सन्तान नहीं है, मेरा धर्मपत्नी आखो से अन्धी है वह आपके गाव मे रहती है। मेरे एक मकान व तीन एकड जमीन है, वह भी आर्यसमाज को देने की घोषणा करता हू। उसने कहा कि मैं स्वामी ईशानन्द जी के व्यवहार से प्रभावित हुआ हू। प० भरतसिंह शास्त्री ने स्वामी ओमानन्द जी के कहने पर उसे जनेऊ दिया। स्वामी जी ने अनेक डाकुओ व दुर्व्यसनी लोगो के उदाहरण दिए जो सत्सग मे आकर अपने दोष छोड गए और आर्यसमाज के नेता बने अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य किये।

इसके अतिरिक्त प० आशाराम जी, कुवर सुखपालसिह, पडित सतीशकुमार सुमन, श्रीमती कौशल्या शास्त्री तथा महाशय फूलसिंह आर्य के शिक्षाप्रद समाज सुधार के क्रान्तिकारी भजन हुए। तीनो दिन हजारो की सख्या मे नर-नारियो ने प्रचार में भाग लिया। आर्य वीर दल के नवयुवको का विशेष योगदान रहा। मच का संचालन मा० नौरगलाल आर्य ने किया। भोजन को व्यवस्था ७ परिवारो मे बहुत ही उत्तम थी। एक समय मे २०-२५ विद्वान् व आर्य सज्जनो ने भोजन किया। जिन परिवारो ने श्रद्धा से विद्वानों को भोजन करवाया वे निम्न हैं। १) श्री नौरगलाल जाखड़ो,(२) नत्थूराम मान, ३) नत्थूराम बैनीवाल, ४) तुलसीराम आर्य, ५) सुरजभान पटवारी, ६) देवकरण महला, ७) रामविलास सेठ, कार्यक्रम बहुत ही प्रेरणादायक रहा।

महावीरसिंह जी आर्य
मन्त्री आर्यसमाज छानी बडी

स्वामी दयानन्द जयन्ती पर हरयाणा मे छुट्टी रहा करेगी

चण्डीगढ, १९ फरवरी। हरियाणा के मुख्यमन्त्री भजनलाल ने राज्य मे महर्षि दयानन्द के जन्मदिवस 'दयानन्द दशमी' को सार्वजनिक अवकाश के रूप मे घोषित किया है।

मुख्यमन्त्री ने आर्य केन्द्रीय सभा की ओर से शुक्रवार को नई दिल्ली मे आयोजित 'ऋषि बोध उत्सव' के समारोह में यह घोषणा की। उन्होने हरियाणा मे वृद्ध व्यक्तियों के लिए गृह निर्माण करने वाली सभा को १० एकड भूमि देने की भी घोषणा की। (जनसत्ता)

नशाबन्दी अभियान भजन सरकार के लिए वाटरलू साबित होगा : प्रो० शेरसिंह

कुरुक्षेत्र 21 फरवरी (जनसत्ता)। नशाबन्दी अभियान अब राष्ट्रीय प्रश्न बन गया है और हरयाणा में तो नशाबन्दी अभियान इतनी तेजी से चल रहा है कि यह भजनलाल सरकार के लिए वाटरलू साबित होगा। अखिल भारतीय नशाबन्दी समिति के अध्यक्ष आर्य समाजी नेता प्रो० शेरसिंह ने यह बात कही।

उन्होंने एक भेंट मे बताया कि सुप्रीम कोर्ट ने इस बात को माना है और समिति को नशाबन्दी के पक्ष में डाली गई याचिका पर दस राज्य सरकारों के नोटिस आ चुके हैं। मार्च १९५६ में लोकसभा ने पूरे देश मे सर्वसम्मत नशाबन्दी का प्रस्ताव पास किया था। इसके बाद योजना आयोग से सिफारिश की गई थी कि आगामी पचवर्षीय योजना शराब की आमदनी पर आधारित नही होनी चाहिए। इस तरह के फैसले केन्द्र सरकार के रिकार्ड में आज भी दर्ज हैं, किसी ने बदले नहीं हैं।

प्रो०शेरसिंह ने कहा कि यह अभियान कोई कुर्सी या पद के लालच में नहीं चला रहे हैं। "असल मे मैं अब किसी भी राजनीतिक पार्टी मे नहीं हू।" उन्होने बताया कि उन्हें नशाबन्दी अभियान की प्रेरणा राजस्थान मे रहबारी जाति के लोगो से मिली थी। वहा के लोग ऊंटगाडी चलाते हुए नशीली गोलिया खाते थे और नशे मे होने पर चोर उनका सामान उठा ले जाते थे। अन्त मे इन लोगो ने पचायती तौर पर नशाबन्दी लागू की जो कि आज तक लागू हैं।

उन्होने कहा कि यह अभियान तीन तरह से चलाया जाएगा। एक तो लोगो को शिक्षित करके शराब छुडवायेंगे। दूसरे कानूनी तौर पर ठेके बद करवायेंगे। तीसरे शराब पीने के आदि हुए लोगों का इलाज करवायेंगे। असल बात तो यह है कि शराब अब आदमी व समाज को पीने लग गई है।

इस मौके पर नशाबन्दी समिति हरयाणा के सयोजक विजयकुमार ने कहा कि हरयाणा भर से ५६६ प्रस्ताव पचायतो ने नशाबन्दी के हक मे पास किये थे। सरकार ने ३०६ प्रस्ताव मान लिए हैं। यह सरकार की चालाकी है। इनमे ज्यादातर वे हैं जहा पर ठेके हैं ही नही। उन्होंने आरोप लगाया कि हरयाणा सरकार की नई आबकारी नीति लोगो को शराब बनाने को प्रेरित कर रही है।

इस समय कैथल, जीद, कुरुक्षेत्र, भिवानी, करनाल व रोहतक जिलों में शराब के सैकडो ठेके बन्द हैं। लोग सर्दी मे रात को भी ठेकों के बाहर धरना दे रहे हैं। उन्होंने पुलिस को चेतावनी देते हुए कहा कि शातिपूर्ण धरना दे रहे लोगो को तग किया तो आदोलन भडक सकता है। जनसत्ता २२-२-१९९३

(पृष्ठ १ का शेष)

श्री विजयकुमार ने कहा कि उनकी समिति देश भर मे भजन पार्टियो व अन्य प्रचार माध्यमो से शराबबन्दी के हक मे वातावरण तैयार करने मे लगी है। तथा उन्हे इसमे आशा से अधिक सफलता मिल रही है। उन्होंने उदाहरण देते हुए बताया कि गावों में महिलायें इस अभियान में विशेष उत्साह दिखा रही हैं।

उन्होंने सरकार से अपील को कि वह करों की चोरी रोककर शराबबन्दी से होनेवाले राजस्व के घाटे को पूरा कर सकती है। उन्होंने कहा कि शराब से होनेवाला नुकसान किसी राजस्व घाटे से अधिक हानिकारक है। इसलिए शराबबन्दी पर सरकार-समाज को मिलकर काम करना चाहिए। दैनिक ट्रिब्यून

सर्वहितकारी के ग्राहक बन्धु ध्यान दें—

अपनी पत्रिका पर लिखे पते मे पिन कोड चेक करें। डाक विभाग द्वारा इसे अनिवार्य कर दिया गया है। ठीक पिन कोड मार्च ९३ तक 'सर्वहितकारी' कार्यालय को पत्र लिखकर अवश्य सूचित करें। अन्यथा पत्रिका समय पर नही पहुच सकेगी।

—सम्पादक

शराबबन्दी सत्याग्रह की तैयारी हेतु सभा अधिकारियों का तूफानी भ्रमण

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा मार्च मास से शराबबन्दी सत्याग्रह की तैयारी के लिए सभा के अधिकारी, उपदेशक तथा भजनोपदेशक सारे हरयाणा का तूफानी भ्रमण कर रहे हैं। हरयाणा सरकार ने एक मार्च ९३ से शराब के ठेकों की नीलामी करने का कार्यक्रम बनाया है। अत आर्यसमाज तथा शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं में जागृति उत्पन्न करने तथा ठेकों की नीलामी के अवसर पर विरोध प्रदर्शन की तैयारी करने के लिए १९ फरवरी ९३ को ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर जिला पानीपत, करनाल, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र तथा हिसार में सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह, सभामन्त्री श्री सूबेसिंह एवं शराबबन्दी समिति हरयाणा के संयोजक श्री विजयकुमार ने यात्रा के मार्ग में आर्यसमाज तथा शराबबन्दी के कार्यकर्त्ताओं से सम्पर्क किया।

आर्यसमाज रेलवे मार्ग यमुनानगर में १९ फरवरी को ऋषिबोध दिवस पर आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओ को प्रो शेरसिंह ने सम्बोधित करते हुए ऋषि दयानन्द को जीवनी पर प्रकाश डाला औरबताया कि एक चूहे की घटना से बालक मूलशंकर के जीवन का कायाकल्प हो गया। वे सच्चे शिव की तलाश मे स्वय शिव बन गये और अपना सारा जीवन जनता के कल्याण में लगा दिया। आपने वर्तमान भ्रष्ट राजनीति की चर्चा करते हुए आश्चर्य प्रकट किया और कहा कि मुख्यमन्त्री सरकारी पद की शपथ लेते समय अपनी पूरी शक्ति के साथ जनता के लिए कल्याणकारी कार्य करने की घोषणा करते हैं। परन्तु मुख्यमन्त्री कुर्सी के नशे में अन्धा होकर बादशाहों की भाति फिजूल खर्ची करने लग जाते हैं और खर्च की पूर्ति हेतु राज्य मे शराब के ठेकों से राजस्व कमाने में लग जाते हैं। इसप्रकारकल्याणकारी कार्यों को छोडकरजहररूपी शराब की बिक्री का प्रचार तथा प्रसार करके अकल्याणकारी कार्यों मे शक्ति लगाते हैं। इसी का परिणाम है कि आज शराब के कारण भ्रष्टाचार, दुर्घटनाओ, पापाचारो में दिन प्रतिदिन वृद्धि हो रही है। राजनैतिक नेता शराबियो के सहयोग से चुनाव जीतते हैं। शराबियों को हुडदग तथा असमाजिक गतिविधियो के कारण बहन-बेटियो की इज्जत खतरे मे है। हमारी प्राचीन वैदिक संस्कृति समाप्त हो रही है। ऋषि-मुनियो की पवित्र धरती मे दूध, दही के स्थान पर घर-घर मे शराब की नदिया बह रही हैं। हरयाणा शराब का गुलाम बनकर सारे ससार मे बदनाम हो रहा है क्योंकि सरपचो को अधिक से अधिक शराब बेचने पर हरयाणा सरकार प्रोत्साहन तथा ईनाम दे रही है। इस प्रकार शराब के ठेकेदार मालामाल हो रहे हैं।

सभा प्रधान प्रो शेरसिंह ने हरयाणा की जनता का आह्वान करते हुए कहा कि अब समय आ गया है कि हम सभी मिलकर शराब जैसी सामाजिक बुराई को जड से समाप्त करें और जो सरकार शराब की आमदनी से राज्य करना चाहती है, उसे चेतावनी देवें कि अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए जनता को जहररूपी शराब पिलाकर बर्बाद न करें, अन्यथा जिस प्रकार यादववंशी, राजपूत तथा मुगल बादशाह आदि शराब के कारण नष्ट हो गये थे उसी प्रकार यह शराब समर्थक सरकार भी अधिक दिनों तक नहीं टिक सकेगी। आर्य जनता अब जाग रही है। इस वर्ष सरकार द्वारा शराब (जहर) के ठेकों की नीलामी नहीं करने दी जावेगी और यदि लुक-छिपकर तथा पुलिस की सहायता से ठेके खोले भी दिये जावेंगे तो वहां धरनों आदि से बिक्री नहीं हो सकेगी। आपने आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को तैयार रहने की अपील की।

इस अवसर पर सभा के मन्त्री श्री सूबेसिंह तथा हरयाणा शराबबन्दी समिति के सयोजक श्री विजयकुमार ने भी सभा द्वारा चलाये जा रहे शराबबन्दी अभियान के कार्यक्रम से उपस्थित जनता को जानकारी दी तथा जिला यमुनानगर में ठेकों की नीलामी रुकवाने के लिए सघठित होकर संघर्ष करने का अनुरोध किया और सुझाव दिया कि जिला यमुनानगर में शराबबन्दी समिति का गठन करके प्रत्येक आर्यसमाज के उत्साही कार्यकर्त्ताओं की सूची बनाकर उनसे सम्पर्क करके आज से ही विरोध प्रदर्शन करने की तैयारी आरम्भ कर देवें। यह मानव तथा दानव के बीच संघर्ष है। दानवों का सरकार सरक्षण करेगी और उन्हे पुलिस की सुविधा देगी, परन्तु ऋषि दयानन्द के अनुयायियों को परोपकार की भावना से सत्य का सहारा लेकर दानवों के साथ संघर्ष करना है। सत्य के लिए हमे ऋषि दयानन्द की भाँति ईंट, पत्थर भी खाकर अडिग रहना होगा। इस महान् कार्य के लिए हमें गिरफ्तारियां भी देनी होंगी। अनेक प्रकार के कष्ट भी सहन करने पडेंगे, परन्तु अन्त में सत्य की ही विजय होगी। वेद के सन्देश के अनुसार संघर्ष ही जीवन है।

१९ फरवरी को ही सायंकाल सभा प्रधान प्रो शेरसिंह, शराबबंदी समिति के सयोजक श्री विजयकुमार, सभा के उपदेशक श्री अतरसिंह ने ग्राम मथाना (कुरुक्षेत्र) किरमच (कैथल) आदि का भ्रमण किया जहा शराब के ठेको पर पिछले दिनों से धरणे चल रहे हैं। वहां कार्यकर्त्ताओं से विचार विमर्श किया तथा उन्हे प्रोत्साहित करते हुए कहा कि ग्राम की भलाई करने की भावना से कष्ट सहन करते हुए डटे रहो। शराब के ठेके बन्द होने पर ग्रामीण जनता का कल्याण होगा और आपका आनेवाली पीढिया इस संघर्ष के लिए गुणगान करेंगी। ग्राम मथाना के कार्यकर्त्ताओं ने सभा के अधिकारियों को बताया कि शराब के ठेकेदार पुलिस को बुलवाकर शान्तिपूर्वक बैठे कार्यकर्त्ताओं के साथ दुर्व्यवहार करवा रहे हैं। अत सभा अधिकारियो ने पुलिस अधीक्षक से भेंट करके उन्हे शिकायत करते हुए कहा कि शराब के ठको पर कार्यकर्त्ता परोपकार की भावना से शराब पीनेवालों को प्यार से शराब न खरीदने की प्रेरणा कर रहे हैं और उन्हे शराब से होनेवाली बुराइयो को दूर रखने का प्रयास करके कोई अपराध नही कर रहे। अत पुलिस को ठेकेदारो के लालच में न आकर सत्याग्रहियो के साथ दुर्व्यवहार नहा करना चाहिए। यदि पुलिस अनुचित हस्ताक्षेप करती रही तो विवश होकर ग्रामीण जनता आत्मरक्षा हेतु कार्यवाही करेगी।

२० फरवरी को प्रात सभा अधिकारी जिला कैथल के ग्राम पवनावा, कौल आदि भी गए वहा भी शराब के ठेकों पर धरना चालू है। वहा के कार्यकर्त्ताओं मे उत्साह पाया गया। वे रात्रि की सर्दी की परवाह किये बिना धरनो पर निरन्तर बैठे हैं। सभा अधिकारियों ने उन्हे विश्वास दिलाया कि सभा की ओर से इस परोपकारी कार्य मे पूरा समर्थन किया जावेगा और सभा की ओर से शराबबन्दी प्रचार हेतु प० बिरजीलाल की मण्डली का कार्यक्रम बनाया गया है।

सभा अधिकारियो ने जिला कैथल के ग्राम टीक, तितरम तथा कलायत का भी भ्रमण किया, वहा भी शराबबन्दी कार्यकर्त्ता भारी संख्या मे शराब के ठेकों के सामने धरनो पर बैठे हैं।

२० फरवरी को दोपहर बाद सभा के अधिकारी गुरुकुल धीरणवास जिला हिसार के वार्षिक उत्सव मे सम्मिलित हुए और वहा उपस्थित नर-नारियों को सम्बोधित करते हुए सभा द्वारा चलाये जा रहे शराबबन्दी अभियान की विस्तारपूर्वक जानकारी दी और आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को जिला हिसार में शराब के ठेकों की नीलामी के अवसर पर पूरी शक्ति के साथ प्रदर्शन करने की अपील की। इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होनेवाले सर्वनाश से बचने पर बल दिया। यहां भी जिला स्तर पर शराबबन्दी समिति का गठन करने का कार्य भार गुरुकुल के संचालक स्वामी सर्वदानन्द जी तथा सभा उपदेशक पं० अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी को सौंपा।

इस वर्ष जिला भिवानी की सभी ३७ ग्राम पचायतों ने शराबन्दी के प्रस्ताव करके हरयाणा सरकार को भेजकर अनुकरणीय कार्य किया है। परन्तु हरयाणा सरकार ने बहुत अधिक संख्या मे प्रस्तावों को अस्वीकार करके पंचायतों की अवमानना की है और जबरदस्ती पुन: ठेकों की नीलामी करने का कार्यक्रम बनाया जा रहा है। अत जिले भिवानी के ग्रामों में २३ से २७ फरवरी तक अचीना, सावड, सागा, [illegible] कलां, मामेहर, देवसक, लोहानी, बिरहीकला, अटेलानया, जेवली

(शेष पृष्ठ चार पर)

कन्या गुरुकुल खरल जिला जींद का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

दिनाक १२, १३, १४ फरवरी १९९३ को कन्या गुरुकुल खरल का उत्सव विधिवत् सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर निम्न विद्वानों ने विचार रखे। स्वामी रत्नदेवजी, कुलपति एव सस्थापक (कन्या गुरुकुल खरल एव गुरुकुल कुम्भाखेडा) स्वामी निर्मलानन्दजी गौशाला खनौरी, पं० सुखदेवजी शास्त्री, आचार्य देवव्रत शास्त्री (गुरुकुल कुरुक्षेत्र) चौधरी ईश्वरसिंह विधान सभा अध्यक्ष हरयाणा, अतिरिक्त उपायुक्त पाणिग्रही जी(जींद) आदि ने नारी शिक्षा, गौरक्षा, वेदरक्षा, आर्यसमाज का इतिहास महर्षि दयानन्द जी के जीवन एव कार्य, आर्यसमाज क्या चाहता है तथा शराबबन्दी पर विस्तार से विचार रखें।

स्वामी रत्नदेवजी ने लोगो से पुरजोर अपील की कि शराब आदि दुर्व्यसनो को छोडकर आर्यसमाज के सम्पर्क मे आओ और वैदिक राष्ट्रीय मच के माध्यम से हरयाणा में आर्य सरकार बनाओ। आर्य वीरो खड हो जाओ, अब समय आ चुका है। इन गन्दे राजनेताओं ने और शराब के ठेकेदारो ने हरयाणा को बर्बाद कर दिया है। चारो तरफ जातिवाद, भ्रष्टाचार, शराबखोरी का ताण्डव है। इसे आर्य (सज्जन) लोग ही खत्म कर सकते हैं। सभी विद्वान् वक्ताओ ने कन्या गुरुकुल खरल की पढाई एव व्यवस्था की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

इसके अतिरिक्त प० चिरजीलाल जी, प० चन्द्रभान जी, प० ईश्वरसिह तूफान, प० सहदेव जी बेधडक, पं० रामनिवास जी की भजन मण्डलियो के शिक्षाप्रद भजन हुए। समय-समय पर गु०कु० की छात्राओ का भाषण व भजनो का प्रेरणादायक कार्यक्रम भी रहा। इस उत्सव पर लोगो ने दिल खोलकर दान दिया। मुख्यदानी महानुभाव सरदार किशनसिह जी रशीदो निवासी ने १० एकड यानी ३० लाख की जमीन दान दी चौ० मित्रसैन आर्य खाण्डा निवासी ने एक कमरा बनाने की घोषणा की, श्रीकर्मसिहनैन ने ११००० रुपये, एम डी गोल्डन लि टि ड ने १०००० रुपये, बीडिओ साहब ने १०००० रुपये अपने कोटे से तथा पाच-पाच हजार २० पचायतो से दिलवाने की घोषणा की। अतिरिक्त डी० सी० साहब ने भी तीन चार लाख रुपये से बनने वाली कुडा-कर्कट से बिजली की स्कीम स्वीकार की। गुरुकुल के प्रधान श्री जोगीराम जी एडवोकेट ने आनेवाले मुख्य अतिथियो का पुष्प मालाओ द्वारा अभिनन्दन एव धन्यवाद किया। श्री दिलबागसिंह शास्त्री एव वैद्य दयाकिशन जी ने भोजन व्यवस्था को बडे उत्तम ढग से सम्भाला। इस बार उत्सव मे हजारो की सख्या मे नर-नारियो ने प्रचार मे भाग लिया।

आचार्या कु० डा० दर्शना
कन्या गुरुकुल खरल

राजस्थान मे धूम्रपान पर रोक लगेगी !

जयपुर, १९ फरवरी (वार्ता)। राजस्थान सरकार ने सार्वजनिक स्थानो पर धूम्रपान पर प्रतिबन्ध लगाने का निर्णय लिया है।

प्रारम्भ मे कुछ चुनींदा स्थान जैसे राजकीय कार्यालयो, अस्पतालो, औषधालयो, शैक्षिक संस्थाओ, सभा कक्षो एव वातानुकूलित बसों मे धूम्रपान पर प्रतिबन्ध लागू किया जाएगा। राज्य के पर्यावरण विभाग द्वारा १७ फरवरी को जारी किये गये आदेशानुसार यह प्रतिबन्ध अगले महीने लागू होगा तथा इसका दृढता से पालन किया जाएगा।

वैदिक आश्रम गूगोढ़ (रोहतक) का वार्षिक-महोत्सव

फाल्गुन सुदी चतुर्दशी संवत् २०४९ तदानुसार ७ मार्च १९९३ रविवार को पूज्यपाद श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज आचार्य गुरुकुल झज्जर की अध्यक्षता में अति समारोह पूर्वक धूमधाम से मनाया जायेगा। मुख्य अतिथि श्री सरबनसिंह, आई ए एस उपायुक्त, जिला रिवाडी होंगे।

आचार्य विजयपाल जी गुरुकुल झज्जर की अध्यक्षता में आठ बजे से दस बजे तक दिन मे महायज्ञ का आयोजन भी होगा जिसमें यज्ञोपवीत आदि भी दिये जायेगे।

स्वामी व्रतानन्द सरस्वती

कानपुर मे विधर्मी-पत्रकार, वकील, अध्यापिका इन्जीनियर ने वैदिक धर्म ग्रहण किया

कानपुर– आर्यसमाज मन्दिर गोविन्द नगर मे समाज के प्रधान व आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य के प्रयत्नो से चार शिक्षित विधर्मियो ने वैदिक धर्म को ग्रहण किया। शुद्ध होने वालो मे तीन युवतियां है जिनके विवाह भी हिन्दू युवको के साथ कराये गये।

३० वर्षीय मुस्लिम पत्रकार (अब्दुलरहीम) जो दिल्ली के एक अग्रेजी दैनिक के प्रतिनिधि हैं, ने वदिक धर्म को ग्रहण किया। श्री देवीदास आर्य ने उन्हें दीक्षा देते हुए सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया और उनका नाम अभिषेक आर्य रखा।

इस प्रकार एक अग्रेजी माध्यम स्कूल की २५ वर्षीया ईसाई अध्यापिका कु० सोनिया डेविड को हिन्दू धर्म ग्रहण कराने के बाद उसका नाम सोनियादेवी रखा गया। श्री आर्य नें इस युवती का विवाह श्री राजीव दुबे नामक एक सरकारी अधिकारी से कराया।

इसी प्रकार २४ वर्षीय मुस्लिम वकील युवती कु० जरीना ने वैदिक धर्म को अपनाया तत्पश्चात् उसकी राय से श्री देवीदास आर्य ने श्री विश्वनाथ अवस्थी नामक ब्राह्मण युवक से विवाह कराया। जरीना का नाम जूही रखा गया।

तीसरी युवती २६ वर्षीया इन्जीनियर कु० हसीना ने इस्लाम मत को छोडकर श्री देवीदास आर्य से दीक्षा प्राप्त कर हिन्दू धर्म ग्रहण किया। इसका नाम नेहा रखा गया तथा उसका विवाह अनिलकुमार वर्मा से कराया गया।

मन्त्री आर्यसमाज, गोविन्दनगर कानपुर

ठेके पर धरना जारी

गोहाना—खण्डमडल के गाव जागसी मे पिछले कई दिनो से भाकियू और पचायत की ओर से शराब के ठेके के सामने धरना जारी है। धरने पर दोनो पचायतो के सरपच भी बैठे हैं।

लोगो का कहना है कि जब तक यहा से शराब का ठेका पूरी तरह नही उठा लिया जाता, धरना जारी रहेगा।

आचार्यकुल कन्या–महाविद्यालय का द्वात्रिंशत्तम वार्षिकोत्सव

सब आर्य सज्जनो को आचार्यकुल लोवा कलां के ३२वें सालाना जलसे पर सादर आमन्त्रित किया जाता है। उत्सव १३, १४ मार्च ९३ ई० शनि तथा रविवार को बडी धूमधाम से मनाया जावेगा। उत्सव में बडे-बडे विद्वान् सन्यासी, महात्मा तथा भजनीक पधारेंगे।

शान्ति आचार्या

(पृष्ठ तीन का शेष)

बेरला, कादमा, खानक, रतेरा, जमालपुर तथा बलयाली आदि मे शराबबन्दी सम्मेलनों का आयोजन किया। इन ग्रामों मे सभा के अधिकारियो तथा श्रीहीरानन्द आर्य, श्री बलबीरसिंहग्रेवाल पूर्वविधायक आदि ने ग्रामीण जनता को सम्बोधित किया तथा जिला भिवानी में शराब के ठेकों की नीलामी के अवसर पर सामूहिक रूप से प्रदर्शन करके जहररूपी शराब के ठेको की नीलामी रुकवाने हेतु संघर्ष करने का आह्वान किया। इन ग्रामों में सभा की भजन मंडलियां श्री जयपालसिंह, श्री हरध्यानसिंह तथा श्री खेमसिंह ने भी शराबबन्दी प्रचार किया।

केदारसिंह आर्य

भिवानी मे शराब विरोधी आंदोलन शुरू

चरखीदादरी—शराब विरोधी आंदोलन भिवानी जिले मे भी शुरू होगया है। इस आदोलन का केन्द्र दादरी उपमडल का सबसे बडा गाव भोझू बन गया है। यह ऐसा गाव है जहा से कई बार किसान आदोलन शुरू होकर पूरे प्रदेश मे फैले हैं। नजदीकी गाव आदमपुर-डाढी के श्री बालानाथ योगाश्रम के तत्त्वावधान में बने आर्यवीर दल के स्वयंसेवक व स्थानीय कार्यकर्त्ताओं ने यह आंदोलन शुरू किया है।

गत दिनों आर्यवीर दल के गाव झोझूकलां में शराब विरोधी प्रदर्शन किया जिसमें युवकों के अलावा बडी सख्या मे महिलाओ ने भी भाग लिया। महिलायें उस समय बहुत उत्तेजित होगई जब उनका जुलूस शराब के ठेके के पास पहुचा। बाद मे महिलाओं व युवकों को एक बुढ़ा ने सम्बोधित किया जिसके पति व इकलौते बेटे की शराब से मृत्यु हो चुकी है। (दैनिक ट्रिब्यून)

थाना प्रबन्धक, फिरोजपुर झिरका ने आर्यसमाज मन्दिर में जूते समेत घुसकर धार्मिक भावनाओं को भड़काया

दिनाक ११-२-१९९३ को साय ८ बजे श्री भानीराम मगला अध्यक्ष आर्य वेदप्रचार मण्डल, श्री सुभाषचन्द सरपच नगीना आदि के साथ नूह, नगीना, पिनगवा, पुन्हाना से समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति आर्यसमाज मन्दिर आर्यसमाज रोड फिरोजपुर झिरका जिला गुडगाव मे ठहरे हुए थे तो अचानक थाना प्रबन्धक फिरोजपुर झिरका कुछ सिपाहियो के साथ आर्यसमाज मन्दिर मे हवनकुण्ड एव सकर स्थल पर चढ आया व वहा बैठे हुए समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियो को गाली गलौच करने लगा व कहा कि तुम मन्दिर मे बैठकर धार्मिक चर्चा या सत्सग नही कर सकते। मैं तुम्हारे खिलाफ कार्यवाही करूगा व बेइज्जती करके समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियो को मन्दिर से बाहर निकाल दिया व धमकी देने लगा कि तुम पर झूठा मुकदमा बनाकर तुमको परेशान करूगा। जबकि थाना प्रबन्धक पर उस समय मन्दिर मे आने के लिए किसी भी मजिस्ट्रेट का आदेश नही था ना ही मन्दिर मे आने का कारण प्रबन्धक समिति को ही पहले सूचित किया गया। जिसकी चर्चा पूरे इलाके के आम व्यक्तियो मे है तथा सभी ने थाना प्रबन्धक के व्यवहार की निन्दा की है।

दिनाक १४-२-९३ को करीबन साय साढे चार बजे आर्यसमाज मन्दिर फिरोजपुर झिरका मे ही नूह, नगीना, पिनगवा, पुन्हाना कस्बो के प्रतिष्ठित व्यक्ति शहर के कुछ व्यक्तियो से विचार-विमर्श के लिए यहा आये हुए थे तो कुछ ही देर बाद थाना प्रबन्धक के आदेश से पुलिस के चार सिपाही मन्दिर मे घुस गये तथा हमारे कस्बो के प्रतिष्ठित व्यक्तियो को जबरदस्ती पकड कर थाने मे ले जाया गया तथा उनकी थाने मे लाकर बेइज्जती की गई। नाक रगडवाई तथा जबरजस्ती लाठिया मारी व दबाव देकर थाना प्रबन्धक ने उनसे अनुचित लिखित कार्यवाही भी ले ली। थाना प्रबन्धक के इस व्यवहार से आम जनता मे बहुत रोष है। इस घटना की घोर निन्दा करते हुए आर्यसमाज के नेताओ ने हरयाणा सरकार से सम्बन्धित थाना प्रबन्धक फिरोजपुर झिरका को व सबधित पुलिस कर्मियो के खिलाफ भारतीय दण्ड सहिता १९६ आई० पी० सी०, ३४२,३६५,५०६,५०९,१२० बी०, ३५,३४,२९५ ए० आई० पी० सी० के तहत सख्त से सख्त कानूनी कार्यवाही करते हुए थानेदार को निलम्बित की माग की है। अन्यथा आर्यसमाज को सत्याग्रह व धरना के लिए मजबूर होना पडेगा।

सतेन्द्रप्रकाश सत्यम्
मन्त्री आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात गुडगाव

रुकिये!

शराब के सेवन से परिवार की बर्बादी होती है। अत. शराब के ठेको की नीलामी पर पूरी शक्ति से विरोध प्रदर्शन करें।

आर्यसमाजों के वार्षिक उत्सव तथा शराबबन्दी सम्मेलन

आर्यसमाज	गढ़ी बोहर, जि० रोहतक	३ मार्च
"	नारनौल, जि० रेवाड़ी	५, ६ "
"	भाण्डवा, जि० भिवानी	६ "
"	लीखी, जि० फरीदाबाद	७, ८ "
"	मन्धार, जि० यमुनानगर	८, ९ "
"	राजलूगढ़ी, जि० सोनीपत	८ से १४ "
"	आहूलाना त० गोहाना, जि० सोनीपत	१२ से १४ "
"	मुरादपुर टेकना, जि० रोहतक	१३, १४ "
"	गुरुकुल लोवाकलां, जि० रोहतक	१३, १४ "
"	गोहाना मण्डी, जि० सोनीपत	१९ से २१ "
"	बदरपुर, जि० करनाल	१९ से २१ "
"	घोडो, जि० फरीदाबाद	२१, २२ "
"	सोहना, जि० गुड़गाव	२६ से २८ "
"	गुरुकुल कुम्भा खेडा, जि० हिसार	२६ से २८ "
"	ठोल, जि० कुरुक्षेत्र	२६ से २८ "
"	घरोण्डा, जि० करनाल	२ से ४ अप्रैल
"	गुरुकुल कुरुक्षेत्र	२ से ४ "
"	नारग (हिमाचल प्रदेश)	९ से १२ "
"	श्रद्धानन्द नगर पलवल, जि० फरीदाबाद	९ से ११ "
"	सोनीपत शहर	१६ से १८ "

सुदर्शनदेव आचार्य वेद प्रचाराधिष्ठाता

'शराब की बिक्री करने पर पंचायतो को प्रोत्साहन,

कुरुक्षेत्र, २१ फरवरी। हरयाणा देश मे पहला प्रदेश है जहां शराब की बिक्री करने पर पचायतो को प्रोत्साहन दिया जाता है। सरकार ने जनहित की अपेक्षा करके जो नई आबकारी नीति घोषित की है उससे सामाजिक प्रदूषण बढ़ेगा। आज सरकार को राजस्व इकट्ठा न होने से अपने फेल होने की तो चिन्ता है लेकिन शराब के कारण जिन लोगों के घर और परिवार फेल हो रहे हैं उसको कोई चिन्ता नही। पूरे प्रदेश मे लोग लगभग २००० हजार करोड की शराब पी जाते है। लोग शराब से दुखी हो चुके हैं और यही कारण है कि आज पूरे हरयाणा मे १०० से अधिक ठेको के आगे धरने चल रहे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान तथा पूर्व केन्द्रीय मन्त्री प्रो० शेरसिंह ने स्थानीय यात्री निवास मे एक पत्रकार सम्मेलन मे यह विचार प्रकट किये।

शराब नीति के बारे मे उन्होने आरोप लगाया कि सभी राजनीतिक दल दोगली नीति अपना रहे हैं। जिस राजनीतिक दल की जिस प्रदेश मे सरकार है वहा पर तो मद्य निषेध नही करते लेकिन वे दूसरो के प्रदेशो मे इसका बावेला मचाते हैं। शराबबन्दी अब एक राष्ट्रीय प्रश्न मच बन चुका है। सविधान से हमे जीने का अधिकार मिला हुआ है लेकिन सरकार जगह-जगह शराब के ठेके खोलकर इस अधिकार को छीन रही है। प्रो० शेरसिह ने जानकारी दी कि १९५६ मे लोकसभा में प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हुआ था कि सारे देश मे मद्य निषेध लागू किया जाए तथा लोकसभा ने योजना आयोग को हिदायत दी थी कि तीसरी पंचवर्षीय योजना में ये प्रावधान रखा जाए कि प्रदेशो के शराब से होनेवाली आमदनी का ५० प्रतिशत केन्द्र पूरा करे। यह प्रस्ताव आज भी कायम है। मैंने इस बारे में देश के उच्चतम न्यायालय मे एक याचिका डाली हुई है जिसमे भारत सरकार सहित २३ सरकारों को नोटिस जारी हो चुके हैं। उच्चतम न्यायालय ने इस बात को स्वीकार किया है कि शराबबन्दी एक राष्ट्रीय प्रश्न है। आज पूरे देश मे ४०,००० करोड रु की वैध शराब लोग पी जाते हैं और जिससे लगभग १०,००० करोड रुपए की आमदनी सरकार को होती है। आज सरकार सेना के जवानो को शराबपर सबसिडी दे रही है। देश मे ४८,००० करोडरु० की सबसिडी लोगो को दी जाती है जिसमे से खाद पर केवल ४०० करोड रुपए की सबसिडी है शेष सबसिडी मोटे-मोटे सरमायेदार हड़प रहे हैं। यदि सरकार यह सबसिडी खत्म कर दे तो शराब से होनेवाली आमदनी के घाटे को पूरा किया जा सकता है। (दैनिक हिन्दुस्तान)

हरयाणा के सरपंचों के नाम पत्र

दिनांक २४-२-९३

शराब की लत, मौत की खत

शराब सब पापों व अनाचार की जननी है।

शराब से बुद्धि का नाश होता है।

आदरणीय सरपच जी,

नमस्ते।

आशा है परमात्मा की कृपा से आप सब सकुशल होंगे। इससे पहले सभा कार्यालय से आपको अलग-अलग अवसरों पर तीन पत्र लिखे गये हैं जिनमें बताया गया था कि आपके गांव में खुले शराब के ठेके को बन्द करने बारे क्या-क्या कदम उठाये जाने चाहिए। इस सबके के बावजूद ३१-३-९३ के बाद भी सरकार द्वारा आपके यहा शराब के ठेके को चालू रखा जाने का निर्णय लिया गया है। सरकार का यह निर्णय एकदम जन-कल्याण विरोधी है। कौन नहीं जानता कि शराब ने अनेक परिवारों को बर्बाद करके रख दिया है और इस कारण वे आज दर-दर की ठोकरे खा रहे हैं। आज यह भयानक बीमारी प्राय सभी घरो मे पहुच चुकी है और हमारी बहन-बेटियो की इज्जत खतरे में है। शराब के लगातार बढ़ते सेवन से आम आदमी शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक व नैतिक तौर से टूट चुका है। यदि ऐसी खतरनाक घडी मे भी हम चुप बैठे रहे तो हमारी आनेवाली सन्तानो का सर्वनाश हो जायेगा।

कई पचायते सरकार द्वारा उन्हे एक रुपया प्रति बोतल दिये जाने के अनैतिक लालच में फसकर अपने यहा शराब (जहर) के अड्डे को खोलने की अनुमति दे देती दी है। क्या उन्हें नही पता कि शराब पीने के कारण उनके गाव से हर वर्ष कई लाख रुपये शराब के ठेकेदार व सरकार को झोलो मे चले जाते हैं और लोग गरीब से और अधिक गरीब होते जाते हैं ? अब तो शराब से हो रहे सर्वनाश के कारण "करो या मरो" की स्थिति पैदा हो गई है। अगले साल के लिए ठेको की नीलामी मार्च मास मे होने जा रही है। वास्तव मे ठेकों की यह नीलामी हमारे मान, सम्मान की नीलामी है। आपके जिलों के ठेको की नीलामी की तिथि व स्थान प्रथम पृष्ठ पर छापा गया है। अत अनुरोध है कि अपने ही लोगो की भलाई के लिए आप सैकड़ों नर, नारियों एव युवको को ट्रैक्टरों आदि मे बिठाकर ढोल बजाते व शराब के विरुद्ध नारे लगाते हुए नीलामी वाले दिन निश्चित स्थान पर प्रात: ९-३० बजे तक पहुंचकर, अपने गाव मे अगले वर्ष के लिए शराब के ठेके को किसी कीमत पर भी नीलाम न होने दे। अब किये गये इस प्रयत्न से आप सबका कल्याण होगा। इस मौके पर आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता भी आपके साथ रहेगे।

भवदीय

(विजयकुमार)

आई०ए०एस० रिटायर्ड

हरयाणा शराबबन्दी समिति दयानन्दमठ, रोहतक

छपते-छपते

सभा के अन्तरंग सदस्य श्री विश्वबन्धु के अनुसार ठोल जिला कुरुक्षेत्र में भी शराब के ठेके पर धरना आरम्भ हो गया है।

सर्वहितकारी के ग्राहक महानुभावों को सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सभा के प्रस्तावानुसार सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क ३०) के स्थान पर ४०) अप्रैल ९३ से निश्चित किया गया है। परन्तु जो ग्राहक महानुभाव ३१ मार्च ९३ तक अपना शुल्क ३०) अगाऊ रूप में भेज देंगे, उन्हें सर्वहितकारी यथापूर्व भेजा जावेगा। अत इस सुविधा से नये तथा पुराने ग्राहक महानुभाव लाभ उठावें।

व्यवस्थापक सर्वहितकारी साप्ताहिक

दयानन्द मठ, रोहतक, हरयाणा

युग पुरुष—महर्षि दयानन्द सरस्वती

लेखक—डा शान्तिस्वरूप शर्मा, पत्रकार, कुरुक्षेत्र

बात कोई १० वर्ष पुरानी है। आठ वर्ष के बालक के यज्ञोपवीत संस्कार का पावन अवसर था। हवन-यज्ञ के पश्चात् इस अवसर पर एकत्र हुए लोगों ने बालक को यशस्वी, धर्मात्मा व विद्वान् होने की आशीष दी। इस बालक ने उस आशीर्वाद को सत्य सिद्ध किया। बालक का नाम मूलशकर था, जो बाद मे स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम से जन-जन के हृदय मे आसीन हो गया। जब मूलशंकर १४ वर्ष का हुआ उसने गुजरात के टकारा कस्बा के शिव मन्दिर में एक चूहे को शिव-शास्त्री की रात को छलांगें लगाता हुआ देख उसके मन में शका पैदा हो गई। यह शिव भगवान् नही हैं जो अपनी रक्षा एक चूहे से भी नहीं कर पा रहा। उसने अपने चाचा और अपनी बहन को मरते देख वह उलझन में पड गये कि यह क्या हुआ है। वह आठ वर्षों तक उलझन में पडा रहा। बाप ने विवाह की बात की, उसने ना कर दी।

नवयुवक मूलशंकर ने २२ वर्ष की आयु मे सत्य की खोज के लिए घर का त्याग किया। मूलशकर १५ वर्षों तक सच्चे योगियों व गुरुओ की खोज मे लगा रहा। विभिन्न नगरों व हिमालय के पर्वतों मे वर्षों तक ज्ञान की खोज जारी रखी। अनेक सकट सहे लेकिन उद्देश्य की पूर्ति के लिए किये गये दृढ निश्चय से पीछे नही हटा। उसने सन्यास लेने का निश्चय किया। नवयुवक की सच्ची लग्न की जीत हुई और उसे स्वामी पूर्णानन्द द्वारा सन्यास लेने की अनुमति प्राप्त हुई और नवयुवक मूलशंकर स्वामी दयानन्द बन गया।

ज्ञान की खोज जारी थी। सन् १८६० के लगभग स्वामी जी स्वामी विरजानन्द जी की शरण मे पहुचे। स्वामी विरजानन्द जी मथुरा मे रहते थे। स्वामी विरजानन्द उनकी विद्वत्ता से प्रभावित हुए और उन्होने स्वामी जी को शिक्षा देने का निर्णय लिया। स्वामी जी ने तीन वर्ष तक गृह सेवा व कडी तपस्या की। यहा तीन वर्ष उनके लिए स्वर्णिम काल बन गया। ज्ञान की प्राप्ति हुई। फिर गुरुदक्षिणा का प्रश्न आया। स्वामी जी ने गुरुदक्षिणा के रूप मे लौग प्रस्तुत की। लेकिन गुरुजी कुछ और सोच रहे थे। वे बोल उठे, "बेटा, ससार वेदो के ज्ञान को भूलकर अन्धविश्वासो और वेदविरुद्ध रीति रिवाज मे फस कर ठोकरे खा रहा है। मैं तुमसे यही चाहता हू कि वेदो के सूर्य से अज्ञान और पाखण्ड के अन्धेरे को दूर कर दे। स्वामी जी ने गुरु जी को उनकी आज्ञा पालन का आश्वासन दिया। आज्ञा पालन का व्रत लेकर स्वामी जी ने अपना वास्तविक जीवन प्रारम्भ किया।

स्वामी जी ने एक चतुर सर्जन की तरह देश की अज्ञानता का आप्रेशन किया। भूले भटके लोगो ने गालियो की बौछार की। उन्हे कितनी ही बार विष दिया गया लेकिन स्वामी जी अपने पावन पथ पर अडिग रहे। उन्होने कहा था, "तुम मुझे पत्थर दो, मैं तुम्हें फूल दूगा। तुम मुझे विष दो मैं तुम्हे जीवन दूगा।" स्वामी जी ने सारे देश का भ्रमण किया। बडे-बडे पण्डितों, मौलवियों, पादरियो से टक्कर ली, सिद्ध करके ही छोडा कि वेद ही सच्चा ज्ञान है।

ससार के इतिहास मे स्वामी जी पहले महापुरुष थे जिन्होने राजनैतिक, सामाजिक व धार्मिक क्षेत्रो में बराबर कार्य किया और प्रत्येक क्षेत्र मे क्रान्ति पैदा की। अग्रेजो ने जर्मनी के संस्कृत भाषा के विद्वान् प्रो मैक्समूलर के द्वारा वेदो का गलत सरलार्थ करवाया। लेकिन स्वामी जी की ऋग्वेदभाष्यभूमिका और दूसरे ग्रन्थों को पढकर प्रो मैक्समूलर को अपनी गलती का भान हुआ। उसे अपनी गलती स्वीकार करने पर बाध्य होना पडा।

सामाजिक क्षेत्र मे उन्होंने अछूतो को मान्यता का दर्जा दिलाने, स्त्री शिक्षा, बाल विवाह बन्द कराने, विधवा विवाह कराने, हिन्दी को भारत को मातृभाषा बनाने और स्वदेशी के प्रचार जैसे महान् कार्यों को सफल बनाने के लिए उन्हे १४ बार विष पीना पडा।

राजनैतिक क्षेत्र में स्वामी जी ने कांग्रेस के जन्म से दस वर्ष पूर्व ही 'स्वदेशी राज्य विदेशी राज्य से श्रेष्ठ है, का प्रचार अपने भाषणो लेखनी के माध्यम से किया। उन्होंने देश मे देशभक्ति की भावना को जगाया और चरित्रनिर्माण पर बल दिया। उनका 'सत्यार्थप्रकाश' प्रकाशपुज है जिसके द्वारा उन्होंने जनमानस को जगाया।

सन् १८८३ मे स्वामी जी अग्रेजों की साजिश का शिकार होगये। उन्हे एक बार फिर विष दिया गया। उपचार हेतु उन्हे कैलोनेल दिया गया। उनकी हालत बिगडती गई। उन्हे उपचार हेतु माउण्ट आबू भेजा गया। फिर उन्हें अजमेर भेजना पडा। उनका सारा शरीर विष से फट गया। ३० अक्तूबर को दीपावली के दिन स्वामी जी ने साढे पाच बजे अपना शरीर त्याग दिया। लेकिन उन्होंने ज्ञान का जो दीप जलाया था वह सदा ही प्रज्वलित रहेगा। २० वर्ष के थोडे से समय में उन्होंने अद्भुत कार्य कर दिखाया। उस समय के गवर्नर जनरल ने लडन मे सैक्रेटरी को पत्र लिखकर सूचित किया था कि भारत मे इस समय एक लगोटबन्द सन्यासी महर्षि दयानन्द सरस्वती का भय हो सकता है जो पक्का देशभक्त है और जिसकी वाणी में जादू का असर है। ऐसे थे स्वामी जी अग्रेजों को भी उनका लोहा मानना पडा। ऐसे युगपुरुष के सामने हम सबका सिर झुका रहेगा।

ऋषि-ऋण

रचयिता—आर्य पुत्र, राजहस "आजाद", कालावाली

ऋण-ऋषिवर का चुकाना है हमे।
आर्यत्व फिर से जगाना है हमे॥
हो हवन सन्ध्या घरों मे नियम से।
पाच यज्ञो को निभाना है हमे॥
परोपकारो कर्म के सकल्प हो।
गृहस्थ को ऊचा उठाना है हमे॥
जीव की रक्षा गऊ पालन करे।
दूध का सागर बहाना है हमे॥
विश्व परिवार बन करके जिए।
सन्देश दयानन्द का सुनाना है हमे॥
'हस' गुरुवर के उपकार जितने।
भूल से भी नही भुलाना है हमें॥
ऋण ऋषिवर का चुकाना है हमे॥

शराब हटाओ,
देश बचाओ

शराबबन्दी आन्दोलन [illegible]

ओमप्रकाश आर्य वैदिक प्रचारक आवल

आज जब कि हरयाणा में एक तरफ तो आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा शराबबन्दी आन्दोलन चला रही है यह एक श्रेष्ठ तथा महान् कार्य है पर मुझे यह देखकर बहुत हैरानी होती है कि ये आन्दोलन आरंभ ही क्यों करना पड़ा ? स्वतन्त्रता प्राप्ति से पहले हम शराब की दुकानों के आगे धरने देते थे, हमारे नेतागण कहा करते थे कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत में शराब नहीं बिकेगी, पर आज इससे होने वाली आय को बहुत बड़ा माना जाता है। अर्थात् हमारी सरकार जनता के लोभ मे शराबबन्दी नहीं करना चाहती, इसके साथ-साथ नशेवाली गोलियां व दूसरे नशीले पदार्थों की बिक्री दिन प्रतिदिन बढ़ रही है, और हमारी युवा पीढ़ी इस ओर बड़ी तेजी के साथ भाग रही है। आज आवश्यकता इस बात की है कि युवा पीढ़ी को इस तबाही की ओर जाने से कैसे बचाया जा सके ? मैं समझता हू, कि युवकों को इस ओर जाने से युवक ही रोक सकते हैं। पर आर्यसमाज मे युवक आ नहीं रहे, युवकों को आर्यसमाज मे लाना ही होगा। और बूढा दल कुर्सियों पर फेवीकोल के पक्के जोड के साथ चिपटा हुआ है। फिर युवक आर्यसमाज मे आये तो कैसे। युवको मे वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिए और उन्हें वैदिक विचारधारा मे ढालने के लिए उनका एक शक्तिशाली सगठन बनाया जाए। जसा कि आज के युग मे सभी राजनीतिक तथा धार्मिक सस्थाओ ने अपने युवक दल बनाए हुए हैं। यदि हम युवको को इस भाति आर्यसमाजो मे लाने मे सफल हो गये, तो वह स्वय ही इस शराब बन्दी आन्दोलन मे कूदकर हरयाणा या भारत सरकार तो क्या, भगवान् को भी शराबबन्दी करने पर विवश कर देंगे।

जिला हिसार, सिरसा मे शराबबन्दी प्रचार कार्य

श्री सिहराम प्रधान सर्वोदय मण्डल जिला हिसार एव श्री रामस्वरूप स्वतन्त्रता सेनानी जि० सिरसा ने गत दिनो मौन रखने के पश्चात् ग्राम नाथूसरी चोपटा, कागदाना, बाहरवाला, भट्टू कला, सदलपुर, दडौली, बालसमन्द, सिवानी तथा नलोई आदि ग्रामो में सद्भावना यात्रा के समय नशाबन्दी आदि का रचनात्मक प्रचार किया। उन्होंने महर्षि दयानन्द के बताये हुए मार्ग पर चलते हुए नशो से दूर रहने का सन्देश दिया।

सर्वहितकारी के स्वामित्व आदि का विवरण

फार्म ४ (नियम ८ देखिए)

१ प्रकाशन स्थान	—दयानन्दमठ, रोहतक
२ प्रकाशन अवधि	—साप्ताहिक
३ मुद्रक का नाम	—वेदव्रत शास्त्री
क्या भारत का नागरिक है ?	—है
पता	—दयानन्दमठ, रोहतक
४ प्रकाशक का नाम	—वेदव्रत शास्त्री
क्या भारत का नागरिक है ?	—है
पता	—दयानन्दमठ, रोहतक
५ सम्पादक का नाम	—वेदव्रत शास्त्री
क्या भारत का नागरिक है ?	—है
पता	—दयानन्दमठ, रोहतक
६ उन व्यक्तियो के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हो।	—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धांती भवन दयानन्दमठ, रोहतक

मैं वेदव्रत शास्त्री एतद् द्वारा घोषित करता हू कि मेरी अधिकतम जानकारी एव विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक के हस्ताक्षर
वेदव्रत शास्त्री

धूम्रपान करनेवाले सावधान

लंदन, १७ फरवरी : यदि आप धूम्रपान करते हैं तो सम्भवतः आप [illegible] को अधिक न भोग सकें। यह निष्कर्ष ४० वर्ष के गहन अध्ययन के बाद निकाला गया।

सिगरेट पीनेवाले ब्रिटेन के ३४,४४० पुरुष डाक्टरों पर निगरानी रखी गई और उनके बारे में [illegible] रहा। विशेषज्ञों ने अपने निष्कर्ष [illegible] करते हुए बताया कि धूम्रपान करनेवाले व्यक्तियों के ७० वर्ष की आयु से पहले ही मरने की आशंका ज्यादा होती है।

पहले इस तरह के अनेक अध्ययन [illegible] हैं। [illegible] यह धारणा रही है कि धूम्रपान करनेवाले व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों के मुकाबले दो गुनी संख्या में [illegible] मृत्यु को प्राप्त होते हैं लेकिन [illegible] पर [illegible] इस अध्ययन ने धूम्रपान करनेवाले लोगों को और बड़ा [illegible] है।

धूम्रपान और फेफड़े के कैंसर में सम्बन्ध स्थापित करनेवाले सर रिचर्ड डाल का कहना है कि अब हालत पहले से ज्यादा खराब है।

सर डाल इम्पीरियल कैंसर रिसर्च सेंटर (आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी) में विशेषज्ञ भी हैं। उन्होंने बताया कि धूम्रपान करनेवालों और इससे परहेज रखनेवालों में औसत आयु का अन्तर इसलिए भी बढ़ा है क्योंकि धूम्रपान न करनेवालो की औसत उम्र पहले के मुकाबले २० वर्ष बढी है, जबकि दूसरी तरफ धूम्रपान करने वालों की औसत उम्र पहले से भी कम हो गई है।

धूम्रपान न करनेवाले लोगो के हृदय सम्बन्धी बीमारियों से मरने मे भी ३० प्रतिशत की कमी आई है, जबकि धूम्रपान करनेवालों के मरने मे इससे कोई कमी नही आई है।

गत सोमवार को ब्रिटेन के प्रतिष्ठित विज्ञान सगठन रायल सोसायटी मे आयोजित गोष्ठी मे डा डाल ने कहा कि धूम्रपान करनेवालो पर आधुनिक चिकित्सा प्रणाली भी कम कारगर साबित होती है।

लम्बे अध्ययन के बाद तैयार की गई इस रिपोर्ट मे कहा गया है कि अध्ययन मे शामिल ऐसे डाक्टरो की सख्या अधिक है, जिन्होंने कम उम्र में ही धूम्रपान शुरू कर दिया।

इस अध्ययन कार्य से जुडे एक विशेषज्ञ ने बताया कि जिन डाक्टरो को इसके लिए चुना गया था, उनमें से ६६८ की मृत्यु पिछले २० वर्ष में हो चुकी है। उन्होंने कहा कि अध्ययन के अनुसार ४४ से ७० वर्ष आयु वर्ग में मृत्यु का वार्षिक औसत १६८ प्रतिशत रहा, जबकि धूम्रपान से परहेज रखनेवालों मे यह प्रतिशत मात्र ० ५७ रहा। इसके अलावा ५५ से ६४ वर्ष की आयु वर्ग मे मरनेवालो का प्रतिशत २२५ (धूम्रपान करनेवाले) और ० ७७ (धूम्रपान न करनेवाले) रहा।

अध्ययन के लिए केवल डाक्टरों को ही चुना गया क्योंकि उन्हें मालूम होता है कि अध्ययन के लिए स्वास्थ्य सम्बन्धी क्या-क्या जानकारी उन्हें बराबर देते रहनी हैं।

महर्षि दयानन्द स्टेडियम मकडौली कलां मे राज्य स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता सम्पन्न

दिनाक १४ फरवरी ९३ को रोहतक जिले के ग्राम मकडौली कला मे महर्षि दयानन्द स्टेडियम में राज्य स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। खेल आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री सत्यव्रत शास्त्री ने प्रत्येक जिले से आई टीमो का स्वागत किया तथा उनके आवास एव भोजन का प्रबन्ध आर्यसमाज मन्दिर मे किया। खेलो का उद्घाटन ग्राम के सरपच एव चैयरमैन श्री धर्मपालसिंह ने किया। उन्होंने ग्रामवालों से ग्राम मे पूर्ण शराबबन्दी लागू करने की अपील करते हुए कहा कि जो भी व्यक्ति शराब बेचता तथा पिलाता हुआ पाया गया तो उस पर पचायत की ओर से जुर्माना किया जावेगा। सरपच के चचेरे भाई श्री राजबीरसिंह ने २२०० रुपए नकद महर्षि दयानन्द स्टेडियम के लिए तथा ११०० रु०नकद आर्यसमाज मदिर मकडौली कला हेतु दान दिया।

अन्त में फाइनल मेंच जिला रोहतक और हरयाणा पुलिस के बीच हुआ, जिसमे हरयाणा पुलिस केवल मात्र दो नबरों से विजयी रही।

—सत्यवान आर्य, मकडौली कला (रोहतक)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजी० नं० २३२०७/७३   पंजी० नं० P/RTK-४१   दूरभाष ७६, ७४, ७७७

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २०   अंक १५   १४ मार्च, १९९३   वार्षिक शुल्क ३०)   (आजीवन शुल्क ३०१)   विदेश में ८ पौंड   एक प्रति ७५ पैसे

रेवाड़ी, गुड़गांव, फरीदाबाद, पानीपत तथा करनाल में आर्यसमाज तथा शराबबन्दी किसान यूनियन कार्यकर्ताओं द्वारा

शराब के ठेकों की नीलामी पर विरोधप्रदर्शन आयोजित

(निज सवाददाता द्वारा)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यक्रम के अनुसार २ मार्च ९३ को रेवाडी मे जिला महेन्द्रगढ (नारनौल) तथा रेवाडी के शराब के ठेको की नीलामी के अवसर पर आर्यसमाज तथा शराबबन्दी किसान यूनियन के कार्यकर्त्ताओ द्वारा विरोधप्रदर्शन किया गया। इससे पूर्व हरयाणा शराबबन्दी समिति के संयोजक श्री विजयकुमार जी ने रेवाडी क्षेत्र का तूफानी भ्रमण करके आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओ से सम्पर्क करके पूरी शक्ति के साथ प्रदर्शन करने की प्रेरणा की। सभा के उपदेशक प० मातूराम शर्मा प्रभाकर एक सप्ताह पूर्व जिला रेवाडी तथा महेन्द्रगढ के आर्यसमाजों मे घूम-घूमकर तैयारी कर रहे थे। सभा के पुरोहित २ मार्च को तयारी के लिए आर्यसमाज मन्दिर रेवाडी पहुंच गये थे।

३ मार्च को आर्यसमाज रेवाडी, नारनौल, महेन्द्रगढ, कनीना, खेडकी, बीकानेर, धनोदा, माजरा शौकाज पाल्हावास शराबबन्दी, समाज सुधार समिति पाल्हावास के कार्यकर्त्ता तथा ए० यू० सी० आई० के अतिरिक्त अखिल भारतीय महिला परिषद् रेवाडी शाखा के सदस्यो ने शराबबन्दी के "शराब हटाओ, देश बचाओ" शराब के "ठेको की नीलामी बन्द करो, बाप शराब पीता है, बच्चे भूखे मरते हैं, जो सरकार शराब पिलाये वह सरकार निकम्मी है" आदि के नारे बाजारो मे लगाते हुए आबकारी एव कराधान कार्यालय पहुच गए। नीलामी पुलिस की भारी सख्या मे की जा रही थी। पुलिस ने जलूस को रोक दिया। वहा उपस्थित प्रदर्शनकारियों को सम्बोधित करते हुए आर्यसमाज रेवाडी के नेता श्री ओमप्रकाश ग्रोवर ने कहा कि एक ओर तो सरकार शराब के विरोध मे गोष्ठिया आदि आयोजित करती है और शराब की बोतलो मे "शराब एक जहर है' अकित करवाती है और दूसरी ओर ग्राम-ग्राम मे शराब की नदिया बहाकर दोगली नीति अपनाकर जनता को मूर्ख बनाया जा रहा है। सरकार को शराब की बिक्री से आमदनी खूब बढ रही है, परन्तु लाखो शराब से बर्बाद होते रहे हैं, सरकार को इसका चिन्ता नही है।

श्री ग्रोवर ने जिला प्रशासन से ठेको की नीलामी न करने व ठेकेदारो से शराब रूपी जहर बेचने के ठेके न लेने की अपील करते हुए कहा कि शराब से बर्बाद होकर अब जनता मे जागृति आ रही है अत शराब के ठेको को ग्रामों मे नही चलाने दिया जावेगा। सभी जगह धरणे आदि देने की तैयारी की जा रही है। श्री वेदप्रकाश विद्रोही ने कहा कि हरयाणा राज्य कृषिप्रधान राज्य है। सरकार को चाहिए कि वह पैदावार बढाने के लिए बिजली, पानी का पूरा प्रबन्ध करे, परन्तु सरकार इसका आवश्यक कार्य का तो प्रबन्ध नही कर रही, परन्तु शराब की दुकाने ग्राम-ग्राम मे खुलवाकर किसान विरोधी कार्य कर रही है। सभा के उपदेशक प० मातूराम शर्मा प्रभाकर ने भी इस अवसर पर सभा द्वारा चलाई जा रही शराबबन्दी गतिविधियो की जानकारी देते हुए जनता से तन, मन तथा धन देने का अनुरोध किया।

सभा की ओर से जिला उपायुक्त रेवाडी को पूर्ण शराबबन्दी लागू करने के लिए ज्ञापन दिया गया तथा शराबविरोधी जयकारे किये गये। इस पर आर्यसमाज के नेताओ को पुलिस ने हिरासत मे लेकर थानो मे बन्द कर दिया। हिरासत मे लेनेवालो मे श्री ओमप्रकाश ग्रोवर, श्री वेदप्रकाश विद्रोही, सभा के उपदेशक प० मातूराम प्रभाकर प० रणवीर आर्य पुरोहित, श्री रामकुमार शर्मा मन्त्री आर्यसमाज रेवाडी, श्री सुखराम आर्य, श्री नरेश चौहान श्री बलवीरसिंह शर्मा महेन्द्रगढ तथा स्थानीय महिला परिषद् की सदस्या श्रीमती तारा सक्सेना आदि प्रमुख हैं। श्रीमती सक्सेना ने भी एक वक्तव्य मे कहा है कि महिलाये शराबबन्दी सत्याग्रह मे भाग लेगी क्योंकि स्त्रियो पर पुरुषों द्वारा होनेवाले अत्याचारो एव प्रताडना के पीछे शराब ही है। हिरासत में रखे गये सभी सत्याग्रहियो को थानो से साय ४ बजे तब रिहा किया गया जब पुलिस के साये में शराब के ठेको की नीलामी का कार्य पूरा होगया। रिहा होने पर पुन सत्याग्रही नारे लगाते हुए आर्यसमाज मन्दिर पहुचे तथा शांति पाठ के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

शराबबंदी के विरोध मे खरींडवा मे धरना

शाहाबाद मारकडा, २ फरवरी (जनसत्ता)। शराबबंदी अभियान ने शाहाबाद क्षेत्र को भी अपनी गिरफ्त मे ले लिया है। निकटवर्ती गाव खरींडवा को महिला, पुरुषो ने ठेके के निकट शिविर लगाकर धरना दिया। इसके लिए एक शराबबन्दी अभियान समिति का गठन भी किया है।

समिति के अध्यक्ष नरसिंह ने बताया कि सबसे पहले समिति के लोगो ने ही शिवमन्दिर मे बैठकर शपथ ली है कि वे शराब का सेवन नही करेगे। उन्होने कहा कि जो कदम हमने बढाया है, वह पीछे नहीं हटेगा।

उधर ठेकेदार ने बताया कि १८ फरवरी से एक बूद भी शराब नही बिकी है, जिससे पाच हजार रुपए दैनिक को बिक्री प्रभावित हुई है। उन्होंने सरकार से लायसेंस फीस माफ करने की मांग की है।

रुकिये !

शराब के सेवन से परिवार की बर्बादी होती है। अत. शराब के ठेको की नीलामी पर पूरी शक्ति से विरोध प्रदर्शन करें।

राष्ट्रीय सुरक्षा का प्रश्न——धर्मनिर्पेक्षता

वतन की आबरू खतरे में है ?

ले०-सुखदेव शास्त्री महोपदेशक,
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

—गताङ्क से आगे—

इसी प्रकार महर्षि कणाद अपने वैशेषिक दर्शन मे धर्म का लक्षण करते हुए करते हुए कहते हैं—यतोऽभ्युदयनि श्रेयससिद्धि स धम अर्थात् जिन पवित्र कर्मों से इस लोक मे उन्नति हो और परलोक मे मुक्ति प्राप्त हो वह धम कहलाता है। यह धर्म प्रतिष्ठा की कितनी विस्तृत एवं सुन्दर व्याख्या है।

धम को सुख का कारण बताते हुए आचार्य चाणक्य अपने कौटिल्यार्थशास्त्र मे लिखते हैं—"सुखस्य मूल धर्म" अर्थात् सुख का मूल धर्म है, और "धर्मस्य मूल अर्थ" अर्थात् धर्म का मूल अर्थ (धन) है और 'अर्थस्य मूल राज्यम्" अर्थ का मूल राज्य है। "राजस्य मूल इन्द्रियजय" अर्थात् राज्य का मूल इन्द्रिय जय है। इस प्रकार आचार्य ने धर्म को सर्वप्रथम स्थान दिया है। सर्वप्रथम मनु महाराज ने मानव संविधान मनुस्मृति मे "राजधर्म" कहकर धर्म को राज के साथ जोड़ा है, धम—राजनीति से कभी भी पृथक नही किया जा सकता।

यदि धर्म को राजनीति से अलग कर दिया जाय तो वहा बहुत ही अनर्थ हो जाता है। मनुष्य जीवन का लक्ष्य ही धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को प्राप्त करना है। धर्म का त्याग करने से जो हानि होती है उसका वणन मनु महाराज ने यो किया है "धर्म एव हतो हन्ति धर्मोरक्षति रक्षित" अर्थात् मारा धर्म मार देता है, और रक्षा किया धर्म रक्षा करता है। अत धर्म को रक्षार्थ लोगो ने बडे बडे बलिदान दिये हैं। क्या राष्ट्र रक्षा करना धम नही है? क्या सत्य बोलना धर्म नहीं है? यदि है तो फिर धर्म का धमनिर्पेक्ष कहकर राष्ट्र का सवनाश क्यो किया जा रहा है।

हमारे देश के सत्ताधारी अथवा सत्ता के निकट रहनेवाले राजनीतिक पार्टियो के नेताओ को यह मत, मजहब, जाति, सम्प्रदाय और धर्म के बोच के अन्तर को भलीभाति समझ लेना चाहिए। इसके न समझने के कारण ही यहा निरन्तर "धर्मनिर्पेक्षता" की रट लगाई जाती है और उसी के अनुसार यहा की शासन-पद्धति का भी निर्धारण किया गया है जो कि देश के लिए बडा हानिकारक सिद्ध हुआ है। इसी धर्मनिर्पेक्षता की आड मे बहुसख्यक और अल्पसख्यक मे भेदभाव और तुष्टीकरण की नीति अपनाई गई है जिसके परिणामस्वरूप मुस्लिम पृथक्तावाद को बढावा मिला है। इसी धमनिर्पेक्षता के कारण ही साम्प्रदायिक दगे होते हैं। साम्प्रदायिक सद्भाव नही होने पाता।

मत व मजहब किसी एक व्यक्ति के द्वारा चलाया जाता है उसमे कुछ अच्छी बातो का भी समावेश होता है, बाकी बहुत सी बाते उनकी स्वार्थपूर्ण, भ्रमपूर्ण ही होती हैं। पृथक्तावाद को जन्म देती हैं।

आदिसृष्टि मे परमात्मा ने वेद का ज्ञान मनुष्यो के लिए दिया। जो अत्यन्त पवित्र है। सत्य की कसौटी पर कसने से उसमे किसी भी प्रकार की कमी दिखाई नही देती। उस ज्ञान को न्याय की तुला पर रखकर तोला जा सकता है। अरबो वर्षो तक उस वैदिक धर्म को ससार के लोगो अपने जीवन मे धारण करके अपना महान् कल्याण किया है। तो धर्म तो वैदिक धर्म है, शेष तो मतमतान्तर हैं। मतमतान्तरों के आग्रह से रहित ही राज्य होना चाहिए। मतनिर्पेक्षराज्य हो न कि धर्मनिर्पेक्षराज्य। इसलिए बुद्धधर्म नही बुद्धमत है। इस्लाम धर्म नही, इस्लाम मत है। ईसाई धर्म नही, ईसाई मत है। जैन धर्म नही, जैन मत ही कहना चाहिए। इन मतो से आग्रह रहित ही राज्य होना चाहिए वैदिक धर्म ही राष्ट्र धर्म होना चाहिए। ये मतमतान्तर देश मे शान्ति से रहे। इनसे कोई हानि की सभावना नही होनी चाहिए। साम्प्रदायिक सद्भाव बनाये रखना चाहिए। राष्ट्र की एकता, अखण्डता मे सहयोग देना चाहिए। किन्तु आज इस धर्मनिर्पेक्षा की आड मे क्या कुछ नही हो रहा?

धर्मनिर्पेक्षता का मुसलमानों द्वारा विरोध—

भारत में रहनेवाला मुसलमान अपने को धर्मनिरपेक्ष नहीं मानता। वह भारतीय धर्मनिर्पेक्षता का घोर विरोधी है। इस्लाम जब भारतीयता का शत्रु है तब धर्मनिरपेक्षता का तो प्रश्न ही नहीं है।

इसलिए भारतीय मुसलमानो की आस्था व निष्ठा भारतीय सविधान के प्रति नही है। अभी पिछले दिनो ही हैदराबाद मे देश के सभी राजनीतिक दलो के मुसलमानो ने एक सभा का आयोजन किया। उसमे "इत्तेहादमुसलमीन" के अध्यक्ष 'अल-हज सुल्तान सलाउद्दीन उवैसी ने अपने भाषण में भारतीय सविधान और उसकी धर्मनिर्पेक्षता का कड़ा विरोध किया और कहा कि धर्मनिर्पेक्षता का ढोग व आतक हम मुसलमानों पर क्यो? हम इसका कडा विरोध करते हैं। इसी प्रकार पश्चिम बगाल विधान सभा के उपाध्यक्ष जो अपने आपको वामपथी और मुस्लिम एक साथ ही कहते हैं जनाब कलीमुद्दीन शम्स ने इस सविधान का खूब मजाक उडाया, उन्होने कहा कि "इस भारतीय संविधान से मुसलमानो का कोई सम्बन्ध नही है और न गणतन्त्र २६ जनवरी से ही हमारा कोई सम्बन्ध है। इस सविधान को जलाकर २६ जनवरी के दिन ही राष्ट्रपति को भेंट कर दो, ताकि भारत सरकार मुस्लिमो और उनकी राष्ट्रीयता के स्वरूप को जान सके" (पाचजन्य २४ १ ८२) इस २६ जनवरी को भी तो अब्दुल्ला बुखारी के पुत्र नायब इमाम अहमद बुखारी के नेतृत्व मे २६ जनवरी का बहिष्कार करते हुए काले झण्डो से दिल्ली मे जलूस निकाला और राष्ट्रपति को एक ज्ञापन भी दिया। इसी बुखारी ने एक आदम सेना का भी सगठन किया है जो इस तथाकथित धमनिर्पेक्ष देश मे मुसलमानो की रक्षा कर सके। जामामस्जिद की नमाज के अवसर पर भी उत्तेजनात्मक भाषण दिया।

इस हैदराबाद मे हुई 'आल इण्डिया मुस्लिम काफ्रेन्स मे जनाब उवैसी—मुसलमानो को सलाह देते हैं कि—मुसलमानो को इतना सगठित होना चाहिए कि सरकार उनके सामने हर माग पूरी करने मे बाध्य हो जाए। हम सभी को सशस्त्र होना आवश्यक है। बिना शस्त्र उठाए बाते नही मनवाई जा सकती। क्योकि जब तक वियतनाम और फिलीस्तीनी बिना हथियारो के थे और मरने से डरते थे तब तक उनकी कोई नही सुनता था, किन्तु ज्यो ही उन्होने हथियार उठा लिये—अमेरिका को भी मात दे दी और यासर अराफात दुनिया मे पूजने लगे।

भारत को धर्मशाला समझकर विदेशी राष्ट्रीयता धारक मुस्लिम समाज जब इस देश के विरुद्ध ही हथियार उठाने को सगठित हो रहा है—तब वह अपने को भारतीय कहा मानता है? वियतनाम ने तो विदेशी अमेरिका के विरुद्ध हथियार उठाए और फिलस्तीन ने विदेशी इजरायल के विरुद्ध उठाए, तो ये मुस्लिम भारत मे ही किसके विरुद्ध हथियार उठाने जा रहे हैं? क्या धर्मनिर्पेक्ष भारत के विरुद्ध? यह देश के साथ गद्दारी नहीं तो क्या है? ऐसे अभारतीय-अराष्ट्रीय तत्त्वों से राष्ट्रीयता को खतरा है। बस, वतन की आबरू खतरे मे है।

यदि देश को आगामी भीषण रक्तपात से बचाना है तो देश के सभी नागरिको को एक समान आचार-सहिता मे समान रूप से पिरोना होगा। सभी को एक राष्ट्रीय सविधान एव एक ही राष्ट्रध्वज को सम्मान के साथ फहराना है। धर्मनिर्पेक्षता को त्यागकर धर्मसापेक्ष को अपनाकर मत मजहब निर्पेक्ष राष्ट्र बनाना होगा। धर्मनिर्पेक्षता राष्ट्र के लिए घातक सिद्ध हुई है। धर्म के ही सही अर्थों को समझकर धर्म मजहबो के साथ न जोडकर सवधर्म समभाव का झूठा—थोथा नारा छोडकर धर्मात्मा राष्ट्र को आगे बढाना होगा।

(क्रमश)

करनाल में भारतीय किसान यूनियन के सहयोग से भव्य प्रदर्शन

पानीपत के प्रदर्शन के पश्चात् उसी दिन ६ मार्च को हरयाणा शराबबन्दी समिति के सयोजक विजयकुमार सभा के कार्यकर्त्ताओं के साथ करनाल को कालीदास रगशाला के पास पहुचे। वहा आर्यसमाज गोन्दर के आर्यवीर दल के स्वयसेवक तथा कायकर्त्ता भी पहुचे हुए थे। ठेकों की नीलामी स्थान के परिवर्तन करने से अनेक सत्याग्रही वापिस अपने ग्राम में चले जाने पर विवश हो गये थे। उसी दिन के दनिक समाचार-पत्रों मे छपा था कि भारतीय किसान यूनियन के नेताओं ने शराबबन्दी के कार्य मे सहयोग न देने का निश्चय किया है। परन्तु ग्रामो के किसान इस निश्चय से सहमत नही थे। अत इस पर पुनविचार हेतु किसान यूनियन के कार्यकर्त्ताओ, जिनमे महिलाये भी सम्मिलित की थी। एक बैठक उसी दिन स्थानीय रोड धर्मशाला मे सम्पन्न हुई। इस बैठक मे चौ० विजयकुमार जी तथा सभा उपदेशक श्री अतरसिह क्रातिकारी आर्य ने सम्मिलित होकर किसान नेताओ को प्रेरित करते हुए शराबबन्दो आन्दोलन मे पूर्ववत् सहयोग देने की अपोल की और कहा कि शराब के सेवन से किसान वग अपेक्षाकृत अधिक हानि उठा रहा है। ग्रामो मे बहन बेटियो तथा शरीफ व्यक्तियो की इज्जत खतरे मे है। महिलाओ ने भी इसका समर्थन किया है और अन्त मे भारतीय किसान यूनियन के नेताओ ने शराबबन्दी सत्याग्रह मे बढ-चढकर भाग लेने का निश्चय किया।

इसके बाद सभी किसान कार्यकर्त्ता अपने नेताओ के साथ नीलामी स्थल पर शराबबन्दी के नारे "जो सरकार शराब पिलावे वह सरकार निकम्मी है, जो हमसे टकराएगा चकनाचूर हो जावेगा" शराब के ठेके बन्द करो आदि नारे लगाते हुए सभा के कार्यकर्त्ताओं के साथ सम्मिलित हो गये। पुलिस ने नीलामी स्थान के दूर हो प्रदर्शनकारियो का घेरा डालते हुए सडक के दोनो ओर पुलिस की बसे खडी करके भारी सख्या मे पुलिस को तैनात कर दिया। परन्तु प्रदर्शनकारियो ने वही सडक पर धरना दे दिया और हरयाणा सरकार की शराब की नीति के विरोध मे गगन–भेदी नारे लगाये। धरना शराबबन्दी सम्मेलन मे बदल गया। भारतीय किसान यूनियन के नेता श्री करतारसिह मान श्री चन्दासिह सरदार जगदीशसिह, हरयाणा शराबबन्दी समिति के सयोजक श्री विजयकुमार, सभा उपदेशक श्री अतरसिह आर्य क्रातिकारी, सभा भजनोपदेशक श्री जयपाल, श्री नन्दलाल तथा महिला नेता श्रीमतो किसनोदेवी आदि ने उपस्थित सत्याग्रहियो तथा पुलिस कर्मचारियो को सम्बोधित करते हुए शराब की बुराइयो से बचने का परामर्श दिया।

उसी समय ३० के लगभग किसानो ने भविष्य मे शराब का सेवन न करने की प्रतिज्ञा की तथा औरो से भी शराब छुटवाने का निश्चय किया। शराबबन्दी प्रदर्शनकारियो मे सर्वश्री साधुराम आर्य जनपुर जाटान, मामचन्द आर्य (पाढा) वानप्रस्थी फतेहसिंह (करमोड) श्री बारूराम (बडथल) सेवाराम (सगरोली) नवयुवक बालकिशन (बामनलहडी) स्वामी विश्वानन्द, मागूराम (मुठ) आर्यसमाज गोन्दर के प्रधान बारूराम आर्य, मन्त्री जगदीशचन्द्र, हिमतसिह, श्री सुरेन्द्रसिह, प्रधान युवा विकास समिति गोन्द, ग्राम बडोता से एक ट्रैक्टर मे श्रीमती किसनीदेवी, लिछमीदेवी, भतेरीदेवी, फूलवती, भगवानी, हरदेवी, विद्या, पतोरी, मोहतो, सन्तोष, सावित्री, सुनीता, कान्ति, भरतो, ज्ञानो, माया, धनपति, सुखदेवी, छन्नों, लीलावती, चन्द्रो प्रेमो, परमे, मूर्ति, सावित्री, चन्द्रो आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

श्री विजयकुमार जी तथा किसान यूनियन के नेताओ ने स्थानीय उपमण्डल अधिकारी (नागरिक) द्वारा हरयाण के मुख्यमन्त्री को एक ज्ञापन दिया जिसमे लिखा गया है कि जनता के कल्याण हेतु १ अप्रेल, १९९३ से हरयाणा राज्य मे शराब की सब दुकानो तथा कारखानो को बन्द करते हुए पूर्ण शराबबन्दी लागू की जावे। ऐसा करने से ही महर्षि दयानन्द सरस्वती व राष्ट्रपिता महात्मागाधी के स्वप्न साकार होगे। पूर्ण शराबबन्दी लागू किये जाने से ही जन साधारण का कल्याण सम्भव है।

यदि सरकार द्वारा ग्राम पचायतो द्वारा सर्वसम्मति से किये गये शराबबन्दी के प्रस्तावो की अवहेलना करते हुए पुलिस के साये मे जबरदस्ती ठेको की नोलामी कर भी दी गई तो शराब के कारखानों तथा ठेको पर धरने आदि देकर शराब की बिक्री नही होने दी जावेगी। अत सरकार को चाहिए कि शराबबन्दो की लहर को दृष्टि मे रखते हुए विधानसभा के चल रहे सत्र से शराब जैसी सामाजिक भयानक बुराई एवं अभिशाप से मुक्ति दिलाने के लिए शराबबन्दी का बिल पास करवाये। शराबबन्दी लागू होने पर ऋषि-मुनियों की हरयाणा भूमि का कल्याण हो सकता है।

जिला कैथल मे शराब ठेकों की नीलामी पर भारी विरोध प्रदर्शन

दिनाक ९-३-९३ को जिला कैथल में ठेको की नीलामी पर भारी विरोध प्रदर्शन हुआ। प्रात से ही गाव से ट्रैक्टर मे बैठकर नर-नारी स्थानीय जवाहर पार्क मे एकत्रित होने आरम्भ हो गए थे। सभा उपदेशक श्री अतरसिह आर्य क्रान्तिकारी भी हिसार से प्रात 8 बजे कैथल पहुँच गए थे। दोनों के आर्यसमाज मे जाकर अधिकारियो से सम्पर्क किया। तत्पश्चात् पार्क में आ गए। पार्क से हजारो लोग जलूस बनाकर हिसार चण्डीगढ रोड पर चलकर नीलामी स्थल पर पहुचे। वहा श्री कुन्दनराम प्रधान भारतीय किसान यूनियन कैथल की अध्यक्षता मे विरोध सभा हुई। वहा चार घण्टे तक भूखे प्यासे लोग धूप मे जमे रहे और रोड जाम कर दिया। बाद मे अधिकारियो के बहुत कहने पर ही सडक खाली की। लोगो मे काफी जोश था। अनेक गावों से ट्रैक्टर लेकर लगभग ५-६ हजार लोग इकट्ठे हुए जिसमे सैकडो से ज्यादा महिलाए थी।

ज्ञातव्य है कि ५-११-९३ मे गाव क्योडक मे ठेके पर धरना दिया गया जिसकी लहर सारे कैथल जिला के अतिरिक्त जि० कुरुक्षेत्र, करनाल, पानीपत व जींद मे भी आग की तरह फैल गई। लोग घाघरी, जूतो की माला तथा एक गधी लेकर ठेको के सामने धरने पर बैठ गए और इसमे सफल हुए। ग्राम क्योडक से सरपच श्री सुरेन्द्रसिह, बाबा-बसन्तगिरी, प्रधान श्री सतारबसिह आर्य, श्री तेजराम बोका तथा श्री हुकमचन्द आर्य के नेतृत्व मे ३० ट्रैक्टर प्रदर्शन मे आए। ग्राम भागला से २० ट्रैक्टर आये। उपरोक्त दोनो गावो से महिलाए भी काफी सख्या मे आई। सरपच श्री भूपेन्द्र के नेतृत्व मे ग्राम हरसोला से १० ट्रैक्टर सरपच श्रीराम आर्य के नेतृत्व मे ग्राम कोलोखा व ढडवा से भी लोग आए। ग्राम पबनावा से महिलाए ट्रैक्टर मे बैठकर आई। ग्राम नन्दकरण माजरा, ग्राम न्यानादोष, ग्राम सोगल, ग्राम साकरा, ग्राम खुराना, ग्राम पाईन्लिढाना, आर्यसमाज करनाल रोड कैथल के प्रधान श्री रामजीदास आर्य, महाशय हरिराम और महर्षि दयानन्द आश्रम अम्बाला रोड कैथल आदि पधारे।

इस अवसर पर बाबा बसन्तगिरी, सरपच सुरेन्द्रसिह, सेठ राजकुमार आर्य (क्योडक) सभा उपदेशक श्री अतरसिह आर्य क्रान्तिकारी, सभा मन्त्री चौ० सूबेसिह जी, श्री पूर्णसिह उपप्रधान किसान यूनियन, अखिल भारतीय नशा मुक्ति परिषद् एव सभा अध्यक्ष प्रो० शेरसिह, स्वामी इन्द्रवेश आदि ने विचार रखे। महिला वर्ग की ओर से श्रीमती परवारो देवी, विद्यादेवी ने भी विचार रखे। श्री कृष्णकुमार व लालसिह ने शराबबन्दी पर भजन रखे। उपरोक्त सभी वक्ताओ ने शराब से होने वाले नुकसान से लोगों को अवगत कराया। शराब को सब पापो की जड बताया। सरकार एव ठेकेदारो को चेतावनी दी कि देहात मे एक भी ठेका नही चलने देगे। अत नीलामी बन्द करो। आर्यसमाज का निश्चय है शराब रहेगी या हम रहेगे। सरकार की शराब बढावा नीति की कटु आलोचना की गई। प्रो० साहब ने देश विदेश के आकडे देकर शराब से होने वाली बर्बादी का नक्शा खीचा। जोश के साथ शराबबन्दी नारे लगाए गए। शराब के ठेके बन्द करो, शराब पीना छोड दो, बाप शराब पीता है, बच्चे भूखे मरते हैं। शराब पिलाए जो सरकार वह सरकार निकम्मी है, जो सरकार निकम्मी है, वह सरकार बदलनी है। पुलिस भी अपना मोर्चा लगाए खडी थी। प्रदर्शन का नजारा अद्भुत था। ठेको की नीलामी २ बजे आरम्भ हुई। १५ आदमियो का शिष्ट मण्डल उपायुक्त महोदय को ज्ञापन देने गया। जिसमें मुख्य रूप से सभा प्रधान प्रो० शेरसिह, सभा मन्त्री चौ० सूबेसिह जी, सभा उपदेशक श्री अतरसिह जी आर्य क्रान्तिकारी, स्वामी इन्द्रवेश जी किसान नेता पूर्णसिह, सरपच सुरेन्द्रसिह, बाबा बसन्तगिरी तथा दो महिलाए श्रीमती परवारी देवी, विद्यादेवी थी। जिलाधोश ने बताया कि ८ ठेके बन्द कर दिए है जिनके प्रस्ताव थे। वैसे सरकार ने ३१७ ठेको को बन्द करने के लिए प्रस्ताव स्वीकार कर लिए हैं। अन्त मे प्रो० साहब ने लोगो का धन्यवाद किया तथा शराबबन्दी अभियान को और तेजी से चलाए रखने की अपील भी की।

जिला हिसार में शराब के ठेकों की नीलामी के विरोध में किये गये प्रदर्शन की एक झलक

दिनांक १०-३-९३ को स्थानीय क्रान्तिमान पार्क मे प्रात. ६ बजे से ठेकों की नीलामी का विरोध करने के लिए लोग इकट्ठे होने आरम्भ हो गए। छोड़ो शराब हटाओ देश बचाओ, शराब के ठेके बन्द करो, आदि नारे लगाते हुए ट्रैक्टर एव फोरव्हीलर आदि लेकर शराबबन्दी बैनर तथा ओ३म् के झण्डे लिए हुएं आने लगे। सर्व प्रथम आचार्य दयानन्द शास्त्री के साथ ४० नवयुवक छात्र दयानन्द ब्राह्मविद्यालय हिसार, मा० आजादसिह एव मुनीजो के साथ गुरुकुल आर्यनगर के छात्र, स्वामो सर्वदानन्द जी के नेतृत्व मे गुरुकुल धीरणवास के छात्र व अध्यापक श्रीमती विमला देवो के साथ स्त्री आर्यसमाज हिसार, श्री अतरसिह आर्य के नेतृत्व मे नलवा, बालावास क बारी के नर-नारो फोरव्हीलर लेकर नारे लगाते हुए पहुचे। श्रीमती लज्जावन्ती आर्या बालावास, श्रीमती सुनहरी आर्या (आर्य निवास नलवा) महिलाओ का नेतृत्व कर रही थी। महात्मा राममुनि जी के नेतृत्व मे ग्राम न्याणा से एक फोरव्हीलर मे लोग आये जिनमे माताओ की सख्या ज्यादा थो। महिलाएं घाघरी पहनाकर बुत साथ लाई थी। ठेकेदारो को चेतावनी दे रही थी कि अगर गाव मे ठेके लिए तो तुम्हे घाघरी पहरायेगे। श्री बदलुराम आर्य प्रधान आर्यसमाज मुकलान के नेतृत्व मे काफो नवयुवक आए। सर्वोदय मण्डल भगत रामेश्वरदास जी चौ० रामस्वरूप जी पधारे। सुबेदार हरचन्द आर्य बालावास, सुबेदार रामेश्वरदास जी आर्य कवारी, सग्राम आर्य (दडोली) श्री सावतराम आर्य पूर्व सरपच (बरान), श्री बलवन्तसिह (सिसरखरबना) पहलवान कर्णसिह आर्य नवयुवको के साथ ग्राम खोखा से ब्र० रामफल आर्य धिराय ईश्वरसिह आर्य गगनखेडी दिवानसिह आर्य व रामजीलाल आर्य बालसमन्द से श्री जयसिह जी योगी व सेठ बन्सोधर आर्य (हिसार) से श्री जगमाल आर्य फतेहचन्द कालोनी हिसार महेन्द्रसिह आर्य (डोभी) श्री प्रताप शास्त्री (मतलौडा) डा० बारूसिह व महात्मा हरिदेव (उमरा) स्वामी अग्निदेव भीष्म (हिसार) स्वामी कीर्तिदेव (हासी) नवयुवक राज्यपाल आर्य ग्राम कुम्भा से अपनी फोरव्हीलर लेकर परिवार सहित आए। श्री दलीपसिह नम्बरदार ग्राम लाडवा से अपने साथियो सहित पधारे। श्री मानसिह ढाढा स्वतन्त्रता सेनानी (हिसार) आदि अनेक नर नारी प्रदर्शन में पधारे। उपरोक्त सभी गाव मे सभा उपदेशक श्री अतरसिह आर्य क्रान्तिकारी जी ने हो पत्र द्वारा या कही स्वय जाकर प्रदर्शन मे आने हेतु जनसम्पर्क किया था।

दिन के ११ बजे पार्क से नारे लगाते हुए जलूस के रूप मे आर्य विद्वानो के नेतृत्व मे नर-नारियो का काफिला नीलामी स्थल पर (पचायत भवन मे) पहुचा। वहा त्यागमूर्ति स्वन्त्रता सेनानी की अध्यक्षता मे एक सभा हुई। जिसमे क्रान्तिकारी स्वामी अग्निदेव भीष्म, सभा प्रधान प्रो० शेरसिह जी, सभा मन्त्री चौ० सूबेसिह जी, स्वामी इन्द्रवेश जी, स्वामी सर्वदानन्द जी, स्वामी मूर्तिदेव जी, वानप्रस्थी, राममुनि जी, डा० बारूसिह जी, का० पृथ्वीसिह गोरखपुरिया, चौ० हीरानन्द आर्य पूर्व वित्तमन्त्री, श्री जयसिह जो योगी, श्री राजपाल आर्य, ढाढा साहब, श्रीमती लज्जावन्ती आर्या आदि ने विचार रखे। सभी वक्ताओ ने सरकार की शराब बढावा नीति की कटु आलोचना की। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा चलाये जा रहे शराबबन्दी कार्यक्रम की रूपरेखा रखी गई। अनेक जिलों कैथल, जीन्द, भिवानी, कुरुक्षेत्र, पानीपत व करनाल, हिसार के अनेक गावों मे ठेको पर चल रहे धरनों की जानकारी दी। आर्य नेताओ ने साफ शब्दों मे चेतावनी दी कि आप पुलिस मदद से ठेको की नीलामी तो बन्द कमरो मे बैठकर कर लोगे लेकिन गावो मे एक भी ठेका नहीं चलने देंगे। अत नीलामी बन्द करो। आर्यसमाज की प्रेरणा से सारे हरयाणा मे शराबबन्दी लहर चल पडी है। किसान यूनियन भी पूरा सहयोग कर रही है। आर्य नेताओ ने उपायुक्त महोदय को ज्ञापन दिया। किसान यूनियन ने अपना अलग से ज्ञापन दिया। महिलाओ ने सरकार के खिलाफ स्यापा भी किया। प्रदर्शन का नजारा देखते ही बनता था। मच का सचालन प्रभावशाली ढग से क्रान्तिकारी जी ने किया।

पानीपत में शराब के ठेकों के खिलाफ विशाल प्रदर्शन

पानीपत ६ मार्च। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (हरयाणा शराबबन्दी अभियान समिति) के आह्वान पर, शराब के ठेको की नीलामी के विरुद्ध एक प्रदर्शन, आर्यसमाज, किसान यूनियन, हरिजन सेवक सघ, अ० भा० रचनात्मक समाज, किसान कांग्रेस, पानीपत नागरिक मच व भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सयुक्त तत्वावधान में निकाला गया, जिसमे सैकडो की संख्या में छात्रो, युवको, नर-नारियों ने भाग लिया। प्रदर्शन भगतसिह स्मारक से प्रारम्भ होकर आर्यसमाज माडल टाउन से होता हुआ जिला आबकारी कार्यालय पर पहुचा जहाँ वह एक जनसभा मे परिवर्तित हो गया। प्रदर्शन का नेतृत्व आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री देवराज डाबर, हरयाणा हरिजन सेवक के प्रधान श्री दोपचन्द निर्मोही, रचनात्मक समाज के मन्त्री राममोहन राय, जिला नशाबन्दी परिषद् के सयोजक श्री महेन्द्रसिह, पानीपत नागरिक मंच के प्रधान श्री महेशदत्त शर्मा, किसान कांग्रेस के श्री जोगेन्द्र राठी तथा भारतीय कम्युनिष्ट पार्टी के नेता कामरेड रघुबीरसिह एव स्वामी धर्मानन्द जी संयुक्त रूप से कर रहे थे।

ठेको की नीलामी स्थल पर, जनसभा को सम्बोधित करते हुए नेताओ ने अपने विचार रखते हुए एक मत से हरयाणा मे पूर्ण शराबबन्दी की माग की। उन्होने कहा कि पूरा प्रदेश, शराबबन्दी आन्दोलन के लिए उठ खडा हुआ है। यदि अब भी सरकार के कान इस शान्तिपूर्ण अहिंसक आदोलनसे न खुले तो आदोलन के किसी भी अप्रियरूप लेने की जिम्मेवारी से सरकार बरी न हो सकेगी। शराबबन्दी के आन्दोलन को जिसे आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा ने नेतृत्व प्रदान किया है उसे सभी राजनीतिक दलो, सम्प्रदायो तथा सामाजिक सगठनो का भरपूर समर्थन मिल रहा है जिसका अद्भुत उदाहरण पानीपत मे प्रदर्शन मे देखने को मिला है।

प्रदर्शन के अन्त मे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिह, मन्त्री श्री सूबेसिह व शराबबन्दी अभियान समिति के संयोजक श्री विजयकुमार के नेतृत्व मे एक प्रतिनिधिमण्डल ने उपायुक्त को मिलकर प्रदेश में पूर्ण नशाबन्दी की माग की।

रोहतक मे शराबन्दी सत्याग्रहियों पर लाठीचार्ज तथा सभा अधिकारियो की गिरफ्तारी

११ मार्च ओ आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा आयोजित शराबबन्दी सत्याग्रहियो पर लाठियां चलाई, अश्रुगैस छोडी तथा अनेको को घायल किया, इनमे सभा के उपमन्त्री डा० सोमबीर जी, गणक श्री ओमप्रकाश शास्त्री, श्री रूपचन्द पूर्व सरपच रुडकी तथा गुरुकुल के ब्रह्मचारी भी सम्मिलित हैं। प्रो० शेरसिंह, श्री सूबेसिह, श्री विजयकुमार, स्वामी इन्द्रवेश आदि सभा अधिकारियो को गिरफ्तार किया गया। रोहतक, कुरुक्षेत्र, भिवानी तथा जीन्द आदि के विस्तृत समाचार आगामी अक मे पढिये। —केदारसिह आर्य

सर्व खापपंचायत २१ मार्च को

नभाटा समाचार सोनीपत १२ मार्च। सोनीपत जिले के सिसाना गाव मे आगामी २१ मार्च को एक सर्वखाप पचायत का आयोजन किया जायेगा। दहिया खाप के प्रधान श्री रामफल दहिया ने सर्वखाप पंचायत आयोजित करने का फैसला पिछले दिनो खरखौदा मे सम्पन्न दहिया खाप की पचायत मे सर्वसम्मति से किया।

श्री दहिया ने बताया कि जून १९६० मे सिसाना गाव मे एक ऐतिहासिक सर्वखाप पचायत हुई थी। उस पचायत मे केवल मात्र ब्याह-शादियों में फिजूलखर्ची पर रोक लगाने के नियम बनाये गये थे। अब सिसाना गाव दूसरी बार सर्वखाप पचायत बुलाकर इतिहास की पुनरावृत्ति कर रहा है। इस सर्वखाप पंचायत में सामाजिक कुरीतियो पर विचार-विमर्श करने उन्हे दूर करने के नियम बनाये जायेंगे ताकि युवा पीढी को समाज मे फैली बुराइयों से बचाया जा सके।

ग्राम क्योडक (कैथल) में शराब के ठेके पर धरने की एक झलक

ग्राम क्योडक जिला कैथल मे सबसे बडा गाँव है जहां लगभग २२ हजार की आबादी है। वहा की पंचायत आर्यसमाज एव ग्राम सुधार सभा ने मिलकर सर्वसम्मति से गाव के लोगों को बर्बादी से बचाने के लिए सर्वसम्मत फैसला करके ५-३-९३ से शराब के ठेके पर धरना दे रखा है। ठेका के ताला लगा हुआ है। गाव के नर नारी काफी सख्या मे लगातार धरने पर बैठे हुए हैं। एक बूद शराब भी नही बिकने देते। एक सप्ताह पहले ठेकेदार ने पुलिस के सहयोग से शराब बेचने का प्रयास किया। अपने दो-चार ग्राहक साथ लाए। लेकिन पुलिस चले जाने के बाद गाव की ग्राम सुधार सभा के मुखिया श्री तेजराम उर्फ बोका ने साफ कह दिया। इस ठेके के कमरे से बाहर मत निकलना पेशाब आदि सब अन्दर ही करना वरना आपको बाद मे रोना व पछताना पडेगा। गाव की जमीन हमारी है। तब तुरन्त ठेकेदार ताला बन्द करके चला गया। साप्ताहिक हवन होता है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी व चौ० विजयकुमार जी सयोजक शराबबन्दी समिति हरयाणा तथा मैं भी धरनो पर दो बार आया हू।

ग्राम क्योडक के लोगो ने ट्रैक्टरो मे बैठकर निकट के गाव प्योग टीक थाना आदि मे जाकर नए धरने चालू करवाए हैं। क्योडक धरने के कारण जिला कैथल व कुरुक्षेत्र मे बहुत तेज शराबबन्दी लहर चल पडी है।

स्थानीय विधायक श्री सुरेन्द्र मैदान जो हरयाणा सरकार में मन्त्री हैं यह ठेका उसके रिस्तेदार अर्जुनदास गुलाटी का है। चुनाव मे यह गाव उनके विरोध मे था। अत सरकार अनदेखी कर रही है। लेकिन लोगों का दृढ निश्चय है। जब तक यह पाप का अड्डा बन्द नही होगा धरना जारी रहेगा। लोग सगठित हैं। अत देर सबेर सरकार व ठेकेदारों को जनसगठन के सामने झुकना ही पडेगा।

धरने पर निम्न नरनारियो का विशेष सहयोग रहा है। श्री तेजराम, नवयुवक समिति श्री सुरेन्द्रसिंह, श्री सतबिसिंह आर्य प्रधान रमेशचन्द्र शास्त्री, हुकमचन्द आर्य, निशानसिह पच, बाबा बसन्तगिरी लिलूराम बरडा, बनवारालाल, रणबीरसिंह, रघुवीरसिंह पच, प्रेमसिंह पच, बुलोराम पच, मागचन्द हरिजन, मेघराज नाई, सीताराम बाल्मीकी, स्वरूपचन्द्, गुप्तनचन्द, मामचन्द, लखपत, श्रीचन्द, रकमा, कानूनसिंह आदि सभी बिरादरी के लोग हैं।

महिला वर्ग को ओक से दादी रमाली देवी के नेतृत्व मे श्रीमती लीलावती, विमला देवी, पनमेश्वरी, अगूरी, चमेली, सरतो सत्यादेवी, शिक्षादेवी चोलीदेवी, विद्यादेवी, स्नेहलता, सन्तरो, कलादेवी, मुन्नी देवी, इन्द्रोदेवी, बबलीदेवी, चम्पादेवी, सुरतादेवी, काकादेवी, बोतोदेवी, कश्मीदेवी, स्वरूपीदेवी आदि महिलाये लगातार धरने पर सहयोग कर रही हैं। इस गाव मे तीन-चार परिवार के लडके शराब पीकर मर चुके हैं। अब गाव मे रामराज्य आ रहा है। यह गांव बधाई का पात्र है। जिसने अपने गाव मे ठेके पर धरना देकर हरयाणा सभा का समर्थन करके निकट के क्षेत्र मे शराबबन्दी लहर चला दी है। आर्य प्रतिनिधि सभा की कई भजन मण्डलिया भी धरने पर जा चुकी हैं।

अतरसिंह आर्य क्रातिकारी
सभा उपदेशक

शराबबन्दी अभियान का समर्थन किया

कैथल, २२ फरवरी। राम सेवा समिति की कैथल जिला इकाई ने जिले मे चलाए जा रहे शराबबन्दी अभियान को अपना पूरा समर्थन देने की घोषणा की है।

समिति ने एलान किया है कि उसके सदस्य गावो में शराब के ठेके बन्द करवाने मे अपना पूरा सहयोग देंगे व ठेके नीलामी के समय ठेकेदारो का घेराव करेंगे। (जनसता)
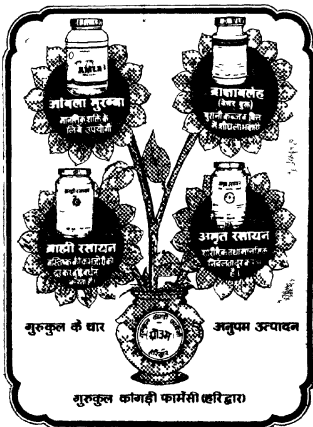
फरीदाबाद में प्रो० शेरसिंह के नेतृत्व में ठेकों की नीलामी पर प्रदर्शन

दिनांक ५ मार्च ९३ को फरीदाबाद के आबकारी एव कराधान कार्यालय पर सभा के प्रधान प्रो० शेरसिहजी के नेतृत्व मे सभा के उपदेशको, भजनोपदेशको, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ तथा गुरुकुल गौतमनगर के अध्यापको, ब्रह्मचारियो के अतिरिक्त स्थानीय आर्यसमाज के एव स्वामी आदित्यवेश तथा उनके साथियो ने २०० के लगभग सत्याग्रहियो ने शराब नीति के विरुद्ध जोरदार प्रदर्शन किया। इससे पूर्व गुरुकुल के ब्रह्मचारियो ने प्रचारवाहन मे ध्वनिविस्तारक द्वारा जी० टी० रोड पर 'शराब के ठेके बन्द करो" "शराब के ठेकेदार देश के गद्दार" "शराब हटाओ देश बचाओ" "आई फौज दयानन्द वाली रास्ता कर दो खाली" आदि के गगनभेदी नारे लगाये। इस अवसर पर सभा के उपप्रधान श्री लछमानदास आर्य, सभा के वकील श्री सुरेश बढा ा आदि भी उपस्थित थे।

सभा प्रधान प्रो० शेरसिह ने जिलाधीश को ज्ञापन लेने के लिए सन्देश भेजा, परन्तु उनके न आने पर सत्याग्रहियो मे रोष फल गया और पूरी शक्ति के साथ सरकार की शराब नीति के विरुद्ध जयघोष करने लग गये और ज्ञापन लेने के लिए उपायुक्त को बुलाने की माग करने लग गये। पुलिस ने रोकने का प्रयास किया परन्तु सभी सत्याग्रही अपनी माग पर अडे रहे। प्रो० शेरसिह ने पुलिस अधिकारियो को कहा कि हम शान्तिपूर्वक तरीके से जिला उपायुक्त को जनता की माग से अवगत कराना चाहते हैं, अत उपायुक्त महोदय को यहा आना ही चाहिए। तनाव का वातावरण देखकर अतिरिक्त उपायुक्त महोदय ने आकर प्रो० साहब को बताया कि उपायुक्त महोदय किसी आवश्यक कार्य पर अपने कार्यालय चले गये हैं, अत आप ज्ञापन मुझे दे देवे। इस पर प्रो० साहब ने ज्ञापन देते हुए पूर्ण शराबबन्दी लागू करने की माग की तथा सत्याग्रहियो ने शराब के विरुद्ध जोर-जोर से नारे लगाये। अतिरिक्त उपायुक्त ने सभी सत्याग्रहियो को हिरासत मे लेने का पुलिस को आदेश दिया। प्रो० साहब ने पूछा कि किस कानून के आधार पर शान्तिपूर्वक सत्याग्रहियो को हिरासत मे ले रहे हो। अतिरिक्त उपायुक्त ने कहा कि आप लोग धारा १४४ को तोड रहे हो। प्रो० शेरसिह ने उन्हे कहा कि धारा १४४ तो शराब के ठेकेदार भी भारी सख्या मे इकट्ठे होकर तोड रहे हैं, इन्हे क्यो नही हिरासत मे लेते। सरकारी अधिकारियों के पास इसका कोई उत्तर नही था। परन्तु पुलिस ने निम्नलिखित सत्याग्रहियो को पुलिस की गाडी मे बैठाकर फरीदाबाद के विभिन्न थानो मे ले जाकर बन्द कर दिया —

१ श्री केदारसिह आर्य सभा कार्यालयाधीक्षक, २ श्री सुखबीरसिह आर्य सरपच एव नेता लोक मजदूर सगठन, ३ श्री सुभाष सेठी हिन्द मजदूर सगठन नेता, ४ श्री नागेशसिह प्रधान हि०म०स० प्रधान, ५ श्री भूपेन्द्रसिह हि०म०स० उपप्रधान, ६ श्री सुभाष तनेजा बल्लबगढ, ७ जेलदार राज्यपालसिह सुनपेड, ८ म० पोहकरदास फरीदाबाद, ९ आचार्य देवव्रत गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, १० श्री जगदीशचन्द छिक्कारा अध्यापक, ११ श्री बलजीतसिह लाम्बा अध्यापक, १२ श्री अरबिन्दकुमार अध्यापक, १३ श्री चन्द्रपाल सिद्धान्तशास्त्री सभा उपदेशक, १४ श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री, १५ श्री भजनलाल आर्य, १६ श्री खेमसिंह आर्य, १७ श्री अमीचन्द आर्य, १८ श्री रणजीत आर्य, १९ श्री रतनसिह आर्य, २० प० मुरारीलाल आर्य, २१ स्वामी देवानन्द भजनोपदेशक, २२ श्री ओमप्रकाश यजुर्वेदी, २३ श्री नत्थूसिह यादव, २४ श्री ओमप्रकाश आर्य व्यायाम शिक्षक आर्यवीरदल, २५ श्री बाबूराम सैनी आर्ययुवक परिषद्, २६ श्री धर्मवीर शास्त्री अध्यापक गुरुकुल गौतमनगर, २७ ब्र० राजकुमार, २८ ब्र० जितेन्द्र, २९ ब्र० सदीप, ३० ब्र० अमित, ३१ ब्र० सियाराम, ३२ ब्र० हेमन्त, ३३ ब्र० विकास, ३४ ब्र० सत्यदेव, ३५ ब्र० राजेन्द्र, ३६ ब्र० सुरेश, ३७ ब्र० विनोद, ३८ ब्र० अनुज, ३९ ब्र० दशरथ, ४० ब्र० बालकिशन, ४१ ब्र० ज्ञानेन्द्र, ४२ ब्र० राकेश, ४३ ब्र० ओमप्रकाश, ४४ ब्र० देवेन्द्र, ४५ ब्र० सुधीर, ४६ ब्र० रवीन्द्र, ४७ ब्र० उदयवीर, ४८ ब्र० श्री ईश्वरसिंह, ४९ श्री सत्यवीरसिह सभा सेवक, (गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जि० फरीदाबाद) ५०. ब्र० अजयकुमार अहलावत, ५१ ब्र० राजेन्द्रकुमार, ५२ ब्र० नरेन्द्रकुमार (खत्री), ब्र० विवेकानन्द सुपुत्र श्री वेदव्रत शास्त्री, ५३ ब्र० धर्मेन्द्र आर्य, ५४ ब्र० रोहितकुमार, ५५ ब्र० दिनेशकुमार, ५६ ब्र० बलराम, ५७ ब्र० सुरेन्द्रकुमार, ५८ ब्र० आनन्द, ५९ ब्र० यशराज, ६० ब्र० वीरेन्द्रकुमार, ६१ ब्र० ओमपाल, ६२ ब्र० श्रवणकुमार, ६३ ब्र० अशोककुमार, ६४ ब्र० भवेशकुमार, ६५ ब्र० सुरेश, ६६ ब्र० शिवशकर, ६७ ब्र० ब्रह्मदेव, ६८ ब्र० जितेन्द्र, ६९ ब्र० सूर्यनाथ चक्रवर्ती, ७० ब्र० लोकेश (भीष्म) ७१ ब्र० दुष्यन्त (दयानन्द) (गुरुकुल गौतमनगर)।

सभा के प्रधान प्रो० शेरसिह जी ने जिला उपायुक्त फरीदाबाद से सम्पर्क करके उनसे पूछा कि शान्तिपूर्ण सत्याग्रहियो को किस कानून के आधार पर बिना वारन्ट थानो मे बन्द किया जा रहा है। अपनी माग प्रस्तुत करने का सभी को पूरा अधिकार है। शराबबन्दी की सर्वहितकारी माग करना किसी प्रकार का अपराध नही बनता। उनकी दलील सुनकर उपायुक्त महोदय ने जिला पुलिस अधीक्षक को सन्देश भेजकर सभी सत्याग्रहियो को रिहा करने का आदेश दिया। प्रो० साहब फरीदाबाद के तीनो थानो सैण्ट्रल थाना १५ सैक्टर थाना, एन आई टी. न० ५ तथा सरायख्वाजा थाना मे गये तथा वहा थानो मे बन्द सभी सत्याग्रहियो मे सम्मिलित हो गए। थानाध्यक्षो को उपायुक्त महोदय ने आदेश की सूचना दी। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के अधिष्ठाता श्री हुकमचन्द राठी भी थाने मे पहुच गये। उपायुक्त महोदय का आदेश मिलने पर थानो मे बन्द सभी सत्याग्रहियो को रिहा कर दिया गया।

आर्यसमाज नारनौल का उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज नारनौल, जिला महेन्द्रगढ का उत्सव ६-७ मार्च को धूमधाम से सम्पन्न हुआ, जिसमे आर्यसमाज के गणमान्य उपदेशक उपस्थित हुए, जिनमे सभा के भजनोपदेशक प० चिरजीलाल जी तथा श्री रामरत्न जी भजनोपदेशक, श्री श्यामसिह जी भजनोपदेशक, श्री कवरपाल जी आदि के राष्ट्र रक्षा सम्मेलन तथा शराबबन्दी के विषय मे प्रभावशाली भजन हुए। इन्ही सम्मेलनो मे श्री सुखदेव शास्त्री महोपदेशक के भाषणो से धूम मच गई। शराबबन्दी के लिए जनता मे बहुत ही उत्साह देखा गया। उत्सव पर श्री जगवीरसिंह एडवोकेट ने भी शराबबन्दी के विषय मे सम्बोधित किया। आर्यसमाज ने सभा के लिए उदारतापूर्वक आर्थिक सहायता दी।

छोटेलाल आर्य प्रधान आर्यसमाज, नारनौल, महेन्द्रगढ

जद (अ) ने भी शराबबन्दी आंदोलन को समर्थन दिया

कुरुक्षेत्र, २ मार्च जनता दल (अ) ने भी हरयाणा मे चल रहे नशा बन्दी आन्दोलन का समर्थन करते हुए हरयाणा मे तुरन्त शराबबन्दी लागू करने की माग की है। यह जानकारी यहा दल के महासचिव महेन्द्रसिह तवर ने दी

उन्होने बताया कि इस बारे मे दल की एक बैठक सोमवार को जींद मे हुई थी। दल ने माग की है कि हरयाणा सरकार शराब के ठेकों के नजदीक धरने पर बैठे लोगों को गिरफ्तार न करे और झूठ मुकदमो को वापस ले। दल ने करनाल जिले मे नीसिग कस्बे मे किसानो पर गोली चलाने की कडी निंदा की है और इस मामले की उच्च स्तरीय जाच की माग की है।

हरयाणा के विधायकों के नाम खुला पत्र

१ शराब से शरीर और आत्मा दोनो का नाश होता है। —महात्मा गाधी
२ मदिरा मनुष्य को राक्षस बनाती है। —स्वामी दयानन्द
३ शराब का साथ दिया जीवन बर्बाद किया।
४. शराब हटेगी, देश बचेगा।

प्रिय विधायक जी, नमस्ते !

गाधी जी ने कहा था कि यदि उन्हे एक घण्टा के लिए देश का तानाशाह बना दिया जाये तो उनका पहला कर्त्तव्य होगा, बिना कोई मुआवजा दिये शराब की सब दुकानो व कारखानो को बन्द करना। राष्ट्रपिता तो शराब को वेश्यावृत्ति व चोरी से भी अधिक बुरा मानते थे। कैसा दुर्भाग्य है कि हम बापू के इस अमर कथन को आज भूल गये हैं। हम गांधी को तो मानते हैं परन्तु गाधी की नही मानते। नाथूराम गोडसे ने तो गाधी जी की एक बार ही हत्या की थी और आज के सत्ताधारी अपनी गलत व अनैतिक नीतियो द्वारा इनकी पग-पग पर हत्या कर रहे हैं। आज हरयाणा मे भी शराब की नदिया बह रही हैं और पूरे राज्य में सरकार द्वारा, शराब के ठेको का जाल बिछा दिया गया है जिसमे लोग बुरी तरह फसे पडे हैं। हालत यह है कि यह जानलेवा जहर अब घर-घर मे पहुच गया है और जन-साधारण बर्बादी के कगार पर खडा है। इस समय हरयाणा के विभिन्न जिलो में शराब के ठेको के सामने धरने जारी हैं और ठेके बन्द पडे हैं। महिलाये भी शराबबन्दी आन्दोलन मे उतर आई हैं क्योकि शराब के भयानक परिणामो की भुक्तभोगी तो वही हैं। यह आन्दोलन अब सारे राज्य मे जगल को आग की तरह फैल चुका है और यही गूज सुनाई दे रही है कि सारे राज्य मे तुरन्त प्रभाव से शराब की सब दुकाने व कारखाने बन्द किये जाये। जिला मुख्यालयो पर, ठेको की नीलामी के विरुद्ध जबरदस्त प्रदर्शन जारी है। सरकार चाहे जहर के इन अड्डो को नीलाम भले ही करदे लेकिन लोग इन्हे चलने नही देगे। वास्तव मे यह नीलामी तो हमारे मान-सम्मान व सदाचार की हो रही है। हमारी बहन, बेटियो की इज्जत आज खतरे मे है और शराब के लगातार बढते प्रचलन के कारण, घर-घर मे कलह, अशान्ति व अव्यवस्था का राज है। लोग अपने अस्तित्व के लिए कडे सघर्ष मे जुटे हैं और सरकार उन्हे शराब पिलाकर, पागल बनाये रखने और इनका सर्वनाश करने पर उतारू है। सरकार, शराब की बिक्री से प्राप्त होने वाली अनैतिक आय के मोह मे जकडी है। उसे गुजरात राज्य का अनुसरण करना चाहिए जहा पूर्ण शराबबन्दी लागू है और वहा की सरकार बिना शराब की बिक्री से मिलने वाले धन के, खूब अच्छे ढग से चल रही है।

हरयाणा सरकार की शराबखोरी को बढावा देनेवाली नीति, भारतीय सविधान के अनुच्छेद ४७ का खुल्लमखुल्ला उल्लंघन है, जिसमे सभी नशीले पदार्थों पर पाबन्दी लगाये जाने की बात कही गई है। क्या आप शराब के कारण हो रहे विनाश से उत्पन्न इस अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति मे भी हाथ पर हाथ रखे ही बैठे रहेंगे ? आपको जनता जनार्दन ने, उनकी आकाक्षाओ का प्रतिनिधित्व करने की खातिर ही विधानसभा मे भेजा। आज यह उसी जनता की माग है कि सारे राज्य मे तुरन्त पूर्ण शराबबन्दी लागू की जाये। यदि अब भी चुप बठे रहे तो भविष्य आपको कभी माफ नही करेगा। अत सुझाव एव अनुरोध है कि आप विधानसभा के इस समय चल रहे सत्र मे ही, दिनाक १-४-९३ से सारे हरयाणा मे शराबबन्दी लागू किये जाने हेतु, बिल पास करने मे अपनी स्वस्थ तथा अहम् भूमिका निभाने का कल्याणकारी कार्य करे। ऐसा करने से आपको जन-साधारण का आशीर्वाद प्राप्त होगा। शराब जैसी भयानक सामाजिक बुराई एव अभिशाप से मुक्ति दिलाने हेतु, इस पर कानूनी पाबन्दी लगाई जानी नितान्त आवश्यक है। जिस धरती पर योगिराज श्रीकृष्ण ने गीता का अमर सन्देश दिया आज वही शराब की भयकर चपेट मे है। आओ इसके माथे से इस कलक को धो डाले। इसके लिए आज सबकी निगाहे आपकी ओर लगी हैं। देखते हैं कि आप क्या करते हैं ? शुभ कामनाओ के साथ।

आपका
(विजयकुमार आई०ए०एस० रिटायर्ड)
सयोजक—हरयाणा शराबबन्दी समिति

९-३-९३

भाकियू के शराबबदी आदोलन का समर्थन करेगी सपा

सोनीपत २८ फरवरी। हरयाणा समाजवादी पार्टी ने राज्य मे चल रहे शराबबन्दी आदोलन को पूरा समर्थन देने की घोषणा की है।

पार्टी के प्रान्तीय अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमन्त्री हुकुमसिह ने यहा 'जनसत्ता' के साथ बात चीत मे कहा कि शराब ने कई परिवारो को बर्बाद कर दिया है और हमारी पार्टी इस पक्ष मे नही है कि शराब के प्रचलन को बढावा दिया जाए। ज्यादातर अपराधो की जड शराब है। उन्होने कहा कि शराब से सरकार को जितनी आमदनी होती है उससे ज्यादा खर्च अपराधियो की गतिविधियो को रोकने जैसे कामों पर खर्च पर करना पडता है। हुकुमसिह ने राज्य सरकार को सुझाव दिया कि वह गावो मे शराब के ठेकों की नीलामी पर रोक लगा दे।

सिगरेट से रक्त कैंसर का खतरा

न्यूयार्क सिगरेट पीने से रक्त कैंसर का खतरा काफी अधिक बढ जाता है। एक अध्ययन के अनुसार यह खतरा ३० प्रतिशत तक बढ जाता है। करीब ४५ लाख लोगो को लेकर किए गए इस अध्ययन में पाया गया कि सिगरेट पीने से हर साल ३६०० लोग रक्ताल्पता के शिकार हो जाते हैं। वैसे अध्ययन मे कहा गया है कि धूम्रपान और रक्त कैंसर का रिश्ता अभी स्पष्ट नही है, पर सिगरेट मे बेन्जीन और रेडियोधर्मी पदार्थ पाये जाते हैं। यह रक्त कैंसर का कारण होते हैं।

पति को नशीली सिगरेट पीने से रोकने के लिए पत्नी ने जान गवा दी

सहारनपुर २ मार्च। अपने पति को नशे की सिगरेट पीने से रोकने के लिए एक महिला ने अपनी जान गवा दी।

प्राप्त जानकरी के अनुसार थाना बेहट के ग्राम मरवा निवासी १९ वर्षीया सुमित्रा को अपने पति की नशेवाली सिगरेट पीने से बडी घृणा थी। अपने पति समेसिह की इस आदत को छुडवाना चाहती थी।

एक दिन उसका पति जब घर आया और उसने उसके हाथ से सिगरेट छीनी तो उसके पति ने विरोध किया। इसी बात को लेकर सुमित्रा और उसके पति मे छीनाझपटी हो गई। इसी छीनाझपटी मे वह कमरे मे जल रही मिट्टी के तेल की डिबिया पर जा गिरी, जिसमे वह बुरी तरह झुलस गई।

बुरी तरह जली हुई हालत मे सुमित्रा को अस्पताल लाया गया जहा उसकी मृत्यु हो गई।

उल्लेखनीय है कि सुमित्रा का अभी कुछ महीने पूर्व ही विवाह हुआ था और वह दुर्घटना से एक सप्ताह पूर्व ही ससुराल आई थी।

हिन्दी को थोपने का राग बन्द किया जावे

९ मार्च रोहतक। "भारत युवा संघ" के अध्यक्ष श्री महावीरसिंह ने कहा कि हिन्दी थोपने न थोपने का राग अलापना बन्द किया जाना चाहिये। उन्होने कहा कि यह ठीक है कि कोई भी भाषा किसी पर थोपी नही जानी चाहिए। लेकिन वे लोग जिन्होने पूरे देश पर अंग्रेजी थोपी हुई है और अंग्रेजी के समर्थक बने हुए हैं वे किस मुह से हिन्दी न थोपने की बात कह सकते हैं? लेकिन कितनी बेशर्मी की हद है कि वही लोग एक मुह से दोमुही बात कर रहे हैं। उसी मुह से हिन्दी न थोपने की बात कहते हैं और उसी मुह से अंग्रेजी थोपे रखने की वकालत करते हैं। जितनी भी सरकार आई आज तक भाषा समस्या को बढावा देती रही हैं। उसका ठीक-ठीक समाधान करने पर ध्यान नही दिया गया है। सभी सरकारे हिन्दी का नाम लेकर अंग्रेजी को ही पालती पोसती रही हैं।

१९३५ से भारतीय शिक्षा मे थोपी गई शिक्षा को कुचालो मे अंग्रेजी एक खतरनाक कुचाल है जिसने भावी भारतीय पीढी को ग्रस लिया है। भारतीय बहुमत चाहते हुए भी अंग्रेजी के कुचक्र को तोडने का मार्ग नही देख पा रहा है। एक अंग्रेजी ही है जो भारतीय भाषाओ को आपस मे लडा रही है। सम्पूर्ण भारतीय भाषाओ का हक मारकर मतवाले साड की तरह मनमानी कर रही है और भारतीय भाषाओ के बाग को लगातार घुण के समान लगकर खोखला करती जा रही है। इसका एक मात्र और अन्तिम हल यह है कि त्रिभाषा फार्मूले को सीधे ढग से लागू किया जाये। इसमे सस्कृत व मातृभाषा अनिवार्य तथा अन्य कोई एक भाषा पढनी ऐच्छिक रहे लेकिन किसी भी एक भाषा मे उत्तीर्ण होना अनिवार्य हो न कि तीनो मे। केन्द्र सरकार का काय अनुवादक रखकर प्रान्तीय भाषाओ के साथ हिन्दी व सस्कृत का भी विकल्प रखा जाए। व्यवहार मे सभी भारतीय भाषाओं की लिपि देवनागरी रखी जाए।

गीतारानी, कार्याध्यक्ष २१/१२७ प्रेमनगर रोहतक

दोहाना मे ऋषिबोधोत्सव सम्पन्न

दिनाक १९-२-९३ को आर्यसमाज दोहाना मे ऋषि बोधोत्सव बडे धूमधाम से सम्पन्न हुआ। प्रात प्रभातफेरी निकाली गयी। आर्यसमाज के पुरोहित प० धर्मप्रकाश शास्त्री, उपप्रधान चौ० हकीकत राय की अध्यक्षता मे कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर ये महर्षि दयानन्द उच्चविद्यालय के विद्यार्थियो ने बढचढकर भाग लिये प० धर्मप्रकाश शास्त्री ने भजनोपदेश के द्वारा ऋषि के अधूरे कार्यो को पूरा करने के लिये लोगो को आह्वान किया। अन्त मे चौ० शान्ति स्वरूप जी ने अपनी तरफ से सभी बच्चो एव लोगो एक केला एक सेब वितरित किये।

राजीव शर्मा (मुख्याध्यापक महर्षिदयानन्द विद्यालय)

सम्पादक के नाम पत्र—

संग्रहणीय-विशेषांक

सर्वहितकारी का "ऋषिबोधाक" प्राप्त हुआ। विशेषाक वास्तव मे काफी सुन्दर एव आकर्षक था। इसमे सभी लेख काफी शिक्षाप्रद एव प्रेरणादायक थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती के सम्बन्ध मे ढेर सारी सामग्री पढने को मिली। सर्वहितकारी का आर्यजगत की तमाम पत्र-पत्रिकाओं मे अपना विशिष्ट स्थान है। इस पत्रिका के विशेषाको की भी बडी धूम रहती है। यह भी अपनी उसी शान के अनुरूप निकला है। अत पत्रिका का यह अक सभी दृष्टियो से उत्तम तथा सग्रहणीय है। विशेषाक की सफलता के लिए बधाई स्वीकार करे।

रामकुमार आर्य मन्त्री
आर्य युवक परिषद् गोहाना (सोनीपत)

गुड़गांव में शराब ठेकों की नीलामी पर गिरफ्तारी

दिनाक ४ मार्च, ९३ को गुडगावा मे शराब के ठेको की नीलामी के विरोध मे प्रदर्शन करने आये नर-नारियों ने, वहा पर लगी धारा १४४ को तोडते हुये, पुलिस के उनके प्रति दुर्व्यवहार का मुहतोड जवाब दिया और गिरफ्तारिया दी। सरकार की शराब को बढ़ावा देनेवाली नीति के विरुद्ध डटकर नारेबाजी की और नीलामी स्थल पर आये शराब के ठेकेदारो को खुली चुनौती दी कि वे भले ही ठेको को नीलामी में ले ले लेकिन इन ठेको को किसी कीमत पर भी चलने नही दिया जायेगा। गिरफ्तारी देनेवालो मे २७ महिलाये तथा २८ पुरुष थे। महिलाओ को तो उसी दिन शाम को पुलिस थाना से छोड दिया गया लेकिन पुरुषो को रात भर थाना मे ही रखा गया और उन्हें अगले दिन यानी ५-३-९३ को दोपहर बाद -३० बजे, चीफ जुडीशीयल मैजिस्ट्रेट तथा सिटी मैजिस्ट्रेट गुडगावा के न्यायालयो मे पेश किया गया जहा उन्हे उनके विरुद्ध दर्ज किये गये पुलिस मामलो मे जमानत पर रिहा कर दिया गया। इन मामलो मे सुनवाई की अगली तिथि १५ अप्रैल, १९९३ रखी गई है। इन २२ सत्याग्रहियो में श्री विजयकुमार, पूर्व उपायुक्त एव सयोजक, हरयाणा शराबबन्दी समिति सभा भजनोपदेशक श्री हरध्यानसिंह, सभा के ही श्री धर्मवीर, श्री प्रभुदयाल प्रधान, श्री सोहनलाल सदस्य व श्री अमीलाल शास्त्री पुरोहित, आर्यसमाज अर्जुननगर (गुडगावा) तथा श्री वीरभान सेठी, उपप्रधान, आर्यसमाज रामनगर (गुडगावा) स्वामी अग्निवेश, भक्त भगतूराम तथा उनके साथी व भारतीय जनता पार्टी का जिला गुडगावा के सचिव श्री राज निर्भीक थे।

४ मार्च की शाम को जब सभा प्रधान प्रा० शेरसिंह को इन गिरफ्तारियो की सूचना मिली तो वे दिल्ली से चलकर गुडगावा थाना मे पहुचकर सत्याग्रहियो से मिले और सबसे लिए भोजन, बिस्तर आदि की व्यवस्था बारे पूछताछ की।

स्थानीय आर्यसमाज तथा आर्यकेन्द्रीय सभा, गुडगावा के पदाधिकारियों एव कार्यकर्ताओं द्वारा, सभी सत्याग्रहियो के लिए पुलिस थाना मे ठहरने हेतु, साफ सुथरे बिस्तरो, बढिया भोजन, नास्ते, फलादि की अत्यन्त सुन्दर व्यवस्था की गई जिसके लिए सभी ने उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया। जमानतियो का प्रबन्ध भी इन्ही तथा कुछ अन्यो द्वारा किया गया। भोजन, बिस्तर आदि की व्यवस्था मे श्री ओमप्रकाश चुटानी महामन्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा, श्री किशनचन्द सेठी अन्तरग सदस्य, आर्य केन्द्रीय सभा तथा श्री रामचन्द्र आर्य, सरक्षक आर्यसमाज भीमनगर (गुडगावा) का विशेष योगदान रहा। अदालत से रिहाई के बाद, आर्यसमाज जैकमपुरा मे सभी स्थानीय आर्यसमाजो व आर्य केन्द्रीय सभा की ओर से सत्याग्रहियो का स्वागत किया गया।

शराब हटाओ देश बचाओ

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

[illegible] द्वारा रजि० न० २३२०७/७३   रजि० न० P/RTK-४   सृष्टिसंवत् १,९६, ०८, ५३, ०९३

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २०   अंक १६   २१ मार्च, १९९३   वार्षिक शुल्क ३०)   (आजीवन शुल्क ३०१)   विदेश में ८ पौंड   एक प्रति ७२ पैसे

यह अभियान कब तक चलेगा ?

आर्यसमाज का प्रत्येक आंदोलन रचनात्मक तथा देश के हित मे होता है क्योंकि आर्यसमाज के छठ नियम में पूज्य महर्षि दयानन्द जी [illegible] है कि "संसार का उपकार करना इस समाज का [illegible] उद्देश्य है अर्थात् शारारिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति [illegible] ।" आजकल आयसमाज द्वारा शराबबन्दो अभियान बहुत ही [illegible] विधि से चलाया जा रहा है। इस अभियान के विषय मे एक [illegible] ने प्रश्न किया कि आपका यह अभियान कब तक चलेगा ? हमने उसका उत्तर इस प्रकार दिया—

आपने पूछा बडे प्यार से तो बात आप श्रीमान् सुनो।
जब तक रहे शराब देश में, चलेगा यह अभियान सुनो ॥टेक॥
आप कहते हैं मदिरा, इस बोतल में विष का पानी है।
बल-बुद्धि-धन नष्ट करे, नाश की खास निशानी है॥
इसलिए हमने सोच-समझकर बन्द करने की ठानी है।
[illegible] से हो पतन देश का पर सरकार करे मनमानी है॥
नहीं धारा सैंतालीस पहचानी है, देखो आप संविधान सुनो ॥१
जन-जागरण करें जनगण मे हम घर-घर अलख जगायेंगे।
जन-चेतना चेतन से अब ठेके बन्द हो जायेंगे॥
भारतवासी बहन-भाइयों सबको हम समझायेंगे।
मदिरा को पूर्ण बन्द करके, भारत को समृद्ध बनायेंगे॥
नहीं पीछे कदम हटायेंगे, बाल-वृद्ध नौजवान सुनो ॥२॥
बात हमारी सुनो ध्यान से, हमें काम देश का करना है।
देश हित के कारण सबको जीना है या मरना है॥
अभियान हमारा आगे बढे नहीं कदम पीछे धरना है।
है भीषण प्रतिज्ञा हमारी देशभक्ति लिए विचरना है॥
जो मुख से कहता वही करता हो, वही होता इन्सान सुनो ॥३॥
मेरे समझ में आई है, मैं आर्य-उत्सव करवाऊंगा।
वेदों के अमर संदेश को, घर-घर में पहुंचाऊंगा॥
इस अभियान में सदस्य बन, ठेके बन्द करवाऊंगा।
हो पूर्ण [illegible] सबको यह समझाऊंगा॥
दानव से मानव बनाना है लालचन्द खेडकी का गान सुनो ॥४॥

महात्मा लालचन्द खेडकी (महेन्द्रगढ)

अन्तरंग सभा को आवश्यक बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा अन्तरग सभा की एक आवश्यक बैठक सभा कार्यालय रोहतक में दिनाक २८ मार्च ९३ रविवार को प्रात ११ बजे होगी, जिसमे अप्रल मास मे शराब के ठको पर धरणे देने का कार्यक्रम बनाया जावेगा। अत अन्तरग सदस्यो तथा शराबबन्दो कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि समय पर पधारकर कृतार्थ करें।

—सभामन्त्री

रुकिये—शराब के सेवन से परिवार की बर्बादी होती है। अत. अपने निकट के शराब ठेको पर अपने साथियों सहित धरणे पर बैठकर शराबबन्दी लागू करावें।

जसिया में शराब के ठेके पर धरणा चालू

(निज सवाददाता द्वारा)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अधिकारियों एव उपदेशको के सुझाव पर ग्राम पचायत जसिया जि० रोहतक ने ठेका बन्द करवाने का प्रस्ताव सितम्बर मास से पहले भेज दिया था। किन्तु [illegible] कारणों से सरपच श्री रामभजन ने पुन गांव में आगामी वष के लिए ठेका खोलने का प्रस्ताव पास कर दिया। गाव को पता लगा। किसान यूनियन एवं आर्यसमाज साघो तथा किसान यूनियन जसिया को ७ ३-९३ को सयुक्त बैठक हुई। ग्राम जसिया ने ग्राम साघो का सहयोग चाहा तब सर्वसम्मति से फैसला करके ९-३-९३ से ठेके के सामने शामयाने लगाकर घाघरी टागकर धरणे पर बैठ गये। ठेके के उस दिन से ताला बन्द है। धरणा शान्तिपूर्वक चल रहा है। किसानो का फैसला है कि किसी भी कीमत पर ठेका नही खुलने दगे। ज्ञातव्य है ग्राम सांघी का ठेका कई वर्षों से बन्द है।

दिनाक १२-३-९३ को साय ४ बजे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी अपने साथियों के साथ पधारे। किसानों ने आर्य नेताओं का स्वागत किया। तत्पश्चात् जसवन्त प्रधान किसान यूनियन साघो की अध्यक्षता मे शराबबन्दो सम्मेलन हुआ।

इस अवसर पर सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी सभामन्त्री चौ० सूबेसिंह, चौ० धर्मचन्द जो तथा मुख्य अतिथि एवं वक्ता पूर्व रक्षा राज्यमन्त्री प्रो० शेरसिंह जी ने अपने विचार रखे। सभा मन्त्री जी ने ग्राम बामला धनाना, इमलोटा (भिवानी) अनेक गाव के उदाहरण देकर तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के ७-८ वर्ष के शराबबन्दी अभियान को गतिविधियो पर प्रकाश डाला। प्रो० साहब ने लोगों को धरणा देने के लिए बधाई दो। देश-विदेश के आकडे देकर शराब से होनेवाले नुकसान से अवगत कराया। साथ में बताया कि राजनतिक लोग चन्दे की, सरकार के अफसर कर्मचारी दो नम्बर के पैसो की शराब पीते हैं केवल मात्र किसान एव मजदूर ऐसे हैं जो अपने कमाई के पैसो की शराब पीते हैं। [illegible] किसानें मजदूर बर्बाद हो रहे हैं। किसानों को चाहिए शराब पीना [illegible] विवाह शादी में फिजूल खर्च न करें। नवयुवक अपना कुटीर उद्योग लगाकर अपना धन्धा शुरू कर। धर्मचन्द जी ने प्रो० साहब के राजनातिक जीवन के कार्यों पर प्रकाश डाला तथा बताया कि सारी आयु बेदाग रहे। जनता की सेवा की तथा विशेषकर रोहतक जिला मे महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, आकाशवाणी केन्द्र रोहतक तथा नहरी पानी आदि की देन प्रो० साहब की ही है। प्रधान जसवन्तसिंह साघो तथा श्री राममेहर प्रधान किसान यूनियन जसिया ने प्रो० साहब का धन्यवाद किया और आर्यसमाज एव किसान यूनियन को आयसमाज के साथ मिलकर सामाजिक बुराइयो तथा किसानो की मागो के लिए कार्य करने पर बल दिया। सम्मेलन मे काफी सख्या मे लोगो ने भाग लिया।

इस ग्राम मे ठेके के सामने भारी सख्या मे ग्रामीण नर नारी शराब की बोतल न खरीदने के लिए समझाते हैं। इस प्रकार ठके पर बिक्री बन्द है। सभा के मन्त्री श्री सूबेसिंह जो एव हरयाणा शराबबन्दी समिति के सयोजक श्री विजयकुमार जी ने जिला उपायुक्त से भट करके इस ठके को तुरन्त बन्द करने का अनुराध किया है।

राष्ट्रीय सुरक्षा का प्रश्न——साम्प्रदायिकता का विषवृक्ष—२

वतन की आबरू खतरे में है ?

ले० सुखदेव शास्त्री महोपदेशक,
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

—गताङ्क से आगे—

महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के ११वें समुल्लास की समाप्ति पर मतमतान्तरों को देश की उन्नति में बाधक समझते हुए लिखते हैं—

"देखो ! तुम्हारे सामने पाखण्डमत बढते जाते हैं, ईसाई, मुसलमान तक होते जाते हैं, तनिक भी तुम से अपने घर की रक्षा और दूसरों को मिलाना नही बन सकता। बने तो तब जब तुम करना चाहो ? जब लो वतमान और भविष्यत् में उन्नतिशील नही होते तब लों आर्यावर्त और अन्य देशस्थ मनुष्यो की वृद्धि नहीं होती। जब वृद्धि के कारण वेदादि सत्यशास्त्रो का पठन-पाठन, ब्रह्मचर्यादि आश्रमो के यथावत् अनुष्ठान, सत्योपदेश होते हैं तभी देशोन्नति होती है"।

महर्षि की कितनी संवेदनशील, दुःखभरी चेतावनी है। सत्यार्थप्रकाश मे नौ सो निन्यानवे मतमतान्तरों की चर्चा महर्षि ने की है। वास्तव मे महाभारत के युद्ध के बाद ये मत-सम्प्रदाय ही विष के वृक्ष हैं, जिनके फलों को खाकर ही आज भारतीय अपने देश के प्रति राष्ट्रीयता की भावनाओ मे शून्य होते जारहे हैं।

सम्प्रदायिकता के विरोध मे आज प्रत्येक क्षेत्र से आवाज उठ रही है। आज प्रत्येक साम्प्रदायिक राजनीतिक दल भी इसके विरोध मे मचो पर शोर मचा रहा है। कही-कही कट्टर सम्प्रदायिक दल भी अपनी शकल को छिपाते हुए धर्मनिरपेक्षता का ढिढोरा पीटते हुए सम्प्रदायिकता के विरुद्ध प्रदर्शन करते हैं। सम्प्रदायिक सद्भाव एवं सर्वधर्मसमभाव का आयोजन करते है। समय पाकर यही लोग सम्प्रदायिक दगे भडकाते हैं। अपने मत मजहब को महत्त्व देते हैं। उसे ही ये लोग धर्मनिरपेक्षता कहते हैं। जबकि धर्मनिरपेक्षता का अर्थ होता है, विद्रोह, नास्तिकता, पवित्र कर्त्तव्यो एवं पवित्र उच्च आदर्शों के प्रति उदासीनता, नतिक एव चरित्र सम्बन्धी मूल्यो की उपेक्षा, अधार्मिकता, अनैतिकता। इस छद्म धर्मनिरपेक्षता के कारण ही देश का आज तक महान् विनाश हुआ।

देश का विभाजन राजनीतिक था अथवा मजहबी सम्प्रदायिकता ? इसके साक्षी स्वय जिन्ना साहब थे। उन्होंने २-४-१९४६ को कहा था—"हिन्दू एव मुस्लिमो के धार्मिक टकराव ही राष्ट्रीय सघर्षों के जनक हैं। हम ऐसी सत्ता मे नहीं रह सकते और न उसे हम बनने देगे—जिसमे इस्लाम मजहब के विरोधियो का बहुमत हो, ऐसी सत्ता हमारे मजहबी कानूनो के सख्त खिलाफ है"।

इस पर गाधी जी ने जिन्ना की खुशामद करते हुए अन्त में उसे भारत की पूरी सत्ता—इस्लामी मजहबी सत्ता के रूप मे सौंपने तक की प्रतिज्ञा भी कर दी थी। वे जिन्ना को कोरा चैक देने को भी तत्पर होगए थे। सौभाग्य से जिन्ना ने इसे स्वीकार न किया, नही तो देश का क्या बनता ? इन सब बातो से सिद्ध होता है कि विभाजन का कारण राजनीतिक नही, बल्कि मजहबी सम्प्रदायिकता ही थी।

आज फिर, इसी सम्प्रदायिकता के भयंकर विषबीज 'सम्प्रदायिक सद्भाव" धर्मनिरपेक्षता, अल्पसख्यकवाद, सर्वधर्मसमभाव, सविधान की असमानता के रूप मे फिर बोए जारहे हैं। इस चिन्तनशील शृंखला मे सम्प्रदायिक सद्भाव एव धर्मनिरपेक्षता के खोखले नारे अवसरवादी राजनीतिक लोग साझा मोर्चा बनाकर इनकी रक्षा में जुट गए हैं।

धर्म की आड में इन मत मजहबो एव सम्प्रदायों को सरक्षण देना कितना अनर्थकारी सिद्ध हुआ, इस लेख के आदि में लिखे महर्षि दयानन्द के विचारो से सिद्ध होगया है। ये विचार उन्होंने सत्यार्थप्रकाश की रचना एव आर्यसमाज की स्थापना के समय १८७५ मे प्रकट किए थे, जो आज सच्ची भविष्यवाणी सिद्ध होरहे हैं।

इन मत मजहबो का धर्मतत्त्वो से एव ईश्वरीय सत्ता से किंचित् भी सम्बन्ध नहीं है। यदि देश का विभाजन सम्प्रदायिक दगे, मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्रियता, ये सब इस्लामी मतान्धता का ही तो कारण है, इसकी क्या गारण्टी है कि मुस्लिम जनसख्या वृद्धि के साथ ही एक बार पुन. ऐसा न होगा ? ऐसे दगे-विद्रोह क्या अब नहीं होरहे ?

साम्प्रदायिक दगों की बढ़ती संख्या

इस सच्चाई से इन्कार नहीं किया जा सकता कि देश में साम्प्रदायिक दगों की सख्या निरन्तर बढ रही है। भारत विभाजन के बाद जो मुसलमान भारत में रह गए थे, वे निम्नस्तर के थे जिनमें शिक्षा का अभाव था। उनकी गरीबी एव अशिक्षा का लाभ उठाकर उनके स्वार्थी नेताओ तथा राजनीतिज्ञों ने उनमे मतपन्थ का उन्माद बढाया। बढते हुए साम्प्रदायिक दगो के कारण उनमे असुरक्षा की भावना भडकाकर राजनीतिक दलो ने उनसे लाभ उठाकर वोट बैंकों मे बदल डाला।

१९९० मे कुल मिलाकर साम्प्रदायिक हिसा की २६ घटनाएं हुई थी। १९६५-६६ मे ५१५ दंगे हुए, १९६८ मे ये ३४६, १९६९ में ५१३, १९७१ मे ३११, १९७२ मे २३८, १९७३ मे २४२, १९७४ मे २४८, १९७५ मे २८४, १९७६ मे १६६ १९७७ मे १८६, १९७८ मे २२५, १९७९ मे ३०३, १९८० मे २२८, साम्प्रदायिक दगो को घटनाए हुई।

इन ३७४६ दगों ने देश की लोकतान्त्रिक व्यवस्था की नीव ही हिलाकर रख दी। इसके साथ ही यह भी सच है कि इन दंगो को भडकाने मे इन तथाकथित धर्मनिरपेक्ष राजनीतिक दलो ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। धर्मनिरपेक्षता के सबसे बडे दावेदार कम्युनिष्टों ने भी इन साम्प्रदायिक दगों का फायदा अपने वोट बैंक पक्के करने के लिए उठाया।

इन आंकडों पर नजर डाली जाए तो भारतीय मुसलमानों मे बढती हुई असुरक्षा की भावना को सहज में समझा जा सकता है। उदाहरण के रूप मे १९८६ में दगों की सख्या ७६४ थी और इनमे ४१८ व्यक्ति मारे गए। १९८७ मे ७११ दगे हुए और इनमे ३८३० व्यक्ति मारे गए। १९८८ मे यह संख्या ६११ थी और मरने वालो को सख्या २२३ थी। १९८९ मे दगो की सख्या ७०६ होगई परन्तु मरने वालो की सख्या ८०३ तक पहुच गई। १९९० मे १४०४ दगे हुए और इनमे १२४८ व्यक्ति मारे गए। १९९२ के दगो मे सरकारी सूत्रो के अनुसार १७२० मारे जा चुके थे।

सारे प्रान्तों को छोडकर केवल उत्तर प्रदेश को ही ले लोजिए। इस प्रदेश मे १९८९ से लेकर १९९२ तक मरनेवालो को सख्या १०६० है और इन दगों मे २९२ करोड रुपये की सम्पत्ति नष्ट हुई, सरकारी रिकार्ड के अनुसार वीरबहादुरसिंह के शासनकाल में ८ बडे दगों में २९५ व्यक्ति मारे गए थे। नारायणदत्त तिवारी के शासन में ६ दगों मे ७७ व्यक्ति मारे गए। मुलायमसिंह यादव के शासन में १९ बडे दगो में ४६३ व्यक्ति मारे गए। कल्याणसिंह के शासन में २६७ व्यक्ति मारे गए। जबकि हाल के राष्ट्रपति शासन मे केवल मात्र दस दिनों मे २८१ व्यक्ति दगों में काम आए।

इन आकडो से यह तो साफ हो ही गया कि साम्प्रदायिकता का मर्ज बढता ही गया—ज्यों-ज्यों दवा की। साम्प्रदायिकता की अग्नि में शोले जल उठे ज्यों-ज्यों हवा की।

अब आप सोचेंगे कि इन साम्प्रदायिक दगों का उत्तरदायित्व किस पर है ? साम्प्रदायिकता का जनक कौन है ? इसका उत्तरदायित्व एवं साम्प्रदायिकता का जनक केवलमात्र कुरान शरीफ ही है। मुसलमानों के भारत प्रवेश ७१२ ई० से लेकर १९४७ तक भारत की आजादी से पहले कितने हिन्दू मुस्लिम दगे हुए हैं। क्रमशः

हरयाणा में शराब के ठेकों की नीलामी पर सभा द्वारा प्रदर्शन

सर्वहितकारी के गताक में जिला अम्बाला, यमुनानगर, सोनीपत, नारनौल (महेन्द्रगढ), रेवाडी, गुडगाव, फरीदाबाद पानीपत, करनाल आदि मे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा आयोजित शराबबन्दी प्रदर्शनों के समाचार प्रकाशित हो चुके हैं। इसी सिलसिले मे हरयाणा के अन्य जिलों में भी सभा की ओर से शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं तथा भारतीय किसान यूनियन हरयाणा के सहयोग से सरकार द्वारा शराब के ठेको की नीलामी के अवसर पर विरोध प्रदर्शनो का प्रभावशाली ढंग से आयोजन किये गये हैं—

कुरुक्षेत्र में पुलिस द्वारा शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओ पर लाठीचार्ज

दिनाक ९ मार्च को कुरुक्षेत्र मे आर्यसमाज, शराबबन्दी तथा किसान यूनियन के कार्यकर्त्ताओ ने सयुक्त रूप से शराब के ठेकों को नीलामी पर उत्साहपूर्वक प्रदर्शन किया। हरयाणा शराबबन्दी समिति के संयोजक श्री विजयकुमार जी ने ८ मार्च को कुरुक्षेत्र जिले के आर्यसमाज तथा किसान यूनियन के नेताओं से सम्पर्क करके प्रदर्शन की तैयारी की। सभा के उपदेशक श्री चन्द्रपाल जी सिद्धान्त शास्त्री भी तैयारी करने के लिए ६ नवम्बर को करनाल में प्रदर्शन के पश्चात् गुरुकुल कुरुक्षेत्र पहुच गये थे और गुरुकुल के आचार्य देवव्रत शास्त्री तथा स्थानीय आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओ को प्रदर्शन मे अधिक से अधिक सख्या मे सम्मिलित होने की प्रेरणा की। चौ० विजयकुमार जी के प्रयत्नो से कुरुक्षेत्र के चारो ओर ग्रामो से शराबबन्दी कार्यकर्त्ता अपने निजी वाहनो द्वारा ९ मार्च को प्रातकाल कुरुक्षेत्र की ओर ज्यों ही बढने लगे तथा कुरुक्षेत्र पुलिस ने मार्ग मे ही उन्हें बलात् रोक लिया। सभी सडको पर पुलिस ने अवरोध खडे कर दिये। स्वय श्री विजय कुमार जी सडक का माग छोडकर कच्चे मार्ग से कुरुक्षेत्र मे कठिनाई से प्रवेश कर सके। इसी प्रकार गुरुकुल के आचार्य देवव्रत को ६० ब्रह्मचारियों के नेतृत्व में शराबबन्दी ध्वनिविस्तारक से नारे लगाते हुए कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के द्वार पर पुलिस ने रोक लिया तथा जबरन ध्वनिविस्तारक को वाहन से उतार लिया। कुरुक्षेत्र की महिला सास्कृतिक संगठन की सैकडो युवतियो को कु० सुदेश के नेतृत्व में पुलिस ने रोकने का प्रयत्न किया। अनेक महिलाओं को हिरासत में लेकर दमनचक्र चलाया। इस अवसर पर महिला पुलिस की भी व्यवस्था नही थी। पुरुष सिपाहियों ने महिलाओ को लाठीचार्ज करके नीलामी स्थान पर जाने से रोकने का भरसक प्रयत्न किया। लाठीचार्ज मे महिला नेता कु० चन्द्ररेखा बेहोश होगई। उन्हे तुरन्त हस्पताल भेजा गया। परन्तु पुरुष तथा महिलाए पुलिस का घेरा तोडकर नीलामी स्थान पर पहुचने में सफल होगये। वहा पहुचकर आर्यसमाज के नेताओं ने सभा की ओर से उपायुक्त को हरयाणा मे शराबबन्दी लागू करने हेतु ज्ञापन दिया तथा महिलाओ पर पुलिस द्वारा की गई लाठीचार्ज की कार्यवाही की घोर निन्दा की। इस प्रदर्शन मे हजारों की सख्या मे कार्यकर्त्ताओ ने भाग लिया। जिनमे भारतीय किसान यूनियन के प्रधान श्री जरनैलसिंह, सभा के वकील श्री सुल्तानसिंह, पूर्व विधायक स्वामी आदित्यवेश आदि का नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

हिसार मे ठेकों की नीलामी पर शराबबन्दी प्रदर्शन

दिनाक १० मार्च को शराब के ठेको की नीलामी स्थानीय पचायत भवन में पुलिस के कडे प्रबन्ध में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर सभा के तत्त्वावधान मे तथा प्रो० शेरसिंह जी के नेतृत्व मे ५०० के लगभग शराबबन्दी पुरुष तथा महिलाओ ने प्रदर्शन किया। सभाउपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने जिला हिसार के गुरुकुल आर्यनगर, कुम्भाखेडा, दयानन्द ब्राह्ममहाविद्यालय तथा आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं से सम्पर्क करके उत्साहपूर्वक तैयारी की।

सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह सभा के मन्त्री श्री सूबेसिंह के साथ १० मार्च को प्रात १० बजे से पूर्व हिसार पहुंच गये थे। पूर्व विधायक श्री हीरानन्द आर्य, श्री दयानन्द जी शास्त्री, स्वामी इन्द्रवेश तथा भारतीय किसान यूनियन के कार्यकर्त्ता भी इस प्रदर्शन में सम्मिलित होगये। महिलाओं में सभा के उपदेशक श्री अतरसिंह की धर्मपत्नी भी सैकडो अन्य महिलाओं के साथ शराबबन्दी के नारे लगा रही थीं। सभा की ओर से जिला उपायुक्त को शराबबन्दी का ज्ञापन देते हुए चेतावनी दी गई कि जिन ग्राम पंचायतों ने शराबबन्दी प्रस्ताव पास करके सरकार को भेजे हैं, वहां कानून के अनुसार ठेकों की नीलामी न की जावे, अन्यथा आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता ठेकों के सामने धरनों का आयोजन करके शराब की बिक्री नहीं होने देंगे। ग्रामो में जो भी नाजायज शराब बनावेगा तथा पीनेवालो पर जुर्माना किया जावेगा और उसे घाघरी पहनाकर तथा गधे पर बैठाकर सारे ग्राम मे घुमाया जावेगा।

सिरसा में आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं द्वारा प्रदर्शन

दिनाक १० मार्च को ही सिरसा में शराब के ठेको की नीलामी पर सभा के तत्त्वावधान में आर्यजनता की ओर से विरोधस्वरूप प्रदर्शन किया गया। इसका नेतृत्व हरयाणा शराबन्दी समिति के संयोजक श्री विजयकुमार तथा सभा के उपप्रधान डा० रणधीरसिंह सागवान ने किया। दो दिन पूर्व सभा के उपदेशक श्री धर्मवीर आर्य तथा प० चिरजीलाल की भजनमण्डली शराबबन्दी प्रचारार्थ सिरसा क्षेत्र मे गये। ग्राम बोदीवाला मे प्रचार करके ग्रामीण जनता को इस प्रदर्शन मे सम्मिलित होने की प्रेरणा की। श्री विजयकुमार जी ने भी सिरसा के निकट के शराबन्दी कार्यकर्त्ताओ से सम्पर्क किया। नीलामी प्रदर्शन कार्य मे स्थानीय आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री दलीपसिंह, उनके सहयोगी अध्यापक तथा विद्यालय के भारी सख्या मे छात्रो ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। स्वामी प्रकाशानन्द, श्री मनफूलसिह आर्य, डा० बलदेव, श्री ओमप्रकाश आर्य आदि नेताओं ने भी पूरा सहयोग दिया। प्रदर्शनकारियो को पुलिस ने नीलामी स्थल तक जाने से रोका। परन्तु श्री विजयकुमार जी तथा डा० सागवान ने सभा की ओर से उपायुक्त को हरयाणा मे शराबबन्दी लागू करने की माग की। शराब के ठेकेदारो को भी सचेत किया गया कि वे शराब जेसे गन्दे व्यवसाय को छोडकर कोई अन्य व्यवसाय को अपनावें जिससे जनता को भी लाभ हो सके।

भिवानी में हजारों शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओ द्वारा प्रदर्शन

दिनाक ११ मार्च को भिवानी में शराब के ठेकों की नीलामी प्रात १० बजे आरम्भ की गई। हरयाणा मे सबसे अधिक शराबबन्दी का प्रचार इसी जिले में किया गया है। इसी कारण यहा ग्रामो की सभी ३९ पंचायतो ने शराबबन्दी के प्रस्ताव करके सरकार को भेजे थे। अत सभा की ओर से प्रदर्शन की पूरी शक्ति के साथ तैयारी की गई। सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य, श्री रणवीरसिंह आर्य, भजनोदेशक श्री हरध्यानसिंह आर्य, श्री जयपालसिंह आर्य, स्वामी देवानन्द आदि ने ग्रामों में घूम-घूमकर प्रदर्शन मे भाग लेने के लिए ग्रामीण जनता को प्रेरणा की। सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह, मन्त्री श्री सूबेसिंह, शराबबन्दी समिति के सयोजक श्री विजयकुमार जी ११ मार्च को प्रात १० बजे से पूर्व भिवानी पधारे। इससे पूर्व ही सभा के भजनोपदेशक श्री जयपाल की भजन मण्डली ने किरोडीमल पार्क में शराबबन्दी का प्रभावशाली प्रचार किया। प्रदर्शन का नेतृत्व सभा-प्रधान प्रो० शेरसिंह तथा सागवान खाप के नेता कर्नल रिसालसिंह ने किया तथा प्रदर्शनकारी १० हजार की संख्या में शराबबन्दी के नाम पट हाथो में लेकर "शराब हटाओ हरयाणा बचाओ" आदि के नारे लगाते हुए उपायुक्त के कार्यालय पहुचे तथा वहा हरयाणा मे शराबबन्दी लागू करने की माग करते हुए सरकार को सुझाव दिया गया कि मुख्यमन्त्री अपने दामाद के शराब बनाने के कारखाने को बन्द करे तथा शराब के सभी कारखानो को पावर अल्कोहल बनाने के काम मे लगा दे जिससे तेल कम मगवाना पडे तथा विदेशी मुद्रा बच सके। इस प्रदर्शन में श्री भरतसिंह शास्त्री, श्री धर्मपाल शास्त्री, श्री हीरानन्द आर्य, मेजर सन्तलाल सरपच, श्री राजेन्द्र सरपंच, डा० सत्यवीर कन्हेटी, श्री लालचन्द यादव सरपच, श्री बलवीरसिंह सरपच, प० सत्यनारायण आर्य, प्रि० बलवीरसिह सरपच, स्वामी परमानन्द, प० सावलराम, मा० होशियारसिंह, श्री प्रीतसिंह तथा ग्रामों के किसानो का योगदान सराहनीय रहा।

रोहतक में शराबबन्दी कार्यकर्ताओं पर बर्बर लाठी चार्ज में सैकड़ों घायल तथा गिरफ्तार

रोहतक में अब ११ मार्च को शराब के ठेकों की नीलामी पर सभा की ओर से पूरी शक्ति के साथ विरोध प्रदर्शन का आयोजन किया। दो दिन पूर्व सभा के उपदेशकों, भजनोपदेशकों श्री रामसिंह आर्य, श्री चन्द्रपाल सिद्धान्त शास्त्री, श्री जयपालसिंह तथा श्री मुख्तयारसिंह राठी आदि द्वारा रोहतक के चारों ओर के ग्रामों में जीप में ध्वनि विस्तार द्वारा प्रदर्शन में सम्मिलित होने की प्रेरणा की गई। फलस्वरूप सभा कार्यालय सिद्धान्ती भवन रोहतक में प्रात: ही सैकड़ों की संख्या में आर्यसमाज के कार्यकर्ता पहुंच गये। ११ बजे सभा उपमन्त्री डा० सोमवीर के नेतृत्व में शराबबन्दी प्रदर्शन गोहाना मार्ग से आरम्भ हुआ। इसमें आर्यसमाज के अधिकारियों के साथ आर्य संन्यासी स्वामी महानन्द, स्वामी वेदमुनि वानप्रस्थी दलीप आदि के अतिरिक्त गुरुकुल झज्जर से आचार्य विजयपाल, म० फतेहसिंह भण्डारी, श्री वेदप्रकाश सरपंच, श्री मेधाव्रत शास्त्री, ब्र० नन्दकिशोर, हनुमान, हितेश, जितेन्द्र, दिनेश, वसुदेव, कृष्ण, जयदेव, योगेन्द्र, अक्षय, कर्मदेव, धर्मेन्द्र, दिलावर, हवासिंह, विजयपाल, वजीर, अशोक, रोहताश, अनिल, सतीश, सुनील, सतीश, ओमवीर, संजीव, रघुराज, अशोक, धर्मेन्द्र, अरविन्द, गोपाल, देवेन्द्र सन्तराम, नरेन्द्र, प्रवीण, यादराम, कृष्ण-कुमार, रमेश, राजसिंह, सुशील, सुभाष, वीरेन्द्र, विनोद, सुरेन्द्र, सूर्यदेव, महेन्द्र, चन्द्रकान्त, रणवीर, सुभाष, अशोक, सत्यपाल, सतीशकुमार आदि श्री सुखदेव शास्त्री तथा गोहाना के शराबबन्दी नेता डा० प्रताप जैन के सहयोग से शराबबन्दी के पक्ष में तथा हरयाणा सरकार की शराब नीति के विरोध में ध्वनिविस्तारक से गगनभेदी नारे लगाते हुए माडलटाउन पहुंचे। वहां स्वामी इन्द्रवेश, अग्निवेश आदि के साथी तथा भारतीय किसान यूनियन के नेता एवं सैकड़ों कार्यकर्ता जिनमें महिलायें भी सम्मिलित थी, जलूस रूप में पहुंच चुके थे। पुलिस के हजारों सिपाहियों ने सभी प्रदर्शनकारियों को महर्षि दयानन्द विश्व-विद्यालय के छात्रावास के पास अवरोध खड़ा करके रोक लिया। शराबबन्दी कार्यकर्ताओं ने शराब (जहर) के ठेकों की नीलामी बन्द करने की मांग के नारे लगाये तथा वहीं सड़क पर धरना देकर बैठ गये। इस प्रकार जलूस शराबबन्दी सम्मेलन में बदल गया।

इसी समय यहां सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह, मन्त्री श्री सूबेसिंह, संयोजक श्री विजयकुमार आदि सभा के अधिकारी भी भिवानी के प्रदर्शन के बाद पहुंच गये। डा० सोमवीर, श्री कपिलदेव शास्त्री, स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी अग्निवेश, श्री सुखदेव शास्त्री, कामरेड रघुवीरसिंह, किसान नेता श्री धर्मवीरसिंह, श्री सुमनसिंह के भाषणों के पश्चात् सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने उपस्थित सत्याग्रहियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज पुलिस की इतनी भारी संख्या को देखने से सिद्ध होता है कि सरकार शराबबन्दी आन्दोलन से घबरा रही है। हम जनविरोधी नीति का डटकर सामना करेंगे। अत: सत्याग्रही पुलिस का घेरा तोड़कर नीलामी स्थल पर शराब के ठेकेदारों को ललकारें कि ग्रामों में ठेके नहीं चलने दिये जावेंगे। उनके आह्वान पर सत्या-ग्रहियों ने पुलिस का घेरा तोड़ दिया तथा सभा अधिकारी उनके साथ आगे बढ़ने लगे, परन्तु पुलिस ने लाठियां चलानी आरम्भ कर दी। अश्रुगैस के ६ गोले छोड़े तथा घोड़ापुलिस रोदने के लिए छोड़ दी। इसमें प्रो० शेरसिंह, डा० सोमवीर, स्वामी इन्द्रवेश आदि नेताओं को लाठियां लगी। सभा के गणक श्री ओमप्रकाश शास्त्री के सिर में लाठियां लगने से गम्भीर रूप में घायल होगये। इसी प्रकार श्री रूपचन्द पूर्व सरपंच रुड़की, मा० बलदेव आर्य चमारियां तथा गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियों को चोट आई। पुलिस ने प्रो० शेरसिंह, श्री सूबेसिंह, श्री विजयकुमार, वैद्य टेकराम सिवाना, स्वामी इन्द्रवेश आदि सैकड़ों नेताओं तथा आर्य कार्यकर्ताओं को हिरासत में लेकर रोहतक तथा बेरी के थानों में बन्दी बनाकर ४-५ घण्टे तक रखा। सभा उपमन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री के नेतृत्व में उपायुक्त कार्यालय में जाकर पूर्ण शराब-बन्दी लागू करने हेतु ज्ञापन दिया। केदारसिंह आर्य,

---

सोनीपत तथा अम्बाला में पुनः प्रदर्शन का समाचार आगामी अंक में पढ़िये।

राजकीय महाविद्यालय, दुजाना

राष्ट्रीय-सेवा-योजना का दस दिवसीय शिविर सम्पन्न

एन०एस०एस० की यूनिट का दस दिवसीय शिविर गांव दुजाना में दिनांक ५-३-९३ से १४-३-९३ तक कार्यक्रम अधिकारी प्रो० प्रकाशवीर दलाल की निगरानी में आयोजित किया गया। शिविर का उद्घाटन प्राचार्या श्रीमती उषा कालिया ने किया। ६६ स्वयंसेवकों ने दस दिन तक श्रमदान करके तालाब की छटाई की और गांव से कालेज की ओर आनेवाले रास्ते को मिट्टी डालकर समतल बनाया। कालेज के प्रांगण में ७० फुट लम्बे १५ फुट चौड़े और चार फुट गहरे गड्ढे को मिट्टी डालकर भरा और उसे क्रिकेट के पिच के रूप में परिवर्तित किया।

१४-३-९३ को समापन समारोह के अवसर पर स्वयंसेवकों को स्थानीय विधायक चौ० ओमप्रकाश बेरी ने पुरस्कार व प्रमाण-पत्र प्रदान किये। इस अवसर पर बोलते हुए श्री बेरी ने कहा कि यदि युवकों का सही मार्गदर्शन किया जावे तो हमारी काफी समस्याओं का समाधान अपने आप ही हो सकता है। शराब के बारे में बोलते हुए श्री बेरी ने कहा कि युवकों को इस नागिन से दूर रहना चाहिए और शराब से उत्पन्न होनेवाली बुराइयों के प्रति आम जनता में जागृति पैदा करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि आज का युवक धार्मिक शिक्षा और नैतिक शिक्षा के अभाव में पंगु बनकर रह गया है। स्वयंसेवकों द्वारा किए गए श्रमदान की प्रशंसा करते हुए और कालेज की प्राचार्या के कुशल नेतृत्व का जिक्र करते हुए श्री बेरी ने कहा कि मैंने इस कालेज के छात्रों में जो अनुशासन देखा है उससे मैं बेहद प्रभावित हुआ हूं। श्री बेरी ने कालेज की मांगों का जिक्र करते हुए कहा कि मैं निजी दिलचस्पी लेकर इनको पूरा करवाने का प्रयत्न करूंगा। इस शिविर के दौरान अच्छा काम करने और उत्तम व्यवहार के लिए बी० ए० तृतीय वर्ष के श्री सुखवीरसिंह बिरधाना को सर्वोत्तम प्रथम और श्री देवेन्द्र नेहरा को सर्वोत्तम द्वितीय पुरस्कार भी प्रदान किए गए।

रोहतक में ८४ ग्रामों की पंचायत

२८ मार्च को १२ बजे डेहरी पाना रोहतक की चौपाल में ८४ ग्रामों की एक पंचायत का आयोजन किया गया है, जिसमें शराबबन्दी तथा अन्य सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने का कार्यक्रम तैयार किया जावेगा।

प्रतापसिंह बहुअकबरपुर, प्रधान किशनसिंह सिंहपुर खुर्द, मन्त्री सर्वखाप पंचायत अठगांव।

पानी बटवारे में भेदभाव

बहादुरगढ़, २० मार्च। रावी-व्यास के उपलब्ध पानी के वितरण को लेकर हरयाणा कांग्रेस विधायक दल के एक वर्ग में मायूसी पैदा हो गई है। विधानसभा के अधिवेशन में पानी की समस्या पर प्राक्कलन कमेटी ने जो रहस्योद्घाटन किया है, उससे कांग्रेस विधायक खेमे में खुसबुसाहट शुरू हो गई है।

चौधरी ओमप्रकाश बेरी द्वारा अधिवेशन के दौरान पूछे सवालों ने सभी को हैरानी में डाल दिया क्योंकि जो पानी हिसार और सिरसा में बह रहा है, वह पानी समझौते के अन्तर्गत दक्षिणी हरयाणा के हिस्से का है, जिसे पश्चिमी यमुना नहर में डालकर इन जिलों में फसल की सिंचाई के लिए प्रयोग किया जाना चाहिए था, मगर यह पानी पिछले १५ वर्षों से रोहतक-सोनीपत की बजाय सिरसा और हिसार में बह रहा है। सिरसा-हिसार के प्राका रावी-व्यास के उपलब्ध पानी को यमुना नहर में डालने की बजाय भाखड़ा नहर में डालकर आज तक लोगों को गुमराह ही करते आए हैं।

सर्वहितकारी के ग्राहक महानुभावों को सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रस्तावानुसार सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क ३०) के स्थान पर ४०) जनवरी ९३ से निश्चित किया गया है। परन्तु जो ग्राहक महानुभाव ३१ मार्च ९३ तक अपना शुल्क ३०) वार्षिक रूप में भेज देंगे, उन्हें सर्वहितकारी पूर्ववत् भेजा जायेगा। अत: इस सुविधा से सभी पुराने ग्राहक महानुभाव लाभ उठावें।

व्यवस्थापक सर्वहितकारी साप्ताहिक दयानन्द मठ रोहतक, हरयाणा

पुस्तक समीक्षा

वैदिक-सन्ध्या

(आर्यों का ब्रह्मयज्ञ प्रक्रिया एवं व्याख्या)

लेखक व प्रकाशक—डा० राधेश्वरदयाल गुप्त वानप्रस्थी

९७/१ आर्यनगर, ज्वालापुर (उ.प्र.)   मूल्य-२० रुपये।

डा० राधेश्वरदयाल गुप्त सेवानिवृत्त इन्जीनियर हैं। स्वाध्यायशील लेखक, वक्ता और विचारक हैं। पुस्तक के प्रारम्भ में सन्ध्या की तैयारी, स्थान, आसन, समय, सूर्यधर्म का स्पष्टीकरण, मन्त्र जप की वैज्ञानिक प्रक्रिया और अभ्यास, प्रार्थना का महत्त्व, मन्त्रों के प्रारम्भ में ओ३म् तथा ओ३म् का जप आदि पर विस्तार से विचार किया गया है।

सन्ध्या के मन्त्रों का अर्थ, कविता अनुवाद, आंग्लभाषानुवाद मन्त्रों की वैज्ञानिकता पर विचार तथा अन्य सम्बन्धित स्फुट विचार प्रस्तुत किये हैं। आचमन चोटी की गांठ, मार्जन, प्राणायाम आदि क्रियाओं का महत्त्व भी प्रतिपादित किया है।

उपस्थान के चतुर्थमन्त्र की व्याख्या में १०० वर्ष और उससे अधिक दीर्घ आयु के प्रमाण दिए हैं। इसी प्रसंग में आत्म-हत्या, सती प्रथा, दहेज प्रथा को वेदविरुद्ध बतलाते हुए दीर्घायु के उपाय भी बतलाये हैं। ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्या) पर विचारपूर्वक पर्याप्त सामग्री संग्रहार्थ लेखक का प्रयास स्तुत्य है किन्तु पदे पदे मुद्रण की अशुद्धियां पाठक का मन किरकिरा कर देती हैं। वेदमन्त्र तथा संस्कृत के श्लोक, सूत्र आदि में तो अशुद्धियां और भी अधिक हैं। भविष्य में इन्हें दूर किया जाना चाहिए। दूसरा सुझाव यह है कि सन्ध्या के मन्त्र तथा व्याख्या में प्रमाण एवं पुष्टि के लिए उद्धृत मन्त्र श्लोक सूत्र आदि सभी एक ही १२ प्वाइंट मानो टाइप में होने से पुस्तक में पाठक के लिए स्पष्टीकरण और सौन्दर्य का अभाव है। उत्तम भोज्य-सामग्री भी शुद्ध एवं सुन्दर पात्र में प्रस्तुत की हुई हो मनमोहक, रोचक तथा आकर्षक बन पाती है।

—वेदव्रत शास्त्री

गुरुकुल की छात्राएं भी साक्षरता अभियान में जुटीं

गोहाना, १२ मार्च (वर्ता)। इस मण्डल के कन्या गुरुकुल खानपुर कलां की आयुर्वेदिक और डिग्री कालिज की छात्राओं ने गांव कासण्डा, कासण्डी, खानपुर कलां और माजरी गांव की अनपढ़ महिलाओं को साक्षर बनाने के लिए एक अभियान चलाया है।

गुरुकुल की प्रबन्धक सुभाषिनी के मुताबिक चारों गांवों की १५ से ३५ आयु वर्ग की निरक्षर महिलाओं को जुलाई तक साक्षर करने का लक्ष्य रखा गया है। गुरुकुल की ६० से अधिक छात्राएं हर शनिवार को इन गांवों में जाकर अनपढ़ों को अक्षर ज्ञान देने का कार्य करती हैं। आयुर्वेदिक छात्राएं ग्रामीण महिलाओं को स्वास्थ्य, सफाई, प्रतिरक्षण कार्यक्रम आदि की जानकारी देती हैं।

जीन्द में शराब के ठेको की नीलामी पर विरोधप्रदर्शन की एक झलक

(निज संवाददाता द्वारा)

दिनाक १२ मार्च ९३ को जींद में आर्यसमाज एवं किसान यूनियन की ओर से शराबबन्दी हेतु सफल विरोध प्रदर्शन किया। त्यागमूर्ति रतनदेव जी सरस्वती संयोजक वेदप्रचार मण्डल जींद तथा श्री रामधारी शास्त्री द्वारा अनेक गांव में ठेको की नीलामी का विरोध करने के लिए जनसम्पर्क एवं प्रचार किया गया। ६-३-९३ को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी, मन्त्री सूबेसिंह जी, सभा उपदेशक श्री अतरसिंह जी आर्य क्रान्तिकारी ने भी गाव गतोली, धरेरा, कम्बा गु० कु० खरल, धमतान साहब आदि गाव का दौरा किया तथा लोगो को १२ मार्च को जीन्द प्रदर्शन मे पहुचने का आह्वान किया। ११-३-९३ को सभा उपदेशक क्रान्तिकारी, प० चन्द्रपाल शास्त्री सायकाल रोहतक से जीन्द पहुचे। आर्यसमाज जीन्द शहर तथा आर्यसमाज रामनगर के अधिकारियो तथा शहर के अन्य कार्यकर्त्ताओ से सम्पर्क किया। सभा के पूर्व कोषाध्यक्ष श्री बद्रीप्रसाद आर्य ने भी शहर मे भ्रमण करके सहयोग दिया। आर्यसमाज के पास प्रात रानी घाट पर ९ बजे लोग इकट्ठे होने लगे। मजिस्ट्रेट ने तुरन्त शहर मे धारा १४४ की घोषणा करवा दी। ट्रेक्टरो को शहर से बाहर रोक दिया गया। सूचना मिलने पर चौ० विजयकुमार पूर्व उपायुक्त, चौ० सूबेसिंह पूर्व एस० डी० एम० एवं सभामन्त्री गाडी लेकर पटियाला चौक पहुचे। ट्रेक्टरो को छुडवाया। ११ बजे तक हजारो लोग इकट्ठे होगए। आर्यनेताओ एव किसान नेताओ के नेतृत्व मे जलूस चला, नवयुवक जोश मे शराबबन्दी के नारे लगा रहे थे। पुलिस ने नाकाबन्दी कर रखी थी। लोग मोटो-बैनर हाथ में लिए हुए तथा शराब के ठेकेदार देश के गद्दार आदि नारे लगाते हुये पुलिस अवरोध तोडकर नीलामी स्थल के गेट के सामने पहुचे। वहा शिक्षाविद् एव कर्मयोगी स्वामी रतनदेव जी की अध्यक्षता मे एक सभा हुई जिसमे स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी अग्निवेश, प्रो० शेरसिंह जी, चौ० विजयकुमार जी संयोजक शराबबन्दी समिति हरयाणा, उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, श्री रामधारी शास्त्री, मा० रायसिंह आर्य (घोघडिया), श्री बलबीरसिंह ग्रेवाल पूर्व विधायक, चौ० धर्मचन्द आर्य, बाबा बसन्त गिरि (क्योडक), स्वामी धर्मानन्द (पानीपत), किसान नेता कर्मसिंह, मा० खजानसिंह आर्य, अध्यापक नेता मा० सोहनलाल, श्री इन्द्रसिंह आदि ने विचार रखे।

सभी नेताओ ने सरकार की शराब बढावा नीति की आलोचना की। इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होनेवाले नुकसान से लोगो को अवगत कराया। सरकार को चेतावनी दी कि देहात मे शराब के ठेके न खोले। अगर पुलिस बल के सहारे ठेकों की नीलामी बन्द कमरे में बैठकर कर भी दी तो आर्यसमाज व किसान यूनियन के कार्यकर्त्ता ठेके नही चलने देगे। धरणे दिये जायेगे। प्रो० शेरसिंह व स्वामी इन्द्रवेश ने उपायुक्त महोदय को ज्ञापन दिया। मच का संचालन जयप्रकाश आर्य ने किया। अनेक गाव से लोग ट्रेक्टर व फोरव्हीलर लेकर हजारो की संख्या मे पहुचे। ग्राम निडाना से युवक सभा के सैकडो नवयुवक शराबबन्दी बैनर लेकर नारे लगाते हुये आये। प० चन्द्रभान आर्य भजनोपदेशक, लाला बद्रीप्रसाद आर्य प्रधान जीन्द शहर, चौ० अभेराम आर्य प्रधान आर्यसमाज रामनगर जीन्द, श्री सूर्यदेव आर्य तथा ग्राम गतोली से भी काफी संख्या मे लोग सम्मिलित हुए। प्रदर्शन प्रेरणादायक रहा। नवयुवकों ने शराब विरोधी, आर्यसमाज अमर रहे, किसान यूनियन जिन्दाबाद आदि नारों से आकाश को गुजा दिया। पुलिस एव ठेकेदार जनसमूह से बुरी तरह डरे हुए थे।

आर्यसमाज बालसमन्द जिला हिसार का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज बालसमन्द का ६५वा वार्षिक उत्सव दिनाक १३-१४ मार्च १९९३ को हर्षोल्लास के वातावरण मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी सर्वदानन्द जी (गु कु धीरणवास), प० आचार्य दयानन्द जी शास्त्री, श्री प्रतापसिंह शास्त्री, प्रि० भगवानदास जी आर्य, सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, स्वतन्त्रता सैनानी भगत रामेश्वर दास जी, आचार्य प० अमरसिंह आर्य, बहिन दयावन्ती आर्या, बहिन कौशल्या शास्त्री आदि विद्वानों ने महर्षि दयानन्द जी के जीवन एव कार्यों, वेदों में विज्ञान, मनुष्य के कर्तव्य नारी शिक्षा एवं उत्थान, छुआ-छूत, राष्ट्ररक्षा, पत्थर पूजा व्यर्थ, भारतीय संस्कृति, आर्यसमाज का इतिहास, गोरक्षा, पर्दाप्रथा, विवाह शादी में फिजूल खर्च न करना, नैतिकशिक्षा तथा शराबबन्दी पर इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होने वाले नुकसान आदि पर विस्तार से अपने-अपने अनुभव एव ढग से प्रकाश डाला।

क्रान्तिकारी ने आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा चलाए जारहे शराबबन्दी अभियान, नीलामी पर प्रदर्शन, ठेको पर धरने आदि की जानकारी दी। सरकार की शराब बढावा नीति की घोर निन्दा की, साथ मे जहा हिसार में मुख्यमन्त्री के जमाई की शराब की फैक्ट्री को भजनलाल मुख्यमन्त्री के माथे पर एक कलक बताया वहीं गांव बालसमन्द के सरपच ने पहले सितम्बर मास मे ठेका बन्द करवाने का प्रस्ताव किया और बाद मे पुन किसी लालच या दबाव में आकर गाव में शराब का ठेका खोलने का प्रस्ताव करने को कटु आलोचना की। इसको थूककर चाटनेवाली बात कही। गाव बालसमन्द की पचायत के द्वारा प्रस्ताव पास कर सारे हिसार जिला मे बेहूदी मिसाल कायम कर दी। लोगो से पुरजोर अपील की कि सगठित होकर इस पाप के अड्डे को खिलाफ धरना दो वरना बर्बाद हो जावोगे। मिट जाओगे। बच्चो व माता बहिनो पर दया करो। वरना आनेवाला समय आपको धिक्कारेगा। कुछ नवयुवको ने धरना देने का आश्वासन दिया।

प्रतिदिन प्रात हवन किया गया। महाशय रामजीलाल आर्य एवं श्री जगदिन्द्र ने सपत्नीक यजमान का स्थान ग्रहण किया। श्री महाबीरसिंह जी ने हुक्का व बीडी न पीने का व्रत लिया। प० दयानन्द जी शास्त्री ने सध्या हवन करवाया, पचमहायज्ञ, आत्मा परमात्मा, यज्ञोपवीत का महत्त्व पर विस्तार से विचार रखे।

इसके अतिरिक्त प० ईश्वरसिंह तूफान, चौ० ओमप्रकाश जी आर्य, तथा महाशय फूलसिंह आर्य के शिक्षाप्रद समाज सुधार के भजन हुवे। उत्सव आर्यसमाज मन्दिर मे हुआ। उत्सव में हजारो नर-नारियों ने समय पर पहुँचकर विद्वानो के विचार सुने। ४ तारीख को हवन के बाद वर्षा आरम्भ होगई। लोग श्रद्धा से पाण्डाल में जमे रहे। दो घण्टे के बाद वर्षा बन्द हो गई। कार्यक्रम बहुत ही उत्तम और सराहनीय रहा। विद्वानो की सेवा शुश्रूषा भी अच्छी रही। मच संचालन श्री क्रान्तिकारी जी ने प्रभावशाली ढंग से किया। न्यायमुनि तथा मा० फतेसिंह, मा० बलजीतसिंह जी दोनों दिन गुरुकुल धीरणवास के बच्चों को लेकर उत्सव पर पहुंचे। प्रधान श्री दीवानसिंह जी आर्य, श्री भगवानसिंह जी आर्य तथा रामजीलाल आर्य की देखरेख में उत्सव का कार्य उत्तम रहा। प्रधान जी ने विद्वानो का धन्यवाद किया।

—मन्त्री आर्यसमाज बालसमन्द

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में छात्रों का प्रवेश

अरावली पर्वत की शृखला (दिल्ली मथुरा मार्ग पर) बदरपुर बार्डर से एक किलोमीटर सराय ख्वाजा निकट सूरजकुण्ड जि० फरीदाबाद में अमरबलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में कक्षा चौथी से दसवी तक प्रवेश आरंभ है। यहां पर हरयाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है। सभी शिक्षक ट्रेण्ड तथा अनुभवी हैं। यह गुरुकुल आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा द्वारा चलाया जारहा है।

गुरुकुल में छात्रावास, यज्ञशाला, पुस्तकालय तथा व्यायामशाला की व्यवस्था है। यहा छात्रो के दिन रात रहन-सहन, आचार-व्यवहार, स्वास्थ्य, चरित्र निर्माण तथा धार्मिक शिक्षा के साथ छात्रों के सर्वांगीण विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता है। गतवर्ष आठवीं श्रेणी का परिणाम शतप्रतिशत रहा है। शिक्षा नि शुल्क है।

अत आप अपने बालकों को सदाचारी तथा सुयोग्य बनाने के लिए गुरुकुल मे शीघ्र से शीघ्र प्रवेश करवाकर उनका उज्ज्वल भविष्य बनायें। स्थान सीमित हैं। तुरन्त सम्पर्क करें।

आचार्य गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जि० फरीदाबाद
(पो० नई दिल्ली-४४) फोन ८/२७५३६८

शराबबन्दी पर एक

गज़ल

पीकर शराब, बिगडा शबाब, आज के जवान का।
कौन हामी है बनेगा, आगे हिन्दुस्तान का ॥टे०॥

पीने वाले पी ऐसी, जो चढके ना उतरे कभी।
देख कर तेरे नशे को कांप जाये भूपत सभी॥
मान जाये विश्व सारा, लोहा तीरो कमान का ॥१॥

ये रग प्याले का तेरे, चेहरे के रग को पी रहा।
जीना जिसको तू कहे किस जीने में जी रहा॥
गन्दी नाली मे पडा तू, बेटा कृष्ण भगवान् का ॥२॥

पीते ही बुद्धि करे है, मास अण्डे की नीयत।
अय्याशी मे फस गया, खो दई सब कैफियत॥
सारी खूबी खोदई, राही बना श्मशान का ॥३॥

ओढ कर चादर तू आया, श्वेत रग बेदाग की।
नाच मुजरा मस्ती मे, बीती घडी जनाब की॥
फिर कैसे सैदायी बने, सुखपाल जी के गान का ॥४॥

कुवर सुखपाल आर्य
भजनोपदेशक

प्राकृतिक सौन्दर्य अपनाओ

प्रतिदिन देखने मे आता है कि स्त्री हो या पुरुष, वह सुन्दर बनने के लिए कितने प्रकार के कृतिम प्रसाधन अपनाता है फिर भी वह आकर्षण नही आता जो प्राकृतिक सौन्दर्य से होता है। सुन्दर बनने के लिए न जाने कितने प्रकार की महगी-महगी क्रीम पौडर बाजार से खरीदकर लाते हैं और चेहरे को असलियत को छुपाने के लिए नकली और हानिकारक द्रव्यो की लीपा पोती करते हैं।

यह ठीक है कि सुन्दर बनने की अभिलाषा हरेक नर-नारी मे होती है। हमे सुन्दर बनने का प्रयास करना चाहिए, परन्तु प्राकृतिक ढग से, न कि बनावटी मेकअप करके। यदि आप प्राकृतिक सौन्दर्य प्राप्त करना चाहते हो तो आज से निम्नलिखित स्वास्थ्य के नियमो का पालन करना आरम्भ कर दो—

१) प्रतिदिन प्रात काल सूर्य उदय होने से एक घण्टा पूर्व उठकर मुंह धोकर कुल्ले करके छींटे मार-मारकर आंखों को साफ करो।

२) मल मूत्र का वेग है तो त्याग करो और बाहर जगल में भ्रमण करने जाओ। कम से कम एक मील अवश्य घूमकर आओ। गहरे-गहरे श्वास लेकर फेफडो मे आक्सीजन भरो। आक्सीजन से रक्त शुद्ध होता है।

३) प्रतिदिन दातो को साफ करो, स्नान करो।

४) अधिक मिठाइया, लालमिर्च, खटाई, अमचूर, आम का अचार, तली हुई चीजें, पकौडे, समोसे, चाय और सभी प्रकार के मादक द्रव्य बन्द करो।

५) दूध और फलो का सेवन करो।

६) ब्रह्मचर्य का पालन करो।

७) चेहरे पर कील मुहासे रक्त विकार से निकलते हैं। इन्हे दूर करने के रक्तशोधक का प्रयोग करो और मीट मछली अण्डे छोड-कर सात्विक भोजन करो।

८) चेहरे पर सन्तरे के छिलके निचोडकर मलो या बेसन मे जरा सी हल्दी और तेल मिलाकर मुह पर मलो, थोडी देर बाद मुह को ताजा पानी से धो लो।

ऐसा करने से एक महीने में आपका चेहरा निखर जाएगा अर्थात् सुन्दरता आ जाएगी।

देवराज आर्य मित्र वैद्य विशारद,
आर्यसमाज बल्लभगढ, १२१००४

भारतीय नव वर्ष मनाओ

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

अत्र, तत्र, सर्वत्र सनातन वैदिक धर्म ध्वजा फहराओ।
भारतीय नव वर्ष हमारा दो हजार पचास मनाओ॥

अति पुनीत धरती भारत की विश्वम्भरा उर्वरा बनाओ।
सौख्यधाम नयनाभिराम भारत मे सोना उपजाओ॥

देश काल की ओर निहारो करो सगठन प्रीति बढाओ।
कलुषित, कलह, कपट, कटुता उर अन्दर से मार गिराओ॥

ज्ञानज्योति जगमगा सकल जग से अज्ञान मिटाओ।
देश निवासी जन जन में चेतनता नई जवानी लाओ॥

पानी दूध समान परस्पर भारत वासी मिलो मिलाओ।
करो राष्ट्र रक्षा हिल मिलकर जन्मभूमि को शान बढाओ॥
भारतीय नव वर्ष मनाओ

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१ मैसर्ज परमानन्द साईंदित्तामल, भिवानी स्टेड, रोहतक।
२ मैसर्ज फूलचन्द सीताराम, गांधी चौक, हिसार।
३ मैसर्ज सन-अपन्ट्रेडज, सारग रोड, सोनीपत।
४ मैसज हरीश एजेंसीस, ४६६/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत।
५ मैसर्ज भगवानदास देवकीनन्दन, सराफा बाजार, करनाल।
६ मैसर्ज घनश्यामदास सीताराम बाजार, भिवानी।
७ मैसर्ज कृपाराम गोयल, रुडी बाजार, सिरसा।
८ मैसर्ज कुलवन्त पिकल स्टोर्स, शाप न० ११५, मार्किट नं० १, एन०आई०टी० फरीदाबाद।
९. मैसज सिगला एजेंसीज, सदर बाजार, गुडगाव।

महान् क्रांतिकारी–शहीदे आज़म सरदार भगतसिंह—

जिसने बलिदान का आदर्श पेश किया

२३ मार्च सन् १९३१ जिस दिन शहीदे आजम सरदार भगतसिंह को फासी पर लटकाया गया था उस दिन उसकी आयु २३ वर्ष ५ महीने और २६ दिन थी। उसका वकील श्री प्राणनाथ चोपडा ५ बजे शाम का समय था। सरदार भगतसिंह को और सभी को पता था कि फासी २४ मार्च को सवेरे दी जावेगी।

सरदार भगतसिंह ने अपने वकील से पूछा कि क्या वह कमनिस्ट लीडर लेनिन का जीवन चरित्र लाये हैं जिसे वह रात को पढना चाहता था। चोपडा साहब ने वह किताब सरदार साहब को दे दी। इस बार वह बहुत प्रसन्न हुए। चौपडा साहब ने बताया कि उस बहादुर की आवाज मे बडा जोश था। यह देखकर आश्चर्य होता था। उनके दिमाग मे चिन्ता की कोई बात नजर नही आ रही थी। ऐसा मालूम हो रहा था जैसे मौत कोई चीज नही है।

वकील प्राणनाथ ने सरदार जी से पूछा कि वह भारतवासियों को क्या सदेश देना चाहते हैं और कैसा महसूस कर रहे हैं। सरदार भगत सिंह ने उत्तर दिया कि वह बहुत प्रसन्नता महसूस करते है, मैं चाहता हू कि मे फिर भारत में ही जन्म लू और गुलामो के विरुद्ध इसी प्रकार लडता रहूँ और फासी पर लटकाया जाता रहू। मेरा मन शान्त है मैने अपने कर्तव्य का पालन किया है। लाहौर सेन्ट्रल जेल तो बन चुका है जहा हमे मिलने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं। आपने कहा कि मुझे मेरे देशवासियो ने इतना ऊचा बना दिया है। इसी समय भगतसिंह की मनचाही मिठाई, रसगुल्ले जो उसने मगवाए थे, आ गये और सबने बडे मजे ले-लेकर खूब खाये। साढे छ बजे सरदार जी ने लेनिन का जीवन चरित्र पढना आरम्भ कर दिया था, सात बजे सेन्ट्रल जेल के सभी अधिकारी फासी की कोठरियों मे आ धमके और कहा कि वह अपनी-अपनी कोठरियो से बाहर आ जावें। उन्हे फासी के लिए लेजाना है। सरदार भगतसिह जी ने हसकर कहा कि क्या आप इस पुस्तक का पहला चैप्टर पूरा पढ़ने देगे।

सरदार भगतसिह ने जेल के अधिकारियो को मीठे-मीठे शब्दो मे कहा कि आप हमे हथकडी न लगाये और न हमारी आखें व मुख काले कपडे से ढकें, हम खुशी से आपके साथ फासी लेने चलेंगे। भगतसिह बीच मे, उसके दाये राजगुरु और बायें सुखदेव एक दूसरे के गले मे हाथ डालकर इन्क्लाब जिन्दाबाद की ऊंची आवाज मे नारे लगाये और वह गाने लगे। दिल से निकलेगी न मरकर भी वतन की उल्फत,मेरी मिट्टी से भी खुशबू ए-वतन आयेगी। सारी जेल को एक घण्टे पहले बन्द कर दिया गया था। सबके वारडो मे इन्क्लाब जिन्दाबाद का नारा गूज उठा। इन तीनो देश भक्तो ने फासी पर मौजूद अग्रेज डिप्टी कमिश्नर को ऊची आवाज मे कहा कि मिस्टर मजिस्ट्रेट तुम भाग्यशाली हो कि तुम्हे फासो दिलाने का अवसर मिला है। आओ हम आपको दिखलाये कि भारत के क्रान्तिकारी किस प्रकार प्रसन्नता से अपने सर्वोच्च आदर्शों के लिए मृत्यु का आलिगन कर सकते है। यह कहकर तीनो ने अपना-अपना फन्दा फांसी का चूमकर अपने-अपने गलो मे डालकर इन्क्लाब जिन्दाबाद का नारा लगाकर शहीद होगये।

इन तीनो शहीदों की लाशो के टुकडे-टुकडे करके मिलिट्री के तैयार खडे ट्रको मे जिनमे मिट्टी के तेल के कनस्तर भी थे, लादकर जेल की पिछली दीवार तोडकर भगा ले गये। सतलज नदी के किनारे पर जिला फिरोजपुर में इन लाशो के टुकडों पर मिट्टी का तेल डालकर जला दिया गया और जल्दी-जल्दी सतलज में अधजली लाशो के टुकड़ों को फेककर भाग निकले।

लाहौर की सेन्ट्रल जेल के बाहर हजारो लोग जमा होगये थे। जिनका खयाल था कि फासी २४ मार्च को सवेरे लगेगी। जेल से बाहर लोगो को पता चल गया था कि उन सरफरोसो को ७ बजकर ३३ मिनट पर २३ मार्च को साय फांसी दे दी गई है और उनको लाशों को मिट्टी का तेल डालकर जला दिया गया है। चारो तरफ भगदड मच गई और अधजली लाश सतलज के पानी मे बहा दो गई है। गोताखोरो ने अध-जली लाशो के टुकडे निकाले और उनको लेकर लाहौर मे बहुत बडा जलूस निकाला गया।

२८ मार्च को अखिल भारतीय कांग्रेस का अधिवेशन कराची मे सरदार पटेल की अध्यक्षता मे होने जा रहा था, गांधी इरविन समझौता मे सारे देश को आशा थी कि भगतसिह और उसके साथियों की फासी उमर कैद मे तब्दील हो जावेगी परन्तु यह न हो सका। नौजवानो को गाधी जी पर गुस्सा था।

एक रेलवे ट्रेन महात्मा गाधी और कांग्रेसियो को लेकर कराची जा रही थी। नौजवानो ने रोक ली और गाधी जी को उन्होने कपडे के बनाये हुए काले फूल पेश किए। भारी जोश था। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अधिवेशन मे श्रद्धाजलि प्रस्ताव पेश किया। जिसमे उनकी बहादुरी और देशभक्ति की प्रशसा की गई और प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास कर दिया गया। नवयुवको ने कराची मे एक जलूस निकाला जिसमे लिखा गया था, देखो किस शान से जाता है सरदार का जनाजा।

सरदार भगतसिह का घर क्रान्तिकारियो का अड्डा था। जब १९०७ मे सरदार भगतसिह का जन्म हुआ उसका बाप किशनसिह, चाचा अजीतसिह, और दूसरे चाचा स्वर्णसिह जेलो मे बन्द थे। सरदार भगतसिह को देश प्रेम घुट्टी मे मिला था। पजाब केसरी लाला लाजपतराय उत्तरी भारत के बडे लोडर थे। 'सायमन कमीशन गोबैक" का एक बडे जलूस की रहनमाई की।

अग्रेजो की पुलिस ने जलूस पर जबरदस्त लाठी चार्ज किया। लाला लाजपतराय को छाती को काफी चोट लगी और वह १७ नवम्बर १९२८ को शहीद हो गये। उस समय सरदार भगतसिह ने लाला जी की राख अपने हाथ में लेकर प्रतिज्ञा की कि वह खून का बदला खून से लेगा। क्रान्तिकारियों की एक मीटिंग मे बदला लेने का प्रस्ताव किया गया। पूरे एक मास मे ही लाला जी के हत्यारे साडरस को सरदार भगतसिह चन्द्रशेखर इत्यादि ने गोली से उडाकर खून का बदला खून से ले लिया। अगले दिन लाल रंग के इश्तीहार दीवारों पर लगे देखे गए कि लाला जी के खून का बदला ले लिया गया। सरदार भगतसिह अग्रेजी ड्रेस में पंजाब से भाग जाने में सफल हो गया। अग्रेज इस कत्ल के मुलजिमों को गिरफ्तार न कर सके।

अखिल भारतीय रिपब्लिक आरमी की मीटिंग मे फसला किया गया कि जब तक नवयुवक फासी पर नही लटकाये जावेगे उस समय तक भारत के नौजवानो का खून नही खौलेगा। सरदार भगतसिह ने यह काम अपने जिम्मे लिया और उसने सैन्ट्रल असेम्बली में पहुचकर बम्ब फेका, वहा धुआ ही धुआ हो गया था और पम्पलेट फेके। यह बम्ब किसी को नुकसान पहुचाने के लिए नही फेका। यह अग्रेजों के बहरे कानों को खोलने के लिए फेंका है।

सरदार भगतसिह भागा नही बल्कि गिरफ्तार कर लिया गया। उस पर बिला दलील और वकील मुकदमा चलाकर क्रान्तिकारी सुखदेव और राजगुरु के साथ फासी की सजा दी गई। हम भगतसिह, राजगुरु, सुखदेव को श्रद्धाजलि अर्पित करते हैं। —शान्तिस्वरूप शर्मा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन ७२८७४) मे छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

रजि० नं० २३२०७/७३ पंजि० नं० P/RTK-४१ सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,०९३

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २० अंक १७ २८ मार्च, १९९३ वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल का कथन

"शराबबन्दी लागू नहीं की जावेगी" अत्यन्त भ्रामक एवं दुर्भाग्यपूर्ण

हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल का यह बयान अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है कि राज्य में शराबबन्दी लागू नहीं की जावेगी और यह कि हरयाणा में शराब, प्रदेश के विकास कार्यों से जुड़ा है। उनका यह कथन भी अत्यन्त भ्रामक है कि यदि सारे देश में शराबबन्दी की नीति अपनाई जाती है तो हरयाणा सबसे पहला राज्य होगा जो इसे लागू करेगा। वास्तविकता तो यह है कि श्री भजनलाल की शराबबन्दी जैसे जनकल्याण कार्यक्रम में न तो कोई आस्था है और न ही कोई चिन्तन। शराब जैसे खतरनाक पदार्थ के लगातार बढते प्रचलन को विकास कार्यों से जोड़ना, मुख्यमन्त्री की जनसाधारण के विरुद्ध एक सोची समझी चाल है। वे शराब के उत्पादन व सेवन को यह कहकर उचित ठहरा रहे हैं कि इसके बिना राज्य के विकास कार्य नहीं चल सकते हैं। गुजरात राज्य में शुरू से ही शराब की बिक्री बन्द है तथा कुछ समय पहले तमिलनाडू के ग्रामीण इलाकों में देशी शराब की दुकानें बन्द की गई हैं। क्या इन राज्यों में, शराब की बिक्री से प्राप्त होनेवाले राजस्व के बिना विकास कार्य नहीं चल रहे? वहां पर हरयाणा के मुकाबले कहीं अधिक विकास कार्यक्रम चल रहे हैं और फिर ऐसा विकास किस काम का जो लोगों को शराबी बनाकर और उनको बर्बाद करके उनको मिलता हो। यह तो विकास के नाम पर विनाश किया जा रहा है जनसाधारण का। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी तो यह कहते थे कि चाहे सारा देश अनपढ़ रह जाये या कंगाल हो जाये परन्तु वे यह कभी सहन नहीं करेंगे कि हजारों लोग शराबी बन जायें। उनका तो विचार था कि जिस दिन भारत स्वतन्त्र होगा उसी दिन से शराब सदा के लिए विदा हो जायेगी। काश कि यदि यह हो पाता। आजादी आने के बाद तो विभिन्न राज्य सरकारों ने शराब को खुलकर बढ़ावा दिया तथा हरयाणा भी इस दौड़ में किसी से पीछे नहीं रहा। संविधान के अनुच्छेद ४७ के अनुसार सभी नशीले पदार्थों पर पाबन्दी लगाये जाने के निर्देश हैं। परन्तु हरयाणा सरकार तो न गांधी की बात का आदर करती और न ही संविधान की परवाह। आज हरयाणा के लोग जान गये हैं कि सरकार शराब पिलाकर उनको बर्बाद करने पर तुली है और उन्होंने इस साजिश को नाकाम करने की ठान ली है। लेकिन सरकार इस जन भावना को भी मानने को तैयार नहीं। उसने ठेके बन्द करने हेतु पंचायतों के जितने प्रस्ताव मान लिये हैं, उतने ही नये ठेके अन्य गांवों में खोलने हेतु प्रशासन के माध्यम से पंचायतों पर दबाव डालकर उनसे प्रस्ताव लेने की कुचेष्टा की जा रही है। कैसा छलावा है यह लोगों के साथ। यह भी किया गया है कि शहरों के शराब ठेकों का कोटा अत्यधिक बढ़ाकर ठेकेदारों को छूट देदी गई है कि वे वहां से अवैध ढंग से गाड़ियों में शराब की पेटियां भरकर इन्हें गांव-गांव में फिकवाकर लोगों का सर्वनाश करने का सिलसिला जारी रखें। हरयाणा सरकार ने एक और कुचाल खेली है। अबतक यह नियम था कि एक बड़े ठेके के पांच किलोमीटर दायरे के भीतर ही, तीन ब्रांच ठेके खोले जा सकते थे। परन्तु अब यह नियम बना दिया गया है कि जिले में कहीं भी खुले बड़े ठेका की ब्रांच जिला के किसी गांव में खोली जा सकती है। ऐसा करने से छोटे ठेकों का जाल बिछा देने का काम आसानी से किया जा सकेगा और इससे शराबखोरी को बढ़ावा मिलेगा।

शराब का विषय तो राज्यों का है, न कि केन्द्र सरकार का। तो फिर श्री भजनलाल यह कैसे कह सकते हैं कि देश में शराबबन्दी लागू किये जाने पर वे इसे सबसे पहले हरयाणा में लागू करेंगे। उन्हें यह पहल करने से कौन रोकता है? शराबबन्दी तो हर राज्य सरकार को अपने-अपने यहां लागू करनी है और इससे होने वाले राजस्व घाटे की ५० प्रतिशत भरपाई केन्द्र सरकार द्वारा की जानी है। तथ्य तो यह है कि श्री भजनलाल का शराबबन्दी से कोई लेना देना नहीं। परन्तु जनता इस कार्यक्रम को अपने हाथ में ले चुकी है और वह शराब को प्रदेश से विदा करके ही मानेगी। १-४-९३ के बाद शहर व गांव दोनों में शराब के ठेकों के सामने धरने देने के साथ-साथ, शराब के कारखानों पर भी धरने दिये जायेंगे। शराबबन्दी का यह आन्दोलन, गांधी जी के सत्याग्रह के हथियार से चलाया जावेगा और अन्त में विजय जनता की ही होगी क्योंकि उसका पक्ष न्याय का है जबकि सरकार अन्यायपूर्ण स्थिति को ही बनाये रखने पर उतारू है।

विजय कुमार
संयोजक, हरयाणा शराबबन्दी समिति

पत्राचार (सत्यार्थप्रकाश) प्रतियोगिता
प्रथम पुरस्कार—११००० रु०

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली की ओर से महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थप्रकाश पर एक पत्राचार प्रतियोगिता प्रारम्भ की गई है। इसमें २० से ४० वर्ष की आयु के सभी ग्रेजुएट/स्नातक भाग ले सकते हैं। माध्यम हिन्दी अथवा अंग्रेजी रखा गया है। इच्छुक व्यक्ति २० रु० प्रवेश शुल्क मनीआर्डर द्वारा भेजकर अपना रोल न०, निर्देश एव प्रश्न पत्र मंगवा सकते हैं। रोल न० आदि मंगवाने की अन्तिम तिथि ३१ जुलाई १९९३ है और उत्तर पुस्तिकाएं पहुंचाने की अन्तिम तिथि ३१ अगस्त १९९३ है। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार क्रमश ११०००/-रु०, ५०००/-रु० और २०००/रु० रखे गये हैं। सत्यार्थप्रकाश विश्व की एक रोचक एवं सुप्रसिद्ध पुस्तक है और प्राय सभी पुस्तकालयों, मुख्य पुस्तकविक्रेताओं और स्थानीय आर्यसमाज कार्यालयों से प्राप्त की जा सकती है। पुस्तक न मिलने पर सभा से भी मंगवाई जा सकती है। डाक द्वारा मूल्य क्रमश हिन्दी ३०/-रु०, अंग्रेजी ६५/- संस्कृत, उर्दू, कन्नड, तमिल, जर्मन, चीनी, बर्मी एवं फ्रांसीसी भाषाओं का मूल्य मात्र ४०/ रु० प्रति निर्धारित किया गया है।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, सभा प्रधान

राष्ट्रीय सुरक्षा का प्रश्न——साम्प्रदायिकता का विषवृक्ष—२

वतन की आबरू खतरे में है ?

ले० सुखदेव शास्त्री महोपदेशक,
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

—गतांक से आगे—

भारत विभाजन के समय करोडो हिन्दुओं को भारत में आना पडा, लाखों लोग मारे गए। हजारो स्त्रियो का अपहरण किया गया। नोआखली में हजारो हिन्दुओ को मौत के घाट उतार दिया था। यह सब कुछ हुआ पाकिस्तान बनने पर। इसका कारण कुरान शरीफ की शिक्षाओ का ही परिणाम है।

प्रमाण के रूप मे कुरान शरीफ से कुछ उदाहरण देते हैं—

'व कातिलूहुम हत्तालातकूनो फितनतुन व यकूनुद्दीना कुल्लहू लिल्लाहे"।

अर्थात् लडो उनसे यहा तक कि न शेष रहे काफिरो (अमुस्लिमों) का उपद्रव व उनका वर्चस्व समाप्त हो जाए और सारा समुदाय अल्लाह के दीन मे (मत मे) मिल जाए। (अनुवाद शाह रफीउद्दीन) जलालेन को टिप्पणी—

काफिरों की हत्या करो यहा तक कि इस्लाम विरोधी कोई भी विचारधारा मतभेद का नामोनिशान तक बच न पाए और सर्वत्र अल्लाह का दोन कलमा पढनेवाला फल जाये, सूरते इनफाल आयत ९ में कहा गया है—

"सउलिकीफो कुलूबिल्लजीना कफरुर्रुब अजो फजरिबू फौकल्अ अनाके वजरिबू मिनहुम कुल्ला बनानिन"। अर्थात् मैं काफिरो (हिन्दुओ) के दिल मे आतंक डालूंगा अब मारो उनकी गर्दनो पर और काटो उनकी बोटी बोटी।

सूरते मुहम्मद ने फरमाया है—

"फइजा लकीतुमुल्लजीनाकफरु फजरब रिकाबिन हत्ताइजा अतख्खनतमूहुम —अर्थात्—फिर जब तुम भेंट करो उनसे जो काफिर हुए बस काट दो उनकी गर्दनें यहा तक कि चूर-चूर कर दो उनको।

सूरते कुरान में लिखा है—फलातुतइल काफिरीना व जाहदाहुम जिहादनकबीरा (सूरते कुरकान आयत २३)

और काफिरों का कहना मत मान बल्कि उनके साथ बडा जेहाद (धर्मयुद्ध) कर। तफसारे हुसैनी मे जिहाद को परिभाषा यो लिखी है—"याब कुरआन याब इस्लाम याब शमशीर याब तरके इताअते एशा।

अर्थात् कुरान, इस्लाम, या तलवार की ताकत के बल पर उनकी अधीनता छोड देना।

इस प्रकार मुसलमानो के मजहबी पुस्तक कुरान मे अनेक स्थानो पर काफिरों से—अमुस्लिमों से लडाई झगडा करते रहने का सख्त आदेश है, जिनका मुसलमान बहुत ही निष्ठा, आस्था एव प्रतिष्ठा के साथ पालन करते है। इसलिए मुसलमान धर्मनिरपेक्षता को कभी भी स्वीकार नहीं करते। क्योंकि इस्लाम मे स्पष्ट आदेश है कि कोई गैर मुस्लिम तुम्हारे पडोस मे भी जीवित न रहे, उसे विवश करो कि वह मुस्लिम हो जाए अथवा उसे कत्ल करके उसका सब कुछ लूट लो और अगर लुटने वाला ईश्वर की दुहाई दे तो कह दो—हम इस्लामी और पैगम्बर मुहम्मद के लिए ही लूट रहे हैं। इन्हीं कुरान की शिक्षाओ से प्रोत्साहित होकर भारत मे आनेवाले क्रूर आक्रान्ताओं द्वारा भारत मे रक्तरंजित विध्वंसकारी इतिहास को जन्म दिया था। आज भी उनके अनुयायियो द्वारा वही इतिहास अवसर पाते ही दोहराया जाता है। इस्लाम की इस क्रूर आंधी को दिशा समझने के लिए ही कुरान का पढना अनिवार्य है। मुस्लिम किसी भी देश का निवासी हो उसकी आस्था एव निष्ठा निश्चित रूप से इस्लाम के ही अनुरूप होती है। इसे कुरान मजीद को पढे बिना नही समझा जा सकता।

कुरान शरीफ को शिक्षाओ का प्रचार-प्रसार सर्वप्रथम अरब देश मे ही हुआ था, अतएव वह अरबी भाषा में ही लिखा गया। जब मुस्लिमो की मजहबी किताब विदेशी है तो उनकी राष्ट्रीय निष्ठा भी भारत से बाहर मक्का व मदीना में स्थित है। उनकी राष्ट्रीयता की वफादारी भी विदेशी भी है भारतीय की दृष्टि से उनका मजहब इस्लाम भी विदेशी है। इस्लाम के संस्थापक माननीय मुहम्मद साहब भी विदेशी हैं। इस्लाम का प्रमुख सर्वोपरि केन्द्र "मक्का-मदीना" भी भारतीयता की दृष्टि से विदेशी है। इसी कारण से भारतमें पैदा होनेवाला मुसलमान अपनी प्रत्येक पहचान विदेशी राष्ट्र अरब मे स्थित "मक्का-मदीना" से जोडना चाहता है।

भारतीयता की अपेक्षा अरेबियन राष्ट्रियता को ही महत्त्व देता है। अरबो के अनुसार ही अपना खान-पान, रहन-सहन बनाकर विदेशीपन में ही गोरव मानता है। प्रत्येक मुस्लिम अपनी सबसे प्रिय वस्तु को कुर्बानी देकर भी विदेशी मक्का-मदीना की हज यात्रा की आशा लगाए रहता है। और गीत गाता रहता है— मेरे मौलाना मक्का मदीना बुला ले मुझे। भगवान् उनकी यह इच्छा पूरी कर दे तो यहा पर साम्प्रदायिकता से पिण्ड छूट सकता है। अपने देश भारत मे स्थित महातीर्थों पर दो कदम चलकर भी नही जाना चाहता। भारतीयो के महापुरुषो को मन्दिरों में स्थित मूर्तियो को यह काफिरों की ही मूर्ति समझता है। जबकि इन्हे विदेशी पत्थर "संगे असवद" चूमने व मस्जिद की परिक्रमा मे मूर्तिपूजा नजर नही आती। मक्का मदीना मे स्थित "आबे जम जम" तालाब का पानी पवित्र है किन्तु गगा, यमुना आदि पवित्र नदियों का सदा प्रवाहित धाराओं का पवित्र जल अपवित्र दिखाई देता है।

जो समुदाय जन्म से ही विदेशी राष्ट्रियता धारण किए बैठे हैं वे भारत की किसी भी वस्तु अथवा महापुरुषों को अपना पूज्य कैसे मान सकते हैं। राम, कृष्ण महर्षि दयानन्द के प्रति उनकी आस्था कैसे हो सकती है। यदि वे समुदाय भारत को अपना देश, भारतीय राष्ट्रियता में आस्था, भारतीय राष्ट्रीय नेताओं के प्रति सम्मान करना यदि स्वीकार कर ले तो इनका विदेशीपन समाप्त होकर साम्प्रदायिकता भी समाप्त हो सकती है। वे भारत की मुख्यधारा में रहकर यहा सम्मान के साथ अन्य भारतीयों के समान ही जीवन यापन करे। अपने मजहब का पालन सम्मान के साथ करते रहे। इसमे किसी को क्या आपत्ति हो सकती है। वे भी भारतीय भाई ही हैं।

वे भी हिन्दुओ के समान ही मतनिरपेक्ष बन जाए तो कोई भी साम्प्रदायिक दगा सम्भव नही हो सकता है। वे कुरान शरीफ की आज्ञा मानें, मस्जिदो मे नमाज पढे, किन्तु विवेक से काम लें। जैसे हिन्दू अन्धविश्वास से 'पीर की मजार" पर चादर चढाकर दीपक जलाता है। गिरजाघरो, गुरुद्वारों की शोभा बढाता है, मजारों, कब्रो, गिरजाघरो गुरुद्वारों से मिलनेवाले 'प्रसाद' को पाकर अपने को धन्य समझता है। यदि इसी प्रकार मुस्लिम, ईसाई भी हिन्दुओं के मन्दिरों में दर्शनों के लिए जाने लगें तो साम्प्रदायिक सद्भाव पैदा हो सकता है। यदि आर्यसमाज मन्दिरों में आकर वेद प्रवचनों व यज्ञों में भाग लेने लगें तो धर्मनिरपेक्षता, साम्प्रदायिकता स्वयमेव समाप्त होकर 'सर्वे भवन्तु सुखिन' हो सकते हैं। इसे ही धर्म समभाव कहते हैं। इसे मानकर कोई भी अल्पसंख्यक न रहकर सभी भारतीय भाई बन जाएंगे। समान संविधान लागू होने पर किसी का भी 'पर्सनल ला" स्वयमेव समाप्त हो जायेगा। भारतीय त्यौहारों को भी मुस्लिम स्वीकार करें। तभी एकता सम्भव है। तभी वतन की आबरू खतरे मे न होकर सम्मान में बदल जायगी।

दूसरे साम्प्रदायिकता को बढावा देनेवाले मुस्लिम नेता भी जलती में घी का काम करते हैं। इस्लाम खतरे में है, का नारा देकर मुसलमानो को भारतीय राष्ट्रीय धारा मे शामिल नही होने देते। आजादी मिलने से पहले भी ये लोग साम्प्रदायिकता को भडकाते रहते थे। यहां तक कि भारतीय नेताओं को भी काफिर का दर्जा देकर मुस्लिम भावनाओ को भडकाकर अपना नेतृत्व मुसलमानो मे कायम रखते थे।

क्रमशः

हरयाणा में शराबबन्दी सत्याग्रह की गतिविधियां—

जसिया जिला रोहतक में शराब का ठेका बन्द

सर्वहितकारी के अताक मे जसिया जिला रोहतक में शराब के ठेके पर ६ मार्च से धरने का समाचार प्रकाशित किया था। यहा सभा के अधिकारी सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह, मन्त्री श्री सूबेसिह तथा श्री धर्मचन्द तथा सभा उपदेशक श्री अतरसिंह क्रान्तिकारी भी पधारे थे। और धरने पर बठे शराबबन्दी तथा भारतीय किसान यूनियन को सम्बोधित करते हुए प्रोत्साहन दिया था और जिलाधीश महोदय से भेंट करके इस ठेके को तुरन्त बन्द करने की माग की थी। सभा की ओर से ग्राम मे शराब पीने की हानियो के पोस्टर तथा साहित्य वितरित किये गये। सभा के प्रचारक श्री रतनसिंह आर्य भी २३ मार्च धरने पर बैठे। धरने पर बैठे सत्याग्रहियों ने ठेके पर एक भी बोतल नही बिकने दी।

परिणामस्वरूप शराब के ठेकेदार ने दिनाक २४ मार्च को ठेका बन्द किया और अपनी पेटियाँ आदि एक ट्रक मे भरकर कही ले गया। दुकान खाली करके पचायत को सौंप दी गई। इस प्रकार ग्राम साघी तथा जसिया के आर्य किसान भाइयों के परिश्रम के कारण १६वें दिन विजय प्राप्त हुई। इस विजय की प्रसन्नता मे ग्राम मे मिठाई बांटी गई।

जगवन्तसिंह प्रधान भा० कि० यू० साघी

सोनीपत में शराब के ठेकों की पुनः नीलामी होने पर विरोध प्रदर्शन

२ मार्च को जिला सोनीपत के शराब के ठेको की नीलामी स्थल पर आर्यसमाज तथा शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओ की ओर से जोरदार विरोध प्रदर्शन किया था, जिसके कारण ठेकेदारो ने पूरे ठेको की नीलामी मे भाग नही लिया था। अत सरकार की ओर से १३ मार्च को पुन नीलामी करने की घोषणा की, इसके अनुसार श्री ओमप्रकाश सरोहा ने आर्यसमाज, शराबबन्दी तथा भारतीय किसान यूनियन के लगभग २५०० कार्यकर्त्ताओ के साथ विरोध प्रदर्शन करने गये। जिला उपायुक्त ने गुप्तरूप से नीलामी की तिथि १३ मार्च बदलकर १५ मार्च निश्चित की। इसकी सूचना विलम्ब से मिली तथापि १५ मार्च को सभा के उपमन्त्री डा० सोमवीर, चौ० धर्मचन्द सभाउपदेशक श्री धर्मवीर आर्य, श्री मनजीतसिंह सहित रोहतक से सोनीपत मे नोलामी स्थल पर विरोध करने के लिये पहुच गये। इस अवसर पर श्री ओमप्रकाश सरोहा भी अपने साथियो के साथ सम्मिलित होगये। पुलिस ने २८ सत्याग्रहियो को हिरासत मे लेकर पुलिस लाइन मे बन्दी बना लिया। नीलामी होने पर ही इन्हे रिहा किया गया।

अम्बाला में भी पुन. नीलामी पर विरोध प्रदर्शन

दिनाक १७ मार्च को अम्बाला मे शराब के ठेको की नीलामी के समय इसके विरोध मे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से बडी सख्या मे आये नर-नारियों द्वारा प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शनकारियों के जलूस की अगवानी श्री विजयकुमार जी, सयोजक हरयाणा शराबबन्दी समिति तथा डा० वेणीप्रसाद जी प्रधान, आर्यसमाज, नारायणगढ ने की। इस अवसर पर पुलिस का पूरा बन्दोबस्त किया गया था। जी० टी० रोड पर आ रहे प्रदर्शनकारियों की दो ट्रैक्टर ट्रालियो को तो पुलिस ने बस अड्डे के पास ही रोक लिया। परन्तु नारायणगढ से बडी संख्या मे आनेवाले लोग, दूसरे मार्ग से चलकर, नीलामी स्थल के पास पहुचने में सफल होगये। शराब के विरुद्ध नारो से आसमान गूज उठा। प्रदर्शनकारी हाथों में ओ३म् के ध्वज व शराब विरोधी पोस्टर तथा बेनर्ज लिये एक बडे जलूस के रूप मे नीलामी स्थल की ओर बढ रहे थे। परन्तु पुलिस के दल बल ने इन्हें नीलामी मंच तक नहीं पहुचने दिया। इसके समीप ही शराबबन्दी सैनिकों के इस समूह को डा० वेणीप्रसाद जी व श्री विजयकुमार जी ने सम्बोधित करते हुए, हरयाणा सरकार को चेतावनी दी कि वह ठेकों की नीलामी तो बेशक कर ले परन्तु १-४-९३ से इन ठेकों को किसी कीमत पर चलने नहीं दिया जाएगा।

इसके बाद सभा की ओर से सारे हरयाणा राज्य मे दिनाक १-४-९३ से शराब की सभी दुकानें व कारखाने बन्द करने की माग करते हुए, मुख्यमन्त्री हरयाणा के नाम सम्बोधित एक ज्ञापन उपमण्डल अधिकारी (ना०) अम्बाला को दिया गया। साथ ही तहसील नारायणगढ के गांव उजलमाजरी के लोगों की ओर से एक ज्ञापन देते हुए कहा गया कि उनके गांव में अब कोई ठेका नही है और १-४-९३ से भी वहां शराब ठेका न खोला जाये। इस शराब विरोधी प्रदर्शन के सफल आयोजन में आर्यसमाज नारायणगढ तथा वहा के पास के गाव के लोगो का तथा ग्राम लण्ढी के आर्य युवक सुरेन्द्रसिह की मुख्य भूमिका रही। आर्यसमाज नारायणगढ की ओर से प्रदर्शनकारियो के लिए भोजन भी साथ लाया गया और आर्य महिला महाविद्यालय, अम्बाला छावनी की ओर से उनके भवन मे इन्हे चाय पिलाई गई। इससे पहले अम्बाला में शराब के विरोध मे कभी इतना तगडा प्रदर्शन नही किया गया।

बहादुरगढ़ पुलिस का निन्दनीय कार्य

११ मार्च को रोहतक मे शराबबन्दी एवं आर्यसमाज के सत्याग्रहियों पर अन्धाधुन्ध लाठी चार्ज करने के बाद सभा के नेता प्रि० गुणसिंह, ग्राम लाखनमाजरा के सरपच श्री रामप्रसाद तथा कामरेड रघुबीरसिंह आदि को बस मे बैठाकर बहादुरगढ थाना मे ले गई और थोडी देर बाद सभी को रिहा कर दिया, परन्तु किसी भी सत्याग्रही को वापस छोड़ने की व्यवस्था नहो की गई। इस प्रकार पुलिस ने शराब रूपी जहर छुडानेवाले सत्याग्रहियो को परेशान करके निन्दनीय कार्य किया है जबकि रोहतक से गये सत्याग्रहियों को बेरी थाने की पुलिस ने वापिस झज्जर तथा रोहतक छोडा था।

—केदारसिंह आर्य

१ भिवानी मे शराब के ठेको की नीलामी के अवसर पर विरोधप्रदर्शन के पश्चात् सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह उपस्थित सत्याग्रहियो को सम्बोधित कर रहे हैं। उसके साथ सभा के मन्त्री श्री सूबेसिंह जी आदि मंच के पास खडे हैं। उनके पोछे शराबियो के लिए घाघरा लटका दिखाई दे रहा है।

२ रोहतक मे प्रदर्शन करते हुए सभा उपमन्त्री डा० सोमवीर जी तथा सभा के गणक श्री ओमप्रकाश शास्त्री तथा मा० रूपचन्द सरपच ग्राम ढकी आदि पुलिस की लाठियों से घायल होगये।

श्री ओमप्रकाश शास्त्री

मा० रूपचन्द सरपच

शराब ठेका खोलने का विरोध

भिवानी। लोहारू के गांव सलिमपुर में सरकार द्वारा शराब का नया ठेका खोलने का भारी विरोध हो रहा है। पांच गावों की यहां सम्पन्न हुई बैठक की अध्यक्षता पूर्वमंत्री श्री हीरानन्द आर्य ने की। बैठक मे निर्णय लिया गया है कि कोई भी व्यक्ति अपनी जमीन या मकान ठेके के लिए नही देगा। यदि कोई ऐसा करता है तो उस पर एक लाख रुपया जुर्माना होगा। पचायत ने उपायुक्त, जिला आबकारी व कराधान उपायुक्त को प्रस्ताव पास कर भेजा है, जिसमें कहा गया है कि गाव सलिमपुर मे ठेका नही खुलने दिया जायेगा।

बैठक मे वर्तमान विधायक श्री चंद्रभान तथा प अमोलाल की अध्यक्षता व सचिव रूप मे एक समिति पाच गावों की गठित की है, जिसमे सरकार से विरोध कर ठेका हटवाने के अख्तियारात दिये हैं।

बाद मे श्री आर्य ने आरोप लगाया कि सरकार व प्रशासन ने दबाव देकर बरालू व सलिमपुर गावो मे ठेके खोले हैं जबकि पचायत के प्रस्ताव के बिना ठेके नही खुलते। श्री आर्य ने कहा कि वे प्रशासन के इस कृत्य की कड़ी निंदा करते हैं। श्री आर्य ने बताया कि सरकार द्वारा ३७ पुराने ठेकों मे से देहात मे २० बन्द किये परन्तु १७ नये ठेके खोल भी दिये सर्वखाप पचायत सुबह ११ बजे लालबहादुर शास्त्री पार्क में होगी। (दैनिक नवभारत)

शराब का ठेका नहीं चलने देंगे

बाबैन, २४ मार्च। ३० गावों मे शराबबन्दी अभियान इस समय जोरो पर हैं। सभी गावो में कमेटियां बना दी गयी है। समिति ने यह स्पष्ट घोषणा की है कि बाबैन और आसपास किसी भी गांव मे शराब का ठेका नही खुलने दिया जायेगा। इसके लिए चाहे समिति को कोई कुर्बानी देनी पड़े। (जन सदेश)

शराब विरोधी आन्दोलन का समर्थन

हरयाणा महिला सभा की राज्य महासचिव शकुन्तला सखुन ने अपने एक प्रेस बयान मे हरयाणा में चल रहे शराब विरोधी आदोलन का समर्थन करते हुए, कुरुक्षेत्र में शराब के ठेकों की नीलामी के विरोध में महिला प्रदर्शनकारियो पर पुलिस लाठीचार्ज की कड़े शब्दो मे निन्दा की है।

उन्होने कहा कि हरयाणा मे मजबूती पकड़ रहे शराब विरोधी आदोलन को प्रशासन सुनियोजित ढग से दबाना चाहता है क्योंकि राजनेताओ ने खुद मुख्यमन्त्री के कृषि मत्री हरपाल सिह व अन्य राजनीतिक लोगो के शराब के ठेके खुलेआम चल रहे हैं जिनसे ये लोग करोड़ रुपये तो कमा ही रहे हैं साथ ही राज्य की जनता का शारीरिक व आर्थिक शोषण भी कर रहे हैं।

उन्होने कहा कि अपने भाषणो मे नैतिकता की दुहाई देने वाला प्रशासन खुद ही शराब को बढावा देकर जनता को अनैतिक क्यों बनाना चाहता है। (दैनिक जनसन्देश)

ठेके के सामने धरना देने का फैसला

जीद, २३ मार्च। निकटवर्ती गाव इगराह में भाकियू के कार्यकर्ताओ ने एक मीटिंग करके फैसला किया है कि शराब के ठेके के सामने धरना दिया जाए। भारतीय किसान यूनियन के प्रधान नफेसिंह का कहना है कि इगराह मे किसी भी त्यौहार पर ७०-८० हजार रुपये की शराब पी ली जाती थी, परन्तु इस बार होली पर किसी ने शराब नही खरीदी। गाव मे जो आदमी पीकर हो-हल्ला करते थे, वह भी अब बन्द हो गया है।

शराब पीने वाले पर १०० रुपये जुर्माना तथा बेचने वाले पर ५०० रुपये जुर्माना किया जाएगा। (दैनिक राष्ट्रीय सहारा)

आवश्यकता है

आर्यसमाज महम के लिए एक अनुभवी होम्योपैथिक डाक्टर की आवश्यकता है। तुरन्त मिले।

वेतन—योग्यतानुसार दिया जावेगा।

रत्नप्रकाश आर्य, मन्त्री आर्यसमाज महम, रोहतक

गांव मे जबरदस्ती ठेका नहीं खुलने देंगे ग्रामीण

अजायब (रोहतक), २४ मार्च। जिला रोहतक के महम तहसील के गाव अजायब के ग्रामीण लोग अपने यहा शराब का ठेका न खुलने देने के लिये जूझ रहे हैं, जबकि सरकारी प्रशासन हर हाल में यहां लाल जहर बेचने देना चाहता है। आठ हजार की आबादी वाले इस गांव के इतिहास मे शराब का ठेका पहले कभी नही खुला।

इस गाव से लगते मदीना गांव में शराब का ठेका था, जहा साल में लाखो रुपये की शराब ग्रामीण लोगों के हलक से उतार दी जाती थी। मदीना लोक निर्माण मत्री आनन्द सिह दांगी का पैतृक गाव है। अब ठेका मदीना से तो हट गया है, लेकिन उसे अजायब मे शिफ्ट किया गया है। रोहतक में हुई शराब के ठेकों की नीलामी में अजायब का ठेका ३५ लाख का उठा है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि ग्रामीण जनता का नाश करने के लिये सरकार कमर कसे हुए है।

गाव में ठेका न जमने देने के लिए चौपाल, थाई से लेकर पनघट से पानी भर कर लाती महिलाओ में विरोध और आक्रोश लहरा रहा है। इस गाव मे दो पचायतें हैं। अजायब खास की पचायत (पाने वाली) ने ठेका खुलने का प्रबल विरोध किया है। सरपंच उम्मेदसिंह ने जोर देकर कहा कि किसी भी सूरत मे ठेका यहा नही जमने दिया जायेगा। हमारी पचायत ने ठेके के लिए कोई प्रस्ताव नही भेजा था।

गाव के तमाम शिक्षित युवा इस ठेके का प्रबल विरोध कर रहे हैं। उनका कहना है कि नीलामी के बावजूद ठेका यहा किसी हालत मे नहीं खुलने दिया जाएगा। यदि सरकार ने जोर-जबरदस्ती की, तो ठेके को आग लगा दी जाएगी।

गाव की पढने वाली स्कूली छात्राओ ने बातचीत में इस सम्वाददाता से कहा कि बदमाश लोग शराब पीकर यहा सरेआम गाली-गलौच करेंगे। छेड़खानी बढ़ेगी। हमारा घरों से निकलना मुश्किल हो जायेगा।

गाव के पूर्व सरपच किताब सिंह सहरावत ने आक्रोश में कहा कि यह कुकर्म किसी भी कीमत पर नही होने दिया जाएगा। यदि ठेका खोलने की कोशिश की गयी तो उसके गम्भीर परिणाम होंगे। गाव के बडे बूढे बुजुर्गों ने कहा, 'या नास की राही अड़ै नही घलण दयागे।'

नीलामी के बावजूद गाव मे शराब के ठके का विरोध करने एव गाव मे शराबबन्दी आन्दोलन को गति देने के लिए पूरे गाव ने सामूहिक रूप से एक बैठक की है। एक समिति भी गठित की गयी है। (दैनिक नवभारत टाइम्स)

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ मे छात्रों का प्रवेश

अरावली पर्वत की शृखला (दिल्ली मथुरा मार्ग पर) बदरपुर बार्डर से एक किलोमीटर दूर सराय ख्वाजा निकट सूरजकुण्ड जिला फरीदाबाद में अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ मे कक्षा चौथी से दसवी तक प्रवेश प्रारम्भ है। यहा पर गुरुकुल कागडी विश्व विद्यालय हरद्वार का पाठ्यक्रम लागू किया है। सभी शिक्षक ट्रेण्ड तथा अनुभवी हैं। यह गुरुकुल आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा चलाया जा रहा है।

गुरुकुल मे छात्रावास, यज्ञशाला, पुस्तकालय तथा व्यायामशाला की व्यवस्था है। यहा छात्रों के दिन रात रहन-सहन, आचार-व्यवहार स्वास्थ्य चरित्र निर्माण तथा धार्मिक शिक्षा के साथ छात्रों के सर्वांगीण विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता है। गतवर्ष आठवीं श्रेणी का परिणाम शतप्रतिशत रहा है। शिक्षा नि शुल्क । भोजन शुल्क केवल २००) मासिक है।

अत आप अपने बालकों को सदाचारी तथा सुयोग्य बनाने के लिए गुरुकुल में शीघ्र से शीघ्र प्रवेश करवाकर उनका उज्ज्वल भविष्य बनाये। स्थान सीमित हैं। तुरन्त सम्पर्क करें।

आचार्य गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जि० फरीदाबाद
(प्रो० नई दिल्ली-४४) फोन ''८/२७५३९८

गुरुकुल भैंसवाल के उत्सव पर शराबबन्दी सम्मेलन

दिनाक २०, २१ मार्च १९९३ को विद्यापीठ गुरुकुल भैंसवाल कलां जिला सोनीपत का ७३वां वार्षिक महोत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया गया जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के रत्नसिंह आर्य उपदेशक, स्वामी देवानन्द की भजन मण्डली, प० रामरत्न भजनोपदेशक, चौ० ईश्वरसिंह जी के शिष्य सरदारसिंह, सुखलाल की मण्डली पहुंची जिन्होंने अपने भजनों द्वारा जनता के मन को मोह लिया । २१ मार्च को मान्यवर प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा व पूर्व रक्षामन्त्री भारत सरकार पधारे और उनकी अध्यक्षता मे शराबबन्दी सम्मेलन रखा गया । प्रो० साहब ने उपस्थित जनता से अपील की कि हरयाणा भारतवर्ष का एक विकासशील और प्रसिद्ध प्रान्त था परन्तु हरयाणा के राजनीतिज्ञ लोगो ने बिककर आया राम गया राम की मिशाल कायम करके हरयाणा को कलंकित कर दिया और जो हरयाणा दूध दही घी खाने में मशहूर था । सर्वप्रथम चौ० बंसीलाल ने हरयाणा में शराब का प्रचलन आरम्भ कर दिया और चौ० देवीलाल एवं चौटाला ने शराब के ठेकों के पास अहाते मजूर कर दिये और शराब की बोतल पर पचायत का एक रुपया कमीशन बाध दिया जिसको चौ० भजनलाल ने दो रुपया बोतल कर दिया । इस प्रकार हरयाणा के तीनों लालो ने हरयाणा का नाश कर दिया । जब आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने हरयाणा को शराब की अग्नि में जलता देखा तो ६, ७ वर्ष पूर्व शराबबन्दी अभियान चलाया और पूरा सघर्ष किया जिसका परिणाम आज सारी जनता मे चेतना आई । अब हमारे किसान यूनियन वाले भाई भी हमारे साथ कधे से कधा मिलाकर चल रहे हैं जिनका हम धन्यवाद करते हैं और इस समय जगह-जगह शराब के ठेको पर धरने चल रहे हैं जिनसे ठेकेदार भी भयभीत हैं और सरकार भी थर्रा गई है। अब को बार बन्द कमरों मे बोली दी फिर भी हमारी सभा ने और किसान यूनियन वाले भाईयो ने हर जगह विरोध प्रदर्शन किया । इनमे हजारो की सख्या में लोग शामिल हुए। रोहतक मे हजारो पुलिसवाले भी शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओ को नहीं रोक सके और पुलिसवालों ने बोखलाकर जनता पर लाठीचार्ज और अश्रुगस छोडी जिसमे महिलाए भी शामिल थी । इस अवसर पर कई कार्यकर्ताओ को गहरी चोट आई। यह इस सरकार के जुल्म की हद है। हमने सरकार को समय पर ३२५ पचायतो के प्रस्ताव पास करवाकर भेजे थे जिनमे से २५ मजूर किए थे और अब आपकी शक्ति से डरकर वह ३०० भी मजूर कर दिए। परन्तु अब आप यह मत समझना कि काम बन गया अगर आप ढोले पड गये तो यह सरकार फिर ठेके खोल देगी इसलिए इसी तरह डटे रहना। एक वर्ष मे बेडा पार हो जाएगा । भजनोपदेशको ने शराब की बुराई के भजन सुनाए जिनका लोगों पर बडा प्रभाव पडा ।

गुरुकुल के सभी स्नातको ने अपने भाषणो मे कहा कि इस गुरुकुल ने आर्यसमाज के हर आन्दोलन मे भी गुरुकुल के अधिकारी, स्नातक और ब्रह्मचारी बढ-चढकर भाग लेंगे। श्री कपिलदेव शास्त्री पूर्व सासद ने अपने भाषण मे कहा यह महात्मा भक्त फूलसिह जी की तपोभूमि है। हम इस आन्दोलन मे ही क्या आर्यसमाज की हर आवाज पर भक्त जी के नाम को ऊचा रखेंगे। सुखदेव जी शास्त्री महोपदेशक ने दो दिन तक अपने ओजस्वी भाषण दिये जिनसे लोग गद्गद हो गए । जलसे से प्रभावित होकर लोगो ने दिल खोलकर गुरुकुल को दान दिया। उपकुलपति चौ० शेरसिह एव गुरुकुल महासभा के प्रधान चौ० हरदेराम जी दोनों दिन जलसे मे उपस्थित रहे । महासभा के महामन्त्री चौ० धर्मवीर शास्त्री ने बडी चतुराई से जलसे की सारी कार्यवाई पूरी की। आचार्य जी व मन्त्री जी ने आनेवालों की बडी सेवा और सम्मान किया जिससे सब खुश होकर गए। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को एक हजार रु० वेदप्रचारादि के लिए दिये गये।

आर्यसमाज स्थापना दिवस पर विशेष

पर्वों को प्रेरणाप्रद बनावें

पर्व और त्योहार प्राय प्रत्येक वर्ग, देश व सम्प्रदाय में मनाये जाते हैं। सबकी मान्यताए अपनी-अपनी हैं और मनाने के तौर-तरीके भी भिन्न हैं। जीवन मे सरसता प्रदान करते हैं ये उत्सव। त्योहारों के साथ कोई घटना, अवसर अथवा किवदन्ती जुडे होते हैं। मनानेवाले उन सब कारणो को स्मरण करते रहते हैं। हमारे हिन्दू समुदाय मे त्योहार व पर्वों की बहुत लम्बी सूची है। जितने पथ व सम्प्रदाय इस समुदाय मे बढते गये उसी के साथ नये-नये उत्सव आनन्द के प्रसग जुडते गये कुछ त्योहार ऐसे हैं जो प्राचीनकाल मे ऋषि-मुनियो द्वारा समयकाल की अपेक्षा से प्रचलित किये गये थे और कालान्तर मे उनके साथ-साथ नयी-नयी घटनाए—काल्पनिक एव वास्तविक भी सम्मिलित होती गयी। जिस प्रकार पुराने वटवृक्ष की मूल जडे नयी-नयी जडो मे ढूढने से नही मिलती, उसी प्रकार हमारे प्राचीन त्योहारों की मूल भावना अर्वाचीन किस्से कहानियो मे लुप्तप्राय हो गई हैं। नई फसल के अवसर के लिए निर्धारित होली व दीवाली का प्राचीन स्वरूप अब किसको याद है। चतुर्मास मे आनेवाले रक्षाबन्धन का इतिहास ही बदल गया है। विजयदशमी की प्रसगिकता अब रामलीला व दुर्गा पूजा से इतर नही रही।

इस तरह के प्राचीन त्योहार आर्यसमाज को भी प्रिय हैं, क्योंकि इन सबमे हमारी सस्कृति निहित है। बडे उत्साह से मनाने का मन रहते हुए भी वर्तमान परिपेक्ष्य मे बहुत सोच-समझकर हम अपना कर्तव्य निभा पाते है। पवित्र त्योहारो के साथ अपवित्र कर्म चिपक गए हैं। खुशी के जोश मे होश भुला देने की प्रक्रिया जो चल पडी हैं उसमे से बच निकलकर आर्य अपने आर्यत्व की परिधि मे जो कर सकता है करता है। जिस पर अपना पूरा अधिकार नही है वैसे त्योहारों की चर्चा न करके अपने कुछ नवीन पर्वों की उपयोगिता पर विचार करना चाहिए। महर्षि की याद मे ऋषि बोधोत्सव और निर्वाण दिवस मनाये जाते हैं। आर्यसमाज स्थापना दिवस हमारे मुख्य पर्वों मे हैं। तीनों पर्वों पर हम यज्ञ हवन करते हैं। सभा का आयोजन करते हैं। सभा मे अधिकतर वक्ता महर्षि के गुणगान करते हैं। आर्यसमाज की विशेषताओ को भी याद कर लिया जाता है। आर्यसमाज से बाहर का कोई राजनैतिक अथवा सामाजिक व्यक्ति हमारी वेदी से ऋषि के प्रति कुछ उद्गार प्रकट करता है तो हम धन्य हो जाते हैं। तालियों की गडगडाहट और शान्ति पाठ के साथ हमारा पर्व सफल मान लिया जाता है।

अब जरा विचार तो करो वर्ष मे एकबार आनेवाले पर्व को दो-तीन घण्टो के भाषणो से इतिश्री मान लेना हो क्या पर्याप्त है। इतने से ही क्या कर्तव्य पालन होता है तब गाधी जी की समाधि पर फूल चढानेवालो मे और हमारे मे अन्तर क्या है। ऋषि का गुणगान होना चाहिये। गुणगान हमारी श्रद्धाभक्ति का परिचायक है। स्वामी जी ने लिखा है कि स्तुति का फल प्रीति है। ऋषि की स्तुति करने मे और सुनने मे बहुत आनन्द की अनुभूति होती है। कई बार ऋषि जीवनी सुन-सुन करके मन में श्रद्धा की तरग बहने लगती है। परन्तु यह सब सुनना-सुनाना ठीक वसा ही है जैसा किसी पण्डित जी से रामकथा सुनकर गद्-गद् हो जाना। याद रहे रामकथा हो अथवा ऋषि कथा जिसके सुनने से जीवन मे परिवर्तन नही आया तब समय की बरबादी के सिवाय क्या कहेगे। महर्षि सत्यार्थप्रकाश मे लिखते हैं—'जो केवल भाड के समान परमेश्वर के गुणकीर्तन करता जाता और अपने चरित्र नही सुधारता उसका स्तुति करना व्यर्थ है।'

आर्य समाज जो काम करता है व युक्ति सगत मानकर करता है। अंध परम्परा, अन्ध श्रद्धा आर्यों के स्वभाव मे नहीं है।

आर्य समाज के हम सदस्य हैं। ऋषि का लगाया यह पौधा बहुत पुराना नही है। इस शताब्दी के अन्त तक मात्र १२५ वर्ष का हो जायेगा। इस अल्प अवधि मे विश्व भर मे आर्यसमाज का स्थान कितना महत्वपूर्ण बन गया यह शोध का विषय है। कितने रूपो में इसे जाना जाता है यह भी इसके सर्वांगीण विकास की कहानी है। यदि हम इसे सस्था कहे तो वास्तव मे सस्था है क्योंकि इसका अपना विधान है जिसके अनुसार सदस्य बनते हैं–सभायें होती हैं अधिकारी चुने जाते हैं और निर्धारित अवधि के पश्चात् निर्वाचन बदलते रहते हैं। कहीं कोई गुप्त डम नहीं है। मताधिकार का प्रयोग इस सस्था ने आरम्भ किया है सम्भवत कोई भारतीय सस्था इससे पुरानी नहीं है। आर्यसमाज की सस्था ने अपने अधीनस्थ कितनी सस्थायें खडी कर दी हैं यह भी एक कीर्तिमान है।

यदि आर्यसमाज को एक आन्दोलन के नाम से जाना जाये तब भी यह सर्वथा उपयुक्त है। अन्ध-विश्वास और अन्याय के विरुद्ध इसका सघर्ष चलता रहा है। जाति-पाति छुआछूत आदि राष्ट्रीय अभिशापो को मिटाने में बहुत शक्ति लगायी है आर्यसमाज ने। शिक्षा-विस्तार के आन्दोलन से भला कौन अनभिज्ञ होगा। इसी प्रकार आर्यसमाज एक विचार, एक जीवन दर्शन और एक गति को भी कहते हैं। आर्यसमाज की समस्त मान्यताओ को न अपनाने वाले मत-मतान्तरों के लोगों ने अपने चिन्तन और विश्वासो को बुद्धिपरक करने का प्रयास किया है उसके परोक्ष में आर्यसमाज है। सुदूर गावों में आर्यसमाज के भजनिकों ने लोगो के विचार शुद्ध करने मे बहुत कार्य किया है। बडी प्रसिद्ध उक्ति है कि आर्यसमाज जब दौडता है तब हिन्दू समुदाय चल पडता है। जब आर्यसमाज चलता है तब वह अंगडाई लेकर खडा हो जाता है। जब तक आर्यसमाज जागता है तब तक हिन्दू समाज सोया रहता है। साराश यहा है कि आर्यसमाज का गतिशील बने रहना आवश्यक है।

आर्यसमाज जाति, धर्म, सम्प्रदाय और देश-विदेश के विभाजन से परे है। एक बहुत प्यारा नाम लाला लाजपत राय ने दिया था कि आर्यसमाज मेरी मा है। बडी सुन्दर उक्ति दी थी लाला जी ने। आप तुलना करें माता और आर्यसमाज के कर्तव्यो का। माता निर्माता भवति अर्थात् बच्चों का निर्माण माताओ द्वारा होता है। यही गुण आर्यसमाज मे भी है। निष्ठापूर्वक आचरण करने वाला आर्यसमाजी निश्चय ही अच्छे सस्कारोयुक्त धर्मात्मा और उन्नतिशील बनेगा। देशभक्ति और वेदभक्ति की अमृतमय लोरिया आर्यसमाज के कर्मक्षेत्र मे अनायास प्राप्त होती हैं। ऐसे सगठन से जुड जाना बहुत बडे सौभाग्य की बात है। आर्यसमाज का सदस्य बनने पर जिस शपथ पत्र हस्ताक्षर किये जाते हैं उसका पाठ आर्यसमाज के सत्सगो मे बार-बार दुहराया जाता है ताकि हम अपने कर्तव्यों के प्रति सचेत रहें।

वर्ष मे एक दिन हमारी इस पवित्र संस्था का जन्मदिन आता है जिसे आर्यसमाज स्थापना दिवस कहते हैं। घर के किसी सदस्य के जन्मदिन मनाने मे और माता रूपी आर्यसमाज का जन्मदिन मनाने में बहुत अन्तर है। इस सार्वभौम आन्दोलन को वर्ष भर का लेखा-जोखा प्रस्तुत करने का उपक्रम बनाना चाहिए। केवल ऋषि के गुण गाने तथा आर्यसमाज के विगत गौरवशाली इतिहास को याद कर लेने भर से भविष्य नही बनेगा।

किसी सस्था को गतिशील बनाये रखने के लिए दो बातों का समन्वय बने रहना आवश्यक है। वो बातें हैं—मन और वाणी। मन में सकल्प करके उसे वाणी द्वारा प्रकट करना यज्ञीय कर्म है। मन में विचार स्पष्ट न हो और वैसे ही सकल्पविहीन बोलते जाना अयज्ञीय बात है। इसका दुष्परिणाम होता है गति का रुक जाना। अत अपनी संस्था के जन्मदिन पर आर्यों को यज्ञीय बने रहने का संकल्प लेना चाहिये। संकल्प के लिये मन, वचन और कर्म मे धारण करने योग्य ऋषि का वाक्य दोहरा लेना ही पर्याप्त होगा। जो उन्नति करना चाहो तो आर्यसमाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिये, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा। क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जनें मिलकर प्रीति से करें। इसलिये जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नही हो सकता। यदि इस समाज को यथावत् उन्नति देवे तो बहुत अच्छी है, क्योंकि समाज का सौभाग्य बढाना समुदाय का काम है एक का नही।

गजानन्द आर्य
मन्त्री परोपकारिणी सभा अजमेर

न्यायालयों के कामकाज की भाषा हिन्दी को बनाने की मांग

नई दिल्ली, १५ मार्च। देशभर के न्यायालयों में हिन्दी मे कार्य करने की माग एक बार फिर जोर पकड रही है "न्यायालयों मे हिन्दी लाओ सघर्ष समिति" ने राष्ट्रपति से सविधान में सशोधन कर हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं को प्रमुखता देने की माग है।

समिति के महासचिव ईश्वरपाल तोमर ने इस सबध मे राष्ट्रपति को भेजे बयान में कहा है कि वे प्रतिवादी एवं अधिवक्ताओ को लेकर उच्च न्यायालय मे हिन्दीवाद दायर करेगे। इसके बाद गिरफ्तारी देकर आन्दोलन की शुरुआत करेंगे।

ज्ञापन मे भारतीय संविधान की धारा ३४८ (क) मे सशोधन की माग करते हुए उन्होंने कहा है कि इस धारा के अनुसार उच्च न्यायालयों उच्चतम न्यायालय एव विधायका के कार्यों की भाषा अग्रेजी होगी। श्री तोमर ने कहा कि यह शर्म की बात है कि आजादी के ४५ वर्षों के बाद भी लोगो को न्याय नही मिल पाता। देश के ९८ प्रतिशत लोग हिन्दी अथवा अन्य भारतीय भाषा का प्रयोग करते हैं परन्तु मात्र २ प्रतिशत लोगो द्वारा बोली जानेवाली भाषा को प्रमुखता दी जाती है।

श्री तोमर ने ज्ञापन मे कहा कि जब किसी राष्ट्र मे एक विदेशी भाषा होने लगती है तो उस राष्ट्र की सस्कृति के लिए सबसे बडा खतरा उत्पन्न हो जाता है। अतः सघर्ष समिति भारत की सस्कृति को बचाने के लिए ९८ प्रतिशत जनता द्वारा बोली जानेवाली भाषा अपनाए जाने की माग करती है।

संघर्ष समिति ने ज्ञापन मे न्यायालयो मे हिन्दी एव भारतीय भाषाओ में कामकाज की व्यवस्था करने और न्यायालयों मे हिन्दी टाइपिस्टो की नियुक्ति की माग की है। समिति ने जल्द से जल्द सविधान मे सशोधन की माग भी की है।

उल्लेखनीय है कि गतवर्ष भी जिला अदालतों के कार्यकारिणी सदस्यो ने उच्च न्यायालयो मे हिन्दी में कार्य करने की जोरदार आवाज उठाई थी। परन्तु जिला अदालतों के विकेन्द्रीकरण के मामलों मे वकील आपस मे बट गए और आपसी लडाई झगडे मे हिन्दी लागू करने की माग दब कर रह गई थी।

शाहदरा बार एसोसिएशन अध्यक्ष चौ० ओमपालसिंह ने उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश से हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए सर्वप्रथम शाहदरा कोर्ट में हिंदी टाइपिस्टो की नियुक्ति की माग की है।

दैनिक जागरण

श्री निगाहियासिंह आर्य दिवगत

राजलूगढी जि० सोनीपत वासी दिल्ली के भूतपूर्व कमिश्नर एव भारत के न्यायालय के वकील श्री खेमलाल राठी के छोटे भाई श्री निगाहिया सिंह राठी आर्य 'निर्भय' प्रभाकर (ओ.टी.) साहित्य मनीषि, सुहृस्य प्राप्त अध्यापक का लम्बी बीमारी के बाद २ मार्च ९३ को "स्वर्गवास" हो गया, स्वर्गीय राजलूगढी आर्यसमाज के संस्थापक एवं "ज्ञान मञ्जूषा" और 'मेरी कनाडा यात्रा' पुस्तकों के लेखक थे। उनके दोनो सुपुत्र ओ३म्प्रकाश राठी एव वेदप्रकाश राठी कनाडा में कार्यरत हैं। 12 मार्च शुक्रवार को शान्ति यज्ञ पर राजलूगढी, राजपुर एव गन्नौर के आर्यसमाजों को प्रत्येक को ५१) रु० और आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा को १०१) रु० दान में दिये गये और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की गई कि वह दिवंगत आत्मा को शाति एव उनके शोकाकुल परिवार को धैर्य प्रदान करे।

मगसम आर्य, मन्त्री आर्यसमाज

शत-शत बन्दन राम ! तुम्हारा

मर्यादापुरुषोत्तम तुम थे,
मर्यादाओ के अनुरक्षक।
सत्य शिवम् सुन्दरता पूरित,
मानवता के थे तुम रक्षक॥

वेदों के तुम थे अनुगामी,
वदिकधर्म तुम्हे था प्यारा।
शत-शत बन्दन राम। तुम्हारा॥

विप्र-धेनु-सुसन्त-जनों मे,
भरा अभयता कास्यन्दन।
नष्ट किया था बाहु बलो से
पूर्ण मनुजता का कटु क्रन्दन॥

मुक्त हुआ फिर दानवता से,
हर्षित हो महिमण्डल सारा।
शत-शत बन्दन राम। तुम्हारा॥

त्याग-तपो का बलिदानो का,
तुमने जग को मार्ग दिखाया।
शान्ति सफलता समृद्धि सुख का,
समरसता का राज्य बनाया॥

गूज उठा फिर भू-मण्डल पर,
सत्यधर्म की जय का नारा।
शत-शत बन्दन राम। तुम्हारा॥

शौर्य शक्ति के, ओज-तेज के,
क्षमा-दया के, थे प्रतिरूप।
निर्मित किया सुपथ ज्योतिमय,
सत्य सनातन दिव्य अनूप॥

दुनियाभर को दनुज वृत्तिया,
को तुमने निभय ललकारा।
शत-शत बन्दन राम। तुम्हारा॥

राधेश्याम आर्य, विद्यावाचस्पति
मुसाफिर खाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

आवश्यकता है

गुरुकुल घोरणवास जि० हिसार मे एक योग्य अनुभवी एव विद्वान् आचार्य की तथा एक अनुभवी गणक की अत्यन्त आवश्यकता है। इच्छुक महानुभाव शीघ्र सम्पर्क करे। वतन योग्यता अनुसार दिया जावेगा।

अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, अधिष्ठाता
गुरुकुल घोरणवास डा० रानबासखुर्द, जि० हिसार (हरयाणा)

शराब की जगह दूध

हासी, २० मार्च। नगर से ३ किलोमीटर दूर गाव सेखुपुरा मे शराब के ठेके निकट टेंट लगाकर शराबबन्दी कमेटी ने शराब की जगह दूध पिलाने के का नया कार्यक्रम शुरू किया है। जैसे ही ठेके पर जब कोई व्यक्ति बोतल लेने आता है और बोतल लेकर बाहर निकलता है तो शराबबन्दी कमेटी के लोग उसे प्यार से पकड लेते हैं। उसे टेंट मे लाया जाता है। उसके अपने हाथो से शराब की बोतल वहा रखे पत्थर पर तुडवा दी जाती है तब उसे बोतल मे रखा दूध पिलाया जाता है। इस नई तकनीक का परिणाम यह हुआ है कि ठेका शराब पर उल्लू बोल रहे हैं।

गाव सिसाय के सरपच सतवीरसिंह मिहाग के अनुसार उनके गाव मे शराबबन्दी तोडने वाले ६ व्यक्तियो से ५०१ रुपये प्रति शराबी जुर्माना पचायत वसूल कर चुकी है। इस पचायत के निर्णय के अनुसार दूसरी बार शराब पीने पर घाघरो पहनाकर गलियो मे घुमाने की व्यवस्था की गयी है। अभी तक घाघरी पहनने का सौभाग्य किसी को प्राप्त नही हुआ।

गाव राखीगढी की दोनो ग्राम पचायतो व समाज सुधार मडल ने गाव मे नये वर्ष मे ठेका न खोलने के प्रस्ताव पारित किए हैं। उन्होने चेतावनी दी है कि यदि ठेका खोला गया तो उसके सामने ग्रामीण धरना देंगे।

गाव खरड मे पूर्ण नशाबन्दी लागू हो जाने से उसके साथ वाले गाव नियाजा मे ठेका खोला गया है। नियाजा के लोगो ने चौपाल मे काली घाघरी टाग कर शराब पीने वालो को चेतावनी दी है कि घाघरी उसको फिट की जायगी तथा चौपाल साफ कराई जायेगी।

गाव खोतकला बास, पेटवाड मे भी पूर्ण शराबबन्दी किये जाने के समाचार हे।

शराब के ठेकों के लिए मकान नहीं दिए जाएगे

भिवानी, २० मार्च। जिले के पाच गावो की बुधवार को सम्पन्न हुई बैठक मे निर्णय लिया गया है कि कोई भी व्यक्ति शराब ठेके के लिए अपनी जमीन या मकान नही देगा। बैठक की अध्यक्षता पूर्व मन्त्री हीरानन्द आर्य ने की।

बैठक म लिए गए निर्णय के अनुसार यदि कोई व्यक्ति ऐसा करता है तो उस पर एक लाख का जुर्माना लगाया जाएगा। उपायुक्त, जिला आबकारी व कराधान उपायुक्त को एक प्रस्ताव पारित करके भेजा गया है, जिसमे कहा गया है कि सीलमपुर में ठेका नहीं खुलने दिया जाएगा।

बैठक मे वर्तमान विधायक चन्द्रभान तथा प अमीलाल की अध्यक्षता व सचिव रूप मे पाच गावो की एक समिति गठित की गई है। जिसमे सरकार से विरोध कर ठेका हटाने को माग की गई है।

बैठक मे प्रस्ताव पारित किया गया कि कोई भी व्यक्ति शराब पीएगा या बेचेगा उस पर दो सौ रुपए तक जुर्माना होगा और तब भी न मानने पर घाघरी पहनाई जाएगी। बैठक ने पाचों गावों में अलग-अलग कमेटी बनाकर उन्हें यह अधिकार दिया गया है।

श्री आर्य ने आरोप लगाया है कि सरकार व प्रशासन ने दबाव देकर बरालू व सीलमपुर गावों मे ठेके खोले हैं जबकि पचायत के बिना ठेके नही खुलते। श्री आर्य ने कहा कि वे प्रशासन के इस कृत्य की कडी निंदा करते हैं। श्री आर्य ने बताया कि सरकार द्वारा ३७ पुराने ठेकों में से देहात में २१ बन्द किए, परन्तु १७ नए ठेके खोल भी दिए।

श्री आर्य ने बताया कि शराबबन्दी को लेकर २१ मार्च को लोहारु में श्योराण खाप की ८४ गावों की सर्वजातीय सर्वखाप पचायत सुबह १० बजे लाल बहादुर शास्त्री पार्क मे होगी। (दैनिक जागरण)

शराब हटाओ देश बचाओ

[illegible] लोग नशे में क्यों : मंडल [illegible]

करनाल। हरयाणा के राज्यपाल श्री धनिकलाल मडल ने कहा है कि यदि समय रहते नशीली वस्तुओं पर काबू न पाया गया तो वह दिन दूर नहीं जब हमारी आगामी पीढ़ी आरम्भ से ही नशे का शिकार होगी।

इसके लिए जनता में जनजागृति की आवश्यकता है। श्री मंडल यहा स्थानीय सिविल अस्पताल में रेडक्रास द्वारा नवनिर्मित नशा मुक्ति केन्द्र के उद्घाटन अवसर पर बोल रहे थे। उन्होने कहा कि हमारे समाज में कुछ नशे के व्यापारी युवा पीढी को नशे की आग में झोंक रहे हैं। (दैनिक जागरण)

शराबी से जुर्माना वसूला

गन्नौर ६ मार्च (निस) हरियाणा मे जब से शराबबन्दी अभियान चला है तभी से शराबियों की रातों की नींद उड गयी है।

गन्नौर के गांव पांचीजाटान में उस समय सनसनी फैल गयी जब एक शराबी युवक श्रोम को शराब विरोधी आंदोलनकारियों ने शराब पीते हुए रगों हाथों पकडा और उसे महिला का घाघरा पहनाकर काला मुह करके गधे पर बिठाकर गाव के चारों ओर घुमाया तथा उक्त युवक से ५०० रुपये जुर्माना वसूला, शराबबन्दी अभियान गन्नौर के अन्य गांवों मे भी जोर शोर से चल रहा है।

आर्यसमाज बदरपुर जिला करनाल का उत्सव सम्पन्न

प्रतिवर्ष की भांति १९ से २१ मार्च तक वार्षिक उत्सव बड़ी धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सभा के उपदेशक पं० चन्द्रपाल सिद्धान्त शास्त्री के उपदेश तथा वानप्रस्थी हरलाल, श्री सुखपाल आर्य एवं प० शेरसिंह के प्रभावशाली भजन हुए। पारिवारिक सत्सग पर अनेक व्यक्तियों को यज्ञोपवीत देकर शराब, मास, बीडी से दूर रहने की प्रतिज्ञा करवाई।

पूर्णचन्द आर्य मन्त्री

शोक समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा कर्नाटक के प्रधान श्री आर्यमित्र (सेवानिवृत) का निधन १२ मार्च ९३ को होगया। २१ मार्च को आर्यसमाज श्रद्धानन्द भवन व० व० पुरम मे एक शोक सभा में उन्हें श्रद्धांजलि दी गई।

—सत्यव्रत सभामन्त्री

सभा के सर्वहितकारी साप्ताहिक के व्यवस्थापक श्री शेरसिंह की दादी जी श्रीमती गणादेई (धर्मपत्नी श्री किशनलाल जी) का ९ मार्च को ८० वर्ष की आयु में स्वर्गवास होगया। वे धार्मिक प्रवृति की महिला थी। दिनांक १९-३-९३ को शान्ति यज्ञ किया गया। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे। केहरसिंह आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ रजि० नं० P/RTK-४६ दूरभाष: १,६६, ०८, ६३, ०६४

ओ३म्

सर्वहितकारी

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २० अंक १८ ७ अप्रैल, १९९३ वार्षिक शुल्क ४०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति ८० पैसे

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा के महत्त्वपूर्ण निश्चय

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरग सभा की बैठक २८ मार्च ९३ को प्रात ११ बजे सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता मे सिद्धान्ती भवन रोहतक में सम्पन्न हुई। इसमे आर्यजगत् के वयोवृद्ध संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के अतिरिक्त हरयाणा भर से आर्य नेता उपस्थित थे। इस अवसर पर सर्वसम्मति से निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण निश्चय किये गये।

शराबबन्दी सत्याग्रह मे सहयोग देने पर भारतीय किसान यूनियन का धन्यवाद

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने भारतीय किसान यूनियन के सहयोग से हरयाणा के प्रत्येक जिले मे शराब के ठेको की नीलामी के अवसर पर पूरी शक्ति के साथ विरोध प्रदर्शन किये। पुलिस ने नेताओं तथा कार्यकर्ताओ के नीलामी स्थल तक न पहुचने के लिए अवरोध खडे किये। कई स्थानों पर अश्रुगैस तथा लाठियों का प्रयोग करके अनेक सत्याग्रहियो को घायल किया तथा हिरासत मे लेकर बन्दी बनाया गया परन्तु सत्याग्रहियों ने पुलिस दमन की परवाह न करते हुए सभी जिलो मे प्रदर्शन किये। इस महत्त्वपूर्ण कार्य मे भारतीय किसान यूनियन ने आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर पूरा सहयोग दिया है। अत अन्तरग सभा ने इस अमूल्य सहयोग तथा समर्थन के लिये भारतीय किसान यूनियन का हार्दिक धन्यवाद किया है।

खापवार पचायतो द्वारा शराबबन्दी प्रस्ताव पास करने का स्वागत

हरयाणा प्रदेश की खापवार पचायतो के आयोजन तथा उन द्वारा शराब तथा दहेज आदि जैसी सामाजिक बुराइयों के प्रस्ताव लागू करवाने का सभा की अन्तरग सभा ने स्वागत किया है। पचायतो का हरयाणा मे प्राचीन काल से सगठन है। और सामाजिक बुराई तथा अन्याय दूर करवाने के लिए शासन (हुकुमतों) से सदा टक्कर ली है। इस परम्परा के पुन चालू होने पर सभा ने प्रसन्नता प्रकट करते हुए सर्वखाप पचायतो के सरदारो तथा कार्यकर्त्ताओं को विश्वास दिलवाया है कि इस शुभ कार्य मे सभा की ओर से पूरा सहयोग तथा समर्थन किया जावेगा। पचायतो की मांग आने पर सभा के प्रचारकों द्वारा शराबबन्दी प्रचार की व्यवस्था की जावेगी।

स्मरण रहे गत दिनों दहिया, गठवाला, कादियान,सागवान, हुड्डा, सरोहा, आन्तल, छिक्कारा, फोगाट, अठगामा, चौबीसी, महम, ख्योराण, सतगावा, बनियान, घनाना, बामला, पवार, जीन्द, कुरुक्षेत्र, कैथल, यमुनानगर, अम्बाला, हिसार, रिवाडी मे धरणो का आयोजन किया। अन्य जिलों में पचायतो द्वारा शराब के ठेके बन्द करने के प्रस्ताव पास किये तथा सर्वखाप पचायतों ने अपनी बैठकें करके अपनी खाप के ग्रामो मे शराबबन्दी के प्रस्ताव करके शराब की बिक्री करने वालो तथा पीने वालो पर जुर्माना आदि करके दण्डित किया है और सरकार द्वारा उनके ग्रामो में शराब के ठेके खोलने का प्रबल विरोध करने का कार्यक्रम बनाया है और शराब के ठेकेदारो को चेतावनी दी है कि ग्रामो मे ठेको पर शराब रूपी जहर की बिक्री नही होने दी जावेगी और जो व्यक्ति शराब के ठेको के लिए दुकान अथवा स्थान देगा उसे भी पचायत की ओर से दण्ड दिया जावेगा।

हरयाणा सरकार की नई आबकारी नीति के विरुद्ध याचिका दायर की जावेगी

हरयाणा सरकार का पूर्व नियम था कि शराब का ठेकेदार ५ किलोमीटर के क्षेत्र मे स्थानीय पचायत के प्रस्ताव पर ३ उप ठेके भी खोल सकते हैं, परन्तु इस वर्ष सरकार ने नई आबकारी नीति के अन्तर्गत ठेकेदार ५ किलोमीटर के स्थान पर जिले भर मे जिस पचायत ने शराबबन्दी का प्रस्ताव नही कर रखा वहा भी उप ठेके खोल सकते हैं। इस प्रकार उपठेको का जाल बिछाकर ठेकेदार ग्राम-ग्राम मे शराब की नदिया बहाकर हरयाणा की प्राचीन वैदिक संस्कृति तथा किसान मजदूरो की मेहनत की कमाई बर्बाद करने पर तुली है। अत अन्तरग सभा ने इस जनकल्याणविरोधी हरयाणा सरकार की आबकारी नीति के विरुद्ध पजाब हरयाणा उच्च न्यायालय चण्डीगढ मे याचिका दायर करने का अधिकार सभा की हरयाणा शराबबन्दी समिति के सयोजक श्री विजयकुमार जी को दिया है।

क्योडक कैथल मे शराब का ठेका बन्द होने पर विजय दिवस का आयोजन

ग्राम क्योडक जिला कैथल मे गत ३,४ माह से शराब के ठेके बन्द करवाने के लिए वहा के शराबबन्दी कार्यकर्त्ता सघर्ष कर रहे थे। उनके कठोर परिश्रम तथा सर्दी के दिनो में निरन्तर धरणा चालू रखने के फलस्वरूप यह ठेका बन्द हो गया है। इस शानदार विजय मिलने पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से क्योडक मे ३१ मार्च को विजय दिवस मनाने का आयोजन किया है। सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह, मन्त्री श्री सूबेसिंह, हरयाणा शराबबन्दी समिति के सयोजक श्री विजयकुमार जी आदि नेता वहां के शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओ को सम्मानित करेंगे। इसी प्रकार अन्य पचायतों को भी शराब के ठेके बन्द करवाने पर सभा सम्मानित करेगी।

श्री विजयकुमार जी के शराबबन्दी प्रयत्नो की सराहना

हरयाणा शराबबन्दी समिति के सयोजक श्री विजयकुमार जी द्वारा शराबबन्दी कार्यों मे दिन-रात परिश्रम करने, पचायतो से पत्र

(शेष पृष्ठ ८ पर)

राष्ट्रीय सुरक्षा का प्रश्न——साम्प्रदायिकता का विषवृक्ष-२

वतन की आबरू खतरे में है ?

ले० सुखदेव शास्त्री महोपदेशक,
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

—गताङ्क से आगे—

१९२१ मे असहयोग आन्दोलन, तथा उन्ही दिनों खिलाफत आन्दोलन के समय गाधी जी मुसलमानो को खुश करना चाहते थे, जिससे मुसलमान स्वतन्त्रता आन्दोलन में कांग्रेस का साथ दे सकें। इसी कारण से गाधी जी ने उस समय के दो मुसलमान नेताओ को सिर पर चढा लिया वे थे, मुहम्मद अली व शौकत अली। ये दोनों गांधी जी के दाए बाए रहते थे। सन् १९२७ में काकीनाडा कांग्रेस का सभापतित्व मुहम्मद अली कर रहे थे सभा में किसी ने गाधी जी की जय का नारा लगा दिया, इसी बात पर मौलाना मुहम्मद अली सभा पर बरस पडे और बोले—जन्नत—स्वर्ग तो मुसलमानों के लिए ही है, गांधी जी जैसे काफिरों के लिए स्वर्ग नही है। एक व्यभिचारी एव दुराचारी मुसलमान स्वर्ग जा सकता है किन्तु काफिर होने के कारण गाधी जी स्वर्ग नहीं जा सकते। इसलिए किसी भी कांग्रेसी अधिवेशन में किसी हिन्दू नेता की जय नही बोली जाती थी। शुरू से ही मुस्लिम नेता साम्प्रदायिकता का राग अलापते आए हैं।

गाधी नेहरू जी की घोर मुस्लिमपरस्ती एवं खुशामद तथा तुष्टीकरणनीति के बाद भी मुसलमानो ने देश की आजादी मे भाग नही लिया। मुस्लिम समुदाय घोर साम्प्रदायिक एव जिन्नावादी ही बना रहा। कांग्रेस मे घुसे मौलाना आजाद जैसे मुस्लिमो की भूमिका केवल भारत विभाजन में ही महत्त्वपूर्ण रही। इसका स्पष्टीकरण मौलाना आजाद ने अपनी पुस्तक "इण्डिया वीन्स फ्रीडम" मे किया है।

जिन्ना एण्ड सन्स—मुस्लिम लीग ने साम्प्रदायिक इस्लामी जिहाद का नारा दे रक्खा था, जिससे प्रभावित होकर मुस्लिम कांग्रेस मे आ ही नही सकता था। देश का विभाजन होते ही मौलाना आजाद ने गाधी नेहरू पर दबाव देकर पाकिस्तान भागते हुए करोडों मुस्लिमो को भारत में ही रुकवा लिया। जिससे अग्रिम चरण मे इस्लामीस्तान के नाम पर हडपा जा सके। भारत के शिक्षामन्त्री पद पर रहते हुए भारत मे रोके गए मुसलमानो मे साम्प्रदायिकता की मशालें पुन जला दी। साम्प्रदायिकता के विष वृक्ष की जडो मे पानी देकर मुसलमानो को उसके फल खाने के लिए तैयार किया। साम्प्रदायिक अलगाव की मनोवृत्ति बनाए "अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय और उर्दू को पुनर्जीवित किया। "जमायत उल-उलमा" जैसी घोर साम्प्रदायिक सस्थाओ को सरकारी सरक्षण देकर पुन सक्रिय किया। कब्र मे जाने तक मौलाना ने भारत मे इस्लामी विद्रोह की नीव रखकर उसे पाला पोसा। भारत के संविधान का स्वरूप धर्मनिर्पेक्ष बनाने का कारण ही मौलाना के दुराग्रह का ही कारण था। जिससे कि भारतीय मुस्लिमो की काली करतूतो को संरक्षण दिया जा सके धर्म के नाम पर।

आजादी की लडाई मे मुस्लिमो की क्या मनोवृत्ति रही है इसके विषय मे प्रो० अलीमजूराई लिखते हैं कि—जबकि हिन्दू तो अंग्रेजो के विरुद्ध आजादी की लडाई लड रहे थे उस समय भारतीय मुसलमान आजादी के बाद सम्भावित हिन्दू राज्य के विरुद्ध जिन्ना के नेतृत्व मे अंग्रेजो से मिलकर सघर्ष कर रहे थे। इसलिए भारतीय मुस्लिम वर्ग का भाइचारा एव लगाव एकमात्र पाकिस्तान के ही प्रति रहता है जहा कहीं भी वे बहुमत मे हैं वही पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगाते हैं। वे नही चाहते कि भारत एक शक्तिसम्पन्न राष्ट्र बने, इससे पाकिस्तान की सत्ता खतरे मे पड सकती है। आज काश्मीर की क्या परिस्थिति है। काश्मीर का भारत मे विलय कराने का मुस्लिम वर्ग इसलिए विरोधी था क्योंकि काश्मीर मुस्लिमबाहुल राज्य था। आज काश्मीर मुस्लिम मानसिकता तथा घोर मुस्लिम साम्प्रदायिकता मे फस चुका है। वहा के स्थानीय मुस्लिम नेता भी घोर साम्प्रदायिक हैं जिनमे मुख्य है—फारूख अब्दुल्ला। इन साम्प्रदायिक तत्त्वों को खुश करने के लिए ही नेहरू जी ने काश्मीर मे ३७० धारा लागू करवाई, काश्मीर का केस सयुक्त राष्ट्र स मे ले गए)।

आज इन सब कारणों को लेकर पाकिस्तान मुस्लिमो को हथियार काश्मीर में भेज रहा है। स्थिति काबू से बाहर होने को हो जाती है। आज काश्मीर की जो हालत है उसका उत्तरदायित्व नेहरू जी पर ही है।

इसी प्रकार गाधी जी भी मुसलमानो को प्रसन्न करने मे कोई अवसर हाथ से न जाने देते थे। एकबार गाधी जी को मुस्लिम सन्तुष्टीकरण का ऐसा भूत चढा कि—अब हिन्दुओ के मन्दिरों मे नित्य कुरान शरीफ का पाठ हुआ करेगा। शायद इससे प्रभावित एव प्रसन्न होकर मुस्लिम समुदाय स्वतन्त्रता आन्दोलन मे हमारा साथ देगा। हिन्दू मन्दिरों में गीता के पाठ के साथ-साथ कुरान मजीद व बाईबिल का पाठ होने लगा। किन्तु मुसलमानों ने इसका सख्त विरोध किया। हिन्दू मन्दिरो मे कुरान का पाठ सहन न होगा। इसी से दगे भडक उठे। कुछ लोग गांधी जी के इस अपमान से क्षुब्ध होकर गाधी जी के पास गये और बोले—बापू ! आप तो सबके समान हैं, जैसे मन्दिरो मे कुरान का पाठ आपने शुरू करवाया है उसी प्रकार गीता उपनिषदों का पाठ मस्जिदो मे शुरू करवाएं। तब गाधी जी बोले, चलो, मस्जिद में भी गीता का पाठ होगा, इसमे क्या बुराई है ? गाधी जी मस्जिद पहुँचते, इससे पहले गाधी जी के भक्त मुसलमानो ने स्वागत की भारी तैयारी करली, वे लाठी फरसे तथा हथियारों से सज्जित होकर मस्जिद के द्वार पर खडे हो गए और गाधी जी को मस्जिद मे घुसने ही न दिया। इस अपमान से क्षुब्ध होकर गाधी जी वापस लौट आए।

गाधी जी कहा करते थे—ईश्वर एक है। सब धर्म समान हैं। सभी धर्मों की किताबो मे समान उपदेश हैं। इस बात को तो हिन्दुओ ने तो माना, किन्तु मुसलमान सदा विरोध करते रहे। गाधी जी की ये मान्यताएं गलत थी। वे मजहब को धर्म बनाते थे। इसीसे सदा वे इस कार्य मे असफल रहे। इसी प्रकार गाधी जी की प्रेरणा से हिन्दू मन्दिरो में रघुपति राघव राजा राम,—ईश्वर अल्ला तेरे नाम का गीत गाया जाने लगा था, जो आज भी गाया जा रहा है क्या कभी मस्जिदो मे भी आपने ये गीत सुना है ? मुस्लिम वर्ग इसे क्यो नही गाता, क्योंकि इसमे अल्ला के साथ सस्कृत का शब्द ईश्वर जुडा हुआ है। यदि यह शब्द अरबी का होता तो पवित्र मानकर गाया जाता। कितनी घोर साम्प्रदायिकता है।

इसी प्रकार स्वतन्त्रता प्राप्ति के दिनो मे कांग्रेस के अधिवेशन होते थे। उन दिनो "वन्दे मातरम्" गीत गाया जाता था, इस प्रेरक गीत का भी कांग्रेसी मुसलमानों ने विरोध किया था, जो आजतक किया जा रहा है। लोकसभा में प्रस्ताव आया था कि लोकसभा की शुरुआत मे 'वन्दे मातरम्' गीत गाया जावे, इसका मुस्लिम सदस्यों ने विरोध किया। इसका भी क्या कारण है विरोध का। वही कारण है यह गीत भारत माता की वन्दना में लिखा गया है। शायद मुसलमान भारतमाता की वन्दना को स्वीकार न करते हों। यह वही गीत है जिसे गाकर आजादी के दीवानो ने फासी के फन्दे चूमे। वन्दे मातरम् गीत से प्रेरणा पाकर भारत को आजादी मिली थी। इसे भी घोर साम्प्रदायिक मुस्लिम आजतक भी स्वीकार नही करते।

इधर यह देखिये—राजनीतिक नेताओ की धर्मनिर्पेक्षता। आज २५ दिसम्बर को सब नेतागण ईसामसीह के जन्मदिवस पर बधाइया देरहे हैं। आकाशवाणी से विशेष प्रसारण हो रहे हैं। सरकार ने इस्लाम के सस्थापक मुहम्मद साहब का जन्मदिन २९ दिसम्बर का अवकाश भी घोषित कर दिया है। हम इसे साम्प्रदायिक सद्भाव मानते हैं। देश की एकता के लिए यह होना चाहिए। किन्तु क्या कभी महर्षि दयानन्द के जन्मदिन पर भी अवकाश होता है ? क्या कभी पाकिस्तान या अरब में राम-कृष्ण के जन्मदिवस पर भी अवकाश रहता है ? मुसलमान अथवा मुस्लिम देश स्वभाव से ही घोर साम्प्रदायिक रहे हैं, गाधी जी के रामराज्य के सपनों का भी विरोध करते थे। इसमे मुसलमानो की साम्प्रदायिक मनोवृत्ति ही कारण कही जा सकती है। क्रमशः

हरयाणा प्रदेश में शराबबन्दी सत्याग्रह की गतिविधियां—

ग्राम सांघी जिला रोहतक मे शराबबन्दी लागू

१५ मार्च ६३ को ग्राम सांघी जिला रोहतक मे एक पचायत का आयोजन किया गया और सर्वसम्मति से निर्णय किया गया कि जो व्यक्ति ग्राम मे शराब निकालेगा तथा बेचेगा, सेवन करेगा उस पर ग्राम पंचायत की ओर से ११००) दण्ड किया जावेगा। इसी प्रकार सुलफा अफीम इत्यादि का सेवन करते पकडा गया उस पर भी ११००) का दण्ड किया जावेगा।

ओमप्रकाश आर्य मन्त्री आर्यसमाज सांघी

ग्राम नियाणा जिला हिसार मे शराबबन्दी प्रचार की धूम

वैदिक योगाश्रम आर्यसमाज नियाणा आदि ग्रामो मे जिला हिसार मे शराबबन्दी प्रचार प्रगति पर है। महात्मा काममुनि जी वानप्रस्थी ग्राम मे प्रचार कर रहे हैं। सभा की ओर से प० ईश्वरसिंह तूफान की भजन मण्डली ने भी २६ से ३१ मार्च तक ग्राम मे प्रभावशाली प्रचार किया जिसके फलस्वरूप अनेक व्यक्तियो ने शराब आदि नशो से दूर रहने की यज्ञ के अवसर पर शपथ ली है। प्रतापसिंह आर्य प्रधान

रोहनात मे शराबबन्दी लागू करने का निर्णय

हांसी जिला हिसार के निकट ग्राम रोहनात मे भी ग्राम पचायत ने ग्राम मे पूर्ण नशाबन्दी लागू करने का निर्णय करते हुए नशा करने वालों पर तथा शराब की बिक्री करनेवालो पर ५००) जुर्माना करने का कार्यक्रम बनाया है।

मायड़ और अलीपुर गांवों मे भी शराबबन्दी लागू

हांसी, २७-३-६३ (जनसत्ता)। नजदीकी गाव मायड में गुरुवार को गाववासियो की हुई एक बैठक मे पूर्ण शराबबन्दी लागू करने का निर्णय लिया गया है।

इस बैठक मे सरपच लहरीसिंह भी मौजूद थे। बैठक मे निर्णय लिया गया कि, गाव में शराब पिया हुआ जो व्यक्ति पकडा गया, उसे ढाई सौ रुपये जुर्माना किया जाएगा। दूसरी बार पकडे जाने पर पाच सौ रुपये जुर्माना किया जाएगा। और तीसरी बार पकडे जाने पर पाच सौ रुपये जुर्माने के साथ उस व्यक्ति को घाघरी भी पहनाई जाएगी। इस निर्णय को क्रियान्वित करने के लिए गाव के पचास लोगों की एक समिति भी बनाई गई है, जिसका प्रधान सरूपसिंह को बनाया गया है।

अन्य जानकारी के मुताबिक गाव खरड अलीपुर मे भी पूर्ण शराबबन्दी लागू कर दी गई है।

ग्राम बालसमन्द जिला हिसार मे शराब के ठेके पर धरने की एक झलक

ग्राम बालसमन्द हिसार के सरपच श्री धर्मसिंह जो मे सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने श्री रामजीलाल आर्य पूर्व सरपंच श्री दीवान सिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज बालसमन्द के प्रयास से ठेका बन्द करवाने का प्रस्ताव सितम्बर मास से पहले पचायत से पास करवा लिया था। लेकिन निलामी से एक महीना पहले सरपच साहब ने दबाव व लालच मे आकर पुनः ठेका खोलने का प्रस्ताव पास कर दिया। गांव के नवयुवकों मे एकदम रोष की लहर फैल गई। क्रान्तिकारी जो ने भी १३-१४ मार्च के वार्षिक उत्सव पर ग्राम बालसमन्द के लोगों को ललकारा कि आप के गाव की पचायत ने सरकार के दबाव में आकर पुनः प्रस्ताव कर सारे हिसार जिला को बदनाम कर दिया। साथ मे पुरजोर अपील की कि उठो जागो अपने अस्तित्व को पहचानो तथा अपनी माताओ बहनो की इज्जत का ख्याल करो ठेके पर धरना आरम्भ करो।

गाव के नवयुवको ने १६-३-६३ से आसमाने लगाकर धरना आरम्भ कर दिया। १७-३-६३ को १० नवयुवक जीप लेकर आर्य निवास नलवा अतरसिंह आर्य के पास पहुचे। आर्य जी तुरन्त उनके साथ आए और धरने के सचालन का कार्य अपने हाथ मे ले लिया। दो घाघरी जूतो की माला मोटो तथा ओ३म् ध्वज लगाकर ५१ नवयुवको के साथ धरने पर बैठ गए। मा० भीमसिंह के नेतृत्व मे एक शराब बन्दी समिति का गठन कर दिया। समिति मे सभी बिरादरियो के नवयुवक हैं। आर्यसमाज बालसमन्द के अधिकारियो का पूर्ण सहयोग है। दिनाक २२-२३ को प० जबरसिंह खारी की भजनमण्डली हांसी तथा स्वामी सर्वदानन्द जी के प्रवचन एव भजन हुये।

दिनाक २४-३-६३ को साय ३ बजे धरना स्थल पर श्री दिवान सिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज बालसमन्द की अध्यक्षता मे शराबबन्दी सम्मेलन हुआ जिसमे स्वामी सर्वदानन्द जी गुरुकुल धीरणवास चौ० विजयकुमार जी पूर्व उपायुक्त एव सयोजक शराबबन्दी समिति हरयाणा चौ० सुबेसिंह सभा मन्त्री चौ० हीरानन्द आर्य पूर्व मन्त्री सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी जी ने इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होने वाले नुकसान से अवगत कराया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को शराबबन्दी गति विधियो पर प्रकाश डाला तथा सभा की ओर से पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। अनेक गावो के ठेको पर धरनो की जानकारी दी। सरकार की सभी वक्ताओ ने शराब बढ़ावा नीति की आलोचना की। बालसमन्द के सरपच को पुन प्रस्ताव देने की आलोचना की तथा नवयुवको को धन्यवाद दिया। नवयुवको ने भी पूर्ण आश्वासन दिया कि जब तक ठेका बन्द नही होगा धरना जारी रहेगा शराब न हम पीयेंगे न गाव मे पीने देंगे। शराबबन्दी नारो से आकाश गूंज उठा।

स्कूली बच्चे एव नवयुवक सायकाल गाव मे नारे लगाते हैं। शराब पीना छोड दो, शराब के ठेके बन्द करो, शराब के ठेकेदार देश के गद्दार, जो पिएगा जगाघरी उसको पहनायेंगे घाघरी। ठेकेदार घबराया हुआ है। पुलिस ठेकेदार की मदद कर रही है।

धरने से प्रभावित होकर निकट के गाव दाण्डाहेडी, बासडा, सरसाम, गोरछी, रालवास खुर्द, रालवास कला आदि मे शराबबन्दी लागू होगई है। शराब बेचनेवालों के ५०० रु० दण्ड, पीनेवालो के १०० रु० दण्ड तथा पकडनेवाले को ५० रु० इनाम दिया जाता है पुन गलती करने पर घाघरी पहनाई जाती है। अब तक बासडा गाव मे एक शराबी को घाघरी पहनने का मौका मिला है। गाव बालसमन्द में अब तक ३ शराबियो को जूते की माला पहनाने का अवसर प्राप्त हुआ है। शराबियों को धरने पर बैठे लोग समझा रहे हैं। न मानने पर बोतल छीनकर फोड दी जाती है। ग्रामवालो का अब धीरे-धीरे सहयोग नवयुवको को मिलना आसान होगया है। निकट के गाव के लोग भी धरने पर आ रहे हैं। गाव मे पूर्णतया शराबबन्दी लहर चल पडी है। अब तक निम्न सदस्यो का विशेष सहयोग रहा है भगत रामनिवास, रणबीर, महावीरसिंह गायक, जितेन्द्र, रविन्द्र, रामेश्वर, महेन्द्रसिंह, भूपेन्द्रसिंह, रामचन्द्र, कृष्ण पवनकुमार आदि। इसके अतिरिक्त प्रधान श्री दीवानसिंह आर्य, श्री माईलाल आर्य, श्री रामजीलाल आर्य, पूर्व सरपच श्री मालाराम बिजला, श्रीदत्त शर्मा, पृथ्वीसिंह फौजी, मुन्शीराम नम्बरदार, दरियावसिंह आदि का। श्री सुप्राण मुनि, श्री बदलूराम आर्य (मुकलान) ईश्वरसिंह आर्य (गंगतखेडी), महाबीर सैनी (ढाबडी), श्री होशियारसिंह (ढोबा मागवा), डा० बनवारीलाल, श्रीकृष्ण आर्य आदि धरने पर पधार चुके है। दिनाक २४ २५, २६ मार्च को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की भजनमण्डली स्वामी देवानन्द जी के भी रात्री को प्रचार हुए। नवयुवको में काफी उत्साह है।

ज्ञातव्य है कि ग्राम बालसमन्द मुख्यमन्त्री के हल्के आदमपुर का बडा गाव है। क्रान्तिकारी जी की ससुराल है। इस प्रकार संघर्ष का कार्य बडा रोचक है। सभा के भजनोपदेशक श्री जयपालसिंह बेधडक के ३०, ३१ मार्च को प्रभावशाली प्रचार किया।

शराबबन्दी समिति बालसमन्द
(जिला हिसार)

क्योडक (जिला कैथल) धरने पर विजय दिवस समारोह सम्पन्न

ग्राम क्योडक मे हजारो रुपये की शराब पी जाती थी। आए दिन लडाई एव झगडे होते थे। तब पचायत एव आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने गाव इकट्ठा करके सर्वसम्मति से निर्णय लेकर ठेके पर धरना दिया गया। बाबा बसन्त गिरी के आश्रम मे हवन करके लगभग ४०० कार्यकर्त्ताओ ने ५-११-९३ को शराब न पीने की प्रतिज्ञा की। धरने पर सैकडो नर-नारी प्रतिदिन बैठे। शराब की एक भी बोतल नही बिकने दी, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पूर्ण सहयोग एव मार्गदर्शन मिलता रहा। सभा के अधिकारी, उपदेशक तथा भजन मण्डलिया कई बार धरने पर पधारे। ९ मार्च को कैथल शराब के ठेको की नीलामी पर इस गाव से हजारों नर-नारी ट्रेक्टरों मे बैठकर आए। लोगों मे अथाह जोश था। क्योडक धरने से सारे कैथल जिला में शराबबन्दी लहर को बल मिला। प्रदर्शन के बाद सभा प्रधान प्रो० शेरसिह जी के नेतृत्व मे ११ कार्यकर्त्ताओ का शिष्टमण्डल उपायुक्त महोदय से मिला तथा ज्ञापन दिया। उपायुक्त ने बताया कि क्योडक आदि १३ गाव के ठेके बन्द हो गए हैं लेकिन क्योडक के लोग ३१ मार्च तक धरने पर बैठे रहे।

३१ मार्च को २ बजे धरने पर राव नरसिहदास की अध्यक्षता मे विजय दिवस समारोह सम्पन्न हुआ। रात्री को प० रामकुमार आर्य की भजनमण्डली द्वारा गाव की चौपाल मे प्रचार हुआ। समारोह में मुख्य अतिथि अखिल भारतीय नशा परिषद् एव सभा अध्यक्ष प्रो० शेरसिह जी, सभा मन्त्री चौ० सूबेसिह जी, चौ० विजयकुमार जी सयोजक शराबबन्दी समिति हरयाणा, श्री सुखदेव शास्त्री, सभा उपदेशक श्री अतरसिह आर्य क्रान्तिकारी, आचार्य देवव्रत जी (गु०कु० कुरुक्षेत्र) धर्मवीर शास्त्री आदि विद्वान् वक्ताओ ने विचार रखे। सर्वप्रथम श्री सतावसिह आर्य प्रधान आर्यसमाज क्योडक, हुकमचन्द आर्य, मा० हरपालसिह आर्य, सरपच श्री सुरेन्द्रसिह, बाबा बसन्त गिरी तथा सरोज आर्या ने विद्वानो का धन्यवाद एव अभिनन्दन किया आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सहयोग की भूरि-भूरि प्रशसा की। सभा की प्रसिद्ध पत्रिका सर्वहितकारी के सम्पादक को शराबबन्दी कार्यक्रम प्रकाशित होने के लिए धन्यवाद दिया। पत्रिका को शराबबन्दी आन्दोलन एव जनजागरण हेतु एक अच्छा माध्यम बताया।

उपरोक्त सभी वक्ताओ ने क्योडक गाव के नर-नारियो की सराहना एव धन्यवाद किया। सभा की ७-८ वर्ष की शराबबन्दी अभियान गतिविधियो की जानकारी भी दी। अनेक गाव के उदाहरण देकर शराब के ठेको पर धरने की जानकारी दी। प्रो० साहब ने गुजरात, तमिलनाडु, नागालैंड मिजोरम आदि प्रान्त के उदाहरण देकर हरयाणा सरकार से अपने प्रान्त मे शराबबन्दी लागू करने का अनुरोध किया। सरकार की शराब बढावा नीति की आलचना की। चौ विजयकुमारजी ने बताया कि १० वर्ष पहले क्रान्तिकारी ने जिला हिसार से शराबबन्दी अभियान चलाया। इनको सभा का स्तम्भ बताया। इसी प्रकार वर्तमान मे क्योडक गाव के बहादुरो ने हरयाणा प्रान्त को शराबबन्दी आदोलन को गति दी है। आज सारे हरयाणा मे शराबन्दी लहर चल पडी है। हाथ खडे करवाकर लोगो से शराब न पीने की प्रतिज्ञा करवाई। भविष्य मे भी शराबबन्दी कार्यक्रम जारी रखने की प्रेरणा की। धरने सचालक चौ० तेजराक उर्फ बोका, सरपच श्री सुरेन्द्रसिह, बाबा बसत गिरी तथा आर्यसमाज के अधिकारियो का विशेष धन्यवाद किया। जिन्होने ५ महीने तक सारा कायक्रम छोडकर धरने का नेतृत्व किया।

धरने पर बैठे नवयुवको व बुजुर्गों तथा महिलाओ को तथा सरपच श्री सुरेन्द्रसिह, श्री सतावसिह आर्य प्रधान आर्यसमाज क्योडक बाबा बसन्त गिरी, बहिन सरोज अध्यापिका को सभा प्रधान जी ने सभा की ओर से स्वर्णपदक देकर सम्मानित किया। इसी अवसर पर आर्यसमाज क्योडक की ओर से १० सत्यार्थप्रकाश ७ बुजुर्गों को पगडी व डोगा दिया गया। दादो रमानो व रामकली को एक-एक शाल भेट किया गया। अन्त मे पुन सरपच श्री सुरेन्द्रसिह ने आर्यनेताओ का धन्यवाद किया। सभा का रवायन की ओर से ३१०० रुपए शराबबन्दी सत्याग्रह हेतु दान देने की घोषणा की। पचायत की ओर से समारोह मे आए हजारो नर नारियो को प्रसाद रूप मे लड्डू बाटे गए। समारोह पूर्ण सफल रहा।

मन्त्री आर्यसमाज, क्योडक, जिला कैथल

बालसमन्द (हिसार) के ठेके पर धरने से ठेकेदार बुरी तरह बोखलाया

दिनाक ३०, ३१ मार्च १,२ अप्रैल को धरने पर प्रतिनिधि सभा हरयाणा की भजन मण्डली प० जयपालसिह के शिक्षाप्रद समाज सुधार के भजन हुये। इस अवसर पर स्वामी अग्निदेव जी भीष्म स्वामी सर्वदानन्द जी श्री महवीरप्रसाद प्रभाकर श्री सग्रामसिह आर्य धरने के संचालक श्री अतरसिह आर्य क्रातिकारी सभा उपदेशक महाशय रामजीलाल आय पूर्व सरपच ने शराब से होनेवाले नुकसान से अवगत कराया। मनुष्य के कर्त्तव्य, वैदिकशिक्षा राष्ट्ररक्षा आदि पर विचार रखे। सरकार को शराब बढावा नीति की आलोचना की। गाव के हित मे शराब का ठेका बन्द करवाने का अनुरोध किया। धरने पर बैठे नवयुवकों तथा आर्यसमाज के अधिकारियो का धन्यवाद किया बधाई दी। धरने पर बैठे लोगों मे काफी उत्साह है। पचायत का सहयोग अब तक अपेक्षाकृत कम है जोश के साथ शराबबन्दी नारे लगाए जाते हैं ठेकेदार बुरी तरह बोखलाया हुआ है धरने पर बैठे नवयुवक शराब खरीदने वाले को समझाकर वापिस भेज रहे हैं। जबर जस्ती खरीदने वालो की बोतल फोड दी जाती है। अब तक दो शराबियो को घाघरी पहनाई गई है। तीन लोगो को जूती की माला डाली गई है। शराबियो मे भी खलबली मची हुई है।

दिनाक ३१ मार्च को रात्री मे वेदप्रचार हो रहा था। ठेकेदार ने दो शराबी वजीरसिह तथा सुरजभान नाई को पहले खूब शराब पिलाई बाद मे हुल्लडबाजी मे उतारू हुवे और दो पेटी शराब की लेकर चलने लगे तुरन्त धरने पर बैठे नवयुवको ने जोर से नारेबाजी को ओर उन शराबियो पर टूट पडे, सब बोतल फोड दी, शराबियो ने धरने पर बठे लागो पर पत्थर फेके, भगत रामनिवास के नाक पर पत्थर लगा। एकदम नवयुवक शराबियो व ठेकेदारो पर पुन टूट पडे। शराबियो की खूब पीटाई को, ठके के किवाड तोड दिए, जीप के परदे फाड दिए। अतरसिह आर्य क्रातिकारी जी ने माईक पर लोगो से शान्ति के लिए प्राथना कर स्थिति को सम्भाला। बार-बार कहा होश रखो। हमारा धरना सफल चल रहा है। षड्यन्त्र के तहत धरना फेल करने की योजना बना रहा है। हमने बुद्धि पूवक धैय से गाधीवादी तरीके से सत्याग्रह चलाना है। सभो युवक शान्ति से धरने पर आकर बैठ गये। श्री महावीरसिह के भजन हुये। इतनी देर मे ठकेदार पुलिस चौकी मे जाकर पुलिस को ले आया। क्रान्तिकारी जी व अनिलकुमार कासनिया ने ए एस आई. को स्थिति से अवगत कराया। साफ शब्दो मे बताया कि हम शान्ति से समझा रहे हैं न शराब हम पीयगे न गाव मे पीने देगे। ठेकेदार की जीप का गाव मे नहा घुसने दगे। हमारी ओर से कोई हरकत नही होगी। ठकेदार ने हरकत को तो हम नही बकसेंगे। सारी जिम्मेवारी आपकी होगी। बाद म पुलिसवाल चले गए। जब तक पाप का अड्डा खत्म नही होगा धरना जारी रहेगा।

प्रात काल खूंखार शराबी श्री वजीरसिह ने जो रात को ठेकेदार के बहकावे मे आकर हुल्लडबाजी कर रहा था, धरने पर आकर क्रातिकारी जी व धरने पर बैठे लोगो से क्षमा मागी और भविष्य में शराब न पीने की प्रतिज्ञा को। साथ मे धरने पर पूण सहयोग का आश्वासन दिया। १-४-९३ को सारे दिन धरने पर रहा।

मा० भीमसिंह प्रधान
शराबबन्दी समिति बालसमन्द

हरयाणा के कोने-कोने मे शराब के ठेकों पर धरणे चालू

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एव भारतीय किसान यूनियन के आह्वान पर हरयाणा के कोने कोने मे शराब के ठेको पर धरणे आरम्भ होगये हैं। शराबबन्दी सत्याग्रही शराब खरीदनेवालों को प्यार से समझाते हैं और न मानने पर उसे गधे पर बैठाकर जूतों की माला डालकर उसका जलूस निकाल कर उसे अपमानित करते हैं। इस प्रकार ग्रामो मे शराब पीनेवाले भविष्य मे शराब न पीने की प्रतिज्ञा करने लगे हैं। ग्राम की पचायतों ने विवाह आदि के अवसरों पर भी किसी को शराब सेवन करने की मनाही कर दी है। झगडे आदि करके नाचनेवालों पर जुर्माना किया जा रहा है। पचायत ने यह भी निर्देश

(शेष पृष्ठ ६ पर)

पुस्तक-समीक्षा

वैदिक सत्संग यज्ञ-विधि:

संकलनकर्ता—सोहनलाल शारदा
स्वाध्याय—मण्डल, शाहपुरा
जिला—भीलवाडा (राजस्थान)
मूल्य—सप्रेम भेंट।

श्री सोहनलाल जी शारदा ने यह वैदिक सत्सग यज्ञ-विधि महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्मित ग्रन्थानुसार सकलित की है और वे चाहते हैं कि आर्यबन्धु साप्ताहिक सत्सग हेतु एक ही विधि अपनावे। कागज छपाई सुन्दर और शुद्ध है। पुस्तक नि शुल्क भेट करने की भावना भी श्रद्धेय है।

प्रथम पृष्ठ पर 'श नो देवी' मन्त्र से तीन आचमन करके अग्निहोत्र आरम्भ करें, लिखा है और पृष्ठ १४ पर सब जने जो यज्ञ करने बैठे हो वें इन मन्त्रों से तीन-तीन आचमन करें, वे मन्त्र ये हैं—

ओ३म् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥१॥
ओम् अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥२॥
ओ सत्य यश श्रीर्मयि श्री श्रयता स्वाहा ॥३॥

इस संकलन पुस्तक के पृष्ठ १ पर "श नो देवी" से आचमन करके अग्निहोत्र आरम्भ करना लिखा है और पृष्ठ १४ पर "अमृतो-परस्तरणमसि" आदि से आचमन और "वाड्म आस्येऽस्तु" आदि ७ मन्त्रो से अङ्गस्पर्श तथा मार्जन करके यज्ञ प्रारम्भ किया गया है।

अग्निहोत्र से पूर्व आचमनक्रिया का विधान १ और १४ पृष्ठ के अनुसार पृथक्-पृथक् मन्त्रो से किया गया है, यह परस्पर विरोधी है।

इस पुस्तक मे महर्षि दयानन्द सरस्वती के स्वनिर्मित ग्रन्थों से विधिवाक्यो का सकलन किया गया है, उनके साथ-साथ ग्रन्थ का नाम पृष्ठ और पक्ति सहित पूरा पता देना चाहिए, जिससे पाठक मूलग्रन्थ को देखकर सशय निवृत्त कर सके।

आर्यसमाजो में जितनी भी सत्सग पुस्तकें प्रकाशित उपलब्ध हैं वा मैंने देखी हैं उनमे ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्या) और देवयज्ञ (अग्निहोत्र) दो यज्ञ अवश्य होते हैं, कुछ पुस्तकों मे पाचों यज्ञो का भी विधान होता है किन्तु शारदा जी ने सन्ध्या को छोडकर केवल यज्ञ-विधि का ही सकलन किया है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पाच महायज्ञो का विशेष वर्णन 'पच महायज्ञविधि' और 'सस्कारविधि' पुस्तको मे किया है। इनमे भी 'सस्कारविधि' 'पच महायज्ञविधि' के बाद की रचना है। 'उत्तरोत्तर मुनीना प्रामाण्यम्' के अनुसार महर्षि दयानन्द सरस्वती के भी सस्कार-विधि ग्रन्थ मे लिखित सन्ध्या अग्निहोत्र आदि के विधान को अधिमान देना चाहिये और तदनुसार सभी समाजो मे, संस्थाओ और परिवारो मे सन्ध्या अग्निहोत्र आदि नित्यकृत्य होने चाहिए तभी एकरूपता सम्भव है।

—वेदव्रत शास्त्री

(पृष्ठ ४ का शेष)

दिये हैं कि विवाह के पूर्व लगन पत्र भेजते समय लडकीवाले लिखवाकर भेजे कि हमारे ग्राम मे शराबबन्दी लागू हो चुकी है। बाराती ऐसे आवे जो शराब न पीनेवाले हों । शराब पीनेवालो को बारात से निकाल दिया जावेगा। सभा कार्यालय मे प्राप्त सूचनाओ के अनुसार निम्न-लिखित ग्रामो मे शराब के ठेको पर धरणे आरम्भ हो चुके हैं। ठेकेदार पुलिस की सहायता लेकर दुकानो पर तो बैठे है, परन्तु एक भी बोतल नही बिक रही है। क्योकि वहा शराबबन्दी सत्याग्रही शराब के विरुद्ध नारे लगाते रहते हैं तथा महिलाओं के गीत होते रहते हैं। सुविधा के अनुसार सभा के अधिकारी तथा उपदेशक, भजनोपदेशक भी धरणो मे सम्मिलित हो रहे है। ठेकेदार शराब की बोतल लेने पर इनाम देने का भी लालच दे रहे है, परन्तु वे सफल नही हो रहे।

जिला रोहतक मे महम मे २८ मार्च से ही पुराने बस अड्डे के सामने शराब के ठेके पर श्री सुरजमल आर्य पहलवान् तथा आर्य समाज खरकडा आदि आर्यसमाजो के कार्यकर्त्ताओ ने धरणा दे रखा है। ठेकेदार ने पुलिस की सहायता से लेकर शराबबन्दी सत्याग्रहियो पर धरणा समाप्त करने को धमकिया दिलवाई परन्तु सत्याग्रही भय-भीत नही हुए। बेरी मे भी कादयानखाप की ओर से ठेके पर धरणा चालू है। डीघल मे भी ठेके पर सफलता पूर्वक धरणा चालू है। मोखरा मे प्रिंसिपल गगनसिह जी के सहयोग से श्री जयपालसिह जी तथा श्री रतनसिह ने शराबबन्दी प्रचार करवाया। ५०० रु० सभा को दान प्राप्त हुआ। पचायत ने ठेको के लिए दुकान देने पर भी श्री शेरसिह पर एक हजार जुर्माना किया है। ग्राम आसन की पचायत ने शराब बन्दी का प्रस्ताव करके उपायुक्त को भेजकर ठेका उठाने के लिए माग की है और धरणों की तैयारी हो रही। गुलिया तथा छिक्कारा खापो की भी शराबबन्दी के लिए पचायतों का आयोजन हो रहा है। जिला सोनीपत के ग्राम भटगांव तथा अकबरपुर बारोटा, सरफाबाद मे शराब का ठेका बन्द करवा दिया है। १६ से १८ अप्रैल सोनीपत शहर मे सम्मेलन होगा। कथूरा मे ठेका बन्द हो चुका है। जिला फरीदाबाद मे रावत पाल की शीघ्र बडी पचायत सभा के उपदेशक श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री के प्रयत्नो से वहीन मे हो रही है। ग्रामीण ठको पर धरणो देने तैयारी की जा रही है। १६ से १८ अप्रैल को आर्यसमाज पलवल मे उत्सव के अवसर पर शराबबन्दी सम्मेलन किया जा रहा है।

जिला रेवाडी के ग्राम पाल्हावास मे शराब के ठेके पर धरणा पूरी शक्ति के साथ दिया जा रहा है। वहा सभा के उपदेशक प० मातूराम का कार्यक्रम बनाया है। जिला भिवानी मे गत सप्ताह चरखी दादरी मे फोगाट, श्योराण, बाखड इमलोटा तथा सतगावा बिरोहड बारहा हवेली तथा चिडियो के ग्रामो की पचायतो ने अपने ग्रामो से ठेके बन्द करवाने के बाद चरखो दादरी शहर के भी ठेके बन्द करवाने का निर्णय किया है। श्री धर्मपाल शास्त्री के प्रयत्न से ग्राम नान्धा में ठेके पर धरणा आरम्भ हो चुका है। ग्राम मिश्री मे भी धरणा चालू है। सभा प्रधान प्रो० शेरसिह तथा मन्त्री श्री सूबेसिह ने यहा जनता को सम्बोधित किया है।

जिला हिसार के प्रसिद्ध ग्राम बालसमन्द के ठेके पर सभाउपदेशक श्री अतरसिह आर्य तथा श्री जयपाल आर्य ने धूम-धाम तथा उत्साह से शराबबन्दी का प्रचार किया है । ठेकेदार परास्त होनेवाला है। ग्राम जाखल में श्री ओमप्रकाश आर्य के प्रयत्न से ठेके पर धरणा जारी है जिला करनाल के ग्राम घोघडी मे शराबबन्दी प्रचार की व्यवस्था की गई है। जिला पानीपत के ग्राम बला मे शराब के ठेके पर घाघरी टाग दी गई है। जिला जीन्द के ग्राम भम्भेवा में शराब पर पूर्ण पा-बन्दी लगी हुई है। शराब पीने वालो का बहिष्कार जारी है। आर्य-समाज नरवाना मे १६ से १८ अप्रैल उत्सव पर शराबबन्दी सम्मेलन होगा। जिला अम्बाला मे पचकूला तथा अम्बाला शहर मे नाहन हाउस के ठेको पर धरणा चालू है। जिला यमुनानगर मे ग्राम मन्धार मे धरणा आरम्भ हो गया है। जिला कुरुक्षेत्र के ग्राम बाहरी मे ठेका हटवाने क लिए सघंष चालू हैं। जिला कैथल, यमुनानगर, तथा अम्बाला के धरणो का सचालन स्वय चौ० विजयकुमार जी दिन रात भाग दौड करके कर रहे हैं।

केदारसिंह आर्य

गुरुकुल कांगड़ी के लिए विशेष बस यात्रा

गुरुकुल कागडी के उत्सव मे सम्मिलित होने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक (फोन ७७७२२) की ओर से १३ अप्रैल को प्रात एक विशेष बस हरद्वार जावेगी। जो भाई-बहन इस बस मे जाना चाहते हैं वे तुरन्त एक ओर का किराया ५०) रु० जमा करवाकर अपनी सीट सुरक्षित करवाने का कष्ट करें।

सभामन्त्री

आर्यसमाज स्थापना दिवस पर कविता

अपौरुषेय वेदों का जो है,
इस वसुधा पर बना प्रचारक।
सत्य सनातन धर्म सुवैदिक—
का जो बना पुनः उद्धारक॥

ऋषिवर दयानन्द से ऋषि ने,
जिसे किया था नव स्थापित।
वैदिक धर्म ध्वजा लहराया,
वैदिक पथ, कर प्रतिपादित।

स्वतन्त्रता का मन्त्र राष्ट्र को,
जिसने दिया प्रथम उत्प्रेरक।
महिलाओ को, विधवाओ को,
दिला दिया फिर उनका हक॥

सत्य धर्म की प्रभा प्रभासित,
हुई पुन नव ज्योतिर्मान।
जिसके कार्यकलापों से फिर,
आया भू पर नया विहान॥

स्वर्ग सदृश फिर बने धरा—
यह, यही हमारा है नारा।
आर्य बने सब भूमि निवासी—
हमने जग को ललकारा॥

शुचिता-समरसता-समृद्धि मे,
पूर्ण बने यह जगती आज।
वेदो की आभा बिखराता,
बढता भू पर आर्यसमाज॥

राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति,
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ प्र)

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में छात्रों का प्रवेश

अरावली पर्वत की शृंखला (दिल्ली मथुरा मार्ग पर) बदरपुर बार्डर से एक किलोमीटर दूर सराय ख्वाजा निकट सूरजकुण्ड जिला फरीदाबाद में अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ मे कक्षा चौथी से दसवी तक प्रवेश प्रारम्भ है। यहा पर गुरुकुल कांगडी विश्व विद्यालय हरद्वार का पाठ्यक्रम लागू किया है। सभी शिक्षक ट्रेण्ड तथा अनुभवी हैं। यह गुरुकुल आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा चलाया जा रहा है।

गुरुकुल में छात्रावास, यज्ञशाला, पुस्तकालय तथा व्यायामशाला की व्यवस्था है। यहा छात्रों के दिन रात रहन-सहन, आचार-व्यवहार स्वास्थ्य, चरित्र निर्माण तथा धार्मिक शिक्षा के साथ छात्रो के सर्वांगीण विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता है। गतवर्ष आठवी श्रेणी का परिणाम शतप्रतिशत रहा है। शिक्षा नि शुल्क । भोजन शुल्क केवल २००) मासिक है।

अत आप अपने बालको को सदाचारी तथा सुयोग्य बनाने के लिए गुरुकुल मे शीघ्र से शीघ्र प्रवेश करवाकर उनका उज्ज्वल भविष्य बनाये। स्थान सीमित हैं। तुरन्त सम्पर्क करें।

आचार्य गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जि० फरीदाबाद
(पो० नई दिल्ली-४४) फोन : ८/२७५३९८

चौबीसी महम मे शराब के ठेको पर धरणों की तैयारी

स्वामी ओमानन्द जी के शिष्य आचार्य जयप्रकाश शास्त्री की अध्यक्षता मे गाव निदाना (महम चौबीसी) के अन्दर दिनाक २५-२-९३ को एक सभा का आयोजन किया गया जिसमे समाज को नरकोन्मुख गर्त मे ले जाने वाली शराबादि बुराइयो के उन्मूलन के लिए दृढ़ प्रतिज्ञा करके सक्रिय तन मन धन से सहयोग करने का सकल्प लेकर सक्रिय कार्यक्रम बना लिये गये हैं। क्योंकि वेदप्रचार व भजनोपदेशको की भारी कमी के कारण महम चौबीसी का युवकसमाज सही दिशा निर्देश के बिना सुरा के बढते प्रकोप से युवापीढी अनेकों दोषों का शिकार बन गई है। कार्यं वा साधयेयम् देह वा पातयेयम् को मूर्तरूप देने के लिए प्रथम चरण में लाखन माजरा, निन्दाना व सीमायन गावों मे पूर्ण प्रतिबन्ध ठेको पर धरने बैठा दिये गये हैं। द्वितीय चरण मे फरमाना, खरकडा, सीसर खास, भैणियो मे सप्लाई होनेवाली शराब पर प्रतिबन्ध लगवाये जायेंगे। महम चौबीसी मे ५० रु० की बोतल इस का प्रमाण है कि यहा बिक्री अधिक है और जहां बिक्री अधिक होगी वहा महगी होगी जहां महगी होगी वहा शीघ्र विनाश निश्चित है। इससे सिद्ध है कि महम चौबीसी में पूरे हरयाणा की तुलना में शराब महगी और अधिक पीते हैं। भारतीय किसान यूनियन के अपने प्रचार के साथ शराब उन्मूलन के गीत चौबीसी मे घूमकर सुनाये हैं अत अब लोगों मे जागृति भी आने लगी है। चौबीसी आर्य युवक मण्डल का चुनाव भी सम्पन्न हुआ जो निम्न प्रकार है—

प्रधान-आचार्य जयप्रकाश उपप्रधान-कृष्णचन्द्र (पच) मन्त्री-माढूराम नहरा, उपमन्त्री-जयवीर राठी, सयुक्तमन्त्री शीले राठी तथा अन्य सक्रिय कार्यकर्ता। सभी गावो मे शराबबन्दी प्रचारक हैं- श्री रामसिह प्रचारी उग्रसेन वर्मा, दयानन्द नहरा, धर्मपाल नहरा, प्रो० मोजीराम, मा० जयपालसिंह, डा० देवेन्द्र सहारण, भूतपूर्व सरपच होशियारसिह, सरपच जागेराम, राजसिंह व सतवोर तोनो ही सरपच व सभी पच, सूबेदार अजितसिंह, सूबेदार रणधीर, कैप्टन दलीपसिह महम, जयदेव पच कुलदीप, चन्दरूप स्वतन्त्रता सेनानी, ब्र०शिवलाल, जिलेसिह ठोलेदार आदि सक्रिय कार्यकर्त्ताओ ने भाग लेकर सघर्ष का बिगुल बजाने के लिए कमर कस लो है।

आर्यसमाज के शराबबन्दी आन्दोलन द्वारा महिलाओ मे जागृति

आर्यसमाज की प्रेरणा से आजकल सम्पूर्ण हरयाणा मे शराबबन्दी की लहर बडी तेज गति से चल रही है। शराब के दुष्परिणामो से तग आकर जनता-जनार्दन द्वारा जगह-जगह शराबविरोधी प्रदर्शन किए जा रहे हैं। किन्तु हैरानी का विषय है कि सरकार इस सवैधानिक माग को सुनवाई नही कर रही है। शराबबन्दी सत्याग्रहियो के साथ दुर्व्यवहार किया जा रहा है। विभिन्न समाचारपत्रो तथा सर्वहितकारी द्वारा यह समाचार पढने को मिला कि गत ११ मार्च को रोहतक मे आर्य नेताओ एव शराबबन्दी सत्याग्रहियो जिनमे महिलाए भी थी, पर अश्रुगैस लाठीचार्ज जैसी निर्मम कार्यवाही की गई। इससे सरकार के रवैये के प्रति सम्पूर्ण हरयाणा की महिलाओ ने भर्त्सना की है। आर्यसमाज के इस आन्दोलन द्वारा महिलाओ मे विशेष जागृति एव क्रांति आई है जिसके परिणामस्वरूप अनेक महिला सगठन इस आन्दोलन मे कूद पडे हैं ताकि हरयाणा के मस्तक से इस कलक को दूर किया जा सके। महिलाए स्वय तो इस आन्दोलन मे भाग लेती हैं साथ ही अपने पतियो को भी इसमे भाग लेने के लिए प्रेरित करती हैं। महिलाओ की इसी पुकार को इस गाने मे व्यक्त किया जा रहा है।

गीत

कहे सजना, सुनो सजनी, तेरी जो सरकार निकम्मी है।
जो सरकार निकम्मी है, वो सरकार बदलनी है ॥टेक॥

पिलाके हमे शराब सुनो ॥
जीवन कर दिया खराब सुनो ॥
यह विष की धार बदलनी है ॥१॥

मेरी बात पति धर ध्यान सुनो ॥
दुखी हैं मजदूर किसान सुनो ॥
महगाई की मार बदलनी है ॥२॥

साधु और सन्यासी सब ॥
गृहस्थ-वानप्रस्थ बनवासी सब ॥
हो जाओ तैयार बदलनी है ॥३॥

सबके हाथो मे दण्डा हो ॥
दण्डा पर ओ३म् का झण्डा हो ॥
महात्मा लालचन्द का प्रचार बदलनी है ॥४॥

लेखक—महात्मा लालचन्द श्री मगल जयकोर आध्यात्मिक ज्ञान आश्रम निनानिया खेडकी ग्राम-बेरावास जि०-महेन्द्रगढ(हरयाणा)

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१ मैसर्ज परमानन्द साईंदित्तामल, भिवानी स्टैड, रोहतक।
२ मैसर्ज फूलचन्द सीताराम, गाधी चौक, हिसार।
३ मैसर्ज सन-अपन्ट्रेडज, सारग रोड, सोनीपत।
४ मैसज हरीश एजेंसीस, ४९९/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत।
५ मैसर्ज भगवानदास देवकीनन्दन, सर्राफा बाजार, करनाल।
६ मैसर्ज घनश्यामदास सीताराम बाजार, भिवानी।
७ मैसर्ज कृपाराम गोयल, रुडी बाजार, सिरसा।
८ मैसर्ज कुलवन्त पिकल स्टोर्स, शाप न० ११५, मार्किट न० १, एन०आई०टी० फरीदाबाद।
९ मैसज सिगला एजेंसीज, सदर बाजार, गुडगाव।

ठेकों की नीलामी पर अफसरों को समन जारी

गोहाना २२ मार्च (ह स)। स्थानीय प्रथम श्रेणी जज जगदीश राय दुग्गल ने शराब के ठेकों की बोली के सदर्भ मे आज राज्य सरकार के सचिव आयुक्त (आबकारी व कराधान) जिले के उप-आबकारी व कराधान आयुक्त (डी ई टी सी) तथा सोनीपत के उपायुक्त के समन जारी किए जिन्हे २६ मार्च को उपस्थित होने के आदेश दिये गए हैं।

इसके लिए हरयाणा शराबबन्दी सघर्ष समिति के अध्यक्ष डा० प्रताप जैन ने याचिका दायर की थी जिसमे उन्होने यह तथ्य विशेष रूप से रेखांकित किया था कि २६ सितम्बर १९९२ को तथा तदुपरान्त पुन: १२ मार्च १९९३ को गोहाना नगरपालिका मे सर्व-सम्मति से यह प्रस्ताव पारित किया था कि यहा पलिका सीमा में ठेके न खोले जाए।

ज्ञातव्य है कि १९९२ में भजनलाल सरकार ने घोषणा की थी कि जो पंचायते/पालिकाएं ३० सितम्बर तक प्रस्ताव दे देगी, उनके लिए १९९३-९४ के लिए ठेकों की बोली नही होगा। यद्यपि इसी के अनुरूप गोहाना पालिका ने ४ दिन पहले २६ सितम्बर को प्रस्ताव कर दिया, तथापि दो मार्च १९९३ को यहा के लिए ठेकों की बोली करवाने का प्रयास हुआ जो सिरे न चढ सका। यह बोली रद्द कर देनी पड़ी थी।

इन पर संघर्ष समिति के अध्यक्ष डा० जैन ने पालिका से आग्रह कर १२ मार्च १९९३ को फिर से प्रस्ताव करवाया। किन्तु सब कुछ ताक पर रख कर प्रशासन ने १९ मार्च को फिर बोली करवा ही दी जिस पर डा० जैन न्यायालय के द्वार खटखटाने को विवश होगये। चूंकि इस समय वकीलो की हडताल चल रही है, अध्यक्ष डा० जैन को अत्यधिक श्रम करते हुए स्वय ही याचिका सबजज श्री दुग्गल के समक्ष प्रस्तुत करनी पडी। दैनिक हिन्दुस्तान

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

व्यवहार तथा व्यक्तिगत रूप में सम्पर्क करके हरयाणा के कानून के अनुसार समय पर शराबबन्दी प्रस्ताव सरकार को भिजवाने, हरयाणा के प्रत्येक जिले में शराबबन्दी सम्मेलन प्रचार करवाने, शराब के ठेको पर सफल विरोध प्रदर्शन करवाने आदि रचनात्मक कार्यो की अन्तरग सभा ने सराहना की है और इन्हें सभा तथा हरयाणा शराब बन्दी समिति द्वारा शराबबन्दी के लिए कार्यक्रम बनाने तथा सभी प्रकार की कानूनी कार्यवाही करने का पूरा अधिकार दिया है।

महिलाओ का शराबबन्दी सगठन बनाया जावेगा

हरयाणा प्रदेश मे शराब ठके के बन्द करवाने के लिए ग्रामो की महिलाये प्रमुख भूमिका निभा रही हैं। वे जिस भी शराब के ठेके पर धरणा देती हैं, वहा शराब की बिक्री बन्द हो जाती है और ठेकेदारो की आमदनी बन्द होते ही वे ठेका बन्द करने पर विवश हो जाते हैं, वैसे भी शराबियो के उत्पात को महिलाओ को ही सहन करना पडता है। अत सभा प्रदेश मे महिलाओ का एक शराबबन्दी सगठन बनायेगी तथा जिले मे इनकी शाखाए स्थापित करेगी।

शराब विरोधी साहित्य मुफ्त वितरित किया जावेगा

श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने शराब के विरुद्ध लिखित अपनी ५ हजार मूल्य की पुस्तके सभा को दान मे दी हैं, जिन्हें आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से जिन ग्रामों मे शराब के ठेके हैं वहाँ मुफ्त वितरित किया जावेगा।

केदारसिंह आर्य

शराब हटाओ देश बचाओ

शराब एक अभिशाप

नशाबन्दी के सिद्धान्त को हरयाणा में लोगों ने अपनाया है
जगह-जगह पर पिकट लगाकर सब को ही समझाया है
दारू के खिलाफ यहां की औरत ने आन्दोलन खडा किया
जनता का सहयोग लिया और मर्दों को झिंझोड दिया
शराब खानों को बन्द कराकर नई दिशा दिखलाई है
दुकानों पर पहरा देकर लोगों को समझाया है
युवा का सहयोग मिला तो अच्छा कदम उठाया है
नशाबन्दी के सिद्धान्त को लोगो ने अपनाया है।

समाज के हर व्यक्ति की मांगें चार रही हैं
धन दौलत मे वृद्धि हो और इज्जतदार वो बने रहें
सेहत उनकी ठीक रहे और बुद्धिमान् भी बने रहें
लेकिन जिस घर में यह जहर घुसा है-धन को खाकर छोड़ा
इज्जत घटा दी घर की, बुद्धि को खाकर छोडा
सेहत भी रह सकी ना, बीमारी ने खाकर छोडा
ये आसमान इस में तेरा भी है इशारा
सेहत बची ना इज्जत, बुद्धि ना धन बचा है
धीरे-धीरे करके चारों को खा लिया है
नशाबन्दी सिद्धान्त को लोगो ने अपना लिया है।

महमाननवाजी घर मे बस तुझ से ही हो रही है
ऊंची सभा की रौनक भी तुझ से बनी है
रिश्वत मे ऊची पदवी, तुझ को ही मिली है
दफ्तर की फाईलों में, गति तुझ से ही बढी है
शराब ना कोई पीये, उसे बेकार सा कहा है
समाजी ढांचे को बरबाद, दारू ने कर दिया है
नशाबन्दी के सिद्धान्त को लोगो ने अपना लिया है।

कडवी तुझे बनाया, फिर भी महफिल में परी तुझे बताया
समाज की है दुश्मन, लेकिन समाज ने ही अपना लिया है
झगडो की जड बनी है, और लोगो को खा लिया है
गुलशन के छोटे-छोटे फूलो पर भी अपना रग चढा दिया है
नारी है तुझ से पीडित, बच्चे है नाला तुझ से
विदेशो से आ कर तूने डेरा जमा दिया है
बीमारी बन गई है, और लाईलाज हो गई है
अब आये कोई सुधारक, गाधी हो या स्वामी (दयानन्द)
"हुकमसिंह" की दुआ अब यही है, युवा को शुद्ध बुद्धि दे दो
बूढों को तूने खाकर, जवानी को दबा लिया है
नशाबन्दी के सिद्धान्त को हरियाणा मे लोगो ने अपना लिया है
जगह-जगह पर पिकट लगाकर लोगो समझाया है।

हुकमसिंह एडवोकेट
४३/६, पिपली रोड कुरुक्षेत्र

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०/७३   रजि० नं० P/RTK-४९

ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २०   अंक १९   १४ अप्रैल, १९९३   वार्षिक शुल्क ४०)   (आजीवन शुल्क ५०१)   विदेश में १० पौंड   एक प्रति ८० पैसे

महम, डीघल तथा बेरी में शराब के ठेकों पर धरणे आरम्भ

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के आह्वान पर जिला रोहतक के प्रसिद्ध कस्बे महम डीघल तथा बेरी में शराब के ठेकों पर धरणे आरम्भ हो गये हैं, इससे पूर्व दोनों कस्बों मे सर्वखाप पचायतो का आयोजन किया गया था इनमें सभा के अधिकारी भी सम्मिलित हुए थे और पचायतों मे एक अप्रैल से शराब के ठेकों पर धरणे देने का निर्णय किया गया था। उसी निश्चय के अनुसार महम तथा बेरी मे आर्यसमाज तथा भारतोय किसान यूनियन के कार्यकर्त्ताओं ने ठेकों के सामने धरणे आरम्भ कर दिये हैं। दोनों स्थानों पर भारी सख्या में नर-नारी बैठे हैं, तथा जो भी शराब की बोतल लेने आते हैं, उन्हे शराब न खरीदने की प्रेरणा करते हैं और शराब से होने वाली बुराइयों की जानकारी दी जाती है। यदि शराब खरीदने वाला पीने से नहीं मानता है तो उसे घाघरी पहनाकर गधे पर घुमाया जाता है। महम में दो पुलिस के दो सिपाहियों को भी बोतलें लेते पकड लिया, उन्हें भी घाघरी पहना दी गई, परन्तु स्थानीय थानेदार ने माफी माग कर सिपाहियों को छुड़ा लिया। रोहतक जिला के पुलिस अधीक्षक को शिकायत की गई कि उन्होंने अपना पुलिस को दण्ड देने के स्थान पर शराबबन्दी सत्याग्रहियो को धरणा समाप्त करने की धमकियां दी, परन्तु श्री सूरजमल पहलवान के नेतृत्व में धरणे पर बैठे सत्याग्रहियों ने कहा है कि तब तक डटे रहेंगे जब तक ठेका बन्द नहीं हो जाता। १,२ अप्रैल को सभा की ओर से श्री [illegible] जी, गुरुकुल लाढोत के आचार्य स्वामी हरिदत्त जी, सभा भजनोपदेशक श्री शेरसिंह आदि धरणे पर बैठे तथा शराबबन्दी सम्बोधन किया। इसी प्रकार प्रतिदिन सभा के कार्यकर्त्ता, उपदेशक इन धरणों में सम्मिलित होते हैं। शराबबन्दी पोस्टर तथा ट्रैक्ट मुफ्त वितरित किये जा रहे हैं। सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह, मन्त्री श्री सूबेसिंह, वि० गुरुवचनसिंह प० [illegible] जी आदि भी बेरी धरणे पर गये तथा कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित किया।

डीघल में भी ठेके पर शराबबन्दी सत्याग्रहियों का धरणा निरन्तर जारी है। यहां सभा के उपदेशक श्री [illegible] आर्य, प० चन्द्रपाल सिद्धान्त शास्त्री, प० हरिश्चन्द्र शास्त्री, भजनोपदेशक श्री रामकुमार आर्य, श्री [illegible] आर्य ने शराब तथा ठेकेदार के विरुद्ध जमकर प्रचार किया है। प्रचार तथा धरणे के कारण ठेके से एक भी बोतल नही बिक सकी है। सत्याग्रहियो का निश्चय है कि धरणा तब तक चालू रहेगा जबतक ठेकेदार अपना ठेका बन्द करके भाग नहीं जावेगा।

इसी प्रकार बेरी तहसील झज्जर के शराब के ठेके पर आर्यसमाज तथा भारतीय किसान यूनियन खाप कादियान की ओर से एक अप्रैल से ही धरणा चालू है। यहां भी सभा के अन्तरग सदस्य श्री भरतसिह पूर्व सरपच दूबलधन, आर्यसमाज बेरी के कार्यकर्ता भारतीय किसान यूनियन के साथ ठेकों को बन्द करवाने के लिए सघर्ष कर रहे हैं। सभा के उपदेशक श्री चन्द्रपाल सिद्धान्त शास्त्री तथा भजनोपदेशक श्री नन्दलाल श्री रामकुमार आर्य धरणे मे सम्मिलित हुए तथा शराबबन्दी का प्रभावशाली प्रचार किया।

भारतीय किसान यूनियन कादियान खाप के प्रचारमन्त्री श्री वीरेन्द्रसिह बेरी ने एक प्रेस विज्ञप्ति मे कहा है कि धरणा शान्तिपूर्वक चल रहा है। शराब के ठेकेदार ने शराबबन्दी प्रचार से भयभीत होकर ठेके के सामने ठेके पर शराब पीने वालों को मुफ्त पिलाई जाती है बैनर लटका दिया है, परन्तु दूसरी ओर सत्याग्रहियो ने ठेके के पास घाघरी लटका रखी है तथा गधो को भी बाध रखा है जो कि शराब पीनेवालो का जलूस निकालने के लिए हर समय तैयार रहते हैं। इस दृश्य को देखकर शराबी मुफ्त मे भी शराब पीने को तैयार नही हो रहे हैं। शराबबन्दी सत्याग्रहियो ने जिला प्रशासन से माग करते हुए कहा है कि कादियान खाप के १२ ग्रामो मे शराबबन्दी लागू हो चुकी है अत बेरी के ठेके को तुरन्त बन्द कर दिया जावे। श्री बेरी ने अपने वक्तव्य मे कहा है कि श्री बन्सी लाल को नशाबन्दी ले डूबी थी अब श्री भजनलाल को शराबबन्दी गद्दी से उतारकर रहेगी। ५ अप्रैल को यहा सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी तथा सभामन्त्री श्री सूबेसिह जी भी धरणे में सम्मिलित हुए और शराबबन्दी कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि जबतक यह सत्याग्रह बेरी का ठेका बन्द न हो जावे तब तक धरणे पर जमे रहो। शान्तिपूर्वक धरणे पर बैठे कार्यकर्ताओ को पुलिस कानून के अनुसार नही उठा सकती। यह चेतावनी आर्यसमाज ने स्थानीय पुलिस को दे दी है। प्रो० शेरसिह जी व मंत्री सूबेसिह के सामने ही बेरी के युवको ने गावो में शराब को अवैधरूप से घर घर पहुचाते हुए एक वाहन को शराब की पेटियो से भरा हुआ पकडा और धरणे पर बैठे हुए सभी सदस्यों को सूचित किया। सभाप्रधान मन्त्री व बेरी खाप के सदस्यो ने थाने में जाकर रिपोर्ट दर्ज करवाई, और आवश्यक कार्यवाही करने का आग्रह किया है।

सांपला (रोहतक) में तीन ठेकों पर धरणे आरम्भ

रोहतक दिल्ली मार्ग पर स्थित सापला में तीनों ठेको पर शराबबन्दी, आर्यसमाज, भारतीय किसान यूनियन तथा अहुलावत, मोहलान खाप की ओर से ५ अप्रैल से तीनो शराब के ठेको पर धरणे आरम्भ कर दिये गये हैं। सापला गढी सापला तथा नयाबांस ग्रामों के सरपंच तथा उनके सहयोगी भारी संख्या मे धरणे पर बैठे है और किसी को भी शराब नही खरीदने दे रहे। शराब के ठेकेदार ने पुलिस की सहायता से रात्रि को शामियानो मे शान्तिपूर्वक बैठे कार्यकर्ताओं को डराया तथा धमकाया और शमियाना उखाड दिया। इसकी सूचना देने के लिए आज आर्यप्रतिनिधिसभा के कार्यालय में तीनों गामों के सरपच सभा के अधिकारियो से मिलने आये। सभा की ओर से इन्हे शराबबन्दी साहित्य, पोस्टर तथा बैनर भेज दिये गये। सभा के उपदेशक प० मातुराम जी प्रभाकर तथा महिला नेता श्रीमती वेदकुमारी आर्या धरणे पर प्रचारार्थ पहुच गये हैं। सभा के मन्त्री श्री सूबेसिह जी तथा हरयाणा शराबबन्दी समिति के सयोजक श्री विजयकुमार जी भी धरणे मे सम्मिलित होकर शराबबन्दी सत्याग्रहियो का मार्ग दर्शन कर रहे हैं।

केदारसिह आर्य

राष्ट्रीय सुरक्षा का प्रश्न——साम्प्रदायिकता का विषवृक्ष—२

वतन की आबरू खतरे में है

ले० सुखदेव शास्त्री महोपदेशक,
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

—गतांक से आगे—

यह थोडा सा गत सम्प्रदायिक इतिहास का दिग्दर्शन सा कराया है, जिससे पता चल सके कि इस साम्प्रदायिकता के विष वृक्ष की जडे कितनी गहरी हैं, और इसकी जडों में किन नेताओं ने पानी देकर बढाया है। आज उसी साम्प्रदायिकता विष वृक्ष के जहरीले फल सारे देश को दगों के रूप मे खाने पड रहे हैं।

हरयाणा मे छोटा पाकिस्तान मेवात—

यह तो ऐतिहासिक सत्य है कि पाकिस्तान के निर्माण में प्रत्येक भारतीय मुसलमान का भरपूर सहयोग रहा है। उन्होंने इसके निर्माण मे तन, मन, धन, से सहयोग दिया है। एक मात्र मुस्लिम लीग को अपनी राजनीतिक पार्टी और मि० जिन्ना को ही केवल मात्र अपना नेता माना था। इसी आधार पर ही मुसलमानों ने १९४७ मे हिन्दुओ की भयंकर मारकाट की थी। पाकिस्तान से करोडो हिन्दू निष्कासित हुए, और लाखो लोग मारे गये थे। लाखो लडकियों का अपहरण किया गया था। अरबो रुपयो की सम्पत्ति का विनाश हुआ था। जहा पर मुसलमान अधिक सख्या मे नहीं थे वहा से वे निकलकर पाकिस्तान की ओर चल पडे थे।

उनके भारत से निकल पडने की प्रमुख घटना मेवात के मुसलमानो मे भी हुई थी। मेवनेता यासीन खा के नेतृत्व मे मेवात से लाखो मुसलमान पाकिस्तान जाने के लिए मेवात से निकल पडे थे। लम्बा मुस्लिमो का काफला जब चला तो दिल्ली मे यह समाचार गाधी जी को सुनाया गया। गाधी जी भागकर मेवात की ओर आए, मार्ग मे हरयाणा के ग्राम धारुहेडा मे मुस्लिम काफले को गांधी जी ने रोककर पूछा—कि तुम कहा जा रहे हो? यासीन खा ने कहा—पाकिस्तान जाने के लिए दिल्ली की जामा मस्जिद मे जाना चाहते हैं। इस पर गाधी जी ने कहा—तुम पाकिस्तान मत जाओ। जैसे हिन्दू मेरी दाई आख है वैसे ही तुम मेरी बाई आख के समान हो। तुम वापिस मेवात लौट जाओ। मैं साम्प्रदायिक सद्भाव पैदा करूगा, जिससे तुम कोई भी कष्ट न पावोगे गाधी जी के आश्वासन पर वे वापिस मेवात मे आगए। लाखों लोग थे। बहुत सी जमीन जायदाद छोडकर निकले थे। उन्हें निश्चिन्त करने के लिए गांधी जी ने विनोबाभावे को भेजा। उन्होंने मुसलमानों को बहुत सान्त्वना दी। जिससे आज तक भी वे सुख से रह रहे हैं।

साम्प्रदायिकता की आग पुनः भड़की—

मेवात जहा हिन्दू लोग कम सख्या मे हैं। १९४७ में मेव मुसलमान ७० प्रतिशत और हिन्दू ३० प्रतिशत रहते थे। आज वहा मुसलमान ९३ प्रतिशत और हिन्दू ७ प्रतिशत रह गये हैं। उच्च वर्ग के धनी लोग मेवात छोडकर मुस्लिमों के अत्याचारों से तंग आकर विभिन्न नगरो मे जा बसे हैं। वहा प्रतिदिन हिन्दू बच्चो को मुसलमान बनाया जाता है। लडकियों का अपहरण किया जाता है। हिन्दूस्त्रियों के साथ छेडछाड की जाती है। उन्हे सामाजिक न्याय नहीं मिलता। भारतीय संस्कृति को मिटाकर मुसलमानो का बोलबाला होगया है। हिन्दुओं ने कोई ५० केस थानो मे दर्ज कराए हैं। इस्लामी देशो से बहुत बडी मात्रा मे धन आ रहा है। बस अड्डो के पास विशाल मस्जिदो को निर्माण किया जा रहा है। इन मस्जिदो में इस्लामी स्कूल खोलकर मुस्लिम लडके लडकियो के लिए इस्लामी शिक्षा दी जाती है। इन मस्जिदो मे पब्लिक स्कूलों के नाम मक्का पब्लिक स्कूल और मदीना पब्लिक स्कूल नाम रक्खे गए हैं। पूर्णरूप से पाकिस्तान के प्रति निष्ठा पैदा की जाती है।

६ दिसम्बर के बाद मन्दिर मस्जिद के कारण झगडे हुए। इसमें मुस्लिमो ने २४ धर्मस्थलो का नष्ट कर दिया। हिन्दुघरो मे आग लगादी। मन्दिरो को तोड फोड कर उनमे आग लगादो। पुनाहना मे स्थित आर्य सन्यासी स्वामी अमरानन्द के आश्रम को सर्वथा नष्ट कर दिया। सत्यार्थप्रकाश, वेदों को फाड-फाडकर अग्नि में जला-डाला। सब सामान लूट ले गए। नूह की गोशाला में आग लगाकर हजारों मन चारा नष्ट कर दिया। ७० गौवों को कसाई हाक ले गए। एक गाय के गले में जलता टायर डालकर सडक पर ही मार डाला। एक गाय को हिन्दुओ के सामने सडक पर लाकर कत्ल कर डाला। तेल मील को आग लगाकर सार तेल लूट ले गए। वहां पर स्थित केन्द्रीय रिकार्ड को सर्वथा जला डाला।

वर्ष १९८९ से लेकर १९९२ तक गोहत्या के ९१० मुकदमे दर्ज किए गए हैं। जिनमें एक हजार सत्रह गोहत्यारे कसाई पकडे गए किन्तु सजा किसी को भी नही हुई। पुलिस किसी भी गोहत्यारे को सजा न दे पाई। इसका कारण मन्त्रियों का ही उनकी सिफारिश करके उन्हें छुडवा देना ही है। यह सब कुछ हुआ गाधी जी व विनोबाभावे की साम्प्रदायिक सद्भाव के कारण।

आज के मुस्लिम नेता भी—

साम्प्रदायिकता की आग लगाने मे आज के मुस्लिम नेता भी कभी पीछे नही रहते। उन्हे इसके लिए विदेशो से भरपूर आर्थिक सहायता मिलती है। अभी पिछले दिनों 'नवभारत टाइम्स" मे इन्हें मिलनेवाली आर्थिक सहायता का पूर्ण विवरण छपा था। (१२ फरवरी १९९३) विदेशो से प्राप्त सूची इस प्रकार है—यह आर्थिक सहायता सऊदी अरब, लीबिया और इरान, ईराक ने भारतीय मुस्लिम सेनाओ और उनकी सस्थाओ को निरन्तर मिल रही है। स्थानाभाव के कारण सारी सूची तो यहा पर नही लिखी जा सकती। १२ फरवरी १९९३ के नवभारत टाइम्स के मुख्य पृष्ठ तथा शेष पृष्ठ तीन पर देखी जा सकती है। इसके अतिरिक्त लीबिया से धन पाने वाले मुस्लिम नेताओं में जामा मस्जिद दिल्ली के शाही इमाम सैयद अब्दुल्ला बुखारी और उनके बेटे नायब इमाम सैयद अहमद बुखारी का नाम सबसे प्रमुख है। नायब इमाम अहमद को उनके साम्प्रदायिक सगठन 'आदम सेना' को साम्प्रदायिक गतिविधियो के लिए अथाह धन मिल रहा है। जैसे कि—१९८९ मे दो लाख, १९९० मे तीन लाख, और १९९१ में ढाई लाख रु० उन्हे मिला है। बडे शाही इमाम अब्दुल्ला बुखारी को भी अक्टूबर १९९१ मे तीन लाख रुपया लोबिया से मिला था। इसके अलावा आल इण्डिया मुस्लिम यूथ कान्वेन्सन के जनरल सेक्रेटरी जावेद हबीब खान को भी लाखों रुपयों की सहायता लीबिया से मिल रही है। वर्ल्ड इस्लामिक काल सोसायटी के एक पदाधिकारी डा० अलीफरहत चुनाव के दौरान भारत आते हैं। राजनीतिक दलों में पैसे बांटते हैं। नायब इमाम अहमद बुखारी ने २६ जनवरी को गणतन्त्र दिवस न मनाने की मुसलमानो से अपील की और वे बहुत मुसलमानों को लेकर काले बिल्ले लगाकर राष्ट्रपति को ज्ञापन देने भी गए थे। इन नेताओं में प्रतिबधित इस्लामी सेवक सघ के संस्थापक अब्दुल नसीर मदनी भी शामिल हैं। उसे भी खाडी के देशो से करोडों रुपये मिले हैं। उसके पाकिस्तान की खुफिया ऐजेन्सी और बम्बई के हाजी मस्तान से भी गहरे सबध है। इनमें ही जनता दल के सासद सहाबुद्दीन को भी लाखो रुपये उनके मुस्लिम मुशाबरात के लिए मिल रहे हैं। ये सब मुस्लिम नेता समय समय पर साम्प्रदायिकता का प्रचार करते हैं। मुसलमानों में अपनी चौधर बनाये रखते हैं।

इस नेक काम मे इन नेताओ का साथ सामाजिक न्याय के सबसे बडे पक्षधर रामविलास पासवान भी बढ चढकर देरहे हैं।

भारतीय राजनीति की यह विडम्बना ही कही जायेगी कि एक ओर तो सत्तारूढ दल साम्प्रदायिकता के खिलाफ आन्दोलन करने की घोषणा करते हैं। धर्मनिरपेक्षता की दुहाई देते हैं जबकि ये साम्प्रदायिक व जाति के आधार पर सयुक्त मच बनाते हैं।

"हर शाखा पे उल्लू बैठा है अन्जामे गुलिस्ता क्या होगा।"

इसलिए आज आर्यसमाज इस देश की दशा को देखकर कर रहा है—
वतन की आबरू खतरे मे है।।

हरयाणा में शराबबन्दी सत्याग्रह की गतिविधियां

जिला भिवानी में अनेक स्थानों पर शराब के ठेकों पर धरणे चालू

५ अप्रैल को ग्राम नान्धा जिला भिवानी हवेली खाप के बारहा की सागवान, श्योराण तथा अन्य खापो की एक पचायत की बैठक सम्पन्न हुई। इसमे आयप्रतिनिधिसभा हरयाणा के अधिकारियो को भी विशेष रूप से आमन्त्रित किया। अत सभा एवं अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् के अध्यक्ष प्रो० शेरसिह तथा सभामन्त्री श्री सूबेसिह जी भी इस पचायत में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। सभी खापो के सरदारो तथा प्रतिनिधियो ने सर्वसम्मति से अपने अपने ग्राम मे पूर्ण शराबबन्दी लागू करने का निर्णय किया। पूर्ण शराबबन्दी लागू करने के लिए सागवान खाप के प्रधान श्री राजवीरसिंह जी ग्राम झोझूकला के सरपच श्री मेजर सन्तालाल जो पूर्व मुख्याध्यापक श्री दीवानसिंह जी, हरयाणा के पूर्व मन्त्री श्री हीरानन्द आर्य, श्री जागेराम जी खाप श्योराण ग्राम जेवली के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इस अवसर पर सभा के अधिकारियो प्रो० शेरसिह जी तथा श्री सूबेसिह जी ने पचायत मे उपस्थित कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए बताया कि शराब की बढती हुई लत से हरयाणा की जनता बर्बाद हो रही है। भजनलाल की सरकार शराब बेचकर तथा किसान, मजदूर को शराब पिलाकर बेहोश कर राज्य करना चाहती है, उसे शराब से होने वाली हानियों की चिन्ता नही है। अत सभा ६-७ वर्ष से शराबबन्दी के लिए संघर्ष कर रही है। इस वर्ष भारतीय किसान यूनियन के सहयोग से शराबबन्दी सत्याग्रह आरम्भ कर दिया है। ग्रामीण जनता मे भी जागृति आ चुकी है। हरयाणा के सभी जिलों मे शराब के ठेके पर धरणे दिये जा रहे हैं। सभा की ओर से जिला भिवानी मे शराबबन्दी प्रचार पर सबसे अधिक शक्ति लगाई है। सभी ग्रामीण पचायतो से प्रस्ताव करवाकर सरकार को भिजवाये हैं, परन्तु सरकार ने अधिकाश प्रस्तावो को अस्वीकार करके ठेके खोल दिये हैं। अत इस जिले की पचायतो ने सभी शराब के ठेको को हटवाकर सरकार को मुह तोड जवाब देना चाहिए। इस परोपकारी कार्य मे सभा आपके साथ रहेगी। सभी पचायतो ने हाथ खडे करके सभा अधिकारियो की योजना का स्वागत किया और निश्चय किया कि पहले ग्रामो से ठेको को बन्द करके उसके बाद शहर के ठेको को भी बन्द करवाया जावेगा। शराब पिलाने तथा पीने वालो को दण्ड दिया जावेगा, ठेकेदार को ठेके के लिए स्थान देनेवालो का सामाजिक बहिष्कार तथा भारी जुर्माना किया जावेगा।

पचायत के निश्चय के पश्चात् ग्राम नान्धा के नर नारियो ने अपने ग्राम के ठेके के खोखे को आग लगा दी। जब ठेकेदार ने सभा-प्रधान प्रो० शेरसिह को इसकी शिकायत की तो उन्होने कहा कि ठेकेदार ने ग्राम पचायत से बिना पूछे ग्राम मे शराबरूपी जहर का ठेका जबरदस्ती खोला था तो इसकी हानि की जिम्मेदार पचायत नही है। कभी कभार किसान की फसल पर भी ओले पड जाते हैं और किसान को हानि सहन करनी पडती है। इसी प्रकार शराब के ठेके पर भी धरणे रूपी ओले पड रहे हैं। अत ठेकेदारो को इन धरणो के डर से शराब का धन्धा छोडकर अन्य धन्धा जिससे जनता का भी कल्याण हो करना होगा। सभा की ओर से श्री नन्दलाल जी भजनोपदेशक के प्रभावशाली भजन हुए।

सभा के अधिकारी नान्धा के बाद काकडोली के शराब के ठेके पर गये। यहा धरणा दे रहे सत्याग्रहियो का भी मार्गदर्शन किया। यहा भी ठेकेदार ठेका बन्द करके चला गया है। इसके बाद ग्राम मिश्री मे भी सम्मिलित हुए और सत्याग्रहियो को सम्बोधित किया। सभा के भजनोपदेशक श्री जयपाल आर्य की भजनमण्डली ने शराबबन्दी का प्रभावशाली प्रचार किया। फलस्वरूप यहा भी शराब का ठेका बन्द हो गया है। दिनाक ६ अप्रैल को ग्राम मिश्री तथा पडोसी ग्रामो से ५०० की सख्या मे नरनारी १० ट्रक्टरो पर सवार होकर चरखी दादरी गये तथा तहसीलदार को ठेका बन्द करने का ज्ञापन दिया। शहर मे शराबबन्दी का जलूस भी निकाला। इसके पश्चात् सभा के अधिकारी चरखी दादरी पहुचे और वहा आर्यसमाज तथा शराबबन्दी कार्यकर्ताओ से सम्पर्क करके उन्हे प्रेरणा की कि ग्रामो के ठेके बन्द होने पर शराब पीने के आदी चरखीदादरी से शराब खरीदेगे। अत शहर के ठेके बन्द होने चाहिए। विचार-विमर्श के बाद चरखी दादरी मे सभी १३ ठेको पर धरणे देने का कार्यक्रम तैयार किया गया।

सभामन्त्री श्री सूबेसिह जी ने ९ अप्रैल को पुन तहसील चरखी-दादरी का भ्रमण करके शराबबन्दी सत्याग्रहियो से सम्पर्क किया। शहर के सभी १३ ठेको पर धरणे चालू होगये हैं। प्रत्येक ठेके पर कम से कम १००, १०० सत्याग्रही धरणे पर बैठ हैं और किसी भी शराब पीनेवाले या खरीदने वाले को बोतल नही खरीदने दे रहे। इस प्रकार शराब के ठेकेदार पुलिस की सहायता से ही ठेको पर बठे हैं। परन्तु शराब की बिक्री समाप्त होने के भय से ठेके बन्द करने की तैयारी कर रहे हैं। क्योकि इनके ठेको पर भी धरणो के ओले पड रहे हैं।

जिला हिसार मे शराबन्दी ने जोर पकड़ा बालसमन्द ठेके धरने पर महिला सम्मेलन सम्पन्न

दिनाक ८ अप्रैल ८३ को १२ से ४ बजे तक ग्राम बालसमन्द जिला हिसार मे धरने पर महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। धरने पर प्रथम बार सैकडो महिला बालसमन्द गाव से आईं। श्रीमती लजावन्ती आर्या (बालावास) की अध्यक्षता मे सम्मेलन हुआ। ग्राम न्याणा से महात्मा राममुनि जी व श्री मनीराम जी आर्य के साथ २० महिलाओ का जत्था एक जोगा लेकर शराबबन्दी नारे लगाता हुआ धरने पर पहुचा। श्रीमती राजपति आर्या व श्रीमती सुन्दर आर्या, महिलाओ का नेतृत्व कर रही थी। महिलाओं ने शराबबन्दी पर प्रेरणा दायक भजन गाये। ठेकेदार व मुख्यमन्त्री भजनलाल के विरोध में स्यापा दिया। श्री महाबीरसिंह (लोरा) तथा घडवे पार्टी के भजन हुये। महात्मा जी, सुभाष मुनि, महाशय रामजीलाल पूर्व सरपच तथा सभा उपदेशक एवं धरना सचालक श्री अतरसिंह आर्य क्रातिकारी ने शराबबन्दी पर विस्तार से विचार रखे। बालसमन्द के नवयुवकों का धरना देने पर सभी वक्ताओ ने धन्यवाद किया और पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। सम्मेलन मे गाव गुवाण्ड के हजारो नर-नारियो ने भाग लिया। धरने का दृश्य देखते ही बनता था। सायकाल महिलाओ एव बच्चो ने गाव की गलियो मे नारे लगाते हुए जुलूस निकाला। गाव की महिलयें छतो पर गलियो में निकलकर जुलूस का नजारा देख रही थी। बालसमन्द गाव में शराबबन्दी अभियान चर्म सीमा पर है। दुःख के साथ लिखना पड रहा है कि सरपच श्री धर्मसिह तथा पचों का रवैया अब तक श्री भजनलाल के दबाव के कारण सहयोगी नही है। रात्री को भी स्थानीय गायक घडवा बैन्जूवादक श्री सुरेश कुन्जीलाल धर्मवीर, अजीत, राजकुमार की मण्डली के क्रातिकारी देश प्रेम के भजन हुये। जब तक पाप का अड्डा खत्म नही होता धरना जारी रहेगा।

मा० भीमसिह आर्य
प्रधान शराबबन्दी समिति,
बालसमन्द

घाघरी से डरकर शराबी थानेदार जुर्माना देकर भाग गया

रोहतक ८ अप्रैल १९९३ यहा से लगभग ८ कि० मी० दूर स्थित रोहतक झज्जर रोड पर बसा ५ हजार की आबादीवाला गाव मायना अपने गाव मे शराबबन्दी व दहेजबन्दी नियम लागू करने मे सफलता की ओर अग्रसर होरहा है। पहली अप्रैल को मायना गाव इकट्ठा हुआ जिसमे पंचायतो नियमो को मास्टर बलवानसिंह राठी ने पढ़कर सुनाया। इसकी अध्यक्षता सरपच रघबीरसिंह ने की। मास्टर बलवान सिंह राठी ने नियमो का विवरण देते हुए बतलाया कि गाव मे जो भी पहली बार शराब पोए हुए या बेचते हुए पकडा जाएगा उस पर गांव की २१ सदस्यीय कमेटी ५०० रुपया जुर्माना करेगी और दूसरी बार ११०० रु० जुर्माना होगा। और जुर्माना अदा न करने की हालत में उसे सारी खाप के सामने घाघरी पहनाकर सामाजिक रूप से बहिष्कृत करके दण्डित किया जाएगा। अब तक चार व्यक्ति दण्डित हो चुके हैं। दो ने जुर्माना दे दिया है और दो के द्वारा जुर्माना अदा न करने पर उन्हे सतगामा खाप के सामने १० अप्रल को पेश होना पडेगा।

गाव के आर्यसमाज प्रधान मा० बलवानसिंह ने आगे बतलाया कि गाव मे दहेजबन्दी भी लागू हो चुकी है। शिवलाल, सरपच रघबीर व रामकिशन नम्बरदार ने पचायती आधार पर एक-एक रुपये की सगाई व १०१ रुपये [शिवलाल ने] भात दान के लिए हैं और ५० बाराती चढाए हैं। इससे सारे गाव व क्षेत्र मे उनकी प्रशसा हो रही है। मायना के निकट गाव सुनारिया मे एक शराबी को घाघरी पहनाई और २०० जुर्माना किया तभी एक थानेदार शराब पीकर आगया तो गाव सुनारिया वालो ने उसे ५०० रु० जुर्माने से दण्डित किया। जब उसे घाघरी पहनाने की तैयारी होने लगी तो वह दुम दबाकर भाग गया। यह इसी गाव का निवासी था।

मा० बलवानसिंह राठी

शराबबन्दी आंदोलन ने जोर पकड़ा

हासी, १० अप्रैल (निस)। कस्बा तोशाम मे भारतीय किसान यूनियन के तत्वावधान मे शराबबन्दी महापचायत बैशाखी के दिन १३ अप्रैल को बुलाई गई है। इस महापचायत मे १०१ गावो से प्रतिनिधि भाग लेंगे।

महापचायत के सयोजक ने बताया कि इस अवसर पर शराब बन्दी के लिए अगला पग उठाने का निर्णय लिया जायेगा।

इस बीच यहा से १० किलोमीटर दूर शहीद गांव रोहनात में ठेका शराब के सामने महिलाओं ने धरना लगाकर शराबियो की नीद उडादी है। गाव में जाट् खाप के लाडवा, रतेरा, बोहल, सीपर, जमालपुर व पपोसा गावों के ठोलेदारों की सभा गत दिवस ओमप्रकाश गिल की अध्यक्षता मे हुई। जिसमे सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि पहली बार शराब पोने पर २०० रुपये, दूसरी बार ५०० रुपये तीसरी बार ११०० रुपये व घाघरी पहनाने का दड दिया जाएगा।

रोहनात गाव मे शराब के विरुद्ध आक्रोश इतना बढा है कि एक लडकी ने अपने बाप को शराब पीने पर पकडवाकर जुर्माना कराया। शराबबन्दी समिति के प्रधान श्री गिल ने अपनी साले को शराब पीने पर जुर्माना कराया। रोहनात ने २१ सदस्यीय शराबबन्दी समिति बनाई है। महिलाओ के धरने के कारण ठेके पर शराब नहीं बिक रही।

दैनिक ट्रिब्यून

सांपला मे पुलिस ने शराबबन्दियों का शामियाना उखाड़ दिया

शराब के ठेकेदार ने पुलिस द्वारा सापला मे शराबबन्दियो द्वारा चलाये जारहे तीनो ठेको के धरणो पर लगे शामियाने, ओ३म् ध्वज तथा बनर उखाड फेंक दिये। ग्रामीण जनता मे रोष की लहर फैल गई है। १२ अप्रैल को सापला मे बडी पचायत का आयोजन किया है। सभा के अधिकारियो को भी पचायत मे आमन्त्रित किया गया है। धरणा निरन्तर चालू है। बिक्री बन्द है।

ग्राम लाडवा (हिसार) में शराबबन्दी महापंचायत सम्पन्न

शराबबन्दी आन्दोलन को गति देने के लिए भारतीय किसान यूनियन की ओर से २-४-९३ को गाव लाडवा में सातबास समेत ४० गावों की पचायत हुई। जिसकी अध्यक्षता कप्तान धर्मसिंह पूनिया (लाडवा) ने की। सभा का सचालन श्री बलराजसिंह सचिव बोशाला ने की। मुख्य अतिथि एव वक्ता किसानो के मसीहा चौ० महेन्द्रसिंह टिकैत थे। इस अवसर पर सूबेदार चन्दूलाल सरपच गारनपुरा, स्वतन्त्रता सेनानी प० सन्तलाल, श्री मलेराम मलिक (देपल), श्री सुन्दरसिंह पूर्व सरपच खरड, श्री दोवानसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज बालसमन्द सभा उपदेशक एव संयोजक शराबबन्दी समिति हिसार, श्री अतरसिंह आर्य क्रातिकारी ने शराबबन्दी एवं अन्य सामाजिक समस्याओ पर विस्तार से विचार रखे। क्रातिकारी जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा चलाये जारहे शराबबन्दी अभियान की रूपरेखा तथा इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होनेवाले नुकसान से अवगत कराया। साथ ही आदमपुर हल्के मे बालसमन्द गाव के धरने की भी चर्चा की। श्री दीवानसिंह जी ने महात्मा टिकैत से भी हुक्का छोडने का अनुरोध किया। धूम्रपान भी एक भयंकर बोमारी बताया। टिकैत ने भी हरयाणा मे चल रहे शराबबन्दी आन्दोलन का पूर्ण समर्थन किया। इसको साहसिक एव अत्यन्त आवश्यक कदम बताया। किसानो को सगठित होकर अपने हकों को लडाई लडने का आह्वान किया। ढकल प्रस्ताव का विरोध किया, हजारो नर-नारियो ने जोश के साथ नारे लगाये, दृश्य देखते ही बनता था। एक झण्डा एक निशान, जाग उठा है आज किसान, उन शहीदो का बलिदान याद करेगा हिन्दुस्तान, शराबबन्दी करायेंगे सही आजादी लाएगे। अन्त मे टिकैत ने हरयाणा प्रान्त के लोगो को धन्यवाद दिया और साफ कहा कि किसान यूनियन का गठन हरयाणा मे हुआ, अब शराबबन्दी आन्दोलन भी हरयाणा से चला है। हम तो नकल कर रहे हैं। वास्तव मे हरयाणा प्रान्त ने देश को एक नई दिशा दी है। अब सारे देश में शराबबन्दी आन्दोलन युद्ध स्तर पर चलायेंगे। जनसमूह ने सर्वसम्मति से हाथ उठाकर निर्णय लिया कि गाव मे एक भी ठेका नही चलने देंगे।

दलीपसिंह आय, नम्बरदार लाडवा जि० हिसार

जिला कुरुक्षेत्र तथा यमुनानगर के ग्रामो में धरणे चालू

हरयाणा शराबबन्दी समिति के सयोजक श्री विजयकुमार जो की भाग-दौड तथा परिश्रम के कारण जिला कुरुक्षेत्र के ग्राम बाहरी, बावन जिला यमुनानगर के ग्राम कन्धार, जठलाना तथा माधूवास मे शराब के ठेको पर शराबबन्दी किसान कार्यकर्त्ताओ तथा आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं द्वारा धरणे चालू हैं। श्री विजयकुमार जो ने इस क्षेत्र में एक सप्ताह तक ग्रामो में कार्यकर्त्ताओं से सम्पर्क किया है। सभा के भजनोपदेशक प० शेरसिंह जी तथा इनके साथियों ने धरणो पर बैठ-कर शराबबन्दी का प्रचार किया है। धरणो में महिलाएं भी बैठी हैं। शराब की बिक्री बन्द है।

रजत जयन्ती समारोह सम्पन्न

गुरुकुल विद्यापीठ कुम्भाखेड़ा जि० हिसार में दिनांक ३-४ अप्रैल १९९३ को रजत जयन्ती समारोह धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर गु० कु० के संस्थापक एवं कुलपति शिक्षाविद् त्यागमूर्ति स्वामी रतनदेव जी ने गुरुकुल का २५ वर्षों के लेखा-जोखा की जानकारी दी। श्री ओमानन्द जी सरस्वती जी ने अपने जीवन व संघर्ष तथा आर्यसमाज के गौरवमय इतिहास को विस्तार से रखा। स्वामी गोरक्षानन्द, स्वामी निर्मलानन्द जी, स्वामी इन्द्रवेश जी, आचार्य सत्यानन्द जी सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, श्री सुरेन्द्रसिंह जी पूर्व-मन्त्री, श्री जयप्रकाश पूर्व केन्द्रीय उपमन्त्री, श्री रेलूराम पूनिया सरपंच प्रमुखता आदि विद्वान् नेताओं ने विस्तार से गु० कु० शिक्षा प्रणाली भारतीय संस्कृति, वेदों की शिक्षा का महत्त्व, गौ रक्षा, नारी शिक्षा, राष्ट्र रक्षा दहेजबन्दी तथा शराबबन्दी पर विचार रखे। क्रान्तिकारी जी ने आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा द्वारा चलाए जा रहे युद्धस्तर पर शराबबन्दी अभियान की जानकारी तथा शराब से होनेवाली बर्बादी से लोगों को अवगत कराया। स्वामी रतनदेव जी ने आर्यराष्ट्र बनाने तथा व्यवस्था बदलने पर बल दिया। नवयुवकों का आह्वान किया कि जागो उठो अब सोने का समय नहीं है। ओ३म् के झण्डे के नीचे संगठित होकर भ्रष्ट समाज को बदल डालो। आर्यसमाज ने जब भी देश पर आपत्ति आई जनता का मार्गदर्शन एवं सहयोग किया है इतिहास साक्षी है।

इसके अतिरिक्त प० चन्द्रभानु, प० ईश्वरसिंह तूफान, प० राजेन्द्र आर्य तथा महाशय भावेराम के शिक्षाप्रद एवं क्रान्तिकारी भजन हुवे। कन्या गुरुकुल खरल तथा गुरुकुल कुम्भखेड़ा के विद्यार्थियों के प्रेरणादायक भजन एवं भाषण हुवे। इसी अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन किया गया जिसका विमोचन श्री सुरेन्द्रसिंह पूर्व मन्त्री जी ने किया। गु० कु० के प्रधान महाशय दयाकिशन आर्य (कापड़ो) ने इस वर्ष २५ हजार मन अनाज, ६० हजार रुपये नकद, तथा २० हजार ईंट भट्ठों से दान प्राप्त कर, बहुत ही सराहनीय कार्य किया है। पूर्व प्रधान श्री रणसिंह आर्य का भी १८ वर्ष से गु० कु० का विशेष योगदान रहा है। इस समारोह में वैद्य दयाकिशन आर्य, श्री दिलशेरसिंह शास्त्री, किताबसिंह शास्त्री, प्रो० जयदेव आदि का व्यवस्था भोजन आदि में पूर्ण सहयोग रहा। सरपंच श्री रेलूराम ने ५१ हजार रुपये अपनी सात्विक कमाई में से दान किया। नागोरी गेट आर्यसमाज की ओर से श्री प्रधान श्री हरिसिंह सैनी ने भी ११ हजार रुपये देने का आश्वासन दिया है। मंच का संचालन स्वामी रतनदेव जी ने ही किया। इस बार गांव गुवाण्ड का विशेष योगदान रहा। २८ मार्च से ४ अप्रैल तक यजुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ किया गया।

दयानन्द शास्त्री, मन्त्री गु० कु० कुम्भाखेड़ा, हिसार

ठेका खोलने पर जनता में रोष

सढौरा, ६ अप्रैल (गुलशन) यहां से ८ किमी० की दूरी पर गांव रसूलपुर में ठेकेदारों द्वारा जबरदस्ती गांव में ठेका खोलने के विरोध स्वरूप गांव की जनता ने जबरदस्त प्रदर्शन किया परन्तु राजनैतिक लोगों ने दबाव डालकर सरपंच से जबरदस्ती प्रस्ताव पारित करवा कर गांव में ठेका खोल दिया, जिससे जनता में भारी रोष व्याप्त है व गांव की जनता व महिलाओं ने शराब के ठेके पर धरना देने का निर्णय लिया है और ठेके को शीघ्र ही गांव से उठवाने के लिए पत्र उपायुक्त को भी लिखे हैं। बच्चों को पुरस्कार दिए गए। सभा के संस्थापक श्री विश्वामित्र ने मुख्य अतिथि श्री हीरानन्द शर्मा, महासचिव हरयाणा पत्रकार संघ को भी सम्मानित किया। शर्मा जी ने हर सम्भव मदद देने का वायदा किया। इस अवसर पर श्री विद्याभूषण ने २५१ रुपये व सरपंच सुरजीतसिंह ने ५०१ रुपये सभा को दान दिया व इस अवसर पर डा० एन सी गर्ग, डा० सुरेश सैनी व अन्य गणमान्य व्यक्ति भी मौजूद थे।

(पंजाब केसरी १-४-९३)

हरयाणा मे शराबबन्दी आन्दोलन तेज
अब यह ग्रामीणक्षेत्र मे भी फैलने लगा

कुरुक्षेत्र, ६ अप्रैल (धमीजा) कुरुक्षेत्र मे शराब विरोधी आंदोलन दिन-प्रतिदिन तेज होता जारहा है। शराब के ठेको के सामने धरने शुरू होगए हैं। जिला कुरुक्षेत्र के गाव बाबैन, बीड सौंटी, बाहरी तथा झासा रोड पर शराब के ठेको के सामने अनिश्चितकालीन धरना आज से आरम्भ कर दिया गया है। अनेक गावों मे शराबबन्दी समितियाँ द्वारा अभियान चलाया जारहा है जिसके अन्तर्गत लोगो को शराब न पीने के लिये सचेत किया जारहा है। हरयाणा शराब बन्दी समिति के सयोजक श्री विजय कुमार ने आज यहा सवाददाताओं से बातजीत करते हुए कहा कि पूरे हरयाणा के विभिन्न ठेको के सामने विगत एक अप्रैल से धरने शुरू कर दिए गये हैं। मई के प्रथम सप्ताह में मुख्यमन्त्री हरयाणा के दामाद के हिसार स्थित शराब के कारखाने के सामने धरना व प्रदर्शन किया जायेगा। उसके पश्चात् हथीन, यमुनानगर व पानीपत मे शराब के कारखानो के सामने धरने शुरू किए जायेगे। गाव की महिलाओ, पुरुषो और बच्चो ने इस आदोलन मे बढ-चढ कर हिस्सा लेकर हरयाणा सरकार के लिए काफी परेशानी पैदा करदी है। उन्होने चेतावनी दी कि यदि हरयाणा मे शराब पर पाबदी न लगाई गई तो आदोलन उग्र रूप धारण कर लेगा।

उन्होने कहा कि हरयाणा सरकार ने ऐतिहासिक एव धार्मिक क्षेत्र कुरुक्षेत्र को पवित्र घोषित किया हुआ है लेकिन फिर भी इस क्षेत्र की चारों दिशाओ मे शराब धडल्ले से बिक रही है जिसका यहा प्रति-दिन आनेवाले पर्यटको और श्रद्धालुओ पर व्यापक कुप्रभाव पड रहा है।

श्री विजय कुमार ने आगे कहा कि प्रशासन और पुलिस शराब की बिक्री कराने के लिए ठेकेदारो को भरपूर सहयोग दे रहे हैं। इससे प्रमाणित होता है कि सरकार लोगों को शराब न पीने के लिए सचेत करने की बजाय पूरे प्रदेश मे शराब की नदिया बहाने मे आमदा है। उन्होने कहा कि अब समय आगया है शराब के विरुद्ध व्यापक स्तर पर अभियान चलाने का। अत लोगों को इसके लिए अपना पूर्ण सहयोग देना चाहिए।

उन्होने कुरुक्षेत्र के गाव बाहरी मे जहा पिछले दिनो शराब के ठेके के सामने प्रदर्शनकारी लोगों और पुलिस के बीच भारी स्तर पर कथित हिंसा हुई थी, के बारे मे कहा कि इस क्षेत्र के लोगो मे अभी भी तनाव बना हुआ है। पुलिस की ज्यादतियो के खिलाफ विभिन्न सगठन एक जुट होकर जोरदार आदोलन करेगे। उन्होंने कहा कि पुलिस ने गत ३१ मार्च को उपरोक्त गाव बाहरी मे बेगुनाह लोगो पर गोलिया और लाठिया बरसा कर लोकतन्त्र की सरेआम धज्जिया उडाई। उन्होंने कहा कि गाव में धरना शुरू कर दिया गया है परन्तु शराब के ठेकेदार धरने पर बैठे लोगो को असामाजिक तत्वो के माध्यम से तग करवा रहे हैं।

सरकार स्वय हिंसा को बढावा देकर क्षेत्र मे आतक का वातावरण बनाना चाहती है। यदि सरकार अपनी कार्यवाइयो से बाज न आई तो उसे इसके गम्भीर परिणाम भुगतने पडेंगे।

अम्बाला छावनी (का प्र) अम्बाला जिले मे शराबबन्दी आंदोलन जोर पकडने लगा है। आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा चलाए जा रहे इस अभियान को शिवसेना द्वारा समर्थन दिए जाने से इसे विशेष समर्थन मिला है। रामकृष्ण कालोनी (अम्बाला) के ठेके के सामने निरन्तर धरणे के कारण वहा कोई बिक्री नही हुई। जिला अम्बाला शिवसेना के उपाध्यक्ष श्री शिवचरण शर्मा ने एक लिखित बयान मे धरने पर बैठी महिलाओं के साथ पुलिस द्वारा दुर्व्यवहार किए जाने की निंदा की है।

पचकूला मे भी ६ अप्रैल से राजीव कालोनी मे शराबबदी अभियान को अधिक तेज कर दिया गया है।

—दैनिक पजाबकेसरी

जैसे आपके विचार, वैसा स्वास्थ्य !

नई दिल्ली, ६ अप्रैल (वार्ता) वैज्ञानिकों का भी मानना है कि मनुष्य का स्वास्थ्य काफी हद तक उसके स्वभाव, विचारों, आचार व्यवहार पर निर्भर करता है।

घृणा, ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, लालच, हिंसक वृत्ति शरीर की प्रतिरोध शक्ति को कमजोर करती है व स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालती है। अच्छे सात्विक विचार, प्रेम, सद्भाव, शांति, करुणा, उदारता, आदि शरीर की प्रतिरोध क्षमता को बल प्रदान करते हैं व बीमारी, तकलीफ को जल्दी ठीक होने मे सहायता करते हैं।

हार्ट केयर फाऊडेशन ऑफ इडिया के दो प्रमुख चिकित्सकों डा (कर्नल)के एल चोपडा व डा के के अग्रवाल के अनुसार हम अपने शरीर से इतनी अधिक हिंसा करते हैं, इतना विष खाते-पीते हैं जो कि ठूंसकर भोजन करने, धूम्रपान, नशे के रूप मे शरीर में जाता है। गलत विचारो का शरीर पर हिंसक प्रभाव होने देते हैं। इस कारण अनेक असामयिक मौतें होती हैं।

उन्होंने कहा कि शराब से जिगर, हृदय व आतें बरबाद होती हैं। आधे से अधिक दुर्घटनाये नशे के कारण होती हैं। शराब स्वास्थ्य और शरीर पर हिंसा जैसी है।

उनका कहना है कि ध्यान व योग केन्द्र अधिक खोलने की आव-श्यकता है ताकि लोगो को जीवन पद्धति सुधारने, धूम्रपान, नशे जैसी बुराइया त्यागने के लिये प्रेरित किया जा सके।

वक्तव्य के अनुसार स्वास्थ्य सेवाओ मे सुधार के बावजूद घातक बीमारियो के मामले गलत जीवन पद्धति के कारण बढते जा रहे हैं। लगभग तीन करोड व्यक्ति हृदय रोगो के शिकार होते हैं। प्रत्येक 1000 मे से 111 व्यक्ति उच्च रक्तचाप से पीडित हैं, जिससे पक्षाघात, दिल के दौरे या गुर्दे की खराबी की तकलीफ हो सकती है। हर वर्ष 15 लाख लोग कैंसर के शिकार होते हैं। करीब एक करोड लोग तपेदिक से पीडित होते हैं। पीलिया, अम्लता, जिगर की तकलीफ के मामले भी बढ रहे हैं।

कुछ डाक्टरों द्वारा तेज और महगी दवायें देने की प्रवृत्ति की आलोचना करते हुए वक्तव्य मे कहा गया है कि बडे अस्पतालों मे दाखिल एक तिहाई के लगभग मरीज अनावश्यक या अधिक दवा लेने के कारण हुई तकलीफ से पीडित होते हैं। डाक्टरों को शरीर परीक्षणों की रिपोर्ट जाचने के बाद ही दवा देनी चाहिए व महगे, आधुनिक निदान उपकरणों का प्रयोग बहुत जरूरी होने पर ही करना चाहिए। इलाज कम खर्चीला होना चाहिए और रोग को रोकथाम पर अधिक बल देना चाहिए।

—दैनिक पंजाब केसरी

आर्यसमाज के अधिकारियों से आवश्यक निवेदन

हरयाणा के प्रत्येक जिले में शराब के ठेकों पर धरने आरम्भ हो गये हैं। श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती की अपील के अनुसार हरयाणा के आर्यसमाज के अधिकारियों से निवेदन है कि वे ११ सत्याग्रहियों के नाम तथा ११००) दान तुरन्त भेजकर शराबबन्दी सत्याग्रह में अपना योगदान अवश्यमेव देवें।

शोक समाचार

आर्यसमाज बहू अकबरपुर के प्रधान चौ० प्रतापसिंह का दिनाक २ अप्रैल को प्रात ६ बजे अचानक हृदयगति बन्द होने पर निधन हो गया है। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—सूबेसिंह, सभामन्त्री

शराब हटाओ
देश बचाओ

मदिरा पान : एक सामाजिक कलंक

शराब की उत्पत्ति के बारे में किसी साधु सन्त ने कहा है कि भगवान् विष्णु ने समुद्र का मन्थन करके इसे बनाया तथा देवताओं को दिया और राक्षसों को पिलाया गया क्योंकि राक्षस देवताओं को बहुत सताते थे। शराब को पीकर वे आपस में लड़ते और मर जाते किन्तु आज तो आदमी-आदमी इस शराब का शिकार हो गया है। महात्मा बुद्ध ने अपने शिष्यों से कहा था जिस राज्य में मदिरा आदर प्राप्त करेगी उस राज्य में दुर्भिक्ष पड़ेंगे। औषधियां निष्फल होंगी तथा विपत्तियों के बादल मंडराएंगे। अंग्रेजो के सुप्रसिद्ध विद्वान् मिल्टन के शब्दों में संसार की सारी सेनाएं मिलकर इतनी सम्पत्ति और इतने मानवों को नष्ट नहीं कर सकती जितनी कि यह शराब पीने की आदत। विचारकों और महात्माओं का कहना है शराब हमारे चरित्र को नपुंसक बना देती है।

साहित्यकारों ने अपने ढंग से यह उक्ति कही है। हम शराब नहीं पीते बल्कि यह हमें पी डालती है। शराब भीतर जाते ही दिमाग बाहर निकलकर आ जाता है। स्वास्थ्य विभाग भी बढ चढकर प्रसारित करता है कि शराब पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। मदिरा की हर बोतल पर यह अंकित होगा। फिर भी सरकार मदिरा को बन्द नही करती बल्कि हर गांव में, हर शहर मे हर बस स्टैण्ड पर और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर शराब घर मिल जाएगे और यह मोटे अक्षरों में लिखा होगा कि एक आदमी चार बोतल ले जा सकता है। और इससे बढकर और चरित्र की जलीलता, चरित्र का घटियापन क्या होगा आदमी नशे की हालत में पिता द्वारा अपनी बेटी पर हाथ लगाना शराब का सबसे नंगा दृश्य है। आदमी शराब पीने के बाद नशे की अवस्था में घोर अपमानजनक हरकतें करता है। बदले में उसे मिलता है घोर अपमान, घृणा, उपहास और तिरस्कार। शराबी का पारिवारिक जीवन क्लेश और अशान्तिपूर्ण होता है। घर के सभी सदस्य उससे घृणा करने लगते हैं। बदले मे वह उन्हें दुःख देता है और झगडे होते हैं।

अधिकांश वाहन दुर्घटनाओं बलात्कारों आदि का कारण नशा होता है। नशेड़ी व्यक्ति का अपना कोई धर्म नहीं होता। आज हर काम की शुरूआत शराब के उद्घाटन से होती है। चुनाव से लेकर विद्यार्थियो को नकल करवाने के लिए अध्यापकों को पार्टी देने तक। आज हमारे समाज में ऐसा माहौल बन गया है कि चाहे कोई भी व्यक्ति हो। आप रिश्तेदार से हो लीजिए चाहे आप उसकी कुछ भी खातिरदारी मत कीजिए। लेकिन शराब पिला दीजिए। आपको उसके द्वारा जगह-जगह पर अच्छा बताया जाएगा, आपकी प्रशंसा की जाएगी, अगर शराब से किसी रिश्तेदार की सेवा नहीं की जाती तो उस रिश्तेदार को कोई खास रिश्तेदार नहीं बताया जाएगा। शराब से पूरे घर के घर ही तबाह हो जाते हैं। जमीन, जायदाद, इज्जत सबके सब मिट्टी में मिल जाते हैं। मां बहनों की जिन्दगी में अन्धकार छा जाता है।

इसलिए महात्मा गांधी ने कहा था कि अगर मुझे एक घण्टे के के लिए भारत का सर्वशक्तिमान् शासक बना दिया जाए तो तमाम मदिरालयों को बिना कोई मुआवजा दिये बन्द करवा दूंगा। शराब अन्य व्यसनो की जननी है। जुआ, वेश्यागमन आदि दुराचार शराब को घूंट पीने के बाद आरम्भ होते है। प्रश्न यह उपस्थित होता है कि शराब के इन सारे अभिशाप के बाद भारत मे नशाबन्दी लागू क्यों नहीं होती? जो नेता स्वयं मदिरा की बोतल के लालच मे अपनी कुर्सी पक्की करता हो वह कैसे मद्यपान निषेध कर सकता है। हमारे देश की अफसरशाही दो नम्बर यानी भ्रष्टाचार के टीले पर बैठी है और दुर्भाग्य से हर भ्रष्टाचार का रास्ता इस शराब की बोतल में से खुलता है। यही कारण है कि शराब लिप्सा में अन्धी राजनीति एक घोषित बुराई पाले हुए है। नशाबन्दी के विरोध मे दूसरा तर्क यह है कि इससे सरकारी आय मे वृद्धि होती है। बहुत सारा राजस्व प्राप्त होता है। यहां हमारे नेतृत्व की दिवाहीनता प्रकट होती है। हमें एक स्वस्थ चरित्रवान् व्यक्ति चाहिए या सम्पन्नता में पला हुआ एक विलासी कुत्ता। राष्ट्रीय आय शराब आदि नशों से होती है उससे कहीं अधिक व्यय शराब से उत्पन्न झगडों से दंगों में उनको मिपटाने में हो जाता है।

तीसरा तर्क यह है कि शराब के द्वारा क्षण भर के लिए दुःख झंझट भुलाये जा सकते हैं। यह सही भी हो किन्तु एक दुःख को भूलकर अन्य दुःखों के सागर में गिरना कोई समझदारी है? शराब एक दुःख को भुलाती है परन्तु कुछ देर बाद एक नया घाव जोड देती है। ठण्डे प्रदेशो के लिए यह सत्य भी है वहां शराब नशे के लिए नहीं जीवन रक्षा के लिए है। अगर इस बारे मे इसका प्रयोग किया जाए तो यह उचित हो सकता है। नशे के लिए उपयोग होने पर यह पाप और अपराध बन जाती है। वास्तव मे जब हम सच्चे मन से चाहते हैं कि हमारा देश सर्वतोमुखी प्रगति करे, उन्नति करे, शिक्षा का पूर्ण विकास हो तो हमें शराब के बढते हुए सेवन पर नियन्त्रण करना होगा, पत्रिकाओं, पाठ्य पुस्तकों, जन सचार के माध्यमो, समाचार पत्र, आकाशवाणी, दूरदर्शन द्वारा शराब के सेवन के विरुद्ध घृणा उत्पन्न करनी होगी।

भारतीय समाज के प्रत्येक नागरिक को यह चेतना जगानी होगी कि शराब का सेवन जलते हुए अग्निकाड या तूफानी नदी की ओर लपकने से भी अधिक खतरनाक है। क्योंकि इससे शरीर और आत्मा दोनों का नाश होता है। यदि हमे देश का, समाज का, राष्ट्र का कोई शक्तिशाली व्यक्तित्व बनाकर खड़ा करना है तो पूर्ण रूप से बहिष्कार करना होगा। वरना कुछ नहीं कहा जा सकता कब पूरा का पूरा देश मुहम्मदशाह रंगीले के दरबार की तरह अफीमचियों, पियक्कडो, भांडुओं, चाटुकारों, बौनों, विदूषकों, नपुसकों का देश बनकर रह जाएगा।

लेखक—"सत्यप्रकाश जागडा"
बी० ए० तृतीय वर्ष
जाट कालिज (रोहतक)

शेखपुरा का ठेका बन्द

ग्राम शेखपुरा (हांसी) के ठेके पर श्री जगराम जी आर्य के नेतृत्व मे १२-३-९३ को धरणा आरम्भ किया गया। धरणे पर शान्तिपूर्वक नर नारियों ने भाग लिया। शराब पीने वाले तथा खरीदने वाले को समझाते, बाज न आने पर घाघरी पहनाकर जूतों की माला डालकर गधे पर बैठाकर गांव में घुमाते, ५०० रु० दण्ड भी करते। इस प्रकार सारे गांव मे शराब बन्द कर रखी थी। १७-३-९३ को महिलाओं ने ठेके के सामने प्रदर्शन किया, स्यापा किया। ठेकेदार बुरी तरह बौखला उठा था। अन्त मे १५ दिन धरणे के बाद जनसमूह के आगे सरकार एवं ठेकेदार ने घुटने टेक दिये। २८ तारीख को जहरीली शराब तथा अपना सब सामान उठाकर गांव से चला गया।

अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, सभा उपदेशक

ग्राम बालसमन्द ठेके पर धरने पर टंगी घाघरी ने जिला हिसार में नया गुल खिलाया

ग्राम बालसमन्द जिला हिसार में आदमपुर हलके का सबसे बडा गाव लगभग २० हजार आबादी का है साढे सात हजार वोट है। श्री भजनलाल मुख्यमन्त्री इस गाव के बलबूते पर ही विधायक बनता है। गाव मे किसान मजदूर २० हजार रुपये की शराब पी जाते थे। बालसमन्द का ठेका इस वर्ष ६० लाख का उठा है निकट के १२ गाव का नाश इसी ठेके से हो रहा है। श्री मसरसिह आर्यक्रान्तिकारी सयोजक शराबबन्दी समिति जि० हिसार की प्रेरणा से गांव के बहादुर ५१ नवयुवक मा० सोमसिह की अध्यक्षता में १६-३-९३ से शराब के ठेके के सामने धरने पर बैठ गए है। धरने का संचालन श्री क्रान्तिकारी जी कर रहे हैं। आर्यसमाज बालसमन्द के अधिकारी प्रधान श्री दीवानसिह आर्य, महाशय रामजीलाल आर्य पूर्व सरपच फूलसिंह मनफूलसिह बिरसाला पृथ्वीसिंह अमीचन्द महाबीर सिंह बोरा आदि बुजुर्गों का विशेष आशीर्वाद एव सहयोग नवयुवको मिल रहा है।

अब तक गाव मे ५ शराबियो को जूतों की माला पहनाकर जलूस निकाल चुके हैं। तीन खूखार शराबियो की पिटाई कर चुके हैं। कई बोतले फोड चुके। दो बार ठेकेदार के जीप के ड्राईवर द्वारा हुलडबाजी करने पर पीटाई की गई। अब ठेकेदार व शराबी बुरी तरह डरे हुए है। धरने का दृश्य देखते ही बनता है। आए दिन आर्य विद्वान सन्यासी भजनोपदेशक आते रहते हैं। सत्सग का कार्यक्रम जारी रहता है। स्थानीय गाव की घडवावादक मण्डली भी महाबीर व पृथ्वीसिंह गायक के नेतृत्व में सहयोग कर रही है। अब तक गाव के २० खूखार शराबी शराब छोडचुके है। बच्चे सायं काल जोश के साथ नारे लगा रहे है। नजदीक के गाव बासडा सरसाना गोरछी, रालवास कला, रालवास खुर्द, धीरणवास, रुहेला, भिवानी, सुण्डावास, डोभी, आदि में शराबबन्दी हो चुकी है। पचायतों ने चौकी पुलिस व ठेकेदारों को लिखकर दे दिया है। कि जीप गाव में अवैध शराब बेचने आई तो जीप जला देंगे। जब गाव मे जीप आती है तो बच्चे पत्थर मार कर वापिस लौटा देते हैं। दुख के साथ लिखना पड रहा है कि गांव बाल-समन्द की पंचायत दोगली नीति से कार्य कर रही है। नवयुवकों को धरने पर नाम मात्र भी सहयोग नही दे रही है पंचायत भ्रष्ट राज नेताओं की गुलाम बनी हुई है दूसरी तरफ धरने पर सभी बिरादरियों के नवयुवक बढ चढ कर भाग ले रहे हैं युवको में काफी उत्साह है। इसके अतिरिक्त जिला हिसार में १२ गांव में शराबबन्दी लागू हो चुकी है जुर्माना किया जाता है पुन हरकत करने पर घाघरी पहना कर काला मुह करके गधेपर बिठाकर गांव मे घुमाया जाता है ५ ठेकों पर धरने जारी हैं। जनता के दबाव में आकर ५ गांव के ठेके जो नीलाम हो चुके थे। पुन बन्द करने पडे गाव ने जमीन नही दी। गाव हैन्योली कला ज्ञान पुरा बास हुसनगढ न्याणा आदि में नीलामी होने के बाद ठेकेदार व सरकार की हिम्मत नही हुई की उपरोक्त गांव मे ठेका खोल सके। सरकार की फाइलों में ही रह गए। [illegible] में भी पचायतों ने इकट्ठे होकर शराबबन्द कर दी है। जिला कैथल की तरह जिला हिसार में भी शराबी पुलिस से नही घाघरी से बुरी तरह डरे हुए हैं। ग्राम बालसमन्द का ठेके पर धरना जिला हिसार में नया गुल खिलाएगा। धरने पर बढते हुए जन समर्थको के कारण सरकार व ठेकेदार बुरी तरह बौखलाये हुवे हैं। दिनांक ४-४-९३ को समिति ने २०० मनुष्यों के दस्तखतों से युक्त श्री चन्द्रमोहन सुपुत्र मुख्यमन्त्री भजनलाल को गाव मे एक शादी मे आनेपर ठेके बन्द करवाने का ज्ञापन दिया। प्रि० भगवानदास आर्य (हिसार), करुणा शास्त्री, रविदत शास्त्री (हिसार), श्री उदमीराम आर्य (आर्यनगर), संग्रामआर्य (दडोली) धरणे पर पधारे तथा प्ररणादायक विचार रखे। ५-४-९३ को सायकाल आर्यसमाज की प्रसिद्ध भजन मण्डली चौ० ओमप्रकाश आर्य पानीपत ने फुटकर भजनो के अतिरिक्त शराबियो का इतिहास रखा। जब तक ठेका बन्द नही होता धरना जारी रहेगा।

आर्यसमाज बनाया

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

लेकर वेदो का पैगाम, गुजराती योगी आया।
सम्वत अठारह सौ पिच्चत्तर दिवस सुहाना आया।
चैत्र सुदी प्रतिपदा ऋषि ने आर्यसमाज बनाया।।
स्वाभिमानी राष्ट्र प्रहरी ने ध्रुव सम व्रत लिया था।
पावन पथ की खोज लगाई जहां तहा भ्रमण किया था।।
तजकर सभी सुखद आराम ।।१।।

आर्य भूमि भारत गारत हो रही अविद्या छाई।
ऊंच नीच और भेद भाव का चलन महा दुखदाई।।
फूट आर्य जाति मे जीवन भीषण कष्ट उठाया।
चैत्र सुदी प्रतिप्रदा ऋषि ने आर्यसमाज बनाया।।
लेकर जगदीश्वर का नाम ।।२।।

बालविवाह, सतीप्रथा, पर्दाप्रथा को दूर किया।
पाखण्डो का वंश मिटाया गढ को चकनाचूर किया।।
जातिवर्ण प्रशान्त वेद का सत्य मार्ग दर्शाया।
चैत्र सुदी प्रतिप्रदा ऋषि ने आर्यसमाज बनाया।।
कर दिये नष्ट सभी दुष्काम ।।३।।

रच सत्यार्थ प्रकाश काट दिये मत पन्थों के बाजू।
सत्य असत्य तोल दिखलाया लेकर धर्म तराजू।।
कहे स्वरूपानन्द पिया विष अमृत हमे पिलाया।
चैत्र सुदी प्रतिप्रदा ऋषि ने आर्यसमाज बनाया।।
करते रहे सभी शुभकाम ।।४।।

ग्राम डोभी (हिसार) का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

दिनांक ३-४ अप्रैल १९९३ को दस वर्ष के बाद आर्यसमाज डोभी में वार्षिक उत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया इस अवसर पर स्वामी सर्वदानन्द जी, प्रो० रामविचार जी, बहिन करुणा शास्त्री, श्री प्रताप शास्त्री, भगवानदास आर्य (पटेल नगर हिसार), चौ० हरिसिंह सैनी पूर्वमन्त्री पं० रामजीलाल सांसद, सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी आदि ने शराबबन्दी, राष्ट्र रक्षा, नारी शिक्षा, आत्मा-परमात्मा, मनुष्य के कर्तव्य, पाखण्ड आदि पर विस्तार से विचार रखे। सांसद ने राज्य सभा में शराबबन्दी लागू करने की आवाज को उठाने का आश्वासन दिया। क्रान्तिकारी जी ने अनेक गांवों के धरनों तथा शराबबन्दी लागू करने का हवाला देकर गांव के लोगों से डोभी में शराबबन्दी लागू करने तथा बालसमन्द के ठेके पर धरना में पूर्ण सहयोग की अपील की। प्रात काल हवन पर प्रि० साहब व शास्त्री जी ने संध्या हवन के महत्व पर प्रेरणादायक विचार रखे। नवयुवकों में विशेष उत्साह था। उत्सव में गाव [illegible] के लोगों ने श्रद्धा से भाग लिया।

इसके अतिरिक्त पं० जयपालसिंह बेधडक तथा श्री ओमप्रकाश आर्य (पावटी) के शिक्षाप्रद समाज सुधार के क्रान्तिकारी भजन हुये। भोजन व्यवस्था बहुत ही उत्तम थी। विद्वानों को अतिरिक्त [illegible] के हलवे का भोजन दिया गया।

महावीरसिंह आर्य, मन्त्री आर्यसमाज डोभी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।

[illegible] P/RTK-४६ सृष्टिसंवत् १,९६, ०८, ५३, ०९४

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २० अंक २० २१ अप्रैल, १९९३ वार्षिक शुल्क ४०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति ८० पैसे

सर्वखाप सर्वजातीय पंचायत सिसाना जिला सोनीपत का ऐतिहासिक निश्चय

जिसे हरयाणा प्रदेश को अनेक पंचायतों ने लागू किया।

१) शराब पीने व बेचनेवाले पर ११००/- रुपये जुर्माना होगा और बार-बार पचायत के नियम तोड़ने पर उनका सामाजिक व जातिगत बहिष्कार किया जाएगा शराब सेवन की सूचना देनेवाले को १००/- रुपये इनाम दिया जाएगा।

२) विवाह शादी के अवसर पर शराब पीकर नाचने पर पूरी पाबन्दी लगा दी गई है। जहा तक बाजा बजाने का सवाल है, लड़के वाला अपने यहा और लड़कीवाला अपने यहां बाजा बिना नाचने गाने के बजा सकता है। इस नियम का उल्लघन करने पर ११००/- रुपये जुर्माना और फिर भी न माने तो जातिगत बहिष्कार होगा।

३) ब्याह मे टीका, कन्यादान, बारातियों को मानताव केवल १/- रुपये से होगी। दान १०१/- रुपये से ज्यादा नहीं होगा।

४) शादी मे बारात को लानेवाली गाड़ियो का भाड़ा लड़केवाले के जिम्मे ही होगा। लड़कीवाला नही देगा।

५) बाराती पाच से पचास तक सीमित होंगे। बारौठी पर फूलो की माला पहनाई जाएगी। मिलनी ११/- रुपये की होगी। थापो के भी ११/- रुपये ही दिये जायेगे। पाटड़ा फेर भी ११/- रुपये का होगा। लड़की को दहेज के रूप में ११ से ज्यादा सूट नही दिये जायेगे। कोई भी दहेज प्रदर्शन नही होगा। सोफा सैट, मेज कुर्सी, टी० वी०, फ्रिज, स्कूटर आदि सब कुछ महगी चीजे देने पर सख्त पाबन्दी लगा दी गई है। भात मे १०१/- रुपये देने पचायत ने निश्चित किये हैं। मेज कुर्सी या टैन्टों की सजावट से खड़े खाने पर पाबन्दी लगा दो गई है। पचायत ने कहा है कि पत्तल पर खाना खिलाया जाए।

६) लड़की देखनेवाले दो से ज्यादा व्यक्ति न हो। वे भी लड़की को एक-एक रुपये से पुचकारें और उनको लड़कीवाला दो-दो रुपये दे। कम्बल व चद्दर तिल आदि न दिए जाएं। सभी रस्म सादगी व बचत से हों। सगाई करने पाच से ज्यादा व्यक्ति न जावें।

७) जहां तक शराब पीने व बेचने का मसला है इसमे यह भी पंचायती पाबन्दी है कि कोई भी फौजी शराब लाकर न बेचे और न पीए। मेम्बर पचायत के शराब पीने व बेचने पर २२००/- रुपये और सरपंच पर ३१००/- रुपये जुर्माना होगा। खाप के पदाधिकारो पर ५१००/- रुपये जुर्माना होगा।

८) जो भी व्यक्ति इन पचायतो नियमों को तोड़ेगा उसके खिलाफ कार्यवाही हेतु गांव के आदमियों की एक कमेटी गाव में होगी। यदि कोई व्यक्ति गाव में बस में नहीं आता तो उसको ठीक करने के लिए सारी खाप की, और उससे भी बात न बने तो ८४ की और फिर सर्वखाप की पचायत उसका फैसला करेगी और उसके आयोजन का खर्चा उसी दोषी व्यक्ति पर लागू होगा।

९) लड़की या लड़के के आपस में तमाजे का फैसला पहले दोनो गांवों की पंचायतें करेंगी और यदि वे नहीं कर पाती तो आगे खाप व सर्वखाप इसका फैसला करेगी। जो भी दोषी होगा उसी पर ११ हजार रुपये जुर्माना होगा।

१०) गाव मे शराब के ठेकेवाले को कोई भी जमीन या घर किराए पर नही देगा। ऐसा न करनेवाले पर पचायत ११ हजार रुपये जुर्माना करेगी

११) यदि कोई शराबी गाव के अमनो अमान को खराब करता है तो उस पर जुर्माने के अतिरिक्त पुलिस केस भी बदअमनी के अन्तर्गत किया जाएगा।

१२) मृत्यु भोज न करें।

१३) मुहकाण में पाच ही जाए।

१४) १ तोला सोना और २० तोले चादी के जेवर डाले जा सकते हैं।

हरयाणा प्रदेश की अनेक खापों की पचायतो ने ऊपरलिखित निश्चयो का समर्थन करके अपने क्षेत्रो मे लागू करने का निर्णय किया है।

नशाबन्दी लागू करने हेतु ग्राम सुधार सभा मायना जिला रोहतक का गठन

१- सीगले-दिलबाग, हरलाल २- ओघड़े-रामकुमार, इन्द्र सूबेदार, ३- बिसलान-आजाद, सरदारा, ४- देहलाण-वेदसिंह, श्रीभगवान्, ५- राठी-भीमा, लखी, ६- मग्नी-रामकिशन, अजय, ७- थाम्बू-राजा, ८- मौजी के-जयनारायण, बलवीर, ९- बैरागी ब्राह्मण-केहरी, गूगन, मुन्शी १०-हरिजन-दयानन्द, चन्दन पच, ११-बालमिकी-मालहू, महासिंह, १२- कुम्हार-करतार, माईधन, प्रसादे १३- बनिया-पाल बनिया, १४- लुहार-धर्मा, १५- खाप को बतानेवाले-मुन्शी वराह, दीपू।

मा० बलवानसिंह राठी प्रधान आर्यसमाज

आठ गांवों की समिति बनी

भिवानी, १२ अप्रैल (निस)। गाव काकड़ोली हुकमी मे पचायत द्वारा प्रस्ताव पारित होने के बावजूद शराब का ठेका खुलने से गाव मे रोष व्याप्त है। आठ गावो के लोगो ने शराब के ठेके के सामने धरना दे रखा है। शराबबन्दी समिति के सचिव सीताराम शर्मा ने बताया कि ठेका छोड़ने से पूर्व ही जिला प्रशासन को इस गाव मे ठेका न खोलने के बारे में आगाह किया था, लेकिन गाव की पचायत द्वारा ठेके के विरुद्ध प्रस्ताव पारित करने के बाद भी उनकी सुनवाई नहीं हुई।

आठ गावो की एक कमेटी गठित होगई है जिसमे गाव के सरपच कुलदीपसिंह, सीताराम शर्मा हरफूलसिंह (हड़ौदी) ताराचन्द व प्रताप सिंह (हड़ौदा) ओमप्रकाश व छोटूराम (उमरवास) मागेराम, कटारसिंह (जीतपुरा) छलूराम (डाण्डमा) आदि शामिल हैं। जनसदेश

हरयाणा में शराबबन्दी सत्याग्रह की गतिविधियां

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की प्रेरणा एव भारतीय किसान यूनियन के सहयोग से हरयाणा के कोने-कोने मे शराब के ठेकों पर धरने आरम्भ हो गये हैं। खापवार पचायतों का प्रत्येक जिले मे आयोजन किया जा रहा है। अब ग्रामो के साथ-साथ कस्बो तथा शहरों मे भी धरने दिये जाने लगे हैं क्योकि ग्रामो मे ठेके बन्द होने पर शहरो के ठेको से बिक्री अधिक होने लगी है और किसान मजदूर यहा आकर अपने परिश्रम की कमाई शराब की बोतल खरीदकर नष्ट करते हैं अत खापवार ग्राम पचायतो ने निश्चय किये हैं कि ग्रामो के ठेके बन्द होने पर शहरो के ठेके भी बन्द करवाये जावे। इस प्रकार शराबबन्दी लहर अब शहरो मे भी चलने लगी है।

सभा कार्यालय मे प्राप्त सूचनाओ के अनुसार हरयाणा में निम्न स्थानो पर शराबबन्दी सत्याग्रह चालू है।

जिला रोहतक :—

जिला रोहतक मे ग्राम जसिया के बाद महम कस्बे का भी शराब का ठेका बन्द हो गया है। शराबबन्दी सत्याग्रह यहा २८ मार्च से आरम्भ हुआ था। आर्यसमाज तथा किसान यूनियन के कार्यकर्त्ताओं ने दिन-रात ठेके के सामने बैठकर धरणा दिया। माईक द्वारा शराबबन्दी के पक्ष में प्रचार होता रहा। सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह मन्त्री श्री सूबेसिह, सयोजक श्री विजयकुमार, श्री धर्मचन्द जी, प्रिंसिपल श्री गुगनसिह जी, सभा उपदेशक प० चन्द्रपाल, प० धर्मवीर, सभा भजनोपदेशक श्री नन्दलाल, श्री रामकुमार, श्री शेरसिंह आदि धरने मे सम्मिलित हुए तथा सत्याग्रहियो का मार्गदर्शन किया तथा सम्बोधित करके प्रोत्साहित किया। अन्य नेता भी सहयोग तथा समर्थन देते रहे। निरन्तर २ सप्ताह तक ठेके पर बिक्री बन्द होने पर शराब का ठेकेदार श्री ज्ञानीराम विवश होकर ठेके से अपनी बोतले ट्रक मे लादकर महम छोड गया। इस सफलता का श्रेय श्री सूरजमल पहलवान तथा इसके साथियो को है जिन्होने शातिपूर्वक धरने का सचालन किया।

जिला रोहतक मे अभो सापला के तीन ठेको पर धरने चालू हैं। सर्वखाप की गत सप्ताह पचायत हुई थी, जिसमे सभा के उपमन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री तथा डा० सोमवीर जी इसमें सम्मिलित हुए। सभा की प० जयपाल की भजनमण्डली ने प्रभावशाली प्रचार किया। श्री विजयकुमार जी भी दोबार धरने पर बैठे, सत्याग्रहियो से मिले तथा सभा की ओर से शराबबन्दी बैनर तथा पोस्टर सभा कार्यालय द्वारा भिजवाये। प० रामकुमार की भजनमण्डली ने सापला के निकट नयावास तथा सापला मे प्रचार किया। पचायत ने एक दिन पुलिस की दमनकार्यवाही पर रोहतक से दिल्ली जानेवाली सडक को भी जाम कर दिया था। धरना शान्तिपूर्वक चालू है। शराबियो पर जुर्माना किया जा रहा है। बिक्री बन्द होने पर श्री नरेश शराब का ठेकेदार हथियार डालने पर विवश हो रहा है।

सापला में धरना सफल होने पर ग्राम छारा, दूजाना, बादली, सिलानी, मोहम्मदपुर, माजरा, कासनो, दादरी तोये, बेरी लाखनमाजरा तथा डीघल आदि ग्रामों मे भी धरने सफलता की ओर अग्रसर हैं। अन्य ग्रामों में भी धरने सफलता की तैयारी की जा रही है। ११ अप्रैल को ग्राम कानोन्धा मे छीलर खाप की भी श्री धर्मसिह की अध्यक्षता में एक पंचायत मे मुकन्दपुर मे धरना देने के लिए प्रशासन को नौटिस दे दिया है।

जिला सोनीपत .—

ग्राम अकबरपुर बारोटा मे सघर्ष के बाद शराब का ठेका बन्द हो चुका है। वहा के आर्यसमाज तथा किसान यूनियन के नेताओ तथा कार्यकर्त्ताओ ने भटगाव मे भी धरना देकर ठेके पर ताला लगवा दिया है। गत सप्ताह सोनोपत के कस्बे खरखोदा मे शराब के ठेके पर धरने आरम्भ कर दिये हैं। यह दहिया की खाप का नगर है। सिसाना ग्राम जहा पचायत सम्पन्न हुई थी इसके निकट है। खरखोदा के चारों ओर आर्यसमाज के प्रमुख गाव हैं। गुरुकुल भटिण्डू भी समीप है। आशा है यहा भी शीघ्र सफलता मिलेगी। श्री ओमप्रकाश जी खरोहा तथा उसके साथी अन्य ग्रामों के ठेके बन्द करवाने के परोपकारी सघर्ष में जुटे हैं। आर्यसमाज सोनीपत शहर में १६ से १८ अप्रैल वार्षिक उत्सव के अवसर पर शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया। सभा की ओर से उपदेशकों तथा भजनोपदेशको ने शराबबन्दी का प्रभावशाली प्रचार किया। बरोदा ग्राम में भी ठेके पर धरना चालू है।

जिला कुरुक्षेत्र :—

कुरुक्षेत्र के निकट बाहरी ग्राम में शराब के ठेके को बन्द करवाने के लिए महिला संगठन भी पूरी शक्ति के साथ सक्रिय है। महिलाओं पर लाठीचार्ज किया तथा गिरफ्तार भी किया परन्तु उन्होने साहस नही छोडा। श्री विजयकुमार जी दोबारा उनके सहयोग के लिए वहा गये हैं। कुरुक्षेत्र ग्राम खेडी ब्राह्मण मे भी धरना जारी है। ग्राम बदरपुर, किरमिच, हथीरा तथा मकाना मे शराब के ठेके बन्द होचुके हैं।

जिला यमुनानगर :—

ग्राम मुजाइन्दवाला मे शराब के ठेके को जलाये जाने के सम्बन्ध मे पुलिस द्वारा गिरफ्तार किये गये सरपच एव पूर्व सरपच की रिहाई की माग को लेकर गत सप्ताह ग्राम देवधर मे लगभग १०० ग्रामो के सरपचो तथा पचो की एक महापचायत हुई। इस महापचायत मे हरयाणा शराबबन्दी समिति के सयोजक श्री विजयकुमार जी भी सम्मिलित हुए और सरपचो आदि की रिहाई करवाने मे सहयोग दिया। सभा के भजनोपदेशक श्री नन्दलाल भी कुरुक्षेत्र मे शराबन्दी प्रचार सभा के अन्तरग सदस्य गेन्दाराम आर्य की देख-रेख मे कर रहे हैं। ग्राम परवाला मे धरना देने की तैयारी को जा रही है।

जिला सिरसा .—

जिला सिरसा के ग्राम चाहरवाला मे ग्रामवासियो ने शराबबन्दी अभियान शुरू कर दिया है और शराबबन्दी समिति का गठन करके शराब के ठेके पर धरना दे दिया गया है। शराब पीने तथा बेचनेवालों पर जुर्माना करने का निर्णय किया है। शराबी को पकडनेवालो को इनाम दिया जावेगा।

जिला फरीदाबाद .—

पलवल के समीपवर्ती ग्राम बढा मे गत सप्ताह सभा के उपदेशक श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री के प्रयत्नों से एक शराबबन्दी की पचायत हुई है। ग्राम के ठेके को बन्द करने के लिए सरकार को चेतावनी दी गई है। अन्य नेता भी शराबबन्दी कार्य मे सहयोग दे रहे हैं। सभा के उपदेशक तथा भजनोपदेशक ठेको पर धरने देने की तैयारी कर रहे हैं।

केदारसिंह आर्य

कौन सुन रहा गांधी को

१३ अप्रैल जनसत्ता। जब राष्ट्रपिता महात्मा गाधी ने शराबबन्दी की जरूरत पर बल देते हुए यह कहा था कि अगर देश का शासन एक घटे के लिए भी उनके हाथो में आ जाए तो वह शराब की तमाम फैक्टरियो और दुकानों को बगैर कोई मुआवजा दिये ही बद कर देगे तो उनकी इस बात को गम्भीरता से नहीं लिया गया। इतना ही नही जब देश का प्रधानमत्री बनने पर मोरार जी देसाई ने क्रमिक शराबबन्दी कार्यक्रम को क्रियात्मक रूप देने की कोशिश को तो उन्हें भी शराब की लाबी के कोप का भाजन बनना पडा। शराब का सेवन तेजी के साथ इस भारत को अपनी लपेट मे लेता जा रहा है। जैसे-जैसे शराब से आमदन बढती जा रही है, वैसे-वैसे आमदन सरकारी राजस्व का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनती चली जा रही है। सरकार इस दुविधा में है कि अगर शराबबन्दी कर दी जाए तो उसके कारण होनेवाली आमदन की क्षतिपूर्ति कैसे होगी ? दूसरी ओर विचारणीय बात यह है कि अगर इस बुराई को रोका नहीं गया तो लोगों के जीवन तबाह और बर्बाद होते चले जायेंगे और सामाजिक समस्याए निरन्तर बढती चली जाएगी।

बहरहाल जैसे-जैसे शराब समाज को अपनी लपेट में लेती चली जा रही है और परिवार के परिवार शराब के कारण तबाह हो रहे हैं, सरकार को चाहिए कि वह प्रशासन को यह स्पष्ट निर्देश दे कि भीड़ भरे इलाकों मे स्कूलों, कालेजो मन्दिरों व अन्य सार्वजनिक स्थानों के निकट ठेके किसी भी हालत मे न खुलने दिये जाएं। इन ठेकों से सरकार को आमदनी तो अवश्य हो जाएगी मगर सरकार की छवि भी इससे प्रभावित हुए बगैर नहीं रहेगी।

प्रदीप, कोलसरा, सरकाघाट

जिला रोहतक तथा सोनीपत में अनेक स्थानों पर ठेकों पर धरणे जारी

(निज संवाददाता द्वारा)

रोहतक दिनांक १ अप्रैल, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय से प्राप्त सूचना के अनुसार जिला रोहतक तथा सोनीपत में अनेक स्थानों पर शराब के ठेकों पर धरणे जारी हैं। सांपला में एक सप्ताह से तीनों ठेकों पर आर्यसमाज किसान यूनियन तथा सर्वखाप पंचायत के सैकड़ों नर-नारी धरणे पर बैठे हैं। इस कारण शराब की बिक्री बन्द है। पुलिस ने एकबार धरणों पर से शामियाने तथा शराबबन्दी पोस्टरों, बैनरों को अपने कब्जे मे लिया था। परन्तु पचायत की बैठक में किये गये सरकार की दमननीति के विरुद्ध निश्चयो के भय से सारा सामान वापिस पचायत को लौटा दिया था। धरणे पुन यथापूर्व चल रहे हैं तथा शराब पीनेवालो पर ५०० रुपया जुर्माना किया जारहा है। इसी प्रकार ग्राम छारा, माण्डोठी, बादली, मोहम्मदपुर माजरा, कासनी, धावरी तोय तथा सिलानी आदि मे भी शराबबन्दी कार्यकर्त्ता धरणों पर बैठे हैं और एक भी बोतल बिकने नही दे रहे। इन सभी ग्रामों मे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अधिकारी ग्रामीण जनता से सम्पर्क कर रहे हैं और सभा की भजन मण्डलिया शराबबन्दी का प्रचार कर रही हैं।

जिला सोनीपत के प्रसिद्ध कस्बे खरखोदा में भी १४ अप्रैल से शराब के अंग्रेजी तथा देशी चार ठेको पर हवन यज्ञ करने के बाद दहिया खाप के ग्रामों की ओर से धरणे शान्तिपूर्वक चालू हैं। शराब के ठेको पर से तथा कहीं बाहर से भी लाकर पीनेवालो पर २०० रु० जुर्माना किया जा रहा है। यहा के चारों ओर ग्राम रोहणा, मटिण्डू, सिसाना, सिलाना, बिधलान, रोहट, मण्डोरा, नाहरी, रामपुर कुण्डल, मठी कुण्डल, फिरोजपुर बागर, लीलोठी, खुर्मपुर, तथा तुर्कपुर आदि के आर्यसमाज किसान यूनियन के कार्यकर्त्ता क्रमश धरणों पर बैठते हैं। ग्राम बरोदा, बुटाना आदि ग्रामों मे भी शराब के ठेको पर धरणे चालू हैं। श्री विजयकुमार संयोजक तथा सभामन्त्री श्री सूबेसिंह जी ने खरखोदा पहुँचकर शराबबन्दियो का मार्गदर्शन किया।

मातनहेल जिला रोहतक में शराब के ठेके पर धरना आरम्भ

ग्राम मातनहेल जिला रोहतक की पचायत के प्रस्ताव के आधार पर दिनांक १६ अप्रैल से शराब के ठेके पर अनिश्चित काल के लिए ग्राम वासियों ने धरणा आरम्भ कर दिया है। सैकडों नर-नारी धरणे पर बैठे हैं। ठेके पर शराब लेनेवालों को प्यार से शराब का सेवन न करने की प्रेरणा करते हैं। यदि कोई शराबी प्रेम से नहीं मानता तो उस पर पचायत के प्रस्तावानुसार आर्थिक दण्ड दिया जाता है। पचायत ने यह भी निर्णय किया यदि शराब के ठेके के लिए जिसने स्थान दिया है उस पर भी शराब की बिक्री मे हिस्सेदार मानकर आर्थिक दण्ड दिया जावेगा और सामाजिक बहिष्कार भी किया जावेगा। पंचायत ने शराब के ठेकेदार को भी नोटिस दिया है कि वह २० अप्रैल तक ठेका बन्द कर देवे अन्यथा पचायत की ओर से ठेका हटवाने के लिए जो आवश्यक कार्यवाही होगी, की जावेगी। इसकी जिम्मेदारी ठेकेदार तथा सरकार की होगी। ठेके पर प्रतिदिन सैंकडो नर-नारी बैठे हैं, तथा शराब के विरुद्ध नारे लगाते है। १६ अप्रैल को इस धरणे की सूचना मिलने पर जिला उपायुक्त रोहतक से पहुँचे तथा ग्रामीण जनता को धरणा समाप्त करने को कहा। परन्तु उपस्थित सभी सत्याग्रहियों ने उनसे ज्ञापन देते हुए कहा कि हम ठेका बन्द होने पर ही धरणा समाप्त करेंगे। उपायुक्त महोदय ने उन्हें धमकी देते हुए कहा कि सरकार किसी दबाव में आकर ठेका बन्द नहीं करेगी और सख्ती की कार्यवाही करेगी।

ग्राम की शराबबन्दी समिति के मन्त्री डा० विजयकुमार आर्य ने एक प्रैसवक्तव्य द्वारा सरकार की चुनौती को स्वीकार करते हुए कहा है कि ग्राम की भलाई के लिए धरने को उठवाकर ही दम लेंगे। मातनहेल में सभा की भजनमण्डली का शराबबन्दी का प्रचारार्थ कार्यक्रम बनाया है। सभा के अधिकारी भी यहां ग्रामीण जनता के मार्गदर्शन हेतु पहुंच रहे हैं।

लाखन माजरा जिला रोहतक में शराबबन्दी सत्याग्रहियों की गिरफ्तारियों की प्रो० शेरसिंह द्वारा आलोचना

रोहतक दिनाक १९ अप्रैल, अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने अपनी एक प्रैस विज्ञप्ति द्वारा शराबबन्दियो पर लाखन माजरा जिला रोहतक मे शान्ति-पूर्वक बैठे हुए लाखन माजरा जिला रोहतक के शराब के ठेके पर दिनाक १८ अप्रैल को पुलिस द्वारा की गई लाठी चार्ज तथा ५ कार्यकर्त्ताओं की गिरफ्तारी की आलोचना की है और हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल को चेतावनी देते हुए सावधान किया है कि शान्तिपूर्वक शराब के ठेको पर धरणा देनेवालो पर पुलिस की बर्बतापूर्वक कार्यवाही को तुरन्त बन्द किया जावे और हरयाणा मे चल रही शराबबन्दी की लहर को देखते हुए हरयाणा मे पूर्ण शराबबन्दी लागू की जावे। यदि जनता की आवाज को बलपूर्वक दबाया गया तो इसके परिणाम गम्भीर होंगे। शराब से तग आकर अब जनता जाग चुकी है।

स्मरण रहे १८ अप्रैल को लाखन माजरा मे एक पचायत का आयोजन करके शराब के ठेके पर धरणा आरम्भ किया गया था। हरयाणा शराबबन्दी के सयोजक श्री विजयकुमार ने भी ग्रामीण जनता को ठेके को बन्द करवाने के लिए आर्यसमाज की ओर से सहयोग का आश्वासन दिया था। परन्तु सायकाल ६ बजे श्री आनन्दसिंह दांगी मन्त्री हरयाणा लाखन माजरा पहुचे और उनके निर्देशन पर पुलिस ने लाठी चार्ज किया तथा शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओ को गिरफ्तार करके ३ घण्टे बाद रिहा कर दिया। सरकार की इस दमनकारी कार्यवाही के विरोध मे शीघ्र ही सर्वखाप तथा आर्यसमाज की बैठक होगी।

जिला महेन्द्रगढ़ में शराबबन्दी अभियान

सभा कार्यालय मे प्राप्त सूचना के अनुसार हरयाणा के दक्षिणी क्षेत्र जिला महेन्द्रगढ़ में शराबबन्दी अभियान ने जोर पकड लिया है। जिला महेन्द्रगढ के साथ राजस्थान के ग्रामों मे भी शराबबन्दी अभियान फैल रहा है। आर्यसमाज मिर्जापुर बाछोद जिला महेन्द्रगढ के मन्त्री श्री डा० विश्वम्भरदयाल आर्य ने एक वक्तव्य द्वारा हरयाणा सरकार को कहा है कि जिला महेन्द्रगढ के ग्रामों मे शराब के ठेके बन्द किये जावें अन्यथा वहा आर्यसमाज की ओर से धरणे आरम्भ कर दिये जायेंगे।

जिला हिसार के नियाना ग्राम में शराबबन्दी संघर्ष

ग्राम नियाना में सभा के भजनोपदेशक श्री ईश्वरसिंह तूफान जी ने गत सप्ताह प्रभावशाली प्रचार किया। शराब के ठेके को हटवाने के लिए वानप्रस्थी राममुनि के नेतृत्व मे सघर्ष सफलतापूर्वक चल रहा है। इसमे श्री सूबेसिंह, श्री सुन्दरसिंह, श्री ओमप्रकाश, श्री प्रतापसिंह, श्री मनीराम, श्री नफेसिंह, श्री बलवीरसिंह, श्री रोशनलाल, श्री जयवीर, श्री सन्दीप, श्री रामभक्त तथा महिलाओं की ओर से श्रीमती राजवती, सुन्दरदेवी, सुजानीदेवी, शान्तीदेवी, दुर्गादेवी, भतेरीदेवी, महादेवी, कीडोदेवी ने तन मन तथा धन से सहयोग दिया।

जिला रेवाड़ी में शराबबन्दी अभियान

ग्राम कन्होरी जिला रेवाडी में १० अप्रैल को शराबबन्दी पंचायत सम्पन्न हुई, इसमें श्री रामकिशन सरपच कन्होरी, यशपाल सरपच गानला, श्री भरतसिंह सरपच कन्होरा आदि सम्मिलित हुए। ग्राम से शराब का ठेका बन्द करवाने के लिए २४ सत्याग्रही धरणे पर बैठे। तीनों ग्रामों का प्रधान नवयुवक श्री दिलबागसिंह को चुना गया। महाशय बुधराम आर्य प्रधान आर्यसमाज कन्होरी सभी सदस्यों के साथ सहयोग दे रहे हैं।

ग्राम पाल्हावास जिला रेवाडी मे दिनाक १८ अप्रैल को शराब विरोधी एक विशाल पचायत सम्पन्न हुई। सभा की ओर से श्री विजयकुमार जी ने शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओ धरणा देने पर बधाई दी तथा पूरा समर्थन देने का वचन दिया। श्री जयपाल जी की मण्डली ने शराबबन्दी का सफल प्रचार किया।

ठेके बंद न करने पर पंचायतों ने इस्तीफे की चेतावनी दी

भिवानी, १६ अप्रैल (जनसत्ता)। जिले में नशाबन्दी मुहिम रोचक दौर मे पहुंच गई है। बुधवार को चरखी दादरी के स्वामीदयाल भवन मे हुई, १२ प्रमुख खापो की एक पचायत मे छपार गाव के युवा सरपच रवीन्द्रसिह पप्पू ने प्रस्ताव रखा कि अगर प्रशासन शराब के ठेके उठाने पर सहमत नही हो तो संबंधित खापों के सभी गावों के सरपच इस्तीफा दे दे।

उन्होने इस कडी में पहल करते हुए अपना इस्तीफा नशाबन्दी समिति (सागवान ४०) के प्रधान बलबीरसिंह को सौंप दिया। बाद मे सर्वसम्मति से मजूरी दे दी गई। फसला किया गया कि सभी सम्बन्धित खापो के प्रधान अपनी-अपनी पचायतो के सरपंचो के इस्तीफे इकट्ठे करेंगे और अगर इस कार्रवाई के बीच यह बात उजागर हुई कि पिछले दिनों जिला कष्ट निवारण समिति की बैठक में आबकारी व कराधान मन्त्री एसी चौधरी ने जिला प्रशासन को सख्त निर्देश दिए कि चरखी दादरी मे शराब के ठेको के सामने चल रहे धरनो से मजबूती से निपटा जाए। इस आदेश के बाद एक आला पुलिस अफसर ने धरने पर बैठे लोगो को आदेश दिया कि वे १० अप्रैल को सुबह १० बजे तक अपने धरने समेट लें, वरना पुलिस अपने हिसाब से निपटेगी।

इस आदेश को ध्यान मे रखते हुए चरखी दादरी के रोज गार्डन मे दस अप्रैल को सुबह एक पचायत आयोजित की गई, जिसमें प्रशासन की इस कार्यवाही की निन्दा की गई।

समझा जा रहा है कि सरपचों के इस्तीफे की पेशकश के बाद प्रशासन के सामने नई जटिलताए आगई हैं। कहा जा रहा है कि प्रशासन ने अगर धरनो के प्रति ज्यादा जोर-जबर्दस्ती दिखाई तो उन्हें लेने के देने भी पड सकते हैं। अब उन ठेकेदारो की भी नीद हराम हो गई है, जो सोचते थे कि उनकी कथित दादागीरी से नशाबदी मुहिम को दबाया जा सकता है।

गौरतलब है कि शराब के ठेकेदारों ने दादरी मे धरने पर बैठे अनेक लोगो से कथित मारपीट व दुर्व्यहार किया है। पचायत मे यह भी चेतावनी दी गई है कि वे अपनी इन कारगुजारियो से बाज आएं वरना जनता उन्हें ठीक कर देगी।

उधर हरयाणा शिव सेना के प्रधान विनोद कुमार वत्स ने एक बयान जारी करके प्रदेश मे चल रहे शराबबदी आन्दोलन को पूर्ण समर्थन देने की घोषणा की है।

नोट —इस पचायत मे आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा की शराब बन्दी समिति के सयोजक श्री विजयकुमार ने भी पचायत को सम्बोधित करते हुए सभा की ओर से पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। श्री जयपाल की भजन मण्डली ने भी शराबबन्दी का प्रभावशाली प्रचार किया।

सम्पादक

हरयाणा मे शराबबन्दी

बलजीतसिंह रोहतक

आजकल हरयाणा में शराबबन्दी आदोलन एक व्यापक जन-आन्दोलन का रूप ले चुका है। सरकार को देर-सबेर राज्य में शराब बन्दी की घोषणा करनी पडेगी। वैसे तो शराब बेचना भारतीय संविधान तथा कल्याणकारी राज्य की धारणाओं के विरुद्ध है लेकिन अधिकतर जनप्रतिनिधियों को सविधान का पर्याप्त ज्ञान नहीं होता और अधिकारी वर्ग उनकी इस अज्ञानता का दुरपयोग करके शराब जैसी बुराई को भी सरकार की आय का साधन बना देता है। शराब की बिक्री से हरयाणा सरकार को ४०० करोड से अधिक की आय होती है। अब ठेके बन्द हो जाने से सरकार के सामने वित्तीय सकट खड़ा हो सकता है।

हरयाणा सरकार को शराब की बिक्री के आय के अन्य स्रोत भी उपलब्ध हैं लेकिन सरकार उन स्रोतो का पूरा उपयोग करे तभी समस्या हल हो सकती है। हरयाणा मे सरकार द्वारा लगाए जानेवाले टैक्सों की व्यापक चोरी होती है और केन्द्र सरकार द्वारा लगाए जाने वाले आयकर भी अत्यधिक चोरी होती है। हरयाणा सरकार के आबकारी व कराधान विभाग में भ्रष्टाचार तथा अकुशलता चरम सीमा पर है। यदि हरयाणा सरकार राज्य के दो तीन बड़े शहरों में टैक्सों की चोरी बन्द कर दे तो शराबबन्दी से घाटा पूरा हो सकता है। फरीदाबाद, रोहतक तथा पानीपत में टैक्सों की सबसे अधिक चोरी होती है। सरकार को वित्तीय संकट टालने के लिए कराधान विभाग से भ्रष्टाचार मिटाना होगा तथा कार्यकुशलता बढानी होगी। इसके अतिरिक्त सरकार को अपने खर्चों में भी कटौती करनी होगी। हरयाणा के बड़े मंत्रिमण्डल पर करोड़ों रुपये खर्च हो रहे हैं। इसका आकार छोटा करके काफी पैसा बचाया जा सकता है। प्रशासन में मितव्ययिता लागू करके भी काफी बचत की जा सकती है। अत. सरकार को जन-आन्दोलन की व्यापकता व उग्रता को ध्यान में रखते हुए राज्य में पूर्ण शराबबन्दी तुरन्त लागू कर देनी चाहिए तथा टैक्सों की चोरी रोक कर अपनी आय के साधनों का पूरा उपयोग करना चाहिए। इसके अतिरिक्त कोई विकल्प उपलब्ध नही है।

दैनिक ट्रिब्यून

शांतिपूर्ण धरना दे रहे गिरफ्तार

गोहाना १६ अप्रैल (अरोडा) यहां से गए पुलिस दल ने बरोदा थाने के सामने स्थापित शराब के ठेके के बाहर धरना दे रहे ग्रामीणों से ७ पच धज्जा पुत्र कोरा, पन्ना पुत्र चदगी, देईराम पुत्र छोटू, दरिया पुत्र श्रीचन्द, मान पुत्र गणेशी, गिरधारी पुत्र हजारी व दरिया पुत्र माईराम को गिरफ्तार कर लिया व बाद में उन्हे पूर्व सासद कपिलदेव शास्त्री, पूर्व सैनिक मोर्चे के सयोजक हरस्वरूपसिंह मोर, जिलासमाज पार्टी के महासचिव चौ० इन्द्रसिंह भनवाला के हस्तक्षेप के बाद रिहा किया गया।

सरपच चौ० महेन्द्रसिंह मोर ने आरोप लगाया कि शातिपूर्ण धरना दे रहे ग्रामीणो को आतंकित करने के लिए गैर कानूनी रूप से पकडा गया। उनके अनुसार गिरफ्तार ग्रामीणो को इस लिखित आश्वासन के बाद मुक्त किया गया कि वे धरना नहीं देंगे, मगर वे लोग छूटते ही फिर से बरोदा में जाकर धरने पर बैठ गए। यहा के गावो मे मात्र बरोदा में शराब का ठेका खोला गया है।

पंजाब केसरी

शराब का ठेका बंद

बाबेन, १७ अप्रैल (निस) वर्ष १९९३-९४ के लिये गये अंग्रेजी शराब एव देशी शराब के दोनो ठेके बन्द पड़े हैं। भारतीय किसान यूनियन और नशा बन्दी समिति का यहा पर पिछले काफी समय से शराब के ठेके बन्द करवाने के लिए धरना जारी है। नये ठेकेदार ने यहा पर २ अप्रैल से अपना शराब का काम शुरू गिया था उसके साथ ही कार्यकर्त्ता भी धरने पर आगये। उन्होने जूतों का हार और एक गधा बाध लिया और घोषणा की कि जो भी शराब लेगा उसे गधे पर बिठाकर जुलूस निकाल दिया जायेगा। इससे बिक्री बिल्कुल बन्द हो गयी और ठेकेदार अपना सामान उठाकर चले गए। कार्यकर्त्ताओं का कहना है कि ठेकेदार बाबेन में दुबारा आयेगा तो फिर धरना पूरे जोश से शुरू कर दिया जायेगा।

जनसत्ता

हरयाणा में आर्यसमाजों के उत्सव एवं शराबबंदी सम्मेलन

१	आर्यसमाज चरखी दादरी जिला भिवानी	२३ से २५ अप्रैल
२.	आर्यसमाज जाखल जिला हिसार	२४ से २५ अप्रैल
३.	स्वामी वेदमुनि आनन्दधाम आश्रम खाचरौली, जिला-रोहतक	७ से ९ मई
४	आर्यसमाज बपारसी जिला यमुनानगर	७ से ९ मई
५	आर्यसमाज उकलाना मण्डी जिला हिसार	७ से ९ मई
६.	आर्यसमाज मॉडल कालोनी जि० यमुनानगर	१४ से १६ मई
७	आर्यसमाज सीलोठ जि० रेवाडी	१५ से १६ मई
८.	आर्यसमाज मोयदीपुर जि० करनाल	२१ से २३ मई
९.	आर्यसमाज काठमण्डी सोनीपत	२८ से ३० मई
१०	आर्यसमाज रादौर जि० यमुनानगर	२८ से ३० मई
११	आर्यसमाज लोहारू जिला भिवानी	[illegible] मई

सुदर्शनदेव आचार्य, वेदप्रचाराधिष्ठाता

कालका क्षेत्र में महिलाओं ने ठेका नहीं खुलने दिया

कालका, 17 अप्रैल (निस) हरयाणा में फैल रही शराबबंदी की लहर इस क्षेत्र में भी अपना असर ले आयी है।

कालका-कसौली सड़क मार्ग (पुराने मार्ग) पर हिमाचल सीमा में क्षेत्र की महिलाओं ने कल दिनभर वहा खोले जा रहे शराब के नये ठेके का कड़ा विरोध किया। महिलाओं के विशाल प्रदर्शन के आगे ठेकेदारों की एक न चली और उन्हें वहां से भागना पड़ गया।

महिला मण्डल चन्द्रेणी की प्रधान सत्यादेवी खड़ोणा की सचिव भागवंती व अन्य महिलाओं ने बताया कि पुलिस ने इस दौरान उन्हें डराने-धमकाने व बल प्रयोग करने की धमकी दी ताकि महिलाएं डर-कर वहीं से भाग जायें। लेकिन जब महिलाएं तनिक भी घबराई नही और गिरफ्तारी देने तक को तैयार हो गयीं तो पुलिस का रवैया एकदम ढीला पड़ गया। स्थिति की नजाकत को भांपते हुए पुलिस वाले वहां से चले गयें।

शाम देर गये तक महिलाए उस स्थान पर धरना दिये बैठी रही ताकि कहीं उनकी अनुपस्थिति में ठेका खोल ही न दिया जाये।

परवाणु के सेक्टर चार तथा साथ लगते गांव चन्द्रेणी, टकसाल, मध्याल गांव की करीब ७०-८० महिलाए वहा उपस्थित थी, जिनका साथ हरयाणा सीमा मे पडनेवाले गाव खेडा सीताराम की बहुत-सी महिलाओ ने भी दिया।

हिमाचल हरयाणा को जोडने वाला यह वो खास मार्ग है, जहा से अनेक गावों का कालका से सम्पर्क बना हुआ है।

एक अन्य समाचार के अनुसार कुछ दिन पूर्व कालका के साथ लगते एक गाव पपलोहा मे भी वहा की महिलाओ ने शराब का ठका नहीं खुलने दिया था। जिस दूकान में शराब का ठेका खुलना था, उस दूकान को ही गिरा दिया गया।

–दैनिक ट्रिब्यून

प्रवेश सूचना

प्रकृति के सुरम्य सात्विक वातावरण में राजा महेन्द्रप्रताप रोड पर कझारवला-कुतुबगढ रोड पर ग्राम टटेसर मे ग्रामीण क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए, अनुभवी, ट्रेंड, योग्य अध्यापको के निरीक्षण में भारतीय, सभ्यता एव संस्कृति की भावना भरने हेतु षष्ठ से दशम् एव शास्त्री तक शिक्षा हेतु प्रवेश दिलाकर लाभ उठावे। प्रवेश १-४-९३ से चालू है। आवासीय व्यवस्था सीमित है। शिक्षा नि शुल्क है। विशेष जानकारी हेतु सम्पर्कसूत्र से पत्राचार करें।

प्रधान/मन्त्री
आर्ष गुरुकुल सस्कृत महाविद्याल
टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-११००८१

आर्यसमाज नारंग का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

दिनाक ९-४ ९३ से ११-४-९३ तक आर्यसमाज नारग का ७२ वॉ वार्षिक उत्सव बडी धूम-धाम से मनाया गया। जिसमें निम्नलिखित उपदेशक गणो ने भाग लिया।

प० चन्द्रपाल शास्त्री सभा उपदेशक एवम् स्वामी देवानन्द जी की भजन मण्डली आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा पधारो जिसका हमारी जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पडा।
सभा को १४०० रु० वेद प्रचारार्थ दान दिया।

स्थानीय भजनोपदेशक श्री जोगेन्द्रसिह जो ने लोगो को प्रभावित किया।

देवेन्द्रसिह तोमर प्रधान आर्यसमाज नारग
नारग (हिमाचल)

यदि आप हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी लागू करवाना चाहते हैं तो अपने क्षेत्र के निकट के शराब के ठेको पर चल रहे धरणों में सम्मिलित होवें।

शराब - एक अभिशाप

समाज मे बसने वाला प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसके बच्चे सुरापान न करें चाहे वह स्वय इस बुरी आदत का शिकार क्यों न हो। समाज का प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि—

१) वह धनी हो, २) वह सेहतमंद हो, ३) वह बुद्धिमान् हो, ४) वह इज्जतदार हो।

शराब पीने वाला व्यक्ति यह सब कुछ चाहते हुए भी इन चारों वस्तुओ से वंचित रह जाता है, परन्तु वह शराब का पान करता है तो चार अमूल्य चीजो को खो बैठता है —

१) शराब की खरीद मे धन का अपव्यय करेगा और परिवार में वित्तीय अभाव पैदा हो जायेगा।
२) शराब पीकर निरोगता को गवा बैठेगा जिसके कारण बीमारी पर भी अपव्यय होगा।
३) शराब के पान करने से बुद्धि को भ्रष्ट करेगा जिससे विवेक को गवा बैठेगा और इसका कोई इलाज नही।
४) शराबी की समाज मे कोई इज्जत नही होती। वह बात-बात मे झूठ बोलेगा और खोई हुई इज्जत पुन प्राप्त करना सहज नही।

यह सब कुछ जानते हुए भी लोग शराब क्यो पीते हैं। पहले यह कहावत प्रसिद्ध थी कि धन चला गया तो कुछ नही गया, स्वास्थ्य चला गया तो कुछ गया, परन्तु चरित्र नष्ट हुआ तो सब कुछ चला गया।

परन्तु एक शराबी के दिमाग की क्या थ्योरी है, वह यह सोचता है कि चरित्र चला गया तो कुछ नही गया, स्वास्थ्य चला गया तो कुछ नुकसान हुआ, परन्तु यदि धन चला गया तो सब कुछ चला गया।

एक शराबी की बुद्धि विपरीत हो जाती है। जिसके कारण वह सही और गलत का निर्णय करने मे असमर्थ हो जाता है।

जो चीज आर्थिक हालत को बिगाडती है, सेहत को खराब करती है और बुद्धि का विनाश करती है और एक इज्जतदार जीवन व्यतीत करने मे असमर्थ बना देती है और बच्चों पर भी गलत सस्कार डालती है उसका प्रयोग क्यों किया जाये। क्या इससे दूर रहना उचित नही है। एक शराबी का पारिवारिक जीवन कभी भी शान्तिमय नही होता।

शराब पीने वालो के अनुसार यदि शराब अच्छी है तो वह बच्चो को क्यो मना करते हैं। अपनी धर्मपत्नी को क्यो नही पीने देते और खराब है तो स्वय क्यों पीते हैं। यह कहा लिखा है कि खाने-पीने की कोई चीज पर घर के मालिक व्यक्ति का अधिक स्वत्व है और बच्चो व महिलाओ के लिए हानिकारक है। समाज को पुरुषों ने अपनी जायदाद क्यो समझ लिया है। समाज को अच्छा बनाने मे पुरुषों, बच्चे और लडके-लडकियों और महिलाओ का योगदान बराबर का है और बच्चों का भविष्य बनाने मे औरतों और मर्दों का बराबर का हिस्सा है। यदि एक पक्ष खराब है तो समाज अच्छा नही बन सकता, पुरुष सोचने का कष्ट करें।

—राममूर्ति, ६५६/८ फरीदाबाद

कानपुर मे पुनः एक मुस्लिम डाक्टर युवती ने हिन्दू-धर्म ग्रहण किया

कानपुर, आर्यसमाज गोविन्द नगर मे समाज के प्रधान तथा केन्द्रीय आर्यसभा के भी प्रधान श्री देवीदास आर्य ने एक २३ वर्षीय मुस्लिम डा० युवती कु० गजाला हसन को उनकी इच्छानुसार वैदिक-धर्म (हिन्दू धर्म) की दीक्षा देकर उसका नाम गायत्री रखने की घोषणा की। शुद्धि-सस्कार के पश्चात् गायत्री का विवाह एक सिक्ख युवक डा० दिलप्रीतसिंह से वैदिक रीति के साथ कराया गया। इस अवसर पर गायत्री ने बताया कि वह हिन्दू-धर्म इसलिए अपना रही है क्योंकि यह धर्म सबसे पुराना व ईश्वरी धर्म है। उसको किसी अवतार व पीर पैगम्बर ने नही बनाया है।

स्मरण रहे कि महिला उद्धारक आर्य नेता श्री देवीदास आर्य ने गत मास दो मुस्लिम युवतियो व एक ईसाई युवती को हिन्दू-धर्म की दीक्षा देकर शिक्षित हिन्दू युवको से विवाह कराये थे। इन विधर्मी युवतियो मे एक वकील, दूसरी इन्जीनियर, व तीसरी अध्यापिका है।

—बालगोविन्द आर्य

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज सैक्टर २२ए चण्डीगढ़ का ३०वां वार्षिकोत्सव दिनांक १२-३-९३ से १५-३-९३ तक बडी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर दिनांक ९-३-९३ से वेद कथा आयोजन भी किया गया जिसमें आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती द्वारा सृष्टि उत्पत्ति जैसे गूढ़ विषय की तर्कपूर्ण तथा सरलतापूर्ण व्याख्या की गई। ईश्वरीय ज्ञान तथा अनेक आध्यात्मिक विषयों पर बहुत ही उत्तम प्रवचन हुए। वार्षिकोत्सव के अवसर पर ध्वजारोहण करते समय जहां "ओ३म्" ध्वज के रंग, आकार से सम्बन्धित स्वामी जी द्वारा तथ्यपूर्ण जानकारी दी गई वहीं उन द्वारा यह रहस्योद्घाटन किये जाने पर कि केवल मात्र "ओ३म्" ध्वज को ही राष्ट्रीय ध्वज से भी ऊंचा फहराया जाना देश की विधायिका तथा सर्वोच्च न्यायालय द्वारा स्वीकृत है, आर्यजन पुलकित हो उठे। 'पुनर्जन्म का वैज्ञानिक आधार' वेदगोष्ठी, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन तथा आर्य महिला सम्मेलन, स्वामी जी के अतिरिक्त प० ओमप्रकाश आर्य, पं० निरजन देव, इतिहास केसरी, प्रो० रामविचार जी, प्रो० रामप्रसाद जी वेदालंकार, तथा श्री नेत्रपाल जी शास्त्री द्वारा बहुत ही उत्तम विचार दिये गए। श्री सत्यपाल जी पथिक, श्री जगतवर्मा जी तथा कुमारी नम्रता सोनी द्वारा मधुर भजन गीत प्रस्तुत किये जाते रहे। श्री नेत्रपाल शास्त्री इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा थे।

(शिविर वृत्त)

आर्य वीर दल चेतना शिविर

महाराष्ट्र तथा दक्षिण भारत में आर्यसमाज एव आर्य वीर दल के कार्य को प्रेरणा प्राप्त हो और इस क्षेत्र में स्थान स्थान पर आर्य वीर दल का विस्तार हो इस उद्देश्य से आर्यसमाज पिंपरी ने ग्रीष्म-कालीन आर्य वीर दल चेतना शिविर का आयोजन किया है।

७ से १६ मई १९९३ तक पुणे (महाराष्ट्र) में लगने वाले इस शिविर में सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक डा० देवव्रत जी आचार्य मार्गदर्शन करेंगे, यह प्रथम एवं द्वितीय श्रेणी का शिविर रहेगा। १४ वर्ष से अधिक आयु वाले युवक इस शिविर में सम्मिलित हो सकेंगे। प्रवेश-शुल्क केवल रु० ४०/- प्रति छात्र रहेगा। शिविरार्थी अपने साथ गणवेश में सफेद शर्ट, बनियान, मोजे खाकी आधी चड्डी, ब्राउन जूते, बिछौना, थाली कटोरी, लोटा, दरी, पेन, आदि साहित्य लाये। आर्य परिवारो के पुत्र तथा राष्ट्रप्रेमी युवक जो शिविर में सम्मिलित होना चाहते हैं। कृपया शीघ्र प्रवेश-शुल्क तथा आवेदन-पत्र अपने आर्यसमाज द्वारा भेजकर स्थान आरक्षित करें।

मन्त्री आर्यसमाज पिंपरी, पिंपरी पुणे-४११०१७
दूरभाष [०२१२], [८७४०७]

ओ३म्

आर्यसमाज गान्धारा जिला (रोहतक) का चुनाव

१] प्रधान बहन सुमित्रा जी वेदविभूषिता, २] उपप्रधान श्री महलावसिंह, ३] मन्त्री श्री सूबेदार बलबीरसिंह जी, ४] उपमन्त्री घनश्याम, ५] कोषाध्यक्ष श्री जयकरण, ६] पुस्तकाध्यक्ष घनश्याम।

पाल्हावास में सर्वजाति पंचायत

रेवाडी दिनाक १०-४-८३, ग्राम पाल्हावास मे खुलनेवाले शराब के ठेके को उठा देने निमित्त पाल्हावास के जागरूक नर नारियों ने दृढ़ निश्चय से धरना डाला हुआ है। धरने मे ग्राम वासी दिन रात बैठे रहते हैं। स्त्रिया भी काफी सख्या मे धरने स्थल पर बैठी हुई शराब विरोधी सुन्दर गीत गाती रहती हैं। ग्रामवासियो का मनोबल ऊचा है और यह निश्चय करके बैठे हैं कि ठेका ग्राम से उठवादेंगे इस समस्त कार्यक्रम के युवा सयोजक हैं डा० अनिल आर्य जी। अन्य वरिष्ठ अधिकारी एव कार्यकर्त्ता निम्नलिखित हैं -

श्री सरदार जी, श्री लक्ष्मीनारायण जो, श्री ज्योतिजसिंह जी, श्री सार्दूलसिह जी, श्री बहालसिंह जी, श्री ताराचन्द जी, श्री लाल सिंह बोहरा जी, श्री रामकरण जो, श्री राव बनीसिंह जी, श्री महा वीरसिंह भगत जी, कामरेड जसवन्त सिंह जो।

डा० अनिल जी ने बताया कि १८ अप्रैल १९८३ को दोपहर बाद ठेका उठाने के इस आन्दोलन को तीव्रगति प्रदान करके निमित्त एक सर्व जाति पचायत की बैठक का आयोजन किया। सभी को इस पुण्य कार्य मे योगदान करना चाहिए।

धरने का प्रभाव इतना हुआ है कि ठेकेदार के आदमी खोखे के बाहर बैठे रहते हैं। किसी की हिम्मत नही पडती कि कोई शराब लेने जाय। नाही उन्होंने शराब की बोतले वहा लाकर रखी हैं।

ग्रामवासियो की यह दृढ धारणा है कि हम ग्राम पाल्हावास से शराब का ठेका सदा सर्वदा के लिए हटाकर ही उठेंगे।

क्षेत्र को सभी धार्मिक एव सामाजिक सस्थाए ग्रामवासियो के साथ पूर्ण सहानुभूति बनाए हुए हैं।

रामकुमार आर्य
मन्त्री आर्यसमाज रेवाडी

"शराबी पति को–आर्य पत्नी का उपदेश"
(राजस्थानी तर्ज)

मानो-मान्गे जी म्हारा भरतार, परी छोड़ों दारूडी ॥ टेर ॥

ओ सिडयोडो पानी थाने, पीता लाज न आवे।
धन होवे बरबाद और थारी इज्जत बिगड़ी जावे ॥
थाने लूटे है दारू का ठेकेदार ॥१॥ परी छोडो दारूडी ।

बडा-बडा महराजा मिटग्या, इण दारू के माही।
पूंजी हर कंगाल बणाया सारी शान गमाय ॥
मिटग्या मोटा-मोटा ठाकुर जागीरदार ॥२॥ ,,

मेहनतरी कमाई सारी ठेकेदार दे आवो ।
घर मे नाज नही लाओ थे दारूडी पी जाओ ॥
इणेरा करल्यो थारा मन मे सोच विचार ॥३॥ ,,

भूखा बिलख रहा टाबरिया घर मे नही है नाज।
कपडा म्हारा जीर-जीर है ढकूं किणातरी लाज ॥
बिखरया घाघरिया रा न्यारा-न्यारा तार ॥४॥ ,,

स्याणा ने पागल कर देवे ओ दारू दु खदाई।
गाल्या बकता घर में आवो मैं डरपू मन माई ॥
म्हाने मारय दोडो वारबार ॥५॥ ,,

अन्धाधुन्दी नशो करो थे सडका पर पड जावो।
लोग तमाशा देखें थारी हासी क्यू करवाओ ॥
कुत्ता मूतरया मुह मे मारे धार ॥६॥ ,,

नशो उतरिया बाद डील की ढीली दशा हो जावे।
खासी बाल कालजो बासे बुढापो झट लावे ॥
क्यूं थारा पग में रहा कुल्हाडी मार ॥७॥ ,,

सुख सू जीणो चाहो तो थे दारू पीणो छोडो।
'अभय' कहै थे दारू का सब बोतल प्याला फोडो ॥
दीजो दारूडा की खोटी संगत बिसार ॥८॥ ,,

मानो-मानो जी म्हारा भरतार परी छोडो दारूडी ॥

संकलनकर्ता—स्वामी केवलानन्द, ऋषि निर्वाण स्थली (भिणाय कोठी) अजमेर

ग्राम आसन तथा माईना जिला रोहतक मे शराबबन्दी पचायत

जिला रोहतक के प्रसिद्ध ग्राम आसन मे ६ अप्रैल को श्री रामधन की अध्यक्षता मे ग्राम की पचायत हुई। पचायत ने निश्चय किया है कि ग्राम मे शराब का ठेका नही खुलने दिया जावेगा और ठेकेदार को ठेके के लिए स्थान देनेवालो का बहिष्कार करके दण्ड दिया जावेगा। इसी प्रकार शराब पीनेवालों पर भी पचायत को ओर से भारी जुर्माना होगा। सभा के उपदेशक श्री सुखदेव शास्त्री, श्री जयपाल भजनोपदेशक तथा सरपच दयानन्द ने इस पचायत को सफल करने मे योगदान दिया।

ग्राम पाल्हावास जि० रेवाड़ी ठेके पर धरना जारी

जिला रेवाडी के ग्राम पाल्हावास में भी अप्रैल के प्रथम सप्ताह से आर्यसमाज तथा शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओ की ओर से शराब के ठेके पर धरना जारी है। सभा के उपदेशक श्री मातूराम प्रभाकर तथा भजनोपदेशक श्री जयपाल आर्य ने शराबबन्दी सत्याग्रहियो को सम्बोधित किया। ग्रामवासियो का निश्चय है कि जब तक ठेका बन्द नही हो जाता तब तक धरणा समाप्त नही किया जावेगा।

बालसमन्द ठेके पर धरने से शराबियों में भगदड़

शराबबन्दी सत्याग्रह रंग लाया

ग्राम बालसमन्द जिला हिसार मे आदमपुर हल्के का सबसे बड़ा गाँव है। लगभग २० हजार की आबादी है ८ हजार वोट हैं बस अड्डे पर बुडाक रोड पर शराब का ठेका है गाव मे २० हजार की प्रतिदिन शराब पी जाती थी। आए दिन लड़ाई झगडा होता था। सज्जन आदमी तथा माता-बहिने, बुरी तरह शराबियो से दु खी थी। सायंकाल शराबी गुण्डे बस अड्डे पर व ठेके पर बैठकर शराब पीते गाली गलौच करते कई कई नगे पडे रहते, माताओ बहिनो का खेतो का रास्ता छुडवा दिया था। सरकार के दबाव मे आकर पचायत इस ओर कोई ध्यान नहीं दे रही थी। उल्लेखनीय है कि बालसमन्द की पचायत पैसे व शराब के बलबूते पर बनती है। इस बार सभा के उपदेशक श्री अतरसिह आर्य क्रान्तिकारी की प्रेरणा से नवयुवको ने शराबबन्दी का बीडा उठाया। स्वय शराब छोडकर १६-३-९३ से ठेका बन्द करवाने के लिए धरना आरम्भ कर दिया। आर्यसमाज बालसमन्द के अधिकारी महाशय दीवानसिह आर्य व श्री रामजीलाल आर्य पूर्व सरपच का पूर्ण आशीर्वाद एव सहयोग है। धरने का सचालन स्वय क्रान्तिकारी जी कर रहे हैं। धरना शान्तिपूर्वक तरीके से सफल चल रहा है। शराबियो मे भगदड मची हुई है। अब तक श्री मागेराम, दयानन्द, रणसिह, लखीराम, सत्यबीर, बेलीराम, प० मातूराम पटवारी, एकनाथ बाबा (भादरा) आदि शराबियो को घाघरी व जूतो की माला पहनाई जा चुकी है। नवयुवक शराबियो को समझा रहे हैं। न मानने पर बोतल फोड दी जाती है। फिर पिटाई करके घाघरी पहनाते हैं। वास्तविकता यह है कि ठेकेदार डरा हुआ है। ठेके में बैठा मक्खी मार रहा है। जब से धरना आरम्भ हुआ है, गाव की माताए बहिनो मे खुशी की लहर दौड गई है। अब सुख की सास ले रही हैं।

दिनाक ११-४-९३ को ३ बजे गाव मे मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल जी आए साथ मे भारी पुलिस थी। समिति की ओर से ग्रामसभा की ओरसे ४०० नागरिको के दस्तखतो से युक्त जिसमे सरपच व पचो के हस्ताक्षर भी थे, श्री दीवानसिह आर्य ने मुख्यमन्त्री को ठेका बन्द करवाने का ज्ञापन दिया। मुख्यमन्त्री जी ने सन्तोषजनक उत्तर नही दिया। लोगो मे भारी रोष पैदा हो गया। समिति के सदस्य सभा से उठ गए। साय ७ बजे धरने के निकट प० मगतराम पटवारी शराब मे धुत साथ मे एक बोतल लेकर आया। नवयुवको ने शराबबन्दी नारे लगाए बोतल फोड दी उसको घाघरी पहनाकर गाव मे जुलूस निकाला। भगत रामनिवास व महाबीर जुलूस का नेतृत्व कर रहे थे। जुलूस आजाद पच के घर के पास पहुचा। उसने शराबी की मदद की पटवारी घाघरी लेकर पच के घर मे घुस गया। पच व नवयुवको मे हाथापाई हो गई। आजाद ने किवाड बन्द करके छत पर चढकर नारे लगा रहे युवको पर पत्थर फेके। नवयुवक श्री चरणसिह व जयपाल के कुछ चोटे आई। सारे गाव ने आजाद पच के इस घटिया काय की निन्दा की। पटवारी ने पुलिस चौकी मे रामनिवास के नाम रपट दी। पुलिस वाला उनके घर भी आया। रात्री की सभा मे क्रान्तिकारी जी ने पुलिस को साफ चेतावनी दी कि अगर किसी चमचे के चक्कर मे आकर शराबियो की मदद की और धरने पर बैठे किसी युवक को तग किया तो लेने के देने पड जाएगे। हम हजारो नर-नारी गिरफ्तारी देंगे। धरना शातिपूर्वक चलाएगे। अब तक पुलिस शान्त है।

उसी दिन दूसरी घटना घटी गाव के चौक मे तीन शराबी प० प्रेम कमबीर शर्मा, मेसा शर्मा शराब मे धुत थे। जब धरने पर सक्रिय नवयुवक शमशेर के बहादुर पिता श्री कृष्ण जब पेशाब करने घर से निकला तब शराबियो ने कहा कि हम ठेके से शराब लाएंगे, देखे कौन रोकता है भद्दी गाली दे रहे थे। तब कृष्ण ने कहा हम रोकेंगे। कोई खरीद के दिखाए। तू तू मैं मै हो गई। जब कृष्ण जेली लेकर आया तब तक शराबी भाग चुके थे। कृष्ण तुरन्त चौकी में गया। कहा शराबियो को गिरफ्तार करो। वरना मैं डी०सी० साहब के पास जाऊंगा। प्रात शराबी चौकी में बुलाए गए तथा धमकाए। श्रीकृष्ण से क्षमा मागी। गाँव के लोगो के कहने पर राजीनामा हुआ। रात्री को धरने पर स्थानीय घडवा मण्डली सुरेश एण्ड कुञ्जाराम पार्टी शराबबन्दी प्रचार कर रही है। रात्री को सैकडों लोग प्रचार में धरने पर आते हैं। चौ० विजयकुमार सयोजक शराबबन्दी समिति हरयाणा पुन ९-४-९३ को पधारे। स्वामी जगतमुनि स्वतन्त्रता सेनानी, भगत रामेश्वरदास (लाडवा), प० भरतलाल शास्त्री, चौ० जवाहरसिंह आर्य (ढाणीपाल), हनूमान (सिवानी), रामकुमार सोनी (देवराला), श्री महेन्द्रसिह आर्य (डोभी), श्रीमती बालादेवी आर्या (डोभी), सुभाष मुनि, श्री उदमीराम आर्य अपने साथियो के साथ आर्यनगर से पहुचे। श्री सुघनसिह (न्योली कला) आदि धरने पर पधारे हैं। अब तक ठेका बन्द नही होता धरना जारी रहेगा। लोगो मे काफी उत्साह है।

—मा० भीमसिह प्रधान, शराबबन्दी समिति बालसमन्द

जो भी तुमको शराब पिलाए

जो भी तुमको शराब पिलाए, वह जानी दुश्मन तुम्हारा है।
भाई है चाहे बन्धु है, चाहे रिश्तेदार बडा प्यारा है॥

चाचा है, चाहे ताया है, चाहे अपनी ही मा का जाया है।
चाहे घर अपने प्रणाया है, चाहे प्रेम दिखाकर आया है॥
वह छिपा हुआ मित्र के रूप में सरेआम हत्यारा है।
जो भी तुमको शराब पिलाए ॥१॥

प्रेम दिखाकर शराब पिलाए वह झूठा प्रेम दिखाता है।
जीवन को बरबाद करे पापों का भार बढ़ाता है॥
सभी पापों की जननी है यह पापों का भण्डारा है।
जो भी तुमको शराब पिलाए ॥२॥

पुलिस आरमी, जेल आफिस चाहे कोई भी कर्मचारी है।
ट्रक ड्राईवर स्कूल अध्यापक रिक्शा चालक चाहे पटवारी है॥
डाक्टर पण्डित जज वकील चाहे अफसर बडा भारा है।
जो भी तुमको शराब पिलाए ॥३॥

राष्ट्रपति प्रधान मन्त्री मुख्यमन्त्री चाहे कोई सरकार है।
देशी चाहे विदेशी कोई आम खास दरबार है॥
खूब प्रचलन हुआ शराब का शर्म ने किया किनारा है।
जो भी कोई शराब पिलाए ॥४॥

बैठ कुसग चाहे कुशल तुलसी बडा अफसोस।
महिमा घटी समुद्र की रावण बसा पडोस॥
शराबियों मे बैठकर कभी नही कल्याण तुम्हारा है।
जो भी तुमको शराब पिलाए ॥५॥

समुद्र उमड रहा शराब का डूबा देश विदेश है।
बुद्धिमान् लोगो तुम सोचो यह मृत्यु का संदेश है॥
प्रभाकर तुम शराब छोड दो यदि जीवन लगता प्यारा है।
जो भी तुमको शराब पिलाए ···· ॥६॥

रचयिता—कप्तान प० मातूराम शर्मा प्रभाकर
सभा उपदेशक

ग्रीष्मावकाश मे आर्यवीर दल के शिविरों की तैयारी हेतु बैठक

सार्वदेशिक आर्यवीर दल की प्रान्तीय बैठक २४ अप्रैल शनिवार को ग्रीष्म कालीन शिविरों के विषय मे आर्यसमाज मॉडल टाउन पानीपत में होने जा रही है। जो भी आर्यजन अपने यहा स्थानीय शिविर लगवाना चाहे वे इस मीटिंग मे अवश्य पधारें।

वेदप्रकाशार्य महामन्त्री आर्यवीर दल
आर्यसमाज शिवाजी कालोनी रोहतक (हरयाणा)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, गोहाना रोड, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२४/७३ पंजी० नं० P/RTK-1

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी रोहतक
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २० अंक २० २८ अप्रैल, १९९३ वार्षिक शुल्क ४०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति ८० पैसे

जस्टिस श्री महावीरसिंह जी गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के नए परिद्रष्टा बने

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के जस्टिस महावीरसिंह नए परिद्रष्टा (Visitor) होंगे। इस आशय का दिनांक १४-४-९३ की शिष्ट परिषद् की बैठक मे सर्वसम्मत प्रस्ताव पारित किया गया। बैठक की अध्यक्षता कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह ने की। नए विजिटर महोदय ने ७-४-९३ से अपना कार्यक्रम संभाल लिया है। १४-९ १९२० मे एलम (मु०नगर) में जन्मे जस्टिस महावीर सिंह ने लखनऊ विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम ए तथा विधिशास्त्र मे समस्त विश्वविद्यालय में दूसरा स्थान प्राप्त कर प्रथम श्रेणी मे परीक्षा पास की। १९४१-४२ में लखनऊ विश्वविद्यालय को सर्वोत्तम छात्र होने के कारण स्वर्णपदक प्राप्त किया। १९४२-४४ तक जे वी. इण्टर कालेज बड़ौत में अर्थशास्त्र मे अध्यापक के रूप मे कार्य किया। १९४४ में उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा मुंसिफ के रूप में चुने गये और १०-५-१९४६ को इसी पद पर अपना कार्यभार संभाला उसके बाद १९५३ में सिविल जज १९५९ में सिविल सेशन जज, १९६८ में एडीशनल डिस्ट्रिक्ट जज, व एडीशनल जज रिवीजन (सेल्ज टैक्स), १९७० में डिस्ट्रिक्ट जज और १९७७ में पब्लिक सर्विस ट्रिब्यूनल के जुडिशियल मेम्बर के रूप मे बिना किसी व्यवधान के पदोन्नत हुए। १७-११ १९७७ को इलाहाबाद हाईकोर्ट के एडिशनल जज नियुक्त हुए और १९-११-७९ को स्थायी जज बनने के बाद १४-९ १९८२ को सेवा निवृत्त हुए।

सेवानिवृत्ति के बाद ८-१०-१९८२ को सर्वोच्च न्यायालय में वरिष्ठ विधिवेत्ता के रूप मे पंजीकृत हुए और अब उच्चतम न्यायालय में ही इसी रूप में कार्यरत हैं।

जस्टिस महावीर सिंह ने अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकों के लेखक होने का गौरव प्राप्त किया है जो कि न्यायक्षेत्र में उच्चकोटि की मानी जाती हैं। न्याय पंचायत सहकारी समिति एक्ट भारत का संविधान नामक पुस्तकों को भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत किया गया है। इसके अतिरिक्त हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा उनको विधि वाचस्पति की मानद उपाधि से भी विभूषित किया गया है। जस्टिस महावीर सिंह के सम्पर्क में आने वाला हर व्यक्ति इस तथ्य को स्वीकार करने पर बाध्य हो जाता है कि वे न्यायप्रियता विधि विज्ञान सादगी और गम्भीरता, शालीनता, मितभाषिता और ईमानदारी के प्रतीक हैं। इन्हीं गुणों के कारण ये इस समय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की न्यायसभा के चेयरमैन भी हैं।

जस्टिस महावीर द्वारा विजिटर के रूप में कार्यभार संभालने पर आर्यजगत् में और विशेष रूप से गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में खुशी की लहर दौड़ गई है। इनके कार्यभार संभालने पर स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, प्रो० शेरसिंह, डा० धर्मपाल, श्री सूर्यदेव, श्रीमती प्रभात शोभा, श्री सोमपाल संसद सदस्य, श्री वेदव्रत शर्मा, प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार, महेश विद्यालंकार, श्री सूबेसिंह श्री विजय कुमार आदि ने अपने बधाई संदेश भेजे हैं और आशा की है कि नए विजिटर का कुशल नेतृत्व निश्चित रूप से विश्वविद्यालय को एक सही और नई दिशा देगा।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का दीक्षान्त समारोह सम्पन्न

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का ९२ वां दीक्षान्त समारोह शान्तिपूर्ण ढंग से सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह ने की। इस अवसर पर कुलपति एवं आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार ने नवस्नातकों को उपदेश दिया और ३४५ छात्र-छात्राओं को उपाधि प्रदान की। मंच पर शिष्ट परिषद् के सदस्य साधु सन्यासी व पुराने स्नातक काफी संख्या मे उपस्थित थे, जिनमे स्वामी आनन्द बोध, स्वामी ओमानन्द, श्री सोमपाल संसद सदस्य, श्री नरेन्द्र विद्यालंकार, डा० धर्मपाल, डा० रणजीतसिंह, श्री सूबेसिंह डा० महेश विद्यालंकार डा० सत्यवीरसिंह, श्री वेदव्रत शास्त्री, डा० सोमवीर सिंह, श्री वेदव्रत शर्मा, श्री राजेन्द्र दुर्गा, श्रीमती प्रभात शोभा व श्रीमती सुमेधा आदि के नाम प्रमुख हैं। पुराने स्नातकों की ओर से श्री नरेन्द्र ने और सन्यासियों की ओर से स्वामी ओमानन्द ने नवस्नातकों को आशीर्वाद दिया। मुख्य अतिथि श्री [illegible] गृहराज्यमन्त्री के किन्हीं कारणों से न आने के कारण दीक्षान्त अभिभाषण आर्य विद्यासभा के मन्त्री व शिष्टपरिषद् के वरिष्ठ सदस्य प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार ने पढ़ा। मंच संचालन का कार्य कुलसचिव डा० जयदेव वेदालंकार ने किया। दीक्षान्त समारोह से पूर्व कई सम्मेलनों का भी आयोजन किया गया, जो बड़े ही शान्तिपूर्ण ढंग से सम्पन्न हुए। प्रो० शेरसिंह ने कुलपताका फहराई और व्यायाम सम्मेलन की अध्यक्षता प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार ने की। अपने अध्यक्षीय भाषण में ब्रह्मचारियों के कौशल की प्रशंसा करते हुए अपनी ओर से १०१ रु० तथा आर्यविद्या सभा की ओर से ५५०० रु० ब्रह्मचारियों की विकास योजना के लिए प्रदान किए। मुख्य अतिथि के रूप में स्वामी ओमानन्द सरस्वती मंच पर विराजमान थे। श्रीमती प्रभात शोभा ने भी इस अवसर पर १०१ रु० ब्रह्मचारियों को पुरस्कार स्वरूप प्रदान किया। उत्सव के दौरान यज्ञ की कार्यवाही डा० हरि प्रकाश की देखरेख में चली। बाकी व्यवस्था श्री महेन्द्रकुमार मुख्याधिष्ठाता ने बड़ी कुशलता से संभाली। गुरुकुल के उत्सव पर राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में सभा के महोपदेशक श्री सुखदेव शास्त्री तथा राममेहर एडवोकेट आदि के प्रभावशाली व्याख्यान हुए।

मैंने शराबबन्दी अभियान में भाग लेकर राष्ट्रपिता द्वारा दिखाए मार्ग पर चलने का प्रयास किया है : बेरी

नई दिल्ली २० अप्रैल (जी एस चावला). हरयाणा के इका विधायक श्री ओमप्रकाश बेरी, जिनके शराबबन्दी अभियान मे भाग लेने को पार्टी विरोधी गतिविधि करार देते हुए मुख्यमन्त्री श्री भजन लाल ने कारण बताओ नोटिस जारी किया था, श्री भजनलाल को भेजे ११ पृष्ठो के जवाब मे नशाबन्दी अभियान मे भाग लेने को स्वीकार किया है लेकिन उनका जवाब कटाक्ष से परिपूर्ण है तथा उन्होंने श्री भजनलाल के विरुद्ध आरोप का संकेत किया है।

जानकार सूत्रो के अनुसार जवाब मे विभिन्न मुद्दे उठाए गए हैं, जिनमे सिंचाई के लिए जल के वितरण में पक्षपातपूर्ण रवैया अपनाने तथा श्री भजनलाल के दामाद के शराब के कारखाने के बारे में फैली हुई बाते इत्यादि भी शामिल हैं। जवाब मे वास्तव मे कारण बताओ नोटिस जारी किए जाने के पीछे निहित उद्देश्यो का विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है। श्री बेरी का जवाब वास्तव मे श्री भजनलाल पर प्रतिरोपो का पुलिंदा है। श्री बेरी ने कहा है कि मैंने शराबबन्दी अभियान मे भाग लेकर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा दिखाए मार्ग तथा कांग्रेस पार्टी की शराब विरोधी नीति पर चलने का प्रयास किया है। उन्होने भारतीय संविधान का भी उल्लेख किया है, जिसमे देश मे शराबबन्दी लागू करने के लिए कहा गया है।

श्री भजनलाल के इस कथन कि सरकार को शराब के ठेको से प्राप्त होने वाले धन की सख्त जरूरत है, के जवाब मे श्री बेरी ने कहा कि राज्य सरकार मन्त्रिमण्डल के आकार को छोटा करके सेल्स टैक्स की रोक कर व बोर्डों व निगमों के चेयरमैनो की संख्या कम करके धन बचत कर सकती है। उन्होंने कहा कि जब तमिलनाडु व गुजरात जसे राज्य पूर्ण शराबबन्दी लागू करने के बावजूद भी विकास कार्य जारी रख सकने हैं तो फिर हरयाणा ऐसा क्यों नही कर सकता।

श्री बेरी के अनुसार हरयाणा के लोगो मे यह बात मशहूर है है कि श्री भजनलाल शराबबन्दी का विरोध सिर्फ इस लिए करते हैं ताकि उनके दामाद के शराब के कारखाने का उत्पादन खूब बिके। इस काम मे पूर्व मुख्यमन्त्री श्री ओम प्रकाश चौटाला भी श्री भजन लाल का साथ दे रहे हैं क्योकि उनके एक सम्बन्धी के पास श्री भजन लाल के दामाद के शराब के कारखाने के उत्पादन की एजेंसी है। उन्होंने कहा है कि शराबबन्दी के लिए दिये गए धरने में बैठ कर उन्होने पार्टी का भला किया है तथा जनता की आलोचना को भी समाप्त किया है।

अतीत मे श्री वीरेन्द्रसिंह और डा० रामप्रकाश को भी इसी तरह के नोटिस जारी किये थे, पता चला है कि श्री बेरी अपने को प्राप्त नोटिस के उत्तर में मुख्यमन्त्री पर शराबबन्दी के मामले को लेकर बरसने वाले हैं। श्री बेरी और उसके समर्थकों का कहना है कि शराबबन्दी का समर्थन कांग्रेस के मूलभूत सिद्धांतो के अनुरूप है। उनका यह भी आरोप है कि मुख्यमन्त्री ने नोटिस की यै कार्यवाही आबकारी मन्त्री श्री ए सी चौधरी के उकसाने पर की है और ए सी चौधरी अपने कारणों से शराब लाबी के हाथों में खेल रहे हैं।

पता चला है कि राज्य मे नशाबंदी के विरुद्ध तेज होते हुए आंदोलन से शराब लाबी बुरी तरह से घबराई हुई है। नीलामी के समय उन्हे मन्त्री व आबकारी विभाग के उच्च अधिकारियो ने तरह के वादे किए थे, और पूर्ण संरक्षण प्रदान करने की बात कही गई थी। लेकिन अब जिला रोहतक जिला करनाल, जिला कुरुक्षेत्र, जिला कैथल के देहातो मे शराब की घटती हुई खपत से ठेकेदारो मे गहरी चिन्ता व्याप्त है।

यह भी पता चला है कि सत्तारूढ विधायक दल के लगभग ६ अन्य सदस्यों १२ भी उनके निर्वाचन क्षेत्रों की जनता नशाबन्दी आंदोलन के समर्थन के लिए दबाव डाल रही है। मुख्यमन्त्री द्वारा श्री ओमप्रकाश बेरी को दिया गया नोटिस नशाबन्दी आन्दोलन के समर्थक कांग्रेसी विधायकों को परोक्ष रूप से दी गई एक चेतावनी है कि यदि उन्होंने अपना समर्थन वापस न लिया तो उनके नाम भी असंतुष्टो वाली सूची मे दर्ज हो जाएगे और उन्हे सत्ता का कोई लाभ नहीं उठाने दिया जाएगा।

दैनिक जन सन्देश

भारत देश महान

हुकमसिंह एडवोकेट
५३/६ पिपली मार्ग कुरुक्षेत्र

भारत देश महान् है - बहुत अरसा गुलाम रहा है
सबसे आखिर में तो उस पर - अंग्रेजो का राज रहा है
तकसीम करो और राज करो - अंग्रेजो का यह सिद्धांत रहा है
इस देश में राजे और रजवाड़े - कोई कम गद्दार नहीं थे
गद्दारो से देश भरा था - खून चूसते साहूकार रहे थे
अंग्रेजो के राज मे ही तो - ये देश बड़ा कंगाल हुआ
नफरत का उसने बीज बो दिया - जनता का बुरा हाल हुआ
तांबा-पीतल-चांदी-सोना - बन्ध-बन्ध खिल्ली चली गई
कागज के ये नोट बनाकर सारी दौलत लंदन चली गई
हर एक देश किसी देश भक्त का तो मकरूज रहा है
गांधी जी थे देश भक्त - भारत उनका ऋणी रहा है
भारत देश महान् रहा है - बहुत अरसा गुलाम रहा है।

सन्१९४७मे जब कुछ वीर सिपाहियों ने मेरठ मे बिगुल बजाया था
अंग्रेजी शासन हिल गया था - और उसे गदर बताया था
गदर नही था देश प्यार था - उनका झंडा तोड़ गिराया था
तकसीम करो और राज करो - सिद्धांत को खूब चढ़ाया था
बड़े-बड़ो को जागीरें और गद्दी देकर - राजा उन्हे बनाया था
और इन पिठुवों और रजवाड़ों से भारत फिर९०साल गुलाम रहा था
लोकमान्य और गोखले - विवेकानन्द कितने महान् हुये
दयानन्द स्वामी तिलक और गांधी और टैगोर कितने बुद्धिमान् हुए
राजगुरु-सुखदेव भगतसिंह-सुभाष आजादी के आलम बरदार रहे
वीर सावरकर और चन्द्रशेखर भी कुर्बानी के सरदार रहे
पानीपत मे इब्राहिम लोधी के मुस्लिम - क्या बाबर से लड़े नही
हिन्दू- मुस्लिम-सिख-ईसाई - क्या सारे वहां पर मरे नहीं
असली देश का ठेकेदार तो शहर का साहूकार रहा है
खून चूसने वाले मक्खू का - हमेशा ऊंचा बोल रहा है
भारत देश महान् रहा है - बहुत अरसा गुलाम रहा है।

रुकिये—शराब के सेवन से परिवार की बर्बादी होती है। अतः अपने निकट के शराब ठेकों पर अपने साथियों सहित धरणे पर बैठकर शराबबन्दी लागू करावें।

जिला भिवानी मे शराबबंदी आन्दोलन तेज

दिनाक १३-४-८३ को तोशाम मे नजदीक के १२ गाव के हजारों नर नारी इकट्ठे हुए तथा सर्वसम्मति से निर्णय लेकर चौक में शराब के ठेका के सामने श्री शमशेरसिंह पंघाल की अध्यक्षता मे धरना आरम्भ कर दिया। प्रत्येक गांव से दो दो आदमी नित्य धरने पर आएगे। ठेकेदार ने एकदम ठेका बन्द कर दिया है। चौक के बीच में शामियाना लगाकर २० पुलिसवाले भी डेरा लगाकर बैठे हैं। प्रथम दिन दो शराबियो का काला मुंह किया गया। यह धरना भारतीय किसान यूनियन की ओर से दिया गया है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा शराबबन्दी अभियान के प्रवक्ता ने जानकारी दी। धरना मे तेलूराम, बाल्मीकी, अमरसिंह पघाल, मा० प्रतापसिह, मगलसिह, पालेराम, सुरजाराम, सुबेदार चन्दूलाल सरपंच गारनपुर आदि का विशेष योगदान रहा है।

इसके अतिरिक्त छपार ठाकरान सरपच ने उपठेका खुलवा दिया था। सरपच ने ११०० रु० जुर्माना दिया तथा ठेका उठवा दिया। ग्राम मिरान में भी १० दिन से धरना जारी है तथा ठेका बन्द है। ग्राम रुहनात मे भी ३ तारीख से धरना जारी है। दादरी शहर मे भी लगभग एक दर्जन ठेको पर धरना जारी है। अनेक गावो मे शराबबन्दी लागू हो चुकी है। जिला भिवानी मे शराबबन्दी अभियान पूरे यौवन पर है।

ज्ञातव्य है कि गत वर्ष से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से युद्ध स्तर पर जिला भिवानी मे शराबबन्दी अभियान चलाया हुआ है। सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह, चौ० विजयकुमार पूर्व उपायुक्त, चौ० सुबेसिह सभामन्त्री, सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, चौ० हीरानन्द आर्य पूर्वमन्त्री, श्री बलबीरसिंह ग्रेवाल, प्रि० बलबीरसिह आदि को श्रेय दिया जाता है। अब भारतीय किसान यूनियन भी इस पुण्य के कार्य में जुट गई है। सागवान खाप व स्योराण खाप मे भी शराबबन्दी हो चुकी है। ग्राम धनाना, बामला, जमालपुर, झोझूकला, के लोग भी पूरे सक्रिय हैं। जनसमूहों के आगे ठेकेदार व सरकार बोखला उठे हैं।

सुरजपालसिह, सरपच, ग्राम रतेरा, जि०-भिवानी

बुरी लत नशों की

–रचयिता–स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

अनमोल रतन, मानव का तन, करे प्रभु भजन,
पावन यह सुखद घडी ॥
दारू स्मैक तमाकू- ये हैं तीव्रधार के चाकू।
करे घाव बदन, जोवन का पतन, झूठा न कथन,
लत जिनको बुरी पडी ॥

जिसने इनसे नाता जोडा- कपडे की तरह निचोडा,
ये करके मस्त, ले चूस रक्त, हो स्वास्थ्य अस्त,
हसती रहे मौत खडी ॥
ये नशे बडे दुखदाई, इनसे ही पडी तबाई,
करो व्रत अटल, जीवन हो सफल, सबल हो आत्म-बल,
उस प्रभु की हो कृपा बडी ॥

गुरुकुल आटा डिकाडला का उत्सव सम्पन्न

१९-२०-२१ मार्च को गुरुकुल आटा-डिकडला का २२वा वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। इसमे स्वामी ओमानन्द सरस्वती, स्वामी रत्नदेव, स्वामी रुद्रवेश, वानप्रस्थी बनमुनि, चन्द्र मुनि सुश्री अन्नपूर्णा एम ए पी एच. डी, कन्या गुरुकुल नरेला, श्री ईश्वरसिह जी व श्री राजेन्द्र सिह किसौली की भजन मण्डलियां तथा श्री हवासिह तूफान, शास्त्री सुखदेव जी महोपदेशक सभा पधारे।

कुंवर आर पी सिंह उपायुक्त पानीपत ने जनता की ओर से ब्रह्मचारी ओमस्वरूप को एक नई जीप भेंट की। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को ६५० रु० दान प्राप्त हुआ।

हरयाणा के कोने-कोने मे शराबबन्दी सत्याग्रह की तैयारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रयत्न से हरयाणा के कोने-कोने में शराबबन्दी सत्याग्रह की तैयारी की जा रही है। हरयाणा शराब बन्दी समिति के सयोजक श्री विजयकुमार जी ने गत सप्ताह जिला यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, करनाल तथा पानीपत का तूफानी भ्रमण करके शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं से सम्पर्क किया और जिन जिन ग्रामो मे शराब के ठेके चल रहे हैं वहा धरणा आरम्भ की प्रेरणा की। जिला यमुनानगर अम्बाला तथा कुरुक्षेत्र मे सभा के भजनोपदेशक श्री शेर सिंह तथा श्री नन्दलाल की भजन मडली शराबबन्दी प्रचार कर रहे हैं। २ मई को यमुनानगर मे सभा के मन्त्री श्री सूबेसिह जी तथा शराब बन्दी समिति संयोजक चौ० विजयकुमार जी पधारेगे तथा धरणो की तैयारी का कार्यक्रम तैयार करेगे। जिला जीन्द मे नरवाना आर्यसमाज के उत्सव पर श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, स्वा० रतनदेव श्री विजयकुमार जी का शराबबन्दी व्याख्यान तथा प चिरजीलाल की मण्डली के प्रभावशाली भजन हुए। इसी प्रकार आर्यसमाज जवाहर नगर पलवल जिला फरीदाबाद के उत्सव पर भी प० चिरजीलाल के शराबबन्दी गीत तथा आर्यसमाज के नेताओ के व्याख्यान हुए। आर्यसमाज सोनीपत शहर के उत्सव पर भी सभा के भजनोपदेशक प० शेरसिंह प रामकुमार आर्य की मण्डली के शराबबन्दी के गीत हुए तथा अन्य विद्वानो ने भी जनता को शराब जसी बुराइयो से दूर रहने की प्रेरणा की। १८ अप्रैल को ग्राम पाल्हावास जिला रेवाडी मे एक शराबबन्दी विशाल पचायत सम्पन्न हुई। श्री विजयकुमार जी ने भी पचायत के आयोजन से पूर्व ग्रामवासियो मे सम्पर्क किया तथा वहा चल रहे शराब के ठेके को सफल करने के लिए कार्यकर्त्ताओ का मार्गदर्शन किया। पचायत के अवसर पर सभा के भजनोपदेशक श्री जयपाल के प्रभावशाली भजन हुए। यहा ठेके के धरणे पर आर्य समाज जैकमपुरा गुडगाव मे १८ अप्रैल को सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी, श्री विजयकुमार जी तथा प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार आदि आर्य नेता शराबबन्दी कार्यकर्ताओ की बैठक मे सम्मिलित हुए। इसमे सभा के अन्तरग सदस्य श्री श्यामलाल आर्य के अतिरिक्त आर्य केन्द्रीय सभा के अधिकारी तथा आर्यसमाज के प्रमुख कार्यकर्त्ता भी उपस्थित हुए तथा जिला गुडगाव के शराब के ठेको पर धरणा देने का कार्यक्रम तैयार किया गया। जिला सिरसा के ग्राम चाहरवाला में सभा की ओर से श्री रामकुमार की मण्डली ने २१,२२ अप्रैल को शराबबन्दी प्रचार करके ग्राम मे शराब के ठेको पर धरणा देने की प्रेरणा की। फसल कार्य समाप्त होने पर श्री विजयकुमार जी वहा पहुचकर धरणो का श्रीगणेश करेगे। जिला भिवानी के आर्यसमाज चरखी दादरी के वार्षिक उत्सव पर श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओ को प्रेरणा की तथा चल रहे धरणो को सफल के लिए आयजनता को पूरी शक्ति लगाने का निर्देश दिया। स्वामी देवानन्द तथा श्री मुरारीलाल बेचैन के भी शराबबन्दी के गीत हुए। जिला हिसार मे श्री अतरसिह क्रांतिकारी बालसमन्द के शराब के ठेके को बन्द कराने के लिए दिन रात सघर्ष कर रहे हैं। खरखौदा मे भी श्री सुखदेव शास्त्री श्री रतनसिह आर्य तथा श्री राम कुमार आर्य प्रचार द्वारा सत्याग्रह की तैयारी कर रहे है।

केदारसिंह आर्य

मुझे घाघरी मत पहनाओ !

गोहाना २२ अप्रैल (निस)। यहा के आहुलाना गाव मे शराब से धुत पाये गये एक अन्नामेठ ने पेशकश की कि उसे घाघरी न पहनाई जाये बल्कि जुर्माना के रूप मे चाहे १० हजार रु ले लिये जाए। उसके रिश्तेदारो ने उनकी इज्जत की दुहाई देते हुए निवेदन किया कि उसके स्थान पर उन्हे घाघरी पहना दी जाए।

मगर शराब विरोधी पकडे गये शिकार को घाघरी पहनाने पर अडिग रहे तथा अन्तत उस व्यक्ति को स्वय पचायत मे आकर घाघरी पहननी पडी।

दैनिक ट्रिब्यून

अब शराब कारखानो के आगे धरने दिए जाएंगे: विजय

कुरुक्षेत्र, २४ अप्रैल (जनसत्ता) हरयाणा शराबबन्दी आदोलन के सयोजक विजयकुमार ने घोषणा की है कि रबी फसल कटाई के बाद हरयाणा भर मे शराबबन्दी आन्दोलन तेज किया जाएगा और शराब कारखानो व शराब की थोक दुकानो के आगे भी धरने दिए जाएगे।

उन्होने दावा किया कि ३० सितम्बर १९९३ तक हरयाणा की सभी ग्राम पचायतो से शराब के विरोध मे जिन गावो के ठेकेदार हैं उन्हे बन्द करवाने व जहा पर ठेके नही है नए ठेके न खोलने के लिए प्रस्ताव पास करवाए जाएगे। हरयाणा मे ६ हजार से ज्यादा ग्राम-पचायते हैं। इस समय हरयाणा के कुछ शहरो मे भी शराब के ठेके के सामने धरने शुरू होगए है। भिवानी जिले के दादरी मे १३ ठेकों के आगे धरना जारी है। बेरी मे एक ठेका बन्द करवा दिया है।

उन्होंने कहा कि पियक्कड होने के कारण लोगो का आत्मसयम इतना टूट चुका है कि वे सख्त कदम उठाये बिना शराब नही छोड सकते। अगर नाजायज शराब की बात आती है तो उसे रोकना भी सरकार की जिम्मेदारी है। उन्होने काग्रेस पार्टी की आलोचना करते हुए कहा कि काग्रेसी महात्मा गाधी को राजघाट तक तो मानते हैं पर गाधी दर्शन व विचारधारा से मुंह मोड लेते हैं। आज हालत यह है कि शराबियो को घाघरी पहनाने को सरकार भयभीत करना मानती है जबकि पियक्कड होने पर नारकीय जिन्दगी जीने को अपमानित होना नही मानती। अब ऐसा लगने लगा कि शराब व काग्रेस एक दूसरे के पूरक हो गये हैं और शराब के पक्ष मे तरह तरह की दलीले देने लगे हैं।

हरयाणा सरकार शराब पर आबकारी से पाच सौ करोड रुपये सालाना से ज्यादा कमाती है लेकिन शराब पीने से पैदा होने वाली बुराइयो के खिलाफ प्रचार के लिए एक पैसा भी खर्च नही करती। केवल बोतल पर लिखी सवैधानिक चेतावनी से ही सतुष्ट है। जबकि दिल्ली व राजस्थान मे शराब के खिलाफ बसो पर लिखकर प्रचार किया जा रहा है। इस समय राज्य भर मे जिला प्रशासन द्वारा ग्राम पचायतो पर दबाव डाला जा रहा है शराब ठेके खुलवाने के लिए। पर अनेक ग्राम पचायते अपने शराब विरोधी अभियान पर अडिग हैं। नाजायज दबाव डालने मे उन्होंने नरवाना खण्ड विकास अधिकारी का हवाला भी दिया। उन्होंने कहा कि शिक्षक बुराइया दूर करने पर सम्मानित किए जाते थे पर मौजूदा सरकार ने राजकीय उच्च विद्यालय भभेवा के अध्यापक ईश्वरसिंह शास्त्री को इसलिए मुअत्तल कर दिया कि उसने सापला की पचायत मे शराब के खिलाफ भाषण दिया था। उन्होने इस बात की कडी निन्दा करते हुए उस अध्यापक को फिर बहाल किए जाने को माग की है।

विजयकुमार ने कहा कि लाखनमाजरा गाँव में शराब के ठेके के बाहर धरना दे रहे लोगो को आनदसिह दागी ने पुलिस से पिटवाया और वहा से भगा दिया। हरयाणा के आबकारी व कराधान मन्त्री ए सी चौधरी पर आरोप लगाते हुए उन्होंने कहा कि वह झूठ बोलते हैं और कुरुक्षेत्र को पवित्र शहर घोषित करने का दावा महज एक ढकोसला है। इस समय कुरुक्षेत्र शहर मे पिपली, खानपुर सरस्वती तट, खेडी ब्राह्मणान, बाहरी मोहल्ला व ऊपरी मे बारो ओर शराब के ठेके हैं। इसलिए उनके बयान सिर्फ लोगो को गुमराह करने के लिए हैं।

दलाल खाप के ग्राम छारा तथा माण्डोठी मे शराब के ठेकों पर धरना

जिला रोहतक के प्रसिद्ध ग्राम छारा में गत दो सप्ताह से शराब के ठेको पर धरणे चालू हैं। ग्राम के सरपच नवयुवक हैं। उन्होने अपने साथियो के सहयोग से ग्राम मे पूर्ण शराबबन्दी लागू कर रखी है। जो भी व्यक्ति शराब बेचता तथा पीता हुआ ग्राम मे मिल जाता है, इस पचायत की ओर से जुर्माना किया जाता है। सरपच तथा उसके साथी सापला के भी ठेको मे सम्मिलित होते हैं। अत उनकी माग पर आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री जयपाल की भजन मण्डली १५ अप्रैल को छारा ग्राम मे प्रचारार्थ गई तथा रात्रि को प्रभावशाली प्रचार किया।

दिनाक १६ अप्रैल को श्री जयपालसिंह की भजन मण्डली छारा के निकट माण्डोठी ग्राम में गई तथा रात्रि को प्रभावशाली ढग से शराब की बुराई तथा हरयाणा सरकार की शराब को बढावा देने की नीति के विरुद्ध जमकर प्रचार किया। अगले दिन श्री जयपाल जी ने ग्राम के प्रमुख व्यक्तियो से सम्पर्क किया तथा ग्राम से शराब का ठेका बन्द करवाने के लिए धरणा देने को प्रेरणा की। ग्राम में जागृति लाने के लिए १७ अप्रैल को दोपहर बाद ४ बजे ग्राम मे श्री जयपाल सिंह ने प्रचार किया तथा ग्राम की जनता का आह्वान किया कि अपनी खाप के छारा ग्राम की भाति माण्डोठी में भी शराब के ठेके पर धरणा देकर अपने ग्राम मे शराबबन्दी के लिए धरणे पर बैठें अन्यथा शराब से ग्राम बर्बाद हो जावेगा। उनके प्रचार से प्रभावित होकर श्री लखीराम की अध्यक्षता में रात्रि को सारे ग्राम की पचायत हुई और शराब के ठेके पर धरणा देने का निश्चय किया और शराब बेचने तथा पीनेवालों पर जुर्माना करने का कार्यक्रम बनाया गया।

ठेके के बाहर धरना देनेवालों से मारपीट

भिवानी २४ अप्रैल (ह स)। जिला भिवानी की तोशाम तहसील मुख्यालय पर शराब के ठेके के बाहर धरने वालो से ठेकेदारो के आदमियो द्वारा कथित रूप से मारपीट करने व उनके टेंट दरी आदि उठा ले जाने से रोष व्याप्त है। प्रदेश मे शराबियो को शर्मिन्दा करने के लिए वहा लगाई गई घाघरी को भी जला दिया गया है।

शराबबदी आन्दोलन के नेता हीरानन्द आर्य के नेतृत्व मे इस घटना के विरोध में गत दिवस तेरह गावो के लोगो ने पचायत की जिसमे वक्ताओ ने गहरा शोक व्यक्त करते हुए कहा कि ठेकेदार की यह कोशिश किसी जन आन्दोलन को रोक नहीं सकती। श्री हीरानन्द आर्य ने कहा कि आगामी कार्यवाही व आन्दोलन को चलाने के लिए रूपरेखा तैयार करने के लिए तोशाम मे २८ अप्रैल को एक सर्वखाप पचायत की जाएगी।

किसान नेता मगलसिंह खरेटा ने कहा कि मुझे छपार गाव मे पीटा गया था व आगे भी कोई गलत काम हमारे साथ हो सकता है पर हम घबराएंगे नहीं। बाद मे एक जुलूस निकाला गया व एक ज्ञापन तोशाम के तहसीलदार को दिया गया।

पूर्व मत्री हीरानन्द आर्य ने पत्रकारों को बाद मे इस मामले से जुडी एक घटना और बताई। उसके अनुसार ठेकेदारों के एक आदमी ओमकुमार पुत्र रामकुमार गाव खुजरा (हिसार) को मृतक हालत मे सामान्य अस्पताल हिसार मे गत दिवस भरती किया गया। वहा से पुलिस ने भिवानी पुलिस को सम्पर्क कर सूचना दी। भिवानी पुलिस ने इसकी जाच हेतु हिसार आदमी भेजा।

श्री आर्य व खरेटा का आरोप है कि इस मामले को धरना देने वालो व ठेकेदारो मे कोई झगडा दिखाकर हत्या के मामले मे कुछ लोगों को फसाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि यदि ऐसा हुआ तो आन्दोलन नया रूप ले लेगा।

शराब की दुकान के आगे ग्रामीणों का धरना जारी

चरखी दादरी, २५ अप्रैल (जनसत्ता)। चरखी दादरी से ८ किलोमीटर दूर गाव सेहलाग मे पहली अप्रैल से गाव मे शराब की दूकान के बाहर ग्रामीणों का धरना जारी है। धरने पर बैठे लोगों ने आजतक इस शराब की दूकान से एक बोतल भी नही बिकने दी है।

धरने पर पुरुषो के साथ महिलाएं भी बैठी हैं। गाव के सरपच जगतसिंह डागर ने बताया कि यह गाव फिरोहड बारहा खाप में पडता है और खाप की पचायत द्वारा शराबबदी के सदर्भ में लिए गए फैसलो को इस गाव में भी पूरी तरह लागू किया जा चुका है।

हरयाणा मे शराबबदी अभियान के प्रमुख नेता विजयकुमार ने भी गाव सेहलाग मे दौरा किया और ग्रामीणों की एक सभा मे शराब के सेवन से जीवन मे व्याप्त हो रही कठिनाइयों एव समस्याओं के बारे में विस्तार से बताया।

ददलाना मे वेदप्रचार

आर्यसमाज ददलाना करनाल का वार्षिक उत्सव दिनांक ५-६-७ अप्रैल १९९३ को सम्पन्न हुआ। जिसमे आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा के स्वामी देवानन्द तथा श्री कृष्णपालसिंह रगोला आदि भजनोपदेशक श्री राजबलसिंह आर्य भजनोपदेशक, श्री नरेशपाल निर्मल, आर्य भजनोपदेशक एवम् श्री मुरारीलाल बेचैन आर्य भजनोपदेशक ने बडो धूम-धाम से वेदप्रचार किया। सभा को ८५० रु० दान दिया गया।

प्रधान आर्यसमाज, ददलाना (करनाल)

आज की दुनिया सियानी खूब है

आपके गम की कहानी खूब है।
आपकी अपनी जबानी खूब है॥
अपना भी दर्दे निहानी खूब है।
आपकी आखो मे पानी खूब है॥

अश्क पलको से जो ढलके, यो लगा।
खूब है, गौहर-फशानी खूब है॥
हुक्मरा, महकूम बनकर रह गया।
हुक्मरा को हुक्मरानो खूब है॥

तुमने खाई आप अपने मे शिकस्त।
यह तुम्हारी कामरानी खूब है॥
मेहमा अब लौटकर जाता नही।
मेजबा की मेजबानी खूब है॥

याद तेरी दिल से जा सकती नही।
प्यार की यह इक निशानी खूब है॥
अपना उल्लू सीधा करने के लिए।
आज की दुनिया सियानी खूब है॥

दरुल बेजा जो कभी देता नही।
'नाज' को आदत पुरानी खूब है॥

—'नाज' सोनीपत

दूबलधन जिला रोहतक में शराब के ठेकेदार का एजेन्ट अवैध बिक्री करने पर गिरफ्तार

रोहतक २२ अप्रैल। (सवाददाता द्वारा) तहसील झज्जर के ग्राम दूबलधन में कल ग्राम पचायत एव शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओ ने अचोना जिला भिवानी के शराब के ठेकेदार के एजेण्ट को उस समय पकड लिया जब वह अपनी मोटर साइकिल पर शराब की दो पेटिया अवैध रूप से दूबलधन मे किसी को सप्लाई करने जा रहा था। ग्राम के सरपच श्री राजेन्द्रसिंह ने उसे निकट के थाने में गिरफ्तार करवा दिया और ग्राम में जिन व्यक्तियो को शराब की पेटिया बेच रहा था, उन पर भी ११००,११०० रु० पचायती दण्ड लिया गया। ग्राम के तीनों सरपच श्री धर्नसिंह, श्री राजेन्द्रसिंह तथा श्री वैद्यनाथ ग्राम के आर्यसमाज तथा भारतीय किसान यूनियन के कार्यकर्त्ताओ के साथ शराबबन्दी के कार्य पूरी लगन तथा परिश्रम के साथ कर रहे हैं। शराबबन्दी समिति की प्रतिदिन बैठक होती है तथा जो शराब पीते तथा बेचते हुए पकडे जाते हैं, उन पर जुर्माना किया जाता है।

दूबलधन के पूर्व सरपच तथा आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरग सदस्य के प्रयत्नों से बेरी में शराब के ठेके पर धरणा सफलता पूर्वक चल रहा है। ठेके पर एक भी बोतल नही बिक रही। ठेकेदार ने शीघ्र ही ठेका बन्द करने का निश्चय किया है।

केदारसिंह आर्य कार्यालयाधीक्षक

गिरफ्तारियों के बाद गाव मे तनाव

जगाधरी, १८ अप्रैल (हस)। जिला यमुनानगर के गाव देवधर मे गाव के सरपच सहित ७ व्यक्तियो को ठेका जलाने के आरोप मे गिरफ्तार किए जाने के बाद से गाव मे तनाव का वातावरण बना हुआ है। गाववासी उन्हें रिहा करवानें हेतु छछरोली थाने का घेराव भी कर चुके हैं। गाववासियों का आरोप है कि उन्हें जानबूझकर झूठे केसो मे फसाया जा रहा है।

—हिन्दुस्तान

आंखो देखा हाल, ठेकेदारो को बहुत मलाल

मैं और श्री ओमस्वरूप जी सचालक गुरुकुल ढिकाडला ग्राम पाल्हावास मे गए जहा पर १ अप्रैल से शराब के ठेके पर धरना दिया हुआ है। ग्रामवालो ने ठेकेदार को किराये पर कोई मकान नही दिया। वहा का सरपच भी अब जनता के साथ है। शराब के ठेकेदार ने रेवाडी रोड पर एक खोखा रखवाकर दो सैलमैन छोडे हुए हैं। परन्तु आज तक एक बोतल नही बिकी है। जिस समय हम गये, लोगो ने खडे होकर आवभगत की और प्रसन्नता प्रकट की। लगभग २० माताए बैठी हुई इस प्रकार गीत गा रही थी कि तेरा जइयो सत्यानाश हे शराब के बेचनेवाले। जनता को मत कर तू बरबाद अपना खोखा उठाले। वही पर एक टैण्ट मैं लगभग २०-२० व्यक्ति भी बैठे परस्पर विचार-विमर्श कर रहे थे। एक ओर खोखे मे बैठे हुए सैल मैन ऐसे देख रहे थे जैसे कि उनके घर पर ठेकेदार के मरने पर लोग मोहकाण आए हुए हैं। लोगो ने हमको बताया कि हम दिन मे ही नही रात मे भी पहरा देते हैं जिससे कोई शराब खरीदकर न ले जाए। श्री ओम् जी ने उनको पढने के लिए कुछ साहित्य दिया और उपदेश किया। लोगो ने १८ अप्रैल को २४ ग्रामो की एक सभा बुलाई है। देखते हैं उसमे क्या निर्णय लिया जाता है।

पाल्हावास के बाद हम डीघल धरने पर आए। लोगो ने हमारा स्वागत करते हुए बताया कि जब तक ठेका बन्द न होगा तब तक डीघल चैन न लेगा। इस प्रकार हरयाणा मे शराब विरोधी आन्दोलन की एक लहर दौड गई है। आशा है कि प्रभु कृपा से हरयाणा से शराब चली जायेगी।

—जीवानन्द, गुरुकुल झज्जर

॥ ओ३म् ॥

चेतावनी :—

१- मत पी भाई शराब, यह कर देगी खराब।
क्या बना फिरे नवाब, धूल मे मिला देगी जनाब॥

२- सुरा और सुन्दरी के जो बने थे दास।
उन सबका हो गया सत्यानाश ॥
जिन्होने किया था इनसे प्यार।
उनका जीवन होगया बेकार॥

३- प्रभु के नाम का नशा करना कोई पाप नही है।
और वस्तुओ का नशा करना कोई अच्छी बात नही है॥
अत सावधान ! ओ इन्सान !! तू दो दिन का
है मेहमान। क्यो करता है गुमान ॥

॥ ओ३म् ॥

१- यह पापिन शराब देशी। मत पीओ जहर जैसी॥
२- यह पापिन शराब अग्रेजी। तेरा जीवन बरबाद कर देगी॥
३- शराब पीने वाला व्यक्ति, कौन सा ऐसा पाप है जो कर नही सकता।
४- मास खाने वाला व्यक्ति, कौन सी ऐसी नीच योनि है जिसमे जा नही सकता। अर्थात् सबसे नीच योनि मे वही जाता है, जो मास खाता है। —जीवानन्द

अग्रेजी की अनिवार्यता खत्म की जाये

गुडगाव २६ अप्रैल (नस) सामाजिक सस्था अन्त्योदय आदोलन ने अखिल भारतीय भाषा सरक्षण सगठन की इस माग का समर्थन किया है कि सघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओ मे अग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करके भारतीय भाषाओ को उसका पूर्ण विकल्प बनाया जाये।

यहा जारी एक विज्ञप्ति मे कहा गया है कि यदि भारतीय भाषाओ को उनका अधिकार प्रदान नही किया गया तो उनका सगठन सघ लोक सेवा आयोग के कार्यालय के समक्ष धरना देगा।

शराब अपराधों की जननी है एक मास से अप्रिय घटना नहीं

हिसार (नस)। हरयाणा कृषि विश्वविद्यालय के परिसर पर एक मास से शातिपूर्ण वातावरण व सुचारु व्यवस्था ने फिर से यह सिद्ध कर दिया है कि शराब कई झगडो व अपराधों की जननी है। जब से विश्वविद्यालय छात्र सगठन ने शराब पर पाबन्दी लगाकर नशाबन्दी का समर्थन किया है तब से परिसर पर कोई अप्रिय घटना नहीं घटी। विश्वविद्यालय के मुख्य सुरक्षा अधिकारी ने बताया कि छात्रों ने परिसर पर शराबबन्दी करके रामराज्य जैसा माहौल बना दिया है। गत रात्रि सगठन की बैठक हुई जिसमे शराबबन्दी सघर्ष समिति गठित करने का फैसला किया गया। सुरक्षा अधिकारी ने बताया कि शराब पीने के बाद छात्र आमतौर पर लड पडते थे और जब से प्रतिबन्ध लगाया गया है तब से लडकियो के साथ छेडखानी की शिकायतें भी नही मिली। अधिकारी ने कहा कि छात्रो के इस फैसले पर सभी खुश हैं। नभाटा

अश्लील गीत को प्रतिबन्धित करने की मांग

उज्जैन १८ अप्रैल (वार्ता)। उज्जैन के बुद्धिजीवियों ने समाज विकृति उत्पन्न करनेवाले फिल्मी गीत — चोली के पीछे क्या है, चुनरी के नीचे क्या है, को प्रतिबधित करने के साथ इसके लेखक को दण्डित करने की माग की है।

पत्रकार उमेश मेहरोत्रा और महेश वशिष्ठ कवि अमृतलाल साहित्यकार डा० नरेन्द्र समाधिया कवि बिठ्ठलदास निर्मोही ज्योतिषविद रमेशचन्द्र तथा सेवानिवृत्त प्राचार्य बाबूलाल पुरोहित ने सयुक्त रूप से यहा जारी बयान मे उक्त फिल्मी गीत पर आपत्ति करते हुए केंद्रीय सूचना प्रसारण मत्री और सेसर बोर्ड से यह माग की है।

गर्भावस्था मे धूम्रपान से शिशु भेंगा हो सकता है

नई दिल्ली, १८ अप्रैल (वार्ता)। गर्भावस्था के दौरान धूम्रपान करने से पैदा होनेवाले बच्चे की आखो मे भेंगापन आ सकता है।

अमेरिका मे हुई नई खोज के अनुसार गर्भावस्था के आखिरी तीन महीनो मे धूम्रपान करने वाली महिलाओ के बच्चो की आखो मे जन्म से ही भेंगापन होने की आशका रहती है।

यह जानकारी हार्ट केयर फाउडेशन आफ इडिया के अध्यक्ष डा० के एल चोपडा और उपाध्यक्ष के के अग्रवाल ने कल लाइन्स क्लब आफ खुर्जा द्वारा आयोजित एक सगोष्ठी मे दी।

आखों का यह भेंगापन धूम्रपान के कारण मस्तिष्क मे आए विकारो के कारण होता है। गर्भावस्था मे बच्चो के मस्तिष्क की पूरी रचना आखिरी तीन महीनो मे होती है और इन्ही महीनो मे धूम्रपान मस्तिष्क मे खराबी ला सकता है। इसके अलावा यह भेंगापन उन मे पाया जाता है जिनका वजन जन्म के समय मे कम होता है अथवा साढे तीन किलो से अधिक होता है। जन्म के समय बच्चा का वजन कम या अधिक होना भी धूम्रपान के कारण ही होता है।

आर्यसमाजो के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज रेवाडी—

प्रधान श्री नाथूराम शर्मा, उपप्रधान श्री ओमप्रकाश ग्रोवर, श्रीमती सुमित्रादेवी, मन्त्री श्री रामकुमार शर्मा, उपमन्त्री श्री गजानन्द आर्य, श्री नानकचन्द शास्त्री, श्री राममूर्ति, कोषाध्यक्ष श्री सुखराम आर्य, पुस्तकाध्यक्ष श्री महेशचन्द्र आर्य।

आर्यसमाज काठमण्डी आर्यनगर सोनीपत—

प्रधान श्री ज्ञानचन्द्र आर्य, उपप्रधान श्री रामनिवास गुप्त, मन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री, उपमन्त्री श्री रामचन्द्र आर्य, कोषाध्यक्ष श्री किशनचन्द आर्य, पुस्तकाध्यक्ष श्री राजसिह, लेखानिरीक्षक प्रो० धर्मवीर छिक्कारा।

आर्यसमाज पलवल का वार्षिकोत्सव

पलवल, २० अप्रैल (निस), आर्यसमाज श्रद्धानन्द नगर पलवल का तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ।

उत्सव का शुभारम्भ आचार्य अखिलेश्वर वैदिक प्रवक्ता जम्मू-कश्मीर द्वारा पाच दिवसीय वेद कथा से हुआ, उन्होंने वैदिक आधार पर आर्य, ईश्वर, वेद एव आत्मा आदि विषयों पर प्रभावशाली व्याख्यान दिये।

महिला सम्मेलन स्त्री आर्यसमाज की प्रधाना श्रीमती लीलावती आर्य की अध्यक्षता में हुआ जिसमें अनेक वैदिक विद्वानों एव विदुषियों ने स्त्री जाति की महत्ता एवं वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला। मच सचालन श्रीमती सावित्री आर्य ने किया।

राष्ट्र रक्षा सम्मेलन प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी एव समाजसेवी श्री मूलचन्द सचदेवा की अध्यक्षता मे प्रारम्भ हुआ। इसमे डा० सारस्वत मोहन मनीषी, देवव्रत आचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र, चित्र उपाध्याय शास्त्री सोहना, प० मनुदेव आचार्य, मनोहरलाल आनन्द सहसचालक आर्य वीर दल हरयाणा, प० मामचन्द आर्य पथिक एव प० चिरजीलाल रोहतक ने राष्ट्र की रक्षा के लिए युवाशक्ति का आह्वान किया।

गोरक्षा सम्मेलन में मेवात मे गत दिनो गउओ पर हुए अत्याचार पर रोष प्रकट किया गया तथा एक प्रस्ताव पारित कर गऊ हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने के लिए हरयाणा सरकार से अनुरोध किया गया। मेवात में अल्पसख्यकों की सुरक्षा पर भी चिन्ता व्यक्त की गयी।

आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद मे छात्रों का प्रवेश

नर्मदा नदी के पावन तट पर आम्रकुञ्ज एवं फलोद्यानो के मध्य नगरीय बाह्य आडम्बरों से मुक्त, प्रकृति की गोद में रम्य पर्वत शृखलाओं से घिरा, होशंगाबाद भोपाल रेल लाइन के किनारे यह गुरुकुल स्थित है। शहर से लगभग ढाई किलोमीटर दूर तथा शहर से गुरुकुल तक पक्की सड़क एवं प्रकाश की व्यवस्था है।

गुरुकुल मे प्रवेश पाने के लिए पाचवीं कक्षा पास होना चाहिये तथा आयु दस या ग्यारह वर्ष न्यूनतम होनी चाहिए। प्रथमा से शास्त्री तथा आचार्य तक की पढ़ाई होती है। आठवी कक्षा तक का पाठ्यक्रम गुरुकुल झज्जर तथा इससे ऊपर आचार्य तक का पाठ्यक्रम महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सबद्ध है।

प्रवेश-शुल्क २०० रुपये शिक्षा नि शुल्क है। भोजन शुल्क मात्र ढाई सौ रुपये है जिसमें छात्रों को घी व दूध भी दिया जाता है।

गुरुकुल में योग्य आचार्य तथा अनुभवी शिक्षक अध्यापन मे कार्यरत हैं।

गुरुकुल में छात्रावास, सुन्दर गोशाला, यज्ञशाला, पुस्तकालय, तथा व्यायामशाला की व्यवस्था है। आर्ष पद्धति पर आधारित आचार व्यवहार, स्वास्थ्य, चरित्र निर्माण, देशभक्ति, धार्मिक शिक्षा के साथ छात्रो के सर्वांगीण विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

बालकों को विद्वान, सदाचारी, धार्मिक तथा राष्ट्रभक्त बनाने के इच्छुक आर्ष गुरुकुल में शीघ्र प्रवेश करवाकर उनका भविष्य उज्ज्वल बनायें।

श्रीमदेवसिंह

प्रबन्ध सचालक, आर्ष गुरुकुल नर्मदापुरम्

फोन न० २३८८ होशंगाबाद, [म०प्र०] ४६१००१

आर्यसमाज मन्धार (यमुनानगर) उत्सव सम्पन्न

१९वां वार्षिकोत्सव ८-९-१० मार्च को बड़ी धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुआ [illegible] श्री वानप्रस्थी हरलाल जी, श्री प० शेरसिंह जी, श्री मानसिंह जी राजबल की भजन मण्डली के मधुर भजन हुए कई युवकों ने यज्ञोपवीत लिये सभा को ३०० रु० वेद प्रचार दिया।

मन्त्री आर्यसमाज, मन्धार, यमुनानगर

शुभ समाचार

लो आपकी प्रतीक्षा पूरी हुई
'विश्वभारती शिक्षा संस्थान'
गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत रोहतक
मे

पाचवी तथा छठी कक्षा मे प्रथम प्रवेश प्रारम्भ है, प्रवेश की अन्तिम तिथि २५ मई। पाठ्यक्रम हरियाणा शिक्षा बोर्ड, धर्म-शिक्षा व सस्कृत भी आवश्यक, योग्यता के आधार पर केवल ५० छात्रो का प्रवेश स्वीकृत किया गया है।

विशेषताएः—

प्रकृति की गोद मे हरेभरे लहराते जगल के बीच, नगर तथा ग्राम से न अधिक दूर न समीप स्वास्थ्यप्रद जलवायु, अध्ययन व आवास हेतु सुविशाल पर्याप्त भवन, टेलीफोन बिजली तथा पानी की समुचित व्यवस्था, विविध पुष्पो व पार्कों से सुवासित छात्रावास, योग्यतम अध्यापको द्वारा अध्यापन, विविध खेल, व्यायाम, योगासन, प्राणायाम तथा नैतिक शिक्षा के लिए उत्तम प्रशिक्षको की व्यवस्था और सात्विक भोजन सभी कुछ उपलब्ध है।

निवेदक— प्रबधक समिति

चिकित्सक की आवश्यकता

सार्वदेशिक दयानन्द सन्यासी वानप्रस्थ मण्डल ज्वालापुर को अपने आश्रम मे चिकित्सालय चलाने हेतु एक अनुभवी चिकित्सक एलोपैथिक, आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक की आवश्यकता है। रिटायर्ड महानुभाव जो हरिद्वार मे रहकर सेवा, सत्सग का लाभ उठाना चाहते हो। अपनी शर्तो सहित पत्र-व्यवहार करें या मिलें।

चन्द्रप्रकाश स्वामी
मन्त्री

दूरभाष ४२५८४

वेद मन्दिर निकट बडूमाल, ज्वालापुर, हरिद्वार
पि०-२४९४०७

सूचना

आकाशवाणी के रोहतक केन्द्र से

४ मई १९९३ को

सुखदेव शास्त्री का भाषण सुनिए।

विषय है– बुद्ध पूर्णिमा।

समय है– साय सात बजे।

हरयाणा में शराबबन्दी सत्याग्रह की गतिविधियां

ग्राम बालसमन्द में शराबबन्दी लागू एवं शराबबन्दी अभियान तेज

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपदेशक एवं शराबबन्दी जिला हिसार के संयोजक संघर्षशील जुझारू कार्यकर्त्ता श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी की प्रेरणा से ग्राम बालसमन्द के नव युवकों ने १६-३-९३ से ठेके के सामने धरना प्रारम्भ किया। धरने का संचालन क्रान्तिकारी जी कुशलता पूर्वक कर रहे हैं। १४-४-९३ को सायकाल क्रान्तिकारी ने गाव के बुजुर्गों को बुरी तरह लताड़ा, साफ शब्दो में कहा कि आपको शर्म आनी चाहिए कि एक महीने से नवयुवक धरने पर बैठे हैं। गाव की पंचायत एव ठोलेदारों के कान पर ज्यूं तक नहीं रेंगी है। जब कि निकट के गाव बासडा सरसाना गोरछी रालवास कला, रालवास खुर्द, भिवानी रुहेला, बाण्डा हेड़ी, सुण्डावास आदि गाव मे धरना के बाद १८-३-९३ से शराबबन्दी लागू है। बालसमन्द में नहीं संघर्ष करो। परिणामस्वरूप बुजुर्ग प्रात गाव मे तीन दिन तक घूमे ठोलेवार जुम्मेदारी दी गई १८-४-९३ को साय ५ बजे धर्मशाला मे गाव इकठा हुआ। सरपच ने भाग नही लिया। महाशय रामजीलाल आर्य पूर्व पच की अध्यक्षता मे ३१ बुजुर्गों की एक समिति गठित की गई जो शराबियों के जुर्माना करेगी। शराब पीने वालो पर १०० रु०, बेचनेवालो पर २०० रु० दण्ड पुन गलती करने पर दण्ड के साथ घाघरी पहनाकर जलूस निकालना। पाना सिकवान, गूजरान धर्मशान, रूपान, पाना बागड्यान, ढाणी सूबेदार, खटीक महोला, रेगर मोहल्ला, बालमीक मोहल्ला, हरिजन मोहल्ला आदि सभी के मुखिया लोग पचायत मे थे। अब गाव मे शराबबन्दी लहर तेज हो गई है। लोगो मे काफी उत्साह है। धरणा पूर्ण सफल चल रहा है।

रात्री को प्रतिदिन वेदप्रचार एव शराबबन्दी प्रचार जारी है। १९-४-९३ से पं० सुमेरसिंह व प० ईश्वरसिंह आर्य भजनोपदेशकों के प्रचार हो रहे हैं। प्रचार मे काफी सख्या मे फसल का समय होने के बढ चढकर भाग ले रहे हैं। २०-४-९३ को अतरसिंह आर्य ने लोगो से कहा कि आप डरो मत हिम्मत रखो, भजनलाल को जीरो से हीरो आपने बनाया है। बालसमन्द का ठेका बन्द होने से बहुत बडा धमाका होगा। सरकार व प्रशासन तथा ठेकेदार बुरी तरह बौखलाया हुआ है शत प्रतिशत शीघ्र ही आप की जीत होगी। ठेकेदार तथा सरकार जन शक्ति के आगे घुटने टेकेगी। सरपच आपका भाई है। उसे समझाओ वरना हुक्का पानी बन्द करो। श्री जयसिंह योगी (हिसार) फूलसिंह आर्य (गोरछी) प० सुखदेव शास्त्री सभामहोपदेशक भी धरने पर पधारे और ग्रामवासियो को शराब का कलक अपने ग्राम से मिटाने की अपील की। सभा की ओर से स्वामी देवानन्द एव श्री मुरारीलाल बेचैन ने भी शराबबन्दी का प्रभावशाली प्रचार किया।

बालसमन्द के बहादुर नवयुवक रामनिवास मा० भीमसिंह रवीन्द्र शमशेर बलजीत प्रताप हरिजन रामचन्द्र महावीर भूपसिंह सतवीर रघुवीरसिंह आदि नवयुवकों का सामूहिक नेतृत्व कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त महाशय रामजीलाल आर्य दीवानसिंह आर्य पृथ्वीसिंह फौजी पृथ्वीसिंह लोरा, मानसिंह ड्राईवर है हेड मास्टर कर्णसिंह फूलसिंह मनफूलसिंह बिरसाला भगत वीरसिंह मुन्शीराम नम्बरदार मालाराम बिजला छाजूराम दरियासिंह आदि बुजुर्गो का विशेष सहयोग मिल रहा है। क्रान्तिकारी जी के सुझाव पर श्री रामलाल नेहरा पृथ्वीसिंह फौजी ने फौजी कार्ड की शराब न खरीदने की प्रतिज्ञा की है। वर्तमान मे गाव के ९० प्रतिशत नर नारी धरने पर बैठे नवयुवकों की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे हैं। माताएं बहनें सुख का सास ले रही हैं। श्रद्धा से धरने पर आनेवाले विद्वानो वक्ताओ एव भजनिकों का भोजन आदि से सत्कार कर रहे हैं। सायकाल सैंकडो बच्चे गाव की गलियो मे शराबबन्दी के नारे लगा रहे हैं। अब तक पच व सरपचो का सहयोग नाममात्र भी नही मिल पाया है। सरपच श्री धर्मसिंह तो मुख्यमन्त्री भजनलाल का एजेन्ट है, सारा गाव सरपच के कार्य की निन्दाकर रहा है।

मा० फूलसिंह सचिव शराबबन्दी समिति बालसमन्द

शराबबन्दी आन्दोलन में भाग लेने पर अध्यापक निलम्बित

राजकीय उच्च विद्यालय गम्भेवा (रोहतक) में संस्कृत अध्यापक के रूप मे कार्यरत श्री ईश्वरसिंह शास्त्री को केवल इसलिए निलम्बित कर दिया है क्योंकि वह सापला रोहतक मे आयोजित शराबबन्द करने वाली सर्वखाप पचायत में शराब के दोषों का वर्णन करते हुए, लोगों को शराब छोड़ने के लिए प्रेरित कर रहे थे। हरयाणा सरकार ने उनके निलम्बन के आदेश जारी कर दिए हैं। श्री शास्त्री ही सारे हरयाणा में ऐसे अध्यापक हैं जो इस प्रकार निलम्बित किए हैं।

दिनांक १२-०९-९३ को सर चौ० छोटूराम की पवित्र जन्मभूमि सापला रोहतक में हरयाणा से शराब जैसी बुराई को पूरी तरह दूर करने के लिए सर्वखाप पंचायत का आयोजन किया गया। पहलीवत खाप के प्रधान जैलदार राजसिंह की अध्यक्षता में आयोजित इस पचायत में ५५ खापों के लगभग १२००० लोगों ने भाग लिया था। गेहूं की कटाई जैसे प्रमुख कार्य को छोड़, लोगों का शराब विरोधी सर्वखाप पचायत में भारी संख्या में पहुंचना इस बात का प्रमाण है कि हरयाणा वासी शराब को शीघ्र ही हरयाणा को सीमा के बाहर कर देंगे।

अनेक प्रमुख सामाजिक नेताओं की उपस्थिति में पंचायत मे श्री ईश्वरसिंह शास्त्री ने लोगो को इतना ही कहा था, हरयाणा के वीर लोगों इस जहर को क्यों पीते हो? क्या महर्षि दयानन्द ने इसीलिए आर्यसमाज की स्थापना की थी? क्या चौ० छोटूराम ने शराब पीने को कहा था? इस बुराई को दूर करो। ये सारे देश को तबाह कर देंगी। लोगो ने उनको बात को ध्यान से सुना तथा समर्थन किया।

बाहरी हरयाणा सरकार। चाहिए तो यह था कि ऐसे समाज-सुधारक अध्यापक को राजकीय सम्मान देती लेकिन उल्टे उसे निलम्बित कर दिया। एक ओर सरकारी माध्यमों से नैतिक शिक्षा का प्रचार किया जा रहा है तो दूसरी ओर सामाजिक कार्यकर्ताओं के पेट पर स्वय सरकार लात मार रही है।

ये दोहरी नीति क्यों? सरकारी राजस्व को प्राप्ति के लिए सरकार शराब का पक्ष ले रही है। रामराज्य का सपना लेने वाले राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के देश का यह दुर्भाग्य ही है कि स्वय सरकार समाज मे बुराई फैला रही है।

जिस देश मे भगवान् श्री राम, श्री कृष्ण, स्वामी दयानन्द, महात्मा गांधी तथा महात्मा बुद्ध, जैसे महापुरुषो ने जन्म लिया हो, उस देश मे क्या सरकार का यही कार्य रह गया है कि समाजसुधारको को दण्ड दे, उनके पेट पर लात मारे? अपने विचार स्वतन्त्रतापूर्वक व्यक्त करना प्रत्येक भारतीय का मौलिक अधिकार है। फिर श्री ईश्वरसिंह शास्त्री ने शराब का विरोध करके कौन सा अपराध कर दिया है?

—दलीपसिंह मलिक

शराब हटाओ, देश बचाओ

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, गोहाना रोड, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजि० नं० ०/७१२१२ पंजि० नं० P/RTK-४९ फोन नं० ७८७९२ सृष्टिसंवत् १,९६, ०८, ५३, ०९४

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २० अंक २१ ७ मई, १९९३ वार्षिक शुल्क ४०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति ८० पैसे

शराबबन्दी मोर्चा और महिला वर्ग

राममूर्ति ९५६/६, फरीदाबाद

"यकी मोहकम-अमल पेहम-मुहब्बत फातहे आलम
जहादे जिन्दगानी मजें है ये मरदो की शमशीरें"। (इकबाल)

कितनी बार समाचार-पत्रो, रेडियो और दूरदर्शन द्वारा हमे सूचना मिलती है कि उस शहर-कस्बे या गावो मे या किसी बारात मे जहरीली शराब पीने से कितने हो आदमियो की मृत्यु हो गई या कितने हो पुरुष और औरते बीनाई खो बैठे हैं परन्तु फिर भी लोग नही समझते। आम तौर पर जहरीली शराब का शिकार 'सलम" बस्तियो में रहने वाला कमजोर वर्ग बनता है। दिन-ब-दिन शराब की खपत बढ रही है और साथ के साथ औरतो मे पीडा भी बढ रही है। सरकारी कोष में कुल आय का बडा भाग शराब की बिक्री से एकत्रित किया जाता है और कई बार सरकार को यह कहना पडता है कि यदि शराब बन्द कर दी जाये तो सरकारी आय मे इतना फर्क पडेगा कि विकास के कार्य चलाने के लिए खजाने में कुछ भी नही मिलेगा और कार्य रुक जायेंगे और यह भी कहा जाता है कि यदि शराब बन्द करके उस आय को पूरा करने के लिए सरकार कर लगाती है तो लोग चीख उठते हैं।

सब बडे-बडे विद्वानों, संतों और ऋषियों ने शराब से परहेज रखने का प्रचार किया है। आर्यसमाज तो १८७५ से ही जब उसकी स्थापना स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा हुई थी इस सामाजिक कलंक के विरुद्ध बोलती रही है। अपने सिद्धान्तो, ग्रन्थो, लेखो और पत्रिकाओ द्वारा हमेशा इस अभिशाप के खिलाफ आवाज उठाती रही है। साहित्यकारो, कवियों और लेखकों ने अपने-अपने ढग से शराब को जहर बताकर कहा है कि "लोग शराब नही पीते हैं, शराब लोगो को धीरे-धीरे पी जाती है"। स्वास्थ्य बुद्धि, इज्जत और धन का नाश करती है। परिवार को अन्धकार में डाल देती है, सम्पत्ति-जायदाद को खत्म कर देती है, आदमी को चरित्रहीन और झूठा एव बेइज्जत बनाती है। शराब पीने वाला आदमी जरूर झूठ बोलेगा, उसकी आत्मा मर चुकी होती है वह केवल जिन्दा लाश के रूप मे घूमता रहता है। न तो शराबी का कोई धर्म होता है और न ही कर्म। उसका धर्म, कर्म, पत्नी और बच्चे तो केवल शराब ही होती है।

दुर्भाग्य की बात तो यह है कि सब लोग मदिरा के सेवन को बुरा बताते हैं और उनमें बहुत सारे दब कर शराब पीते हैं। समाजी ढाचा इतना बिगड चुका है कि बिना शराब के कोई भी खाने-पीने की पार्टी अच्छी मेहमान-नवाजी नहीं समझी जाती है। शराब के बिना छोटा बडा कोई भी चुनाव नही जीता जा सकता और न कोई जीतने की उम्मीद कर सकता है चाहे वह चुनाव वकीलों की बार का हो, डाक्टरों की एसोसिएशन या छात्रों के संघ का, स्यासी नेताओं, समाजी संस्थाओ, यूनीवर्सिटी या कालिज के प्रोफेसरो या स्कूल के अध्यापकों की यूनियनो का हो, शराब का नगा नाच होता है। सबसे बडी दुर्घटना तो इस समय में यह है कि स्कूल के मास्टर जो राष्ट्र की बुनियाद मजबूत करने वाले समझे जाते हैं और जिम्मेदार हैं, जिन पर लोग विश्वास करते हैं कि वह अच्छे चरित्र के व्यक्ति होते हैं वह भी शराब के मामले मे किसी से पीछे नहीं हैं—यह कोई राज की बात नही है, सब जानते हैं। समाज को शराब ने भ्रष्ट बना दिया है। शराब द्वारा ही भ्रष्टाचार को पनपने का मौका मिला है, यदि भ्रष्टाचार को बुराई समझा गया है तो शराब जो भ्रष्टाचार की जननी है उसको महा बुराई मानकर खत्म करना होगा। सरकार यदि यह सोचती है कि राजस्व का काफी बडा भाग शराब की बिक्री से प्राप्त होता है तो यह भी सोचना चाहिये कि इस सामाजिक बुराई से उत्पन्न होने वाले झगडो, कुरीतियो को निपटाने मे धन देश का ही लगना है। शराब के नशे मे कितनी ही दुघटनाए होकर मशीनरी, जान और माल का कितना नुक्सान होता है। शराब बन्द करने से राजस्व मे जो कमी होगी वह तो और भी सरकारी खर्च घटाने से पूरी हो सकती है। मन्त्री मण्डल को छोटा किया जा सकता है—बेकार के महकमे खत्म किए जा सकते हैं पोस्टें घटाई जा सकती हैं—पोस्ट घटाने का मतलब यह नही है कि चपडासी हटा दिये जायें कितने राजस्व आयुक्त हैं, पहले एक होता था, कितनी ही कारपोरेशंज हैं जो एक दूसरी मे "मरज" की जा सकती हैं। टेलीफोनो, कारों, कोठियो के खर्च घट सकते हैं, हजारो पुलिस के सिपाही नेताओ की हिफाजत के लिये लगा रखे हैं, क्यो ? यदि नेता लोकप्रिय है तो जनता उसकी रक्षा करेगी, सिपाही क्यो दिये जाये—एक बन्दूक दे दी जाये नेताजी का लडका या उसका कोई आदमी रक्षक बन जाये।

चौधरी विजयकुमार जी रिटायर्ड आई०ए०एस० अफसर, उनके बडे व छोटे भाई प्रो० शेरसिंह, विधायक ओमप्रकाश बेरी और श्री सूबेसिंह रिटायर्ड एच० सी० एस० आफिसर द्वारा नशाबन्दी तहरीक चलाकर अपने सच्चे आदर्शों और निष्ठा का सबूत दिया है और एक बहुत उपकारी कदम उठाया है। हरयाणा के समाज को जागृत किया है, महिलाओ को एक नई दिशा दिखलाई है, उनको शराब जैसी सामाजिक बुराई के खिलाफ आवाज उठाने के लिए संगठित किया है। परिणामस्वरूप जगह-जगह पर औरतो ने शराब की दुकानों पर धरना देकर लोगो को झिझोडा है कि वह न तो शराब पिये और न खरीदे। उन्होने धरने लगाये हैं, पुलिस को लाठिया खाई हैं, शराब के ठेकेदारो के गुण्डो का मुकाबला किया है क्या यह छोटी बात है।

नशाबन्दी तहरीक को देखकर प्रत्येक पचायत खाप बडो-बडी सर्वखाप पचायते बुलाकर शराबबन्दी को अपना रही हैं। शराब पीने वालो का बहिष्कार हो रहा है, जुर्माने हो रहे हैं, नियम बनाये जा रहे हैं, 'सर्वहितकारी पत्रिका' सुचारू रूप से अपना कर्त्तव्य निभा रही है।

औरतें ग्रामीण और शहरी समाज का लगभग आधा भाग हैं, उनको शराब के खिलाफ आवाज उठाने के लिए हर मुसीबत का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिये। यदि औरते शराब को अपने घर मे न घुसने दें, अपने घर पर किसी पार्टी या मेहमानो को न पिलाने दे और शराबी घरवालो और शराबी मेहमानो के लिए खाना पकाना और परोसना बन्द कर दे तो कुछ दिन मद लोग उखडे-

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन

आर्यसमाज के और अधिक सक्रिय होने की आवश्यकता

३० सितम्बर तथा १-२ अक्तूबर १९८९ को आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन द्वारा दिल्ली मे एक अखिल भारतीय सम्मेलन आयोजित किया गया था। उसमे सारे देश से लगभग ५०० प्रतिनिधियो ने भाग लिया था। उस समय कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए थे। यह विचार बना था कि आर्य प्रतिनिधि सभाए और सार्वदेशिक सभा इन निश्चयो को कार्यान्वित करे।

इस बीच मैंने उक्त सम्मेलन मे विभिन्न विद्वानो द्वारा प्रस्तुत विचारो को लिपिबद्ध कराया। लिपिबद्ध करके टकित कर लिया। इसका सम्पादन का कार्य भी हो गया। अब उसे प्रकाशित करना है। प्रकाशित करने के लिए किसी सस्था अथवा प्रकाशक की प्रतीक्षा है।

इस बीच देश से आये अनेक विद्वानों ने जो उक्त सम्मेलन मे उपस्थित हुए थे अथवा नही हुए थे, यह कहा कि सम्मेलन का कार्य चलता रहना चाहिए। हमने सोचा कि प्रतिवर्ष आर्यसमाज स्थापना पर्व पर देश भर की आर्यसमाजे पृथक्-पृथक् अथवा सामूहिक रूप से यदि आर्यसमाज के सगठन पर विचार-विमर्श किया करे तो यह कार्य आर्यसमाज के लिए अत्यन्त हितकर होगा। आज व्यक्ति, परिवार, समाज राष्ट्र और यहा तक कि पूरे विश्व के लिए आर्यसमाज के आन्दोलन को, आर्यसमाज के सगठन को और अधिक प्रभावी बनाने की आवश्यकता है।

यह दुख की बात है कि जब आर्यसमाज के सगठन को और अधिक सक्रिय बनाने की बात की जाती है तो कुछ लोगो के मन मे यह भ्रम होने लगता है कि यह कोई समानान्तर सस्था प्रकारान्तर से आर्यसमाज के वर्तमान सगठन की केवल आलोचना करने के लिए है जबकि वास्तविकता यह है कि आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन रचनात्मक भूमिका तथा रचनात्मक कार्यक्रमों पर ही विश्वास करता है।

उक्त विचार के अनुरूप इस वर्ष हमने दिल्ली मे चन्द्र आर्यविद्या मदिर मे २८ मार्च १९९३ को आर्यसमाज स्थापना पर्व के अवसर पर प्रात १० बजे से साय ५ बजे तक एक दिन का सम्मेलन किया। चन्द्र आर्यविद्या मदिर स्वर्गीय श्री देशराज जी चौधरी द्वारा स्थापित एक अद्भुत सस्था है। जिसमे अनाथ और निराश्रित बच्चिया रहती हैं और शिक्षा प्राप्त करती हैं। इस परिसर मे पहुचकर लगता ही नही है कि हम किसी अनाथाश्रम मे हैं। वहा पर रहनेवाली बच्चियो को आधुनिक सभी सुख-सुविधाए प्रदान की गई हैं जो कि पब्लिक स्कूलो के बच्चो को भी उपलब्ध नही हैं। वहा एक भव्य प्राकृतिक चिकित्सालय भी है। आर्य जनता अपनी इस सस्था से परिचित हो इस निमित्त इस सस्था में उक्त कार्यक्रम रखा गया था। इस सस्था के मत्री श्री वीरेश प्रताप चौधरी इस सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष थे। आर्ष ट्रस्ट दिल्ली का भी इसमे सहयोग प्राप्त हुआ।

इस सम्मेलन मे डा० कृष्णलाल, डा० सत्यदेव चौधरी, डा० मधुबाला गुप्त, डा० महेन्द्रप्रताप शास्त्री, श्री मागेराम आर्य, स्वामी उत्तम प्रकाशानन्द, डा० देवेन्द्र आर्य, श्री जगदीश आर्य (महान् कवि), श्री कृष्णचन्द्र आर्य, प्रि० जगदेव, प्रोफेसर जयदेव आर्य आदि अनेक महानुभावो ने भाग लिया। सबने इस बात को एक स्वर मे स्वीकार किया कि आर्यसमाज के सगठन को बहुत अधिक सक्रिय करने की आवश्यकता है। श्री वीरेशप्रताप चौधरी ने यह प्रस्ताव रखा कि चन्द्र आर्य विद्यामदिर के २५ वर्ष पूर्ण होने पर अगस्त मास के अन्त में यहा एक अखिल भारतीय स्तर का विशाल सम्मेलन आयोजित किया जाए जिसमे राष्ट्रीय सदर्भ मे आर्यसमाज की भूमिका पर विचार हो। उसके सारे व्यय की व्यवस्था वे करेंगे।

आर्यसमाज के वर्तमान सगठन की दुर्बलता इस रूप मे अनेक वक्ताओ ने प्रस्तुत की कि दूसरी सस्थाए आर्यसमाज का अनुचित लाभ उठा रही हैं। इसी कारण उसके मचों पर अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग राजनीतिक नेता अपना प्रभाव जमाये रहते हैं। थोडे समय के लिए ऐसा लगता है कि सम्मेलन आर्यसमाज का न होकर कांग्रेस, भारतीय जनता पार्टी अथवा जनता दल का मच है। अनेक आर्यसमाजें भी उन्ही सस्थाओ के नियत्रण मे हैं। वहा आर्यसमाज के कार्यक्रमो के स्थान पर उन दलों के कार्यक्रम होते दिखाई देते हैं। इस प्रसग मे आर्यसमाजो व आर्यसमाज द्वारा सचालित शिक्षा सस्थाओ मे पारस्परिक दलबन्दी व पारस्परिक झगडो पर भी चिन्ता व्यक्त की गयी।

आर्यसमाज शिक्षाप्रणाली मे भारतीयता की पक्षधर रही है। पर स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद आर्यसमाज द्वारा सचालित शिक्षा सस्थाओ मे आधुनिक शिक्षा प्रणाली का प्रभाव घर कर गया है। अग्रेजी भाषा विदेशी वेशभूषा तथा विद्यालयों में आर्यसमाजी सिद्धातो व धर्मशिक्षा का वातावरण न होने के कारण उनका देश मे प्रचलित आधुनिक शिक्षा प्रणाली से कोई अन्तर नही रहा। वहा के बच्चो तथा अध्यापको का न आर्यसमाज के महापुरुषों से परिचय है और न उन्हें आर्यसमाज के सिद्धान्तों की ही कोई जानकारी है। इस विषय मे एक महान् जागृति लाने की आवश्यकता है। सबने अनुभव किया कि आर्यसमाज की शिक्षा सस्थाओ मे भारतीय वातावरण विशेष रूप से भारतीय भाषाओ "सस्कृत और हिन्दी" के वर्चस्व को पुन स्थापित करने पर बल दिया जाए। आर्यसमाज देश को स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व समानान्तर शिक्षा प्रणाली दे सका था, वह अब भी अपनी इस भूमिका का निर्वाह कर सकता है।

कुछ विद्वानो का कहना था कि जो कार्यक्रम आर्यसमाज ने प्रारम्भ किया था वह भारत सरकार स्वय पूरा कर रही है, जैसे विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा बाल विवाह का विरोध आदि। पर अधिकाश वक्ताओ का मत था कि भारत सरकार के प्रयत्न करने पर भी ये समस्याए यथावत् बनी हुई हैं और इस दिशा मे आर्यसमाज को बहुत अधिक प्रयत्न करने की आवश्यकता है। विशेष रूप से विवाहो की तडक भडक व आडम्बर की ओर अनेक वक्ताओ ने ध्यान आकर्षित किया। आर्यसमाज को आन्दोलन चलाकर वैवाहिक सुधारो के कार्यक्रम अपने हाथ मे लेने चाहिए।

देश मे बढते भ्रष्टाचार व व्यभिचार—जैसे मद्यपान की कुप्रवृत्ति पर रोक लगाने के लिए आर्यसमाज को एक महती क्राति करनी चाहिए। यह विचार सभी का था। इस दृष्टि से हरयाणा मे प्रोफेसर शेरसिंह जी की पहल को सभी ने सराहना की। पर अभी तक आर्यसमाज के मद्यनिषेध के लिए जिस महान् आन्दोलन करने की आवश्यता है, वह आरम्भ नही किया जा सका।

यह भी अनुभव किया गया कि स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व आर्यसमाज की राष्ट्रीय समस्याओ के समाधान मे जो महती भूमिका थी, यह अब नहीं रही। आर्यसमाज को राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान के लिए प्रभावी कार्यक्रम अपने हाथ मे लेने होगे इस दृष्टि से आर्य राष्ट्रीय मच द्वारा २१ मार्च १९९३ को दिल्ली में धर्मनिरपेक्षता व भारतीयता विषय पर आयोजित सगोष्ठी को बहुत महत्त्वपूर्ण माना गया। इस सगोष्ठी मे पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह, भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री कृष्णलाल शर्मा, जनता दल के राष्ट्रीय नेता श्री इन्द्रकुमार गुजराल, इन्दिरा कांग्रेस के पूर्व महामन्त्री प्रो० एस० एस० महापात्र, प्रखर पत्रकार डा० वेदप्रताप वैदिक, श्री के० नरेन्द्र ने भाग लिया था। प्राय सभी ने यह अनुभव किया कि भारतीय सविधान मे धर्मनिरपेक्षता की कोई आवश्यता नहीं है। धर्मनिरपेक्षता के स्थान पर सर्व धर्म समभाव शब्द का प्रयोग करना चाहिए। हमारी कसौटी भारतीयता है और भारतीयता धर्म पर आधारित है। यह भी अनुभव किया गया कि आर्यसमाज को आर्य बाहर से आए थे इस मिथ्या प्रवाद का विरोध करना चाहिए और आर्य बाहर से आए थे यह वाक्य इतिहास के पाठ्यक्रमो से निकाल देना चाहिए।

इस सगोष्ठी में सबसे अधिक चिन्ता इस बात पर प्रकट की गयी कि आर्यसमजों के दैनिक व साप्ताहिक सत्सगों मे उपस्थिति कम हो

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आंध्रप्रदेश में नशाबबन्दी सम्मेलन सम्पन्न

अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् की ओर से गत मास ८ अप्रैल को आन्ध्रप्रदेश की राजधानी हैदराबाद मे महिला आन्दोलन की नेता श्रीमती लक्ष्मी कातम्बा की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह जी, पूर्व अध्यक्ष श्रीमती सुशीला नय्यर, श्रीमती प्रभातशोभा विद्यालङ्कृता, श्री सी बी चार्य, ला० हस्थीमल जेन आदि प्रतिनिधि नता सम्मिलित हुए। सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए श्रीमती सुशीला नय्यर ने नशाबन्दी कार्यकर्त्ताओ को कहा कि आन्ध्रप्रदेश की महिलाओ ने नशाबन्दी का आन्दोलन चलाकर अन्य प्रदेशो को सन्मार्ग दिखाया है। महिलाओ ने सगठित होकर शराब के ठेको की नीलामी नही होने दी। इसका तेलगूदेशम दल ने राजनैतिक लाभ उठाने का यत्न किया और सरकार से नशाबन्दी करने की माग की। परन्तु जब तेलगूदेशम दल सत्ता मे थी, उस समय तुलगूदेशम ने नशाबन्दी करने की बात तक नही की। श्रीमती नय्यर ने इस अवसरवादिता की भर्त्सना की। कार्यकर्त्ताओ से इस प्रकार के नेताओ से सावधान रहने को कहा।

प्रो० शेरसिंह जी ने इस अवसर पर नशाबन्दी प्रतिनिधियो को सम्बोधित करते हुए कहा कि वास्तव मे स्वार्थी तथा अवसरवादी तत्त्व इस ताक मे रहते हैं कि कब धन तथा नाम कमाने का अवसर मिले। वे कुछ रचनात्मक कार्य करना नही चाहते परन्तु अपनी चिकनी चुपडी बातो से भोलीभाली जनता को लूटते रहते हैं। वास्तविकता सामने आने पर उनसे जनता का विश्वास समाप्त हो जाता है और उनकी ईमानदारी पर प्रश्नचिह्न लग जाता है। आपने श्रीमती सुशीला नय्यर जी के कथन का समर्थन करते हुए बताया कि आर्य प्रतिनिधि-सभा हरयाणा गत ६-७ वर्ष से नशाबन्दी का निरन्तर प्रचार कर रही है। प्रतिवर्ष ग्राम पचायतो से प्रस्ताव करवाये है तथा शराब के ठेको की नीलामी के अवसर पर विरोध प्रदर्शन आयोजित किये हैं। उच्चतम न्यायालय मे शराबबन्दी हेतु एक याचिका दायर की है। ५० हजार रु० का शराबबन्दी साहित्य तथा पोस्टर छपवाकर हरयाणा के कोने-कोने में मुफ्त वितरित किए गये हैं। महम से नईदिल्ली तक शराब बन्दी यात्रा करके राष्ट्रपति को ज्ञापन दिया गया। गत वर्ष हरयाणा के प्रत्येक जिले से साढे पाँच सौ से अधिक ग्राम पचायतो से शराबबन्दी के नियमपूर्वक प्रस्ताव करवाकर हरयाणा सभा ने सरकार को भिजवाये। इनके आधार पर सरकार ने २० के लगभग प्रस्तावो को रद्द करके स्वीकार करते हुए उन ग्रामो मे ठेको की नीलामी नही की। परन्तु अन्य नये ग्रामो मे ठेके खोल दिये। आर्यजगत् के त्यागी, तपस्वी सन्यासी स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने शराबबन्दी सत्याग्रह की तैयारी के लिए हरयाणा के ग्रामो से ११-११ सत्याग्रही तथा ११००-११०० सत्याग्रह के लिए दान की अपील की। परन्तु अवसरवादी साधुवेश-धारियो ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए ग्रामो मे झोली फैलाकर धनसग्रह करना आरम्भ कर दिया। आज तक इन्होने दान का हिसाब हरयाणा सभा की भान्ति कभी भी आडिट करवाकर प्रकाशित नही करवाया। आर्य जनता को भ्रम मे डालने के लिए भारतीय आर्य-प्रतिनिधि सभा का नाम लेने लगे हैं और भारत के अन्य प्रदेशो मे शराबबन्दी का कार्य न करके हरयाणा मे ही धनसग्रह करके तथा समाचारपत्रों मे झूठ ब्यान छपवा रहे हैं। स्वामी अग्निवेश तथा स्वामी आदित्यवेश हरयाणा से बाहर के हैं। उनका अपने जन्मस्थानो मे प्रभाव होना चाहिए। अत उन्हे वास्तव मे शराबबन्दी का प्रचार-प्रसार करना है तो हरयाणा के अतिरिक्त अन्य प्रदेशो मे कार्य करना चाहिए जिससे इनका भारतीय रूप बन सके। हम शराबबन्दी कार्य में सभी का सहयोग चाहते हैं, परन्तु जो राजनैतिक दल केवल शराब-बन्दी लहर का लाभ उठाने की ताक मे हैं, उनसे जनता को सावधान रहना चाहिए। अन्य नेताओ ने सारे भारत वर्ष मे शराबबन्दी लागू करने पर अपने विचार रखे।

झज्जर उपमण्डल के सभी पंच, सरपंच एवं लम्बरदारों से अपील

मान्यवर,

आठवीं, दसवी व जमा दो की परीक्षाओ मे नकल रोकने मे पुलिस प्रशासन व शिक्षा विभाग के सदस्यो को आपने भरपूर सहयोग दिया। एक बहुत सराहनीय प्रयास के लिए आप बधाई के पात्र हैं। मेरे विचार से प्रजातन्त्र मे जनसाधारण व उनके प्रतिनिधियो का सक्रिय सहयोग राज्य शासन की जनहित की सभी नीतियो को क्रियान्वित करने के लिए अत्यन्त आवश्यक है। अत कोई भी योजना तब तक पूरी तरह लाभ-दायक नही हो सकती जब तक आपका पूर्ण सहयोग उसे प्राप्त ना हो।

नकल रोकने में जहा आपने भरपूर सहयोग दिया वहा कुछ सज्जनो ने बताया कि विज्ञान, गणित व अग्रेजी भाषा मे हमारे इस क्षेत्र के छात्र विशेषकर कमजोर इसलिए रह जाते है कि अनेक स्कूलो मे इन विषयो के अध्यापक नही तथा कुछ स्कूलो मे शिक्षको द्वारा अपेक्षित मेहनत नही करवाई गई। आप से कुछ विचार-विमर्श के बाद मैंने यह निर्णय लिया है कि उप-तहसील/खण्ड स्तर पर २६ अप्रैल से जमा दो व दसवी के छात्रो की इन विषयो (विज्ञान, गणित व अग्रेजी) की कक्षाए लगाई जाए और यह सुनिश्चित किया जाये कि हमारे क्षेत्र मे सभी स्कूलो मे पढाई सुचारु रूप से चले। जो छात्र जमा दो व दसवी परीक्षा दे चुके हैं वे भी इन कक्षाओ मे शामिल हो सकते हैं। अगले सत्र के आरम्भ से ही स्कूलो मे आठवी, दसवी तथा जमा दो की कक्षाओ मे अग्रेजी व हिन्दी भाषाओ को सिखाने पर भी विशेष बल दिया जायेगा।

आपसे अनुरोध है कि आप अपने क्षेत्र के उन सभी बच्चो को इन विशेष कक्षाओ मे भेजने के लिए प्रोत्साहित कर। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि हमारे सभी राजकीय विद्यालय आपको बहुत अच्छी सेवा देंगे और इसलिए आप कृपया अधिक से अधिक सख्या मे बच्चो को सरकारी स्कूलो मे ही भर्ती करवाए। कृपया समय-समय पर स्कूलो के अध्यक्षो से भी शिक्षा का स्तर सुधारने बारे सम्पर्क रखे, विचार-विमर्श करते रहे। आरम्भ मे ये विशेष कक्षाए मातनहेल व बेरी के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयो मे भी चलाई जायेगी और ग्रीष्म अवकाश के पश्चात् अन्य सभी विद्यालयो मे भी विशेष ध्यान दिया जाएगा।

कृपया आप अपने गाव के सभी मा-बाप को यह भी समझाए कि उनके बच्चे बहुत अच्छे है, उनमे आगे बढने की क्षमता है अत उन्हे और अच्छा बनने मे प्रोत्साहित करे। बच्चो को कभी भी कमजोर बाते न कहे। बच्चो को यह भी समझाए कि वे परिश्रम करके बहुत अच्छे अंक ले पाएगे। प्रशासन इस पुण्य कार्य के लिए आपसे पूरे सह-योग की अपेक्षा रखता है। मुझे विश्वास है कि हम सब मिलकर आने वाली पीढी को एक बहुत सुन्दर भविष्य देकर एक मजबूत राज्य एव महान् राष्ट्र का निर्माण कर पायेगे।

निवेदक
फतेहसिंह डागर
(उप-मण्डलाधिकारी [ना])
झज्जर

प्रो० शेरसिंह को मातृशोक

प्रो० शेरसिंह जी श्री विजयकुमार जी, श्री ओमप्रकाश जी बेरी विधायक तथा श्री राजेन्द्रकुमार जी की माता जी श्रीमती पातोदेवी जी का २ मई ९३ को दोपहर ८६ वर्ष की आयु मे स्वर्गवास होगया। उनकी अन्त्येष्टि ग्राम बाघपुर जिला रोहतक मे वैदिक रीति के अनुसार की गई। इस अवसर पर अन्य गणमान्य व्यक्तियो के अतिरिक्त श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती भी सम्मिलित हुए। दिनाक ९ मई को प्रात ९ बजे ग्राम बाघपुर निकट बेरी मे शान्ति यज्ञ तथा शोकसभा होगी।

शराबबन्दी अभियान का समर्थन करने की अपील

रोहतक २ मई (ह सं)। आर्यसमाज के वयोवृद्ध सन्यासी स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने विधायक ओमप्रकाश बेरी की सराहना करते हुए प्रदेश के अन्य विधायको से अपील की है कि वे भी शराब बन्दी अभियान का श्री बेरी के समान अनुसरण करे।

स्वामी ओमानन्द ने कहा कि श्री बेरी ने कांग्रेस का विधायक होने के बावजूद जिस तरह हरयाणा सरकार की शराब नीति का विरोध कर शराबबन्दी अभियान का समर्थन किया वह एक स्वच्छ राजनीति का ऐतिहासिक पहलू है। इस अभियान का समर्थन करने के फलस्वरूप उन्हें कांग्रेस विधायक दल से निष्कासित तक कर दिया गया।

उन्होंने कहा कि जनता की भलाई के लिए श्री बेरी ने समय पर उचित कदम उठाया। इससे हरयाणा की जनता को प्रेरणा मिली और यही प्रेरणा अब सभी विधायको चाहे वे किसी भी दल के हों को राज्य में शराबबन्दी लागू कराने के लिए आगे आना चाहिए।

वयोवृद्ध संन्यासी ने हरयाणा शराबबन्दी समिति व उसके सयोजक श्री विजयकुमार चौधरी की भी प्रशसा करते हुए कहा कि श्री चौधरी ने उपायुक्त पद को ठोकर मार दी और हरयाणा शराब बन्दी समिति के तत्वावधान मे शराबबन्दी के लिए दिन रात सघर्ष कर इस आन्दोलन मे नई जान डाल दी है। उन्होंने कहा कि वैसे तो हरयाणा मे १९५२ से शराबबन्दी आन्दोलन जारी है, पर पिछले कुछ दिनो मे इसमे अत्यधिक तेजी आई है, क्यो कि अब प्रदेश की जनता जाग चुकी है।

उन्होंने भजनलाल सरकार को चेतावनी दी है कि वह जनता की माग को देखते हुए राज्य मे पूर्णतया मद्य निषेध लागू करे अन्यथा जनता उनका हाल नवाब हैदराबाद व नवाब लोहारु जैसा कर देगी।

हिन्दुस्तान ३।५।९३

शराब के ठेको पर धरनों की गतिविधियां

दिनाक २५-४-९३ को बालसमन्द जिला हिसार मे चौ० विजय कुमार सयोजक शराबबन्दी समिति हरयाणा तीसरी बार धरने पर पहुचे। तत्पश्चात् सभा उपदेशक श्री अतरसिह उर्फ क्रातिकारी जी के साथ अन्य धरनो पर पहुचे। रास्ते मे गाव मायड मे ठेका बन्द होने पर मकान पर शराब का ठेका लिखा हुआ था। लोगो से उस पर पुताई करने को कहा। हासी व उमरा होते हुए रोहनात(भिवानी)मे धरने पर पहुचे। चौ० विजयकुमार जी का परिवार भी साथ था। १७-४-९३ को ठेके का ताला बन्द था। श्री पृथ्वीसिह, जयकरण, राजेराम, रामस्वरूप, रणसिह आदि बुजुर्ग धूप मे दो तखतों के नीचे बैठे थे। धरने पर एक कीकर की छाया थी। शराबियो ने उसे काट दिया।

सरपच ओमप्रकाश का सहयोग नही है। सरपच ठेका रखने के हक मे है। सरपच के भतीजे रघुबीर ने धरने पर बैठे चान्दीराम को पीटा भी। बाद मे कीकर काटनेवाले शराबी पर २०० रु० जुर्माना भी किया। महिलाओ का सहयोग भी मिल रहा है। श्रीमती शातिदेवी, छनोदेवी महिलाओं का नेतृत्व कर रही हैं। साय ५ बजे रतेवा नलवा खानक होते हुए तोशाम धरने पर पहुचे। वहा शराबबन्दी पोस्टर दिये तथा आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा शराबबन्दी गतिविधियों की सभा की ओर से पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। धरने पर ११ गाव के दो-दो आदमी प्रतिदिन, दिन-रात धरने पर बैठे हुए हैं।

श्री प्रतापसिह प्रधान शराबबन्दी समिति तोशाम धरने का नेतृत्व कर रहे हैं। मनफूल पूर्व हैडमास्टर (नया गाव), मुन्शीराम (सागवान)

(शेष पृष्ठ ६ पर)

यदि आप हरयाणा मे पूर्ण शराबबन्दी लागू करवाना चाहते हैं तो अपने क्षेत्र के निकट के शराब के ठेको पर चल रहे धरणो मे सम्मिलित होवें।

श्री वीरेन्द्र की मनोव्यथा

—डा० सोमवीरसिंह सभा उपमंत्री

श्री वीरेन्द्र ने आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के २५-४-९३ व १-५-९३ के साप्ताहिक 'आर्य मर्यादा' में निर्मर्यादित ढंग से विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह को १३, १४ अप्रैल की घटनाओं के लिए गुरुकुल परिवार का चिराग बताकर उनको ही घर को जलानेवाला कहकर कुलाधिपति और उनके सहयोगियों को बदनाम करने का बड़ा ही लज्जाजनक प्रयास किया। जब श्री वीरेन्द्रसिंह के पास कोई ठोस आधार नहीं होता तो वे जातिवाद और समुदायवाद का पल्ला ओढने में जरा सा भी संकोच नहीं करते। उनके लेख में एक ही बात विरोधाभास के साथ उनके मानसिक सतुलन को भी प्रदर्शित करती है। श्री वीरेन्द्र कही हुई बात से मुकरने में पूरे माहिर हैं। इसी प्रवृत्ति को 'थूककर चाटना' कहा जाता है।

आचार्य प्रियव्रत, श्री सुभाष विद्यालंकार और आचार्या दमयन्ती कपूर द्वारा किए गए अवांछनीय एवं निन्दनीय आचरण से उत्पन्न स्थिति से निपटने के लिए संस्था हित में कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह ने अपने सहयोगियों से विचार-विमर्श करके जो उचित व सामयिक कार्यवाही की, उसे श्री वीरेन्द्र 'अपमान' की सज्ञा दें, यह उनको भले ही अनुकूल पड़ता हो लेकिन वे जिन पदों पर रहे हैं उनकी गरिमा के अनुकूल बिल्कुल भी नहीं है। श्री वीरेन्द्र द्वारा अपने सम्पादकीय में उठाए गए सवालों का जवाब देने से पहले मैं एक प्रश्न उन्हीं से करना चाहूंगा कि यदि वे स्वयं कुलाधिपति होते और उनको अंधेरे में रखकर उनके अधीन कार्य करानेवाला कोई कुलपति अपने हित के लिए श्री सुभाष की तरह षड्यन्त्र रचकर अपने चयन के लिए ऐसी ही कार्यवाही करता और उस धोखेधड़ी की कार्यवाही में परिद्रष्टा और उनका प्रतिनिधि भी शामिल होता तो वे क्या करते? अगर श्री वीरेन्द्र इस प्रश्न का यह उत्तर दें कि 'मैं उनके खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं करता' तो मेरे लिए यह अत्यन्त आश्चर्यजनक बात होगी—क्योंकि स्वयं षड्यंत्रों में जीनेवाला दूसरे के षड्यन्त्रों को कैसे सहन कर सकता है। इस तरह के षड्यन्त्र को अनदेखा करना भी अपने उत्तरदायित्व से भागना है। इसलिए जहां उत्तरदायित्व निभाने की बात होती है—वहां पर मान-अपमान गौण हो जाते हैं। जो कुछ भी इन तीनों के साथ किया गया वह सब कुछ इन तीनों द्वारा शुरू की गई कार्यवाही से निपटने के लिए किया गया।

अगर कुलाधिपति की ओर से यह सामयिक कार्यवाही न की जाती तो विख्यात पत्रकार श्री वीरेन्द्र यह लिखने से भी नहीं चूकते कि कुलाधिपति की परवाह किए बिना ही श्री सुभाष फिर कुलपति बन गए। ऐसी स्थिति में उत्तरदायित्व न निभाने का लाछन लगाकर वे कुलाधिपति से त्यागपत्र की मांग करते। इन सारी अबकी घटनाओं को लेकर श्री वीरेन्द्र ने घर को जलाने की बात कह दी। कार्यवाही न होती तो घर बरबाद होने की बात के साथ-साथ यह भी कह देते कि मैं जब कुलाधिपति होता था तो सब कुछ ठीक-ठाक था—अब के कुलाधिपति को यही नहीं मालूम कि उनकी नाक के नीचे क्या हो रहा है? इसलिए उनको इस पद से त्यागपत्र दे देना चाहिए। जो लिखा गया है और लिखा जाना था, उससे स्पष्ट है कि श्री वीरेन्द्र को किसी के अपमान की इतनी चिन्ता नहीं है, जितनी चिन्ता कुलाधिपति की कुर्सी हथियाने की है। जब उनको यह आभास होता है कि वे कभी भी आगे कुलाधिपति नहीं बन सकते तो इस विश्वविद्यालय को सरकार या यू जी सी को सौंपने की भी बात लिख देते हैं।

आचार्य प्रियव्रत, श्री सुभाष और आचार्या दमयन्ती कपूर के साथ श्री वीरेन्द्र का कैसा सम्मानजनक व्यवहार रहा है—यह लिखना भी बड़ा जरूरी है। आचार्य प्रियव्रत के बारे में वेदों का प्रकाण्ड विद्वान् व गुरुकुल का स्नातक होने को अगर किसी को भ्रांति रही है तो श्री वीरेन्द्र ही हैं। इस शताब्दी के सातवें दशक में जब आचार्य प्रियव्रत को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का कुलपति बनाया गया तो उनको विश्वविद्यालय को नाश करनेवाला बताकर गुरुकुल के ही कुछ स्नातकों के साथ मिलकर उनको कुलपति पद से हटाने की असफल व निन्दनीय कोशिश की गई। अपने समाचार-पत्र में उनके खिलाफ पता नहीं क्या क्या लिखा गया। आचार्य जी की जन्मतिथि का झूठा बवडर उठाया गया। अप्रैल, ८७ की शिष्ट परिषद् की बैठक में जब आचार्य प्रियव्रत के नाम का परिद्रष्टा के रूप में प्रो० शेरसिंह ने प्रस्ताव रखा और प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार ने समर्थन किया तो हमारे द्वारा सम्मानित किए जानेवाले वैदिक विद्वान् के मुकाबिले सोमनाथ मरवाहा (जिन्हें बाद में अपदस्थ करके आचार्य प्रियव्रत को ही परिद्रष्टा वर्तमान कुलाधिपति ने ही बनवाया था) का नाम परिद्रष्टा के रूप में प्रस्तुत करनेवाले श्री वीरेन्द्र ही थे। अभी हाल ही में आचार्य प्रियव्रत ने गुरुकुल की भूमि को बेचने के लिए श्री वीरेन्द्र को दोषी मानते हुए पत्र लिखा था कि गुरुकुल की भूमि बेचना गलत है। यह परम्परा बन्द होनी चाहिए। जो पैसा लिया है उसे गुरुकुल में जमा करवाया जाना चाहिए। इस पत्र के उत्तर में श्री वीरेन्द्र ने आचार्य प्रियव्रत को जो कुछ लिखा और उसे अपने साप्ताहिक 'आर्य मर्यादा' में भी छापा, उसके बारे में टिप्पणी करने की आवश्यकता नहीं है। वह पत्रोत्तर अपने आप में स्पष्ट है कि श्री वीरेन्द्र आचार्य प्रियव्रत का कितना मान करते हैं। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि आचार्य प्रियव्रत का जितना मान हरयाणावासियों ने किया है—उतना किसी ने नहीं किया है। पंजाबवालों ने तो बिल्कुल नहीं किया है।

पिछले १५-२० साल के अन्तराल में अगर आचार्य प्रियव्रत का उनके निवास स्थान पर जाकर हाल-चाल किसी ने पूछा है तो वे हरयाणा और दिल्ली वाले ही थे। पंजाब वालों ने तो केवल मगरमच्छी आंसू बहाने का नाटक अभी रचा है, जो आकाश गंगा की तरह देखते-देखते नष्ट होने वाला है। आचार्य प्रियव्रत के अपमान के ढोल पीटने वाले श्री वीरेन्द्र इन तथ्यों को असत्य सिद्ध कर सकेंगे। एक प्रश्न और उनके समक्ष प्रस्तुत है जिसका वे उत्तर देने की सामर्थ्य नहीं रखते हैं। गुरुकुल के दीक्षान्त समारोह के अवसर पर क्या आज तक कोई भी परिद्रष्टा इस प्रकार भूमिगत किया गया था जैसा कि अब की बार हुआ। क्या इसमें भी श्री वीरेन्द्र का आशीर्वाद षड्यन्त्रकारियों को प्राप्त था? अगर नहीं तो इस अधम काण्ड की निन्दा करने में उनकी लेखनी कुण्ठित क्यों हो गई? वे तो एक पत्रकार पिता के पत्रकार पुत्र हैं। खानदानी परम्परा का तो मान करना चाहिए था। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि वे सामयिक समस्याओं व परिस्थितियों से लाभ उठानेवाले पिता के चरणचिन्हों पर चलनेवाले सही उत्तराधिकारी पुत्र हैं—पूर्व और अपर कथन के विरोध की परवाह किये बिना श्री वीरेन्द्र अपशब्द कथन को ही गायत्रीमन्त्र मान बैठे हैं। जहां तक आचार्य प्रियव्रत को परिद्रष्टा पद से हटाने की बात है वह सरासर गलत व गुमराह करनेवाली है। आचार्य जी की अवधि परिद्रष्टा के रूप में १६-४-९३ को समाप्त हुई है और नए परिद्रष्टा ने अपना कार्यभार १७-४-९३ को संभाला है।

श्री सुभाष विद्यालंकार को जब वर्तमान कुलाधिपति ने कुलपति बनवाया और श्री विद्यालंकार ने ५-४-९० को कार्यभार संभाला तो श्री वीरेन्द्र ने यू जी सी के चेयरमैन को पत्र लिखा कि हरयाणा और दिल्ली कुछ व्यक्तियों ने विश्वविद्यालय का नाश करने के लिए श्री सुभाष को कुलपति बना दिया है। उनको कुलपति के रूप में स्वीकृति न दी जावे। लेकिन प्रो० शेरसिंह के प्रयत्नों से स्वीकृति मिल गई तो श्री वीरेन्द्र हताश हो गये। फिर कोर्ट केस किये तो भी असफल रहे। लेकिन गुप-चुप श्री सुभाष से समझौता करके श्री वीरेन्द्र अरोड़ा को पुनः अयोग्य होते हुए भी कुलसचिव बनाने में सफल होगये—लेकिन ६-१-९१ की शिष्ट-परिषद् की बैठक में कुलसचिव की नियुक्ति के बारे में प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार ने अपने लम्बे बयान में कुलपति पर तर्कपूर्ण आरोप लगाए और उसका परिणाम यह हुआ कि श्री अरोड़ा की नियुक्ति के बारे में जांच व निर्णय के अधिकार कुलाधिपति को दे दिये गये, जिसके तहत श्री अरोड़ा को बाद में इस पद से पृथक् होना पड़ा। इस अवसर का लाभ उठाकर श्री वीरेन्द्र ने पुण्यभूमि के पुनरुद्धार के बहाने श्री सुभाष के नजदीक आने की प्रक्रिया शुरू की। लेकिन किन्हीं कारणों से वे सफल नहीं हो सके और बाद में अपनी

सभा के महामन्त्री श्री अश्विनीकुमार के माध्यम से आरोप लगाये कि पंजाब ने श्री सुभाष को दस लाख रुपये दिये थे और श्री सुभाष ने उस राशि के व्यय का कोई विवरण नहीं दिया। श्री अश्विनीकुमार ने भरी सभा में श्री सुभाष को बेईमान तक भी कहा और उस कथन को अखबार में भी छपवा दिया। यदि श्री सुभाष ने बेईमानी की तो उनके अपमान से वे बेचैन क्यों हैं? यदि नहीं की थी तो अपने महामन्त्री से अपमान करने का कारण क्यों नहीं पूछा? क्या इसलिए कि ये दोनों विधियां आपके अनुकूल नहीं थीं।

जब श्री सुभाष ने श्री अरोडा को गलत तथ्य प्रस्तुत करके कुलसचिव बनवाया और उसके बाद अधिकारियों से बिना सलाह किए पंजाब सभा से पैसा लिया तो वर्तमान अधिकारी श्री सुभाष के चयन पर पछता रहे थे कि अविश्वसनीय व्यक्ति को विश्वास के योग्य समझा। बीच में भी अनेक बार श्री सुभाष ने असत्य का सहारा लेकर आपसी मतभेद पैदा करने की कोशिश की। इनके खिलाफ अनेक आर्थिक अपराधों के आरोप लगने लगे—जिनमें सच्चाई भी थी। अधिकतर दिल्ली आकर अपने घर रहते और एक दिन के काम के बदले दस-दस दिन का दैनिक भत्ता लेते। शिष्ट-परिषद् और शिष्ट-पटल की बैठक यह कहकर नहीं बुलाते कि पैसा नहीं है और समाचार पत्रों में विज्ञापन के नाम पर ६० हजार रुपये तक व्यय करवा देते। गुरुकुल के लगभग डेढ लाख के पेड बिना उचित विधि अपनाए मात्र ८० हजार रु० में बेच डाले। सामान स्वयं दिल्ली अम्बाला और जालन्धर से खरीदने जाते। बिना स्वीकृति के कर्मचारी लगाने व हटाने शुरू कर दिये। गुरुकुल में सहशिक्षा शुरू कर दी। नियुक्तियों में अपनी जाति को भी प्राथमिकता देने लगे। कर्मचारियों, विद्यार्थियों व अधिकारियों के सामने एक ही बात को अलग अलग रूप में प्रकट करते। ऐसी अवस्था में भी अपने कुछ साथियों का विरोध सहन करके प्रो० शेरसिंह ने श्री सुभाष को ४-५-९३ तक निभाने का मन बनाया। किन्तु श्री सुभाष ने जिस धोखाधडी का परिचय अप्रैल के शुरू में दिया वह एक "अति" थी। पहले तो कुलाधिपति को इस बात के लिए तैयार करने का प्रयत्न किया गया कि उनकी अगली अवधि का फैसला १२-४-९३ से पहले कर दें—फिर विजिटर का चुनाव करके नया विजिटर बना लें।

स्वार्थ भी क्या चीज होती है कि श्री सुभाष जिन आचार्य प्रियव्रत की कलम से १२-४-९३ को कुलपति बनना चाहते हैं १४-४-९३ को उनके स्थान पर नया विजिटर भी लाने के लिए तैयार हो जाते हैं। क्या यही सिद्धान्त आर्य सिद्धान्त हो सकते हैं। इतना स्वार्थपरक कोई गुरुकुल का कोई स्नातक नहीं हो सकता। इससे भी आगे जाकर आचार्य प्रियव्रत का ९-४-९३ को ही अपहरण करवाकर देहरादून में गुप्त स्थान पर रखवा दिया। क्या परिद्रष्टा को इस प्रकार छुपाना किसी कुलपति को शोभा देता है? श्री सुभाष के स्वार्थ की पराकाष्ठा, आर्थिक अनियमितताओं, स्वेच्छाचारिता, पक्षपात और धोखाधडी के कारण ही कुलाधिपति ने ११-४-९३ को प्रात तार द्वारा श्री सुभाष को कुलपति पद से निलम्बित किया था यदि यह सामयिक कार्यवाही न होती तो ऐसे व्यक्ति को शायद फिर कभी सबक न मिलता और गुरुकुल का वातावरण और बिगड जाता तथा श्री वीरेन्द्र की लेखनी की भुजाएं फिर फडक उठती जो अनाप शनाप लिखकर अपनी भडास निकाल रही है। श्री सुभाष ने एक नापाक कोशिश अपने बचाव के लिए की थी। १४-४-९३ को शिष्ट-परिषद् की बैठक होनी थी जो कुलाधिपति के आदेश से बुलाई गई थी और उन्हीं के आदेश से स्थगित की जा सकती है। लेकिन निलम्बित कुलपति ने बैठक रद्द करने के तार दे दिये जो उनके अधिकार क्षेत्र से बाहर की बात है। बाद में सभी सदस्यों को फिर नये कुलसचिव द्वारा तार भेजे गये कि बैठक पूर्ववत् १४-४-९३ को ही होगी। यहां पर फिर वही प्रश्न है कि यदि श्री वीरेन्द्र प्रो० शेरसिंह के स्थान पर होते तो वे क्या करते? क्या अपने उत्तरदायित्व से भाग जाते? नहीं वे इससे भी बुरा करते क्योंकि उन्होंने पिता श्री से बहुत कुछ सीख रखा है—और वे उस सीख का अवश्य फायदा उठाते।

जहां तक आचार्या दमयन्ती कपूर का वास्ता है इसमें कोई दो राय नहीं हैं कि वे आचार्य रामदेव की पुत्री हैं और बीस पच्चीस वर्ष से कन्या गुरुकुल देहरादून की आचार्या रही हैं। आचार्य जी और उनकी पुत्रियों की भूतकाल की सेवा का यदि किसी ने सही मूल्यांकन किया है तो वह वर्तमान आर्य विद्यासभा और उसके अधिकारी हैं और जिसने नहीं किया है वे श्री वीरेन्द्र ही हैं। जब श्री वीरेन्द्र कुलाधिपति थे तो कार्य परिषद् में यह प्रस्ताव पारित हुआ था कि श्रीमती दमयन्ती कपूर को आचार्या पद से पृथक् किया जाता है और महाविद्यालय में उनके प्रवेश पर पाबन्दी लगाई जाती है। यह बात सन् ८७ की है। आज वे किस मुंह से उनका मान करने की बात कहते हैं। उस अवस्था में भी आचार्या दमयन्ती कपूर का दुःख हरयाणा और दिल्ली वालों ने ही समझा। श्री वीरेन्द्र ने प्रधान रहते हुए जो काम उनके बार-बार कहने पर कभी नहीं किया श्री वीरेन्द्र के शब्दों में तथाकथित विद्या-सभा के अधिकारियों ने किया और आचार्या दमयन्ती कपूर की सेवाओं को ध्यान में रखते हुए उनके वेतन में ८० प्रतिशत वृद्धि बिना मांग किए की और इसी सभा ने एक लाख रुपये अभी इसी साल के शुरू में दिये जबकि श्री वीरेन्द्र के ढाई लाख वचन वाले पत्थर पर अभी भी धूल जमी हुई है। जिसे आचार्या दमयन्ती कपूर आने-जाने वालों को यह कर दिखाती हैं कि भाई जी ने पैसे देने का वचन दिया था—लेकिन अब मना कर रहे हैं। अब श्री वीरेन्द्र स्वयं बताए कि आचार्या दमयन्ती का अपमान करने वाला कौन है? बहिन के पैसे की हां करके न देने वाला किस कोटि का कहा जा सकता है।

श्री वीरेन्द्र जब आर्य विद्या सभा के प्रधान थे तब कन्या गुरुकुल की फार्मेसी से केवल १,८००००/-रु० की सालाना सहायता मिलती थी। वर्तमान अधिकारियों ने इस सहायता को बढाकर ३,६०,०००/-रु० सालाना कर दिया है। इसे परिभाषित करने का काम भी उन्हीं को सौंपना ठीक है। यहां पर सही बात का अगर उल्लेख न किया जावे तो आचार्या जी के अपमान की बात फिर उठ खडी होगी। गुरुकुल के प्रसिद्ध स्नातक आचार्य रामदेव की पुत्री दमयन्ती कपूर ने श्री सुभाष के झांसे में आकर जो भूमिका परिद्रष्टा की प्रतिनिधि के रूप में निभाई वह एकदम संगठन की मूल भावनाओं के खिलाफ व धोखाधडी की थी, जिसको किसी भी रूप में पवित्र भूमिका नहीं कहा जा सकता। जब वे स्वयं ऐसा काम करें तो उनके पद व व्यक्तित्व के अनुकूल नहीं है तो इस संस्थाहित में उचित व सामयिक कार्यवाही करने वालों का क्या दोष है? बहन जी ने कन्या गुरुकुल के परिसर को समाप्त करने का बीडा उठा रखा था और उसे हरिद्वार ले जाने के लिए अध्यापिकाओं को ३१ जुलाई ९३ से सेवा से पृथक् करने के नोटिस भी दिलवा चुकी थीं। जनसत्ता ने इस कदम की आलोचना करते हुए उन पर और श्री सुभाष पर कन्या गुरुकुल की सम्पत्ति बेचने की आशंका जाहिर की है। उनकी इस खबर का स्रोत वही जानते होंगे। परन्तु यह तो स्पष्ट है कि उनकी नीयत ठीक नहीं थी और वह अपने पिता की बनाई हुई संस्था को उजाडने में लग गई थी।

गलत व्यवहार को गलत कहना कोई अपराध तो नहीं है। मेरा विचार है कि इन तथ्यों को पढकर श्री वीरेन्द्र अवश्य आत्मविश्लेषण करेंगे और पाएंगे कि इन तीनों के साथ कोई गलत व्यवहार नहीं किया गया है। जो कुछ हुआ वह नियमानुसार हुआ है और इनके व्यवहार के आधार पर ही हुआ है। इन तीनों का यदि किसी ने सम्मान किया है तो वे हरयाणा व दिल्ली के वर्तमान अधिकारी ही हैं और यदि किसी ने अपमान किया है या आगे करेंगे तो श्री वीरेन्द्र व उनके साथी ही होंगे। क्योंकि स्वामी श्रद्धानन्द के प्रति जो सम्मान महाशय कृष्ण ने दिखाया था वह सारा आर्य जगत् जानता है और बपौती को बरकरार रखना हर सपूत का परमधर्म है।

(पृष्ठ ४ का शेष)

रिसालसिंह (खरवाडी), भूपसिंह सरपंच नयागांव, घोरासिंह, मंगलसिंह खरैंटा, देवीलाल, गुलाबसिंह (बागनवाला) आदि धरने पर बैठे थे। १९-४-९३ को ठेकेदार ने धरने का आसमाना व घाघरी फूंक दी। धरने पर बैठे लोगों से मार पिटाई की। दूसरी तरफ ओमकुमार बिश्नोई ठेके का पार्टनर था, सिवानी रोड पर जीप से दुर्घटनाग्रस्त होकर मर गया। ठेकेदारों ने पुलिस की मिली भगत से धरनेवालों के सिर मढने की कोशिश की। लेकिन ईश्वर कृपा धरनेवालों के धैर्य से ठेकेदार की दाल नहीं गली। धरना शांतिपूर्वक जारी है।

शराबबन्दी समिति तोशाम

"शराबी और ओ३म्"

शराबी शराब पीकर इठलाता है, और कीचड मे गिर जाता है।
आते-जाते उसे गाली दे, वह फिर भी उठने की कोशिश मे
ओ३म् के नाम गाता है।
क्या देखते हैं कि इतनी देर मे उसका एक साथी कुत्ता आता है,
वह कुछ बोले इससे पहले ही वह उसके मुख को चाटने लग जाता है।
वह शराबी उसे बाहो मे भरकर कहता है, कि तुम मेरी प्रीतम प्यारी हो।
तुमने आकर मुझे सम्भाल लिया, यह उस ओ३म् की कृपा है।
जब मैं घर पर जाता था, तुमने झाडू और जूतो से मुझे पूजा था।
शराबी का जब नशा दूर हुआ, छोड कुत्ते को दूर हुआ।
और कहे ओ३म् से आप अबकी बार मुझे बचा लो मैं आपका ही सेवक हुआ।
अब कभी न शराब पिऊगा, न उसे कभी छुऊगा॥
वह शराबी फिर दूसरे दिन एक दोस्त शराबी के यहा जा पहुचा,
वह शराबी फिर पिछले दिन का ओ३म् से किया हुआ वादा भूल गया।
दोस्त शराबी के साथ मिलकर, फिर शराब पी गया।
दोनो चले वहां से झूमते, क्या देखते हैं आगे।
लडकों और बच्चो का झुण्ड सामने पाया, यह ओ३म् की निराली माया।
वे दोनो उन्हे पूछते हैं, यहा क्या है आडम्बर रचाया।
वे दोनों शराबियों को बोले, हम भी प० लक्ष्मीचन्द जाटी के
लडके का रस गान है रचाया।
इसलिए यह तख्त बिछाया, और ऊपर तम्बू लगाया।
वे दोनो शराबी आपस मे बोले, हम भी पण्डित जी का
रस सगीत पान करेंगे।
जब तक समय सगीत का हो, हम इस तख्त के नीचे विसराम करेंगे।
पडित जी का तो गाना बजाना, समय पर समाप्त हो गया।
दोनो शराबी ठड मे भी, नशे मे मदहोश होकर तख्त के नीचे पडे रहे।
उनमे से एक शराबी मुह खोले सो रहा था।
इतने मे दो कुत्ते ठण्ड से बचने के लिए, तख्त के नीचे आ पहुचे।
एक कुत्ते ने इधर-उधर घूमकर, आदत के अनुसार शराबी के
खुले मुह के अन्दर पेशाब किया।
शराबी गर्म-गर्म पेय मुह मे पाकर, गट-गट पी गया॥
इतने मे दूसरे शराबी ने दूसरे कुत्ते को, अपनी आदत के अनुसार
बाहो में भर लिया।
उस कुत्ते ने उसके मुख पर काट खाया,
उस शराबी ने झट अपने साथी को चाटा लगाया।
थप्पड खाकर दूसरा शराबी भी होश मे आया।
दोनो शराबियों का सुन झगडा, एक गश्त करता हुआ
पुलिसवाला वहा आया।
दो शराबियो को देख रात के समय, उनपर आवारागर्दी का केश बनाया।
झट उन्हे थाने की जेल पहुचाया, दूसरे दिन तक भी उन्हे
खाना न खिलाया।
दोनो शराबी यह कहे आपस मे, कि मुझे पण्डित जी
के सगीत ने काट खाया।
दूजा यह कहे, कि मैं तो कवि के सुर का सवाद ही चख पाया।
वह पहले कुछ गर्म लगा, परन्तु बाद में बकबका पाया।
हम भूल गये ओ३म् नाम को, उसका रस ही मीठा पाया।
कहे डॉ० ओमप्रकाश आर्य अबकी बार मुझे बचालें प्रभु,
फिर कभी न भूलेंगे हम ओ३म् नाम को।
शराब छोड़ हम, तेरी शरण में आ गये।
हम कभी न इसे छुएगे, न आपस में हम आर्य लडेंगे।
शराब को हम आर्य, हिन्दुस्तान से भगाकर ही दम लेंगे।
दमन चक्र ही हमारा धर्म है, दमन चक्र ही हमारा कर्म है।
ऐ आर्यो आप भी उन दोनों शराबियो की तरह न बन जाना,
नशा उतरने पर करे ओ३म् को याद फिर ओ३म् नाम को भूल जाना।
कर नित्य एक परोपकार, सच्चा आर्य कहलाईए।
तोड सब शराब के ठेके, अपनी जिंदगी की कीमत चुकाईए।
बसर करना है तो हम सबने रैन बसेरा, उस ओ३म् नाम में समाजाईए।
नही तो एक दिन दुख पाएगा यह शरीर, आत्मा और मन,
उस समय तुम्हारे पास कुछ न हाथ आएगा॥

पालीवाल अस्पताल
देवनगर सोनीपत (हरयाणा)

डॉ० ओमप्रकाश आर्य विद्यावाचस्पति
चिकित्सा अधिकारी—आर्य अस्पताल
राजनगर पालम दिल्ली ४५
संस्थापक सदस्य—आर्य युवा विकास परिषद् दिल्ली

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर मे प्रवेश प्रारम्भ कोई मासिक शुल्क नही

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर जिला जालन्धर (गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त) मे नये छात्रो का प्रवेश १५ जून १९९३ से आरम्भ हो रहा है। सरकारी स्कूलो मे पढाये जाने वाले हिन्दी, गणित, विज्ञान, समाजशास्त्र आदि सभी विषयो के साथ सस्कृत तथा धर्म की शिक्षा भी अनिवार्य रूप से पढाई जाती है।

नि शुल्क शिक्षा, हिन्दी माध्यम, योग्य परिश्रमी अध्यापक, स्वच्छ वातावरण, सात्विक भोजन, दूध व आवास की बिना किसी मासिक शुल्क के समुचित व्यवस्था, शुद्ध दूध की उपलब्धि के लिए गुरुकुल की अपनी गऊशाला, इस गुरुकुल की अपनी विशेषताए हैं।

प्रवेश के लिए छात्र का हिन्दी माध्यम से कम से कम कक्षा छः तथा प्राक् शास्त्री (पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ-पचवर्षीय कार्यक्रम) मे प्रवेश के लिए कम से कम कक्षा १० उत्तीर्ण होना आवश्यक है। शास्त्री श्रेणी मे आर्योपदेशक का कार्यक्रम अनिवार्य है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर आस्था रखने वाले सज्जन मिले अथवा पत्राचार करे।

प्राचार्य—
श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल, करतारपुर

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१ मैसर्ज परमानन्द साईदित्तामल, भिवानी स्टैंड, रोहतक।
२ मैसर्ज फूलचन्द सीताराम, गाधी चौक, हिसार।
३ मैसर्ज सन-अपन्ट्रेडज, सारग रोड, सोनीपत।
४ मैसर्ज हरीश एजेंसीस, ४६६/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत।
५ मैसर्ज भगवानदास देवकीनन्दन, सर्राफा बाजार, करनाल।
६ मैसर्ज घनश्यामदास सीताराम बाजार, भिवानी।
७ मैसर्ज कृपाराम गोयल, रुडी बाजार, सिरसा।
८ मैसर्ज कुलवन्त पिकल स्टोर्स, शाप न० ११५, मार्किट नं० १, एन०आई०टी० फरीदाबाद।
९. मैसर्ज सिंगला एजेंसीज, सदर बाजार, गुडगांव।

शराबबन्दी अभियान

सरकार के विभिन्न आन्दोलन विरोधी हथकडे अपनाने के उपरान्त सारे हरयाणा मे शराबबन्दी आन्दोलन दिनोदिन जोर पकडता जा रहा है तथा जन-जन की आवाज बन गया है। जहा भी चार व्यक्ति बैठे हैं अखबार पत्रिका मे यही चर्चा है मजबूरीवश अनेक राजनेताओ ने भी इसका समर्थन किया है तथा एक विधायक महोदय तो अपनी पार्टी की सदस्यता भी खो चुके हैं।

हरयाणा का सिरसा एक मात्र जिला है जहा आर्यसमाज का नाम मात्र प्रचार है कुछ अपने को धार्मिक कहने वाले सगठन जैसे— सच्चा सौदा, राधास्वामी आदि अवश्य लोगो को बुराइयो से दूर रहने का उपदेश देते हैं लेकिन इनका लोगों में कोई प्रभाव नही है शराब, मास आदि बुराइयों से यह क्षेत्र पूरी तरह जकडा है। कही-कही कोई आर्य विचारो का व्यक्ति रहता है उसी गाव मे शराब या अन्य नशा करनेवाले परेशान रहते हैं जैसे मुन्नावाली, बाहरवाला, बिज्जुवाली आदि। एक मास पूर्व मुन्नावाली गाव में ५००० रु० की शराब ठेका न होते हुए प्रतिदिन दुकानो परचून की दुकानो पर बेरोकटोक बिकती थी १५-१५ वर्ष के बच्चे भी साय को पैसो के अभाव मे अनाज के बदले लेकर पीते थे।

गाव के कुछ प्रबुद्ध व्यक्ति भावी पीढी के इस विनाश को देख नही सके और सामूहिक रूप से इसका विरोध करने का यत्न किया। सरपच श्री बनवारीलाल के सहयोग से देवसीराम जी आर्य के नेतृत्व मे श्री केसरराम नम्बरदार व श्री जगदीश जी आदि लोगो ने बाहर से शराब आनी बन्द कर दी तथा बाहर से लाकर पीने वालो पर आर्थिक दण्ड प्रावधान किया। ठेकेदार ने भी प्रत्यक्ष/परोक्ष रूप से सरपंच व श्री आर्य जी पर अनेक प्रभाव डाले लेकिन दोनो ही व्यक्ति किसी सूरत मे नहीं माने सरपच को तो पचायत समिति की सदस्यता व सरपची से भी हाथ धोने के भय दिखाये। इस सबके बावजूद आज सारे गाव मे शराब पर पूर्ण प्रतिबन्ध है इसका अनुसरण करते हुए दारेवाला गोदीका जैसे गावो मे भी बन्द लगाने का यत्न जारी है।

—देवसीराम मुन्नावाली, (सिरसा)

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उखडे से रहेगे, शायद झगडा भी करेगे। मगर धीरे-धीरे और बार-बार यह कुछ देखकर या तो शराब घर पर पीना और पिलाना छोड देगे या शराब पीकर कम से कम घर तो आना छोड देगे। औरत समाज मे शराब की वजह से सबसे अधिक पीडित है। औरतो को चाहिए कि जब उनके घर पर शराब का दौर चल रहा हो तो छोटे बच्चो को बडी लडकी और बहू को वहा पर भेजे और यह बच्चे या बहू-बेटी मांग करे कि पिता जी यदि शराब बहुत अच्छी है तो थोडी-थोडी हमे भी दे दो यदि खराब है तो आप क्यो पीते हैं, इस बात को केवल घर मे तीन-चार बार ही दोहराना पडेगा, परिणाम जरूर अच्छे होगे बाप या भाई को अपनी बहू-बेटी और बहन से जरूर शर्म होती है। लेकिन माताओ को बच्चो-बेटियो और बहुओ को इस काम के लिए प्रेरित करना होगा। समाज बिगडता जा रहा है और समाज केवल पुरुषो की जायदाद नही है समाज मे सब बराबर के हिस्सेदार हैं और औरत तो समाज की जननी है—वक्त आ गया है उसको अपनी सोई हुई चेतना जगानी होगी–शरीर और आत्मा का नाश करने वाले जहर को खत्म करना होगा तब ही देश और देशवासी एक अच्छे समाज की कल्पना कर सकते हैं।

स्वामी दयानन्द और गाधी की विचारधारा को लागू करने के लिये अहिंसात्मक सघर्ष करना होगा, बुराइयो का मुकाबला करने के लिये डडे भी खाने पडते हैं, कुर्बानी भी देनी पडती है। कितने ही उदाहरण हैं कि दयानन्द-गाधी-श्रद्धानन्द और लाजपतराय जैसे महापुरुषो ने अपने सिद्धान्तो को नही छोडा–लाठिया और गोलिया तक खाईं और कुर्बानी दी। बुराई को बुरा बताने के सहयोग से यदि शराब बन्द हो जाये तो देश फिर सोने की चिडिया कहलायेगा। शराब पर जाया होने वाले धन की बचत से सडके रबड की बन सकती हैं, बिजली के खम्बो पर सोने के तार लगाये जा सकते हैं, हस्पताल खोले जा सकते हैं बडे-बडे उद्योग लगाये जा सकते हैं और देश आत्मनिर्भर होकर विदेशो का मोहताज नही रहेगा–देश की रक्षा के लिए भारत मे बड से बडे हथियार बनाकर धन बचाया जा सकेगा और फिर भारत पर उलटी नजर उठाने वाले की आंखे निकाली जा सकती हैं।

सब देशवासियों से आमतौर पर औरते और बहनो से खासतौर पर उम्मीद की जाती है कि यथाशक्ति हरयाणा आर्यसमाज और श्री विजयकुमार द्वारा चलाये गये नशाबन्दी अभियान मे तन-मन-धन से सहयोग दे और अहिंसा के सिद्धान्तों पर चलकर आन्दोलन को बढावा दे।

सरकार भी यदि अपने अधिकारियों और कर्मचारियों की वार्षिक गोपनीय रिपोर्टों में केवल एक खाना बढा दे कि "क्या वह शराब का सेवन करता है" चाहे सरकार इसको मुक्स न समझे तो भ्रष्टाचार घटेगा और इस सवाल का उत्तर स्वयं अधिकारी या कर्मचारी अपने हस्ताक्षर द्वारा दें, इसी प्रकार यदि सब सरकारी कर्मचारी सेवा मुक्त होने के बाद उस समाज की कुछ सेवा करने के लिए समय निकालें जिस समाज के खून पसीने की कमाई को उन्होंने वेतन की शक्ल मे लेकर सारी उम्र पखो के नीचे बैठकर काटी है तो समाज मे से बुराइया दूर करने मे उनका सहयोग लाभदायक होगा जैसे कि चौधरी विजयकुमार जी कर रहे हैं।

(पृष्ठ २ का शेष)

रही है। इसके लिए यह सुझाव किया गया कि आर्यसमाज के भजनोपदेशको को और अधिक तैयारी करनी चाहिए तथा उन्हे अपना भाषण रोचक बनाना चाहिए। इस दृष्टि से आर्यसमाज के पहले के सत्सग आदर्श हो सकते हैं। सबसे बडी चिन्ता की बात यह है कि अनेक आर्यसमाजी परिवारो के बच्चे सरकारी नौकरियो मे है। व्यापार मे उन्नत हैं। विभिन्न राजनीतिक दलो से सबद्ध हैं,पर आर्यसमाज सगठन व आर्यसमाज के कार्य को बढाने में उनकी कोई रुचि नही है। उन सबको अपने साथ मिलाने की महती योजना बनायी जानी आवश्यक है। वस्तुतः आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन का एक प्रमुख रूप था भी यही।

इस सगोष्ठी मे यह आवश्यकता अनुभव की गयी कि नगर अथवा प्रदेश स्तर तक सभी आर्यप्रतिनिधि सभाए बुद्धिजीवियों के कुछ अभ्यास वर्ग आयोजित करें, विशेष रूप से आर्यसमाजी शिक्षा सस्थाओ मे पढाने वाले अध्यापक अध्यापिकाओं के लिए शिविर लगाए और उनमे आर्यसमाज के प्रति रुचि उत्पन्न करने के साथ उन्हें आर्यसमाज आन्दोलन के साथ जोडे।

सगोष्ठी मे आर्यसमाज को अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप देने पर भी चर्चा हुई। कहा गया कि अखिल विश्व के अनुसार अभी हमारा सगठन नही है, उसके लिए हमे प्रयत्न करना चाहिए।

अन्त में सगोष्ठी इस संकल्प के साथ समाप्त हुई कि आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन के कार्यक्रमो को बढाकर आर्यसमाज के सगठन को सुदृढ करने मे सबको योगदान करना चाहिए।

—डा० प्रशान्त, वेदालंकार
सयोजक—आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन
७१२, रूपनगर, दिल्ली-७

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, गोहाना रोड, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजि० नं० ८/७१२१२ पंजि० नं० P/RTK-४९ सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,०९४

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २० अंक २१ १४ मई, १९९३ वार्षिक शुल्क ४०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति ८० पैसे

हरयाणा में शराबबन्दी सत्याग्रह के बढ़ते चरण
सरकार बोखलाई

आर्य प्रतिनिधिसभा हरयाणा द्वारा भारतीय किसान यूनियन के सहयोग से हरयाणा के कोने-कोने मे शराबबन्दी सत्याग्रह के चरण बढते जा रहे हैं। इस समय जिला रोहतक, सोनीपत, भिवानी,रेवाडी महेन्द्रगढ, गुडगाव, कैथल, कुरक्षेत्र, यमुनानगर, हिसार सिरसा, तथा अम्बाला मे शराबन्दी सत्याग्रह की गतिविधिया जारी है। शराब के ठेको पर अनेक ग्रामो मे धरणे चालू हैं अथवा खापवार पंचायत करके धरणे देने की तैयारी की जा रही है। किसान नरनारी फसल आदि के आवश्यक कार्यक्रम से निवृत्त होते ही इस धर्म युद्ध मे सम्मिलित हो जावेगे। सत्याग्रह की गतिविधियो का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है —

जिला रोहतक—

सापला, रोहतक दिल्ली मार्ग पर एक कस्बा है। यहा शराब के तीनो ठेको पर धरणे निरन्तर चालू हैं। आस पास के ग्रामीण किसान बारी बारी धरणे पर आकर बैठते हैं। शराब पीने वालों पर जुर्माना किया जा रहा है। सभा की ओर से सांपला तथा इसके निकट के ग्रामों मे शराबन्दी प्रचार किया जा रहा है। सभा के अधिकारी भी सापलाके सत्यग्रहियों से २,३ बार सम्पर्क कर चुके हैं। बेरी भी एक कस्बा है। यहां भी शराब के ठेके पर धरणा चालू है। सरकार शराब के ठेकेदार की सुरक्षाकर रही है। ठेका का स्थान बदलवा दिया है। वह स्थान स्कूलो में जानेवाले तथा छात्राओ के मार्ग पर है जहा शराब पीने वाले छेड-छाड करते रहते हैं। ठेकेदार की सहायता करते हुए पुलिस कर्मी स्वय २ २ बोतल खरीदते हैं तथा खरीदने वालों की सहायता कर रहे हैं। तथा शराबबन्दो सत्याग्रहियों को धरणा समाप्त करने की धमकियां भी दे रहे हैं। हरयाणा शराबबन्दी समिति के संयोजक श्री विजयकुमार जी के नेतृत्व में एक शिष्ट मंडल ने इसकी शिकायत जिला उपायुक्त तथा पुलिस अधोक्षक को की है। यदि पुलिस ने अपना व्यवहार न बदल तो पंचायत के प्रस्तावानुसार अन्य कार्यवाही की जायेगी।

ग्राम मातनहेल जिला रोहतक का एक बडा ग्राम है। यहा भी दो सप्ताह से शराब के ठेके पर आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं तथा किसान यूनियन के कार्यकर्त्ता धरणा दे रहे हैं। सभा की ओर से प० जयपाल जी ने २५ अप्रैल को शराबबन्दी प्रचार किया। यहां जिला उपायुक्त महोदय स्वयं गये थे तथा सत्याग्रहियों का धरणा समाप्त कराने के लिए प्रयत्न किया परन्तु सत्याग्रहियों ने स्पष्ट कह दिया कि जब तक ठेका बन्द नहीं होगा, धरणा चालू रहेगा। यहा भी सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी, सयोजक श्री विजयकुमार जी आयनेताओं ने पहुंचकर सत्याग्रहियों का मार्गदर्शन किया है। डा० विजयकुमार जो कि इस धरणे के प्रबन्धक हैं दिन रात धरणे को सफल करने मे व्यस्त हैं। इसी प्रकार ग्राम कासनी मे भी सभा के प्रतिष्ठित सदस्य श्री दीपचन्द आर्य अपने ग्रामवासियों के सहयोग से धरणे पर बैठे हैं। दिनांक ९ मई को ढाकला में खाप की पचायत का आयोजन करके धरणे को सफल करने का कार्यक्रम बनाया है। सभा के भजनोपदेशक श्री जयपाल सिह की मडली ने दिनाक २२ अप्रैल को ग्राम दुल्हेडा २३ अप्रैल को ग्राम डाबोधा २४ अप्रैल को ग्राम बुपनिया तथा २६ अप्रैल को ग्राम सेहलगा मे शराबबन्दी प्रचार किया।

जिला सोनीपत—

जिला सोनीपत मे खरखौदा नगर जो कि उपतहसील बन गया है, यहा भी गत मास से दहिया खाप तथा आर्यसमाज की ओर से दोनो शराब के ठेको पर धरणे चालू हैं। यहा भी बारी-बारी से ग्रामीण धरणो पर बैठ रहे हैं। सभा के अधिकारी तथा उपदेशको ने इन धरणो पर पहुचकर सहयोग दिया है। शराबबन्दी पोस्टर तथा बैनर वितरित किये हैं। दहिया खाप के सरदारो का कथन है कि हम किसी भी मूल्य पर ठेके नही चलने देगे। विवश होकर पुलिस ने ठेकों पर ताले लगवा दिये हैं। एक भी शराब की बोतल नही बिक रही। शराब पीने वालो पर आर्थिक दण्ड किया जा रहा है। वैद्य ताराचन्द आर्य प्रधान आर्यसमाज खरखौदा तथा निकट के आर्यसमाज पूरा समय दे रहे हैं।

जिला सोनीपत के अनेक ग्रामो मे खापवार पचायतो का आयोजन करके शराब पीने तथा पिलाने पर पाबन्दी लगाने के पंचायती नियम लागू किए जा रहे हैं। गत मास ग्राम जूआ मे बारहा की पचायत मे निश्चय किया गया कि ग्राम मे जो भी व्यक्ति शराब बेचेगा या पिवेगा उस पर जुर्माना किया जावेगा। इस कार्य हेतु एक शराबबन्दी समिति गठित की गई है जिसके अध्यक्ष आर्यसमाज के मन्त्री मा० खजानसिह आर्य को बनाया गया है। ग्राम के दोनों सरपच तथा श्री धर्मसिंह आर्य पच पचायती नियमो को लागू करवाने का पूरा प्रबन्ध कर रहे हैं। तहसील गोहाना के प्रमुख ग्राम बरोदा मे श्री महेन्द्रसिंह मोर अपने साथियों सहित शराब के ठेके को बन्द करवाने का पूरा प्रयत्न कर रहे हैं। सरकार उन पर दबाव डाल रही है कि ठेका चलाने देवें, परन्तु वे निरन्तर संघर्ष कर रहे हैं। सभा के प्रचारक श्री रतनसिंह आर्य ने यहा के कार्यकर्त्ताओं को प्रोत्साहित करके ठेका हटवाने की प्रेरणा की है।

मलिक गोत्र मे २० मई से दहेज निषिद्ध

गोहाना, ७ मई (हु सं)। गठवाला खाप के मलिक गोत्र मे २० मई से सभी भाति के मादक द्रव्यो के सेवन तथा विवाहों में दहेज पूर्ण निषिद्ध हो जाएगे। यह घोषणा आज यहा खाप के आहुलाना बारहा के आहुलाना गांव मे सम्पन्न बैठक में की गई जिसकी अध्यक्षता कथूरा पंचायत समिति के पूर्व अध्यक्ष चोधरी बलजीतसिह मलिक ने की।

बैठक के अनुसार भविष्य मे विवाहो मे न निमत्रण पत्र प्रकाशित करवाए जाएगे न वीडियो फिल्मे बनेगी, न महिलाओ को बारात मे ले जाया जा सकेगा और न नृत्यादि सहित बैंड-बाजो का प्रयोग ही सम्भव होगा। वर वधू को नोटो की नही फलो की माला पहनाएगी। लडकी की गोद भरने अधिकतम ५ व्यक्ति जाएगे। यदि बारात मे ५० से

ज्यादा सबन्धी आएगे,फालतू को ससम्मान वापस लौटा दिया जाएगा। कन्यादान भी एक-एक रु होगा जिसे वधू साथ ससुराल ले जाएगी। विवाह के उपरान्त रिसेप्शन करने पर पाबन्दी होगी। विदाई की बेला मे टीका एक रु दान १०१ रु पाटडाफेर के ११ रु दिये जाएगे। शादी के बाद सम्बन्ध विच्छेद (तलाक) सामाजिक अपराध होगा तथा खाप जिस किसी पक्ष को दोषी पाएगी, उसके यहा कोई मलिक परिवार रिश्ते नही करेगा।

इसी के साथ नशे को पूर्ण वर्जित कर दिया गया जिसकी अवज्ञा पर १५०रु के अर्थ डण्ड व घाघरी पहनाने का प्रावधान किया गया है। १५० रु मे से व ५० रु सूचित करने वाले का पुरस्कार होगे। सभी मलिक-बहुल गाव अपनी पचायतो से प्रस्ताव पारित करवा कर सरकार को भेजेगे कि उनके यहा ठेके न खोले जाए। बैठक मे छिछडाना गाव के विवादास्पद मामले को भी सुलभा लिया जिसमे बलजीत पुत्र महासिह ने इस आधार पर घाघरी पहनने से इन्कार कर दिया था कि कथित पचायतियो ने प्रेमसिह पुत्र धूपा को भेदभावपूर्वक 'बख्श' दिया था खाप ने अब दोनो को घाघरी पहनाने का आदेश दिया है।

दैनिक हिन्दुस्तान ८-५-९३

जिला भिवानी–

चरखी दादरी शहर के १३ शराब के ठेको पर धरणे निरन्तर चालू है - ग्राम पचायतो की ओर से प्रत्येक धरणे पर नम्बरवार ग्रामवासी बैठते है। शराब पीनेवालो को प्यार से समझाकर वापिस उनके घर भेज रहे है यदि कोई नही मानता है तो उस पर आर्थिक दण्ड किया जारहा है। इस प्रकार ठेको पर शराब की बिक्री बन्द है। आर्यसमाज के वार्षिक उत्सव पर श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने इस शानदार तथा परोपकारी कार्य आरम्भ करने पर शराबबन्दी सत्याग्रहियो को धन्यवाद देते हुए कहा था कि यह धर्मयुद्ध है, इसमे विजय सत्य की ही होगी अत सभी को तन, मन तथा धन से इस सत्याग्रह में सहयोग देकर यश का भागी बनना चाहिए। श्री स्वामी जी महाराज ने इसी प्रकार की प्रेरणा लोहारू से दादरी तक यात्रा मे जनता को दी है तथा सत्याग्रहियो का मनोबल बढा है। सभा के अन्तरग सदस्य श्री समेरसिंह आर्य अपने अन्य साथियो के साथ दादरी तथा निकट के ग्रामो से ठेके बन्द करवाने के कार्य मे दिनरात एक कर रहे हैं। ग्राम फतहगढ के सरपच प्रि० बलवीरसिह जी अपने समर्थक सरपचो के सहयोग से ग्रामो मे घूम-घूमकर धरणो को सफल करने के कार्य मे जुटे हैं। सभा के भजनोपदेशक श्री जयपालसिह की भजन मण्डली ने ग्राम पैंतावास आदि तथा स्वामी देवानन्द, प० मुरारीलाल आर्य की भजनमण्डली ने श्री बलदेव आर्य के सहयोग से बोन्द आदि ग्रामो मे शराबबन्दी प्रचार किया है। सभा के प्रचारक श्री रणवीरसिह आर्य दादरी तथा ग्रामो के धरणों मे सम्मिलत हो रहे हैं।

जिला हिसार–

सभा के उपदेशक श्री अतरसिह आर्य क्रान्तिकारी के पुरुषार्थ तथा प्रयत्नो से उनकी ससुराल के ग्राम बालसमन्द (श्री भजनलाल जी का चुनाव क्षेत्र) मे दो मास से शराब के ठेके पर निरन्तर धरणा चालू है। समय-समय पर सभा की भजन मण्डलिया भी प्रचारार्थ पहुँचती रहती हैं। इस प्रकार शराब के ठेका वेदप्रचार का केन्द्र बना हुआ है। अनेक युवको ने शराबबन्दी प्रचार से प्रभावित होकर शराब मांस न खाने की प्रतिज्ञा की है और शराबबन्दी के कार्य मे तन, मन तथा धन से सहयोग दे रहे हैं। ग्राम का सरपंच जो कि मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल का समर्थक है, यहा ठेका रखना चाहता है। इसी कारण २७ अप्रैल को ग्राम मे अचानक उपमण्डल अधिकारी तथा पुलिस अधिकारी भारी सख्या मे धरणे पर आये और क्रान्तिकारी तथा उसके साथियों को धमकी देते हुए कहा कि धरणा समाप्त करके भाग जाओ, अन्यथा गिरफ्तारी के लिए तैयार हो जाओ। श्री क्रान्तिकारी तथा उनके साथियो ने साहस पूर्वक कहा कि जब तक यहा से जहरखी शराब का ठेका बन्द न होगा तबतक हमारा धरणा जारी रहेगा। हम सरकार की गिरफ्तारी से नही डरने वाले हैं। श्री क्रान्तिकारी जी, श्री मनफूल सिह जो, भगत ज्ञानीराम जी, श्री बिरसालाराम जी, श्री छाजूराम श्री कृष्णकुमार जी, श्री भगतबीरसिंह जी को पुलिस ने तुरन्त गिरफ्तार कर लिया और धरणे पर शामियाने तथा माइक आदि छीनकर थाना में ले गये। इसकी सूचना ज्यो ही ग्रामवासियो को मिली त्यो ही सारे ग्राम के नर नारी धरणे पर पहुच गये। पुलिस ने लाठी चार्ज करके उन्हे भगाने का यत्न किया, परन्तु जनशक्ति के सामने शासन शक्ति विफल हो गई। ग्रामवासियो ने पुलिस को चेतावनी देते हुए ललकारा कि हमारे ग्राम के दामाद को जो कि जनता की शराब छुडवाना चाहता है को तुरन्त विना शर्त रिहा करो, अन्यथा हमारी अगली कार्यवाही के लिए सरकार उत्तरदायी होगी। सरकार को चाहिए था तो श्री भजनलाल के दामाद को गिरफ्तार करना जो हिसार मे अपने कारखाने मे शराब (जहर) बनाकर सारे हरयाणा मे भेज रहा है। पुलिस उसकी रक्षा कर रही हैं और शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओ को गिरफ्तार करके शर्मनाक कार्य कर रही है। यहा महिलाए भी उपस्थित थी। उन्होने पुन उसी स्थान पर धरणा चालू कर दिया और शराबबन्दी के नारो से आकाश गुजा दिया। पुलिस जनसमूह को देखकर भयभीत हो गई और सहायक पुलिस अधीक्षक को ग्रामवासियो के सामने हाथ जोडकर कहना पडा कि—दो घन्टे के अन्दर श्री क्रान्तिकारी जी तथा उनके सभी साथियो को बिना शर्त रिहा कर दिया जावेगा। परन्तु जनता शान्त नही हुई और सरकार तथा शराब विरोधी नारे लगाती रही। पुलिस अधिकारियो ने उपायुक्त हिसार से सम्पर्क किया और बताया कि हालात काबू से बाहर है। पता नही क्या घटना घट जावे। उपायुक्त महोदय का आदेश मिलने पर रात्रि ८ बजे श्री क्रान्तिकारी जी तथा उनके सभी साथियो को बिना शर्त रिहा कर दिया गया और वे पूर्ववत् धरणे पर नवशक्ति तथा उत्साह मे बैठ गये। हरयाणा शराबबन्दी समिति के सयोजक श्री विजयकुमार जो सूचना मिलने पर वहाँ पहुचे तथा सभी सत्याग्रहियो को बधाई देते हुए कहा कि इस परोपकार के कार्य मे आर्यसमाज का बच्चा-बच्चा बडे से बडा बलिदान देने को तैयार है। उनकी प्रेरणा पर ग्राम के सैकडो नवयुवक, बुर्जुग तथा माताएँ प्रतिदिन धरणे पर बैठते हैं तथा वेदप्रचार सुनते हैं।

सत्संग का चमत्कार–

ग्राम बालसमन्द हिसार मे १६-३-९३ से ठेके के सामने धरना जारी है। आये दिन विद्वान्, सन्यासी, आर्य भजनोपदेशकों द्वारा रात्री मे प्रचार जारी है। स्थानीय घडवा मण्डली भी सहयोग कर रही है। दिनाक २-५-९३ को सभा उपदेशक एव धरना सचालक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने सुझाव दिया तथा अनेक महात्मा मुन्शीराम, भगत फूलसिंह, अमीचन्द आदि के उदाहरण देकर शराब के साथ-साथ धूम्रपान एव चाय छोडने की अपील की। परिणामस्वरूप भगत रामनिवास मा० भीमसिंह, पहलवान रामचन्द्र, भूपसिह, शमशेरसिंह, राजेन्द्र जागडा, मा० फूलकुमार जितेन्द्र, प० चरणसिह ने बीडी न पीने की प्रतिज्ञा की। दो नवयुवकों ने चाय भी छोडी। इसके अतिरिक्त श्री बिरसालाराम, अमीचन्द, पृथ्वीसिंह, ने हुका न पीने की सभा में घोषणा की। धरने पर खुशी की लहर फैल गई। धरने पर महात्मा ताराचन्द सुभाष मुनि, महाशय सुरजाराम आर्य (सरदार गढिया), श्री बबलूराम (मुकलान), न्याय मुनि (गु कु धीरणवास), धरने पर सहयोग हेतु पधारे। सफलतापूर्वक चल रहा है। २७-४-९३ से ठेका मे तालाबन्द है। लोगो मे काफी उत्साह है। सरकार के प्रति रोष बढता जा रहा हैं। गाव की एकता के आगे सरकार व प्रशासन बौखलाया हुआ है।

–मन्त्री, शराबबन्दी समिति, बालसमन्द

शराब के ठेके पर ताला लगा

रेवाडी २ मई (निस) पाल्हावास के शराब के ठेके को बन्द कराने के लिए चल रहे जन आन्दोलन को देखते हुए प्रशासन ने ६ मई तक शराब के ठेके पर ताला लगाने की घोषणा की है।

जन सघर्ष समिति पाल्हावास एवं डी वाई ओ के बैनर तले सैकडो नर-नारियों ने रेवाडी नगर में प्रबल प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों को सम्बोधित करते हुए हरयाणा प्रदेश जनता दल के महासचिव वेदप्रकाश विद्रोही ने कहा कि भजनलाल सरकार अपने दामाद के शराब के व्यापार को बढाने के लिए हरयाणा मे शराब की नदी बहा रही है जिसे जनता बर्दाश्त नहीं करेगी।

जनसत्ता ३-५-९३

ये आग तेरी लगाई हुई है

एक साप्ताहिक पत्र मे दिनाक २५-४-९३ मे पञ्जाब सभा के भूतपूर्व प्रधान ने आदत से मजबूर होकर (सम्पादकीय लिख मारा) "इस घर को आग लग गई घर के चिराग से"। बडा रोना रोया है कि गुरुकुल मे यह हुआ वह हुआ, इसको हटाया, उसको बिठाया, यह तोड हुई और वह जोड हुई, और घर बैठे पता नही Hear say साक्ष्य पर जो मन मे आया कह दिया। यहा तक भी कह दिया कि 'इस गुरुकुल को जितनी जल्दी बन्द कर दिया जाये उतना अच्छा है।' वाह! क्या बात है? 'जो बात की खुदा की कसम लाजवाब की'।

पिछले तीन दशक से पजाब के आर्यसमाज से मैं काफी घनिष्टता से जुडा हुआ हू। उससे पूर्व मैं जब झासी मे वकालत करता था तो १९५७ से १९६२ तक उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का लगातार अन्तरग सदस्य रहा था और यू० पी० मे स्थापित इस गुरुकुल से विशेष परिचित रहा। मैं उस समय से अब तक की आयु मे सबसे छोटा अन्तरग सदस्य था।

अत हर प्रकार से इस महान् गुरुकुल से परिचित हू। पजाब सभा का विभाजन (१९७४-७५) मे श्री वीरेन्द्र ने करवाया और तब से आज तक इन महाशय ने न चैन लिया न किसी को लेने दिया। यहा तक कि प्रधान पद प्राप्त करने के लिए निम्न स्तर के कार्य किये। धन्य हैं "देहली सभा" और "हरयाणा सभा" के आर्य जन जिन्होने वह सब कुछ बरदास्त किया। कभी यह गुरुकुल "पंजाब" का है कहकर और कभी हरयाणा के जाटो और पजाबियो के अनगल विषय उठाये। आर्यसमाज का तो नाम तक नही रहने दिया और धीरे-धीरे गुरुकुल मे गैर आर्यसमाजियो को बदनियतो से घुसेड दिया। ऐसी आग लगाई जिसे फिर बुझने न दिया। सिवाये भद्दी राजनीति के और कोई ठोस काम ही नही किया। मुकदमेबाजी से आर्यसमाज के नाम को बदनाम कर दिया। यहा तक कि गुरुकुल की जमीने जो दान में दानदाताओ ने दी थी "जिद्द" मे फर्जी कार्य करके धोखा-धडी दे के बेच डाली। किसी को भी सुचारू रूप से काम ही नही करने दिया। सार्वदेशिक सभा बेचारी लालच मे और डर मे सहम के बैठ गई। दो नम्बर के पैसे पर आखें आने लगी। काला धन जिन्दाबाद हुआ।

मैं साधारणतया गुरुकुल कागडी के अप्रैल मे बैसाखी के उत्सव पर हरिद्वार जाता रहा हू अब की बार भी गया था और प्रत्यक्षदर्शी के रूप में वहा जो कुछ होता रहा है साक्षी हू। सुनी हुई बातो पर नही कहता।

हा, हो सकता है कि परिस्थितिवश वहा कुछ ऐसे कार्य हो गये हो जो साधारण अवस्था मे नही होते, परन्तु जो हालात लगातार वहा वर्षो मे पजाब सभा के स्वार्थी भूतपूर्व प्रधान ने अपने निकम्मे मृतप्राय चमचो के सहारे जान-बूझकर बार बार छल कपट से, अधिकार जमाने हेतु और प्रान्तवाद के नारो के कारण शरारतन उत्पन्न कर रखे हैं, और Remote Control (रिमोट कन्ट्रोल) से सोची समझी उखाडपिछाड की योजनाओ को चलाना अधिकार मात्र समझ रखा था, ऐसी उग्र बीमारी का इलाज जो करना चाहिए था वहा उचित रूप से किया गया।

दो बैठक शिष्ट परिषद् की १४-४-९३ को गुरुकुल परिसर मे पूर्व सूचना के आधार पर हुई और बडे सौहार्द वातावरण मे सफलता से सम्पन्न हुई। सभी योग्य सदस्यो ने अपने-अपने कर्त्तव्य कुशलतापूर्वक निभाये। पडित प्रभात शोभा जी की विद्वत्ता का प्रभाव प्रशंसनीय कहा जा सकता है। महत्त्वपूर्ण निर्णयो से आशा बन्धी कि शरारती तत्त्वो और उनको दूर-नजदीक से उकसाने वालो के सभी मसूबे धराशाही हो गये। अब गुरुकुल अपनी पुरानी प्रतिष्ठा वापस ला सकेगा ऐसा विश्वास बंधता है। फिर भी जोड-तोड करने वाले बुरे तत्त्वो को ईश्वर सद्बुद्धि प्रदान करे, ऐसी हमारी प्रार्थना है।

श्री वीरेन्द्र तो घिसे पिटे शेरो से लेख लिखने के आदी है। मेरे सामने २२-४ ९० का इसी पत्र का पुराना अंक पडा है जिसके पृष्ठ ३ पर सम्पादकीय "इस घर को आग लग गई घर के चिराग से" इन महाशय जी ने लिखकर उसमे "आर्यसमाज जगत" पर बरसे है, और अब इसी घिसे पिटे शीर्षक से "गुरुकुल" पर बरसे हैं।

अच्छा हुआ जो बरस रहे हैं, शायद यह आग जो "आर्य जगत्" और "गुरुकुल" मे इन्होने लगाई हुई है, वह बुझ सके?

ऋषिपालसिह एडवोकेट
सभा प्रधान

गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

पत्राक—३३४ दिनाक १७-४-९३ की अधि सूचना के आधार पर सूचित किया गया है कि शिष्ट परिषद् की बैठक दिनाक १४-४-९३ मे जस्टिस श्री महावीरसिह जी को विश्वविद्यालय का परिद्रष्टा (visitor) नियुक्त किया गया है जिसकी सम्पुष्टि शिष्ट परिषद(सीनेट) की बैठक दिनाक १४-४-१९९३ (अपराह्न) मे को गई है। तदनुसार जस्टिस श्री महावीरसिह जी ने परिद्रष्टा (विजिटर) का पद भार दिनाक १७-४-९३ को ग्रहण कर लिया है।

डा० जयदेव वेदालकार
कुल सचिव

टिप्पणी .—

(I) उपरोक्त शिष्ट परिषद (Senate) की बैठको मे चौ० ऋषिपाल सिंह एडवोकेट (प्रधान-आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब) भी उपस्थित थे और उनका प्रस्ताव था।

(II) एक अन्य सूचनानुसार श्री जयदेव वेदालकार को मान्य कुलपति प्रो० रामप्रसाद जी वेदालकार के आदेशानुसार कुल सचिव के पद पर नियुक्त किया गया है और उन्होने यह कार्यभार १२-४-९३ को सम्भाल लिया है। जबकि विश्वविद्यालय के मान्य कुलाधिपति प्रो० शेरसिह जी ने विश्वविद्यालय के सविधान द्वारा प्रदत्त अपने अधिकारो का प्रयोग करते हुए, विश्वविद्यालय के उपकुलपति आचार्य रामप्रसाद वेदालकार को कार्यवाहक कुलपति के रूप मे नियुक्त कर दिया है। श्री रामप्रसाद वेदालकार कुलपति जी ने भी दिनाक १२-४-९३ को पूर्वाह्न मे यह पद ग्रहण कर लिया है।

(III) अब सबकी आशाये बन्ध गई हैं कि गुरुकुल द्रुत गति से उन्नति करेगा। ईश्वर ऐसे तत्त्वो को सुमति दे जिन्होने इस गुरुकुल को अकथ हानि पहुचाई है।

मुलखराज आर्य
महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, पजाब (रजि०)

आर्यरत्न श्री मोहनलाल मोहित प्रधान आर्य सभा मौरीशस अभिनन्दनग्रन्थ का विमोचन

रविवार १८ अप्रैल १९९३ को तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली में महात्मा हसराज दिवस पर आयोजित विशाल महासभा के शुभ अवसर पर आर्य सभा मौरीशस के वयोवृद्ध प्रधान, आर्यरत्न श्री मोहन लाल मोहित अभिनन्दन ग्रन्थ का विमोचन माननीय श्री शिवराज पाटिल अध्यक्ष लोक सभा के कर कमलो से हुआ।

इस शुभ अवसर पर बहुत संख्या मे आर्यसमाज और डी ए वी. प्रबन्ध समिति के अग्रणी नेता उपस्थित थे। इनमे श्री दरबारीलाल श्री ज्ञानचन्द चौपडा, श्री रामनाथ सहगल, डा० धर्मपाल आर्य, श्री सूर्यदेव एव श्री मूलचन्द आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त श्री ज्ञानी जेलसिंह भूतपूर्व राष्ट्रपति, श्री रामचन्द विकल पूर्व सासद एव श्री विजयकुमार मल्होत्रा ने महासभा की शोभा बढाई।

इस अभिनन्दन ग्रन्थ का सम्पादन प्रो० मूलशकर रामधनी मन्त्री आर्य सभा मौरीशस और डा० कपिलदेव द्विवेदी ने किया है। इसमे मौरीशस और भारत के राष्ट्र नेताओ और विद्वानो के लेख है। इस पुस्तक मे बडे सुन्दर और आकर्षक ढग से श्री मोहन लाल मोहित के प्रशसनीय, पवित्र और समाजसेवी की सुन्दर कृतियो उपलब्धियो

(शेष पृष्ठ ७ पर)

बालसमन्द (हिसार) के ठेके पर धरनों का अद्भुत दृश्य

१६-४-९३ से ठेका के सामने धरना जारी है। धरना शातिपूर्वक तरीके से सफल चल रहा है। बालसमन्द के नवयुवक पूरी तरह सक्रिय है। युवको का कहना है न हम शराब पीएंगे न गाव मे पीने देंगे। मा० भीमसिह, पहलवान रामचन्द्र भगत, रामनिवास, महावीर, शमशेर, रवीन्द्र आदि युवको ने शराबियो के विरोध मे मोर्चा लगा रखा है। कई बुजुर्ग भी धरने पर सक्रिय हैं। आए दिन शराबियो की बोतल फोडी जाती हैं। जूतो की माला व घाघरी पहनाकर जलूस निकाला जाता है। धरने का सफल सचालन सभा उपदेशक क्रातिकारी श्री अतरसिह आर्य कर रहे हैं।

दिनाक २१-४ ९३ को शीशपाल पूनिया (खारिया) को शराब पीकर बस अड्डे पर हुल्लडबाजी करने पर घाघरी व जूते की माला पहनाकर जलूस निकाला। २५-४-९३ को चौ० विजयकुमार पूर्व उपायुक्त एव सयोजक शराबबन्दी समिति हरयाणा तीसरी बार धरने पर पहुचे। धरन पर बैठे लोगो का धन्यवाद किया। साय तीन बजे बीरसिह पूनिया (बालसमन्द) ने शराब पीकर हुडदग मचाया उसे घाघरा पहनाई। बाद मे बस अड्डे पर जाकर प० बद्रीप्रसाद व होटल वाले से झगडा किया गाली दी घर जाकर छूरा लेकर आया। पडितो ने जमकर पिटाई की, पुलिस मे पकडवाया। साय पाच बजे एक ट्रक ड्राईवर ने शराब पीकर बस अड्डे पर नाटक किया गालिया देने लगा। धरने वालो को पता चलने पर पहलवान रामचन्द्र व महावीर ने जमकर उसकी पिटाई की माफी माग कर ट्रक लेकर चला गया। प्रात २६ ४-९३ को ठेके वाले जीप मे पेटी रखने लगे। रामनिवास व मा० भीमसिह ने उन्हे रोका न मानने पर लठ लेकर जीप के पीछे दौडे ठेकेदार जीप को थाना चौकी मे ले गया। पुलिस धरने पर आई। क्रान्तिकारी जी मे बातचीत की कि आप कानून हाथ मे न ले। आर्य जी ने साफ शब्दो मे कहा कानून का उल्लघन ठेके वाले कर रहे हैं। नियम के अनुसार ठेके मे बोतल ला सकते हैं बाहर नही ले जा सकते। हम धरना शातिपूर्वक चलाएग। बाद मे पुलिस वाले चले गए। ठेकेदार बुरी तरह डरा हुआ है पचायत का, सहयोग अब तक धरनेवालो को नही मिल रहा है। वैसे ५० प्रतिशत लोगो का समर्थन धरनेवालो को मिलना आरम्भ हो गया है। मेजर करतारसिह (हिसार) डा० रामधन लोरा (हिसार) स्वतन्त्रता सेनानी मानसिह (गोरछी) सग्रामसिह आय (दडौला) आदि भी धरने पर पधारे।

नि:शुल्क योग एवं संस्कृत प्रशिक्षण शिविर

आत्मशुद्धि आश्रम मे गत वर्षों की भाति ६ जून से १३ जून तक योग एव सस्कृत प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर मध्ये ध्यान, प्राणायाम, आसनादि योग की विधियो के साथ सस्कृत अध्ययन की सरल विधिया समझाना एव मन्त्रो श्लोको का शुद्ध उच्चारण और सस्कारो का प्रशिक्षण दिया जाएगा।

प्रशिक्षणार्थ आमन्त्रित श्री स्वामी जीवनानन्द जी सरस्वती, महात्मा रामकिशोर जी "वैद्याचार्य", श्री आचार्य सुदर्शनदेव जी, वेद प्रचार अधिष्ठाता आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, श्री आचार्य सूयनारायण जी 'नन्द' लोक भाषा प्रचार समिति भारत, श्री डा० राजकुमार जी आचार्य रोहतक।

इस अवसर पर अनेक उच्चकोटि के वक्ता विद्वान् पधार रहे हैं।

आवश्यक निवेदन—योग दर्शन, सत्यार्थप्रकाश, सस्कार विधि, लेखनार्थ कापी, पैन, ऋतु अनुसार बिस्तर साथ लेकर आएं। भोजन तथा निवास का प्रबन्ध आश्रम की ओर से होगा। अत इस सुअवसर से योग सस्कृत प्रेमी विद्यार्थी व माताए, बन्धु, बाल, युवा, वृद्ध सभी अधिक से अधिक सख्या में पधार कर लाभ उठाए। आश्रम दिल्ली रोड पर हरयाणा रोडवेज बस स्टाप के निकट है।

स्वामी धर्ममुनि मुख्याधिष्ठाता दूरभाष ८-३१०१९५
आत्मशुद्धि आश्रम (प० न्यास) बहादुरगढ—१२४५०७ हरयाणा

हरयाणा मे आर्यवीर दल के शिविर

क्र स	दिनाक	स्थान
१	२२-५-९३ से ३०-५-९३	(दयानन्द महिला कालेज) एन एच ३ फरीदाबाद
२	२७-५-९३ से ६-६-९३	गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ
३	२३-५ ९३ से २९-५-९३	गाव भाण्डवा (भिवानी)
४	२२-५-९३ से ३०-५-९३	पानीपत
५	३०-५-९३ से ६-६-९३	करनाल
६	३०-५-९३ से ६-६-९३	धनवन्ती आर्य कन्या स्कूल रोहतक
७	६-६-९३ से २०-६-९३	सार्वदेशिक शिविर झज्जर
८	२५-५-९३ से ३०-५-९३	जीन्द
९	[illegible]२ ६-९३ से ३०-६-९३	जनता स्कूल गन्नौर
१०	२२-६-९३ से ३०-६-९३	नरवाना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा सचालित शराबबन्दी कार्यक्रम को और तेज करने का निर्णय लिया गया तथा शिविरो के अन्तर्गत एक दिन रात्री को नगर मे चेतना रैली के रूप मे मशालो के साथ प्रदर्शन करने का निर्णय लिया गया। —वेदप्रकाश आर्य मन्त्री

ठेका बंद कराने के लिए सघर्ष समिति गठित

नारनौल, ७ मई। गुलावला शराब ठेके के विरोध मे गत दिवस गाव मे एक सभा का आयोजन किया गया जिसमे स्वतन्त्रता सेनानी बाबूनद शर्मा, भोलाराम आर्य व एस यू सी आई के जिला सचिव का राजेन्द्रसिह ने भी भाग लिया।

सभा मे हरयाणा सरकार की जनविरोधी आबकारी नीति की घोर निन्दा करते हुए बताया गया कि ग्रामवासियो तथा ग्राम पचायत की भावनाओ को अनदेखा कर प्रशासन ने गुलावला बस अड्डे पर जबरन ठेका खोल दिया।

सभा मे ठेके को बद कराने के लिए जनसघर्ष समिति का गठन कर सघर्ष की रूपरेखा तैयार की गयी। सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि गाव का कोई भी व्यक्ति इस ठेके से शराब नही खरीदेगा। आन्दोलन के पहले चरण मे नारनौल मे विक्षोभ प्रदर्शन करने के साथ हस्ताक्षरयुक्त ज्ञापन उपायुक्त को दिया जायेगा। बाद मे जनसघर्ष समिति के बैनर तले ठेके के सामने धरना शुरू किया जायेगा। फिर भी ठेका बद न किया गया तो आसपास के गावो की जनपचायत मे इस बारे मे निर्णायक फसला करेगी।

ज्ञातव्य है कि शराब के विरोध मे इस तरह की सभाए महासरघडी गाव मे भी हो चुकी है। जिले मे गुलावला, काटी, महासर, भौडी व पाली गाव के लोग अपने यहा से ठेको को उठवाने के लिए कमर कस चुके है। आन्दोलन मे डी वाई ओ द्वारा भीत लिखाई व अन्य साधनों से जनचेतना अभियान चलाया जा रहा है।

नभाटा समाचार से साभार

आर्यसमाज बरौली जि० अम्बाला का चुनाव

प्रधान श्री वासुदेव शर्मा, उपप्रधान श्री गुरुनामसिह, मन्त्री श्री ओमप्रकाश, उपमन्त्री श्री हरपालसिह, कोषाध्यक्ष श्री रामकरण, संगठन सचिव श्री करनलसिह, प्रचार मन्त्री श्री कृपालसिह, लेखा-निरीक्षक श्री चमनलाल।

कंप्यूटर भाषा के रूप मे संस्कृत का इस्तेमाल

नयी दिल्ली, ७ मई (वार्ता) कम्प्यूटर भाषा के रूप मे सस्कृत के इस्तेमाल के सिलसिले मे इलेक्ट्रानिकी विभाग ने पाणिनि व्याकरण के हर सूत्र का पूरा साफ्टवेयर विकसित कर लिया है।

विभाग का दावा है कि इस साफ्टवेयर के सहारे सस्कृत का हर शब्द रूप और धातु रूप तैयार किया जा सकता है। इसके लिए सम्पूर्ण पैकेज विकसित कर लिये गये हैं।

विभिन्न विश्वविद्यालयो और सस्थानो मे सस्कृत तथा अन्य भारतीय भाषाओ का साफ्टवेयर तैयार करने के प्रयास चल रहे हैं। संस्कृत कम्प्यूटर कार्यक्रम मुख्यत पुणे स्थित इलेक्ट्रानिकी विभाग के सस्थान सी डेक द्वारा तयार किये गये हैं। पिछले तीन वर्ष के दौरान संस्कृत से सबधित परियोजनाओ के लिए सरकार ने ५८ १२ लाख रुपये की राशि उपलब्ध कराई।

सस्कृत कम्प्यूटर परियोजनाओ के तहत अबतक हुई उपलब्धियो मे सस्कृत भाषा के मूल पाठ का पूरा विकास शामिल है। इसमे आठ लाख से भी अधिक अविकारी शब्दो का पाठ रखा गया है।

इलेक्ट्रानिकी विभाग के अनुसार शब्द भेद के सबध मे सस्कृत वाक्यो का विश्लेषण करने के लिए पद परिचय भी विकसित कर लिया गया है और लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय सस्कृत विद्यापीठ नयी दिल्ली में बी एड के विद्यार्थियो के लिए कम्प्यूटर शिक्षण को एक विषय के रूप मे शामिल किया गया है।

उल्लेखनीय है कि अमेरिका कम्प्यूटर वैज्ञानिको ने १९८५ मे अपने अनुसधान के बाद यह दावा किया था कि सस्कृत सर्वश्रेष्ठ कम्प्यूटर भाषा सिद्ध हो सकती है क्योकि यह नियमो पर आधारित भाषा है। इलेक्ट्रानिकी विभाग ने १९८६ मे पाणिनि व्याकरण के अभिकलनात्मक प्रतिपादन तथा मशीनी अनुवाद के लिए सस्कृत भाषा पर काम शुरू किया था। —दैनिक ट्रिब्यून

गांव गोरछी में पुन शराबबन्दी लागू

ग्राम बालसमन्द १६-३-९३ से ठेके के सामने धरणा देने के बाद गाव गोरछी के मा० चार्रसिंह आर्य तथा फूलसिंह आर्य के अनुरोध पर १० अप्रैल को धरना सचालक श्री अनरसिंह आय क्रान्तिकारी गोरछी गया। सारा गाव इकट्ठा किया। शराबबन्दी पर सुझाव दिए, गाव मे शराबबन्दी लागू हो गई। दो तीनो के जुर्माना भी लगा। श्री कुन्जाराम के लडके ने शराब पीकर साथ दण्ड न देकर बन्दी तोड दी। पचायत पुन धरणे पर बालसमन्द आई क्रान्तिकारी जी मे पुन गाव गोरछी मे आने का आग्रह किया। बालसमन्द के १० बुजुर्गो को साथ लेकर क्रान्तिकारी जी जीप द्वारा गोरछी २२-४-९३ को पहुचे। पुन गाव इकट्ठा किया। कुन्जीराम को धमकाया समझाया। उन्हाने क्षमा मागी और पुन ऐसी गलती न करने का आश्वासन दिया, सारे गाव ने दण्ड। के साथ शराबबन्दी लागू की। वापिस आते समय ग्राम गालवाम कला मे भी सरपच व नम्बरदारो को इकट्ठा करके गाव मे शराबबन्दी लागू सख्ती मे करने पर बल दिया। शराब से होने वाले नुकसान से लोगो को अवगत कराया। दोनो गावो मे सभा उपदेशक श्री क्रान्तिकारी जी श्री दीवानसिंह आय महाशय रामजीलाल आय ने बालसमन्द के ठेके से गाव में अवश्य शराब न डलवाने व बेचने को, प्रार्थना का साथ मे धरणे पर पूर्ण सहयोग का आग्रह किया।

—रणसिंह प्रधान आयसमाज गोरछी

यति मण्डल की बैठक

२९, ३०, ३१ मई १९९३ को गुरुकुल आबू पवत के वार्षिकोत्सव के समय यति मण्डल की बैठक होगा। यति मण्डल के सभी सदस्यो से विनम्र निवेदन है कि बैठक मे पधारने की कृपा कर, जिससे आयसमाज की प्रगति की योजना मे कृतसकल्प होकर जुट सक।

—सर्वानन्द सरस्वती
अध्यक्ष यति मण्डल
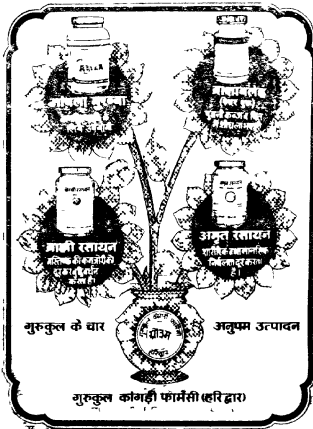
शराबबन्दी सत्याग्रहियो ने बेरी मे रास्ता रोका

जिला रोहतक के ऐतिहासिक कस्बे मे काफी दिनो से शराब के ठेके पर धरना चल रहा है। पुलिस द्वारा शराब के ठेकेदार के साथ मिली-भगत के कारण सत्याग्रही नाराज हैं। दिनाक ९ मई को आर्यसमाज, कादियान खाप तथा भारतीय किसान यूनियन के कार्यकर्त्ताओ की एक हगामी पचायत का आयोजन किया गया।

पचायत मे बेरी विधान सभा के सदस्य श्री ओमप्रकाश बेरी ने कहा कि प्रदेश की जनता शराबविरोधी आन्दोलन मे सघर्ष कर रही है अत सरकार जनता की भावना के विरुद्ध शराब के ठेके नही चला सकेगी। हरयाणा शराबबन्दी समिति के सयोजक श्री विजयकुमार ने कहा कि यहा की ग्रामीण जनता शान्तिपूर्ण ढग से एक अप्रैल से शराब के ठेको पर धरना दे रही है। यदि सरकार ने शराब से आमदनी कमाने के लालच से शराबबन्दी सत्याग्रह को दमनचक्र चलाकर असफल करने का प्रयास जारी रखा तो इसके परिणाम अच्छे नही होगे। सभा के प्रधान प्रो० शेरसिह ने शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए बधाई दी कि अन्तिम विजय सत्य की होगी। आपने आन्ध्रप्रदेश की महिलाओ का उल्लेख करते हुए बताया कि वहा की महिलाओ ने सगठित होकर शराब के ठेको की नीलामी को असफल कर दिया।

इसी प्रकार हरयाणा की महिलाओ को भी कूदना होगा और शराब के ठेकों पर धरने देकर शराब की बिक्री बन्द करवाकर इस बुराई को समाप्त करना चाहिए। इस अवसर पर श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने पचायत मे उपस्थित कार्यकर्त्ताओ को अपना आशीर्वाद देते हुए कहा कि शराबबन्दी का आन्दोलन जनकल्याणकारी है अत जो भाई बहन इस आन्दोलन मे सम्मिलित हो रहे हैं, वे यश के भागी-दार हैं। आपने इतिहास के उदाहरण देते हुए बताया कि बडे-बडे राजा नवाब तथा जमीदार शराब के नशे मे फसकर बर्बाद हो गये। अत इस शराब की बुराई को जड से मिटाकर परोपकार का कार्य हमे तन, मन तथा धन से करना चाहिए। आपने श्री भजनलाल की आलोचना करते हुए उन्हे सावधान किया कि आर्य जनता ने नवाब हैदराबाद, लोहारू तथा सरदार प्रतापसिह कैरो जैसे कठोर मुख्यमत्री के छक्के छुडा दिये थे। श्री भजनलाल को अन्त मे पछताना पडेगा और अपने दामाद के स्वाथ के कारए हरयाणा की जनता को जहर पिलाने के दोष का नतीजा भुगतना पडेगा। अत आज इस पचायत मे निश्चय करो कि बेरी का शराब (जहर) का ठेका बन्द करवाने के लिए बडे से बडा बलिदान देना है। पचायत तथा जनशक्ति के सामने सरकार को झुकना पडेगा।

पचायत मे सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास करते हुए सरकार से माग की गई की बेरी के थानाध्यक्ष को तुरन्त बदला जावे। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए सत्याग्रहियों ने तीन घटे तक रास्ता रोक दिया।

माता पातोदेवी जी को श्रद्धांजलि

सभा प्रधान प्रो० शेरसिह जी, हरयाणा शराबबन्दी समिति के सयोजक श्री विजयकुमार जी, बेरी क्षेत्र के विधायक श्री ओमप्रकाश बेरी तथा न्यू बैंक आफ इण्डिया के मैनेजर श्री राजेन्द्रकुमार जी की पूज्य माता जी श्रीमती पातोदेवी जी को दिनाक ९ मई ९३ को प्रात ९ बजे ग्राम बाघपुर जिला रोहतक मे यज्ञ की कार्यवाही के पश्चात् भावभीनी श्रद्धाजलि दी गई। इस अवसर पर उनका सारा परिवार तथा रिश्तेदारो के अतिरिक्त निकट के आर्यसमाज के हजारों की सख्या मे कार्यकर्त्ता उपस्थित थे। श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री डा॰ धर्मपाल जी, गुरुकुल कागडी विद्या सभा के मन्त्री प्रो० प्रकाशवीर विद्यालकार, आर्यसमाज थानेसर के प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री धर्मपाल गोयल, श्री धर्मचन्द मोरवाले, डा० सोमवीर सभा उपमन्त्री, सर्वहितकारी के सम्पादक श्री वेदव्रत शास्त्री, सभा अन्तरग सदस्य मा० फतेहसिह भण्डारी, श्री भरतसिह पूर्व सरपच दूबलधन, प्रि० लाभसिह पानीपत आदि भी उपस्थित थे। यज्ञ के पश्चात् श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने उपस्थित नर-नारियो को सम्बोधित करते हुए बताया कि माता पातोदेवी जी धार्मिक तथा सामाजिक महिला नेता थी। उन्होंने अपने पति श्री सीताराम जी के साथ स्वतन्त्रता सग्राम तथा आर्यसमाज के सभी आन्दोलनो मे भाग लिया। उनके तप त्याग के कारण ही उनके परिवार ने आर्यसमाज तथा समाज सुधार के कार्यों मे बढ़ चढकर भाग लेने की प्रेरणा तथा शक्ति प्राप्त की।

प्रो० शेरसिह ने सभी को धन्यवाद देते हुए आभार प्रदर्शित किया और कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी के सन्देश के अनुसार हरिजन भाइयो के लिए कुआ बनवाया था और जात के बाहर होना पडा था। हमारा सारा परिवार अपने माता पिता उनके आदर्शों पर चलाता रहेगा। श्रद्धाजलि समारोह के पश्चात् सभी ने सहभोज में भाग लिया।

केदारसिह आर्य

महानगरी दिल्ली के जवाहरनगर में पातञ्जल योगमहाविद्यालय का शुभारम्भ

वैदिक धर्म प्रेमी सभी आर्य भद्रपुरुषों को यह जानकर हर्ष होगा कि योगनिष्ठ स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक के शिष्य आर्य युवा दार्शनिक विद्वान् आचार्य अर्जुनदेव जी वर्णी के द्वारा आषाढ पूर्णिमा सं० २०५० तदनुसार ३ जुलाई १९९३ से तीन वर्ष पर्यन्त मेधावी आर्य युवा, विरक्त, आर्ष विद्या जिज्ञासुओं को आर्ष (ऋषि) शैली से योग साङ्ख्य, न्याय वैशेषिक व वेदान्त दर्शनो के अध्यापन के साथ-साथ अन्य ऋषि प्रणीत ग्रन्थों को पढाया तथा क्रियात्मक योग प्रशिक्षण भी दिया जायेगा।

प्रारभ मे छात्र सङ्ख्या लगभग दस होगी। योग्यता स्नातक स्नातकोत्तर शास्त्री व आचार्य अथवा इनके समकक्ष हो। श्री आचार्य जी के कुलाधिपतित्व व सरक्षकत्व मे एक गुरुकुल वैदिक साधनाश्रम तपोवन (देहरादून) उ०प्र० २४८००८ में सम्यक्तया चल रहा है जिसमे व्याकरण शास्त्रो का अध्ययन होता हैं। प्रवेशार्थी निम्न पते पर सम्पर्क करे।

सम्पर्क का पता—	निवेदक
१) आचार्य अर्जुनदेव वर्णी ३१ यू बी जवाहर नगर दिल्ली—११०००७ दूरभाष २९१२५४७	अग्निहोत्री धर्मार्थ ट्रस्ट, प्रयाग निकेतन ३१ यू बी जवाहरनगर दिल्लो—११०००७
२) आर्ष विद्या गुरुकुल तपोवन, (देहरादून) उ०प्र० २४८००८ दूरभाष २२७९७	

विशेष ध्यान योग शिविर

पातंजल योगधाम आर्यनगर, ज्वालापुर हरिद्वार

दिनांक १ जून से १३ जून ९३ तक

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता मे ध्यान योग शिविर का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें मौन साधना का विशेष अभ्यास एव योग दर्शन का क्रमिक अध्ययन कराया जाएगा। अत साधक-साधिका १ जून सायकाल तक योगधाम पहुचकर शिविर से लाभ प्राप्त करें।

दो अध्यापकों की आवश्यकता

गुरुकुल आर्यनगर (हिसार) हरयाणा मे एक ऐसे संस्कृत-अध्यापक की आवश्यकता है जो गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की विद्याधिकारी एव शास्त्री कक्षाओ को अधिकार के साथ पढाने में समर्थ हो। इसके अतिरिक्त एक विज्ञान के अध्यापक की भी आवश्यकता है, जो नवमी एव दशमी कक्षाओं को विज्ञान एवं गणित पढा सके।

वेतनादि का निर्णय मिलने पर ही किया जायेगा। प्रार्थी महानुभाव निम्नलिखित पते पर पत्र व्यवहार करे अथवा मिले।

आचार्य

गुरुकुल आर्यनगर—पो०-आर्यनगर जिला-हिसार १२५००१

मैं मद्यपान क्यों नहीं करता ?

—डा० हरिश्चन्द्र, बी टेक, पी एच डी (यू एस ए)
१० नौहा, १४१ लल्लानगर, पुणे-४११०४०

मैं दो व्यक्तिगत अनुभव प्रस्तुत कर रहा हू जिनसे पाठको को मद्यपान न करने विषयक कुछ तथ्य व तर्क प्राप्त होने की आशा है।

तथ्य अनुभव मेरे चार वर्षों के जर्मनी-प्रवास मे घटित हुआ था। सम्भवत आप जानते होगे कि बीयर वहा का राष्ट्रीय पेय है। जर्मन लोग बडे शौक से बीयर पीते हैं—बडे मग भरकर। उन्हे अपनी बीयर की गुणवत्ता पर गर्व है। इन्ही कारणो से अन्यदेशीय बीयर निर्माता कम्पनिया भी जर्मन कम्पनियो के सहयोग से बीयर उत्पादन मे लगी हैं। भारत मे भी ऐसा हो रहा है।

जर्मनी मे अक्टूबर मास मे सर्वत्र (हर नगर, कस्बे, ग्राम मे) मेले का आयोजन होता है जिसे "ओक्टोबरफेस्ट" (अक्टूबर का मेला) कहते हैं। इस मेले मे बीयर पीने की परम्परा है। जर्मनी के दक्षिण मे स्थित बावारिया नामक प्रान्त का ओक्टोबरफेस्ट और वहा की बीयर अधिक प्रसिद्ध माने जाते हैं।

मेरे जर्मन-मित्र मेरी भोजन सम्बन्धी रुचियो के बारे मे जानते थे व उनका सम्मान भी करते थे। एकबार मे ओक्टोबरफेस्ट देखने गया। वहा मेरे एक मित्र ने अपने एक मित्र से परिचय कराया। मेरी रुचियों से परिचित न होने के कारण उन्होने मेरे सम्मुख बीयर प्रस्तुत की। मैंने शिष्टतापूर्वक लेने से मना कर दिया। उन्होने मेरी ओर देखते हुए आश्चर्य सहित पूछा—अरे आप बीयर नही पीते हैं। मैंने नकारात्मक उत्तर दिया। इस पर भी उन्होने वार्ता को मोड नही दिया। मेरे मित्र भी कुछ शर्मिन्दा हो रहे थे। उनके मित्र कहने लगे—"बीयर तो हमें बहुत अच्छी लगती है। आप पीकर देखिये। "अब तो बात आगे बढ गयी थी, मुझे उत्तर देना ही पडा। मैंने कहा—जिसकी गंध ही बुरी हो उसे पीकर क्या देखूं। उनका मुह कुछ लटक गया पर उन्होने पूरी तरह से हार नही मानी। तब मैंने कहा—"ईश्वर ने हमे इन्द्रिया दी हैं—ज्ञान प्राप्त करने के लिए। इन्द्रियो के द्वारा हम वस्तुओं के गुण/अवगुण का ज्ञान प्राप्त करते हैं व फिर उसके उपयोग के बारे में विचार करते हैं। जो वस्तु देखने मे, सूघने मे, स्वाद में अच्छी हो उसी को खाने पीने के बारे मे विचार किया जा सकता है। बीयर तो नासिका के पास आते ही दुर्गंध पैदा करती है—उसे ओठो तक ले जाने का प्रश्न ही नही उठता।" अब तो उन्हें निरुत्तर ही होना पडा।

द्वितीय अनुभव पिछले दिनों भारत मे घटी एक घटना से सम्बन्धित है। इस घटना का वृत्तान्त लिखने से पूर्व पाठको को यह बताना आवश्यक प्रतीत होता है कि आजकल इथेनोल व मिथेनोल (अर्थात् क्रमश इथायल अल्कोहल व मिथायल अल्कोहल) का कार इंजिन मे ईंधन के रूप मे प्रयोग करने के बारे में विभिन्न देशो में प्रयोग किये जारहे हैं। ब्राजील में तो लगभग पन्द्रह वर्षों से कारें इथेनोल से ही चल रही हैं। यह भी जानना आवश्यक है कि सामान्यत जो शराब पी जाती है उसमें इथेनोल ही प्रमुख पदार्थ है। अर्थात् इथेनोल नशीला पदार्थ है। जबकि मिथेनोल अधिक नशीला होने के साथ-साथ विषैला भी है। जब जब जहरीली शराब से लोगों के मरने की घटना घटती है तो अधिकत मिथेनोल के ही कारण घटती है। मिथेनोल की १०० मिली लीटर की मात्रा भी पीने वाले शराबी को तेज नशे की स्थिति मे डाल देती है और उसकी जान लेने के लिए पर्याप्त है।

इथेनोल को लोग कार में डालने के बजाय पीने न लगे। इसको ध्यान में रखते हुए ब्राजील के पेट्रोल पम्प में जो इथेनोल बिकती है उसमे कुछ रासायनिक पदार्थ मिला दिये जाते हैं जिसके कारण यदि इस इथेनोल को कोई पीने का यत्न करेगा तो उसे उल्टी होने लगेगी।

इथेनोल या मिथेनोल सम्बन्धी जानकारी के बाद मेरे द्वितीय अनुभव को सुनिये। एक रात्रि पार्टी मे सब शराब पी रहे थे, मे भी वहां उपस्थित था। अधिकतर लोग जानते थे कि मैं शराब नहीं पीता किन्तु दो-तीन नये लोग भी थे जिन्हें यह बात नहीं मालूम थी। उन्होने शराब के हल्के नशे में मेरे द्वारा शराब न पीने के बारे में मुझसे पूछ-ताछ की—कुछ मजाकिया अन्दाज मे। मैने भी उसी अन्दाज में उत्तर दिया—अब जबकि ये पदार्थ कार जैसी इन्जीनियरिंग वस्तु को चलाने के काम आ रहे हैं। मनुष्य के शरीर मे उडेलकर हमे मानव शरीर का इतना अवमूल्यन नही करना चाहिए। प्राय सब लोग इन्जीनियरिंग क्षेत्र से सम्बद्ध थे—सब मेरा सकेत समझकर खिसियाकर रह गये। किसी को कुछ नही सूझा व निरुत्तर हो रहना पडा।

आर्यरत्न श्री मोहनलाल मोहित

(तीसरे पेज का शेष)

और कार्यों को दर्शाया गया है साथ ही आर्यसमाज के प्रति राष्ट्रीय सामाजिक और आर्थिक जीवन मे सक्रिय योगदान सहायता और मार्गदर्शन के बारे मे प्रकाश डाला गया है।

इस भव्य कार्यक्रम मे श्री आनन्द प्रिया निबूर भारत मे मौरीशस के उच्चायुक्त ने विशेष अतिथि के रूप मे भाग लिया। उन्होने हिन्दी मे भाषण देते हुए कहा कि वे स्वय एक आर्यसमाजी परिवार के व्यक्ति हैं और उन्होने हसराज कालेज से शिक्षा प्राप्त की। उन्होने कहा कि मोहित जी के नेतृत्व मे आर्यसमाज ने मोरीशस मे भारतीय सस्कृति का ही प्रसार नही किया अपितु उस देश की सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक प्रगति मे बहुत बडा योगदान दिया। मौरीशस के लोगो को श्री मोहित जी पर गर्व है।

इस अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ की ओर से प्रो० शेरसिह प्रधान, प्रो० वेदव्यास उपप्रधान, श्री सत्यानन्द आर्य महामन्त्री एव डा० कपिलदेव द्विवेदी उपस्थित थे।

के०एल० भाटिया सगठन मन्त्री

आर्यसमाज पिंजौर (अम्बाला) का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

१५ से १८ अप्रैल ९३ तक बडी धूमधाम से मनाया गया जिसमे मुख्य वक्ता श्री वेदप्रकाश आचार्य जी के प्रवचन तथा उपदेश समय-समय पर होते रहे और आर्य प्रतिनिधि के हरयाणा के भजनोपदेशक स्वामी देवानन्द तथा मरारीलाल बेचैन के मधुर भजनो से जनता प्रभावित रही। सभा को ६०० दान दिया १८-४-९३ को ऋषि लगर मे हजारो स्त्री पुरुषो ने भोजन किया। —मन्त्री

रुकिये—शराब के सेवन से परिवार की बर्बादी होती है। अत. अपने निकट के शराब ठेको पर अपने साथियो सहित धरणे पर बैठकर शराब-बन्दी लागू करावें।

आर्यसमाजों के नाम आवश्यक परिपत्र

श्री प्रधान जी/मन्त्री जी सप्रेम नमस्ते। महान् देशभक्त, मातृभूमि के रक्षक और आर्य संस्कृति के पोषक मेवाड़ केसरी महाराणा प्रताप की जयन्ती मनाने का सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिल्ली के लालकिला मैदान मे २३ और २४ मई १९९३ से वृहद् यज्ञ के साथ शुभारम्भ किया जा रहा है। महाराणा प्रताप के शौर्य, देशभक्ति एवं बलिदानो के अनूठे उदाहरणो से आर्य जाति श्रद्धानत होकर उन्हें आदर के साथ स्मरण करती है। आज की विषम परिस्थितियो मे उस राष्ट्र शिरोमणि महापुरुष के जीवन मूल्यो से देशवासियो का मार्ग दर्शन करने और अपने पूर्वजों के शौर्य और राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा प्रदान करने की बडी आवश्यक्ता है। इसीलिए आर्यसमाज ने उस राष्ट्र नायक और आर्य जाति के कुलदीपक महाराणा प्रताप की जयन्ती का शुभारम्भ करने का निर्णय लिया।

२३ मई १९९३ को प्रथम दिन का कार्यक्रम प्रात ७ ३० बजे वृहद् यज्ञ के साथ प्रारम्भ होगा, जिसमे महाराणा प्रताप के वशज और मेवाड के वर्तमान महाराणा महेन्द्रसिह मेवाड अपने हाथो से प्रथम आहुति अर्पित करेगे। उनके साथ उदयपुर के सेठ हनूमान प्रसाद चौधरी जिन्हे भामाशाह का प्रतीक माना जाता है, तथा भील जाति के वशज जिनके पूर्वजो ने महाराणा प्रताप का अपने हाथो से तिलक किया था, भी इस अवसर पर उपस्थित रहेगे। २४ मई को पूर्णाहुति का कार्यक्रम सम्पन्न होगा।

मैं पिछले सप्ताह स्वय उदयपुर और चित्तौड गया था वहा महाराणा महेन्द्रसिह मेवाड तथा अन्य कई महानुभावो से भी मिला था। मैंने चित्तौड का ऐतिहासिक किला तथा महारानी पद्मिनी के जौहर स्थल को भी देखा। समूचे राजस्थान मे आर्यसमाज द्वारा राष्ट्र नायक महाराणा प्रताप की जयन्ती मनाने के कार्यक्रम से बहुत बडा उत्साह दिखाई दे रहा है।

अत आपसे निवेदन है कि आर्यसमाज के इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अधिक से अधिक सख्या मे भाग लेने के लिए २३ और २४ मई के लिए अभी से व्यवस्था बना ले और हमे यह भी सूचित करें कि आपके वहा से कम से कम कितने भाई बहन कार्यक्रम में पहुच रहे हैं।

आनन्दबोध सरस्वती

बालसमन्द धरने पर वेदप्रचार

दिनाक १९-३-९३ से बालसमन्द (हिसार) में सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी के नेतृत्व में ठेके पर धरना सफलता पूर्वक चल रहा है। गांव के नवयुवक तथा बुजुर्ग धैर्य से हिम्मत के साथ धरने पर बैठे हुये है। लोगो मे काफी उत्साह है जब तक ठेका बन्द नहीं होता धरना जारी रहेगा। ठेकेदार बुरी तरह डरा हुआ है। आए दिन नवयुवक किसी न किसी शराबी को चावरी पहनाकर जुलूस निकालते है ९० प्रतिशत लोगों का माहौल धरने के समर्थन में आगया है। पचायत के अतिरिक्त सभी गाव के नर नारियों तथा बच्चो की यही आवाज आती है कि यह पाप का अड्डा खत्म होना चाहिए। नवयुवकों ने धरना देकर बहुत सराहनीय कार्य किया। हम तन मन धन से सहयोग करेंगे।

दिनाक १९-२०-२१-२२ अप्रैल तक प० सुमेरसिंह व ईश्वरसिंह की भजन मण्डली तथा स्वामी देवानन्द व प० मुरारीलाल बेचैन की भजन मण्डली द्वारा शराबबन्दी पर प्रभावशाली भजन हुये। लोगों ने भजनोपदेशकों की भूरि भूरि प्रशंसा की। प्रचार में फसल का समय होते हुए भी सैकड़ों की सख्या में लोग पधारे, साथ में बच्चों ने प्रति दिन साय काल गांव में शराबबन्दी नारे लगाकर शराबबन्दी अभियान को तेज कर दिया है। प्रत्येक बच्चे की जुबान पर यह बात है कि ठेके दार भागेगा भाई भागेगा। शराब का ठेकेदार देश का गद्दार, शराबी गुण्डे हाय हाय, आर्यसमाज अमर रहे, चौ० अतरसिंह जिन्दाबाद आदि नारों से आकाश गु जा रहा है।

—मा० भीमसिंह प्रधान, शराबबन्दी समिति, बालसमन्द

कैसे सपरी

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

दर पै दारू की दुकनिया कैसे सपरी।
कैसे सपरी ओ रामा कैसे सपरी। दर

मेरे घर के खुला सामने एक ठेका सरकारी।
लम्बी लम्बी लाइन लगे शोर शराबा जारी॥
गडे स्वागी भाट नचनिया - कैसे सपरी॥१॥

क्या मजदूर किसान सभी ने प्रीति इससे जोडी।
सारे कुआ में भाग पडी है पी रहे होडा होडी॥
खाय रहे मुर्गी, मीन, बकरिया कैसे सपरी॥२॥

देवी जागरण वाले पीवे चण्डी के पुजारी।
नेता भी रिश्वत मे लेता बोतल एक करारी॥
समझो झूठी ना कथनिया कैसे सपरी॥३॥

यह पतनकारी हत्यारी दारू है दुखदाई।
धन धरती सारी घर खाई बीवी यों बरबाई॥
मेरी बेच दई पैंजनिया - कैसे सपरी॥४॥

दूध दही मक्खन नही भावें दारू पी इतरावे।
सारा दूध दूधिया ले जाय बिस्कुट चाय उडावें॥
टग रही खूटी से मथनिया कैसे सपरी॥५॥

भजन

टेक—पीनेवालो मन समझा लो
करलो मन मे आस, यो ठेका ठाणा से।

१ बहुत दिना त देख रहे सा दारू की बीमारी नै
बिमारी मैं के कसर या खोदे जिन्दगी सारी नैं
अतरसिंह कवारी के न धरणा दिया स खास
यो ठेका ठाणा सै।

२ बहुत जने तो पीके दारू करते खाडे देख लिए
घस मैं घुसा लात मे लाता ऊत लुगाडे देख लिए
कति उघाडे देख लिए वे करते गात का नास
यो ठेका ठाणा से

३ दारू पिवणिया मानस पीवा इज्जतदार रह कोन्या
ठेके सारे उठ ज्या तो ठेकेदार रह कोन्या
मैंने गलत विचार कहे कोन्या या बात कही सै खास
यो ठेका ठाणा सै।

४ हरयाणे में खबर फैलगी दारू बन्द करावै की
सबके मन मैं खुशी हुई बा कुन्दीलाल तेरे गाने की
दारू बन्द कराने की मेरे दिल में लागी चाव
यो ठेका ठाणा सै।

प्रेषक— शराबबन्दी समिति बालसमन्द

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक [illegible] द्वारा [illegible] प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन [illegible]) में [illegible] सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, गोहाना रोड, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० ०/७३२३२ रजि० न० P/RTK-४६

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २० अंक २६ २१ जून, १९९३ वार्षिक शुल्क ४०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति ८० पैसे

वेद में "वेद" के तीन शरीर

(स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, गुरुकुल कालवा)

वेद के तीन शरीर 'ऋक, साम और यजु' संसार की किसी भी भाषा को लीजिये उसमे आपको गद्य, पद्य और गान मिलेगे। जो वर्णों अथवा मात्राओं के विचार से छन्दोबद्ध भाषा हो, उसे 'पद्य' कहते हैं। वैदिक परिभाषा मे उसे 'ऋक्' या ऋचा कहते हैं। जो गायी जा सके उसे गान=गेय=गीति कहते हैं। वैदिक परिभाषा मे उसे 'साम' कहते हैं। गान और पद्य अर्थात् साम और ऋक् से भिन्न भाषा रचना को 'गद्य' कहते हैं। वेद वाले उसे 'यजु' कहते हैं। जैसा कि पूर्वमीमासा-दर्शन के कर्त्ता महर्षि जमिनि जी ने लिखा है—

तेषामृग् यत्रार्थवशेन पादव्यवस्था ॥(पू०मी० २।१।३५)

अर्थ—उन मन्त्रो मे से जिसमें प्रयोजन के कारण पाद व्यवस्था हो उसे ऋक् कहते हैं।

गीतिषु सामख्या ॥ (पू०मी० २।१।३६)

अर्थ—गीतियो को साम कहते हैं।

शेषे यजु शब्द ॥ (पू०मी० २।१।३७)

अर्थ—शेष=पद्य और गान=ऋक् और साम से व्यतिरिक्त को 'यजु' शब्द से पुकारा जाता है।

चारो वेदो मे तीन प्रकार की भाषा है। अत उसको 'त्रयी' भी कहते हैं। इससे यह तात्पर्य कदापि नहो कि वेद तीन हैं। वेद तो चार ही हैं।

जिसमे ऋचाओ की अधिकता है, उसको ऋग्वेद कहते है। जिसमे गद्य की मात्रा प्रचुर है, उसे यजुर्वेद कहते है। जिसमे गान का आधिक्य है, उसे सामवेद कहते है। ऋग्वेद मे केवल ऋक् -पद्य ही हो और यजुर्वेद मे केवल गद्य ही हो ऐसी बात नही। वरन् इनके अतिरिक्त भी हैं। विज्ञान कर्म, उपासना और ज्ञानकाण्डो के कारण वेद चार हैं। तृण से लेकर ब्रह्मपर्यन्त सब पदार्थो का विशिष्टज्ञान ऋग्वेद से मिलता है। कर्मों का नाना प्रकार के नित्य, नैमित्तिक एव काम्यकर्मो का बोध यजुर्वेद कराता है। उपासना तत्त्व का उपदेश सामवेद देता है। ज्ञान=सशयरहित ज्ञान का दान अथर्ववेद करता है। वेद के शरीर के विषय में ऋग्वेद १०।१०७।६ का निम्नलिखित मन्त्र देखिये—

तमेव ऋषि तमु ब्रह्माणमाहु-
र्यज्ञन्य सामगामुक्थशासम् ।
स शुक्रस्य तन्वो वेद तिस्रो
य प्रथमो दक्षिणया रराध ॥ ऋग्० (१०।१०७।६)

अर्थ—(य) जो (प्रथम) प्रधान मनुष्य (दक्षिणया) दक्षिणा के द्वारा निर्व्याज उत्साह के द्वारा (रराध) आराधना करता है (तम्) उसको (एव) ही (ऋषिम्) ऋषि (तम्) उसको (उ) ही (ब्रह्माणम्) ब्रह्मा कहते हैं, उसको ही (यज्ञन्यम्) यज्ञ का नेता=अध्वर्यु उसको ही (सामगम्) सामगान करने वाला=उद्गाता और उसी को ही (उक्थशासम्) उक्थ का कहने वाला=होता कहते हैं। (स) वह ही (शुक्रस्य) जीव के अथवा शुद्धिकारक वेद के (तिस्र) तीन (तन्व) शरीरो को (वेद) जानता है।

समीक्षा—यज्ञ मे ऋचाओ से जो काम करे उसे उक्थशास वा होता कहते हैं। यज्ञ का मुख्य काय सम्पादक ऋत्विक् अध्वर्यु कहलाता है। इस वेद मन्त्र मे उसे 'यज्ञन्' (यज्ञन्यम्) कहा है। यज्ञन का अर्थ है—यज्ञ का नेता, अध्वर्यु शब्द का निर्वचन करते हुए स्वय यास्काचार्य जी ने भी कहा है—अध्वरस्य नेता=अध्वर=यज्ञ का नेता। यज्ञ के सामग=सामगान करने वाले को 'उद्गाता' कहते हैं। सब वेदो और यज्ञ की सम्पूर्ण प्रक्रिया को जानने वाला ब्रह्मा कहलाता है।

'स शुक्रस्य तन्वो वेद तिस्र' वही (शुक्रस्य) शुद्धिदायक वेद के (तिस्र) तीन (तन्व) शरीरो को (वेद) जानता है।

इस मन्त्र मे वेद के तीन शरीरो का वर्णन किया है।

सर्वहितकारी के पाठको से

आज की महगाई मे भी आप सर्वहितकारी पत्र मगाकर पढते हैं, यह आपके आर्यसमाज के प्रति स्नेह को प्रकट करता है, क्योकि आप आर्य समाज की प्रगति, सफलता, हरा-भरा पन चाहते हैं। किसी की प्रगति, सफलता फसल को तरह जड को सीचने से ही हो सकती है, न कि पत्तो को पानी देने मे।

नि सन्देह भारत एक प्राचीन और विशाल देश है, भारत को तरह उस का साहित्य भी प्राचीन तथा विशाल है। पुनरपि यहा जितने मुंह उतनी बातो' वाली स्थिति दिखाई देती है। इस स्थिति को सामने रखकर ही महर्षि दयानन्द ने एक सुनिश्चित, सुसगति विचार धारा दी और इस को प्रचारित करने के लिए ही आर्यसमाज बनाया।

अत हम सब से पहले यह समझने का प्रयास करना चाहिए कि वह मूल तत्त्व कौन सा है? जिसको महर्षि ने दर्शाया है और जिसको अपना कर हमारे जीवन मे हरा-भरापन आ सकता है। तभी हम जड को सीचने वाली बात पूर्ण कर सकते है। इसीलिए ही छान्दोग्य उपनिषद् के ऋषि ने कहा है—सन्मूला सोम्यमा. सर्वा प्रजा ६,८४ अर्थात सारे विकास मूल के सजीव होने पर ही होते है। अत पाठको! आओ सर्वप्रथम मूल को समझे। प्रा० भद्रसेन (होशियार पुर) १४६०२१

आन्दोलन मे सक्रिय भाग लेने को अपील

युवाओ के सगठन डेमोक्रेटिव यूथ आर्गनाइजेशन (डी वाई ओ) के प्रातीय सगठन कामरेड राजेन्द्र सिंह ने युवाओ से अपील की है कि प्रदेश मे चल रहे शराब विरोधी आदोलन मे सक्रिय रूप से भाग लेकर आदोलन को मजबूती प्रदान करे।

यहा डी वाई ओ के कार्यकर्त्ताओ की एक सभा को सबोधित करते हुए श्री सिंह ने कहा कि प्रदेश मे मा-बहन कृषक व खेत मजदूर शराब के खिलाफ आन्दोलन कर रहे है, लेकिन शराब के ठेकेदार सरकार व प्रशासन से मिलकर जनता की इस जायज आवाज को दबाने पर आमादा है। ऐसी स्थिति मे जायज शराब विरोधी आन्दोलन को समर्थन देते हुए एक सच्चे स्वयसेवी की भूमिका निभाना ही युवा वर्ग की शान है। नभाटा समाचार

हरयाणा में ग्रीष्म अवकाश के आर्यवीर दल के शिविरों की बहार

आर्यवीर दल हरयाणा के अन्तर्गत हरयाणा प्रदेश मे ग्रीष्म अवकाश मे अनेको शिविरो का आयोजन प्रत्येक वर्ष किया जाता है। इस वर्ष भी हरयाणा के प्रत्येक जिले मे चरित्र निर्माण तथा आधुनिक व्यायाम प्रशिक्षण शिविरों की योजना बनाई गई जिसमे निम्नलिखित शिविर सफलता से चल रहे हैं।

दैनिक प्रशिक्षण शिविर रोहतक

आर्यवीर दल रोहतक नगर के अन्तर्गत रामप्रसाद बिस्मिल शाखा ने १ मई से ३० मई तक शिविर का नई अनाजमण्डी दैनिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया। इस शिविर का शुभारम्भ चौधरी विजय कुमार जी (पूर्व उपायुक्त) के उद्घाटन भाषण से हुआ। उन्होंने आर्य वीरों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्यवीर दल आर्यसमाज का भविष्य है। युवको को अपने चरित्र का निर्माण करते हुए नशीले पदार्थों के सेवन करने से बचना चाहिए। युवकों को समाज को शराब जैसी बुराइयो से बचाने के लिए प्रोत्साहित किया। शिविर के समापन समारोह के अवसर पर हजारो की सख्या पर नर-नारियो ने इकट्ठा होकर सुन्दर व्यायाम प्रदर्शन देखा। आर्यवीरो ने आसन, प्राणयाम, लाठी, भाला, मलखम, रस्सा मलखम तथा कराटो का सुन्दर प्रदर्शन किया। इस प्रदर्शन से जनता कालौनी, शुगर मिल कालोनी तथा हरीसिंह कालोनी मे एक नई चेतना पैदा हुई। लोगो ने प्रभावित होकर आर्य वीरो को भरपूर योगदान दिया। इस शिविर मे स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने आर्यवीरो का यज्ञोपवीत करवाया तथा ब्रह्मचर्य के पालन करने पर बल दिया।

आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर दयानन्दमठ रोहतक

आर्यवीर दल रोहतक नगर की ओर से तथा दयानन्द मठ, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के आशीर्वाद से ३१ मई से ६ जून तक दयानन्द मठ, रोहतक मे चरित्र निर्माण तथा आधुनिक व्यायाम का शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर का विधिवत उद्घाटन चौ० सूबेसिंह जी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के करकमलो द्वारा ध्वजारोहण से किया गया। इस अवसर पर डा० सुरेन्द्र कुमार (प्राध्यापक महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय) ने आर्यवीरो को सम्बोधित करते हुए चरित्र निर्माण और पुरषार्थी बनने की प्रेरणा दी। शिविर मे आर्यवीरो को स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती (मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान), प्रिंसिपल सत्यवीर जी शास्त्री, वेदप्रकाश जी साधक, प्रो० ब्रह्मदत्त जी आर्य, प० खेमसिंह जी तथा प० भूपेन्द्रसिंह की भजन मण्डली ने आर्यवीरो को बौद्धिक प्रशिक्षण दिया।

(मसालो से शराब के विरोध मे जलूस)

आर्यवीर दल रोहतक नगर की ओर से शराब के विरोध मे शनिवार रात्रि ८ बजे विशाल मसाल रैली निकाली गई जिसे देखने के लिए सारा शहर उमड पडा। इस मसाल रैली से सारे शहर मे शराब के विरुद्ध एक नई चेतना पैदा हुई।

इस शिविर का समापन समारोह श्री उमेदसिंह शर्मा प्रान्तीय सचालक आर्यवीर दल हरयाणा की अध्यक्षता मे हुआ। इस अवसर पर प्रो० ओमप्रकाश जी सहसचालक आर्यवीर दल हरयाणा का विदेश मे वैदिक शखनाद तथा आर्यसमाज के सन्देश को जन-जन तक पहुचाकर स्वदेश लौटने पर नागरिक अभिनन्दन किया गया।

आर्य प्रशिक्षण शिविर फरीदाबाद

२२ मई से ३० जून तक चरित्र निर्माण एवं आधुनिक व्यायाम शिविर दयानन्द महिला महाविद्यालय फरीदाबाद मे आयोजन किया गया। इस शिविर में आर्यवीरो को जूडो कराटे, आसन प्राणायाम, लाठी, भाला तथा जमनास्टिक का विशेष प्रशिक्षण दिया गया। शिविर का समापन समारोह आचार्य देवव्रत प्रधान सेनापति की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। आर्यवीरो ने अपना बहुत सुन्दर व्यायाम प्रदर्शन दिखाया जिसको देखकर लोग आश्चर्यचकित रह गये। इस शिविर को सफल करने मे सर्वश्री वेदप्रकाश जी बहल, अमरजीत जी सहगल, बलबीरसिंह मलिक तथा ओमप्रकाश व्यायाम आचार्य एव सभी आर्य जनों ने खुद सहयोग दिया। आर्यवीरों द्वारा मसालों के साथ शराब के विरोध चेतना रैली निकाली गई।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जिला फरीदाबाद मे आर्यवीर शिक्षक शिविर

२९ मई से ६ जून तक गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ मे दिल्ली आर्यवीर दल की ओर से प्रशिक्षण शिविर लगाया गया। समापन समारोह पर स्वामी आनन्दबोध जी तथा प्रो० शेरसिंह ने आर्यवीरो को सम्बोधित किया।

आर्यवीर शिविर भाण्डवा

जिला भिवानी के भाण्डवा गाव मे आर्यवीर दल की तरफ से २२ मई से ३० मई तक आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर श्री धर्मपाल जी धीर की अध्यक्षता मे आयोजित किया गया। इस शिविर से सारे गाव का वातावरण ही बदल गया। सारे गाव मे आर्यसमाज का प्रचार बडे उत्साह से किया गया। इस शिविर मे अनेको वैदिक विद्वानो तथा नेताओं ने आर्यवीरो को सम्बोधित किया। चौधरी विजय कुमार जी पूर्व उपायुक्त तथा चौधरी सूबेसिंह जी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने भी आर्यवीरो को शराब जैसी बुराइयो को समाप्त करने का आह्वान किया। आर्यवीरो को श्री सत्यवीर जी तथा पुरुषोत्तम जी ने प्रशिक्षण दिया।

आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर जीन्द

आर्यवीर दल जीन्द की ओर से जाट हाईस्कूल मे ३० मई से ६ जून तक आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया। इस शिविर का उद्घाटन स्वामी रतनदेव जी सरस्वती अधिष्ठाता आर्यवीर दल हरियाणा की अध्यक्षता मे माननीय डा० रामभक्त लाग्यान (एच०सी० एच०) के कर कमलो द्वारा हुआ। इस शिविर मे श्री उमेदसिंह जी शर्मा प्रान्तीय सचालक, वेदप्रकाश आर्य महामन्त्री, प्रो० ओमकुमार जी, कृष्णदेव जी शास्त्री इत्यादि ने आर्यवीरो को बौद्धिक प्रशिक्षण दिया। इस शिविर का समापन समारोह ६ जून को श्री रामसिंह जी यादव (पुलिस अधीक्षक) की अध्यक्षता मे होगा। शिविर मे योग्य शिक्षको द्वारा आर्यवीरों को जूडो कराटे, लाठी, भाला, दण्ड बैठक, प्राणायाम इत्यादि का प्रशिक्षण दिया गया।

आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर भिवानी

आर्यवीर दल भिवानी की ओर से २५ मई से २ जून तक आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर आर्य अनाथालय मे लगाया गया जिसमे आर्यवीरो को आर्यसमाज तथा आर्य सिद्धान्तो से परिचित कराया गया तथा उन्हें आसन, प्राणायाम, जूडो कराटे, लाठी, भाला इत्यदि का प्रशिक्षण दिया शिविर का समापन समारोह श्री उमेदसिंह जी शर्मा प्रान्तीय सचालक की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। आर्यवीरो का प्रदर्शन दर्शनीय रहा। शिविर को सफल बनाने मे श्री रामलाल जी आर्य तथा तथा विमलेश आर्य का विशेष योगदान रहा।

आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर करनाल

आर्यवीर दल करनाल की ओर से आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर ३० मई से ६ जून तक डी ए वी सीनियर सेकेण्डरी स्कूल करनाल में लगाया गया। इस शिविर का उद्घाटन श्री नागेन्द्र जी के द्वारा ध्वजारोहण के के साथ हुआ। शिविर में आर्यवीरों को आसन, प्राणायाम, जूडो, कराटे आदि का विशेष प्रशिक्षण दिया गया।

—वेदप्रकाश आर्य मन्त्री

हरयाणा में शराबबन्दी गतिविधियां

पटौदी मे भी शराबबन्दी आन्दोलन की हवा चली

पटौदी, अभी तक शराबबन्दी आन्दोलन से अछूते रहे खण्ड पटौदी मे भी शराबबन्दी आन्दोलन की हवा पहुंचने लगी है। गत दिवस खड के ग्राम हालियाकी मे खुले शराब के ठेके की शाखा को हटवाने के मुद्दे पर २२ गावो को एक पचायत राव सूरतसिंह की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। इस पचायत मे झज्जर गुरुकुल के स्वामी जीवानन्द तथा भगतूराम ने भी भाग लिया।

उल्लेखनीय है कि हालियांकी ग्राम, नूरगढ ग्राम स्थित आश्रम से काफी निकट है। इस आश्रम की इस क्षेत्र मे ही नही अपितु दूर-दूर तक काफी मान्यता है यहा लोग अध्यात्मिक शाति के लिए ही नहीं अपितु अपने रोगोपचार के लिए भी काफी सख्या मे आते रहते हैं। गत दिनो हालियाकी ग्राम पचायत के सरपच श्री छज्जूराम ने एक प्रस्ताव पास कर ग्राम मे तीन मास के लिए देसी शराब के ठेके की शाखा खोलने की अनुमति दे दी। आश्रम के निकट ठेका खोल दिये जाने से ग्रामवासियो को ही नही अपितु आसपास के गावो के निवासियो को भी बडा दुख हुआ। अत झट-पट में ११ ग्रामो के व्यक्तियो को पचायत मे सम्मिलित होने का न्योता भेज दिया गया परन्तु पहुच गये वहा २२ ग्रामो के निवासी।

इस पचायत मे अधिकाश व्यक्तियो ने एकमत हो सरपच एव ग्राम पचायत के सदस्यो के इस कृत्य की खुलकर भर्त्सना की तथा सरपच पर मिलीभगत का आरोप लगाया। कुछ व्यक्तियो ने ठेके की इस शाखा को हटवाने के लिए अविलम्ब ठेके की इस शाखा के सम्मुख धरना देने का सुझाव भी दिया। स्वामी जीवानन्द तथा अन्य अनेक गणमान्य व्यक्तियो ने सरपच तथा पचो से आग्रह किया कि वे पुन एक प्रस्ताव इस शाखा को बन्द करवाने के लिए पारित करें तथा ठेके की इस शाखा को बन्द करवाने के लिए उनके साथ सघर्ष मे सम्मिलित हो। इस पर सभी पच तो अपनी पूर्व गलती स्वीकार करते हुए ऐसे किसी भी प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करने को तैयार हो गये परन्तु ग्राम के सरपच इस बात अडे रहे कि तीन मास के लिए वो पचायत लिखकर दे चुकी है। अत अब तो वे कुछ कर सकने मे असमर्थ हैं लेकिन भविष्य मे ठेका खोलने की अनुमति नही दी जायेगी। उनके इस वक्तव्य पर पचायत मे सभी व्यक्तियो ने उनकी आलोचना की। पचायत के अध्यक्ष राव सूरतसिंह ने कहा कि ठेके में सम्मिलित एक व्यक्ति उनका रिश्तेदार है अत यदि सरपच चाहे तो बिना आदोलन ही ठेका उठाया जा सकता है। बाद मे भारी दवाब पडने पर श्री छज्जूराम ने आश्वासन दिया कि वे एक सप्ताह मे ठेके की इस शाखा को हटाने का पूरा प्रयास करेगे, एव यदि अपने इस प्रयास मे सफल न हो पाये तो फिर इस पचायत द्वारा प्रारम्भ किये सघर्ष मे वे स्वय सम्मिलित हो जायेंगे। उन्होने यह भी घोषणा की कि अब यदि किसी व्यक्ति ने शराब पीकर गाव मे बकवास की तो उस पर २५१ रु० जुर्माना किया जायेगा।

अब देखना यह है कि क्या उक्त सरपच अपने आश्वासन को पूरा करते हैं या उक्त शाखा को बद करवाने के लिये लोगो को धरने पर बैठने के लिये मजबूर होना पडता है अथवा यह मामला टाय टाय फिस्स होकर रह जाता है।

ठेके के विरुद्ध विशाल पचायत आयोजित

पलवल, मुडेर मण्डल के गाव बढा मे शराब के ठेके पर चल रहे अनिश्चितकालीन धरने के अन्तगत डागर पाल के तत्त्वाधान मे एक विशाल पंचायत आयोजित की गई। पचायत की अध्यक्षता पूर्व विधायक रामजीलाल डागर ने की। पचायत मे भारी सख्या मे महिलाए भी सम्मिलित हुई।

पचायत मे शराब विरोधी आन्दोलन को पूर्ण समर्थन देने की घोषणा की गई। इस बात का सकल्प लिया गया कि जब तक बढा गाव का ठेका बन्द नही किया जाता, तब तक आन्दोलन जारी रहेगा।

शराब के ठेकेदार द्वारा गाव-गाव मे शराब की पेटिया अवैध रूप से भेजने की पचायत मे कटु निंदा की गई। निर्णय लिया गया कि जिस भी गाव मे अवैध रूप से शराब की पेटिया पहुचेगी उस गाव के सभ्रात नागरिकों की देखरेख मे शराब की बोतले तोड दी जायेगी और पेटी ले जाने वाले को पेड से बाधकर पुलिस के हवाले कर दिया जायेगा।

पचायत मे इलाके के ५१ लोगो की एक शराब विरोधी सघष समिति का गठन किया गया। मडकोला गाव के एक महाशय किरोडी को इस समिति का सयोजक बनाया गया।

पचायत मे प्रस्ताव पास करके सरकार से माग की गई कि बढा गाव का ठेका यथाशीघ्र बद किया जाये, क्योकि इस ठेके के कारण इलाके मे अशाति फैली हुई है। कहा गया कि ठेकेदार के लोग अवैध हथियार लिए घूमते रहते हैं।

पचायत को विधायक कर्णसिंह दलाल, बार एसोसिएशन के पूर्व सचिव देवेन्द्र पाल डागर, भारतीय किसान यूनियन के जिलाध्यक्ष नारायणसिह उदलसिह सहरावत, फतहसिह सरपच, रणवीरसिंह सरपच, भजनलाल आर्य, मोहनसिंह जौहर खेडा आदि ने भी सबोधित किया।

पचायत के अवसर पर पौडरी गाव के एक शराबी ने ठेके से बोतल खरीद ली तो पचायत मे आई महिलाओ ने उससे बोतल तो छीनकर तोड दी, साथ ही उसकी बुरी तरह पिटाई भी कर दी। (नभाटा)

शराबबन्दी पर भजन

टेक—दारू के खिलाफ देश मे प्रचार हो रहया खासा।
पीणे और पिलावणिया के जो ने होग्या रासा॥

१ नशा बुरा है राष्ट्रहित मे कह गये महात्मा गाधी।
सिद्धान्त रूप मे म्हारे देश मे है इसकी पाबन्दी।
शिक्षा उनकी भुला देई सरकार हुई से अन्धी।
चमचे ठेकेदार बने और लूट रहे हैं चाँदी।
या जनता इसको अब ना चाहन्दी यो होगा तोड खुलासा।
चाल-चलन हो उच्चा देश का गर सहलो नुकसान जरासा॥

२ म्हारे गाव में शराब विरोधी धरना होग्या जारी।
शराब छोड के बैठन लागे यहा नवयुवक बारी-बारी।
फिर ठेकेदार की बिक्री मे नुकसान होग्या भारी।
इधर उधर पाव पटकण लाग्या ज्यू हारा हुआ जुआरी।
यो अतरसिंह क्रान्तिकारी बणग्या उसके लिये गण्डासा।
उसने प्यार मित्र भी छोड गये फेर देवे कौन दिलासा।

३ सारे पापड पेल लिये फिर थाणे मे रपट लिखाई।
थानेदार ने फक मे आके शहर ते पुलिस बुलाई।
गुण्डे छोड शरीफ पकड लिये कति शर्म न आई।
जनता की नजरो मे पुलिस ने अपनी छवि घटाई।
सारे भाई पकड लिये पुलिस ने देके झूठा झासा।
अभियान विरोधी राजी हो गये देख देख तमाशा।

४ रोष उमडग्या पूरे नगर मे जब पाटया इसका बेरा।
हजारो इकट्ठे हुए धरने पर तोड पुलिस का घेरा।
टस से मस ना हुई नारिया लालिया जोर भतेरा।
पार बसाई न [illegible] पुलिस ने ठालिया जल्दी डेरा।
यो मामूली सा बखेडा बणग्या खडाया काण्ड दिवासा।
साथी सारे छुटके आग्ये पलट गया यो पासा।

५ जन भावना ठुकरा के जो दुष्टो का पेट भरेगा।
इतिहास गवाही देता है वो उनके ही हाथ मरेगा।
नाम अमर हो उस नेता का जो नीच कम से डरेगा।
जो करता नही इज्जत किसी की उसकी कौन करेगा।
वो अधम नीच गिरेगा इसमे झूठ नही एक माशा।
हटके फिर न उभरेगा जब मिलती है घोर निराशा।

६ जब भी किसी जमाने मे धर्म पाप का दास हुआ।
लालच, मोह और घमण्ड के कारण सच्चाई का नाश हुआ।
महाभारत मे नीच कर्म का बिलकुल पर्दाफाश हुआ।
आखिर मे हुई जोत धम की पाप कम विनाश हुआ।
करण' कभी न हताश हुआ समझे जो जन की भाषा।
भगवान हमेशा पूरी करेगे सच्चे की अभिलाषा।

लेखक—मुख्य अध्यापक कर्णसिंह
ग्राम बालसमन्द, जिला हिसार

शिव सेना ने भी शराबबन्दी मुहिम का समर्थन किया

सोनीपत, हरयाणा शिव सेना ने भी शराब विरोधी आदोलन को समर्थन देने का ऐलान किया है और राज्य सरकार से माग की है कि जनहित को ध्यान मे रखते हुए प्रदेश मे शराबबन्दी लागू की जाए।

सेना के प्रातीय उप प्रमुख रामचन्द्र खत्री ने यहा जारी एक बयान मे कहा कि राज्य मे शराबबन्दी लागू होने से अनेक परिवार बर्बाद होने से बच सकते हैं। उन्होने कहा कि यदि शराबबन्दी से सरकार को आमदनी घटने का भय है तो दूसरे साधनो से आमदनी को बढाने के इन्तजाम करे। खत्री ने कहा कि शराब को बढावा देने से झगडे बढे हैं। खास तौर से युवा वर्ग पर इसका बुरा प्रभाव पड रहा है।

खत्री ने इस बात पर हैरानी जाहिर की कि कोई भी राजनैतिक पार्टी शराब विरोधी आदोलन को सहयोग नही दे रही, जबकि इस सामाजिक बुराई को खत्म करने के लिए विपक्षी दलो को आगे आना चाहिए।

उन्होने कहा कि जिला प्रशासन ने पिछले सप्ताह शराब विरोधी आदोलन मे भाग लेने के मामले को लेकर ग्राम सिसाना के सरपच रामफल दहिया को निलम्बित कर दिया। उन्होंने कहा कि ऐसा करना भजनलाल सरकार के लिए घातक सिद्ध होगा। उन्होंने आरोप लगाया कि रामफल दहिया का निलबन भजनलाल के इशारे पर हुआ हैं क्योकि वे शराब विरोधी आदोलन को कुचलना चाहते हैं।

खत्री ने यह भी कहा कि हरयाणा की जनता को पीने के पानी की जरूरत है, शराब की नही, पर सरकार का ध्यान शराब को बढावा देने की ओर है। उन्होने माग की कि गाव सिसाना के सरपच रामफल दहिया को तुरन्त बहाल किया जाए क्योकि उन्होने एक सामाजिक बुराई को खत्म करने मे भाग लेकर कोई बुरा काम नही किया।

बप्पा गाव से ठेका हटाने के लिए पचायत की अपील

सिरसा, सिरसा जिला के बप्पा गाव मे शराब का ठेका खोले जाने के विरुद्ध गाँव की पचायत ने शिकायत करते हुए माग की है कि उनके गाव से शराब का ठेका तुरन्त हटा लिया जाए।

उल्लेखनीय है कि गत एक मई को शराब का ठेका खोलने के कारण गाव के लोगो ने रोषस्वरूप शराब के ठेके पर तोड-फोड की थी इस पर शराब के ठेकेदार द्वारा गोलिया भी चलाई गई। इस पर शराब के ठेकेदार के विरुद्ध धारा ३०७ के अन्तर्गत मुकदमा दर्ज किया था।

गाव के सरपच किशनलाल का कहना है कि पंचायत की ओर से गाव मे ठेका न खोलने की माग के बावजूद सरकार ने जानबूझ कर गाववासियो को परेशान करने के लिए शराब का ठेका खोला है। गाव के सरपच ने कहा कि वे इसका विरोध करते रहेगे।

कई रोगों की एक दवा

लगभग १०० ग्राम नीम के पत्तो को पानी मे डुबोकर धोकर साफ कर लो। पत्तो का पानी सुखाने के लिए किसी साफ कपडे पर साफ जगह पर फैला दो। थोडी देर मे पत्तो मे से पानी सूख जाएगा।

पाव भर सरसो का तेल एक कडाही या भगोने मे लेकर आग पर रखो। इस तेल मे नीम के पत्तो को छोड दो। जब पत्ते तेल मे काले पड जाये तो तेल को आग पर से उतार लो ठण्डा होने पर निथार कर छान कर किसी साफ शीशी या बोतल मे भर लो। दवा तैयार है। चाहे तो इस तेल मे देशी कपूर को पीसकर और मिलालो। यह तेल कृमि नाशक है, जिसके निम्न लिखित गुण और लाभ है —

१ चर्म रोगो मे लाभकारी है खारिश खुजली को दूर करता है। नये दाद पर कई बार लगाने से दाद मिट जाता है। यह एक मरहम का भी काम करता है फोडे फुन्सी पर रुई से लगाओ।

२ सिर मे लगाने से जुए भाग जाती हैं।

३ बहते हुयें कानो को साफ करके दो तीन बू द डालते रहो तो कान बहने से बन्द हो जाते हैं।

४ आख पर उगने वाली गुहाजनी (फुन्सी) पर दो तीन बार लगाने से लाभ होता है।

५ जल जाने पर कपडे पर भिगाकर जलाओं और पट्टी लपेट दो, दो तीन दिन लगातार पट्टी बदलकर लगाने से आराम हो जाएगा।

देवराज आर्य मित्र वैद्य विशारद आर्यसमाज मन्दिर बल्लबगढ (फरीदाबाद)

हरी सब्जिया खाओ, कैंसर भगाओ

नई दिल्ली, भारत मे किये गये सर्वक्षणो से पता चला है कि विटामिन ए, सेलेनियम जस्ता और रिबोफ्लाविन जैसे सक्षम पोषक तत्व तम्बाकू सेवन से होनेवाले मुँह के कैंसर से बचाव करते हैं।

इन सर्वेक्षणो से निष्कर्ष निकलता है कि हरी सब्जियो और कुछ कद-मूलो से मुख्य तोर पर पाये जाने वाले इन सक्षम पोषक तत्वों में कैंसर प्रतिरोधी गुण होते हैं जिसके कारण ये तत्व कैंसर खास कर मुह के कैंसर से पूर्ण बचाव करने मे भूमिका निभाते हैं। भारतीय वैज्ञानिकों का सुझाव है कि ये तत्व कैंसर के रोकथाम के कार्यक्रमो मे काफी हद तक सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

अभी हाल मे हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पोषण सस्थान के तत्वावधान मे आध्र प्रदेश से श्री काकुलम जिले के ग्रामीण क्षेत्रो मे किये गये प्रारभिक सर्वेक्षण के दौरान सुट्टा चिलम पीनेवालो मे से ५० फीसदी लोगो के मुह के कैंसर के पूर्व लक्षण पाये गये। इन क्षेत्रो मे सुट्टा पीने की आदत आम है।

एक शोध रिपोर्ट के अनुसार इन लोगो को एक साल तक विटामिन ए, रिबवोफलाविन जस्ता और सेलेनियम से भरपूर आहार खिलाये जाने के बाद इनमे से अधिकाश लोगो मे मुह के कैंसर के लक्षण गायब पाये गए।

हरयाणवी को राजभाषा का दर्जा देने की माग

रोहतक, देशबन्धु छोटूराम मिशन द्वारा यहा के निकटवर्ती गाव मे हरयाणवी लेखको का राष्ट्रीय एकता और धार्मिक सद्भाव मे योगदान विषय पर लेखको का सेमिनार आयोजित किया। गुरुकुल झज्जर के सरक्षक स्वामी ओमानन्द सरस्वती सेमिनार के मुख्य अतिथि थे।

गोष्ठी मे प्रस्ताव पास करके माग की गई कि हरयाणवी साहित्य अकादमी अलग से स्थापित की जाए व पजाब मे पजाबी तरह हरयाणा मे हिंदी के साथ-साथ हरयाणवी को भी राजभाषा का दर्जा दिया जाए। माग की गई कि बिखरे हुए हरयाणवी साहित्य को इकट्ठा करके गुरुकुल झज्जर मे प्रदर्शित किया जाए व जिला और विकास खण्डो पर हरयाणा साहित्य अकादमी की ओर से लेखको का सेमिनार आयोजित किया जाए।

वक्ताओ ने कहा कि धार्मिक सद्भाव बनाए रखने मे लेखक अहम भूमिका अदा कर सकते हैं। कहा कि आज जब देश धम के नाम पर विभाजित हो रहा है लेखको की जिम्मेवारी और भी बढ जाती है।

आज कल

अब हवाएं क्या करेंगी, मच्छरों के शहर मे।
जब न हो महकूम कोई, हाकिमो के शहर में॥
दाना, खाने को नही और पोने को, पानी नही।
तुम कभी जाकर तो देखो ! निर्धनो के शहर मे॥
बुत बने बैठे मिलेगे, खुद खुदाओं के हजूम।
जाइए ! तुम इक दफा तो बुत-गरो के शहर मे॥
मिल सकता कभी ढूँढे से कातिल का पता।
सिर फिरे खुद फिर रहे हैं, कातिलो के शहर मे॥
है तुम्हारे दिल मे कुछ लोकेष्णा की भावना।
जा के पहले सीखिए, बाजीगरों के शहर मे॥
मैं ही मैं हू और कुछ मुझको नजर आता नही।
फस गया हू "नाज" यूँ जादूगरो के शहर में॥

(नाज सोनीपती)

सम्भल आर्य नौजवान !

तेरे प्यारे स्वतन्त्र भारत पर गैरो की नजर ना पडे,
सम्भल आर्य नौजवान ।
रणभेरी बजा दे क्रान्ति की तेरा शत्रु ना आगे बढे,
सम्भल आर्य नौजवान ।।टेक
वैदिक नाद बजा मानव ।
सबको पाठ पढा मानव ।।
मानव बन प्रत्येक दानव को मानव मार्ग दिखला मानव ।
हो आन-बान का अभिमान सदा चाहे सिंह भी सम्मुख लडे ।
सम्भल आर्य नौजवान ।।१
तू सच्चा देश पुजारी बन, दीन-दुखियो का हितकारी बन,
दयानन्द-श्रद्धानन्द-सुभाष ज्यो नौज्वा ब्रह्मचारी बन ।
हो देशभक्ति तेरे रग-रग मे मनमाला मे मोती जडे ।।
सम्भल आर्य नौजवान ।।२
कर्म सदा प्रधान रहे, कर्मवीर का जग मे मान रहे,
कर्मवीर कर्मों के बल से शत्रु का मेहमान रहे ।
आगे बढ तूफानो मे, चाहे आए सकट कडे ।।
सम्भल आर्य नौजवान ।।३
हो देश के लिए बलिदान सदा तो लोक-परलोक मे मान सदा,
कविगण अपनी कविता से करते हैं गुणगान सदा ।
लालचन्द खेडकी बन कमठ नित्य विपदा औरो की हडे ।।
लेखक—महात्मा लालचन्द "विद्यावाचस्पति"
श्री मगल जयकोश आध्यात्मिक ज्ञान आश्रम खेडकी (महेन्द्रगढ)

यदि आप हरयाणा मे पूर्ण शराबबन्दी लागू करवाना चाहते हैं तो अपने क्षेत्र के निकट के ठेको पर चल रहे धरणों मे सम्मिलित होवें।

हरयाणा को शुष्क राज्य घोषित करने पर विचार

गोहाना १५ जून (निस) भजनलाल सरकार आगामी वित्त वर्ष हरियाणा को "शुष्क" घोषित करने पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर रही है जिसके बाद सम्पूर्ण प्रान्त मे कही भी शराब की एक बूद तक नही बिकने दी जायेगी । यह महत्वपूर्ण जानकारी समाज कल्याण राज्यमन्त्री हुकम सिह दहिया ने स्थानीय श्री राम उच्च विद्यालय में नशा-मुक्ति केन्द्र, रोहतक के सहयोग से हरयाणा श्री राम युवा विकास परिषद द्वारा आयोजित "नशा-मुक्ति शिविर" के उद्घाटन के बाद पत्रकार सम्मेलन मे दी ।

प्रथम बार शराबबन्दी आन्दोलन का खुल समर्थन करने वाले राज्य के पहले मन्त्री दहिया ने बताया कि राजस्व की इस पग से होने वाली क्षति को पूर्ण करने के लिये अन्य स्रोतो का पता लगाया जायेगा जिसके लिए पूर्ण नशाबन्दी वाले बाकी राज्यो का मार्गदर्शन अर्जित किया जायेगा । उनके अनुसार शराबबन्दी के लिये जागृत समाज ने सरकार को उत्तर भारत मे दिशा मे सबसे पहले पहल करने के लिये प्रेरित किया है ।

श्री दहिया के अनुसार स्वय उनके निर्वाचन क्षेत्र रोहट के खरखोदा कस्बे मे अभी से अगले वर्ष कोई ठेका न खोलने का अन्तिम निर्णय कर लिया है । इसी के साथ उपायुक्त ने सिसाना गाव के निलम्बित सरपच रामफल दहिया को बहाल कर दिया है जिसके बाद उनके समर्थन में त्याग पत्र देने वाले सभी सरपचो ने भी अपने इस्तीफे वापस ले लिए हैं ।

दैनिक ट्रिब्यून

बेमौत मरने का उपाय – शराबखोरी

शराब पीना स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक है। वैज्ञानिको ने अपने विभिन्न प्रयोग-परीक्षणो के आधार पर यह सिद्ध कर दिया है कि चाहे शराब थोडी मात्रा मे पी जाये, भर पेट पी जाये अथवा केवल चुस्की ही क्यो न ली जाये, शराब तो मन्द जहर के समान धीरे-धीरे नुकसान पहुचाती ही है और खबर तब पडती है जब अल्कोहल के कारण घातक रोगो का आक्रमण पूरे शरीर को जकड लेता है।

अल्कोहल पेट मे जाते ही आमाशय की दीवारो से पानी सोखता है इस प्रक्रिया से जलन की जो अनुभूति होती है, उससे पियक्कड अपने शरीर मे गरमी बढने जैसा मिथ्या सुख अनुभव करने लगता है। ठण्डे देशो तथा गम देशो मे भी सर्दी के मौसम मे नशेबाजो का शराब पीने का एक बहाना यह भी होता है, परन्तु यह नितात भ्रम है, अल्कोहल को पचाने का काम यकृत में होता है। अक्सर जब शराब तेज होती है, तो अल्कोहल पेट की दीवारों से इस तेजी से पानी खीचता है कि वहा से रक्तस्राव होने लगता है। यदि ऐसा रक्तस्राव बार-बार होता रहे, तो वहा अल्सर हो जाने का भय रहता है।

माउण्ट सिनाई स्कूल आफ मेडिसिन के प्रमुख चिकित्सक-इमेन्युल रूबिन ने एक सर्वेक्षण के आधार पर यह तथ्य स्पष्ट किया है कि २५ से ४५ वर्ष के पुरुषो मे हर चौथी मोत अर्थात् १५ प्रतिशत व्यक्तियो की मृत्यु यकृत् को बोमारो 'सिरोसिस' से हो रही है। न्यूयार्क मे किये गये सर्वेक्षण मे २५ से ६५ वर्ष के पुरुषो मे हर तीसरी मृत्यु अर्थात् ६६ प्रतिशत व्यक्तियो की मृत्यु हृदय रोग और केंसर के कारण हो रही है। इस सबका कारण प्राय मद्यपान ही है।

अल्कोहल का यकृत पर प्रभाव एकदम सीधा पडता है, जबकि यकृत का काम है चर्बी का पाचन करना, किन्तु जब यही यकृत चर्बी के बजाय अल्कोहल का पाचन करने के लिए मजबूर हो जाता युग निर्माण योजना हैं, तो इसका परिणाम यह होता है कि वहा पर चर्बी का जमाब हो जाता है और अन्त मे सिरोसिस की बीमारी का दौर चल पडता है।

मैसा चुसेट्स जनरल हास्पिटल के लिए किये गये एक सर्वेक्षण से यह निष्कर्ष निकला है कि शराब पीने वाले प्राय सभी लोगो के शरीर मे ट्राइग्लिसाइड का स्तर बढा हुआ होता है। यदि किसी भी व्यक्ति का ट्राइग्लिसाइड बढा हुआ हो तो उसे हृदय रोग का दौरा कभी भी किसी भी क्षण पड सकता है।

पिछले दिनो स्वीडन के तीन चिकित्सा विशेषज्ञों का एक लेख लन्दन की सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक पत्रिका 'द लासेंट' मे प्रकाशित हुआ है। इसमे चिकित्सको ने दुघटनाग्रस्त व्यक्तियो के परीक्षण के उपरान्त अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए बताया है कि सामान्य व्यक्तियो की उपेक्षा मद्यपान करने वाले लोगो के घाव से रक्तस्राव अधिक होता हैं। उनका कहना है कि शरीर मे घाव से प्रवाहित रक्त को रोकने के लिए रक्त कण (ब्लड-प्लेटलेट्स) उपस्थित रहते हैं। शराब पीने वाले लोगो के शरीर मे इन बिम्बाणुओ की सामूहिकता तथा आसजनशीलता (परस्पर चिपकाने के गुण) प्रायः नष्ट हो जाती है, जिससे व्यक्ति का प्राणान्त तक हो जाता है।

शराब को सुरा, वारुणी, मद्य, मदिरा आदि नामो से पुकारा जाता है। इसे विष से भयकर क्यो कहा जाता है इस पर गम्भीरता से विचार करने वाले एवं विश्लेषन करने वाले वैज्ञानिको का कहना है कि यह एक अल्कोहल है जो एक प्रकार का तीव्र विष है। शराब की कितनी ही किस्मे हैं—वाईन, वीयर, ब्राण्डी, व्हिस्की, वोदका, शेम्पेन, शैरी, पोर्टवाईन, कन्ट्रालिकर आदि। वाइन मे अल्कोहल ९० प्रतिशत वीयर वीयर मे १५ से २० प्रतिशत अलकोहल की मात्रा पाई जाती है। अलकोहल जितना अधिक होता है, शराब उतनी ही नशीली, जहरीली, विषैली होती है। इसके सेवन से प्रमाद, आलस्य, क्रोध, व्यभिचार, अनाचार व जुआ जैसे कृत्यो की आदत पड जाती है।

महर्षि चरक के अनुसार शराब की प्रकृति लघु उष्ण तीक्ष्ण, सूक्ष्म, अम्लकारक व्यावयिक रूक्ष, विकासी एव विशद होती है। उष्णता के कारण मद्य पित्त को बढाने वाला, तीक्ष्णता से मन की स्फूर्ति नष्ट करने वाला, विशद होने के कारण वातका प्रकोप करने वाला, तथा कफ शुक्र को नष्ट करने वाला होता है। रूक्षता के कारण वायु का प्रकोप करने वाला तथा व्यावयिक होने से मानसिक उत्फुल्लता एवं कामोत्तेजना कारक गुणो वाला होता है। विकाशो होने के कारण सम्पूर्ण शरीर मे फैलकर बीज नष्ट करने वाला तथा अम्ल गुण के कारण उजीर्ण उत्पन्न करने वाला होता है।

इसका प्रभाव मन, बुद्धि और इन्द्रियो पर पडता है और वे सतुलन खो बैठती हैं। इसलिए मनुष्य हिंसक, क्रूर, अपराधी और कलही, विग्रही, उत्पाती बन जाता है।

कैलीफ्रोनिया विश्वविद्यालय के मन चिकित्सक गेलार्ड एलीसन ने शराब का प्राणियो पर पडने वाले प्रभाव का गहराई से अध्ययन किया है कि व्यक्ति मे नशेबाजी की प्रवृति अनुवांशिक नही अपितु सामाजिक कुप्रचलनो से प्रभावित होकर वह इसका शिकार बन जाता है। सर्वप्रथम उन्होने यह प्रयोग चूहो पर किये। चूहो के सामने पानी और शराब दोनो ही पृथक-पृथक रखे गये। कुछ दिन पश्चात् पता चला कि चूहो ने पानी की अपेक्षा शराब पीना अधिक पसन्द किया। शराबी चूहो को अनेक प्रकार के दुराचरण करते हुए देखा गया। चिडचिडे तो बने ही साथ ही साथ अनिद्रा की व्याधि से भी ग्रसित होते गये। फलत शराब न पीने वाले चूहो की बिरादरी उन शराबियों को अपमानजनक एव घृणास्पद दृष्टि से देखने लगी और उनका सामाजिक बहिष्कार तक कर दिया।

मद्यपान का मानव जीवन पर पडने वाले दुष्प्रभाव का अध्ययन विभिन्न वैज्ञानिक सगठनो ने भी किया है। उसका प्रकाशन विश्व स्वास्थ्य सगठन की एक रिपोर्ट मे किया गया है, जिसके अनुसार यदि शराब की बोतल मे एक मास का टुकडा डाल दिया जाये, तो वह गल कर रेशे-रेशे हो जाता है। इस प्रकार अलकोहल का जमाव जब रक्त में ० २ प्रतिशत से ० ५ प्रतिशत तक पहुच जाता है, तो तेज नशे की हालत मे शराब पीने वाले व्यक्ति की तुरन्त मृत्यु हो जाती है। उनके अनुसार रक्त मे ० ०३ प्रतिशत शराब मनुष्य की कार्यक्षमता गडबडा देती है, ० ०५ प्रतिशत शराब उन्हे उच्छ्रखल व्यवहार करने के लिए विवश कर देती है एव ० ६५ प्रतिशत शराब 'टॉक्सिक रेज' अर्थात् दु खद सीमा मे आती है। अधिक मात्रा मे एक साथ शराब पीने से एक्सीडेण्ट के अवसर ७ गुनै सारे शरीर मे जहर फैलने के अवसर ३५ गुने तथा मृत्यु हो जाने के अवसर ८६ गुने बढ जाते हैं।

मदिरा के दुष्प्रभाव के बारे मे वैज्ञानिकों की रिपोर्ट कहलाती है कि 'मनुष्य के शरीर का कोई अग-अवयव इसके जाल से नही बच सकता है। सभी अग-अवयव शराब के दुष्प्रभाव के चगुल मे फंस जाते हैं, यहा तक कि मन, मस्तिष्क और उनसे निसृत विचार भी अछूते नही रहते।

मद्यपान करने वाला व्यक्ति समुचित आहार कैलोरी के अनुपात मे नही लेता। सफाई एव पोषण के अभाव के फलस्वरूप शरीर धीरे-धीरे खोखला होता चला जाता है। इस वजह से लीवर को सबसे अधिक हानि उठानी पडती है। थोडी मात्रा मे रोज शराब लेते रहने व आहार के अभाव से लीवर में चर्बी के कण जमा होते रहते हैं, जिससे 'पोर्टल सिरोसिस' नामक रोग हो जाता है। यह या तो कैंसर में बदल जाता है और मदिरा धीरे-धीरे शिकार को अपने शिकजे में कसती हुई मौत के मुह मे ले जाती है। विषैली शराब तो तत्काल अपना असर दिखाती है। भारत मे जहरीली शराब पीकर प्रतिवर्ष पाच हजार से भी अधिक व्यक्ति मर जाते हैं। लाखो घर नशेबाजी में बर्बाद हो जाते हैं।

शराब के सम्बन्ध मे यह चीनी कहावत सदैव स्मरण रखने योग्य है 'पहले जाम मे मनुष्य शराब को पीता है, दूसरे जाम में शराब शराब को पीती है और तीसरे जाम में शराब मनुष्य को पीती है।'

(साभार युग निर्माण योजना)

मुक्तक

काम कर के, काम का इन्सां बना।
हर किसी की जीस्त का सामा बना॥
नाज़ को है 'नाज़' उस इन्सान पर।
जो सभी के दर्द का दरमा, बना॥

'नाज़' सोनीपती

क्रोध है एक नरक का द्वार

क्रोध है एक नरक का द्वार।
जो भी इस के वश मे होता उस को मिट्टी ख्वार॥

१ क्षण क्षण मे जिसे क्रोध है आता
उसी के अन्दर आग लगाता
जला बना दे क्षार। क्रोध है एक नरक का द्वार

२ लपट दूसरो तक फिर जाती
उन का सोया क्रोध जगाती
होती मारो मार। क्रोध है एक नरक का

३. घूस्से, मुक्के लात मारता
जोर जोर है पुकारता
बन जाते खू ख्वार। क्रोध है एक नरक का

४ ईंट और पत्थर उठा उठा कर
जोर जोर से मारे फेंका कर
गालो बकता बे शुम्मार। क्रोध है एक नरक का

५ जो भी उनके हाथ मे आता
वही उनका हथियार बन जाता
डन्डा, तीर तलवार। क्रोध है एक नरक का

६ शारीरिक बल वाला आता
क्रोध को अपने बल से दबाता
बन जाता सरदार। क्रोध है एक नरक का

७ क्रोध ने बुद्धि का लिया सहारा
बदले का किया सोच विचारा
दूर मारक बनै हथियार। क्रोध है एक नरक का

८ अनेक तरह के बम्ब बनाए
किसी ने ज्यादा कम बनाए
भय से काप गया ससार। क्रोध है एक नरक का

९ अनेक युद्धो का दृश्य दिखाया
क्रोध ने यहा पर नरक बनाया
होता आया नर सघार। क्रोध है एक नरक का

१० प्रभाकर जिसने क्रोध को जीता
उसने ही ससार को जो जीता
खुला स्वर्ग का द्वार। क्रोध है एक नरक का

रचयिता—कप्तान मातूराम शर्मा प्रभाकर सभा उपदेशक

८० परिवारो के ३२५ ईसाई सदस्य वैदिक धर्म मे दीक्षित

ग्राम टागरपालो जिला—सम्बलपुर के लगभग ३२५ से अधिक सदस्यो ने वैदिक धर्म मे प्रवेश किया। गुरुकुल आश्रम आमसेना के प्राचार्य एव उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द जी महाराज की प्रेरणा एव सहयोग से एव गुरुकुल आमसेना के उपाचार्य स्वामी व्रतानन्द जी के निर्देशन मे गत २७ मई को प्रात सम्पन्न हुए इस शुद्धि समारोह मे ईसाई सदस्यो ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म मे प्रवेश किया। प्रात देवयज्ञ का नेतृत्व करते हुए प० विशिकेशन शास्त्री ने उपस्थित जनता को वैदिक धर्म की विशेषताये समझाई, शुद्धि हेतु पधारे लोगो के अलावा उपस्थित जनता का उत्साह देखते बनता था, इस क्षेत्र के अनेक नवयुवको ने इस अवसर पर यज्ञोपवीत धारण कर मास, अण्डा आदि त्यागने का व्रत लिया। स्मरण रहे इस क्षेत्र मे अनेक शुद्धि समारोह सम्पन्न हो चुके हैं। यह समारोह मदर टेरेसा' मिशन के पास उस भूमि पर पूर्ण हुआ जिसे मिशन ने कब्जा लिया था अब वहां मानव सेवा स्कूल" है।

शुद्ध हुए लोगो को ओममुनि वानप्रस्थी श्री सत्यपाल जुनेजा सभा कोषाध्यक्ष गोपाल दास रावल, जगन्नाथ होता, श्री प्रफुल्ल बेहेरा, धनुर्धर महापात्र आदि आर्य जनो ने उपदेश एवं आशीर्वाद दिया।

विशिकेशन शास्त्री
मन्त्री
उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा

इसराना के गावो मे नशीले पदार्थों की बिक्री जोरों पर

पानीपत ७ जून (एस) इसराना विकास खड के गावो मे अवैध शराब, मुल्फा व नशीले पदार्थों की बिक्री का धधा जोर पकडता जा रहा है। पुलिस इस अवैध धधे को रोक पाने मे नाकाम रही है। इससे युवा पीढी मे नशे की लत बढती जा रही है।

इस पुलिस चौकी के तहत आने वाले कई गाँवों मे तो परचून की दुकानो पर शराब पीने के अहाते व बीयर बार खुले हैं। शाम से समय शराब के नशे मे धुत्त शराबी गलियो मे हुल्लड मचाते हैं। इस समय महिलाओं का घर से बाहर निकलना कठिन हो जाता है। गावो में शाति भग हो रही है।

रुकिये—शराब के सेवन से परिवार की बर्बादी होती है। अत. अपने निकट के शराब ठेको पर अपने साथियो सहित धरणे पर बैठकर शराब-बन्दी लागू करावें।

जीन्द मे चौथा आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्यवीर दल जीन्द ने 'गोल्डन फोरेस्टस् (इण्डिया) लि०' के सौजन्य से ३० मई से ६ जून, १९९३ तक जाट उच्च विद्यालय जीन्द मे आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया। इसका उद्घाटन माननीय डा० रामभक्त लाग्यान एच सी एस एस डी एम सफीदो ने किया। उन्होने कहा कि युवा मन पर उत्तम सस्कार डालने हेतु ऐसे शिविर अत्यन्त उपयोगी होते हैं। शिविर मे ८० शिविरार्थियो ने भाग लिया। जिनको सात सुयोग्य शिक्षको ने आठ दिन आसन, व्यायाम, लाठी, भाला, कुफू जूडो कराटे आदि का प्रशिक्षण दिया। प्रतिदिन यज्ञ, सुबह शाम सध्या तथा दो बार रोजाना बौद्धिक की व्यवस्था भी थी जिससे युवा शिविरार्थियो को शारीरिक, मानसिक एव बौद्धिक रूप से तैयार किया गया।

६ जून रविवार को समापन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि माननीय आर एस यादव, आई पी एस एस पी जीन्द थे और श्री वी के गुप्ता वाईस चेयरमैन गोल्डन फोरेस्टस् (इण्डिया) लि० तथा उनकी धमपत्नी श्रीमती गुप्ता विशेष आमन्त्रित थे। माननीय यादव जी ने युवाओ के निर्माण मे आर्यसमाज तथा आर्यवीर दल की भूमिका की भूरि-भूरि प्रशसा की और स्वय को आर्यवीर दल एव आर्यसमाज की देन बताया। उद्घाटन तथा समापन दोनो समारोह पूज्य स्वामी रत्नदेव जी सरस्वती को अध्यक्षता मे सम्पन्न हुए। शिविर के आयोजन मे स्थानीय दानदाता, आयसमाज जीन्द शहर, आयसमाज रामनगर, जीन्द, आर्य स्त्री समाज जीन्द, गोल्डन फोरेस्टस् (इण्डिया) लि०, जाट उच्च विद्यालय एव किसान कालेज जीन्द का भरपूर सहयोग मिला। शिविरार्थियो ने अनुशासन की भावना, चरित्र निर्माण की शिक्षा तथा माननीय डा० लाग्यान जी व माननीय एस पी यादव साहब से जो प्रेरणा ग्रहण की वह उनके लिए बहुत उपयोगी साबित होगी।

प्रेषक—ओमकुमार आर्य, सहसचालक आर्यवीर दल

भिवानी मे आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

भिवानी मे आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर का आयोजन दिनाक २५-५-९३ से ८-६-९३ तक बाल सेवा आश्रम मे किया गया। इस शिविर मे ८० आर्यवीरो ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रात ४ बजे से रात्रि १० बजे तक विभिन्न कार्यक्रमो मे युवक भाग लेते थे। यज्ञ स्वाध्याय, व्यायाम लाठी, डम्बल, योगासन कराटे राइफल का प्रशिक्षण दिया गया। शिविर समारोह कार्यक्रम पर भिवानी के अतिरिक्त उपायुक्त श्री देवेन्द्रसिह I A S मुख्य अतिथि थे तथा प्रान्तीय आर्यवीर दल के सचालक श्री उमेदसिह शर्मा अध्यक्ष थे। उपायुक्त महोदय ने आर्यवीर दल के कार्यक्रमो की प्रशसा की तथा प्रौढ शिक्षा के क्षेत्र मे कार्य करने के लिए प्रेरित किया। बाद मे आर्यवीरो को पुरस्कार दिए गये।

शिविर का सचालन श्री रामलाल आर्य 'प्रान्तीय बौद्धिक प्रमुख श्री विमलेश आर्य नगर नायक' ने किया। श्री अनिल कुमार जी मुख्य शिक्षक रहे। यज्ञ व्यवस्था श्री रामसेवक शास्त्री ने सम्भाली। शिविर मे श्री वेदप्रकाश जी आर्य 'रोहतक', श्री चन्द्रप्रकाश जी सन्यार्थी, श्री प्रो० ओमकुमार जी आर्य के प्रवचन हुए तथा श्री रामरत्न जी के भजनो का लाभ भी उठाया। समारोह के अवसर पर अनेक युवको ने आर्यसमाज तथा आर्यवीर दल मे जाने का व्रत लिया।

वैदिक धर्म प्रचारार्थ युवक आगे बढ़ें

वेदोपदेशक विद्यालय ब्रजघाट (गढमुक्तेश्वर) मे प्रवेश के लिए न्यून से न्यून दशम श्रेणी की योग्यता वाले छात्र प्रवेश के लिए आवेदन करें। प्रवेश शुल्क २५० रुपये है। फिर कभी कोई शुल्क नहीं। शिक्षा और आवास सहित भोजनादि की सुन्दर व्यवस्था बिल्कुल नि शुल्क है। निर्धन विद्यार्थियो को प्रतिमास २५ रु० मासिक की छात्रवृत्ति भी दी जायेगी। शीघ्रता करें, क्योकि स्थान सीमित हैं।

पत्रव्यवहार—ब्रह्मप्रकाश शास्त्री, शास्त्री सदन-११/१२४
पश्चिम आजाद नगर, दिल्ली-५१

भजन

कहा जो मान लेते उस योगीराज का,
कुछ और ही होता भारत आज का।

१ गउए यहा पै कटती नही, होती न प्याली शराब की,
न खुलता बाजार कबाब का, कुछ और ही होता भारत आज का।

२ न चोर यहा देखने को मिलते, न अड्डे रडियो के खुलते,
न चलता अत्याचार किसी नवाब का,
कुछ और ही होता भारत आज का।

३ करता जो कोशिश बहनो की इज्जत लूटने की,
आखें उसकी सरेआम फुड़वा दी जाती,
न दम भरता कोई लूटने का अबलाओ की लाज का,
कुछ और ही होता भारत आज का।

४ चक्रवर्ती होते राजा न्यायकारी
नियम भग करने वाले को हटा सकती प्रजा सारी।
न होता अधिकारी जबरन राज का,
कुछ और ही होता भारत आज का।

५ न जबरदस्ती किसी को जहर पिला सकते थे,
न कारखाने रिश्तेदारो के खुला सकते थे,
न उठा सकते थे गलत फायदा स्वराज का,
कुछ और ही होता भारत आज का।

६ रामजीलाल आर्य न होते मजबूर, धरना देने को देश मे,
क्यो होता बुरा हाल यह, भारत सब का सरताज था,
कुछ और ही होता भारत आज का।
कहा जो मान लेते उस योगीराज का।

प्रेषक—शराबबन्दी समिति बालसमन्द

एक आवश्यक सूचना

समस्त आर्य जगत् के विद्वानो, शुभचिन्तको से अपील है कि स्वामी दयानन्द के जीवन के ऊपर शोधकार्य करने मे एक पुस्तक की नितात आवश्यकता आ गई है। यह पुस्तक ५० वर्ष पहले लाहौर से प्रकाशित हुई थी। इस पुस्तक का नाम है—'सत्यार्थ प्रकाश कवितामृत' इसके कवि हैं—'आर्य महाकवि जयगोपाल जी'। किसी पुस्कालय आर्य शिक्षण सस्थान अथवा किसी स्वाध्याय प्रेमी सज्जन के पास उपरोक्त पुस्तक हो तो सूचना दे, ताकि हम पूरी पुस्तक की फोटो कापी करा सके। अगर एक दो महीने के लिए पुस्तक दे सके तो हम उसे सही-सलामत वापस कर देगे।

पत्राचार का पता
डा० स्वामी 'अग्निव्रत' दयानन्द सेवाश्रम मुसाढी,
जिला—नालदा (बिहार) पिन—८०१ ३०४

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, गोहाना रोड, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०/७३ रजि० न० P/RTK

ओ३म्
सर्वहितकारी
रोहतक
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २० अंक २७ २८ जून, १९९३ वार्षिक शुल्क ४०) (आजीवन शुल्क ४०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति ... पैसे

हरयाणा में शराबबन्दी सत्याग्रह का बिगुल बज गया

स्वामी ओमानन्द सरस्वती प्रथम तथा स्वामी रतनदेव द्वितीय सर्वाधिकारी मनोनीत

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अंतरंग सभा की बैठक सभा के कार्यालय दयानन्दमठ सिद्धान्ती भवन रोहतक में सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता में दिनांक २० जून ९३ रविवार को सम्पन्न हुई। इस बैठक में हरयाणा के कोने-कोने से आर्यसमाज तथा शराबबन्दी के कार्यकर्त्ता भारी संख्या में सम्मिलित हुए।

सभामन्त्री श्री सूबेसिंह जी ने उपस्थित कार्यकर्त्ताओं को हरयाणा में शराबबन्दी आन्दोलन की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डालते हुए बताया कि सरकार ने दमन चक्र का सहारा लेकर शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं को डराने तथा धमकाने की योजना बनाई है। शराबबन्दी समर्थक सरकारी अधिकारियों, अध्यापकों तथा सरपंचों के निलम्बन करने आदि से सिद्ध हो गया है कि सरकार इस सर्वहितकारी तथा कल्याणकारी आन्दोलन से बौखला गई है। सभी जानते हैं कि शराब सभी बुराइयों की जड़ है। किसान, मजदूर शराब पीने से कंगाल तथा ठेकेदार मालामाल हो रहे हैं। शराब के प्रचार तथा प्रसार से भ्रष्टाचार दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है। शराब की बोतल भेंट करके अनुचित से अनुचित कार्य करवाये जाते हैं। बहन बेटियों की इज्जत शराबियों के दुर्व्यवहार तथा उत्पात से खतरे में है। हरयाणा जहां दूध दही खाने से सारे संसार में प्रसिद्ध था, अब शराब पीने तथा पिलाने से सर्वत्र बदनाम हो रहा है। परन्तु हरयाणा सरकार को इसकी कोई चिन्ता नहीं है, वह तो शराब की कमाई से सरकार चलाने के लिए शराबबन्दी आन्दोलन को कुचलने पर उतारू है। अतः हमें सरकार की लोक-विरोधी नीति का जमकर मुकाबला करना होगा। आपने हरयाणा शराबबन्दी समिति के संयोजक श्री विजयकुमार जी के अचानक अस्वस्थ होने का समाचार देते हुए बताया कि उन्होंने अपने शरीर की परवाह न करते हुए शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं तथा ग्राम पंचायतों के सरपंचों से व्यक्तिगत एवं डाक द्वारा सम्पर्क करने के उद्देश्य से भयंकर गर्मी में दिन-रात एक कर दिया। इसी प्रकार थकावट तथा गर्मी के प्रकोप से वे अत्यधिक रुग्ण हो गए और उपचार हेतु अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान चिकित्सालय नई दिल्ली में प्रविष्ट होना पड़ा। कुछ आराम होने पर वे घर आ गये हैं परन्तु चिकित्सकों ने उन्हें पूर्ण विश्राम करने का परामर्श दिया है। सभी कार्यकर्त्ताओं ने उनको शीघ्र स्वस्थ करने के लिए शुभकामनाएं प्रकट की और उनके निर्देशानुसार शराबबन्दी आन्दोलन को सफल करने के लिए तन-मन तथा धन से सभा को सहयोग देने का संकल्प किया।

सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी ने अन्तरंग सदस्यों तथा आर्यसमाज के सभी कार्यकर्त्ताओं का आह्वान करते हुए कहा कि श्री विजयकुमार जी ने जिस लगन तथा परिश्रम के साथ हरयाणा सरकार के कानून के अनुसार इस वर्ष ग्राम पंचायतों से अधिक से अधिक संख्या में सितम्बर मास तक शराबबन्दी प्रस्ताव करवाने का कार्यक्रम तैयार किया है, उसे सफल करने हेतु प्रत्येक कार्यकर्त्ता कम से कम ११-११ स्वयंसेवकों की सूची तैयार करके और सत्याग्रह संचालन के लिए ११००-११०० रुपये संग्रह करके सभा के कार्यालय दयानन्दमठ, रोहतक में भेजकर रचनात्मक सहयोग देवें तभी हमें इस आन्दोलन में सफलता मिल सकती है। हमारा मुकाबला उस सरकार से है जो दिन-रात महात्मा गांधी का नाम लेकर राज्य करती है और गांधी की बात न मानकर उनके सिद्धान्तों के विपरीत शराब की बिक्री बढ़ाने में ही सारी शक्ति लगा रही है। आर्यसमाज शराब जैसी बुराई को समाप्त करना चाहता है, परन्तु हरयाणा सरकार इस समाज सुधार के आंदोलन को असफल करने के लिए ओछे हथियार चला रही है। परन्तु सरकार आर्यसमाज की आवाज को दमनचक्र चलाकर भी बन्द नहीं कर सकेगी। क्योंकि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा चलाये जा रहे इस आंदोलन की आवाज विदेशों में विशेष रूप से अमेरिका तक पहुंच चुकी है। अमेरिकी दूतावास द्वारा वहां के एक प्रेस रिपोर्टर इस आंदोलन की गतिविधियों की जानकारी लेने के लिए मुझसे सम्पर्क कर चुके हैं। अतः विदेशों में जब शराबबन्दी समाचार छपेंगे और वहां की जनता तथा सरकार हरयाणा सरकार को इस परोपकारी आंदोलन के कुचलने की नीति पर लानत देगी। हमारा आंदोलन सत्य पर आधारित है। अतः अन्त में सत्य की ही विजय होगी। अतः प्रत्येक आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता को इस ऐतिहासिक आंदोलन में अपना-अपना योगदान करके कर्त्तव्य की पालना करनी चाहिए।

आर्यसमाज के वयोवृद्ध त्यागी तपस्वी तथा आर्यसमाज के प्रमुख आंदोलनों के योद्धा श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने इस बैठक में आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को स्मरण करवाते हुए कहा कि तुम उन वीरों की सन्तान हो जिन्होंने १९३९ में हैदराबाद के निजाम के उसके राज्य में जाकर छक्के छुड़वा दिये थे। आर्य वीरों ने जेलों में भयंकर से भयंकर कष्ट सहन किए परन्तु कार्यकर्त्ताओं के प्रचार पर से पाबंदी हटाने पर ही घरों को लौटे। हमारे कई नवयुवक इस आंदोलन में शहीद भी हुए। आज भारत सरकार ने हमारे उन वीर सैनिकों को स्वतन्त्रता सेनानी मानकर सम्मानित किया है। आजकल की जेलों में सभी प्रकार की सुविधाएं हैं परन्तु उन दिनों एक दिन भी काटना लोहे के चने चबाने के बराबर था। इसी प्रकार आर्यसमाज ने १९५७ में हिन्दी रक्षा आंदोलन में ५० हजार से अधिक संख्या में जेलें भरकर प्रतापसिंह कैरों की जालिम सरकार को हिला दिया था। उसी आर्यसमाज के आंदोलन के कारण हरयाणा बना था, परन्तु आज हरयाणा बनाने के विरोधी राज्य कर रहे हैं और हरयाणा की प्राचीन वैदिक संस्कृति को नष्ट करने के लिए दूध दही के स्थान पर शराब की नदियां बहा रहे हैं। अतः आर्य वीरो हरयाणा को बचाने के लिये बड़े से बड़ा बलिदान देने को तैयार रहो और जब तक श्री भजनलाल हमारी न्यायोचित तथा कल्याणकारी मांग स्वीकार करते हुए पूर्ण शराबबन्दी लागू करने की घोषणा न करें तब तक कोई भी आर्यसमाज तथा आर्यसंस्था मुख्यमंत्री को अपने उत्सवों पर बुलाकर सम्मानित न करे। हरयाणा की पुलिस शराब के ठेकेदारों

(शेष पृष्ठ ६ पर)

गुरुकुलीय – शिक्षापद्धति

भारत के प्रत्येक क्षेत्र मे विश्व को कोई न कोई अद्भुत देन बन रही है। शिक्षा क्षेत्र मे भी गुरुकुलीय शिक्षापद्धति के रूप मे भारत ने विश्व के सम्मुख एक आदर्श उपस्थित किया है। ये गुरुकुल ऋषियों के आश्रमो मे हुआ करते थे। सरक्षक अपने पुत्रो को वही गुरुओ के चरणो मे समर्पित कर दिया करते थे। ये गुरुकुल भौतिक आकर्षणो तथा जन कोलाहल से सुदूर वनो मे स्थित होते थे। इनका सम्पूर्ण भार रक्षा-सुरक्षा, सुविधा आदि का राजाओ के ऊपर रहा करता था। उस समय गुरुओं की चार श्रेणिया मुख्य थी। (१) सर्वोच्च स्थान आचार्य का था। यह शिक्षा-दीक्षा दोनो का अधिकारी था। (२) दूसरा स्थान प्रवक्ता का। यह वेद-वेदागो की व्याख्या किया करता था। (३) तीसरा आचार्य श्रोत्रिय कहलाता था। यह वेदो का सागोपाग अध्येता तथा अध्यापयिता होता था। (४) चौथा स्थान अध्यापक का था। यह केवल पढाता था। इसका दीक्षा से कोई सम्बन्ध न था। मनु ने भी गुरुओ की चार श्रेणिया बताई हैं।। २/१४०, १४१, १४२ तथा १४४।। बालक इन्ही आचार्यों के यहा शिक्षा ग्रहण करने के लिए जाया करते थे। राम-लक्ष्मण वशिष्ठ आश्रम मे, कृष्ण सदीपन के यहा तथा महर्षि दयानन्द दिव्यचक्षु प्रात स्मरणीय विरजानन्द के आश्रम मे शिक्षा ग्रहण करने के लिए गये थे। यह गुरुकुलो के आचार्यो का ही प्रभाव था कि राम मर्यादापुरुषोत्तम, कृष्ण योगिराज तथा दयानन्द महर्षि बन गये। उस समय तप तथा दम पर बल दिया जाता था। दर्पण वर्जित था। प्रवेश छ वर्ष से लेकर आठ वर्ष तक के बालको का ही लिया जाया करता था।

द्रोण ही एक ऐसे आचार्य थे जिन्होने भीष्म जी के आग्रह पर आश्रम के बाहर कौरवो-पाण्डवो को उनके घर जाकर पढाना आरम्भ किया था। वही से भारत का सम्मान, गौरव तथा मर्यादा अस्ताचल की ओर चल पडी। शनै-शनै गुरुकुल परिपाटी धूलिसात् होने लगी तथा इसके स्थान पर विश्वविद्यालय परिपाटी चलने लगी जिसका उदाहरण हमे बौद्ध युग मे तक्षशिला तथा नालन्दा विश्वविद्यालयो के रूप मे देखने को मिलता है। पाणिनि तक्षशिला विद्यापीठ मे सस्कृत व्याकरण के आचार्य थे। यहा के पाठ्यक्रम मे धनुर्वेद का भी समावेश था। इस समय यह स्थान रावलपिण्डी (पाकिस्तान) मे है। नालन्दा पटना मे है। इन दोनो मे विश्व के प्राय सभी क्षेत्रो के छात्र अध्ययन के लिए आया करते थे। राष्ट्रीय कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त जी ने अपनी भारत-भारती मे ईसा को भी गुरुकुल का शिष्य बताया है।

वैदिक काल मे बालक समिधाये हाथ मे लेकर गुरु के समीप शिष्यत्व ग्रहण करने के लिए जाया करते थे। अपने को समिधा बनाकर गुरु के लिए अर्पित करते थे जिससे वे गुरु को अग्नि से प्रदीप्त हो जाए। विद्या अध्ययन समाप्त करके जाते समय गुरु उन्हे समिधाओ के स्थान पर तीन वस्तु—चोटी, लगोटी तथा यज्ञपात्र ये लोककल्याण की भावना के प्रतीक थे। गुरु का उपदेश था पुत्र! इन तीनो की रक्षा करना। ये तुम्हारे जीवन के ज्योतिस्तम्भ हैं। ये मोक्षपथ के पाथेय हैं।

वेदज्ञ ऋषियो ने एक मर्यादा बनाई थी। प्रथम तीन वर्णों के पुत्रो को चाहे वे चक्रवर्ती राजाओ के बेटे ही क्यों न हो, घर के वायुमण्डल मे उनका पालन-पोषण नही होगा। उन्हे जल भरना पडेगा। समिधाए लानी होगी। गौए चरानी पडेगी। कठोर तप करते हुए नियमबद्ध रह कर राजा बनने की योग्यता प्राप्त करनी होगी अन्यथा अयोग्य होने पर राजा न बने तथा असमजस की तरह दण्ड के भागी होगे। महिला-रोप्य के शासक अमरशक्ति ने अपने पुत्रो को योग्य उत्तराधिकारी बनाने के लिए विष्णु शर्मा के पास तक्षशिला भेजा था। उस युग में किसी बालक की शिक्षा को उस समय तक अपूर्ण समझा जाता था जब तक वह तक्षशिला जाकर वहा के विश्वविख्यात आचार्यों से शिक्षा प्राप्त न करले। (प० बुद्धदेव जी)। तक्षशिला के आचार्यो मे उस समय कौटिल्य विष्णुदत्त का प्रमुख स्थान था। वेद, दर्शन शास्त्र, दण्डनीति तथा अर्थशास्त्र के प्रकाण्ड पण्डित थे। धनुर्विद्या मे भी अनुपम गति थी। उनके पास शिक्षा प्राप्त करनेवाले राजकुमारो की सख्या १०१ थी। इनके अतिरिक्त लगभग ४०० छात्र उनकी शिष्यमण्डली के अन्तर्गत थे। प्रथम सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य इसी तक्षशिला का छात्र तथा विष्णु गुप्त का शिष्य था। वररुचि तथा गान्धार नरेश आम्भि भी तक्षशिला के ही छात्र थे। अगदेश का राजकुमार अरिंदम, इन्द्रप्रस्थ का राजकुमार धनजय, काशी का राजकुमार ब्रह्मदत्त, मिथिला का कुमार सुरुचि तथा कुरुदेश का कुमार सुतसोम विष्णुदत्त के ही शिष्य थे। उस समय तक्षशिला मे लगभग १० अध्यापक तथा छात्र थे।

समय बदला तथा समय के साथ ही शिक्षा पद्धति भी बदली। आश्रम प्रथा शशकशृंग बन गई। परिणामत भारत अपने प्राचीन गौरव की आहुति देकर भौतिकवाद की सरिता मे बहने लगा। जो ज्योति कन्नौज मे सन्दीपन गुरु के आश्रम मे उठी, उसे समय के मन्द पवन के झोके ने सहलाया तथा वह प्रसुप्त ज्योति पुन मथुरा से महर्षि दयानन्द के रूप मे विरजानन्द के आश्रम से उठी तथा दिग्दिगन्त को आलोकित करती हुई अजमेर मे जाकर बुझ गई। महर्षि ने देश की राजनीतिक, धार्मिक तथा सामाजिक स्थिति को परखा निरखा था। अत उन्होने एकवाद का नारा बुलन्द किया। उसमे एक ईश्वर, उसका दिया गया एक धार्मिक ग्रथ वेद, एक भाषा हिन्दी तथा एक धार्मिक स्थल आर्यसमाज था। इसका प्रत्येक कार्यक्रम यज्ञ के माध्यम से प्रारम्भ होता है। प्रति रविवार को तथा त्यौहारों पर यज्ञ का आयोजन होता है। यज्ञ के बाद प्रवचन की भी परिपाटी डाली गई है। सर्वप्रथम १८५७ ई० में फर्रुखाबाद मे आर्यसमाज की तथा आर्षपद्धति के आधार पर उसी जनपद मे वदिक पाठशाला की स्थापना की गई।

अधिकतर लोगो की यह कल्पना थी कि ऋषि लोग पर्णकुटियो मे रहते थे कन्द मूल फलादि खाते थे। नापितो के अभाव मे दाढी मूछ रखते थे, मृगछाल बिछाते तथा ओढते थे तथा उनके सूक्त (वेदमन्त्र) गडरियो के गीतो के अतिरिक्त और कुछ नही हैं। महर्षि ने ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका, सत्यार्थप्रकाश तथा सस्कारविधि हमारे हाथों मे देकर उस कल्पित दुर्भावना को निर्मूल कर दिया। वशिष्ठ ऋषि ने एक स्थान पर कहा है—मैं मिट्टी के घर मे जाकर नही रहूगा। मा अह मृण्मय गृहं गमम्।।ऋक्।। बल्कि बृहन्त मान सहस्रद्वार गृह जगाम ।।ऋक्।। ठीक भी है जिसके आश्रम मे हजारो ब्रह्मचारी रहते हो वह भला कच्चे मकान अथवा झोपडी मे कैसे रह सकता है। प्रतिवर्ष इनकी मरम्मत कौन तथा कैसे करेगा? अत स्पष्ट है कि ऋषियो के गुरुकुल पक्के होते थे। यह जितना भी घपला हुआ है वह सब अवैदिक काल मे ही हुआ है, जो अविश्वसनीय है। हमारी आशाए स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुल कागडी हरिद्वार पर लगी थी। इस देश को नेता, लेखक, वक्ता, इतिहासकार, साहित्यकार आदि दिए, हमे उन पर अति गर्व है।

—कर्णदेव

शराबबन्दी पर भजन

टेक—हरियाणे मे खबर फैलगी दारू बन्द कराणे की।
ठेकेदारो ने इज्जत खोदी मा बेटी और व्हाणा की।।

1 हरियाणे के छैल गाबरू क्यूं जिन्दगी का नाश करो।
हरियाणे की खुशहाली का क्यूं तुम सत्यानाश करो।
दारू पीणा बन्द करो तुम राखो नीत कमाणे की

2 हरिजन ब्राह्मण पिवण लागे फर्क रहा न जात्या मे।
रजपूता न फौम खोगी दारू खोगी जाटा नै।
खोदो इन हालात्या नै ना सोचो पीणे प्याणे को

3 १६ तारीख ३ महीने मे होग्या काम भलाई का।
ऐसे-ऐसे वीर रहे तै हटज्या काम बुराई का।
करदयो काम भलाई का यह बात नही भय खाणे को

4 अतरसिंह कह ठेके आलो करल्यो त्यारी जाणे की।
कुंजीलाल तनै सीख कडे तै ली गाणे और बजाणे की।
ओड रागणी गाणे की तेरे मज बैठगी ना प्याणे की।
हरियाणे मे खबर फैलगी

प्रेषक शराबबन्दी समिति बालसमन्द

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा द्वारा शराबबन्दी प्रस्ताव

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरग सभा की बैठक दिनाक २० जून ९३ को शराबबन्दी प्रस्ताव निम्न प्रकार किये गये हैं।

१. धरणो को सफल करनेवाले कार्यकर्त्ताओ का सम्मान

अन्तरग सभा ने शराबबन्दी आन्दोलन मे सक्रिय कार्यकर्त्ताओ को सम्मानित करने का निश्चय किया है। सभा के उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने ग्राम बालसमन्द जि० हिसार मे शराब के ठेके पर निरन्तर जब तक धरणा दिया जब तक हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल ने लोकशक्ति के सामने ठेका बन्द करने की घोषणा न कर दी। इससे पूर्व उन्हे उनके साथियो के साथ बन्दी भी बनाया गया। शामियाने आदि भी पुलिस ने उखाड फेंके। गम हवाओ को भी सहन किया। ससुराल का ग्राम होने पर भी धरणा चालू रखने के लिए ग्रामवासियो को सघटित रखा। इन्होने इससे भी बालावास म बडा सघर्ष करके शराब का ठेका बन्द करवाया था। अत इस प्रकार के अनुभवी तथा लगनशील कार्यकर्त्ताओ का सम्मान करने से शराबबन्दी आन्दोलन को शक्ति मिलेगी। ११ जुलाई को ग्राम बालसमन्द मे सभी सक्रिय शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओ को सभा की ओर से सम्मानित किया जावेगा। इस अवसर पर श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी, सभामन्त्री श्री सूबेसिंह जी तथा हरयाणा शराबबन्दी समिति के सयोजक श्री विजयकुमार जी आदि आर्यनेता सम्बोधित करेंगे।

2. शराबबन्दी आन्दोलन को सक्रिय करनेवालो का धन्यवाद

शराबबन्दी आन्दोलन मे भारतीय किसान यूनियन तथा सर्वखाप पचायत के नेताओ तथा कार्यकर्त्ताओ का भी सभा ने आभार प्रकट करते हुए उनके योगदान की सराहना की है। दहिया खाप के प्रधान तथा ग्राम सिसाना पचायत के सरपच श्री रामफल दहिया, आर्यसमाज रोहणा के कार्यकर्ता, सरोहा खाप के नेता श्री ओमप्रकाश सरोहा, सोनीपत, क्योडक जिला कैथल के कार्यकर्त्ता, चरखीदादरी जिला भिवानी के मातनहेल, कासनी, तुम्भाहेडी, डोघल, सापला बरोदा, दुलहेडा, बादली, दुजाना, छारा, पाल्हावास, जसिया, टिटोली, रिटोली, महम, लाखन माजरा नान्धा, बेरी, बाहरी (कुरुक्षेत्र) गलौली ठेको पर धरना देनेवाले कार्यकर्त्ता साबवान खाप, फोगाट खाप, पवार खाप वैद्य ताराचन्द आर्य खरखोदा आदि के कार्यकर्त्ताओ का सभा ने हार्दिक धन्यवाद किया है जिन्होने सभा के निर्देशन पर अप्रैल मास से शराब के ठेको पर धरणे देकर सघर्ष किया। इन सभी का अन्तरग सभा ने धन्यवाद किया है। इस सघष मे प्रि० बलवीरसिंह सरपच फतेहगढ, मेजर सन्तलाल सरपच भोझू, श्री सूमेरसिंह स्वरूपगढ, डा० सत्यवीर कन्हेली, डा० विजयकुमार मातनहेल, श्री सूरजमल, म० दरयावसिंह रोहणा, कामरेड धर्मसिंह आदि का योगदान विशेष उल्लेखनीय है। हुड्डा खाप की ओर से श्री सुखदेव शास्त्री, श्री गुगनसिंह वकील आदि को भी सभा आभारी है जिन्होने हुड्डा खाप के किसी भी ग्राम मे शराब का ठेका न चलने देने का कार्यक्रम बनाया है। श्री ईश्वरसिंह शास्त्री खरावड तथा श्री सत्यवीर शास्त्री सभा उपमन्त्री ने शराबबन्दी पचायतो को सफल करने मे जो भूमिका निभाई है, उसे स्मरण रखा जावेगा। अनेक कार्यकर्त्ता भूमिगत रहते हुए भी शराबबन्दी आदोलन को सफल करने मे यत्नशील हैं। अन्तरग सभा ने इनके योगदान की सराहना की है।

३. हरयाणा सरकार की दमन नीति की निन्दा

अन्तरग सभा ने शराबबन्दी आदोलन को असफल करने हेतु हरयाणा सरकार की दमनचक्र नीति की निन्दा करते हुए कहा है कि शराब की सामाजिक बुराई को समाप्त कराने वाले स्वयसेवको का सरकार को सम्मान करना चाहिए। परन्तु सरकार शराब रूपी जहर बेचने वाले ठेकेदारो की सुरक्षा करके और पुलिस के पहरे मे शराब की बिक्री करवाकर अनुचित कार्यवाही कर रही है। शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओ को भिन्न-भिन्न प्रकार की धमकियां दी जा रही हैं। उन्हे परेशान किया जा रहा है।

शराबबन्दी समर्थक विधायको, सरकारी कर्मचारियो तथा ग्राम पचायतो के सरपचो को निलम्बित करके अनुचित तथा अनैतिक पग उठाया जा रहा है। अत सामने इस अकल्याणकारी सरकार की कठोर शब्दो मे भर्त्सना की है।

४ हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल का आर्यसमाजो द्वारा बहिष्कार किया जावेगा

अन्तरग सभा ने सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास करके हरयाणा के आर्यसमाजो तथा आर्य शिक्षण सस्थाओ के अधिकारियो को निर्देश दिया है कि जब तक हरयाणा के मुख्यमन्त्री शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओ पर दमनचक्र चलाकर परेशान करना बन्द न करे तथा हरयाणा मे पूर्ण शराबबन्दी लागू करने की घोषणा नही करते तब तक सभी आर्यसमाज तथा सस्थाए उन्हे अपने किसी भी समारोह मे न बुलाकर सम्मानित न करे।

५ सत्याग्रह सचालन हेतु स्वामी ओमानन्द सरस्वती प्रथम तथा स्वामी रतनदेव द्वितीय सर्वसर्वा मनोनीत

अन्तरग ने हरयाणा मे हरयाणा सरकार की दमन नीति का विरोध करने तथा शराबबन्दी की जन-कल्याण की माग को स्वीकार करवाने के लिए हैदराबाद आर्य सत्याग्रह तथा हिन्दी रक्षा सत्याग्रह की भांति सामूहिक गिरफ्तारिया देकर शराबबन्दी सत्याग्रह करने का निश्चय किया है। इस सत्याग्रह के सचालन के लिए आर्यजगत् के त्यागी तपस्वी सन्यासी तथा सत्याग्रहो के सफल योद्धा स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती को प्रथम तथा गुरुकुल कुम्भाखेडा (हिसार) तथा कन्या गुरुकुल खरल (जीन्द) के सचालक श्री स्वामी रतनदेव जी को द्वितीय सर्वसर्वा (डिक्टेटर) सर्वसम्मति से मनोनीत किया है। वे सभा के अधिकारियो के साथ हरयाणा भर का भ्रमण करके सत्याग्रह को सफल करने के लिए आर्य जनता से सम्पर्क करेंगे। सत्याग्रह सचालन हेतु उन्हे पूरे अधिकार दिये गये हैं।

शराबबन्दी सत्याग्रह को सफल करने हेतु स्वामी ओमानन्द सरस्वती की आर्य जनता से अपील

शराबबन्दी सत्याग्रह के सचालक एव सर्वसर्वा श्री ओमानन्द जी सरस्वती ने एक प्रेस विज्ञप्ति द्वारा हरयाणा की समस्त आर्य जनता एव शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओ से अपील करते हुए अनुरोध किया है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने मुझे शराबबन्दी सचालन करने का कार्यभार सौप दिया है। काफी समय से मेरा स्वास्थ्य ठीक नही है। हैदराबाद तथा हिन्दी रक्षा सत्याग्रह की भांति शराबबन्दी सत्याग्रह को सफल करने के लिए भागदौड करने की शक्ति भी नही रही, तथापि सभा के प्रस्ताव का आदर तथा सम्मान करते हुए इस महान् कार्य को सफल करने का दायित्व मैने सहर्ष स्वीकार कर लिया है। अत मैं हरयाणा की आर्य जनता तथा अन्य धार्मिक, सामाजिक तथा शराब-

(शेष पृष्ठ ४ पर)

बार-बार धिक्कार है

(गीत चौकलिया)

मदिरा की प्याली बोतल मे, अवगुण भरे अपार हैं।
तुझे तेरे पीने वालो को, बार-बार धिक्कार है॥

कर दिया देश खराब हमारा विष से भरी शराब तैने।
चहुदिशि मे छाई दवा लिया हरयाना पजाब तैने॥
क्या मजदूर किसान न छोडे, मुल्ला, मिना नवाब तैने।
जगह जगह ठेके खुलवाये जग मे बिना हिसाब तैने॥
बनकर नागिन मार रही चुपके-चुपके फुसकार है।
तुझे तेरे पीनेवालो को बार बार धिक्कार है॥१

कभी, जेब, अन्टी, झोले मे छिपकर घर आजाती तू।
आकर घर की अलमारी मे छिप कर रग दिखाती तू॥
समय समय पर अपने सारे भगतो पर छा जाती तू।
दगा, शोर, फिसाद साथ मुर्गा, मुर्गी कटवाती तू॥
हत्यारी निर्दई पाप करवाती हर प्रकार है।
तुझे पीनेवालो को बार बार धिक्कार है॥२

निर्भय होकर घूम रही चचल मन उथल पुथल सी तू।
जिस घर मे सम्मान तेरा हो जल्दी नही निकलती तू॥
तेरे दीवाने मस्ताने उनका मुह कुचलती तू।
जर जेवर और जमी सभी को खाकर टलती तू॥
जिस पर हावी हुई उसी के गन्दे किये विचार।
तुझे पीनेवालो को बार बार धिक्कार॥३

आर्यजनो ने प्रण किया तेरा पीछा नही छोडेगे।
छिपकर बैठी पायेगी तुझे बीच सडक पर फोडेगे॥
तेरे अग रक्षकों की भी काया पकड झझोडेगे।
तेरे ठेकेदार एक दिन सूरत से मुख मोडेगे॥
कहे स्वरूपानन्द आर्य भारत से करे फरार है।
तुझे पीनेवालो को बार बार धिक्कार है॥४

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती,
अधिष्ठाता, वेदप्रचार विभाग दिल्ली सभा

शराबबन्दी पचायत

उपमण्डल के ग्राम बढा मे शराबबन्दी आदोलन के तहत चल रहे धरने मे एक विशाल पचायत का आयोजन किया गया। धरने का सचालन मोहनसिंह द्वारा किया गया। मुडर मण्डल के ४५ गावो की इस पचायत ने निणय लिया है कि धरने पर प्रतिदिन एक ग्राम बैठेगा। साथ ही शराब खरीदन आये व्यक्तियो को घाघरी पहनाई जायेगी और जुर्माना किया जायेगा। पचायत द्वारा पुलिस उपअधीक्षक महेन्द्रसिंह श्योराण से शिकायत की गई है कि ठेकेदार अवैध रूप से गावो मे शराब बेचते हैं। पचायत ने प्रशासन से माग की है कि अवैध रूप से बिकने वाली शराब पर रोक लगाई जाये।

दैनिक ट्रिब्यून

(पृष्ठ ३ का शेष)

बन्दी कार्यकर्त्ताओ से अपील करता हू कि वे इस सर्वहितकारी तथा समाज सुधार के उद्देश्य से आरम्भ किये जा रहे शराबबन्दी सत्याग्रह को सफल करने के लिए तन, मन तथा धन से मुझे सहयोग प्रदान करें और इसके सचालन हेतु प्रत्येक ग्राम, आर्यसमाज तथा आर्य सस्थाओ से कम से कम ११, ११ सत्याग्रही तथा ११००, ११०० रुपये आर्थिक योगदान आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक को धनादेश (मनिआर्डर) द्वारा अथवा मेरे पहुचने पर नकद देकर सभा की रसीद प्राप्तकर लेवे। स्मरण रखे यह आर्यसमाज की अग्नि परीक्षा हैं। आर्यसमाज ने जो सत्याग्रह चलाया है उसे पूरी शक्ति लगाकर सफल बनाना है। अत सभी आर्य कार्यकर्त्ता अपना-अपना अमूल्य योगदान कर सत्याग्रह को सफल करे तथा हरयाणा की पवित्र भूमि के माथे से शराब जसी बुराई का कलक मिटाकर यश तथा पुण्य के भागीदार बने। स्मरण रखे अन्त मे विजय सत्य की होगी।

गुर्जर पंचायत मे सामाजिक कुरीतियों को मिटाने का संकल्प

५० गांवो की पंचायत में कई महत्वपूर्ण निर्णय

गुडगाव, गुर्जर समाज मे व्याप्त सामाजिक कुरीतियों को देख-रेख के लिए कल जिले के तिघरा गाव मे लगभग ५० गावो की एक पचायत हुई। इस पचायत मे दहेज प्रथा विवाह आदि मौको पर शराबबन्दी करने के निर्णय लिये गये।

पचायत की अध्यक्षता हरयाणा के पूर्व गृहमन्त्री श्री के एल पोसवाल ने की। सचालन प्रो आर पी खुराना ने किया। पचायत में आये वक्ताओ का अभाव, सगठन के अभाव आदि पर अपने विचार रखे।

पचायत को एच सी बोकन, भरतसिंह नागर, तेजपाल तवर, आर सी खुराना, सूरजमल, जगदीश लोहिया, रामबीरसिंह लोहिया, नारायणसिंह गुर्जर, प्रेमराज तवर, मस्तराम गायक, सरदारसिंह अध्यापक आदि ने सम्बोधित किया। गुर्जर पत्रिका की सपादिका कमलेश गुर्जर ने भी पचायत को सम्बोधित किया।

पचायत में लिए गए फैसले इस प्रकार हैं—शादी मे एक बाजा होगा। विवाह मे दहेज नहीं लिया दिया जाएगा, शादी के मौके पर बाजे के आगे कोई नही नाचेगा, आतिशबाजी बिल्कुल नही छोडी जायेगी, शामियाना साधारण लगाये जाएगे, बारात में ११ से २१ तक बाराती होगे विवाह सगाई व जन्मोत्सव पर शराबबन्दी लागू होगी। गाव मे जिम्मेदार लोगो, सरपच व पच स्कूलो में जाकर देखेंगे कि वहां अध्यापक शिक्षा पूरी कराते हैं या नहीं। बच्चो की शिक्षा पर ध्यान दिया जायेगा। गाव के मुख्य लोग इन पर विशेष ध्यान देंगे, आपसी झगडे आपस मे निपटाये जायेगे।

जो इन फैसलो को नही मानेगा, उसका सामाजिक बहिष्कार किया जायेगा।

जागरण

आर्यसमाजें वेदप्रचार सप्ताह मनावें

हरयाणा प्रदेश के आर्यसमाजों से निवेदन है कि वे जुलाई से सितम्बर मास तक वेदप्रचार सप्ताह मनावे। आर्यसमाज का मुख्यकार्य वेदप्रचार करना है। अत वेद का पढना, पढाना, सुनना तथा सुनाना आर्यों का कर्त्तव्य है। प्रतिवर्ष जुलाई, अगस्त तथा सितम्बर मास (वर्षा ऋतु मे) आर्यसमाज वेदप्रचार सप्ताह धूमधाम से मनावे सभा उपदेशक तथा भजनोपदेशको को बुलाकर वेद प्रवचन करावे तथा समाजसुधार के भजन सुने। जिन आर्यसमाजो की प्रचार की माग पहले आवेगी, उनका प्रबन्ध पहले किया जावेगा।

अभी तक निम्नलिखित आर्यसमाजो मे वेदप्रचार की माग की है—

आर्यसमाज मन्दोला जिला भिवानी	३, ४ जुलाई
,, माडल टाउन यमुनानगर	११ जुलाई से १६ जुलाई
,, नेहरू ग्राउण्ड फरीदाबाद	१४, १५ जुलाई
,, बापोडा जिला फरीदाबाद	१२, १३, १४ जुलाई
,, माहू की ढाणी जिला भिवानी	१५, १६, १७ जुलाई

—सुदर्शनदेव आचार्य, वेद प्रचाराधिष्ठाता

शराब बेचने का आरोप

हिसार, भारतीय किसान यूनियन ने रोहनात गाव के सरपच पर ठेकेदार से मिलीभगत कर अवैध रूप से शराब बेचने का आरोप लगाया है।

एक बयान मे यूनियन के प्रवक्ता ने कहा कि इस कार्यवाई से क्षेत्र मे रोष फैल गया है। उन्होने कहा कि महिलाओ मे प्रदर्शन करके ठेके को दोबारा बन्द करा दिया है। ठेकेदार और सरपच अब उसे पुन. खुलवाने का प्रयास कर रहे हैं।

दैनिक जागरण

ऐसे बहादुर सरपंचो की आवश्यकता है

ग्राम नलवा जिला हिसार मे श्री महेन्द्रसिंह जी कसमा सरपंच है। गत दो वर्ष पहले गाव नलवा मे शिक्षण संस्थाओ के बीच बस अड्डे पर शराब का उपठेका भूल या किसी स्वार्थ के कारण पिछले सरपंच ने खुलवा दिया था। वातावरण बहुत खराब होगया था। सभा उपदेशक एवं संयोजक शराबबन्दी समिति जिला हिसार के श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी जी की प्रेरणा एवं सुझाव से बहादुर सरपंच श्री महेन्द्रसिंह ने ठेका बन्द करवाने का प्रस्ताव किया। हिसार नीलामी पर प्रदर्शन मे बढ-चढ कर भाग लिया। ठेका बन्द करवाया।

उसके बाद कई बार ठेकेदार पंचायत को लालच देने आया। लेकिन ठेकेदार की दाल नहीं गली। इस वर्ष फिर मई मास मे हिसार डाबडा चौक के ठेकेदार ने दो बार सरपंच साहब को ५० हजार रु० का लालच दिया। सरपंच साहब ने साफ इनकार कर दिया। अब ७ जून को मगाली गाव के ठेकेदार ने ८० हजार रुपए का लालच दिया। साथ मे कहा कि मुफ्त शराब पिलायेगे तथा विवाह शादी मे जीप देगे। गाव डाबडा व अन्य एक दो गाव के रिश्तेदारो का भी दबाव डलवाया। गाव मे उपठेका खुलवाने या गाव मे अवैध शराब बिकवाने का। लेकिन सरपंच व श्री रणसिंह भठारवाल जिसकी धर्मपत्नी महिला पंच है ने साफ इनकार कर दिया कहा कि हम किसी भी कीमत पर शिक्षण संस्थाओ के बीच ठका नही खुला सकते। न गाव मे अवैध शराब पडने देगे। जब हमारी पंचायत है तब तक किसी भी तरह गाव मे ठेका या शराबखोरी नही चलने देगे। ठेकेदार निराश होकर चले गए। नलवा मे शराबबन्दी है। आज ऐसे बहादुर सरपंच चाहिए। अन्य गाव के सरपंचो को इनसे प्रेरणा लेनी चाहिए।

—मन्त्री आर्यसमाज नलवा।

मनुर्भव

विधाता ने तुझे मानव बना जग मे पठाया है।
न हिन्दू बनाया है न मुस्लिम ही बनाया है॥

न था तू पादरी मुल्ला न पण्डित वैश्य और क्षत्री।
न था तू जाट गूजर न था कायस्थ न था खत्री।
तेरा जब गर्भ के अन्दर सही नकशा बनाया है॥१

न कोई रखा अन्तर बनावट एक जैसी की।
चरण, कर, नेत्र, कानो की बनावट एक जैसी की।
मनुज की एक जाति की न सूरत को मिलाया है॥२

जन्म से एक हम सब किन्तु कर्मों से बदल जाते।
सभी नौ मास रहते गर्भ अन्दर कष्ट अति पाते।
सुरासुर राम व रावण भी इससे बच न पाया है॥३

करम जैसा करे मानव वह राघव, देखता ईश्वर।
पढो विख्यात रामायण कि डाकू घोर रत्नाकर॥
सुकर्मों से वही ऋषि वाल्मीकि उत्तम कहाया है।
विधाता ने तुझे मानव बना जग मे पठाया है॥३

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

यदि आप हरयाणा मे पूर्ण शराबबन्दी लागू करवाना चाहते हैं तो अपने क्षेत्र के निकट के ठेको पर चल रहे धरणो मे सम्मिलित होवें।

सम्प्रदाय को धर्म कहकर "धर्म" शब्द के साथ अन्याय मत करो

जब से देश आजाद हुग्रा है स्वतन्त्र नही तब से सम्प्रदायो को धर्म की सज्ञा देकर धर्म को अपमानित किया जा रहा है। क्यो नही बद-नाम किया जाए क्यो कि देश आजाद हुआ है, स्वतन्त्र नही। आजाद होने का तात्पर्य देश के वासियो मे उच्छृखलता के सस्कार भरना जबकि स्वतन्त्रता मे देश के वासियो को स्वय हा बिना किसी ग्रकुश के राज्य नियमो पर चलना है। स्वतन्त्रता का अर्थ ही यह है। स्व तत्र ग्रर्थात् स्वय का तत्र अत देश के निवासियो मे यह प्रवृत्ति है ही नही कि वे ग्रपने आप राष्ट्रोन्नति के प्रति पूर्ण उत्तरदायी होकर बडी सावधानी से राज्य के नियमो के अनुकूल चले और इसीलिए आज सम्प्रदाय को धम कहा जाता है। यदि स्वतन्त्र होते तो धर्म को धर्म कहते और सम्प्रदाय को सम्प्रदाय।

ससार के सारे मनुष्यो का एक ही धर्म होता है वह है केवल मात्र वैदिक धर्म। चाहे मनुष्य किसी व्यक्ति विशेष से प्रभावित होकर उस नामधारी व्यक्ति के सम्प्रदाय मे सम्मिलित हो जाय जैसे बुद्ध से प्रभावित होकर बौद्ध सम्प्रदाय मे, महावीर से प्रभावित होकर जैन सम्प्रदाय मे, ईसा से प्रभावित होकर ईसाई सम्प्रदाय मे, मोहम्मद साहब से प्रभावित होकर इस्लाम सम्प्रदाय मे, गुरु नानकदेव से प्रभावित होकर सिख सम्प्रदाय मे और हिन्दुग्रो मे परमात्मा के नामो को लेकर उनके नामो से अलग-ग्रलग साम्प्रदायो मे जैसे वैष्णव सम्प्रदाय, शैव सम्प्रदाय, देवी सम्प्रदाय आदि परन्तु वैदिक धर्म पर तो सबको स्वत ही चलना ही पडता है, वे इस मार्ग पर चलने के लिये पूर्ण रूप से बाध्य हैं। कहा भी है कि वेदोऽखिलो धर्ममूलम्—वेदप्रतिपादितो धर्म।

शास्त्रकारो ने धर्म के सम्बन्ध मे बहुत सी परिभाषाए दी है जैसे धारणात् धर्म इत्याद्यु-चोदनालक्षणोऽर्थो धर्म, यतोऽभ्युदयनि श्रेयस-सिद्धि स धर्म। महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज ने भी धर्म के सम्बन्ध मे परिभाषा दी है—

"जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन और पक्षपातरहित न्याय सर्वहित करना है। जो कि पत्यक्षादि प्रमाणो से सुपरीक्षित ग्रौर वेदोक्त होने से सत्र मनुष्यो के लिये यही एक धर्म मानने योग्य है, उसको धर्म कहते हैं" एक छोटी-सी परिभाषा और दी जाती है वह है कि जो आचरण एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य से मिलाये वह धर्म है। उपर्युक्त परिभाषा इसी ग्रोर इशारा कर रही है।

ससार मे दस प्रकार के ग्राचरण ऐसे हैं, जो मनुष्य को मनुष्य से मिलाते है और दस ही ग्राचरण ऐसे है जो मनुष्य को मनुष्य से ग्रलग करते हैं। यथा—(१) अहिसा का ग्राचरण जिसमे प्रेम आदि भी आते हैं (२) जो वस्तु या भावना जैसी हो उसको वैसा ही कहना (३) किसी ग्रन्य की वस्तु को बिना उसकी अनुमति के चुप-चाप न उठाना लेना व प्रयोग मे लाना (४) पूर्ण जितेन्द्रिय हो वह सदाचरण करना (५) स्वार्थी होकर जमाखोरी न करना (६) मन, बुद्धि ग्रौर शरीर ग्रौर ग्रात्मा मे पवित्र होकर रहना (७) अपने सत्कार्य से पूर्ण सन्तोष होना (८) परिश्रमी होना (९) वेदादि सत्य शास्त्रो आदि का नित्य स्वाध्याय करना और (१०) परमेश्वर के निराकार सच्चिदानन्दस्वरूप को ठीक प्रकार जानकर उसके प्रति पूर्ण समर्पित होकर विश्वास करना। परीक्षा करे कि एक व्यक्ति उपर्युक्त आचरण करता है तो जिसके प्रति यह ग्राचरण किया गया है उस व्यक्ति मे उपर्युक्त आचरण करने वाले के प्रति एक विश्वास उत्पन्न होगा, विश्वास से उसके प्रति आस्था जागृत होगी, ग्रास्था से उसके प्रति आकर्षण होगा और आकर्षण से दोनो व्यक्ति एक-दूसरे से जुड जावेंगे, यदि उपर्युक्त के विरुद्ध आचरण हुआ तो अविश्वास अनास्था आकर्षण रहित होकर ग्रलग अलग हो जावेंगे। अत उपर्युक्त वर्णित साम्प्रदायिक आचरण मनुष्य को मनुष्य से अलग करता है वह जोडता नही है यदि जोडता होता तो सम्प्रदाय बनते ही नही। जो व्यवहार मनुष्य को मनुष्य से अलग करे वह अधम है ग्रत सम्प्रदाय होना अधर्म को बढाना है इसीलिए सम्प्रदाय को धर्म मत कहो, सम्प्रदाय तो ग्रधर्म है।

ऊपर यह कहा गया है कि ससार मे प्रत्येक मनुष्य को स्वत ही वैदिक धर्म का पालन करना पडता है वह वैदिक धर्म से पूर्णत बधा हुआ है अत ससार का कोई भी व्यक्ति समाज या राष्ट्र उपर्युक्त कहे व्यवहारो को त्याग ही नही सकता और फिर यह कहना धर्म को राज-नीति से नही जोडना चाहिए कितना निर्मूल एव हास्यास्पद प्रतीत होता है। ग्राज देश मे यही वातावरण बना हुआ है। चाहे वह राज-नेता हो चाहे वह महान् शिक्षाविद् हो चाहे और कोई भी इसी प्रकार का महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हो वह यही राग ग्रलाप रहा है। राष्ट्र की नीति यह स्थापित की है कि राज्य धर्मनिरपेक्ष है परन्तु उपर्युक्त वर्णन से यह कितना भोडा हास्यास्पद लगता है। नीति तो यह होनी चाहिए कि राज्य धर्मसापेक्ष हो और सम्प्रदायनिरपेक्ष हो। साम्प्रदायिक ग्रन्थो मे एक सम्प्रदाय ने दूसरे सम्प्रदाय के प्रति घृणा, द्वेष, ईर्ष्या के भाव भर रखे हैं। जो इन ग्रथो को पढते नही वे तो बहकावे मे ग्रा सकते हैं परन्तु जिन्होने इन साम्प्रदायिक ग्रथो को पढा है वे बहकावे मे कैसे आ सकते हैं। आम मनुष्य को यह बहका रखा है कि "मजहब नही सिखाता आपस मे बैर रखना" परन्तु वास्तव मे तो ये ग्रन्थ इसके सर्वथा विप-रीत बात कहते हैं।

यह भी एक विडम्बना है कि एक तरफ तो राज्य सम्प्रदायवाद को अच्छा नहीं समझता दूसरी तरफ सम्प्रदायवाद को धर्म की शक्ल देकर बढावा दे रहा है। सारा भारतीय समाज ऐसी विचारधारा से पूर्णत भ्रमित है। राज्य का तो यह कर्त्तव्य है कि वह भारत की जनता को स्पष्ट सुलझी हुई ग्रोर सरल नीति प्रदान करे। हमारा यह निश्चित मत है कि जब तक देश मे सम्प्रदाय रहेगे राज्य मे भ्रष्टाचार रहेगा क्योकि राज्य के करने वाले भिन्न सम्प्रदायो से आते हैं ग्रौर सम्प्रदायो मे कुछ बातो को छोडकर पाखण्डपूर्ण आचरण होते है ग्रौर ऐसे सस्कार लिए हुए ही फिर राज्य मे भ्रष्टाचार फैलाते हैं। पाखण्डपूर्ण ग्राचरण ही भ्रष्टाचार की ओर प्रेरित करते हैं। इसीलिए देश के लोगो सब मिलकर कहो कि "सम्प्रदाय धर्म नही ग्रधर्म है" और सम्प्रदाय को राजनीति से नही जोडना चाहिए।

हे देश मे राज्य करनेवाले महानुभावो ग्राप धर्म के स्वरूप को ठीक प्रकार समझो और तदवत् आचरण करो एव नीति बनाओ।

यह आवाज आयसमाज के कतिपय क्षेत्र तक ही पहुंच कर रह जावेगी। काश यह आवाज देश की सारी जनता सुनती।

लेखक श्री ग्रनामानन्द सरस्वती

(पृष्ठ एक का शेष)

का सरक्षण तथा शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओ का दमन कर रहो है।

कन्या गुरुकुल खरल (जीन्द) तथा गुरुकुल कुम्भारखेडा (हिसार) के सचालक स्वामी रतनदेव जी ने श्री स्वामी ओमानन्द जी के प्रस्ताव का समर्थन करते हुए कहा कि हम अपनी पूरी शक्ति तथा निष्ठा से शराबबन्दी आन्दोलन को सफल करने के लिए इनके निर्देश पर मैदान मे उतर रहे हैं। मैं अन्य कार्यों को छोडकर आज ही तैयारी मे लग रहा हू और ग्रधिक से अधिक सत्यग्राहियो की भर्ती करने का कार्यभार सभाल रहा हू। बैठक मे अन्य आर्य नेताओ ने भी सुझाव दिए।

ग्राम जखराना मे शराब पीने पर प्रतिबन्ध

ग्राम जखराना जिला अलवर मे आर्यसमाज के वार्षिक उत्सव के समापन समारोह पर ३० मई को राजस्थान प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती की अध्यक्षता मे गाव की पचायत हुई जिसमे गाव के लगभग १५० प्रमुख व्यक्तियो ने हिस्सा लिया। इस पचायत मे सर्वसम्मति से निम्न प्रस्ताव पारित किये गये—

प्रस्ताव न० एक—सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि गाव का कोई व्यक्ति शराब निकालने के लिए गुड (रसकट) नही बेचेगा और न ही गाव मे लायेगा। गुड बेचता पकडे जाने पर पाच सौ रुपये जुर्माना किया जायेगा।

प्रस्ताव न० दो—गाव मे जो भी व्यक्ति शराब निकालेगा, उस पर ग्यारह सौ रुपये जुर्माना किया जायेगा अथवा पुलिस रिपोर्ट कराई जायेगी। पकडे जाने पर पकडने वाले को दो सौ रुपये दिए जायेगे।

प्रस्ताव न० तीन—शराब पीने वाले पर एक सौ एक रुपये जुर्माना किया जायेगा। दूसरी बार पकडे जाने पर १५१/ रु०, तीसरी बार पकडे जाने पर २००/ रु० जुर्माना किया जायेगा। इसके बाद पकडे जाने पर ११००/- जुर्माना किया जायेगा। यह नियम सार्वजनिक स्थान पर पकडे जाने पर लागू होगा। पकडवाने वाले को जुर्माने की राशि मे से २५ प्रतिशत दिया जायेगा।

प्रस्ताव न० चार—कोई भी फौजी शराब पीता हुआ या बेचता हुआ पकडा गया, उस पर भी उपरोक्त जुर्माना होगा।

प्रस्ताव न पाच—गाव मे आने वाली बारातो मे शराब पीने वालो पर प्रत्येक व्यक्ति पर पाच सौ रु० जुर्माना होगा।

प्रस्ताव न० छ—गाव मे किसी भी उत्सव पर नाचने पर पाबिन्दी को मना किया जायेगा। न मानने पर सौ रु० जुर्माना किया जायेगा।

प्रस्ताव न० सात—गाव से बाहर जाने वाली बारातो पर भी उपरोक्त नियम लागू होगे।

उपरोक्त निर्णय गाव मे पूरी तरह से लागू हो गए हैं। आज तक गाव मे जिन लोगो ने इन नियमो को तोडने की कोशिश की है उन पर ग्राम पचायत १८,०००/- (अठारह हजार रु० मात्र) का जुर्माना कर चुकी है।

वर्तमान मे शराब पीने का प्रचलन गावो मे प्राय बन्द हो चुका है। इस प्रकार का निर्णय करने का अन्य गावो मे भी वातावरण बनता जा रहा है।

—जगदीशचन्द्र आर्य

निमन्त्रणो पर अंकित दहेज मानवता पर कलंक है

श्री सूर्यदेव आर्य महामन्त्री आर्य युवक परिषद् हरयाणा के छोटे भाइयों की शादी बिना दहेज व बिना शराब के दिनाक १-६-९३ को सम्पन्न हुई। रामफल दहिया और करनैलसिह की शादी मे सिर्फ १० बाराती गए और शादी के कार्डो पर 'विवाहोत्सव पर शराब आदि नशीले पदार्थों का सेवन करना पूर्णत निषेध हैं।' और 'दहेज मानवता पर कलक है।' आदि आश्चर्यजनक वाक्य अकित थे। बारात गाव कमरौधा (रेवाडी) मे गई थी। बारातियो ने वहा पर भी शराब व दहेज के विरुद्ध नारे लगाये। बारात एक जलूस का रूप था। इस शादी की कमरौधा गाव में बहुत सराहना की गई। इस प्रकार वदिक नीति के अनुसार विवाह सस्कार सम्पन्न हुआ।

—श्रीकृष्ण दहिया

रुकिये—शराब के सेवन से परिवार की बर्बादी होती है। अत. अपने निकट के शराब ठेकों पर अपने साथियों सहित धरणे पर बैठकर शराबबन्दी लागू करावें।

शराबबन्दी पर भजन

करदे तू पीवण की टाल, अपने तू गात न सम्भाल।
होज्या बुरा हाल, घर नै चाल घर का करले ख्याल॥

१ कुछ ना है इन धन्ध्या मे।
बैठ रोज लफग्या मे।
घोला होग्या खून तेरा दारू की दो बुन्दया मे।
चालै सै उल्टी चाल

२ पीके जिन्दगी क्यूं खोव।
दारू तै गात नै क्यू धोव।
तेरे हालात देख कै पिया या तेरी घरवाली रोव।
आख्या मे उठै सै झाल

३ जब तै पीवण लाग्या तू।
सब कुछ बेच कै खाग्या तू।
माग-माग के लाऊ मैं फेर भी कोन्या जाग्या तू।
हम हो लिए कति कगाल

४ बालममन्द मे जाणा सै।
यो ठेका बन्द कराणा सै।
अतरसिह कवारी के तनै पूरा फज निभाणा सै।
दे दी ठीक मिसाल

५ मै समझाऊ तनै सुरेश कुमार।
छोड दे पीणी या हो सै जहर।
ठेका बन्द कराणे मै तू होज्या सबतै आगे त्यार।
सारा सुणा दिया हाल

करदे तू पीवण की टाल, अपने तू गात नै सम्भाल।
होज्या बुरा हाल, घर नै चाल, घर का करले ख्याल॥

प्रेषक—शराबबन्दी समिति, बालममन्द

दिल्ली प्रशासन द्वारा पहली से अंग्रेजी पढ़ाने के निर्णय की निन्दा

अंग्रेजी अनिवार्यता हटाओ समिति ने दिल्ली प्रशासन द्वारा अपने विशिष्ट २५० विद्यालयों में अगले सत्र से प्रथम कक्षा से ही अंग्रेजी की अनिवार्य शिक्षा देने के निर्णय की कड़ी आलोचना की है। समिति के प्रवक्ता श्री महावीरसिंह फोगाट ने यहां बताया कि उन्होंने केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री श्री अर्जुनसिंह से पत्र द्वारा अनुरोध किया है कि दिल्ली प्रशासन को इस निर्णय पर पुनर्विचार के लिए कहा जाए। उन्होंने पत्र में कहा है कि प्रशासन अन्य उपायों से भी छात्रों को अपने विद्यालयों में आकर्षित कर सकता है। जैसे हस्तशिल्प अनिवार्य करके कक्षेतर गतिविधियां बढ़ाकर तथा कक्षा कार्य में अन्यान्य सुधार तथा निरीक्षण व प्रोत्साहन दिया जा सकता है।

श्री फोगाट ने कहा है कि असली अड़चन केन्द्र सरकार की अंग्रेजीपरस्त नीति है। जिसके कारण संघ लोक सेवा आयोग, राज्य सेवा आयोग, विश्वविद्यालय, शिक्षा बोर्ड आदि अंग्रेजी की अनिवार्य शिक्षा लागू रखने के लिए विवश हैं। कोई कोई राज्य अंग्रेजी को वैकल्पिक विषय भी रखते हैं तो वहां भी लोगों को उच्च केन्द्रीय तथा राज्य सेवाओं में पिछड़ने की शंका सालती रहती है। यदि केन्द्र सरकार सभी संस्थानों में कठोरता से भारतीय भाषाओं में काम करने की नीति बनाकर उस पर अमल कराए तो यह अंग्रेजी की उलटी होड़ समाप्त हो सकती है। सारी दुनिया भारत, उसकी भाषा, साहित्य और परम्पराओं को महान् मानती हैं और हम भी इसकी महानता का ढोल पीटते नहीं थकते। लेकिन जब हम आजादी के लम्बे अन्तराल के बाद भी आज भी अपनी भाषा में अपने कार्य नहीं निपटाते तो हमारी क्या महानता है। कोई भी देश या व्यक्ति अन्धाधुन्ध नकल नहीं करता लेकिन एक महान् कहलानेवाला भारत है जो हर विदेशी चीज या पद्धति का बिना सही विवेचन किए उसकी अन्धाधुन्ध नकल करता जाता है। इसी कारण देश की प्रतिभाएं समाप्त होती जा रही हैं। जो प्रतिभा उभरती भी है वह देश के काम नहीं आती, उसे भी विदेशी खींच लेते हैं, हमने देश का वातावरण ही ऐसा बना दिया है। इसी कारण हम घाटे में रहते हैं और फिर बार बार उस घाटे की पूर्ति के लिए विदेशी कर्ज, विदेशी तकनीक का सहारा लेते जाते हैं और गहरे से गहरे गढे में फंसते जाते हैं। लगता है आर्थिक क्षेत्र में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के जाल फैलने के बाद शिक्षा क्षेत्र भी उनके पंजों में एक दिन स्वयं ही दे दिया जाएगा। क्योंकि अंग्रेजी माध्यम निजी क्षेत्र की ही नकल है यह मूलतः ईस्टइण्डिया कम्पनी के चलाए गए स्कूलों की नकल है जो हमारी एकता के मूल सांस्कृतिक ढांचे को तहस-नहस कर रही है और हम नहीं सम्भले तो अन्ततः हमारा महाविनाश और महाविभाजन होगा और संसार से हमारी महान् संस्कृति समाप्त हो जाएगी।

सभी केन्द्रीय तथा राज्य सेवा आयोगों, विश्वविद्यालयों, तकनीकी संस्थानों तथा शिक्षा बोर्ड आदि को कठोर आदेश देने चाहिए कि वे अंग्रेजी की अनिवार्य शिक्षा बन्द कर दें। शिक्षा-परीक्षा, साक्षात्कार, साहित्य निर्माण सभी भारतीय भाषाओं में करें। अध्यापक-प्राध्यापक तथा अनुसंधानकर्त्ताओं के लिए भारतीय भाषाओं में ही अध्ययन, अध्यापन तथा शोध प्रकाशन करना अनिवार्य किया जाए। ऐसा न करनेवाले कर्मचारियों की सब प्रकार की पदोन्नतियों पर रोक लगा दी जाए। अंग्रेजी माध्यम स्कूलों को तुरन्त भारतीय भाषाओं का माध्यम अपनाने को कहा जाए न मानने पर उनकी मान्यता समाप्त कर दी जाए। त्रिभाषा-सूत्र में मातृभाषा अनिवार्य रहे अन्य एक या अधिक भाषा पढ़ना छात्र की इच्छा पर रहे। किसी एक भाषा में उत्तीर्ण होना आवश्यक हो न कि तीनों में हो। अंग्रेजी समाचार पत्रों को कोई विज्ञापन न दिए जाएं। सभी विज्ञापन भारतीय भाषाओं के पत्रों को ही दिए जाएं। आकाशवाणी दूरदर्शन के ९९ प्रतिशत कार्यक्रम भारतीय भाषाओं में प्रस्तुत किए जाएं। पत्र में कहा गया है कि यदि समिति की मांगों पर ध्यान देकर सुधार नहीं किया गया तो समिति इसके विरोध में जन-जागरण करेगी। पत्र की प्रतिलिपि प्रधानमन्त्री, राष्ट्रपति तथा दिल्ली प्रशासन को भी भेजी गई है।

—गीता मधुर, कार्यालयाध्यक्ष अ अ समिति

आर्य वीर दल सोनीपत का ब्रह्मचर्य शिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्य वेदप्रचार मण्डल सोनीपत के तत्वावधान में 'आर्य वीर ब्रह्मचर्य शिक्षण शिविर' गुरुकुल यज्ञ तीर्थ एटा के यशस्वी आचार्य श्रद्धेय श्री विश्वदेव जी की अध्यक्षता तथा चौ० सूरजमल आर्य की प्रधानता में जनता हाई स्कूल गन्नौर के शान्ति निकेतन प्रांगण में दिनांक ६-६-९३ से १३-६-९३ तक सोत्साह एवं सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। श्री राजेश जी आर्य एवं श्री महीपाल जी आर्य व्यायाम शिक्षकों ने उत्साह और निष्ठापूर्वक ४२ आर्य वीरों को प्रशिक्षित किया। आर्य वीरों द्वारा निकाली गई शोभा यात्रा और व्यायाम प्रदर्शन अविस्मरणीय एवं प्रशंसनीय रहा। आचार्य विश्वदेव जी और श्री सत्यपाल जी भजनोपदेशक ने आर्य वीरों के जीवन को उज्ज्वल और पवित्र बनाने हेतु प्रकाशस्तम्भ बनकर उनका मार्गदर्शन किया।

सर्वश्री चौ० सूरजमल आर्य, सत्यपाल आर्य, रामचन्द्र आर्य, अमरनाथ आर्य, ओमप्रकाश वर्मा, मनोहरलाल डुडेजा, पं० जयदेव जतोईवाला, सन्तुराम मल्होत्रा, हरिश्चन्द्र बत्रा, टिकणी बाई बत्रा, कमल नयन चौधरी, ब्र० राजसिंह आर्य, चमनलाल आर्य, अजीतकुमार आर्य, अनिल आर्य, कर्णसिंह आर्य, हरिचन्द स्नेही (मण्डलपति) एवं हजारों नर-नारियों का आर्य वीरों को आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

यज्ञ, भजन, आशीर्वचन, व्यायाम प्रदर्शन, दीक्षांत एवं अलंकरण तथा ऋषिलंगर के आयोजन सहित समापन समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। —हरिचन्द स्नेही, मण्डलपति

आर्य स्कूल का परीक्षा परिणाम

यह विद्यालय आर्यसमाज मेन बाजार द्वारा संचालित है। इस वर्ष १०+२ का परीक्षा परिणाम निम्न प्रकार रहा—

(कामर्स) वाणिज्य संकाय में—८७.५% मानविकी (कला) संकाय में—९१.६%

कुमारी कविता मित्तल ने ३८८/५०० (७७.६०%) अंक प्राप्त करके हरयाणा राज्य में द्वितीय स्थान प्राप्त किया है जबकि इस विद्यालय का इस परीक्षा में सम्मिलित होने का प्रथम वर्ष है।

डा० राजेन्द्रप्रसाद गुप्ता
प्रबन्धक
आर्य विद्या मन्दिर सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, बल्लभगढ

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, गोहाना रोड, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०/७३   रजि० न० P/RIK-४९

प्रधान सम्पादक—सूबेसिह सभामन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २०   अक २८   ७ जुलाई, १९९३   वार्षिक शुल्क ३०)   (आजीवन शुल्क ३०१)

शराबबन्दी सत्याग्रह की तैयारी के लिए रोहतक में आवश्यक बैठक

माननीय महोदय,

नमस्ते।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को अन्तरग सभा के निश्चयानुसार हरयाणा मे पूर्ण शराबबन्दी की सर्वहितकारी तथा कल्याणकारी माग मनवाने के लिए सत्याग्रह आरम्भ किया जाना आवश्यक होगया है। सरकार की ओर से शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओ के साथ दुर्व्यवहार किया जा रहा है। शराब रूपी जहर के ठेकों पर शान्तिपूर्वक धरणा देनेवालो पर पुलिस चमन चक्र चला रही है तथा इसके विपरीत शराब (जहर) बेचनेवाले ठेकेदारो का सरक्षण दिया जा रहा है। सरकार को केवल शराब की बिक्री से धनसग्रह करके राज्य करने की चिन्ता है, परन्तु शराब को बिक्री चालू रखने के लिए स्वय सरकार को भ्रष्टाचार को कितना बढावा देना पड रहा है यह किसी से छुपा नही है। शराब के ठेकेदारो के द्वारा जनता के प्रतिनिधियों को भ्रष्ट करने का अभियान सरकार के अधिकारियों के सरक्षण मे चल रहा है। राजनैतिक और निजी स्वार्थ के वशीभूत वे भूल जाते हैं कि किस बुरी तरह से परिवार टूट रहे हैं। बच्चे अनाथ हो रहे हैं और महिलायें बलात्कार तथा अत्याचार की शिकार हो रही हैं, प्रजातन्त्र मे अपनी जनता के साथ दुर्व्यवहार अपराध है।

ऋषि मुनियो की पवित्र धरती हरयाणा के माथे से शराब के कलंक को मिटाने के लिए सभी धार्मिक सामाजिक सगठनो के सहयोग से शराबबन्दी सत्याग्रह करना आवश्यक होगया है। इसकी तैयारी तथा रूपरेखा तैयार करने के लिए हरयाणा के गुरुकुलो, आर्य विद्यालयों, आर्यसमाज के अधिकारियो तथा अन्य सामाजिक तथा धार्मिक कार्यकर्त्ताओ की हरयाणा मे आन्दोलन चलाने के प्रमुख केन्द्र दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक मे दिनाक १८ जुलाई १९९३ रविवार को प्रातः १० बजे बैठक रखी गई है। इसमें हरयाणा के प्रत्येक जिले से जत्थे तैयार करने, सत्याग्रह सचालन की व्यवस्था करने तथा कार्यक्रम को अन्तिम रूप देने पर आपके सुझावों पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया जायेगा।

अतः आपसे हमारा अनुरोध है कि अपने निजी कार्य छोड़कर इस ऐतिहासिक तथा परोपकारी शराबबन्दी सत्याग्रह में अपना अमूल्य योगदान देने के लिए यथासमय रोहतक पहुंचने की कृपा करे। सत्याग्रह की सफलता आपके सहयोग पर निर्भर है।

निवेदक —

ओमानन्द सरस्वती प्रथम सर्वाधिकारी, प्रो० शेरसिंह प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, स्वामी रतनदेव सरस्वती द्वितीय सर्वाधिकारी, सूबेसिंह मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, विजयकुमार पूर्व उपायुक्त सयोजक, हरयाणा शराबबन्दी समिति।

ग्राम बालसमन्द जिला हिसार में शराबबन्दी महासम्मेलन

ग्राम बालसमन्द मे शराब के ठेके के सामने धरना देकर ८० दिन के कडे सघर्ष के बाद ३ जून १९९३ को शराब का ठेका बन्द करवाया था। ६-६-९३ को घटना स्थल पर विजय दिवस भी मनाया गया था। अब शराबबन्दी समिति की ओर से ११-७-१९९३ को प्रात १० बजे आर्यसमाज मन्दिर बालसमन्द मे शराबबन्दी महासम्मेलन किया जाएगा। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से ग्राम बालसमन्द के सभी सक्रिय शराबन्दी कार्यकर्त्ताओ को सम्मानित किया जाएगा।

इस अवसर पर स्वामी ओमानन्द (गुरुकुल झज्जर, रोहतक), स्वामी रतनदेव (कन्या गुरुकुल, खरल), स्वामी सर्वदानन्द (गुरुकुल धीरणवास), महात्मा ताराचन्द (खाण्डा-खेडी), सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह, सभामन्त्री चौ० सूबेसिंह हरयाणा, शराबबन्दी समिति के सयोजक चौ० विजयकुमार जी पूर्व उपायुक्त, महात्मा रामुमुनि (वैदिक आश्रम न्याणा), प्रि० भगवानदास (पटेल नगर, हिसार), श्री महावीर प्रसाद प्रभाकर (बवानी खेडा), आचार्य दयानन्द शास्त्री व्याकरणाचार्य (दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार) आदि आर्य नेता पधारगे।

इसके अतिरिक्त भजन मण्डली पं० रामकुमार आर्य (आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा) के शिक्षाप्रद भजन होगे।

नोट—१०-७ ९३ को भी रात्रि को गाव में भजन [illegible] वेदप्रचार किया जाएगा। प्रात ८ बजे हवन भी होगा [illegible] को अमरीकी दूरदर्शन की टीम भी पहुच रही है।

अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी
सयोजक शराबबन्दी समिति जि० हिसार

आखिर विजय सत्य की हुई मातनहेल मे शराब का ठेका बन्द

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की प्रेरणा से जिला रोहतक के प्रसिद्ध ग्राम मातनहेल में दिनाक १२ अप्रेल ९३ से शराब के ठेके पर धरणा आरम्भ किया गया था। ग्रामवासियो ने निरन्तर धरणे पर बैठकर ठेके पर शराब की एक भी बोतल नही बिकने दी। जिला प्रशासन तथा पुलिस ने शराब के ठेकेदार का सरक्षण किया। पुलिस ने धरणे पर बैठने वालो तथा धरणा स्थल के मालिक मकान पर दबाव डालकर धरणा समाप्त कराने का यत्न किया। परन्तु ग्राम के नरनारी शान्तिपूर्वक धरणे पर बैठे रहे और शराब पीने वालों को इसकी बुराई से सावधान करते रहे। इस धरणे पर

(शेष पृष्ठ ६ पर)

महिलाओं पर अत्याचार की चौंका देनेवाली दो घटनाएं

आजकल देश के विभिन्न भागो में मदिरापान के विरुद्ध महिलाओं ने एक अभियान चला रखा है—आंध्र प्रदेश में भी, नागालैंड मे भी और हरियाणा में भी। इसके अलावा कुछ स्थानों से शराब के ठेके हटाने की माग को लेकर धरने भो महिलाए आजकल दे रही हैं। इसी शृंखला मे उत्तर प्रदेश मे सहारनपुर के निकटवर्ती गांव पठेड मे शराब का ठेका हटाने की माग को लेकर ग्रामीण महिलाए शहर के घटाघर पर धरना दिए बैठी थीं मगर पुलिस ने इन निहत्थी और अबला नारियो पर २३ जून को अधाधुध लाठियां बरसा कर जो कहर ढाया उसने हर प्रबुद्ध नागरिक को हतप्रभ करके रख दिया है और सभी वर्गों द्वारा उसकी न केवल निन्दा की जा रही है बल्कि एक सघर्ष समिति का गठन भी किया गया है।

श्री केशवानन्द तिवारी, जिनके नेतृत्व मे यह ग्रामीण महिलाए नशाबन्दी और ठेका हटाए जाने की माग को लेकर धरना दे रही थी, का कहना है कि पुलिस ने न केवल इन महिलाओ को पीटा और सडकों पर घसीटा बल्कि उनके गुप्तागो मे डड भी घुसेडे और उनकी छातिया तक खीची।

राजनीतिक दलो और सामाजिक सघटनो के नेताओ और कार्यकर्त्ताओ की बैठक मे श्री तिवारी ने महिलाओ के गुप्तागो से छेडखानी करते हुए पुलिस कर्मियो के फोटो भी दिखाए और यह भी बताया कि पुलिस ने बाहर से आए एक पत्रकार का कैमरा और वीडियो कैसेट तक छीन लिया था मगर महिलाओ ने अपनी जान पर खेलकर उसे वापस ले लिया।

श्री तिवारी का कहना है कि महिलाओ पर डडे लेडी पुलिस ने नही बल्कि पुरुष पुलिस ने बरसाए। डडे, लाठी, मुक्के और बेत बरसाने वाले सिपाहियो का नेतृत्व स्वय नगर पुलिस उप अधीक्षक श्री दिनेशचन्द शर्मा कर रहे थे। सबसे ज्यादा कहर थाना कोतवाली के एस आई चाद हुसैन ने ढाया जिसने औरतो को मारा-पीटा तो है ही, मौके का लाभ उठाकर औरतो से छेडछाड भी की थी। उन्होने अपनी बात के प्रमाण मे फोटो भी बैठक मे मौजूद लोगो को दिखाए।

जो सघर्ष समिति इस सिलसिले मे बनाई गई है उसने मामले की उच्चस्तरीय जाच कराने और दोषी पुलिस कर्मियों को तत्काल निलम्बित करने की माग की है और साथ ही चेतावनी भी दी है कि यदि प्रशासनिक अधिकारियो ने इस सम्बन्ध मे कोई कार्रवाई नही की तो समिति आन्दोलन का रास्ता अपनाएगी।

इस काड का एक विस्मयजनक पहलू यह है कि जिन महिलाओ को मारा-पीटा और बेइज्जत किया गया, उनके विरुद्ध और उनके नेता श्री केशवानन्द तिवारी के विरुद्ध मार-पीट करने वाले पुलिस अधिकारियों की तरफ से थाना सदर मे रिपोर्ट दर्ज करवाई गई है और उस रिपोर्ट मे उन पर पुलिस कर्मियो और पुलिस अधिकारियों के साथ मार-पीट करने का आरोप लगाया गया है।

हम सहारनपुर की इस घटना पर कोई टिप्पणी करने से पहले देश की राजधानी दिल्ली मे घटित एक ऐसी ही घटना का जिक्र करना जरूरी समझते हैं जिसमे हरियाणा के एक मन्त्री श्री निर्मलसिह की बहन तक पुलिस जुर्म का शिकार बन गई। श्री निर्मलसिंह ने इस घटना की जानकारी देते हुए पत्रकारो को बताया कि २३ जून को दक्षिण दिल्ली मे चितरजन पार्क थाने के इचार्ज अजीतसिंह ने उनकी छोटी बहन कुसुम दहिया के साथ मारपीट की और अभद्र व्यवहार किया। उन्होने कहा कि इस पुलिस अधिकारी ने उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद के पुलिस अधीक्षक श्री एम के माथुर के इशारे पर यह हरकत की।

श्री निर्मलसिंह ने बताया कि उनकी बहन श्रीमती कुसुम दहिया अपने पति और बच्चो के साथ मस्जिद मोठ फेस दो मे रहती हैं। उनके फ्लैट के नीचे श्री माथुर का परिवार रहता है। श्रीमती कुसुम दहिया के कूलर से श्री माथुर के बरामदे मे पानी गिरने की घटना को लेकर यह सारा हगामा हुआ। उन्होंने यह भी बताया कि उन्होंने पुलिस आयुक्त से सम्पर्क करने का भरसक प्रयास किया मगर जब इसमें सफलता नही मिली तो इस घटना के बारे मे केन्द्रीय गृह राज्यमन्त्री श्री राजेश पायलट से शिकायत करके यह अनुरोध किया है कि उनकी बहन के साथ अभद्र व्यवहार करने वाले चितरजन पार्क थाने के इचार्ज पुलिस अधिकारी को तुरन्त बर्खास्त किया जाए और इस मामले से जुडे उत्तरप्रदेश के पुलिस अधिकारी श्री माथुर के विरुद्ध कार्रवाई की जाए।

श्री निर्मलसिह ने यह भी कहा कि उनकी बहन ने पुलिस को अपने बारे में सब कुछ बताया और बार-बार अनुरोध किया कि वह उनके साथ ठीक ढंग से पेश आए लेकिन थाना प्रभारी यही कहते रहे कि तुम दिल्ली पुलिस को जानती नही हो। यह पूछे जाने पर कि क्या वह दिल्ली के पुलिस आयुक्त से मुलाकात करेंगे, श्री निर्मलसिह ने कहा कि उनकी पुलिस आयुक्त से मुलाकात करने की कोई इच्छा नही है क्योंकि इस मामले मे उन्हे उनसे कोई आशा नही है।

इन दोनो ही दुखदायी घटनाओ के बारे मे एक विचित्र सयोग यह रहा है कि यह दोनो एक ही दिन हुई—एक ओर २३ जून को जहा सहारनपुर मे धरने पर बैठी हुई महिलाओ के साथ पुलिस ने नितान्त अमानवीय व्यवहार किया वहां २३ जून को ही देश की राजधानी दिल्ली मे हरयाणा के एक मन्त्री की बहन को पुलिस के अभद्र व्यवहार का सामना करना पडा।

इस सदर्भ मे यह लिखना असगत नही होगा कि अग्रेजो के समय मे भी शराब का विरोध होता था और केवल पुरुष ही नही महिलाए भी भारी सख्या मे शराबबन्दी के लिए पिकेटिंग करती थी और गिरफ्तारिया देती थी मगर उस समय भी महिलाओ को पुलिस के हाथो कभी इस तरह बेइज्जत नही होना पडा जिस ढग से अब स्वाधीन भारत के अदर सहारनपुर मे होना पडा है।

इस मामले मे एक और महत्त्वपूर्ण सवाल यह उठता है कि धरने पर बैठी हुई महिलाओ के विरुद्ध अगर कोई कार्रवाई जरूरी भी थी तो उसके लिए लेडी पुलिस क्यो नही भेजी गई? पुरुष पुलिस को वहा क्यो भेजा गया?

इसी तरह दिल्ली मे भी जो कुछ श्रीमती कुसुम दहिया के साथ हुआ वह भी एकदम चौंका देने वाला है—अगर देश की राजधानी मे जहा देश की सत्ता के सचालक स्वय बैठे हैं, एक प्रदेश के मन्त्री की बहन तक को इस प्रकार के निन्दनीय व्यवहार का सामना करना पडे तो एक सामान्य महिला कैसे अपने मान-सम्मान की रक्षा की आशा वहा कर सकती है?

यहा यह लिखना भी असगत नही होगा कि महिलाओं के साथ पुलिस के दुर्व्यवहार के समाचार देश के अन्य भागों से भी समय-समय पर आते रहते हैं, जिनका जिक्र इन कालमों मे अक्सर हम करते रहते हैं।

यह बात कदापि भूली नहीं जानी चाहिए कि पुलिस की वर्दी जहां कुछ अधिकार देती है वहा कुछ जिम्मेदारिया भी देती है और इन जिम्मेदारियो में से एक जिम्मेदारी माताओ, बहनो और बेटियो के मान-सम्मान की रक्षा की भी है। किसी भी पुलिस अधिकारी को यह भूलना नही चाहिए कि उनके घर मे भी मा-बहन और बेटिया हैं।

हम समझते हैं कि जहा इन दोनो काडो की अविलम्ब जाच कराई जाए और दोषी पुलिस अधिकारियो को तुरन्त दण्डित किया जाए वहा इस बात को भी निश्चित बनाया जाए कि भविष्य मे इस प्रकार की घटनाओ की पुनरावृत्ति कहीं भी और किसी भी मूल्य पर न होने पाए। इतिहास साक्षी है कि जो समाज नारी के सम्मान की रक्षा नही कर पाता अतत उसका सम्मान भी दाव पर लग जाता है, बच नही पाता। (पजाब केसरी से साभार) —विजय

आर्यसमाज दातौली जिला भिवानी का चुनाव

प्रधान ओमप्रकाश आर्य, उपप्रधान श्री जगराम आर्य, मन्त्री श्री बलबीरसिंह आर्य सरपच, उपमन्त्री मा० स्वरूपसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष मा० दयानन्द आर्य।

आर्यसमाज औरगाबाद मित्रौल जिला फरीदाबाद का चुनाव

प्रधान श्री बहालसिंह भारद्वाज उपप्रधान श्री लेखराम आर्य, मन्त्री श्री डालचन्द प्रभाकर, उपमन्त्री श्री बसीलाल आर्य, कोषाध्यक्ष श्री नत्थीराम मास्टर, प्रचारमन्त्री श्री सोहनलाल शर्मा, लेखानिरीक्षक श्री दयाराम आर्य।

वैदिक प्रचारमंडल अम्बाला छावनी का चुनाव

प्रधान श्री वेदप्रकाश शर्मा, उपप्रधान श्री शादीलाल, श्री मेलाराम पुरी, मन्त्री श्री कृष्णकुमार, उपमन्त्री श्री गिरीश, श्री अनिल त्यागी, कोषाध्यक्ष श्री वेदमित्र हापुडवाले, पुस्तकाध्यक्ष के० सी० सैनी।

गुरुपूर्णिमा पर दीक्षान्त समारोह सम्पन्न

वैदिक योग आश्रम ऋषि नगर (हिसार) मे दिनाक ३-७ ९३ को गुरुपूर्णिमा पर दीक्षान्त समारोह सम्पन्न हुआ। प्रात ८ बजे स्वामी वेदरक्षानन्द जी के ब्रह्मत्व मे आचार्य दयानन्द शास्त्री (हिसार) द्वारा यज्ञ किया गया। इस अवसर पर विदुषी बहिन विशोका जी ने ब्रह्मचर्य आश्रम से सन्यास की दीक्षा ली। सन्यास की दीक्षा आश्रम के सस्थापक स्वामी अग्निदेव भीष्म ने द्वारा दी गई। इस अवसर पर सैकडो नर-नारियो के बीच मे जाकर विशोका जी साध्वी ने भिक्षा मागी। आशीर्वाद के पश्चात् यज्ञ समाप्त हुआ।

इसके बाद आश्रम के गेट के साथ बाहर सडक पर पडाल लगा हुआ था वहा स्वामी वेदरक्षानन्द की अध्यक्षता मे एक सभा हुई। जिसमें स्वामी सुधानन्द, स्वामी सर्वदानन्द, स्वामी निर्मलानन्द, स्वामी माधवानन्द, आचार्य प० सत्यप्रिय, प्रो० रामविचार, सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी आदि ने आशीर्वाद शुभकामनाओ के साथ-साथ आध्यात्मिक तथा सामाजिक बुराइयो को दूर करने पर बल दिया। श्री क्रान्तिकारी ने विशोका जी को सुझाव दिया कि जहा आप महिला वर्ग मे विशेषकर आध्यात्मिक तथा पाखण्ड से जागृत करेगी वही महिलाओ को शराबबन्दी आन्दोलन के लिए बढ-चढकर भाग लेने के लिए प्रेरित अवश्य करे। क्योकि शराबियो से सबसे ज्यादा दुख महिलाओ को ही झेलना पडता है। साथ मे पुरुष वर्ग से भी पुरजोर अपील की कि स्वय बुराई छोडकर अन्यो की छुडवाओ। अपने-अपने गाव मे जहा शराब के ठेके हैं वहा धरने देकर बन्द करवाओ जहा अवैध शराब बिकती है वहा शराबबन्दी समिति बनाकर उसे तुरन्त बन्द करवाओ। गाव मे शराब के ठेकेदार को जीप मत घुसने दो। गाव में शराब पीनेवाले और बेचनेवालो को समझाओ। अगर बाज न आए तो दण्ड करो तथा सामाजिक बहिष्कार करो। शराब सब पापो की जड है। अत शराब हटाओ हरयाणा बचाओ। मच का सचालन स्वामी अग्निदेव भीष्म ने किया। प० राकेश व रामकुमार के ईश्वर भक्ति के भजन भी हुए। अन्त मे सभी नर-नारियो ने देशी घी के हलवे से ऋषि लगर में भोजन किया।

पहलवान कर्णसिंह आर्य खोखा निवासी।

शोक प्रस्ताव

दिनाक २७ ६-९३ रविवार को श्री हेतराम गर्ग प्रधान आर्यसमाज होडल की धर्मपत्नी श्रीमती शकुन्तला देवी प्रधान महिला आर्यसमाज होडल का हृदयगति रुक जाने से निधन होगया।

आर्यसमाज होडल की कार्यकारिणी की बैठक दिनाक २७-६-९३ को रात्रि ८ बजे श्री मेतराम शास्त्री भूतपूर्व प्रधान आर्यसमाज होडल की अध्यक्षता मे आर्यसमाज होडल मे हुई। जिसमे शोक प्रस्ताव पास किया गया कि उनके शोक सतप्त परिवार को परमपिता परमात्मा इस असह्य शोक को सहन करने की शक्ति प्रदान करे और दिवगत आत्मा को सद्गति दे।

भद्रसैन सचदेव, मन्त्री आर्यसमाज होडल

शराबबन्दी भजन

टेक—पहले छुप-छुप के फिर तो बेधडके पीने लगे ये जहर,
अरे ये रास्ता है नाश का जी पहले छुप-छुप के,

(१) पहले थोडी-थोडी, फिर कई बोतल पी जाए।
जेब हुई जब खाली तो बर्तन तक घर आए॥
ठेके वाले से कहे, दे मुझे एक पव्वा उधार का,
जी पहले छुप-छुप के

(२) बीबी बच्चे इसकी इस आदत से तग हैं।
पीकर बणता ठाकुर पर जेब से बिल्कुल नग है॥
मुर्गे के बदले दे दिया एक बछडा हजार का,
जी पहले छुप छुप के

(३) बच्चे मरते भूखे, ना कपडे, ना रोटी।
बाप मिल्या शराबी, किस्मत म्हारा खोटी॥
ऊटमटीला कर बैठा, अपने घरबार का,
जी पहले छप-छुप के

(४) हरपाल आर्य तुझको बार बार समझाता है।
छोड दे दारु पीणी आर्य समाज भी चाहता है॥
सध्या हवन किया कर, भला हो सारे ससार का,
जी पहले छुप छुप के

प्रेषक—शराबबन्दी समिति क्योटक
जिला कैथल

महिलाओ से भय-शराबी मर्दो को

मणिपुर मे शराबी मर्दो की लत छुडाने के लिए वहा महिलाओ ने बाकायदा एक सेना तैयार कर रखी है। 'नुपीलेन' यानी 'वूमॅन वार एसोसिएशन' मे इस समय करीब ३० हजार महिला कार्यकर्त्ता हैं। नुपीलेन की महिला सदस्यो के कदम इन पुरुषो के लिए काफी खतरनाक साबित हुए जो इन्हें शराब के नशे मे रात मे सडको पर मिले। ऐसे व्यक्तियो को इनकी पेट्रोल टीम पकडने के बाद पहले नगा करती हैं और फिर इन्हें गधे की पीठ पर बिठाकर सडको और गलियो के चक्कर लगवाती है। अपमानजनक स्थिति में घूमते इन पुरुषो को लगातार यह कहना पडता है, "शराब नही पीएगे।" इसके बाद इन्हे पुलिस को सौप दिया जाता है। —(गृहशोभा से साभार)

अमरीकी दूरदर्शन द्वारा शराबबन्दी कार्यक्रम का निरीक्षण

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा चलाये जा रहे शराबबन्दी आन्दोलन की आवाज अमरीका तक पहुच चुकी है। गत सप्ताह अमरीकी दूरदर्शन के अधिकारियो ने सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी से नई दिल्ली मे भेंट करके आन्दोलन की गतिविधियो की जानकारी प्राप्त की थी। शराबबन्दी गतिविधियो को उन्होने स्वय मौके पर पहुचकर निरीक्षण करने का निम्न प्रकार कार्यक्रम बनाया है—

दिनाक १० जुलाई प्रात ९-३० बजे रोहणा (सोनीपत)
,, ,, ,, दोपहर १ बजे मातनहेल (रोहतक)
,, ,, ,, दोपहर बाद ४ बजे पाल्हावास (रेवाडी)
दिनाक ११ जुलाई प्रात ११ बजे बालसमन्द (हिसार)

शराब का ठेका सील

हिसार ३ जुलाई (नादवाल) टोहाना पुलिस ने कल शराब पीकर हुई तीन व्यक्तियो की मौत के सम्बन्ध मे भारतीय दण्ड सहिता धारा ३०४ व ३४ के तहत एक मामला दर्ज किया है। यह मामला राजेन्द्र नामक व्यक्ति के आधार पर दर्ज किया है। राजेन्द्र व एक अन्य ने भी पिया था। परन्तु उनको बचा लिया गया। राजेन्द्र ने अपने बयान मे कहा है कि मृतक प्रेम शराब के अलावा स्पिरिट व अन्य मादक द्रव्य लाया था। इनको शराब मे मिलाया गया और उसके बाद इसे पिया गया, जिससे प्रेम सहित दो अन्य व्यक्तियो की मृत्यु हो गई थी। टोहाना ने उस शराब के ठेके को भी शील कर दिया है, जहा से शराब खरीदी गई थी। यह शराब का ठका हरियाणा के एक मन्त्री के समर्थक का बताया जाता है।

नशाबन्दी—समय की पुकार

नशाखोर व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र का प्रबल शत्रु है। मादकता से विभिन्न रोग, दरिद्रता, कमजोरी और लडाई झगडे पैदा होते हैं। नशो के सेवन से नैतिक पतन हो जाता है और राष्ट्र एक सभ्य नागरिक से वचित हो जाता है। इस तरह मानवता का अस्तित्व ही खतरे मे पड जाता है। वैदिक काल मे शराब आदि मादक द्रव्यो का सेवन नही किया जाता था। महाभारत काल मे शराब के सेवन से यदुवश के विनाश का वर्णन मिलता है। इसके बाद मुगल और ईसाई सस्कृति ने शराब को और भी पनपने के लिए खुलकर प्रचार किया।

वर्तमान मे शराब पीने की आदत समाज मे इतनी अधिक फैल गई है कि सारा समाज रोगग्रस्त हो गया है। सरकार भी इसके दुष्परिणामो से बहुत चिंतित है परन्तु शराब के विक्रय से होने वाली आय सरकार की सबसे बडी मजबूरी है जबकि इससे होने वाले जान-माल के नुकसान की राशि सरकारी आमदन से भी अधिक है।

वैदिक साहित्य मे शराब के पीने व इसके प्रचार-प्रसार का कही भी वर्णन नही है। शराब पीने वालो को दुर्दशा का वर्णन करते हुए ऋग्वेद ८ २-१२ मे कहा गया है—

हृत्सु पीतासो युध्यन्ते दुर्मदासो न सुरायाम्।
ऊधर्न नग्ना जरन्ते॥

(न) जैसे (सुराया) शराब (हृत्सु पीतासः) दिल खोलकर पीनेवाले (युध्यन्ते) आपस मे लडते हैं और (न) जैसे वे (नग्ना) नगे होकर (ऊध) रातभर (जरन्ते) बडबडाते हैं, वे (दुर्मदास) दुष्ट बुद्धि वाले लोग होते हैं।

दुर्मदास का अर्थ जिनका मद दुष्ट होता है अर्थात् आनन्द करने की रीति जिनकी बहुत बुरी होती है, जो शराब आदि पीकर नाचना खुशी का चिन्ह समझते हैं, वे 'दुर्मद' होते हैं। 'सुमद' ऐसे नही हुआ करते, वे सभ्यता से रहते हैं। 'सुमद' लोग नारियल का पानी तथा केवल शुद्ध जल पीते हैं और आनन्द से हृष्ट-पुष्ट होते हैं। हर एक मनुष्य को 'सुमद' होना चाहिए। 'दुर्मद' होना योग्य नही है। मद्यपान की इस प्रकार निन्दा की गई है, अत मद्यपान करना किसी को भी उचित नही है।

—श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

वेद मे जुआ खेलने और शराब पीने का बडा विरोध किया गया है और इनकी बुराइयो को गिनाया गया है। कुछ लोगो का मत है कि शराब पाने मे कोई हानि नही है क्योकि वेद मे सोमरस पान करने का उपदेश है और यह शराब ही सोमरस है तथा देवता लोग भी इसका सेवन करते थे। यहा प्रसगवश वेद के मन्त्र के प्रमाण से सोमरस का वर्णन इस प्रकार है—

प्रावेपा मा बृहतो मादयन्ति प्रवातेजा इरिणे वर्वृताना ।
सोमस्येव मौजवतस्य भक्षो विभीदको जागृविर्मह्यमच्छान् ।

ऋ० १०-३४-१

(मौजवतस्य सोमस्य) स्वच्छतायुक्त सोमरस के (यक्ष इव) पान के समान (विभीदक) विशेष प्रिय और (जागृवि) जागृति देने वाला (मह्य अच्छान्) मेरे लिए यह जुआ है।

इस मन्त्र मे सोमरस को जागृति देने वाला कहा गया है और शराब को पीकर व्यक्ति अपनी चेतना, सूझ-बूझ को खोकर मद से अन्धा हो जाता है उसकी वाणी सयम से बाहर हो जाती है शरीर लडखडाने लगता है। शराबी अपनी मा, बहिन और बेटी को भी नही पहचानता है, पत्नी की पिटाई कर डालता है। ऐसे मे प्रश्न पैदा होता है कि क्या यही है सोमरस जिसे पीकर देवता लोग आनंदित होते थे। नही ! यह वह सोमरस नही है। यह तो केवल जहर है। सोम क्या है ? यह निम्न मन्त्र मे देखें।

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह।
सोमो मा तत्र नयतु पय सोमो दधातु मे। अ० १९-४३-५

(यत्र) जिस लोक को (ब्रह्मविद) वेदो को जानने वाले संन्यासी लोग अपने (दीक्षया) व्रतादि तथा (तपसा सह) तप द्वारा (यान्ति) प्राप्त करते हैं, उसी मे (सोम) सोमस्वरूप परमात्मा (मा) मुझे (नयतु) ले जाए और (मे) मुझमे (पय) दुग्धादि उत्तम पदार्थों को (दधातु) धारण कराए।

यहा सोम परमात्मा को कहा गया है जिसे साधक तप और व्रत के द्वारा प्राप्त करके दिव्य पदार्थों को प्राप्त कर लेता है।

उक्त मन्त्रो से स्पष्ट होता है कि सोम शब्द वेद मे परमात्मा, जीवात्मा के लिए प्रयोग किया गया है और 'सोमरस' शब्द सोम लता के रस के लिए जो कि इस शराब से सर्वथा भिन्न है आनन्द, बल, पराक्रम को प्रदान करता है और सद्बुद्धि, भक्तिभावना तथा सात्विकता देता है जबकि शराब से मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और वह नीच से नीच कर्म करने मे भी सकोच नही करता। शराब का नशा उतर जाने पर शराबी अपने किए हुए व्यवहार पर पश्चाताप करता है। सोमरस का पान आध्यात्मिक आनन्द के लिए किया जाना था जबकि शराब का पान आत्महनन के लिए, कामुकता के लिए, किसी के मन का भेद लेने के लिए किया जाता है। (क्रमश)

ग्राम पाल्हावास का शराब विरोधी धरणा जारी

१ अप्रैल १९९३ से ग्राम पाल्हावास जि० रेवाडी के बहादुर वीरो द्वारा शराब विरोधी धरणा चल रहा है। १८-४-९३ को इक्कीस गावो की पचायत हुई। धरणे के समथन मे अनेक वक्ताओ ने अपने विचार रखे। यज्ञ हवन से पचायत की कार्यवाही आरम्भ हुई। यज्ञ हवन प० मातूराम प्रभाकर सभा उपदेशक द्वारा किया गया तथा श्री जयपाल जी सभा भजनोपदेशक के भजन हुए। पचायत ने अनेक महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पास किए। पचायत की अध्यक्षता गुरावडा ग्राम के जैलदार ने की।

इसके पश्चात् उपायुक्त रेवाडी को एक ज्ञापन दिया गया। उपायुक्त ने एक सप्ताह का समय मागा। फिर मिले किन्तु उपायुक्त ने फिर और समय मागा। इसी दौरान उपायुक्त की बदली हो गई। दूसरे उपायुक्त से भी फिर मिले। उपायुक्त की तरफ से आश्वासन के अतिरिक्त कुछ नही मिला।

अभी कुछ समय पूर्व ठेकेदार ने ग्राम सचिव किशनलाल को ४० हजार रुपये घूस देकर काम चलाऊ सरपच अनपढ और मानसिक रूप से बीमार होने के कारण सरपच के हस्ताक्षर शराब की ब्राच गाव चादनवास मे खुलवाने के लिए प्रस्ताव पास करवा लिया।

इसके विरोध मे पाच गावो की पचायत हुई तब इस किशनलाल ग्राम सचिव के कारनामों की कलई खुली।

५-७-९३ को पाच गावो की तरफ से रेवाडी मे प्रदर्शन किया उपायुक्त को पुन ज्ञापन दिया गया।

अत पाल्हावास के बहादुर वीर अपने ग्राम मे तो उत्साह-पूर्वक धरणे का सचालन कर ही रहे हैं, किन्तु चादनवास की शाखा को खत्म करने के लिए भी सघर्षरत हैं। इन बहादुर वीरो को अवश्य सफलता मिलेगी और सरकार को झुकना पडेगा। सभा की ओर से प० ईश्वरसिंह तूफान की भजनमण्डली शराबबन्दी प्रचार कर रही है।

यदि आप हरयाणा मे पूर्ण शराबबन्दी लागू करवाना चाहते हैं तो अपने क्षेत्र के निकट के ठेको पर चल रहे धरणों मे सम्मिलित होवें।

बीमारियां कब और क्यों आती हैं

आजकल देखने मे आता है कि प्रतिदिन रोग और रोगी बढते ही जा रहे हैं। कभी हस्पतालो मे जाकर देखिये मरीजो की भीड लगी रहती है। आपने कभी सोचा है कि यह बीमारियां क्यो आती है? एक भाई से जब हमने यह सवाल किया तो वह धार्मिक दृष्टिकोण से कहने लगा कि यह कर्मों का फल है। कर्मो के अनुसार दुख सुख भोग रहे हैं। यह भी ठीक है परन्तु हमने अनुभव से प्राप्त किया है कि बीमारिया हमारी लापरवाही और बदपरहेजी से आती हैं। हम स्वय अपने पाव पर कुल्हाडी मारते हैं। हमारे गलत कारनामे हमे बीमारी मे फसाते हैं क्योकि जो मन और इन्द्रिया हमारे वश मे होनी चाहिये, हम उनके इतने गुलाम बन गये है जिसकी कोई सीमा नही है। जो कुछ हमारे मन मे आता है वही करने लगते हैं और जबान जो चाहती है वही खा जाते हैं। हम यह कभी नही सोचते कि ऐसा करने से या खाने से हानि है या लाभ है। यदि आप मन के वशीभूत होकर बिना सोचे समझे कोई कार्य करेगे तो सदैव पछताते रहेगे।

आयुर्वेद के मतानुसार "जब हम अपने आहार विहार मे कुपथ्य करते हैं तो रोग ग्रसित हो जाते हैं।"

वास्तव मे यह एक तथ्य है। यदि आप निरोग और स्वस्थ रहना चाहते हो तो खाने पीने व रहने सहने मे कुपथ्य (बदपरहेजी) मत करो। मैं दावे के साथ कहता हू कि आप कभी बीमार नही होगे। ऐसी चीजें जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं, बल बुद्धि का नाश करती हैं, उन्हे जीभ के चस्के मे कभी मत खाओ। हमारा भोजन शुद्ध, सुपाच्य और सतोगुण वाला होना चाहिये। भूख लगने पर चबा-चबाकर खाना चाहिए।

हमारे निवास स्थान साफ-सुथरे, खुले और हवादार होने चाहिये। मकानो के अन्दर आर्द्रता (सील) और अन्धेरा नहीं रहना चाहिए। उनमें सूर्य की किरणें और ताजा हवा प्रवेश करनी चाहिए। हमारी दिनचर्या, रात्रिचर्या शुद्ध वातावरण मे ऋतु अनुकूल होनी चाहिए। प्रात काल सूर्य उदय होने से एक घण्टा पूर्व उठकर भ्रमण करने के लिए जाने से अनेक प्रकार के रोग दूर हो जाते हैं।

देवराज आर्यमित्र, वैद्य विशारद, आर्यसमाज वल्लभगढ

श्री महेन्द्रसिंह का सराहनीय कदम

ग्राम नलवा (हिसार) में गत दो वर्ष से शराब पीने व बेचने पर पाबन्दी है। सरपच साहब इसमे सक्रिय भूमिका निभा रहा है। ७ वर्ष पहले से श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी सयोजक शराबबन्दी समिति जिला हिसार भी अपनी जमीन होने के नाते ग्राम नलवा मे जो बसता है। समय-समय पर सरपच साहब से सम्पर्क करता रहता है। गत २७ जून १९९३ को एक असामाजिक तत्व श्री खमामा राम को भाटो को दो बोतल बेचता पहरा लगाकर स्वय सरपच श्री महेन्द्रसिंह ने पकडा। कई बार उसे चेतावनी दी जा चुकी थी। लेकिन इनकार करता रहा। तुरन्त गाव इकट्ठा किया। दोनो बोतल गन्दी नालो मे उडेल दी। ५१ रु० दण्ड किया, पचायत से क्षमा मागी। सारे गाव ने सरपच साहब की भूरि-भूरि प्रशसा की।

अगर इस प्रकार सभी गाव के सरपच अपने कर्त्तव्य का पालन करे तो प्रत्येक गाव मे शराब बन्द हो सकती है। किसी भी गाव के असामाजिक तत्त्व तथा ठेकेदार की हिम्मत नही कि वह गाव मे शराब बेच सके।

प० अत्तरसिंह आर्य, प्रधान आर्यसमाज नलवा जिला हिसार

रुकिये—शराब के सेवन से परिवार की बर्बादी होती है। अत. अपने निकट के शराब ठेको पर अपने साथियो सहित धरणे पर बैठकर शराब-बन्दी लागू करावें।

शराबबन्दी के लिए पंचायतें व धरने

पलवल, २८ जून

शराब विरोधी आन्दोलन जिला फरीदाबाद के गावो मे धीरे धीरे जोर पकडता जा रहा है। ग्रामीणाचल मे बसने वाले युवा, महिलाए व किसान शराबबन्दी के सवाल पर लामबन्द हो रहे हैं। गाव-गाव मे पचायत हो रही हैं तथा शराब के ठेको पर धरना देने की योजनाए बनायी जा रही हैं। उपमडल पलवल के गाव बढा मे ८ जून से निरन्तर ठेके के समक्ष शराबबन्दी सघर्ष समिति के कार्यकर्ता धरने पर बैठे हुए है।

शराब बन्दी सघर्ष समिति के प्रधान किरोडीमल ने बताया कि समिति का धरना शान्तिपूर्वक चल रहा है जो शराब की बोतल खरीदने आता है उसे समझाकर वापिस भेज दिया जाता है। ठकेदार के आदमियो की ओर से झगडे की अनावश्यक कोशिश की जा रही है। उनके पास हथियार भी बताए जाते हैं।

धरने पर बठने वालो को ठेकेदार की ओर से धमकिया दी जा रही हैं। बढा गाव के आस-पास के अधिकतर गावो मे शराब को पेटिया भेजकर शराब की बिक्री की जा रही है। सघष समिति ने सरकार को सूचित कर दिया है, लेकिन दुख का विषय है कि सरकार की आर से अवैध हथियार रखने वालो के विरुद्ध कोई कार्यवाही नही की गई है।

शराब बन्दी सेना उन्होने बताया कि समिति ने निर्णय लिया है कि जब तक ठेका बन्द नही होगा यह आन्दोलन निरन्तर जारी रहेगा। ठेकेदार द्वारा गावो मे भेजी गई पेटियो को पकडने के लिए नौजवानो की ओर से शराबबन्दी सेना बनाई गई है। यह सेना पेटी सप्लाई करने वालो के विरुद्ध सीधी कार्यवाही करेगी। समिति ने यह निर्णय सरकार के व्यवहार से तग आकर लिया है। अब किसी भी गाव मे शराब का काला धधा नही चलने दिया जायेगा।

श्री किरोडीमल ने बताया कि ठेकेदार पजाब का रहने वाला है और प्रतिदिन नये-नये आदमी ठेके पर लाते है। वे शराब पीकर अनर्गल हरकते करते हैं, उनकी गन्दी हरकतो से ऐसा अनुभव होता है कि उन्हे झगडा करने के उद्देश्य से लाया जाता है। धरना स्थल पर आकर अपशब्दो का प्रयोग तक करते हैं। समिति के कार्यकर्ता सरकार की ओर देख रहे हैं कि सरकार इन असामाजिक तत्त्वो के विरुद्ध क्या कार्यवाही करती है? उन्होने चेतावनी दी है कि अगर सरकार ठेकेदार के गुण्डो के खिलाफ कार्यवाही नही करेगी तो समिति के कार्यकर्ता सीधी कार्यवाही के लिए विवश होगे।

ठेकेदारों को चेतावनी पलवल के जनता दल के अध्यक्ष सुजीत तेवतिया ने नगर के शराब ठेकेदारो को चेतावनी दी है कि यदि उन्होने एक माह के भीतर अपने ठेके बन्द नही किए तो शराब की बोतल जबरन तोड दी जायेगी। उन्होने कहा कि नगर मे तीन ठेके तो ऐसे हैं, जहा से सैकडो बच्चे स्कूल जाते हैं।

श्री तेवतिया के अनुसार सरकार राजस्व के चक्कर मे सम्पूर्ण समाज का विनाश करने पर तुली है। —साभार नवभारत टाइम्स

यहा सभा के उपदेशक प० हरिश्चन्द्र शास्त्री, प० भजनलाल आर्य, श्री खेमसिंह शराब बन्दी प्रचार कर रहे हैं।

—प्रि० नारायणसिंह

शराब पीनेवाले इन प्रश्नो पर अपने मन मे विचार करें

१ क्या इस आदत के लिए आपका समय और धन नष्ट नहीं होता?

२ क्या इस कारण घर मे, पत्नी के साथ या माता-पिता, भाई-बहिन से झगडा नही होता?

३ क्या तुम कुसग या सग के कारण पीते हो, या स्वय अपनी इच्छा से पीते हो?

४ क्या शराब पीने के पश्चात् आपका मन आपको फटकारता है—आपके अन्दर से कोई आवाज आती है—यह काम बुरा है इसे छोडो?

५ क्या आप शराब अपनी स्वास्थ्य के लिए या अपने मे "हल्ला शेरी" "गुण्डापन" पैदा करने को पीते हो—या केवल जीने के लिए पीते हो?

६ क्या आपने कभी शराब पीने और इस कारण अन्य जो खर्च होते हैं, उनके लिए कभी हिसाब लिखकर मास पश्चात् जोड लगा कर देखा है। क्या इस खर्च के कारण आपके घरेलू खर्च पर कोई बोझ नही पडता, क्या कभी यह ध्यान मे नही आया कि इस फालतू खर्च के कारण परिवार निर्धनता की ओर बढ रहा है।

७ क्या तुम शराब अपने से ऊचे स्तर के लोगो मे बैठकर पीते हो या निचले स्तर के लागो के साथ बैठकर पीते हो।

८ यह पीने की इच्छा जब आरम्भ की थी—वहीं तक सीमित है या दिन प्रतिदिन यह सीमा बढती जा रही है।

९ क्या तुम उस स्टेज तक पहुच गये हो—जब शराब को अब तुम नही पीते बल्कि शराब तुम्हे पी रही है। शराब के कारण तुम्हारा शरीर कई क्रोनिक रोगो का शिकार हो गया है—क्या इन रोगो के इलाज का तुम्हारे पास इतना पैसा है ध्यान रहे एक गुर्दा खराब होजाये तो उस पर पाच लाख खर्च आता है—हृदय ओप्रेशन पर दो लाख खर्च आता है इत्यादि।

१० क्या तुम दैनिक निश्चित समय पर पीते हो—क्या इस आदत से तुम्हारी घरेलू जिम्मेवारिया प्रभावित नही हुई?

११ क्या शराब की वृद्धि के कारण अब आप को नीद कम नही आती?

१२ क्या शराब की मात्रा बढने के कारण आपके हाथ पाव कापने, या अकडने नही लगे।

१३ क्या आप अब ऐसा महसूस नही करते कि अब शरीर में वह फुर्ती नही रही?

१४ क्या तुम अकेले बैठकर पीते हो या गम गलत करने के लिए पीते हो?

१५ क्या तुम्हारी याददास्त शराब के कारण घटती नही जा रही, क्या ऐसी स्थिति आगई है कि घरवाले आपकी बात पर ध्यान नही देते "यह तो पागल है, हर बात पर बडबडाता रहता है।"

१६ क्या आपको शराब पीने का यह रोग किसी विवाह पार्टी में मुफ्त की पीने से लगा था?

१७ क्या कभी इसके कारण आपको हस्पताल या डाक्टर के पास जाना पडा। तुम्हारे डाक्टर ने तुम्हें क्या राय दी?

१८ यदि हो सके तो इन प्रश्नो को एक शीशे पर लिख कर अपने कमरे मे लगा लो—आपका आपके बच्चो का भला होगा, आपका परिवार बरबादी से बच जायेगा।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह, मन्त्री श्री सूबेसिंह हरयाणा, शराब बन्दी समिति के सयोजक श्री विजयकुमार जी आदि आर्य नेता भी शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओ का मार्गदर्शन करने पहुचे। सभा में प० जयपाल तथा प० ईश्वरसिंह तूफान आदि ने भी ग्राम में शराबबन्दी प्रचार किया।

ठेके पर शराब की बिक्री बन्द होने पर ठेकेदार ने २६ जून ९३ को ठेकेदार अपना खोखा बन्द करके उससे शराब की पेटिया आदि एक ट्रक मे लादकर कही ले गया। इस प्रकार इस सघर्ष में आखिरकार विजय सत्य की हुई है।

इस कल्याणकारी कार्य मैं निम्नलिखित महानुभावों ने धरणे मे दिन रात सम्मिलित होकर योगदान दिया। श्री रोहताशसिंह प्रधान, श्री अनूपसिंह उपप्रधान डा० विजयकुमार मन्त्री, श्री बलदेवसिंह उपमन्त्री (शराबबन्दी समिति मातनहेल), श्री कवलसिंह सु० श्री सुखलाल, श्री फूलकुवर मेम्बर पचायत, श्री धर्मपाल साहब, मा० शीशराम, धर्मपत्नी श्री रामकुंवर, श्री रामकुवर की बहन ओमवती, छोटा भाई श्री बलवानसिंह, इनके अतिरिक्त अनेक ग्राम के नरनारी भी समय-समय पर धरणे मे सम्मिलित होते रहे। —केदारसिंह आर्य

हम अंग्रेजी के आज भी गुलाम : आर्य

करनाल, आज देश से अंग्रेजों को गये ४७ साल से भी ज्यादा समय हो चुका है, देश स्वतन्त्र है परन्तु हम अंग्रेजी के आज भी गुलाम हैं। न्यायालयों का काम अंग्रेजी में होता है जबकि न्याय पाने वाले आजाद भारत के नागरिक को कुछ पता नहीं होता। देश के कानून अंग्रेजी में बनते हैं जबकि जनता उनके बारे मे अनभिज्ञ रहती है। मेडिकल, इंजीनियरिंग, सी ए. आदि की शिक्षा तथा परीक्षाओं में अंग्रेजी का ही प्रयोग होता है। अंग्रेजी न जानने वाले विद्यार्थियो को अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका ही नही मिल पाता।

'अंग्रेजी अनिवार्यता हटाओ समिति' हरयाणा की गोहाना और कुरुक्षेत्र मे सम्पन्न हुई बैठक में भाग लेकर लौटने के बाद दयालसिंह कालेज करनाल के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रोफेसर चन्द्रप्रकाश आर्य ने पत्रकारो से बातचीत करते हुए बताया कि इस आन्दोलन का सीधा सम्बन्ध छात्रो तथा युवा पीढ़ी से है। छात्र सारे साल अंग्रेजी पढते हैं किन्तु अधिकाश छात्र स्कूलो-कालेजो मे अंग्रेजी मे फेल होते हैं। फेल होने का मुख्य कारण छात्रो का अंग्रेजो के प्रति रुचि का अभाव होना भी पाया गया है।

आधुनिक समाज की देन कान्वेन्ट व पब्लिक स्कूलो की भरमार होती चली जा रही है। इन स्कूलो द्वारा बच्चो, अभिभावको तथा अध्यापको का शोषण तो होता ही है लेकिन इसके विपरीत परिणाम फिर भी निराशाजनक होते हैं। श्री आर्य ने बताया कि इसके लिए समाज के लोग भी दोषी हैं। अंग्रेजी न जानते हुए भी प्रतिष्ठा बढाने के लिए लोग अपने निमन्त्रण पत्र विवाह-शादी के काड व अन्य उत्सवो के पत्र अंग्रेजी मे छपवाते हैं। पुस्तक विक्रेताओ पर बिकने वाले अधिकतर बधाई कार्ड, होली, दीवाली, नववर्ष सम्बन्धी जितने भी कार्ड मिलते हैं उनमे अंग्रेजी मे छपे कार्डों की सख्या अधिक होती है। उन्होंने कहा कि क्या हम अपनी भाषाओ मे राष्ट्रभाषा के कार्ड नही भेज सकते। हम अपने हस्ताक्षर अंग्रेजी मे करते है। दुकानो तथा दफ्तरो एव घरो के बाहर नामपट्ट अंग्रेजी मे लिखे पाये जा सकते हैं। श्री आर्य ने कहा कि हमे अपनी मानसिकता बदलनी पडेगी। इसके लिए जनता का सहयोग अति आवश्यक है।

प्रोफेसर चन्द्रप्रकाश आर्य ने 'अंग्रेजी अनिवार्य हटाओ समिति' की मुख्य मागो का जिक्र करते हुए बताया कि अंग्रेजी को अनिवाय भाषा के रूप मे हर स्तर पर समाप्त किया जाय तथा अंग्रेजी केवल ऐच्छिक विषय हो। सभी तरह की शिक्षा, प्रतियोगिता, परीक्षाए एव साक्षात्कार मातृभाषा मे हो। कचहरी, दफ्तरो व अन्य कार्यालयो मे सब काम मातृभाषा मे होने चाहिए। राज्य स्तर की सभी नीतिया मातृभाषा में बनकर जनता के समक्ष रखी जानी चाहिए। दोहरी शिक्षा नीति बन्द होनी चाहिए। प्रोफेसर आर्य ने कहा कि हमे राष्ट्रभाषा मे काम करना चाहिए। अपने घर, पडोस तथा कार्यालय मे राष्ट्रभाषा को प्रोत्साहन देना चाहिए।

उन्होंने सघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओ में भारतीय भाषाओ को लागू करवाने के लिए दिल्ली मे आयोग के कार्यालय के बाहर अखिल भारतीय भाषा सरक्षण सगठन द्वारा चलाये जा रहे आन्दोलन का समर्थन करते हुए सरकार द्वारा आन्दोलनकारियो को गिरफ्तार करने एव उन्हे जेल भेजने की कडे शब्दो मे भर्त्सना की।

श्री आर्य ने कहा कि अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त किए बिना सरकारी सिविल सेवा परीक्षाओ मे भारतीय भाषाओ को सम्मानपूर्ण स्थान नही मिल सकता। अंग्रेजी जानने वाले लोगो की इस देश मे संख्या बहुत कम है जबकि हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओ को जानने वाले ९५ से ९८ प्रतिशत लोग हैं। फिर भी दुर्भाग्य की बात है कि सरकार इस ओर मूकदर्शक क्यो बनी बैठी है। उन्होंने कहा कि इस अन्याय के विरुद्ध जनता विशेषकर युवाओं को इकट्ठे होकर सघर्ष करना होगा तथा अंग्रेजी अनिवार्यता का विरोध करना चाहिए। इसके साथ-साथ अखिल भारतीय भाषा सरक्षण सगठन तथा अंग्रेजी अनिवार्य हटाओ समिति हरियाणा के कार्यों मे भरपूर सहयोग देना चाहिए।

अपते:छपते शुभ सूचना

वायदा किया—वह पूरा किया

आप सब को यह जानकर अतीव हर्ष होगा कि ग्राम हालियाकी त० पटौदी-गुडगावा के श्री छाजुराम सरपच ने यह वायदा किया था कि एक सप्ताह के अन्दर मैं अपने गाव के बस स्टैण्ड से शराब का ठेका उठवा दूगा। जो उन्होने वायदा किया वह उन्होने पूरा किया वहा का ठेका बन्द हो गया है। हम आर्यजगत् तथा उस इलाके की ओर से उनको हार्दिक बधाई देते हुए तथा आभार प्रकट करते हुए उनका हार्दिक धन्यवाद करते हैं और जहा-जहा ठेके हैं वहा वहा के सरपचो से निवेदन करते हैं कि वे भी श्री छाजुराम की तरह शराब के ठेके को बन्द करके आदर्श उपस्थित करे और पुण्य के भागी बने। धन्यवाद, सबको सादर नमस्ते आज। शेष ठेका बन्द होने के बाद।

निवेदक—जीवानन्द नैनिक आफ दयानन्द, सम्पादक मुबारक

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१ मैसर्ज परमानन्द साईंदित्तामल, भिवानी स्टैंड, रोहतक।
२ मैसर्ज फूलचन्द सीताराम गाधी चौक, हिसार।
३ मैसर्ज सन अपन्ट्रेडज, सारग रोड, सोनीपत।
४ मैसर्ज हरीश एजेंसीस, ४६६/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत।
५ मैसर्ज भगवानदास देवकीनन्दन, सर्राफा बाजार, करनाल।
६ मैसर्ज घनश्यामदास सीताराम बाजार, भिवानी।
७ मैसर्ज कृपाराम गोयल, रुडी बाजार, सिरसा।
८ मैसर्ज कुलवन्त पिकल स्टोर्स, शाप न० ११५, मार्किट न० १, एन०आई०टी० फरीदाबाद।
९ मैसर्ज सिंगला एजेंसीज, सदर बाजार, गुडगांव।

"आंखों देखा हाल, सरपंच को हुआ मलाल"

आप सबको यह जानकर हर्ष होगा कि गाव "हालियाकी" के सरपच ने अपने गाव मे शराब के ठेकेदार को शराब का खोखा रखने की अनुमति दे दी। आस-पास के गावो ने जब यह अनाचार का अड्डा देखा तो बहुत ही दुख हुआ, क्योंकि पास ही स्वामी सोमानन्द जी का आश्रम है जहा अनेक लोग जाते हैं और सन्मार्ग पाते हैं। ऐसी पुण्यभूमि में कोई शराब का ठका खोले यह कोई अच्छी बात नही है। इस बात को लक्ष्य मे रखते हुए लगभग दस गावो के लोग 'हालियाकी' पहुच गए। परन्तु सरपच जी कही चले गए। लोगो ने कहा कि हम अगले रविवार को आयेगे, सरपच को सभा मे उपस्थित किया जाए। ऐसा ही हुआ, लगभग २२ गावो के लोग वहा पहुच गए। सरपच को बुलाया गया और समझाया गया। परन्तु उसने बुरा मनाया। लेकिन पच महानुभवो ने कहा कि हमने किसी कारणवश प्रस्ताव पर हस्ताक्षर कर दिये थे। हम सहर्ष वापिस लेते हैं और शराब का खोखा गाव से उठाने मे सहायक होते हैं। एक दिलेर पंच ने यहा तक कहा कि ओ सरपच तू जनता की बात नही मानता है तेरी सरपची को धूल मे मिला देंगे और ठेका उठा के दिखा देंगे क्योंकि हम एक घर के दो पंच हैं। लोगो ने खुशी मनाई और तालिया बजाई। कुछ देर सभा मे शान्ति छाई। फिर सरपच ने गाववालों से मिलकर यह आश्वासन दिया कि एक सप्ताह के बाद यहा से खोखा उठवा दूगा। नही तो त्याग-पत्र दे दूंगा। ऐसा निश्चय सरपच का सुनकर लोगों ने भारत मा की जय लगाते हुए खुशी मनाई और सरपच को धन्यवाद दिया। भाई सरपंच ने खडे होकर यह भी घोषणा की कि हमारे गाव मे कोई भी शराब पीयेगा उस पर २५१) रु० दण्ड होगा। ग्राम घुढाणा (जीवापुर) के सरपच ने भी अपने गाव मे आकर लोगो से मिलकर यह मुनादी करवा दी कि कोई भी व्यक्ति शराब पीकर गाव मे इधर-उधर बकवास करेगा उसको पुलिस के हवाले कर दिया जायेगा और २५१) रु० दण्ड भी होगा।

गिलासो मे जो डूबे फिर न उभरे जिन्दगानी मे,
हजारो बह गए इन 'बन्द' बोतलो के पानी मे।
न कर बरबाद अपनी जिन्दगी बोतल के दिवाने,
वह काटेगा बुढापे में जो बोयेगा जवानी मे॥

इस प्रकार कहते हुए मास्टर खूबराम जी ने सभा को विसर्जित किया और लोगो का धन्यवाद किया। इस शराब के खोखे को उठवाने मे ग्राम घुढाणा (जीवापुर) का विशेष योगदान रहा और स्वामी सोमानन्द जी महाराज के आशीर्वाद ने काम किया।

निवेदक—सपादक (सुधारक) 'जीवानन्द' सैनिक आफ दयानन्द

नशे के विरुद्ध अभियान चलायें

रोहतक, सभी स्वैच्छिक सस्थाओं तथा बुद्धिजीवियो को नशीली वस्तुओं के सेवन तथा महिलाओं पर विभिन्न प्रकार के अत्याचारों के खिलाफ एकजुट होकर अभियान चलाना चाहिए जिससे कि देश में बढ़ती हुई इन सामाजिक कुरीतियों पर पूर्ण रूप से काबू पाया जा सके। यह उद्गार रोहतक के उपायुक्त एव जिला रेडक्रास के अध्यक्ष श्री गुलाबसिंह सरोत ने एक सेमीनार में बोलते हुए व्यक्त किए।

उन्होंने सेमीनार मे उपस्थित सदस्यों से अनुरोध किया कि वे अपने-अपने क्षेत्र मे इन बुराइयो का डटकर मुकाबला करने के लिए संगठन तैयार करवाए। जो नवयुवक इन बुरी आदतो के शिकार हो चुके हैं, उनको इस बुराई के खिलाफ शिक्षित करेंगे और उनका मार्गदर्शन करके जिला नशामुक्ति केन्द्र तक भिजवाने का प्रबन्ध भी उनके परिवारजनो के माध्यम से करवाएगे। नशामुक्ति केन्द्र जिला रेडक्रास सोसायटी का एक भाग है, जहाँ पर सभी नशे से प्रभावित रोगियों का इलाज नि शुल्क किया जाएगा।

मण्डी डबवाली में प्रचार

वैदिक सत्सग सभा मण्डी डबवाली नगर के पिछडे व क्षेत्र के देहातो में ऋषि मिशन के लिये काफी कार्य कर रही है। अभी स्थानीय डा० बघवा जी के यहा सीमन्तोन्नयन संस्कार बडी कुशलतापूर्वक करवाया गया। संस्कारों के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए डा० अशोक आर्य ने बताया कि सीमन्तोन्नयन जिसको आज समाज पूरी तरह छोड़ चुका है वास्तव में मानवीय जीवन का एक महत्त्वपूर्ण सस्कार है। गर्भस्थ शिशु के बौद्धिक विकास के लिये आवश्यक है तथा इस सस्कार द्वारा माता अपने शिशु को वही बना सकती है जैसा कि वह बनाने की इच्छुक होती है।

गाव किलियावाली मे महाशय हसराज जी की अन्तिम क्रिया पर भी यज्ञ का आयोजन किया गया। दोनों यज्ञ डा० अशोक आय ने सम्पन्न करवाये।

—अशोक आर्य

शराबबन्दी का प्रभाव स्पष्ट

पलवल—पलवल उपमडल का गाव मरोली शायद जनपद का पहला गाव है, जहा थोडे से प्रयासो के बाद ही शराबबन्दी का पूरा असर दिखायी देने लगा है। इस गाव मे रिश्तेदारो तक को भी शराब नसीब नही होती। इस गाव के 'शराब मुक्त क्षेत्र' होने व स्वच्छ वातावरण होने के कारण समीपवर्ती गावों के नागरिक भी यह चाहने लगे हैं कि गाव मरोली के विशिष्ट व्यक्ति उनके गाव में आकर शराबमुक्त फिजा बनाने मे सहयोग करें। (राष्ट्रीय सहारा)

बेटी और पत्नी को गोली से उड़ा दिया

हिसार, हिसार पुलिस रेंज के डी.आई जी. श्री एल डी नरवाल ने बताया कि फतेहाबाद में गत दिवस श्योचन्द नामक व्यक्ति ने अपनी पत्नी सीतादेवी तथा बेटी सुषमा की गोली मारकर हत्या कर दी। उन्होंने बताया कि वह नशे की हालत में था और मा-बेटी ने उसे खाना नही दिया तो क्रोध में आकर उसने अपनी लायसेंसशुदा बन्दूक से दोनों पर गोली चला दी और दोनो की घटनास्थल पर मृत्यु हो गई। पुलिस ने श्योचन्द को पकड लिया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, गोहाना रोड, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०/७३ रजि० नं० P/RTK-४६

ओ३म्
सर्वहितकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री

वर्ष २० अंक २६ १४ जून ई. १९९३

शराब रूपी अग्नि में जलता हरयाणा

सुदामा आर्य, हिसार

हम सब उस देश के वासी हैं जहाँ पर दूध, दही एवं घी की नदियां बहती थीं। जहा नवजवान युवासाथियो का चरित्र राम-कृष्ण और अर्जुन के सदृश था। जहाँ बहनें वीरांगनाए थीं जो सदैव दुर्गा एव लक्ष्मी की तरह दुष्टो का नाश करने हेतु तत्पर रहती थी। एक हाथ मे तलवार और दूसरे हाथ मे भाला रखती थी, जिसके कारण दुश्चरित्र, भ्रष्टाचारी एव अन्यायियो का दिल थर-थर कापता रहता था। चरित्रहीन व्यक्ति किसी अबला पर कुदृष्टि न रख सकता था। यदि कोई ऐसा करता था उसे मौत के घाट उतार दिया जाता था। युवको के अन्दर भीम एव बलराम की तरह अद्भुत बल रहता था जिसके कारण किसी शत्रु की हिम्मत नही होती थी कि वह हाथ मिलाये परन्तु यह बात कल्पना मात्र रह गई है। आज युवको का वह चरित्र नही, जिस चरित्र का व्याख्यान कर रहे हैं। आज वह बल नही रहा जिसकी हम चर्चा कर रहे हैं। युवतियो के अन्दर सीता-सावित्री जैसा चरित्र नही रहा जिसकी हम व्याख्या कर रहे है। कहाँ पर केकैयो जैसी विरांगना दिख रही है जो युद्ध मे जाकर अपनी करामात दिखा सके। तब आप लोग हमसे पूछ सकते हो कि ऐसा क्यों हो रहा है? मैं चेलेज के साथ यही कहूगा कि इसका मूल कारण शराब-पान है। कहा जाता था कि—दूध, दही का खाना, वह राज्य है हरयाणा। परन्तु आज हम दावे के साथ कह सकते हैं कि—

शराब, बीडी एवं सिगरेट का कारखाना, वह विशेष राज्य है हरयाणा।
उठते-जागते शराब पीना, वह राज्य है हरयाणा।
बहिन-बेटियो की इज्जत लूटना, वह राज्य है हरयाणा।
दीन-दुखियों को सताना, वह राज्य है हरयाणा।
पापी-गुण्डो का खजाना, वह राज्य है हरयाणा।
दुश्चरित्र शराबियो का ठिकाना, वह राज्य है हरयाणा।
भ्रष्ट राजनेताओं का खजाना, वह राज्य है हरयाणा।

अब आप सबको पता चल गया होगा कि यह हमारा हरयाणा राज्य कैसा है? हम देखते हैं कि कहीं से अबलाओं का करुण क्रंदन सुनाई देता है तो कही से दीन-दुखी अनाथो की दुखभरी आवाज। इन सब का मूल कारण शराब के अतिरिक्त और क्या हो सकता है। आज हमारा राज्य शराब-सागर मे पूर्णरूपेण डूबा है और युवाओ के विषय मे क्या कहना, वे तो आठो पहर इस मद्य रूपी पारावार मे छलांग लगाते हैं। हमारा परिवार एव समाज इस शराब की अग्नि मे जल रहे हैं। लाखो लोग बेघर होते जा रहे हैं। किसी कवि ने इस दुर्दशा को देखकर इसका मार्मिक चित्रण किया है—

जिसने उठायी बोतल, कभी न उभरे जिन्दगानी मे।
करोड़ों लोग बेघर हो गये, इन बोतलो के बन्द पानी मे॥

अर्थात् लाखो लोगो ने इन बोतलो के बन्द पानी मे अपने अमूल्य जीवन का सर्वनाश कर दिया। इसलिए हमे सगठित होकर इस शराब के रक्षक का भक्षक बनना होगा। जो इसकी वृद्धि कर रहा है। ठेके पर ठेके खुलवाते जा रहा है। अत हमे उन राष्ट्रघातक देशद्रोहियो का मामला साफ करना होगा। जो यह मानता है कि शराब बिक्री राष्ट्रहित मे है और कहता है कि ठेके खोलो बिक्री बढाओ और इसका चौथा हिस्सा पंचायत विकास मे लगाओ। मेरे युवा साथियो एव बुजुर्गों! क्या यह राष्ट्रहित की बात है। यह तो ऐसी बात हुई कि विषपान करादो, और पुन चिकित्सा (इलाज) कराओ। घर मे अग्नि लगादो और फिर राहत-कार्य शुरू करादो। इसलिए कहता हू ऐ देश के काले अग्रेज शासको! अब तुम्हारी दाल नही गलेगी। तुम किसकी शक्ति पर अहकार कर रहे हो। इन बन्दूकधारी कौवे चीलो पर। परन्तु तुम्हें पता होना चाहिए कि तुम्हारे इन रक्षको का भक्षण करने हेतु युवा बाज बैठा है। हर प्रकार से तैयार है। तुम इन भगवे कपडेधारी सन्यासियो को देखकर मत समझ लेना कि फूक मारते ही दीपक की तरह बुझ जायेगे। इनके साथ हरयाणा की समस्त युवा शक्ति एव जनता की शक्ति है। इसलिए ऐ हरयाणा के लोभी लोगो जरा अपनी रक्षा करके इन मरे हुए पशुओं पर नजर डालेना। ऐसा न हो कि तुम अपनी स्वार्थरूपी जिह्वा के चक्र मे आकर स्वय का भक्षण न करवा लेना। शुभचिन्तक बाज तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है। अत तुम इस सुरापान नागिन का नाश करदो अन्यथा गेहूँ के घुन की तरह तुम भी पीसे जाओगे। युवाशक्ति तुम्हें कदापि क्षमा नही करेगी। अत ऐ मदमस्त हाथियो! जरा सम्भलकर चलना अन्यथा शिकारी ने तुम्हे फसाने का उपाय खोज लिया है। ऐसा नही कि तुम बनावटी हथिनी पर आसक्त होकर अपना जीवन खो दो। अन्त मे मैं यही कहूगा कि यदि सरकार शराब नही बन्द कर रही है तो हम सब हरयाणा वासियो का परम कर्त्तव्य है कि इस शराबबन्दी महायज्ञ मे स्वय की आहुति देकर अपनी कुर्बानि रूपी सुगन्ध से पवित्र धरती को सुगन्धमय बनावें और सब मिलकर प्रतिज्ञा करो —

करेंगे आन्दोलन कुछ करके दिखायेगे,
सरकार को अपनी हिम्मत दिखलायेगे।
यदि हमसे कोई टकरायेगा-टकरायेगा।
समझलो कि उसका अन्त हो जायेगा-जाएगा।
हम हैं राम कृष्ण एव दयानन्द की सन्ताने—
रावण-कस और पाखण्डियो के हत्यारे।
अभी तक हमसे जो टकराया है-टकराया है।
वह सदा के लिए चूर-चूर हो गया।
इसलिए मैं कहता हू शीघ्र करो शराबबन्दी,
अन्यथा काले अंग्रेज शासको हो जाओगे बन्दी॥
बोलो युवाशक्ति एक हो। शराबबन्दी शीघ्र हो॥

लेखक—सुदामा आर्य
हिसार

शराब : कल और आज

—संग्राम आर्य, दडोली

यह तो ठीक से मालूम नही कि शराब कब शुरू हुई, भलबत्ता रामायण काल मे राजा रावण तथा उसके भाई बन्धु व राक्षस लोग मदिरा के सेवन करने बारे रामायण मे विवरण मिलता है। फिर मध्य काल मे कवि कालिदास ने शराब के सेवन और इससे होनेवाली विनाशकारी हानियो का अपने ग्रन्थ मे जिकर किया है। मुगल तथा ब्रिटिश काल मे तो इसके सेवन का चलन सर्वविदित है। मगर हैरानी की बात तो यह है कि शराब की बुराई हर दौर मे बराबर होती रही है, और सेवन की कमी बेश होता रहा है।

मगर आज के जमाने के कल की तस्वीर को देखे तो ५०-६० वर्ष पहले सारे देश-विशेषत हरयाणा प्रदेश मे शराब का प्रचलन बरायेनाम था। विवाहो, त्योहारो तथा किसी विशेष खुशी के मौके पर ही शराब पी जाती थी—और वह भी गाव के कुछ गिने-चुने लोग या फिर फौजी लोग शुगल के तौर पर पीते थे। आदत की लाचारी न थी। हिसार शहर जो जिला हैडक्वाटर भी था, मे केवल एक शराब की दुकान थी।

एक सच्चाई—जो १९६९ मे गान्धी शताब्दी के दिनो मे मुझे मालूम हुई, वह बडी हैरानकुन है। हिसार शहर मे 'महीपाल-होजरी' से मैं अकसर बनियाने लिया करता था और उर्दू दै० प्रताप वीर अर्जुन जिन का मे पढने का शौकीन था, लाला जी के पास मुझे पढने को मिल जाता था। मैंने उन बुर्जुग लालाजी से एक दिन पूछा कि लालाजी आपके समय मे शराब का प्रचलन कैसा था। कहने लगा कि १९३५-३६ मे मैं तहसील फतेहाबाद मे रीडर था। तहसीलदार का सालाना का ठेका उठना था। मगर कोई बोली देने नही आया। आखिर तहसीलदार ने मुझे कहा कि लालाजी बडी बेइज्जती की बात है, कोई ठेके की बोली देने नही आ रहा आप हिसार के किसी सेठ से बोली दिलवाये तो इज्जत बचे। लाला जी ने बताया कि मैं हिसार गया, एक जानकार साहूकार को बोली देने के लिए रजामन्द किया। तब जाकर ठेका शराब की निलामी हुई और वह भी केवल ३०० रु० की हुई। यह तहसील अच्छी आमदनी वाली है, इसके बावजूद कुछ बोतलें वर्ष के आखिरी तक पडी रही।

मगर आज! हालत क्या है हरयाणा के छोटे से छोटे गाव मे ५००-६०० रु० की शराब एक दिन मे बिक जाती है और बडे-बडे गावो मे तो ५००० ६००० रु० की शराब बिक जाती है। Daily drinkers रोजाना पीने वालो की संख्या ६०% से क्या कम होगी। आजादी से पहले भारत को शराब से वार्षिक आय केवल ५० करोड थी और पूरे पंजाब जिसमे पाकिस्तान का पजाब, हरयाणा, हि० प्रदेश और पजाब शामिल थे, मे मुश्किल से कुछ करोड थी जबकि आज के छोटे प्रान्त हरयाणा मे ५०० करोड रु० के लगभग इस पापन शराब से आय होती है और पूरे देश को ५०००करोड रु० पीने वालो की जेब से मालूम है कितना रु० निकल जाता है? २५००० करोड!

कितना धन बरबाद हो रहा है देश का इस डायन शराब पर! एक गम्भीर चिन्तनीय समस्या है देश की जो कुछेक दशको मे देश के खुदगर्ज और भ्रष्ट कर्णधारो ने पैदा कर दी है। धन बर्बादी के बाद अगर हम चरित्र और नैतिकता की बात करें, तो शिर शर्म से झुक जाता है, कौन सा कुकर्म है जो शराब नही कराती और, देसा मे देस हरयाणा जिन दूध दही का खाना, के लिए जो प्रान्त कभी मशहूर था आज शराब पीने मे देश का तीसरे नम्बर का प्रान्त है।

कडवी सच्चाई—यह भी है कि हरयाणा के ९०%(Drinkers) पियक्कड आदी (आदतन) पियक्कड नही हैं। और न ही पीने का पता है। महज समाज मे ऊचा दिखने (कितनी बेहूदा सोच-पश्चात्य सभ्यता ने हमे दे डाली?) चौधर-धौंस जमाने, गुण्डा-गर्दी करने, शोरगुल मचाने और शरीफ लोगो को परेशान व दुखी करने के अलावा इन ९०% पियक्कडो का कोई मकसद नही होता। क्या जेठ-आसाढ की आग बरसाने वाली गर्मी मे-शराब पीने का कोई तुक है? कभी १-२ पैग (कमी मे) तो कभी बोतल की बोतल पीकर खत्म कर डालना कौन सा पीना हुआ? काफी बडी तादाद तो ऐसे मूर्खों (जिनमे पढे-लिखे पियक्कड भी शामिल हैं) की है, जो प्रात दोपहर साय वक्त-बेवक्त, जब मिल जाये पीने बैठ जाते है।

बहुत से पियक्कड, पैसे के अभाव मे कई-कई दिन नही पीते, तो कई पियक्कड २-२, ३-३ दिनो तक पीते चले जाते हैं। कई कैपसूल से बनाई शराब को भी पी जाते हैं। बस इन्हे तो नाम की शराब चाहिये? साफ जाहिर है कि हमारे प्रदेश हरयाणा मे, हकीकत मे पियक्कड बहुत कम हैं। दिखावटी, बनावटी ज्यादा। (क्रमश)

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज भुरथला का २५वा वार्षिक उत्सव दिनाक २६-२७ जून १९९३ शनिवार, रविवार को बडी धूम-धाम से मनाया गया। जिसमे आर्यजगत् के साधु, सन्यासी, महात्मा, आर्य उपदेशक, आर्य भजनोपदेशक एवं विदुषी देवियाँ बहु-सख्या मे पधारे। इस शुभ अवसर पर शराबबन्दी, दहेज विरोधी एव महिला सम्मेलन सम्पन्न हुए। इस समारोह को धर्मप्रेमी जनता ने बहुसख्या मे उपस्थित होकर श्रद्धापूर्वक उत्सव का समस्त कार्यवाही को देखा और सुना। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वरिष्ठ आर्य भजनोपदेशक के सिद्धान्त सम्मत् भजन और प्रचार सराहनीय रहे। आर्यसमाज ने सभा को दशाश, वेदप्रचार, सर्वहितकारी पत्र शुल्क एव दान के रूप मे श्री प० ईश्वरसिह जी के माध्यम से ४४३ रु० की धनराशि प्रदान की। उत्सव का समस्त कार्यक्रम निर्विघ्न एव शातिपूर्वक सम्पन्न हुआ।

सत्यव्रत मन्त्री
आर्यसमाज भुरथला

एकवर्षीय "निशुल्क धर्म शिक्षा" पाठ्यक्रम मे प्रवेश आरम्भ

डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति नई दिल्ली के अन्तर्गत नतिक शिक्षा सस्थान मे एकवर्षीय नि शुल्क धर्म शिक्षा पाठ्यक्रम का प्रशिक्षण देता है। इसमे आवास व्यवस्था नि शुल्क और मासिक छात्रवृत्ति भी दी जाती है। इस वर्ष १० अगस्त से प्रशिक्षण का नव सत्र प्रारम्भ हो रहा है।

जो प्रत्याशी एम० ए० (सस्कृत) शास्त्री आचार्य एव वेदालकार परीक्षा उत्तीर्ण, अग्रेजी का प्रारम्भिक ज्ञान, आर्य सिद्धान्तो से ओत प्रोत, वेदप्रचार की लगन व निष्ठा और सगीत मे रुचि हो तो प्रमाणपत्रो की फोटो स्टेट प्रतिलिपि के साथ साक्षात्कार हेतु अपने आवेदनपत्र के साथ प्रात ११ बजे ५ अगस्त को उक्त पते पर पहुच जाए।

एक वर्ष के सफल शिक्षण प्रशिक्षण के उपरान्त डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल मे कुल मिलाकर १०००) रु० प्रतिमाह पर नियुक्ति सुनिश्चित है। प्राचार्य (कर्मवीर शास्त्री)

डी ए वी नैतिक शिक्षा सस्थान, आर्यसमाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली—११०००१

"पुरोहित की आवश्यकता"

आर्यसमाज, हासी (हिसार) मे वैदिक की तुरन्त आवश्यकता है। आवास, बिजली की सुन्दर व्यवस्था मुफ्त होगी। वानप्रस्थी को प्राथमिकता। विवरण सहित लिखें। साक्षरता के लिये पधारने पर मार्ग-व्यय दिया जायेगा।

राजेन्द्र आर्य उपमन्त्री
आर्यसमाज, हासी

अमेरिकन पत्रकार का शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं के साथ सम्पर्क

शराबबन्दी आन्दोलन की गूंज अमेरिका तक पहुंच चुकी है। अत वहां से हरयाणा प्रदेश में चल रहे शराबबन्दी आन्दोलन का आंखों देखा हाल तथा गतिविधियो का पूरा विवरण जानने के लिए आजकल हरयाणा प्रदेश का भ्रमण एक प्रमुख पत्रकार कर रहा है। वह अपने स्टाफ सहित दिनाक १० जुलाई १९९३ को सभा के प्रधान प्रो० शेरसिह के साथ दिल्ली से हरयाणा के प्रसिद्ध ग्रामीण आर्यसमाज रोहणा मे पहुचा। एक दिन पूर्व सभा की ओर से प० जयपाल की भजन मण्डली शराबबन्दी प्रचारार्थ ग्राम में पहुच गई थी। सभा के मन्त्री श्री सूबेसिह भी उनके स्वागत हेतु प्रात ९ बजे रोहणा पधारे। ग्राम की चौपाल में ग्रामीण पुरुष तथा महिलायें हजारों की सख्या मे एकत्रित हो गई। श्री जयपालसिह तथा स्वामी देवानन्द के शराबबन्दी पर प्रभावशाली भजन तथा प० सुखदेव शास्त्री का व्याख्यान हुआ। इस प्रकार ग्राम मे शराबबन्दी सम्मेलन का रूप धारण कर गया।

आर्यसमाज रोहणा के समस्त कार्यकर्त्ता म० दरयावसिह आर्य के नेतृत्व में इस सम्मेलन को सफल करने तथा अमेरिकन अतिथियो का स्वागत करने की तैयारी में पूरी शक्ति लगा रहे थे। ग्राम के कन्या विद्यालय की छात्राओं ने इस अवसर पर शराब जैसी बुराई को समाप्त करने के मार्मिक गीत सुनाकर समय बाध दिया।

इस समारोह की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए म० दरयाव सिह आर्य ने अमेरिकन पत्रकार तथा सभा के अधिकारियों का स्वागत किया तथा बताया इस ग्राम के नरनारी सभा द्वारा संचालित शराब बन्दी सत्याग्रह में तन, मन तथा धन से सफल करने के लिए तैयार हैं। इससे पूर्व भी इस ग्राम के वासियों ने हिन्दीरक्षा आन्दोलन तथा गोरक्षा आन्दोलन में बढचढकर भाग लिया था।

सभाप्रधान प्रो० शेरसिह ने ग्राम की जनता को सम्बोधित करते हुए शराबबन्दी सत्याग्रह की तैयारी का विवरण सुनाया और बताया कि हरयाणा में अब तक आर्यजनता की ओर से जितने भी आन्दोलन किये गये हैं, उनमें श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती (पूर्व आचार्य भगवानदेव जी) का प्रमुख योगदान रहा है। सभा के अनुरोध पर शराबबन्दी सत्याग्रह के सचालन के लिए प्रथम सर्वाधिकारी तथा गुरुकुल कुम्भाखेडा रोहतक तथा कन्या गुरुकुल खरल (जीन्द) के संचालक स्वामी रतनदेव जी ने द्वितीय सर्वाधिकारी (डिक्टेटर) बनना स्वीकार कर लिया है। उन्होंने जीप लेकर हरयाणा के प्रत्येक जिले के ग्रामों का भ्रमण करना आरम्भ कर दिया है। वे जहा भी पहुचते हैं वहां अपील करके शराबबन्दी सत्याग्रह की तैयारी के लिए सत्याग्रहियों की सूची तैयार कर रहे हैं। सत्याग्रह की रूपरेखा तैयार करने के लिए १८ जुलाई ९३ को दयानन्दमठ, रोहतक जो कि हरयाणा के सभी आन्दोलनों का केन्द्र रहा है, मे हरयाणा भर के शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओ की बैठक है। हरयाणा सरकार शराबबन्दी सत्याग्रह को असफल करने की शर्मनाक तैयारी कर रही है। शराबरूपी जहर को बेचने वाले ठेकेदारो का सरक्षक तथा शराबरूपी जहर को बन्द करवाने वाले सत्याग्रहियों का दमन करके राष्ट्रद्रोही नीति का परिचय दे रही हैं। प्रो० साहब ने दहिया खाप के नेता श्री रामफल दहिया सरपच ग्राम पंचायत सिसाना (सोनीपत) का सार्वजनिक स्वागत करते हुए उन्हे शराबबन्दी सत्याग्रह का एक योद्धा बताया। सरकार ने उन्हें शराबबन्दी अभियान में सम्मिलित होने तथा धरनों को सहयोग देने पर निलम्बित करने का दुस्साहस किया, परन्तु दहिया खाप के सभी सरपचों ने उनके समर्थन मे त्यागपत्र देकर हरयाणा की अन्य सर्वखापो का मार्गदर्शन किया है। अमेरिकन पत्रकार ने श्री रामफल सरपच के दर्शन करके उनसे शराबबन्दी कार्यक्रमों को विस्तृत जानकारी प्राप्त की। वे अंग्रेजी भाषा में बोलते थे और प्रो० साहब उसका हिन्दी मे अनुवाद करके दोनों की बातों का आदान-प्रदान कर रहे थे। सभामन्त्री श्री सूबेसिह ने भी इस शराबबन्दी समारोह की सारी कार्यवाही का अंग्रेजी में अनुवाद करके अमेरिकन पत्रकार को अंकित करवाया। सारी कार्यवाही देखकर, अमेरिकन अतिथि ने ग्रामीण जनता को सम्बोधित करते हुए शराबबन्दी के पवित्र कार्य में अग्रणी रहने पर प्रसन्नता व्यक्त की और कहा कि इस सुधारवादी आन्दोलन की गतिविधि ससार के प्रमुख समाचारपत्रों में प्रकाशित होगी। हरयाणा के ग्रामवासी एक नया इतिहास तैयार कर रहे हैं। अमेरिकन पत्रकार को एक भेट मे श्री कबूलसिह पूर्व सरपच ने बताया कि मैं अत्यधिक शराब का सेवन करता था। कई बार इसी कारण दुर्घटनाओ का शिकार हुआ। अब मैंने शराबबन्दी आन्दोलन के प्रभाव से सदा के लिए शराब पीनी बन्द कर दी है। सूबेदार रणसिह प्रधान पूर्व सैनिक कल्याण संघ रोहतक ने भी सूचित किया कि उनके सघ की मासिक बैठक मे निर्णय किया है कि पूर्व सैनिक कान्टीन से कोटे की शराब नही खरीदते और न ही ग्राम मे पीयेंगे। उनका सघ शराबबन्दी सत्याग्रह का तन, मन तथा धन से समर्थन करेगा।

रोहतक के पश्चात् सभाप्रधान प्रो० शेरसिह तथा सभामन्त्री श्री सूबेसिह के साथ अमेरिकन पत्रकार जिला रोहतक के प्रसिद्ध ग्राम मातनहेल मे गये जहा के ग्रामीणो ने गत सप्ताह ही एक लम्बे संघर्ष के बाद अपने ग्राम से शराब का ठेका बन्द करवाया है। सूचना मिलने पर ग्रामवासी भारी सख्या मे एकत्रित हो गए। आर्यसमाज के मन्त्री डा० विजयकुमार ने ग्राम के शराब के ठेके पर धरणा देनेवालो का पत्रकार को परिचय करवाया और बताया कि इन्होने अप्रैल से जून मास तक कडी धूप तथा गम हवा की परवाह न करते हुए निरन्तर धरणा चालू रखा और ठेके से एक भी बोतल शराब नही बिकने दी। सरकार ने सत्याग्रहियो का दमन करने मे किसी प्रकार की कसर नही छोडी, परन्तु ठेके से शराब की बिक्री बन्द होने पर ठेकेदार मैदान छोडकर भाग गया। उनके साथियों ने पत्रकार को बताया कि धरणो के दौरान अनेक शराबियो ने पचायत का नियम तोडने पर जुर्माना जमा करवाया। जुर्मानो की राशि ग्राम की भलाई के कार्यों पर खर्च की जा रही है। श्री उमेदसिह पुलिस के सिपाही की धर्मपत्नी ने बताया कि उनका पति शराब पीने पर निलम्बित हो चुका है, परन्तु अब भी वह शराब पीकर घर को बर्बाद कर रहा है।

प्रो० शेरसिह ने इस अवसर पर ग्रामीण जनता को सम्बोधित करते हुए शराबबन्दी सत्याग्रह के लिए तैयार रहने को अपील की। उसी दिन साय सभा अधिकारी तथा पत्रकार जिला रेवाडी के ग्राम पाल्हावास जहा शराब के ठेके पर धरणा चालू है, वहा श्री स्वामी ओमानन्द जी गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ पूर्व ही पधारे हुए थे, पहुचे और धरणे की सभी गतिविधियों को अपनी आखो से देखा तथा धरणे पर बैठे भारी संख्या में नर-नारियों के चित्र लिये तथा उनकी भेंटवार्ता का विवरण टैप किया। सभा के उपदेशक प० मातूराम प्रभाकर तथा प० ईश्वरसिह तूफान भजनमण्डली द्वारा धरणे पर तथा निकट के ग्रामो मे शराबबन्दी का प्रचार कर रहे हैं।

११ जुलाई को ग्राम बालसमन्द जिला हिसार मे शराब का ठेका बन्द होने पर सभा अधिकारियो प्रो० शेरसिह तथा सभामन्त्री श्री सूबेसिह द्वारा धरणे पर निरन्तर बैठने वालों का सभा की ओर से सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। इसका समाचार आगामी अंक मे प्रकाशित किया जावेगा।

—केदारसिह आर्य

ठेका बंद होने तक धरना जारी रखने का आह्वान

सोनीपत, १० जुलाई (त्यागी) नशा विरोधी अभियान समिति के जिला प्रधान श्री ओमप्रकाश सरोहा ने आह्वान किया है कि जबतक राठधना रेलवे स्टेशन के पास फिर से खोले गए शराब के ठेके को बन्द नही किया जाता तब तक ठेके के समक्ष ग्रामीणों द्वारा दिए जा रहे धरने का क्रम जारी रहेगा।

ज्ञातव्य है कि जिला में चलाए जा रहे शराब विरोधी आंदोलन के दृष्टिगत उक्त ठेका तीन मास से बंद था लेकिन आबकारी एव कराधान के अधिकारियों ने,यह ठेका पुन चालू करवा दिया है जिसके परिणामत ग्रामीण पुरुष महिलाए विगत २२ जून से ठेके के सामने धरना दे रहे हैं। इस धरने की विशेष बात यह है कि इसमे महिलाए बढ-चढकर भाग ले रही हैं।

पंजाब केसरी

सावधान : शत्रु है धूम्रपान

धूम्रपान करना दुर्भाग्य और मनहूसता को बुलाना है। जान बूझकर अपने पाव पर कुल्हाडी मारना है। धूम्रपान से जहाँ धन का नाश होता है वहा शरीर की नस-नाडियो को दुर्बल करता है। बल बुद्धि के घट जाने से काम करने की क्षमता नही रहती। जरा सा परिश्रम करने पर थक जाता है। धूम्रपान से शरीर मे निम्नलिखित हानियां होती हैं —

१ सर्वप्रथम होंठो को खराब करता है।
२ मुंह में दुर्गन्ध पैदा करता है।
३ अन्दर जाकर फेफडो में कार्बन जमने के कारण खासी, दमा, टोबी, और कैंसर जैसे भयंकर रोग हो जाते हैं।
४ फेफड़े की खराबी के कारण हृदय पर कुप्रभाव पड़ता है। हार्ट अटैक होने का भय रहता है।
५ लाल खून को काला कर देता है और, खूनीमिया (रक्त अल्पता) जैसे रोग हो जाते हैं। चेहरे की सुन्दरता खत्म हो जाती है।
६ लीवर (जिगर) के पाचक रस को शुष्क (खुश्क) करता है जिसके कारण पाचन क्रिया बिगड जाती है और भोजन हजम नही होता। पेट मे गैस पैदा होने लगती है।
७ शरीर के कफ को जाम करता है जिसके कारण नस नाडियो मे खिचाव होने लगता है। मानसिक सन्तुलन नहीं रहता।
८ कानो के सुनने की शक्ति को क्षीण करके बहरापन आने लगता है।
९ आखो की रोशनी को कम करके अन्धा बनाता है।
१० गुर्दों पर भी धूम्रपान का कुप्रभाव पडता है।
११ धूम्रपान की हानियो को विस्तार से लिखा जाये तो एक मोटी पुस्तक बन जाती है। यहा साराश मे इतना ही बताते है कि तम्बाकू मे निकोटिन नाम का जो शक्तिशाली भयकर विष है उसे इन्जेक्शन द्वारा यदि रक्त सचार मे प्रवेश कर दिया जावे तो मृत्यु हो जाती है। आप स्वस्थ रहकर खुशी से जीना चाहते हो तो आज से अभी से धूम्रपान छोड़ दें।

देवराज आर्य वैद्य विशारद
आर्यसमाज बल्लभगढ

आगे को कदम बढ़ाओ

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

दुष्कर्मों को ठुकराओ—आगे को कदम बढ़ाओ,
मदिरा की विष भरी प्यालियां पीकर झूमे मस्ती मे।
कितने छोरे बने शराबी शहर, ग्राम और बस्ती मे॥
लत बुरी इसे छुडवाओ
आगे को कदम बढाओ ॥१॥

इस बोतल के पानी ने, कितने घर बार उजाड दिये।
इस आंधी तूफान ने, जड से यह वृक्ष उखाड़ दिये।
फिर से खुशहाली लाओ
आगे को कदम बढाओ ॥२॥

इस दुखदाई बीमारी का मिलकर शीघ्र इलाज करो।
क्रूर कुचाली हुड़दगों का जाकर ठीक मिजाज करो॥
बीमारी मार भगाओ
आगे को कदम बढाओ ॥३॥

सुनो देवियो तुम भी अपने झोलो में बारूद भरो।
लक्ष्मी झाँसी की रानी सम समरागण मे कूद परो॥
काबू अपने मे लाओ
आगे को कदम बढाओ ॥४॥

कहे स्वरूपानन्द, मूल से यह विष बेल उखड जाये।
भारत के कोने-कोने में ओमपताका गड जाये॥

विजय का बिगुल बजाओ
आगे को कदम बढाओ ॥५॥

धर्म का तत्त्व अर्थात् धर्म क्या है ?

—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष, वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ०प्र०)

प्राचीन ऋषियों का मत है "धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायाम्" अर्थात् धर्म का तत्त्व गुहा में छिपा है। अभिप्राय यह है कि धर्म क्या है ?—यह अत्यन्त गूढ़ रहस्य है। धर्म की परिभाषा और उसकी व्याख्या सरल कार्य नहीं है। परन्तु आजकल जिसे देखो वही धर्माचार्य है, वही धर्म पर लम्बे-लम्बे भाषण कर रहा है।

धर्म के नाम पर बड़े-बड़े मठ-मन्दिर, विशालकाय आश्रम, गुरुद्वारे, मस्जिद, गिरजे आदि खड़े मिलेंगे। प्रकाशकों की दुकानों और पुस्तकालयों में धर्म के बड़े-बड़े पोथे मिलेंगे तथा संसार में अनेक मत और ग्रन्थ मिलेंगे और इन सबकी पृथक्-पृथक् धर्म की परिभाषायें मिलेंगी। जिज्ञासु के सामने प्रश्न आता है कि अन्ततोगत्वा धर्म क्या है ?

प्रत्येक दुकानदार जैसे अपनी दुकान के सामान को उत्तम और अन्य दुकानों की सामग्री को घटिया बताता है, चाहे उसकी दुकान की सामग्री से अन्य दुकानों की सामग्री सहस्र गुणा अच्छी हो और उसकी एकदम निकृष्ट। ठीक यही दशा धर्म के नाम पर प्रचलित मत-मतान्तर की है।

हमारा उद्देश्य इन पंक्तियों में किसी मत विशेष की आलोचना करना नहीं है अपितु केवल धर्म की वास्तविकता पर पहुंचने के लिये हम थोड़ी ऊहा-पोह करना चाहते हैं।

संसार में धर्म के नाम पर अनेक विचारधारायें हैं अथवा यों कहिये कि विश्व में अनेक धार्मिक मत प्रचलित हैं। इन सभी मतों में सब कुछ समान नहीं है। सब कुछ समान हो, एक जैसा हो तो अनेकता रहती ही नहीं। मतभेद न हो तो तेरा-मेरा का प्रश्न ही नहीं रह जाता है। पृथक्-पृथक् रहते हुए भी कुछ बातें सब मतों में ठीक है। कुछ बातें तो प्रत्येक मत में ऐसी हैं कि जिनमें अच्छाई निहित है, बुराई नहीं, किन्तु उनकी वह अच्छाई भी इस अर्थ में बुराई बनी है कि वह अनेकता बनाये रखती है, मानव-मानव को एक नहीं होने देती अर्थात् समस्त मनुष्यों को एकता के सूत्र में नहीं बंधने देती।

कुछ बातें प्रत्येक मत में ऐसी हैं, जो संसार के अन्य सभी मतों के विरुद्ध हैं परिणामस्वरूप संसार का प्रत्येक मत अन्य सभी मतों के विरुद्ध है और सभी मतों के मानने वाले अन्य मतवादियों को अपना विरोधी ही नहीं अपितु शत्रु समझते हैं और इसी कारण संसार में धर्म के नाम पर विभिन्न मतवादियों के मध्य समय-समय पर झगड़े होते रहते हैं, जिनमें भीषण रक्तपात तक हो जाता है।

इन परिस्थितियों को देखकर कभी-कभी इतनी खिन्नता होती है कि मनुष्य धर्म के नाम से ही घृणा करने लग जाता है और साधारण बुद्धि के लोग धर्म के विरुद्ध हो जाते हैं। लोग सोचने लगते हैं कि जिससे मानव-मानव के रक्त का प्यासा हो जाय, जिससे मानव की मानवता का पशुकरण ही नहीं अपितु राक्षसीकरण होता है, ऐसे धर्म की संसार को क्या आवश्यकता है ? ऐसे धर्म से संसार का क्या लाभ ? क्यों न ऐसे धर्म को ही संसार से विदा कर दिया जाय ?

बात है भी ठीक, जो धर्म मानवता का अभिशाप हो—साधारण बुद्धि का हो सही—कोई भला व्यक्ति, कोई सत्पुरुष ऐसे धर्म को क्यों पसन्द करेगा ? ऐसी दशा में यदि लोग धर्म को नशा अथवा अफीम कहने लग जायें तो आश्चर्य ही क्या है। परन्तु प्रश्न तो यह है कि क्या यह समस्या का वास्तविक निदान है ? और क्या यही इस रोग की वास्तविक चिकित्सा है ?

तथ्य यह है कि जब तक रोग का ठीक निदान नहीं होता, तब तक उसकी ठीक चिकित्सा भी नहीं हो सकती, ठीक चिकित्सा के लिये निदान का ठीक होना अत्यन्त आवश्यक है। रोगी को बचाने के लिये ठीक चिकित्सा होनी चाहिए और ठीक चिकित्सा के लिए ठीक निदान होना चाहिए।

मानव रोगी है। न केवल मानव अपितु सम्पूर्ण मानव समाज। रोग है धर्म का। चिकित्सक के पास जाता है रोगी और कहता है—वैद्य जी मैं बीमार हूं, मेरी चिकित्सा कीजिये। वैद्य जी पूछते हैं, बीमारी क्या है आपको ? रोगी कहता है, धर्म की। वैद्य जी कहते हैं अच्छा तो आप नित्य प्रातः उठकर हनुमान मन्दिर में जाकर फूल चढ़ाया करो और घर पर नित्य हनुमान चालीसा का पाठ किया करो।

इसी प्रकार कोई शिव मन्दिर में फूल चढ़ाने और शिव स्तोत्र के पाठ की बात बताता है तो कोई दुर्गा पाठ की। कोई पांच समय काबे की ओर मुंह करके नमाज और वर्ष में एक मास रोजा रखने की औषधि लिख देता है तो कोई नित्य प्रति गिरजाघर की प्रार्थना में सम्मिलित होने की। कोई "अहिंसा परमो धर्म" का मंत्र लिखकर नित्य जैन मन्दिर में दर्शनार्थ जाने की औषधि देता है तो कोई गुरुद्वारे का द्वार खटखटाने की।

रोगी, धर्म का रोगी उक्त स्थानों के चक्कर काटते-काटते और उक्त औषधि तन्त्र को रटते-रटते मृत्यु शय्या पर जा पहुंचता है, परन्तु अपने और अपनी विचारधारा की मान्यतावाले व्यक्तियों के अतिरिक्त अन्य सब को (चाहे वह आचरण में कितने ही पवित्र और नैतिक मूल्यों का पालन करनेवाले हों) नीच, घृणास्पद, नरक-गामी और यहां तक कि वध कर दिये जाने योग्य तक मानता रहता है।

"ऐसे ही कन्या वर रहे, ऐसे ही रहे विदेश" वाली लोकोक्ति चरितार्थ होती है। चाहे इस मत में रहे या उसमें—रहे मतवादी ही धर्मात्मा नहीं बन सके। कारण स्पष्ट है कि जिन चिकित्सकों के पास गये, वह सब "नीम हकीम" अर्थात् अधूरे चिकित्सक थे। उन्हें निदान आता ही नहीं था, रोगी के रोग का क्या निदान करते ? वह तो बीमारियों को ही औषधि समझे बैठे थे। प्रत्येक चिकित्सक के पास से रोगी को पूर्व की अपेक्षा नयी औषधि दे दी जाती है, रोगी उसे सेवन करता है परन्तु रोग ज्यों का त्यों। कारण यह है कि औषधि नहीं अपितु नये रोग का तन्त्र रोगी के हाथ में आ जाता है। एक रोग से मुक्त हुआ—दूसरे में जा फंसा। वह रोग मुक्ति, रोग निवारण है अथवा रोग परिवर्तन व रोग का नवीनीकरण।

हकीम और वैद्य यकसा है, अगर तशतीश अच्छी हो।
हमें सेहत से मतलब है, बनफ्शा हो या तुलसी हो॥

हमें (मनुष्य को) रोग की चिकित्सा की आवश्यकता है, रोग का नवीनीकरण नहीं चाहिए। हम चिकित्सा द्वारा रोग मुक्त होना चाहते हैं, किसी नये रोग से पीड़ित नहीं होना चाहते। चिकित्सा चाहे हमारी वैद्य करे या हकीम, होम्योपैथ करे अथवा एलोपैथ और या चाहे नेचरोपैथ (प्राकृतिक चिकित्सक) हमें किसी विशेष चिकित्सा पद्धति से मोह नहीं। चाहे बनफ्शा हो या तुलसी, चिकित्सा भी चाहे किसी पद्धति से कर लो परन्तु रोग को समूल नष्ट करो। "न रहे बांस न बजे बांसुरी" न रोग रहे न छुआछूत और घृणा।

जब तक यह रोग (धर्म-रोग) रहेगा, तब तक धार्मिक घृणा-द्वेष और ऊंच-नीच का भेद-भाव बना रहेगा और जिस दिन यह रोग मिटा तो इसके लक्षण घृणा-द्वेष और ऊंच-नीच के भेद भी बने न रहेंगे। यह लक्षण है रोग नहीं। रोग तो मन में है, विचारों में निहित है। यदि मानव-मन का मल धुल जाय, यदि विचारों की शुद्धि हो जाय तो इन सभी तथाकथित रोगों, परन्तु वास्तव में रोग के लक्षणों से छुटकारा मिल जाय।

मानव-मन के मल को छुड़ाने की कहिये अथवा धार्मिक रोग से मानव की मुक्ति की कह लीजिये—केवल मात्र एक ही उपाय है और वह यह कि मानव को धर्म के लक्षणों की जानकारी दी जाय। क्योंकि वर्तमान समय में लोगों को धर्म के लक्षणों का पता नहीं है अतः धर्म के नाम पर वह बहक जाते हैं और कभी इस मत में तो कभी उस मत में धक्के खाते और जीवन नष्ट करते हुए फिरते रहते हैं। यदि लोगों को धर्म के लक्षणों की जानकारी हो जाय तो वह मतवादियों के चंगुल में नहीं फंसें।

(क्रमशः)

कौन कहे हम आर्य नहीं हैं

रचयिता–स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
(अधिष्ठाता वेद प्रचार विभाग)

जीते माता पिता से झगडा मर जाये गगा पहुचावै।
स्वर्गधाम की राह बतावें गगा जी मे हाड बहावै॥
तेरहवी मे लड्डू पूडी मालपुआ करके हरषावै।
अपना ऊचा नाम करावें घर पर आकर विप्र जिमावै॥
मृतक श्राद्ध करना धरना ये कोई शुभ कार्य नही हैं।
कौन कहे हम आर्य नहीं हैं॥१॥

श्रीकृष्णचन्द्र योगी की पत्नी श्री रुकमणी बतलाई।
वे कहते है वृषभान लली राधा उनके सग मे विहाई॥
हम योगीराज श्रीकृष्णचन्द्र को योगीराज बताते है।
वे माखन चोर चोर कहकर योगी की हसी उडावे हैं॥
छलिया चोर कृष्ण को कहने वाला कहो अनार्य नही है।
कौन कहे हम आर्य नही हैं॥२॥

श्री रामचन्द्र पुरुषोत्तम का हम दिल से आदर करते है।
उनके जीवन की गाथा पढ करके खरे उतरते हैं।
वे मूर्ति राम की गढ करके मन्दिर के बीच बिठाते हैं।
जनता पर पुजवाते हैं और स्वय चढावा खाते हैं॥
जड पूजा करनेवाला कहदो पाखडाचारी नहीं हैं।
कौन कहे हम आर्य नही हैं॥३॥

शराबबदी (भजन)

पहले छुप-छुप के, फिर तो बेधडके पीने लगे थे जहर।
अरे ये रास्ता है नाश का जी, पहले छुप छुप के॥

१ पहले थोडी-थोडी फिर कई बोतल पी जाए।
जेब हुई जब खाली हो बर्तन तक रख आए॥
ठेके वाले से कहे दे मुझे एक पव्वा उधार का।
जी पहले छुप-२ के

२ बीवी बच्चे इसकी इस आदत से तग है,
पीकर बणता ठाकुर पर जेब से बिल्कुल नग है।
मुर्गे के बदले दे दिया एक बेछडा हजार का॥
जी पहले छुप-२ के

३ बच्चे मरते भूखे ना कपड ना रोटी,
बाप मिल्या शराबी किस्मत म्हारी खोटी।
ऊट मटीला कर बैठा अपने घर बार का॥
जी पहले छुप-२ के

हरपाल आय तुझको बार-बार समझाता है,
छोड दे दारू पीणी आर्यसमाज भी चाहता है।
सध्या हवन किया कर भला हो सारे ससार का॥
जी पहले छुप-२ के

—हरपालसिंह आर्य, उपप्रधान आर्यसमाज, क्योडक, कैथल।

शोक समाचार

आर्य वीर दल के सुयोग्य व्यायाम शिक्षक तथा आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल पानीपत के विज्ञान अध्यापक श्री अनिल कुमार आर्य ग्राम चन्देना जिला सहारनपुर (उ० प्र०) का दिनाक ५.७.९३ को सडक दुर्घटना मे आकस्मिक निधन हो गया। उनकी कुछ समय पूर्व ही शादी हुई थी। वह नम्र स्वभाव, मृदु भाषी, मिलनसार व परिश्रमी थे। आर्य वीर दल के लिए उनकी क्षति अपूर्णीय है। आर्य विद्यालय पानीपत मे अध्यापन कार्य के साथ-साथ उन्होने पानीपत में आर्य वीर दल की शाखा चालू की। ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को शान्ति व सद्गति प्रदान करे तथा शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे।

—ओमप्रकाश शास्त्री, सभा गायक

बरहाणे में सात दिवसीय शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज बरहाणा जि० रोहतक द्वारा गाव मे दिनाक २० से २६ जून ९३ तक सात दिवसीय सदाचार एव व्यायाम प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया, जिसमे १७५ बच्चो ने भाग लेकर व्यायाम शिक्षक ब्र० नन्दकिशोर जी एव ब्र० हरपाल जी शास्त्री के निर्देशन मे आसन, दण्ड, बैठक आदि विभिन्न व्यायाम कलाओ का अभ्यास किया तथा सामाजिक एव धार्मिक शिक्षाए ग्रहण की, अन्तिम दिन लगभग ४० युवकों ने आचार्य विजयपाल जी गुरुकुल झज्जर से यज्ञ मे विधि पूर्वक यज्ञोपवीत ग्रहण किया, आचार्य सत्यानन्द जी ने भी युवको को सम्बोधित किया, प्रतिदिन ब्र. कृष्णदेव जी ने यज्ञ का सचालन किया। दिनाक २४ से २६ जून तक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक श्री जयपाल जी के ओजस्वी प्रचार का कार्यक्रम चला जिसे लोगो ने बहुत पसन्द किया तथा गाँव छोछो मे रात्रि के प्रचार मे उनके ओजस्वी शराब विरोधी प्रचार कार्यक्रम को सुनकर वहा के सरपच श्री आजाद सिंह ने सबके बीच मे शराब छोडने का प्रण किया तथा यज्ञ कराकर यज्ञोपवीत ग्रहण किया और सभा को ५०० रु० वेदप्रचार दशाश सर्वहितकारी शुल्क दिया।

—मन्त्री आर्यसमाज बरहाणा।

चौ० धर्मचन्द जी को भ्रातृशोक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रतिष्ठित सदस्य चौ० धर्मचन्द जी के छोटे भ्राता चौ० सूधनसिंह सेवानिवृत्त सूबेदार का ६४ वर्ष की आयु मे उनके ग्राम मोरवाला जि० भिवानी मे हृदय गति बन्द हो जाने पर दिनाक २३ जून ९३ को निधन हो गया। वे सामाजिक कार्यों मे बहुत रुचि लेते थे। ५ वर्ष तक ग्राम के सरपच भी रहे। ४ जुलाई को उनके घर पर एक शोक सभा की गई। श्री मनुदेव शास्त्री ने शान्ति यज्ञ करवाया। इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्तियो के अतिरिक्त सभा के मन्त्री श्री सूबेसिंह, उपमन्त्री डा० सोमवीर, चौ० विजयकुमार आदि भी सम्मिलित हुए। परमात्मा से प्रार्थना है कि शोक संतप्त परिवार को इस दुख को सहन करने की शक्ति तथा दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे। —केदारसिंह आर्य

वेदप्रचार सप्ताह की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अन्तर्गत प्रदेश के आर्यसमाजों मे वेदप्रचार सप्ताह क कार्यक्रम निम्न प्रकार हैं —

१ आर्यसमाज माहू की ढाणी जि० भिवानी १५ से १८ जुलाई
२ आर्यसमाज राजलूगढी जि० सोनीपत १३ से १६ जुलाई
३ कन्या गुरुकुल खानपुर जि० सोनीपत २१ जुलाई
(अमर बलिदानी भक्त फूलसिंह बलिदान दिवस)
४ आर्यसमाज माडल टाउन यमुनानगर ६ से ११ अगस्त
५ आर्यसमाज थानेसर (कुरुक्षेत्र) ८ से ११ अगस्त

हरयाणा के आर्यसमाजों के अधिकारियो से निवेदन है कि अगस्त मास मे वेदप्रचार का प्रबन्ध कराने के लिए सभा को पत्र लिखकर सूचित करें जिससे सभा की ओर से उपदेशको तथा भजनमण्डलियों का कार्यक्रम बनाया जा सके। —वेद प्रचाराधिष्ठाता

शराबबन्दी के समर्थन मे त्यागपत्र

हिसार (निस) समीपवर्ती गाव ढाबा के पच श्री सूरजभान ने भारतीय किसान यूनियन तथा आर्यसमाज द्वारा सचालित शराबबन्दी आन्दोलन के समर्थन मे अपना त्यागपत्र दे दिया है। उन्होंने कहा है कि मैं शराबबन्दी आन्दोलन को तन, मन तथा धन से समर्थन देता रहूगा।

(नभाटा दिनांक १३-७-९३)

आर्य वीर दल राजस्थान का प्रान्तीय शिविर सम्पन्न

आर्य वीर दल राजस्थान का प्रान्तीय शिविर इस वर्ष ग्रीष्मकाल मे २१ मई से ३० मई १९९३ तक अलवर जिले मे आर्यसमाज जखराना की ओर से लगाया गया जिसमे १५ जिलो के ११२ आर्य वीरो ने भाग लिया। अलवर, सवाई माधोपुर, कोटा, बारा, पाली, जयपुर, जोधपुर, झुंझनू, चुरु, सिरोही, रेवाडा, महेन्द्रगढ, अजमेर और मेरठ आदि जिलो से आये वीरो व व्यायामशिक्षको ने इस शिविर मे भाग लिया।

प्रान्तीय सचालन श्रीमान् सत्यवीर आर्य, प्रान्तीय मत्री व शिविर सयोजक श्री सीताराम आर्य वैदिक" के नेतृत्व मे आर्य वीरो ने शिविर मे पूर्ण अनुशासन मे रहकर तथा व्यस्त दिनचर्या मे रहते हुए सघन व्यायाम प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण कार्य मेरठ जिले से आये व्यायाम शिक्षक श्री अजयकुमार, अजमेर के ब्र० नन्दकिशोर जी, जोधपुर के महेश आर्य का सराहनीय सहयोग रहा।

आर्य वीरो के बौद्धिक, आत्मिक, नैतिक व चारित्रिक उत्थान के लिए आध्यात्मिक धर्मचर्चा, सध्या, यज्ञ, भजनोपदेश आदि कार्यक्रमो का आयोजन किया। इसके अन्तर्गत गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली के आचार्य हरदेव जी, आर्य उप प्रतिनिधि सभा अलवर के प्रधान श्री जगदीशप्रसाद आर्य, सभा के भजनोपदेशक श्री मगलदेव, प्रातीय मत्री सीताराम आर्य महानुभावो ने आर्य वीरो मे आर्यसमाज व वैदिक विचारधारा को विकसित करने का अथक प्रयास किया।

आर्य सस्कृति के प्रतीक यज्ञोपवीत को धारण कराने हेतु सामूहिक यज्ञोपवीत सस्कार कराया गया जिसमे आर्य वीरो को पितृ ऋण, देव ऋण और ऋषि ऋण से अनृण होने तथा बुराइयो को छोडकर अच्छाइया ग्रहण करने की प्रेरणा दी।

२४ मई को वैदिक सस्कृति के गौरव महाराणा प्रताप की जयन्ती मनाई गई जिसमे सीताराम आर्य ने बताया कि महाराणा प्रताप ने अपने देश व सस्कृति की आन-बान व शान की रक्षा के लिए जगलो की खाक छानी, घास की रोटिया खाई लेकिन अकबर की अधीनता स्वीकार नही की।

३० मई रविवार को शिविर समापन के अवसर पर आर्य वीरो ने सगीत की धुन पर भव्य व्यायाम प्रदर्शन किया। सर्वांग सुन्दर व्यायाम, दण्ड-बैठक, आसन, लाठी, भाला, जूडो-कराटे आदि के प्रदर्शन को देखकर दर्शको की प्रसन्नता की सीमा नही रही और प्रोत्साहन के रूप मे आर्य वीरो को प्रदर्शन स्थल पर ही हजारो रुपये के पुरस्कार प्राप्त हुए।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मन्त्री स्वामी सुमेधानन्द जो सरस्वती ने जखराना मे शराब पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगवाकर अनुकरणीय कार्य किया।

आर्यसमाज जखराना के प्रधान श्रीराम आर्य, मत्री श्रीमान् जयप्रकाश जी, श्री रतिराम जी, शक्तिसिह जी, जसवन्तसिह जो सूबेदार, छगाराम जी सेठ, प्रहलाद यादव, वैद्य सत्यप्रकाश, कम्पाउण्डर विजयपाल आदि महानुभावो का शिविर की भोजन, दूध, सब्जी, चिकित्सा, पानी व स्थान उपलब्ध करवाने मे विशेष सराहनीय सहयोग रहा।

शिविर समापन के दीक्षान्त समारोह मे आर्य वीरो ने अपने-अपने क्षेत्र मे आर्य वीर दल की शाखाए स्थापित करने का सकल्प किया। आर्यवीरो के इस सकल्प से कम से कम १५ नये स्थानो पर शाखा खुलने के आसार बने हैं। भयकर गर्मी के बावजूद भी शिविर आशातीत सफल रहा।

सीताराम आर्य 'वैदिक' महामन्त्री

यदि आप हरयाणा मे पूर्ण शराबबन्दी लागू करवाना चाहते हैं तो अपने क्षेत्र के निकट के ठेको पर चल रहे धरणो मे सम्मिलित होवें।

जहा कोई धूम्रपान नही करता

सहारनपुर, १७ मई (वार्ता)। पक्की सडक, पानी के निकास के लिए नालिया, विद्यालय, चिकित्सालय, पचायत भवन एक आदर्श गाव की सामान्यतया सही विशेषता मानी जाती है, किन्तु सहारनपुर जिले के मिरगपुर को अनूठी ही विशेषता यह है कि ग्राम का कोई भी व्यक्ति धूम्रपान नही करता।

ग्राम के बुजुर्गों का दावा है कि सारे मिरगपुर गाव मे कोई भी व्यक्ति न तो बीडी या सिगरेट पीता है और न ही हुक्के को हाथ लगाता है। फिर चरस, अफीम और गाजा या शराब की तो कल्पना ही नही की जा सकती। इतना ही नही इस ग्राम मे प्याज और लहसुन तक का कोई उपयोग नही करता।

(दैनिक ट्रिब्यून)

श्रावणी पर्व (रक्षा-बंधन)

सब सज्जनो को यह सूचना देते हुए प्रसन्नता है कि आपका प्रिय रक्षा बधन (श्रावणी) पूर्णिमा के दिन २ अगस्त सोमवार को प्रात ६ बजे से अत्यन्त रोचक ढग से गुरुकुल झज्जर मे प्रतिवर्ष की भाति मनाया जा रहा है।

वर्ष भर मे एक बार मे आने वाले इस पर्व पर इष्ट मित्रो सहित भारी सख्या मे पहुचकर अपनी प्राचीन भारतीयता का परिचय दीजिए।

आप अपने कल्याण के लिए भी इस दिन हवन-कुण्ड मे स्वय अपने हाथ से आहुति डालिए और ऐसी प्रतिज्ञाय कीजिए जिनका पालन आपको आपके बच्चो को और आपके आस-पास, पड़ोस को सुखी रख सके, कलह से बचा सके।

प्रिय मित्रो! इस अवसर पर पुराने यज्ञोपवीत बदलकर नवीन धारण किये जाते हैं और जिनके पास जनेऊ नही हैं उन्हे दिये भी जाते है। जनेऊ लेने का अधिकार मनुष्य मात्र को है। इसलिए सभी बहिन-भाई, छोटे-बडे नर नारी अवश्य ही इस पुण्य कर्म के भागी बनिये।

दूर के सज्जन १ अगस्त रविवार को ही सायकाल तक गुरुकुल मे पहुचने की कृपा करे।

आइये! समय न चूकिए, गुरुकुल आपका स्वागत करता है।

वैद्य बलवन्तसिह   स्वामी ओमानन्द सरस्वती
प्रधान   आचार्य

दहिया ने कार्यभार सम्भाला

कुरुक्षेत्र, १ जुलाई। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डा० भीम सिंह दहिया विश्वविद्यालय के कुलपति नियुक्त किये गये हैं। उन्होंने आज कार्यभार सम्भाल लिया।

डा० दहिया एक जाने-माने शिक्षाविद् तथा अग्रेजी के प्रोफेसर हैं। विश्वविद्यालय के छात्रो, शिक्षको व गैर-शिक्षक कर्मचारियो ने डा० दहिया की नियुक्ति का स्वागत किया है।

धान रोपाई के बाद शराबन्दी मुहिम तेज की जाएगी : विजय

करनाल, ६ जुलाई (जनसत्ता)। आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा गठित शराबबदी समिति के सयोजक विजयकुमार ने कहा है कि हरयाणा में शराबबदी आन्दोलन मे धान रोपाई के बाद फिर तेजी लाई जाएगी। तब तक पचायतो से ठेके हटाने सबधी प्रस्ताव पास करवाकर भेजे जाएगे।

विजयकुमार ने बताया कि हरयाणा मे कुल ५६५१ पचायते हैं जिनसे उनके गाव मे शराब के ठेके न खुलने देने सबधी प्रस्ताव पास करवा कर ३० सितबर से पहले सरकार के पास भेजे जाएगे। जबकि इस दौरान किसान वर्ग धान की रोपाई से भी फारिग हो जाएगा। उनके अनुसार इसके बाद शराब बदी मुहिम को एक बार फिर तेज किया जाएगा। उन्होने बताया कि स्वामी ओमानद को शराब बदी मुहिम चलाने का काम सौंपा है।

शराबबदी समिति के सयोजक ने आरोप लगाया है कि शराब के ठेकेदार पैसे का लालच देकर ग्रामीण क्षेत्रो मे ठेके खुलवाने सबधी प्रस्ताव पास करवा रहे हैं।

उन्होने सरकार की आलोचना करते हुए आरोप लगाया कि उसकी गलत नीतियो के कारण सभी स्थानो पर ठेकेदार एक एक ठेके की कई-कई शाखाए खोल रहे हैं, जिससे शराब की दुकाने कम होने की बजाए पहले से भी दो गुनी हो गई हैं, और प्रदेश मे शराब की नदिया बह निकली हैं। उन्होने बताया कि सिरसा जिले मे शराब के कुल ८० ठेके हे। परन्तु साथ ही उनकी ७२ शाखाए भी खोल दिए जाने से वहां शराब के १५२ बिक्री केन्द्र हो गए है।

उन्होंने कहा कि सरकार जनता की भलाई के बजाए उसे शराब मे डुबोकर उसका चरित्रहनन कर रही है, जबकि प्रदेश मे विकास कार्य बिल्कुल ठप्प पड हुए है। करनाल बिक्रीकर घोटाले की चर्चा करते हुए आर्य नेता ने कहा कि आबकारी व कराधान मत्री एस सी चौधरी को नैतिकता के आधार पर तुरत त्यागपत्र दे देना चाहिए। क्योकि अब वे खुद स्वीकार कर चुके है कि हरयाणा मे करोडो रुपए को करो की चोरी हो रही है।

साथ ही उन्होंने यह आशका भी जताई है कि हरयाणा में किए जा रहे टैक्स चोरी इससे कई गुना अधिक है। सयोजक ने कहा कि हरयाणा को भी गुजरात की तरह शुष्क राज्य घोषित किया जाए। इस मामले मे उन्होने समाज कल्याण राज्य मत्री हुकमसिंह के उन बयानो की भी प्रशसा की, जिसके अनुसार मत्री ने भी हरयाणा मे पूर्ण नशाबदी की माग का समर्थन किया है।

विजयकुमार ने सुझाव दिया है कि राज्य के विकास कार्यो के लिए राजस्व जुटाने के लिए प्रदेश के बिक्रीकर नाको पर की जाने वाली करोडो रुपए की करो की चोरी पर बल पूर्वक अकुश लगाना चाहिए और गरीब जनता पर तरस खाकर उसे शराब के जहर से बचाया जाए।

उनके अनुसार उन्होने प्रदेश की सभी पचायतो को पत्र लिखे है कि वे ३० सितम्बर से पहले ही अपने गाव में ठेके न खुलने देने सबधी प्रस्ताव पास करवाकर सीधे ही हरयाणा सरकार को भेज दे।

उन्होने सभी सामाजिक सगठनो से भी आह्वान किया है कि वे शराब बदी जैसे मानव कल्याण के यज्ञ मे अपने समर्थन की आहुति अवश्य डाल।

रुकिये—शराब के सेवन से परिवार की बर्बादी होती है। अत: अपने निकट के शराब ठेकों पर अपने साथियो सहित धरणे पर बैठकर शराब-बन्दी लागू करावें।

प्यारी राखी

तार-तार मे स्नेह सजोकर बहिना राखी लाई रे।
सुदृढ करो में दृढ यह बन्धन बधवा लो ऐ भाई रे॥

१– इन तारों मे जुड़े बहन के हृदय-तन्त्री के तार हैं,
इन तारो के तार तार मे भरी मधुर झकार है।
यह प्रतोक नि स्वार्थ स्नेह का इसकी यही बड़ाई रे॥
तार तार

२– सबसे पहले रक्षा करना वेद ईश्वरीय ज्ञान का,
भरकर भव्य भावना मन मे जन-जन के कल्याण को।
नगर-नगर और डगर-डगर मे देते फिरो दुहाई रे॥
तार-तार

३– और दूसरे रक्षा करना भारत मां के मान की,
प्राण हथेली पर ले बढना बाजी लगाकर जान की।
खदेड दो शत्रु को सीमा पार लडनी पडे लडाई रे॥
तार-तार

४– वरदा वेद माता, भारत मा, गऊ मा और हिन्दी जननी,
यह प्रतिदिन मागती राखी चारो की रक्षा करनी।
शिथिल न हो राखी का बन्धन जो कर मे बधवाई रे॥
तार-तार मे स्नेह सजोकर बहना राखी लाई रे।
सुदृढ करों में दृढ यह बन्धन बधवा लो ऐ भाई रे॥

निवेदिका—निष्ठा बहिन 'मौसम' जीवापुर (घुढाणा) हरयाणा।

'निमन्त्रण पत्र'

आप सबको सादर आमन्त्रित किया जाता है। आपके प्यारे गुरुकुल जसात का वार्षिक उत्सव ११,१२ सितम्बर को बडो धूम-धाम से मनाया जा रहा है। ७ दिन पूर्व यज्ञ प्रारम्भ हो जायेगा। आर्य-समाजो और संस्थाओ से निवेदन किया जाता है कि ११,१२ सितम्बर को अपने उत्सव आदि न रखे। जिससे एक दूसरे के उत्सव मे शामिल हो सकें। इस शुभ अवसर पर सहर्ष आइयेगा और अधिक से अधिक सख्या मे पहुच कर धर्म लाभ उठाइयेगा।

धन्यवाद, सादर नमस्ते आज।

निवेदक—सचालक, भगवती आर्ष कन्या गुरुकुल जसात,
तहसील- पटौदी, जिला-गुडगावा, हरयाणा।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, गोहाना रोड, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०/७३ २

फोन न० ७८३२

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २० अक ३० २१ जुलाई, १९९३ वार्षिक शुल्क ... (आजीवन शुल्क ५०१)

भक्त फूलसिंह जी के बलिदान दिवस पर विशेष गीत

भक्त फूलसिह जी

भजन

(भक्त फूलसिह की जीवनी का उपसहार)

टेक—भक्त फूलसिंह की कहानी याद है, देखी सुनी वह निसानी याद है।

पटवार तजकर बनकर आर्य, करने लगे उपकार कार्य,
विद्या की प्याऊ लगानी याद है।१

विद्वानों के कदरदान थे वह गुणवानों के गुणवान थे वह,
ब्राह्मणो को जजमाना याद है।२

तन मन धन सब पहले दान दे, सवस्व अपना देके ज्ञान दे,
सब कुछ दान दे, दानी याद है।३

शहद से मीठी बानी तुम्हारी, किसी ने तुम्हारी बात न टारी,
लोगो को जादूबयानी याद है।४

दुखियाओ का था तू सहारा दूसरो का दुख अपने सिर धारा,
गौश्रो की सेवा सुलेमानी याद है।५

संकट में भी नही घबराये देश हित कई बार सिर फुड़वाए,
लोगो को खरा पेशानी याद है।६

जाकर पूछिये मोठ लुहारी प्यासे मरे थे चमार चमारी,
पिला गये चमारो को पानी याद है।७

राष्ट्रहित मरा भूखा प्यासा, तेरे दर्शन की करी अभिलाषा।
गाधी भक्त हिन्दोस्तानी याद है।८

द्विज बनाये बाले बाला, ना माने उलटो मतवाला,
सब पर करी मेहरबानी याद है।९

बबूल ने वह फूल बिगाडा, खानपुर मे बही खून की धारा,
बहते लहू की रवानी याद है।१०

सावन बरसे नैन टपकते, नर और नारी देखे सिसकते,
तन मन धन की कुर्बानी याद है।११

प्रतिकूल थे कुछ मत मारे, आप गोला खा स्वर्ग सिधारे,
जिन्दादिली जिंदगी याद है।१२

अग्नि चिता की बुझने न पाई, २ भाग लोगों ने भसमी उठाई,
चिता की भसम की गिरानी याद है।१३

जब आवे कोई सकट विकट जो, आज हो भक्त जो आज हो,
भक्त जी, हजारो की हो गई हानि याद है।१४

पारस मनो को खाया भून मैं, खुशबू बढ गई टूटे फूल मे,
जौहरीसिंह तेरी बानी याद है।१५

भजन

टेक—पडकर सोवे था हरयाणा, यह मूर्ख था प्रदेश
भक्त जी तुम्हें जगानेवाला था।

अनपढ और अनघड दीवाना, खो चुका था भाषा भेष,
भक्त जी तुम्हे पढानेवाला था।१

शूद्रो को बना दिया दाना, सुना ऋषिवर का आदेश,
भक्त जी गुरुकुल खुलवानेवाला था।२

बन्द करवाया बूचड़खाना, [illegible] सम्भालके का केस,
भक्त जी गऊ बचानेवाला था।३

पहनाया ब्रह्मचर्य बाना, सुनाया वैदिक सन्देश,
भक्त जी वीर बनानेवाला था।४

कन्या का बन्द किया बिकवाना, ऊचा आदर्श किया पेश,
भक्त जी लाज बचानेवाला था।५

लुहारु मे गया मर्दाना, जनता को देवे उपदेश,
भक्त जी सिर फडवानेवाला था।६

हरिजनो का कुआ खुदवाना, मरा भूखा सहे क्लेश,
भक्त जी पानी पिलानेवाला था।७

तना सस्कारो का ताना बाना, यज्ञ होने लगे हमेश,
भक्त जी यज्ञ करानेवाला था।८

अपने लिए जोडा नही आना, कितना ऊचा उद्देश्य,
भक्त जी दुख हटानेवाला था।९

वह वेदो का था परवाना गोली खा गया दरवेश,
भक्त जी जान खपानेवाला था।१०

जौहरीसिंह सीख गया गाना, यह अच्छा बुरा कमोवेश,
भक्त जी नाद सुनानेवाला था।११

भजन

ख्याल—माहरा गाव जिला रोहतक मे फूलसिह पटवारी थे।
शराब पीते अडे खाते रिश्वतखोर बडे भारी थे।
गरीबों से बेगार भी लेते क्योकि हाकिम सरकारी थे।
सन् १९०४ के अन्दर सरकारी कर्मचारी थे।

दोहा—श्रद्धानन्द की बात सुन पढा सत्यार्थप्रकाश।
इस ग्रन्थ के पढने से हो अज्ञान का नाश।।

ख्याल—सत्यार्थप्रकाश पढा तो फूलसिह बडा उदार हुआ।
असतीफा लिखकर भेजा और दूर छोड पटवार हुआ।
सोचा जिनसे रिश्वत ली थी मैं उनका कर्जदार हुआ,
हिसाब लगाया तो रिश्वत का रुपया ५ हजार हुआ।

दोहा—जमीन बेचकर ले रुपया सब रिश्वत दई फेर।
सबसे माफी माग ली प्यारे प्रभु को टेर।।

बालसमन्द जि० हिसार में शराबबन्दी महासम्मेलन सम्पन्न

ऐतिहासिक गाव बालसमन्द मे सभा उपदेशक एवं सयोजक शराबबन्दी समिति जि० हिसार के श्री अतरसिह आर्य क्रान्तिकारी के नेतृत्व में धरना देकर ८० दिन के कडे सघर्ष के बाद ५७ लाख का ठेका मुख्यमन्त्री के हल्के मे बन्द करवाया गया। अब समिति की ओर से शराबबन्दी महासम्मेलन का आयोजन किया गया। दिनांक १०-७-९३ को रात्रि मे आर्यसमाज मन्दिर बालसमन्द मे वेदप्रचार हुआ। इस अवसर पर पं० रामकुमार एव प० सुमेरसिह के शिक्षाप्रद भजन हुए। कन्या गुरुकुल खरल के कुलपति स्वामी रत्नदेव जी ने शराबबन्दी पर अपने विचार रखे। साथ मे नवयुवकों का आह्वान किया कि जाग उठो। अब कहने का नही करने का वक्त है। स्वामी ओमानन्द जी के नेतृत्व मे शराबबन्दी आन्दोलन का बिगुल बज चुका है। आपने एक मोर्चा जीत लिया है। उसके लिए आप सबका धन्यवाद। अब बडे मोर्चे के लिए तैयार रहो। अगर अब भी शराब बन्द नही हुई तो हम मिट जायेगे। ११-७-९३ को प्रात प० दयानन्द शास्त्री (हिसार) द्वारा हवन किया गया। क्रान्तिकारी को प्रेरणा से १५ नवयुवको ने यज्ञोपवीत धारण किए। शास्त्री जी ने यज्ञोपवीत तथा पच महायज्ञ के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

(अतरसिह आर्य)

१० बजे मा० चन्दरसिह आर्य (गोरछी) की अध्यक्षता मे शराबबन्दी सम्मेलन आरम्भ हुआ। प्रथम प० सुमेरसिह, प० रामकुमार, महाशय फूलसिह के भजन हुए। तत्पश्चात् महात्मा ताराचन्द, महावीरप्रसाद प्रभाकर, मा० फूलकुमार, श्री बलराज पूनिया महासचिव भारतीय किसान यूनियन हिसार, प० दयानन्द, प्रि० भगवानदास जी का आध्यात्मिक प्रवचन हुआ। सभामन्त्री चौ० सूबेसिह, स्वामी सर्वानन्द जी, अखिल भारतीय नशामुक्ति एव सभा अध्यक्ष प्रो० शेरसिह जी ने भी मिजोरम नागालैंड, मणीपुर, आन्ध्रप्रदेश, उत्तरप्रदेश, तामिलनाडु, हरयाणा आदि अनेक प्रान्तो के शराबबन्दी आदोलन की जानकारी दी। उन्होने कहा कि बालसमन्द गाव तथा हरयाणा प्रान्त की शराबबन्दी सघर्ष की आवाज अमरीका तक पहुच चुकी है। कल वहा की टैलीविजन की टीम रोहणा मातनहेल, पाल्हावास आई थी। वहा के लोगो से बात करके गाव मे शराबबन्दी कार्य को देखकर बडी प्रभावित हुई। श्री दोवानसिह आर्य प्रधान आर्यसमाज बालसमन्द ने प्रो० साहब व स्वामी ओमानन्द जी का स्वागत किया। साथ मे कहा हमारे गाव का ठेका बन्द होने का श्रेय महात्मा अतरसिह आर्य क्रान्तिकारी को है। इनकी प्रेरणा से नवयुवक व महिलाओ मे शराब के खिलाफ सघर्ष करने की भावना पैदा हुई। सभा प्रधान को सुझाव दिया कि शराबबन्दी अभियान को चलाना चाहते हो तो क्रान्तिकारी को एक जीप दो। उसके बाद स्वामी ओमानन्द जी ने इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होने वाले नुकसान से अवगत कराया। बालसमन्द के लोरा गोत के लोगो को राम व लव की सन्तान बताया। ठेका बन्द करवाने के लिए लोगो का धन्यवाद किया। स्वामी जी ने चौ० विजयकुमार व क्रान्तिकारी की शराबबन्दी अभियान मे गति देने के लिए भूरि भूरि प्रशसा की। साथ मे पुरजोर शब्दो मे कहा कि अब पानी सिर से ऊपर जा चुका है। अब युद्धस्तर पर शराबबन्दी सत्याग्रह चलाया जाएगा। सारी जेले भर दगे। हरयाणा सरकार की सभी वक्ताओ ने शराबबन्दी नीति की कटु आलोचना की। श्री क्रान्तिकारी जी को जीप देने हेतु स्वामी जी ने ११०० रु० प्रधान दीवानसिह को दिए। कहा आपका दामाद है गाव बालसमन्द को ओर से जीप भेंट करो। तब दीवानसिह, श्री बदलुराम आर्य प्रधान मुकलान, महेन्द्रसिह आर्य मन्त्री डोभी ने कहा कि जीप का आधा खर्च हम दगे, आधा सभा दे। तब प्रो० शेरसिह सभा प्रधान ने आधा खर्च सभा की ओर से देने व कुछ सेठो से दिलवाने की घोषणा की। सभा मे कई बार प्रो० शेरसिह जिन्दाबाद, स्वामी ओमानन्द जिन्दाबाद के नारो से आकाश गूज उठा। लोगो ने कहा स्वामी जी आगे बढो हम तुम्हारे साथ हैं। चौ० विजयकुमार का पत्र भी पढकर सुनाया गया।

प्रो० साहब ने सभा की ओर से शराबबन्दी सक्रिय कार्यकर्ताओं को स्वर्ण पदक तथा रजत पदक द्वारा सम्मानित किया। सम्मानित होने वाले निम्न सदस्य हैं—श्री अतरसिह आर्य क्रान्तिकारी को स्वर्ण पदक, तुरन्त क्रान्तिकारी जी ने अपने पदक से स्वामी सर्वदानन्द कुलपति गुरुकुल धीरणवास को सम्मानित किया। अन्य गाव के लोग हैं—श्री दीवानसिह आर्य प्रधान, सेठ प्यारेलाल, नवयुवक हरिजन नेता श्री प्रतापसिह, नवयुवक श्रीराम। उपरोक्त को स्वर्ण पदक और श्रीमती परमेश्वरीदेवी, श्रीमती राजोदेवी, श्रीमती शान्तिदेवी, श्रीमती सुन्दरदेवी, पुरुषवर्ग मे श्री फतेसिह जी महाशय रामजीलाल आर्य, श्री बिरसालाराम आर्य, ठेकेदार छाजूराम आर्य, मनफूलसिह, अमीचन्द, डा० महावीरसिह, पृथ्वीसिह चौहान, शेरसिह मिस्त्री, पृथ्वीसिह गायक को रजत पदक से सम्मानित किया गया। श्री अतरसिह आर्य को भी प्रभाकर जी बवानीखेडा वाले ने एक अटैची भेंट की।

इसके अतिरिक्त शराबबन्दी समिति बालसमन्द के २७ सदस्यो को पुष्पमालाओ द्वारा सम्मानित किया गया जो निम्न हैं—भगत रामनिवास, महावीरसिह रामचन्द्र, रघुवीर, भूपसिह, रवीन्द्र, रणवीर, सत्यवीर, सन्तासिह, कृष्णकुमार, शमशेर, जितेन्द्र, राजेशकुमार, शमशेर, दारासिह, सुरेन्द्र, दिलबागसिह, नरेन्द्रसिह, जयपाल, ओमप्रकाश, रामजीलाल नाई, अजीतसिह, दिलबाग, मोहम्मदरफी, ओमप्रकाश, मा० फूलकुमार, प्रतापसिह आदि। अन्त मे क्रान्तिकारी जी ने हाथ उठवाकर कसम उठवाई कि हम किसी भी कीमत पर अब गाव मे ठेका नही खुलने देगे। चाहे हमे कुछ भी कुर्बानी देनी पडे। नवयुवको मे अपार उत्साह था। मच का सचालन प्रभावशाली ढग से श्री क्रान्तिकारी जी ने किया। सम्मेलन मे गाव के नरनारियो के अलावा नजदीक के गाव सरसाना, बुडाक, गोरछी, आर्यनगर, बाण्डाहेडी, मुकलान, धीरणवास, चानौत, छानी बडी दडौली, भिरान आदि गाव के प्रतिष्ठित आदमियो ने भाग लिया। सभी विद्वान्, अतिथि महानुभावो को देशी घी के हलवे से उत्तम भोजन करवाया।

—माईलाल आर्य, मन्त्री आर्यसमाज बालसमन्द

प्रेरणादायक दोहा (वाक्य)

मद प्रमाद कलहश्च निन्दा बुद्धिक्षयो धर्मविपर्ययश्च।
अर्थस्य हन्ता नरकस्य पन्था अष्टौ अनर्थाः कर्के वसन्ति॥

एक आदमी शराब का घडा लिए जा रहा था। किसी दूसरे आदमी ने पूछा इसमे क्या है, तो घडेवाले ने यह कालिदास जी का उपरोक्त श्लोक पढ दिया। कहा घमण्ड, आलस्य, झगडा, निन्दा, बुद्धि का नाश, धर्म से उल्टा, धन का नाश, नरक का रास्ता, आठ दोष घडे मे रहते हैं। अत शराबी भाइयो से मेरा नम्र अनुरोध है शराब सब पापो की जड है। आप इस श्लोक को बार-बार पढो, अन्य को पढाओ। स्वय शराब छोडकर औरों की छुडवाओ। इसी मे आपका समाज का तथा देश का भला है। इसलिए साथियो शराब से करलो किनारा वरना जीवन है अन्धियारा।

अतरसिह आर्य क्रान्तिकारी सभा उपदेशक

शराबबंदी जारी रहेगी

कोहिमा, १३ जुलाई (प्रेट्र)। नागालैंड के मुख्यमन्त्री एस सी. जमीर ने आज कहा कि राज्य से शराबबंदी नही हटायी जायेगी। राज्य विधानसभा मे प्रश्न प्रहर के दौरान एक सवाल के जवाब मे उन्होने कहा कि शराबबंदी कानून नही हटाई जायेगी क्योकि इसे सदन ने सर्वसम्मति से पारित किया है। शराबबंदी के कारण राज्य को १० करोड का सालाना घाटा उठाना पड़ रहा है।

हरयाणा शराबबन्दी समिति की बैठक के महत्त्वपूर्ण निश्चय

रोहतक १८ जुलाई ९३—दयानन्दमठ रोहतक की यज्ञशाला मे हरयाणा शराबबन्दी समिति की एक आवश्यक बठक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। इस अवसर पर सत्याग्रह के प्रथम तथा द्वितीय सर्वाधिकारी स्वामी ओमानन्द सरस्वती, स्वामी रतनदेव जी एव हरयाणा के कोने-कोने से से आये सैकडो आर्यसमाज के अधिकारी उपस्थित थे। बैठक मे सत्याग्रह की तैयारी के लिए निम्नलिखित निश्चय किये गये।

१—स्वतन्त्रता दिवस १५ अगस्त ९३ को हरयाणा को पचायतो से निवेदन दिया गया है कि वे इस दिन को पचायतो को स्वतन्त्रता दो के रूप मे मनावें। भारत सरकार पचायती राज्य लागू करने की घोषणा करती रहती है, परन्तु हरयाणा सरकार पचायतों पर दबाव डाककर तथा प्रलोभन देकर शराबबन्दी के प्रस्ताव वापिस लेने के लिए विवश कर रही है। जिन सरपचो ने अपने ग्रामो मे शराब के ठेको पर धरणे दिलवाये हैं, उन्हे निलम्बित किया जारहा है। अत ग्राम पचायतो तथा सर्वखाप पचायतो की ओर से १५ अगस्त को समारोह आयोजित करके पचायतो को परोपकारी कार्य स्वतन्त्रतापूर्वक करने की माग जावेगी।

२—५ सितम्बर को सारे देश मे शिक्षक दिवस मनाया जाता है। शिक्षक सामाजिक बुराइयो से दूर रहने आदि की शिक्षा देना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। परन्तु हरयाणा सरकार उन अध्यापको को निलम्बित आदि करके अपने कर्त्तव्य से विमुख करना चाहती है जो कि शराब जैसी बुराई से बचने के लिए सार्वजनिक सभाओ मे भाषण देते हैं। खरावड ग्राम के श्री ईश्वरसिंह शास्त्री को इसी कारण हरयाणा सरकार ने निलम्बित किया था। इस प्रकार के और भी उदाहरण हैं। अत सभा ने हरयाणा के अध्यापकों से अनुरोध किया है कि वे ५ सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाते समय हरयाणा सरकार से अनुरोध करें कि सामाजिक बुराइयो के विरुद्ध शिक्षा देने को पूरी स्वतन्त्रता दी जावे।

३—२ अक्तूबर महात्मा गाधी तथा श्री लालबहादुर शास्त्री का जन्म दिवस है। अत सभा ने हरयाणा के आर्यसमाजो तथा अन्य धार्मिक तथा सामाजिक सस्थाओ के कार्यकर्त्ताओ से अनुरोध किया है कि वे २ अक्तूबर ९३ को एक बडी रैली का आयोजन करके केन्द्रीय तथा हरयाणा सरकार को चेतावनी देवे कि इन दोनो महापुरुषो को सच्ची श्रद्धाजलि देने के लिए शराब के सभी कारखानो तथा दुकानो को बन्द करें जिसमे जनता शराब से होनेवाले महा विनाश से बच सके।

४—१ नवम्बर को हरयाणा दिवस मनाया जाता है। हरयाणा बनवाने मे आर्यसमाज के नेताओ ने प्रमुख भूमिका निभाई थी और आशा की थी कि हरयाणा बनने पर पूर्व की भाति इस ऋषि मुनियो की पवित्र धरती मे शराब जसी बुराई समाप्त हो जावेगी। परन्तु जो नेता उस समय हरयाणा बनवाने का विरोधकर रहे थे, वे आज हरयाणा के शासन पर बठे हैं और हरयाणा की धरती को अपवित्र करने के लिए गाव-गाव मे शराब को नदिया बहाकर मतदाताओ को शराब के नशे धुत्त करके राज्य करने का षड्यन्त्र रच रहे हैं।

सभा ने सर्वसम्मति से निश्चय किया है कि यदि हरयाणा सरकार ने न्योचित तथा परोपकारो शराबबन्दी करने की माग स्वीकार नही की तो हरयाणा दिवस पर १ नवम्बर ९३ से हरयाणा के ऐतिहासिक स्थान दयानन्दमठ रोहतक मे शराबबन्दी सत्याग्रह आरम्भ कर दिया जावेगा। इसकी तैयारी के लिए सभा के अधिकारी तथा शराबबन्दी सत्याग्रह के सर्वाधिकारी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती एव स्वामी रतनदेव जी अपने सहयोगियो के साथ हरयाणा के प्रत्येक जिले मे भ्रमण करके सत्याग्रहियो क भरती करेगे। सभी आर्यसमाजो को निर्देश दिया गया है कि वे अपनी अपनी साधारण सभाये करके सत्याग्रहियो की सूची तथा ११००, ११०० रु० सत्याग्रह सचालन के लिए सभा के कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक मे भेज देवे। यह सत्याग्रह आर्यसमाज के लिए एक परीक्षा है।

इस सत्याग्रह मे जो भी सस्था तथा कार्यकर्त्ता ईमानदारी से तन, तन तथा धन से सभा को सहयोग देगे, उनका हार्दिक स्वागत तथा धन्यवाद किया जावेगा।

हरयाणा के सरपंचो से आवश्यक अनुरोध

हरयाणा के सभी सरपचो की सेवा मे मैंने एक परिपत्र द्वारा निवेदन किया था कि अपनी पचायतो की ओर से सितम्बर ९३ तक शराब बन्दी का प्रस्ताव करके हरयाणा के आबकारी एव कराधान आयुक्त को चण्डीगढ तथा उसकी एक प्रति सभा कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक भेजने की कृपा करे। मैं अस्वस्थ हो जाने के कारण व्यक्तिगत सम्पर्क नही कर सका। अत पुन निवेदन है कि शराबबन्दी प्रस्ताव समय पर पास करे।

—विजयकुमार

सयोजक हरयाणा शराबबन्दी समिति, दयानन्दमठ, रोहतक।

हरयाणा मे पूर्ण शराबबन्दी लागू करने के लिए—

महामहिम राज्यपाल महोदय श्री धनिकलाल जी मण्डल सेवा मे ज्ञापन

महोदय,

हरयाणा की जनता और विशेष रूप से ग्रामीण जनता शराबबन्दी के लिए कृतसकल्प हैं। उन्होंने सभी जिलो मे पचायते करके शराबबन्दी के लिए प्रस्ताव ही पारित नही किये, बल्कि परम्परा से चली आ रही पचायतो ने शराब पीने वालो और बेचने वालो को दण्डित भी किया। प्रदेश के अधिकतर ग्रामो ने शराब के ठेके खोलने के लिए भूमि और मकान दुकान देने से इन्कार किया और यह बडे खेद का विषय है कि जिस सरकार ने सडको से लगी हुई पी डब्लू डी. की जमीन आज तक किसी भी काम के लिये किसी को नहीं दी आज वह सरकार वह जमीन शराब के ठेको के लिए मुफ्त शराब के ठेकेदारो को दे रही है। आतक इतना फैलाया जा रहा है कि सरकारी कर्मचारी न चाहते हुए भी अपने अधिकारो का दुरुपयोग कर रहे है। सरकारी कर्मचारी निलम्बित किये जा रहे हैं और पचायतो के सरपच भी। जिन सरपचो ने अपनी पचायतो के प्रस्ताव भेजकर शराब के ठेके बन्द करवाये, उन्हे हमारे जिलाधीश, पुलिस अधीक्षक तथा अन्य अधिकारी मजबूर कर रहे है कि वे शराब का ठेका खुलवाने के लिए प्रस्ताव पास करे। ऐसे अनेक उदाहरण है, आप उनकी सूची आबकारी विभाग के अधिकारियो से माग कर सकते हैं।

जहा एक ओर आतक का बोल-बाला है वहा १५ जून १९९३ को हरयाणा सरकार के मन्त्री चौ० हुकमसिंह जी ने दहिया की पचायत और जनता के सामने घोषणा की कि अगले वित्तीय वर्ष से पूरे हरयाणा मे शराबबन्दी कर दी जायेगी। मन्त्रीमण्डल का मन्त्री जो घोषणा करता है वह पूरे मन्त्रीमण्डल की घोषणा है। हम आप से निवेदन करते है कि आप मन्त्रीमण्डल से विधिवत यह घोषणा करवाये। और क्योकि ऊपर लिखित घोषणा के फलस्वरूप शराब के ठेके बन्द होने है, इसलिये शराब के सभी कारखाने बन्द कर देने चाहिये। हमारा राष्ट्रहित मे यह सुझाव है कि इन कारखानो मे पावर अल्कोहल बनाई जाये ताकि विदेशों से तेल खरीदने पर जो विदेशी मुद्रा व्यय की जाती है उसमे बचत हो सके। शीरा से शराब बनाने को बजाये औद्योगिक तथा पावर अल्कोहल बनानी चाहिये। ऐसा किया गया तो हरयाणा प्रदेश पूरे देश को एक नई दिशा दे सकता है।

हमारी यह प्रार्थना है कि आप अपने मन्त्रीमण्डल से विधिपूर्वक शराबबन्दी की घोषणा करवाये। श्री विजय भास्कर रेड्डी ने घोषणा की है कि १ अक्तूबर १९९३ से वे पूरे प्रान्त मे अर्क (देशी शराब) बन्द कर देगे। उसी प्रकार हरयाणा मे भी अपने मन्त्री के वचन का पालन करते हुए तुरन्त पूर्ण शराबबन्दी की घोषणा होनी चाहिए। साथ ही शराब के कारखानो को बन्द करके पावर अल्कोहल बनाने की घोषणा २ अक्तूबर १९९३ से पहिले होनी चाहिये। यदि ऐसा नही किया गया तो हरयाणा की जनता सत्याग्रह का बिगुल बजायेगी और हरयाणा से शराब बन्द करके ही दम लेगी। सद्भावनाओ सहित—

ओमानन्द सरस्वती	प्रो० शेरसिंह	सूबेसिंह
आन्दोलन सर्वाधिकारी	सभा प्रधान	सभामन्त्री

धर्म का तत्त्व अर्थात् धर्म क्या है ?

—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष, वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ०प्र०)

(गताक से आगे)

इतना तो हम पूर्ण दायित्व के साथ कह सकते हैं कि ससार के वर्तमान मतो मे एक भी ऐसा नही है, जो धर्म के लक्षणो पर पूरा उतर सके या धम कहलाने का अधिकारी हो, यद्यपि सभी अपने को धर्म घोषित करते है। हाँ, धर्म को कुछ बाते इन सभी मतो मे हैं, किसी में न्यून और किसी मे कुछ अधिक और इसीलिए यह ससार मे जीवित हैं, ठीक उसी प्रकार—जिस प्रकार प्रकाश तो मिट्टी के तेल की कुप्पी भी देती है और सरसो के तेल का दीपक भी। गैस के लम्प भी प्रकाश देते हैं और विद्युत लैम्प भी। इन सब मे प्रकाश है और सभी प्रकाश न्यूनाधिक देते भी हैं किन्तु सूर्य की अनुपस्थिति मे। जब आकाश मे सूर्य देदीप्यमान हो रहा हो तो इनमे से किसी की भी आवश्यकता नही रहती और न इनका प्रकाश किसी को प्रकाशित ही कर पाता है। इनका प्रभाव तो अन्धकार मे ही होता है, तभी यह प्रकाश दे पाते हैं और वह भी साधारण, धुवला तथा अतीव सीमित क्षेत्र मे।

अग्नि प्रकाश का पुञ्ज है। प्रकाश अग्नि का गुण है अत जहाँ-जहाँ प्रकाश है, वहाँ-वहाँ अग्नि है। हाँ, अग्नि की जहा जितनी शक्ति है, वहा उतना ही वह प्रकाश दे पाता है। सूर्य अग्नि का भण्डार है अतएव उसका प्रकाश भी अत्यन्त प्रबल है, अतीव तीव्र है। यही कारण है कि अन्य सभी प्रकाश उसके सामने मन्द पड जाते हैं।

यही स्थिति धर्म की है। धर्म का प्रकाश अतीव तीव्र है, उसके प्रकाश के सामने मत-मतान्तरो के दीपक स्वय ही मन्द पड जायेगे, उनका एक प्रकार से विलीनीकरण हो जायगा यदि धर्म का सूर्य उदय हो जाय। नितान्त बुद्धिहीन की बात नही कही जा सकती, किन्तु साधारण सी, स्वल्प बुद्धि रखने वाला व्यक्ति भी धर्म का प्रकाश पाते ही मन्द-मन्द टिमटिमाने वाले मत-मतान्तरो के क्षुद्र दीपको को तुरन्त त्याग देगा किन्तु उसे धर्म के सूर्य का प्रकाश मिले तो सही।

प्रश्न फिर घूम-फिर कर वही उपस्थित है कि अन्ततोगत्वा धर्म का कुछ अता-पता भी है ? उसका कोई ठौर-ठिकाना भी है ? उसे जानने वाला और उसका बताने वाला भी कोई है तथा उसका स्वरूप, लक्षण, परिभाषा आदि क्या है ? इसके लिए चिन्तित होने को कोई बात नही। यह ठीक है कि आप बहुत भटके है और आपने धर्म के नाम पर अनेक विचारो को सुना है, किन्तु उन सब मे परस्पर विरोध और भिन्नता ही पाई है, किन्तु वास्तविकता यह है कि वह सब मत-पन्थ या मजहब ही हैं, धम नही।

धर्म का ठौर-ठिकाना और अता-पता है ऋषियो के पास, ऋषि-कृत ग्रन्थो मे। धर्म के वास्तविक व्याख्याता ही ऋषि हैं। धर्म का विधान करने की योग्यता मनुष्य मे (सामान्य-जन) मे नही होती, यह योग्यता तो ऋषियो मे ही होती है। साधारण जन मे धर्म विधान का निर्माण करने, धर्म का स्वरूप निश्चित करने की योग्यता होती तो ऋषियो को उसके लिए प्रयत्न न करना पडता। सर्व साधारण तो परिस्थितियो मे बहकर धर्म-विरुद्ध आचरण कर बैठता है। वह बहकने से, पथ-भ्रष्ट होने से बचे इसीलिए तो ऋषियो ने धर्म का विधान किया है। किया है सर्व साधारण के लिए—ऋषियों के लिए धर्म-विधान निर्माण करने की आवश्यकता नही थी। कारण कि ऋषि तो स्वय ही धम के साक्षात्कर्ता होते हैं। "साक्षात्कृतधर्मा ऋषि" ऋषि कहते ही साक्षात्कृतधर्मा को हैं। अपने उसी साक्षात् किये हुए धर्म का व्यक्ति, परिवार और समाज, सबके लिए उपदेश किया है ऋषि ने। वही उपदेश आज भी संसार मे मानव-धर्मशास्त्र तथा मनुस्मृति के नाम से प्रसिद्ध है। इन वर्तमान धर्म के नाम पर प्रचलित मतवादो के विषय मे तो यही कहा जा सकता है कि—

हिन्दु भी हैं, मुस्लिम भी हैं, इन्सान नही हैं।
मन्दिर भी हैं, मस्जिद भी हैं, ईमान नही है॥

जब ईमान, नैतिकता नही है तो इन्सान कहा से हो ? इन्सान तो ईमान से ही बनता है। मन्दिर, मस्जिद, गिरजे तो हिन्दु, मुसलमान, ईसाई आदि ही बना सकते हैं, इन्सान तो केवल वेद ही बनाता है, वही कहता है "मनुर्भव" अर्थात् मनुष्य बन। हिन्दु बन न मुसलमान बन, ईसाई बन न यहूदी बन—केवल और केवल मात्र मनुष्य, इन्सान बन और इस इन्सान को इन्सान, मनुष्य को मनुष्य बनाये रखने के लिए महर्षि मनु ने मानव धर्म-शास्त्र का निर्माण किया। इस शास्त्र मे जो कुछ भी है, वह वेद का ही है, वेद ही उसका आधार है। मनुस्मृति के प्रथम अध्याय श्लोक १०८ मे वर्णन है —

आचार परमो धर्म. श्रुत्युक्त स्मार्त एव च"

आचार परम धर्म है, श्रुति (वेद) मे कहा है और स्मृति मे भी कहा गया है। आचार क्या है ? यह समझ लेना अत्यावश्यक है। आचार का सरल अर्थ है, जो आचरित किया जाना चाहिए, आचरण मे, व्यवहार मे लाया जाना चाहिए। जो कुछ भी आचरण मे लाया जाय, वह नहीं अपितु जो आचरण मे लाना उपयुक्त (उचित) है, वही आचार है। स्मृति के उक्त उद्धरण का अर्थ हुआ कि जो व्यवहार करने के योग्य हो, वही परम धर्म है और वेद उसी का निर्देश करता है तथा स्मृति भी उसी का विवेचन प्रस्तुत करती है।

प्रश्न यह है कि स्मृति भी उसी का विवेचन क्यो करती है, जो वेद कहता है। स्मृति और विशेषकर मनुस्मृति—वह तो भृगु मुनि प्रोक्त और महर्षि मनु प्रणीत है। ऋषि तो मन्त्र का द्रष्टा होता है, साक्षात्-कृतधर्मा होता है। फिर वह स्वय ही धर्म की विधि-व्यवस्था क्यो नही बना देता, श्रुति का आश्रय क्यो लेता है ? श्रुति (वेद) मे कहे हुए की ही विवेचना क्यो करता है ?

जहा से प्रश्न उत्पन्न होता है, वही से उत्तर भी प्रारम्भ हो जाता है, केवल थोडा-सा ध्यान देने की बात है और वह यह कि ऋषि मन्त्र का द्रष्टा=देखने वाला है, कर्त्ता=रचयिता, निर्माता नही है और मन्त्र मे से जो ज्ञान वह प्राप्त करता है, उसी का साक्षात् करके, उसके धारण करने, आचरण में लाने वाले तत्वो का प्रत्यक्ष तथा व्यावहारिक स्वरूप स्मृति मे प्रस्तुत कर देता है। मन्त्र सहिता (वेद) तो बीज, ज्ञान का बीज प्रस्तुत करती है, उसका अध्यात्म की परीक्षण शाला समाधि मे दर्शन और तत्पश्चात् साक्षात् करके ऋषि उसके तत्वो की विधि—व्यवस्था के रूप मे जो प्रस्तुति करता है वहा स्मृति कहाती है। इसलिए मनु महाराज स्वय कहते हैं—

वेदोऽखिलो धर्ममूल स्मृतिशीले च तद्विदाम्। २/६

वेद सम्पूर्ण (अखिल) धर्म का मूल है और उस (वेद) के जानने वालो की स्मृति तथा उनका शील भी धर्म का मूल है। कारण कि वेदवित् विद्वान् अर्थात् जिन्होंने वेद के विज्ञान का साक्षात् भी कर लिया, वेद के साथ-साथ अर्थात् वेद की ही भाति उनका शील (व्यवहार, आचरण) भी धर्म का मूल है।

कोई प्रश्न कर सकता है कि ऋषि भी मानव ही है, भले ही उसने अपनी कठोर साधना से ऋषित्व प्राप्त कर लिया है, परन्तु है तो जीवात्मा और शरीर का मेल ही। परमात्मा तो सर्वज्ञ है तथा जीवात्मा है अल्पज्ञ—एतदर्थ अल्पज्ञता के कारण ऋषि से भी भूल होना तो सम्भव ही है।

यदि कही किसी ऋषि के आचरण मे अथवा उनके द्वारा प्रणीत स्मृति मे वेद से विरोध या विरोधाभास प्रतीत हो तो उस समय किस प्रकार निर्णय किया जाय ? इसके लिये महर्षि मनु स्वय ही स्पष्ट घोषणा करते हैं—

धर्म जिज्ञासमानाना प्रमाण परम श्रुति (१) (१३)

धर्म को जानने की इच्छा हो तो इसके लिए परम प्रमाण श्रुति अर्थात् वेद हैं। मानव धर्म-शास्त्र का प्रस्तोता स्वय ही वेद को परम प्रमाण मानता है, अपनी कृति को नहीं, तब फिर किसी अन्य से ज्ञात करने जाने की आवश्यकता हो नहीं।

(क्रमश)

ग्राम बालसमन्द जि० हिसार मे शराब के विरोध मे महिलाओं की जागृति रग लाई

ग्राम बालसमन्द मे १६-३-९३ से ३-६-९३ तक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी जी ने नेतृत्व मे ठेके के विरोध मे धरना चला। ठेका बन्द हुआ। गाँव मे धरने का सबसे बडा लाभ यह हुआ कि क्रान्तिकारी की प्रेरणा से नवयुवको एव महिलाओ मे विशेष जागृति आई। दोनो वर्गों के सक्रिय सगठन तयार हुए। दोनो सगठनो का धरने पर विशेष सहयोग रहा। अब बालसमन्द गाव की यह हालत है कि इक्का दुक्का शराबी चोरो की तरह छुपकर शराब पाते है। गाव की गलियो मे व बस अड्डे पर कोई हुल्लडबाजी नही। हा कई गन्दे लोग आदत से लाचार भी है। बुराई मे बुरी तरह ग्रस्त हैं। शराबबन्दी समिति के नवयुवक रात्रि को गाव मे चक्कर लगाते हैं। गाव मे ठेकेदार की जोप न आ जाए।

गत २-७-९३ को एक घटना घटी। किसी बच्चे ने श्रीमती शान्ति-देवी से जाकर कहा बस अड्डे पर कुछ आदमी जुआ खेल रहे हैं। सुरजा नाई दो बोतल शराब लाया है। बहादुर महिला अपना घर का कार्य छोड बस अड्डे पर आई। उन बदमाशो को ललकारा कि यहा बस अड्डे पर हमारी बहिन बेटी आती हैं, यह बुरा कार्य क्यो करते हो। समिति के नवयुवक वहा थे नही। वह बदमाश बाज नही आए। अपना धन्धा जारी रखा। लेकिन महिला निराश नही हुई। तुरन्त पुलिस चौकी मे गई। वहाँ ए एस आई को कहा आप यहा क्या करते हो। बस अड्डे पर गुण्डे बदमाशी करते हैं। आप तुरन्त उन्हे पकडो वरना मैं हिसार पुलिस कप्तान व डी सी के पास जाऊगी। पुलिस तुरन्त हरकत मे आई। बस अड्डे पर जाकर जुआरियो व सुरजभान नाई को गिरफ्तार कर लिया। महिला के इस साहसिक कार्य की सारे गाव मे भूरि-भूरि प्रशसा की। अगर महिलाए सगठित होकर प्रत्येक गाव मैं ऐसा कार्य करे तो शराबी या जुआरी गाव मे टिक नही सकते। अब पुलिस के सिपाही बस अड्डे पर गश्त लगाने लगे हैं।

—प्रतापसिंह आर्य सचिव, शराबबन्दी समिति बालसमन्द

शराबबन्दी समिति बालसमन्द का सराहनीय कार्य

ग्राम बालसमन्द (हिसार) मे ठेका बन्द होने के बाद भी शराब विरोधी अभियान जारी है। शराबबन्दी के बहादुर सैनिक गाव मे ठेकेदार की जीप अवैध शराब की बोतले न डाल सके रात्रो को गाव के बाहर रोड पर पहरा देते है। गाव मे प्रतिदिन गलियो मे दौरा लगाते हैं। बस अड्डे पर समय-समय पर दुकानदारो को धमकाते रहते हैं। उन्हे चेतावनी देते हैं किसी ने भी शराब का अवैध धन्धा किया तो गम्भीर परिणाम होगे। १३-७-९३ को पुलिस को लेकर भी गाव मे दौरा लगाया। दिनाक १४-७-९३ को एक असामाजिक तत्त्व एक हरिजन से जो चोरी छुपे शराब बेचने का अवैध धन्धा ठेकेदार से मिलकर करता था। ए एस आई चौकी इन्चार्ज ने उस हरिजन से 18 बोतल शराब पकडी। फिर उसको जूते मारते हुए शराब को बोतल सिर पर रख कर गलियो मे जलूस निकाला और थाने ले जाकर केस दर्ज कर हवालात मे दे दिया। अत अब गाव मे शराबबन्दी सम्मेलन के बाद शराबी घूमते हुए नजर नही आते। शराबी चोरो की तरह समिति के नवयुवको से भयभीत हैं। इसी प्रकार गाव-गाव मे जागरूक सघर्षशील नवयुवको की समिति बन जाए तो गाव मे शराब पीनेवाला और बेचनेवाला टोहेने पर भी नही मिल सकता। बालसमन्द के नवयुवक सराहनीय कार्य कर रहे हैं। नवयुवको ने लेखक की प्रेरणा मे दृढ निश्चय किया है कि अब गाव में न शराब बेचने देगे न पीने देगे।

अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी
सयोजक शराबबन्दी समिति जिला हिसार

यदि आप हरयाणा मे पूर्ण शराबबन्दी लागू करवाना चाहते हैं तो अपने क्षेत्र के निकट के ठेको पर चल रहे धरणो मे सम्मिलित होवें।

गुड़गाव के विभिन्न क्षेत्रों मे वैदिक धार्मिक सत्संग सम्पन्न

गुडगाव आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वाधान मे नगर के विभिन्न इलाको मे २० से ३० जून १९९३ तक आयोजित वैदिक धार्मिक सत्सग का कार्यक्रम ईश्वर की अनुकम्पा एव गुडगाव की समस्त पुरुष व स्त्री आयसमाजो के सहयोग से सफलता पूर्वक सम्पन्न हो गया। इस बार वैदिक सत्सग का आयोजन उन क्षेत्रो मे किया गया जहा आर्यसमाज का प्रचार पहले नही हो पाया। जिन क्षेत्रो मे प्रचार किया गया उनमे हाउसिग बोर्ड व एक्सटेन्शन ७ सं०, राजीव नगर (बस स्टैंड माता रोड, पटेल नगर), मीयावाली कालोनी तथा सुभाष नगर आदि कार्यक्रम का उद्देश्य वेद प्रचार लोगो को आर्यसमाज की विचारधारा से अवगत कराना बुराइयों के प्रति सावधान करना, नशा आदि बुराइयो को छोडने तथा श्रेष्ठ मार्ग पर चलने की प्रेरणा देना, परिवार एव गृहस्थ जीवन को सुखी बनाना आदि विषयो पर विद्वानो के व्याख्यान एव भजनोपदेश कराया जाएगा। कुछ इलाकों मे प्रात समय यज्ञ भी हुआ प्रचार हेतु वैदिक साहित्य ट्रैक्ट वेदो में क्या है, पाप पुण्य मीमास पुस्तकें मुफ्त बाटी गई और सत्य धर्म प्रकाश कम कीमत पर दी गई। ग्यारह दिन के कार्यक्रम का समापन रामनगर पार्क के निकट माननीय श्री राजेन्द्रप्रसाद जो प्रधान आर्यसमाज रामनगर की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। अपने विचार व्यक्त करते हुए इस प्रचार कार्य के लिए आर्य केन्द्रीय सभा को धन्यवाद दिया तथा भविष्य के लिए शुभकामना व्यक्त की तथा २५१/रु० दान भी दिया।

—ओमप्रकाश चुटानी (महामन्त्री)

वीरेंद्र की बहादुरी ने गांव को राख होने से बचाया

भिवानी, १३ जुलाई। देर से मिली एक खबर के मुताबिक दादरी उपमडल के गाव बरसाना के युवक वीरेंद्र ने अपनी जान पर खेलकर पूरे गांव को आग की भेट चढने से बचा लिया।

बताया जाता है कि पिछले दिनो एक रात को जोरो से आधी आने के कारण बरसाना गाव मैं एक मकान मे किसी कारणवश आग लग गई। यह आग धीरे-धीरे अन्य मकानो की तरफ भी फैलने लगी। देखते-देखते वहा सारा गाव इकट्ठा हो गया, लेकिन काफी मेहनत-मशक्त के के बावजूद भी वे इस पर काबू नही पा सके।

इसी बीच गाव के कुछ लोगो ने इस भयकर आग की सूचना एमडीएम, डीएसपी दादरी और फायर ब्रिगेड भिवानी को नजदीकी गाव बिहारी कला से फोन पर दे दी। लेकिन जबतक फायरब्रिगेड वहा पहुचती, गाव के ही एक युवक वीरेन्द्र ने अपने फोर्ड ट्रैक्टर की नई ट्राली के छेदो को गारा आदि से लेपकर उसमे अपने ट्यूबवेल से पानी भरा और सीधा आग के साथ साथ ट्रैक्टर को जा लगाया। उस ट्राली मे काफी हद तक आग पर काबू पा लिया गया। बताया जाता है कि वीरेन्द्र अपने ट्रैक्टर की टकी को उसी दिन डीजल से भरकर लाया था। चूकि उसने ट्रैक्टर को पूरी तरह आग के ऊपर चढा दिया था, इसलिए उनके टायर और डीजल दोनो से ही आग पकडने का खतरा था, लेकिन खुशकिस्मती से ऐसा कुछ नही हुआ। इसके साथ ही फायर ब्रिगेड भी वहा पहुच गई और आग पर पूरी तरह काबू पा लिया गया।

—जनसत्ता

शराबी जमाना

इधर भी शराब हाय उधर भी शराब है,
अरे लानत जमाने तेरा खाना खराब है।

१ लाखो की जान भी ये मय ले चुकी है,
रोके से दुनिया भला कब रुकी है।
सब पीते हैं रक राजा चाहे कोई नवाब है॥

२ राज, ताज, नशे मे बहुत बह गए हैं,
कल बह जायगे बाकी जो रहे हैं।
ये क्यो हो रहा है ना किसी पे जवाब है॥

३ बहुत पी के डगर आदमी की,
यह सच है कि दुनिया मे सभी पी रहे है।
चेहरे की बूरा हमने पढ ली किताब है॥

हमारा आर्यसमाज

जग के हर प्राणी को चमका रहा है आर्यसमाज।
सब के दुःख दूर भगा रहा है आर्यसमाज॥
नित्य गायत्री मन्त्र और हवन करा रहा है आर्यसमाज।
हवन द्वारा वायु शुद्धि और सब बीमारियो को भगा रहा है आर्यसमाज।
दुष्टो और जुल्मो से टकराता आ रहा है आयसमाज।
हर तरह की कुर्बानी मे सबसे आगे रहा है आर्यसमाज॥
जात-पात भेदभाव को मिटा रहा है आर्यसमाज।
शुद्धि करके हर जाति को आर्य बना रहा है आर्यसमाज॥
विधवाओ की शादी रचा रहा है आर्यसमाज।
बाल-विवाह की प्रथा को देश से भगा रहा है आर्यसमाज॥
पोप पाखण्डियो की पोपलीला दूर भगा रहा है आर्यसमाज।
मूर्ति पूजा के अन्धविश्वास को मिटा रहा है आर्यसमाज॥
मातृभूमि की हर अग्निपरीक्षा मे खरा उतर रहा है आर्यसमाज।
देश की रक्षा के लिए हर समय शीश कटा रहा है आर्यसमाज॥
आज तक राजनीति से दूर रहा है आर्यसमाज।
खोखली राजनीति को दूर भगाने राजनीति मे आरहा है आर्यसमाज॥
वेश्यावृत्ति कलक मिटाने उठा है राजनगर पालम दिल्ली आर्यसमाज।
पूर्ण अधिकार सरकार से दिलाने की योजना बना रहा है आर्यसमाज॥
गुरुकुलो मे विद्यार्थियो को ब्रह्मचर्यपालन-उच्चशिक्षा पढा रहा है आर्य०
गुरुजनो और बडो को नमस्ते करना सिखा रहा है आर्यसमाज॥
डी ए वी स्कूलो, कालेजो मे आधुनिक शिक्षा पढा रहा है आर्यसमाज।
ऊचे-ऊचे पदो पर स्थान बना रहा है आर्यसमाज॥
अस्त्र-शस्त्र और आसन विद्या सिखा रहा है आर्यसमाज।
हर प्राणी को आत्म-रक्षा करना सिखा रहा है आर्यसमाज॥
सब जग पहचान रहा है आर्यसमाज।
कहे डा० ओमप्रकाश आर्य यह है हमारा आर्यसमाज॥
जन-जन मे आशा का बीज बो रहा है आर्यसमाज।
"जीवन" को निखार रहा है आर्यसमाज॥
घर-घर ज्ञान की ज्योति जग मे जला रहा है आर्यसमाज।
ब्रह्मज्ञान की निर्मल धारा बहा रहा है आर्यसमाज॥
शराब तथा हर प्रकार के नशे को भगा रहा है आर्यसमाज।
धूम्रपान को मिटा रहा है आर्यसमाज।
पशुवध तथा गोहत्याए बन्द करा रहा है आर्यसमाज।
अण्डे-मास का सेवन छुडा सबको शाकाहारी बना रहा है आर्यसमाज॥
महर्षि दयानन्द के नियमो का पालन कर रहा है आर्यसमाज।
नित्य नए कार्यों के लिए कदम उठा रहा है आर्यसमाज॥
भारत का ही मूल प्राचीन आदिवासी आर्य है आयसमाज।
पराधीनता के कारण अपने मूल अधिकारो से पिछड गया था आर्यसमाज
महर्षि ने आर्यों के मूल अधिकार दिलाकर बनाया आर्यसमाज।
यह वही है हमारा आर्यसमाज॥

डा० ओमप्रकाश आर्य विद्यावाचस्पति राजनगर पालम दिल्ली-४५

फुलवाणी के १८५ ईसाई वैदिक धर्म मे

कजामेडी (फुलवाणी) जिले का पहाडियो से घिरा एक छोटा सा ग्राम है। सभा प्रचारक श्री नारायण प्रधान की प्रेरणा से वहा भव्य महायज्ञ एवं पुर्नमिलन समारोह २-३ जुलाई को रखा गया। कार्यक्रमानुसार जब निश्चित समय पर अपने सहयोगियों के साथ श्री स्वामी धर्मानन्द जी पहुचे तो स्वागत के लिए स्थानीय जनता एव उस क्षेत्र के आयबन्धु भारी सख्या मे मे उपस्थित थे। ग्राम मे भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया।

२-३ जुलाई को महायज्ञ एव शुद्धि कार्यक्रम मे लोगो ने बहुत श्रद्धा पूर्वक भारी सख्या मे भाग लिया। अनेको ने अपनी शकाओ का समाधान किया तथा यज्ञोपवीत ग्रहण किया। इसी अवसर पर ५५ परिवारो के १८५ ईसाइयो ने श्रद्धापूर्वक यज्ञ मे आहुति देकर वैदिक धर्म ग्रहण किया। कार्यक्रम का सचालन सभामन्त्री श्री विशिकेशन शास्त्री ने किया। इस अवसर पर श्री स्वामी धर्मानन्द जी ने दीक्षित लोगो को आशीर्वाद दिया। श्री वीरेन्द्रकुमार एमए श्री नारायण, श्री दाशरथि प्रधान आदि का प्रभावशाली उपदेश हुआ।

—स्वामी व्रतानन्द सरस्वती

पाल्हावास जि० रेवाड़ी मे शराब के ठेके पर धरना जारी

भगत मगतूराम आर्य की प्रेरणा से १-४-९३ से पाल्हावास मे शराब विरोधी संघर्ष समिति की ओर से धरना जारी है। जब तक पूर्ण ठेका बन्द नही होता धरना जारी रहेगा। अब तक धरने पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की भजन मण्डली पं० ईश्वरसिंह तूफान दो बार चौ० विजयकुमार जी पूर्व उपायुक्त एवं संयोजक शराबबन्दी समिति हरयाणा, स्वामी ओमानन्द जी, कप्तान मातूराम आर्य सभा उपदेशक, श्रीमती शशी यादव महासचिव अखिल भारतीय महिला परिषद् रिवाडी, श्री वेदप्रकाश विद्रोही संयोजक किसान मोर्चा स्थानीय डी०वाई० ओ० के का० राजेन्द्रसिंह व विजयसिंह का भी विशेष योगदान रहा। उपरोक्त विद्वान् सहयोग हेतु धरने पर पहुच चुके है। धरने का सचालन (नेतृत्व) महाशय ताराचन्द जी कर रहे हैं। अन्य विशेष सहयोगी उत्साही नवयुवक श्री अनिलकुमार पंच, महावीरसिंह, सरदारसिंह, हवलदार गोवधन, रामकरण, रोशन हरिजन, धर्मपाल, जसवन्त, का० धर्मपाल आदि। महिला वर्ग मे श्रीमती भतारो देवी की अध्यक्षता मे श्रीमती आनन्दी, शान्ति देवी, फूला देवी, चान्दी देवी, परवा देवी, पारवती आदि महिलाओ का विशेष सहयोग रहा है। प्रतिदिन धरने पर काफी महिला गीत गाती हुई आती हैं।

दूसरी ओर पचायत सरपच श्री राजेन्द्रसिंह का सहयोग नाम-मात्र भी नही मिल रहा है। सरपच ठेका रखने के हक मे यत्नशील है। सरपच झगडा करवाने के लिए अपने आदमियो को ठेके पर से शराब खरीदने के लिए भेजता रहा। ४-७-९३ से ठेके के खोखे से सारी बोतल उठाकर ठेकेदार ने ताला लगा दिया है, दूसरी ओर वह बोतल स्कूल के पास सरपच के खेत मे ठेकेदार ने रख ली हैं। धरना धारियो ने वहा भी धरना दे दिया है। सरपच को इससे भी सबर नही आया। अब ठेकेदार की जीप को मोटो लगाकर गाव की गलियो मे घूमाता है, शराब बेचने के लिए। सारा गाँव सरपच के इस घटिया काय की निन्दा कर रहा है। ५-७-९३ को समिति वाले रिवाडी वन मन्त्री श्री इन्द्रजीत से मिले, कोई सन्तोषजनक उत्तर नही मिला। फिर S D M से मिले, ठेकेदार की हरकतो से अवगत कराया। साफ शब्दो मे कहा कि ठेकेदार की अवैध शराब की बिक्री को रोको, गाव मे शान्ति भग होती है। वरना हम जीप को जला देगे। साथ मे समिति वालो ने सक्रिय होकर नजदीक के गाव हालियाकी (गुडगाव) मे उप-ठेका था वह भी वहा के लोगो को सगठित कर बन्द करवाया। दूसरा चान्दनवासगाव का उप ठेका भी बन्द करवा दिया है। इस कार्य मे ग्राम रोडाहो के सरपच चौ० लखमीचन्द का विशेष योगदान रहा। ५-७-९३ को सायकाल इन पक्तियो का लेखक भी धरने पर पहुचा। सयोग से वहा (मीटिग) हो रही थी। लेखक ने अपने अनुभव तथा शराब से होनेवाले नुकसान से लोगो को अवगत कराया। साथ मे ऐतिहासिक गाव बालसमन्द के धरने की अनेक घटनाओ की जानकारी दी। ८० दिन के कडे सघर्ष के बाद ठेकेदार व सरकार ने लोकशक्ति के आगे घुटने टेकने पडे, ठेका बन्द हुआ। वहा धरने पर बैठे बुजुर्गो का धन्यवाद किया जो लगभग १०० दिन से लू व गर्मी मे अपना सारा कार्य छोडकर गाव की भलाई के लिए गाँव से पाप का अड्डा खत्म कराने के लिए जूझ रहे हैं। ठेकेदार बुरी तरह डरा हुआ है। सभा के अधिकारी तथा भजन मण्डली शीघ्र ही धरने पर पहुँच रही है।

—अतरसिंह आर्य क्रातिकारी
सभा उपदेशक

रुकिये—शराब के सेवन से परिवार की बर्बादी होती है। अत: अपने निकट के शराब ठेको पर अपने साथियों सहित धरणे पर बैठकर शराब-बन्दी लागू करावें।

यज्ञ का आयोजन

हिसार, १३ जुलाई (हस)। चौधरी चरणसिंह हरयाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति निवास पर मनुर्भव संस्थान के तहत सम्पूर्ण मानव कल्याण के लिए डा० सर्वानंद आर्य की अध्यक्षता मे एक यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमे विश्वविद्यालय के सभी वरिष्ठ अधिकारियो, अधिष्ठाताओ, स्थानीय सभी आर्य संस्थाओ के प्रतिनिधियो व विद्वानो ने भाग लिया।

यज्ञ के दौरान विद्वानो ने विश्व मे सुख, शान्ति, मानव कल्याण, उन्नति, सद्भाव व विकास की कामना की तथा समाज मे फली कुरीतियो एव अनुशासनहीनता को दूर करने का सकल्प लिया। विश्वविद्यालय के कुलपति डा आय ने भी अन्य विद्वानो के साथ मन्त्रोच्चारण के बीच पूर्ण आहुति डाली। हवन यज्ञ मे उपरोक्त प्रतिनिधियो के अतिरिक्त स्थानीय गणमान्य नागरिको ने भाग लिया तथा वेदो के अनुसार मानव जीवन के विकास की कामना की।

—हिन्दुस्तान टाइम्स

नामकरण संस्कार

एक दिन पडोस मे से पोराणिक भाई आया और कहा, हमने जिस पण्डित जी को कहा था वह तो आया नही, हमने उसके कहने से अनुसार सब सामान तैयार कर रखा है, यदि आप हवन करवा सको तो चलो। मैंने पूछा, किस खुशी मे हवन करा रहे हो ? उसने बताया कि लडकी हुई थी, वह सवा महीने की होगई है, उसका नाम भी रखना है। मैंने कहा ठीक है, हवन अवश्य कराना चाहिए। मैं चलता हू परन्तु मैं वैदिक रीति से हवन कराता हू, ठाकुर जी वगेरा नही बनाता हू। उसने कहा, जैसे भी करो, देर मत करो। मैंने कहा मैं कपडे पहनकर आपके पीछे-पीछे आरहा हू, इतने पास-पडोस मे से सबको बुलाओ। उसने बताया, एक बार हमने सबको कह दिया है जिसने आना होगा, आ जाएगा। आप काम शुरू तो करो। मैं तैयार होकर सस्कार विधि की पुस्तक लेकर चल पडा।

घर मे जहा हवन करना था वहा सब सामान बेतरतीब पडा हुआ था। वहा से चारपाई, जूते आदि हटवाये, फर्श पर झाडू लगवाकर पोचे से साफ कराया, बैठने के लिए दरी चादर बिछवाये। एक परात मे जमनारेत भरकर मगवाया, उसमे जल छिडककर वेदी बनाई। समिधाये, घृत, सामग्री, जलपात्र आदि रखवाये। साथ ही धूप, अगरबत्ती के पैकेट भी रख दिये थे। मैंने धूप अगरबत्ती को जलाकर कमरे मे यथास्थान रखवा दिये। सब तैयारी के बाद यजमान को बुलाया। जल्दी ही पति-पत्नी दोनो बच्चे को लेकर अपने स्थान पर बैठ गये। दोनो को आचमन और अग स्पर्श कराकर पवित्र किया।

मैंने प्रार्थना मन्त्र बोलने शुरू किये, एक वृद्ध महिला बोली, पडित जी आपने कलाया बाधकर ठाकुर जी तो बनाया ही नही। मैंने कहा, माता जी, मिट्टी का ठाकुर जी बनाकर पूजने से सच्चे ठाकुर जी का अपमान होता है। आपके बच्चे आपके स्थान पर यदि किसी पत्थर को मा मान ल और आपको पूछे भी नही तो आपको अच्छा लगेगा या बुरा, बस यही बात ठाकुर जी की है, जो सबका स्वामी है उसे समझने की कोशिश करो।

यजमान के हाथ मे कलाया बाधने से पूर्व मैंने पूछा, आप धूम्रपान करते हो, उत्तर मिला हा, क्या घूट भी लगाते हो, हसकर कहा, कभी-कभी। मैंने समझाया दोनो ही स्वास्थ्य के शत्रु हैं, इन्हे छोड दो। आज मैं यह आपके हाथ मे प्रतिज्ञासूत्र बाध रहा हू, बोलो, आज से मैं धूम्रपान नही करूगा। यजमान ने कहा, शराब तो छोड दूगा पर बीडी मुश्किल है, हा धीरे-धीरे बन्द करने की कोशिश करूंगा।

हवन की पूर्ण आहुतियो से पूर्व जब नाम रखने की बात आई तो मैंने पूछा आपने कन्या का कोई नाम सोच रखा है या नही। उन्होने कहा, पडित जी ने राशि देखकर बताया था कि (क) अक्षर पर नाम निकला है। मैंने समझाया, देखो राशि के चक्कर मे मत पडो। राम रावण, कृष्ण कस की एक ही राशि है परन्तु फल दोनो के अलग-अलग है। फल कर्मों के अनुसार मिलता है। बच्चे का नाम सार्थक, सरस, सरल और सक्षिप्त होना चाहिए। मैंने क अक्षर पर अनेक नाम बताये जिनमें से किरण नाम रखा गया।

आशीर्वाद और शान्ति पाठ के बाद प्रसाद दिया गया। मैं आने के लिए आज्ञा मागनेवाला था कि यजमान ने ग्यारह रुपये दिये और भोजन के लिए कहा। मैंने कहा दक्षिणा मे मुझे चाहे दो रुपये दे दो परन्तु मेरी बातो को ध्यान मे रखकर अमल करना।

प्रिय सज्जनो ! मैं पुरोहित के योग्य नही हू परन्तु आवश्यकता के समय रिक्त स्थान की पूर्ति कर देता हूं। मैं समझता हू एक पुरोहित जहाँ भी जाये वहा पर हित अर्थात् कल्याण की चर्चा करे और दक्षिणा मे जो भी मिले उसे सहर्ष स्वीकार कर ले, अधिक की लालसा न करे। तब ही वह पुरोहित के पद पर शोभा देता है अन्यथा स्वार्थ का पुतला है।

देवराज आर्य मित्र आर्यसमाज, बल्लभगढ, जिला फरीदाबाद

आदर्श विवाह संस्कार

शराबबन्दी समिति हरयाणा के संयोजक श्री विजयकुमार जी पूर्व उपायुक्त की सुपुत्री वन्दना का शुभविवाह सस्कार बहीन जिला फरीदाबाद निवासी श्री भीमसिंह जी के सुपुत्र श्री शिवसिंह के साथ दिनाक २४ जून ९३ को वैदिक रीति के अनुसार श्री वेदप्रकाश साधक ने करवाया। बारातियो द्वारा किसी प्रकार का नाच-गाना आदि नहीं किया गया। चौ० विजयकुमार जी ने कन्यादान वा किसी से भी एक रुपये से अधिक स्वीकार नहीं किया। विवाह की सारी कार्यवाही सादगी से सम्पन्न हुई। इस अवसर पर जिला उपायुक्त श्री गुलाबसिंह सोरोत, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री डा० धर्मपाल कुलपति गुरुकुल कागडा विश्वविद्यालय हरद्वार के अतिरिक्त अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित थे और नवदम्पती को अपना आशीर्वाद दिया। श्री विजयकुमार जी ने ५०१) रु० सभा को तथा ५०१) रु० गुरुकुल झज्जर को दान दिया। इससे पूर्व भी श्री विजयकुमार जी ने अपनी माता जी की स्मृति हेतु प्रो शेरसिंह जी, श्री ओमप्रकाश बेरी तथा श्री राजेन्द्रकुमार (परिवार की ओर से) ११००) रु०, हरयाणा सभा तथा ११००) गुरुकुल झज्जर को दान दिया था। —केदारसिंह आर्य

प्रान्तीय आर्य युवक परिषद् द्वारा १० दिवसीय शिविर

आर्य विद्या मन्दिर अमीपुर (फरीदाबाद) के प्रागण मे श्री सूर्यदेव आर्य की अध्यक्षता में और ब्रह्मचारी श्री धनसिंह जी आर्य (पलवल) के सहयोग से नवयुवक व नवयुवतियो का शिविर २२ जून से २९ जून तक लगाया गया। जिसमे विद्यार्थियो को योग आसन, प्राणायाम, दण्ड बैठक जूडो कराटे, नैतिक शिक्षा, चरित्र, बौद्धिक शिक्षा, शराब से हानि आदि शिक्षाये दी गयी। इस विद्यालय के प्रागण में यज्ञ भी करवाया गया जिसमे २५ छात्र और १० छात्राओं ने यज्ञोपवीत ग्रहण किया। मुख्याध्यापक श्रीकृष्ण दहिया ने यह शपथ ली कि मैं इसी प्रकार आर्यसमाज का प्रचार व कैम्प आदि का आयोजन करता रहूगा। इस अवसर पर आठवीं कक्षा की छात्रा मनोजवती व पूनम कुमारी ने शिक्षाप्रद गीत सुनाये। इस शिविर की काफी सराहना की गयी।

श्रीकृष्ण दहिया मुख्याध्यापक आर्य विद्या मन्दिर,
अमीपुरर (तिगाव) फरीदाबाद (हरयाणा)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, गोहाना रोड, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०/७३ रजि० न० P/RTK-४९

ओ३म्

सर्वहितकारी

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २० अंक ३२ ७ अगस्त, १९९३ वार्षिक शुल्क ४०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति ८० पैसे

महान् तेजस्वी श्रीकृष्ण

आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री, महर्षि दयानन्द पीठ गुरुकुल कुम्भाखेड़ा

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि। वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि।
बलमसि बलं मयि धेहि। ओजोऽस्योजो मयि धेहि।
मन्युरसि मन्यु मयि धेहि। सहोऽसि सहो मयि धेहि।
(य० १९/९)

विश्वशिरोमणि आर्यावर्त्त की पुण्यभूमि मे उत्पन्न हुए गौतम, कपिल, कणाद, पतञ्जलि, व्यासादि ऋषि-महर्षियों एवं मर्यादापुरुषोत्तम श्री रामादि महानुभावों की परम्परा मे जन्मे श्रीकृष्ण वेद मन्त्र मे प्रार्थित समस्त मानवोय गुणो से विभूषित थे। इसीलिए युगपुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश मे लिखा है कि—"श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत मे अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्तपुरुषों के सदृश है जिनमे कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नही लिखा।" (स० प्र० ११वां समु०)

और भी कहा है कि—"श्रीकृष्ण जी एक भद्र पुरुष थे। उनका महाभारत मे उत्तम वर्णन किया हुआ है।" (म० द० उपदेश मंजरी)

वस्तुतः श्रीकृष्ण जहां अतिशय सहनशील थे वहा उन्होंने कंस, शिशुपाल, शाल्वादि जैसे कुलघाती दुष्टो का सहार करके अपनी वेदोक्त क्रोधकारिता का भी परिचय दिया था। यही कारण है कि अपनी विद्वत्ता और धर्माचरण के कारण जहा वे देवो-विद्वान् ब्राह्मणो के शिरोमणि बने, वहीं वे अपने तेजोबल, न्यायप्रियता और शास्त्रोक्त नीतिमत्ता से अपने समकालीन क्षत्रिय राजाओ मे अपने ओजबल और पराक्रम का परिचय देते रहे। यथार्थ मे श्रीकृष्ण एक धर्मात्मा युग पुरुष थे।

पाठकवृन्द! आइये मन्त्र-ऋचा में वर्णित तेजस्वी होने के गुणो का क्रमश महाभारत के श्रीकृष्ण चरित्र से परिचय प्राप्त कर।

"मन्त्रश्रुत्यं चरामसि" के अनुसार वेदानुकूल आचरण से ही महापुरुष अपने उज्ज्वल चरित्र का निर्माण किया करते हैं। योगेश्वर श्रीकृष्ण जी का जीवन चरित्र भी पूर्ण वैदिक था। वे महान् तेजस्वी थे। मानव-निर्माण पद्धति की प्रकाशक संस्कारविधि के नामकरण एवं उपनयन इन दोनो संस्कारो मे बालक को तेजस्वी होने का आशीर्वाद दिया गया है। तदनुसार बालक का तेजस्वी होना आवश्यक है।

अत. "तेजोऽसि तेजो मयि धेहि" मे प्रथम तेज प्राप्ति की प्रार्थना की है। तेज नाम प्रकाश का है, जो कि परमात्मा से ही प्राप्त किया जा सकता है। तेज प्राप्ति का क्रमश. वर्णन निम्न प्रकार है—

प्रथम व्यक्ति सहनशील हो पश्चात् दुष्टों पर क्रोधकारी, इससे ओज, बल और पराक्रम से युक्त हुआ तेज को प्राप्त करता है।

धर्मराज युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ की तैयारियां पूर्ण हो चुकी हैं। युधिष्ठिर द्वारा निमन्त्रित देश-देशान्तरो से ऋषि-महर्षि, राजागण तथा प्रजाजन आकर शोभायमान हो रहे हैं। यज्ञ की सम्पन्नता के लिए सभी को पृथक्-पृथक् कर्त्तव्य कार्य सौंपे जा चुके हैं। श्रीकृष्ण ने ब्राह्मणो के पैर धोने का कार्य स्वयं किया। इससे ज्ञानी और तपस्वी विप्रवरो के प्रति श्रीकृष्ण की अगाध श्रद्धा भली-भांति प्रकट होती है। आर्यावर्त के श्रेष्ठतम पुरुष की महान् नम्रता और विनयशीलता का भी सहज अनुभव हो जाता है।

"सेवाधर्म परमगहनो योगिनामप्यगम्य" इस महर्षि भर्तृहरि की सत्योक्ति के अनुरूप योगेश्वर श्रीकृष्ण पर सेवा-रूप परमाभूषण से सर्वथा अलकृत थे। श्रीकृष्ण की प्रबन्धपटुता मे धर्मराज युधिष्ठिर का राजसूय यज्ञ महती सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। दीक्षा पूर्ण होने पर नृप युधिष्ठिर ने पितामह श्री भीष्म जी से उपस्थित राजाओं मे सर्वश्रेष्ठ अर्घदान के लिए योग्य अधिकारी के सम्बन्ध मे पूछा तो भीष्म पितामह ने श्रीकृष्ण को ही अर्घदान का पात्र बताते हुए कहा कि—

ज्ञानवृद्धा मया राजन बहव पर्युपासिता।
तेषा कथयता शौर्येणाहं गुणवतो गुणान्॥
(सभा पर्व ३८/१२)

हे राजन्! मैंने बहुत से ज्ञानवृद्ध तपस्वी लोगों का सत्सग किया है और उन्हीं के द्वारा कथित गुणों के प्रताप से ही मैंने यह गुणवत्ता प्राप्त की है।

अस्या हि समितौ राज्ञामेकमप्यजितं युधि।
न पश्यामि महीपाल सात्वतीपुत्रतेजसा॥

अत हे राजन्! मैं यहा उपस्थित इन राजाओ की सभा मे किसी ऐसे राजा को नही देखता, जिसे श्रीकृष्ण ने अपने अतुल तेज से न जीता हो। अन्यच्च—

वेद-वेदाङ्गविज्ञान बल चाप्यधिक तथा।
नृणा लोके हि कोऽन्यो विशेष केशवादृते॥
(सभा पर्व ३८/१९)

वेद-वेदागादि शास्त्रो के मर्मज्ञ तथा क्षात्र बल से भी परिपूर्ण श्री कृष्ण के अतिरिक्त इस मनुष्य समाज मे दूसरा कौन ऐसा मनुष्य है? अर्थात् कोई नही।

दान दाक्ष्य श्रुत शौर्य ह्री कीर्तिर्बुद्धिरुत्तमा।
सन्नति श्रीर्धृतिस्तुष्टि पुष्टिश्च नियताऽच्युत॥
(सभा पर्व ३८/२०)

इसी प्रकार इनका दान, इनका कौशल, इनकी शिक्षा और ज्ञान इनकी शक्ति, इनका यश, इनकी शालीनता, नम्रता, धैर्य और सन्तोषादि गुण भी श्रीकृष्ण मे अतुलनीय हैं।

ऋत्विग् गुरुर्विवाह्यश्च स्नातको नृपति प्रिय।
सर्वमेतद् हृषीकेशस्तस्मादभ्यर्चितोऽच्युत॥
(सभा पर्व ३८/२२)

ये ऋत्विज् हैं, गुरु हैं जामाता होने के योग्य हैं, स्नातक हैं और लोकप्रिय राजा हैं। ये सभी गुण मानो इस एक जितेन्द्रिय महापुरुष मे मूर्तरूप हो गए हैं। अत इन्हीं (श्रीकृष्ण) को ही प्रथम अर्घ देना चाहिए, इस प्रकार पितामह की सम्मति से सहदेव ने युधिष्ठिर के आदेशानुसार श्रीकृष्ण को ही सर्वप्रथम अर्घदान किया।

श्रीकृष्ण का यह सम्मान उनके प्राक् विरोधी चेदिराज शिशुपाल से असह्य होगया। उसने श्री कृष्ण को पूजा का अनधिकारी बताते हुए उनके प्रशसक भीष्म जी एव पाण्डवो के लिए भी गर्हित शब्दो का प्रयोग किया। इस प्रकार शिशुपाल बोलते-बोलते आपे से बाहर हो गया और तर्क एव विचार शक्ति का सर्वथा उल्लघन कर उसने श्रीकृष्ण के लिए नितात अमानवीय शब्दो का भी प्रयोग किया। इतने पर भी क्षमा के मूर्तिमान् अवतार, परमस्थितप्रज्ञ, धैर्यधनी, योगिवर्य श्रीकृष्ण-शिशुपाल की इन कटूक्तियो को सुनकर भी कुछ नही बोले। यदि वे चाहते तो तभी उसका प्राणान्त कर सकते थे। क्योकि उनमे इतना बल और शौर्य था पुनरपि वे अत्यन्त धैर्यपूर्वक उसकी बातें सुनते रहे। क्योकि उन्होने तो 'सहोऽसि सहो मयि धेहि' का साक्षात्कार किया था। आप्त पुरुष का लक्षण यजुर्वेद मे (३४/१८) मे महर्षि दयानन्द जी के वचनो से जाना जा सकता है। यह वेदोक्त आप्त पुरुष लक्षण उनमे सर्वथाप्तप्रियता के कारण सर्वथा घटता था।

आगे जब पुन शिशुपाल ने श्रीकृष्ण के शौर्यादि गुणों का उपहास करते हुए युद्ध के लिए ललकारा तो उनका परम पावन मन्यु जाग उठा और उन्होने 'मन्युरसि मन्यम्मयि धेहि' का पवित्र पाठ करते हुए उपस्थित नरेन्द्रमण्डल के समक्ष ही पापी शिशुपाल को यमलोक पहुचा दिया। यह थी उनकी दुष्टो के प्रति क्रोधकारिता अर्थात् धर्मानुसार यथायोग्य व्यवहार था। इसी पवित्र मन्यु का परिचय जहा उन्होने स्वय के व्यवहार से कसादि को मारकर दिया, वही उन्होने महाभारत के मध्य धर्म युद्ध का सचालन करते हुए अधर्मी जरासन्ध, जयद्रथ, कर्ण, गोत्रहत्यारे दुर्योधनादि का सहार करके धर्मराज्य की स्थापना कर पवित्र नीतिमत्ता का भी परिचय दिया है।

मननशील मानव का ही यह सामर्थ्य है कि वह सहनशीलता के गुण को अपनाकर दुर्जन-सज्जन का विचार करता है। महर्षि दयानन्द ने ठीक ही कहा है कि—

ससारदु खदलनेन सुभूषिता ये। धन्या नरा विहितकर्मपरोपकारा॥

अर्थात् दीन-दुखियो के दुखो का जो हरण करते तथा परोपकार करने मे निरन्तर प्रयत्नशील हैं वे नर धन्य हैं ऐसे ही लोगो का समाज मे ओज पराक्रम बढा करता है। ऐसी ही महान् विभूतियो के साथ सज्जनो का एक सगठन खडा हो जाता है। इसी को लोकसग्रह कहते हैं, वह जनशक्ति जिसके साथ हो वही उसका वास्तविक ओज अर्थात् पराक्रम रूप फल है। यह जनशक्ति श्रीकृष्ण के साथ सर्वथा साथ थी।

यहा तक कि दुर्योधन की ओर लड रहे कुछ कर्ण, शकुनि आदि स्वार्थान्ध योद्धाओ को छोड शेष भीष्म पितामह और गुरु द्रोणादि सभी महारथी हृदय से श्रीकृष्ण के पक्ष मे थे। युद्ध मे विजयी होने का उनका आशीर्वाद श्रीकृष्ण द्वारा सरक्षित अर्जुनादि पाण्डवो को ही प्राप्त था। वस्तुत यही लोकसग्रह सच्चे अर्थों मे श्रीकृष्ण के ओज बल का परिचायक है। इसी से श्रीकृष्ण वेदोक्त 'ओजोऽस्योजो मयि धेहि' के साक्षात्मूतरूप थे।

ओजस्विता के साथ-साथ श्रीकृष्ण बलवान् भी इतने थे कि उन्होने अकेले ही पापी कस के पाप रूप कर्मों का फल उसके यहा जाकर उसे मारकर ही दिया। साथ ही तप त्याग का परिचय देते हुए श्रीकृष्ण ने दुष्ट कस के धर्मात्मा पिता तथा अपने नाना उग्रसेन को ही मथुरा का राज्य सौप पुन धर्मराज्य की स्थापना की। इसी से पता चलता है कि श्रीकृष्ण अत्यन्त बलशाली, परम कार्यदक्ष, न्यायप्रिय, परहितरत और धर्मात्मा थे। अत वे एक आदर्श पुरुष थे। इस प्रकार "बलमसि बल मयि धेहि" की इस सत्य प्रार्थना का हम श्रीकृष्ण के जीवन में प्रत्यक्ष दर्शन करते हैं।

जहां श्रीकृष्ण सहनशीलता, मन्यु, ओज बलादि गुणों की प्रतिमूर्ति थे वहीं उनमे वीर्य भी कम नहीं था। उन्होंने ब्रह्मचर्य व्रत को भी बड़ी कठोर साधना के साथ निभाया था। इसमें वे स्वय कहते हैं कि—

ब्रह्मचर्यं महद्घोर तीर्त्वा द्वादशवार्षिकम्।
हिमवत् पार्श्वमभ्येत्य यो मया तपसार्जित ॥
समानव्रतचारिण्यां रुक्मिण्यां योऽन्वजायत।
सनत्कुमारस्तेजस्वी प्रद्युम्नो नाम मे सुत ॥
(महा० सौप्तिक पर्व अ० १२)

श्री कृष्ण कहते हैं कि मैंने हिमालय की रमणीय कन्दराओ मे बैठकर महती तपस्या के साथ १२ वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य के महान् घोर व्रत को पार किया है, तब समान व्रतचारिणी रुक्मिणी में गर्भ धारण कर प्रद्युम्न नाम का तेजस्वी पुत्र मैंने उत्पन्न किया है। उपर्युक्त कथन से यह भी स्पष्ट है कि श्रीकृष्ण की एक मात्र पत्नी रुक्मिणी भी पूर्ण सती साध्वी स्त्री थी अर्थात् वह भी व्रत पालन मे अपने एक मात्र पति श्रीकृष्ण से किसी भी प्रकार कम नही थी। श्रीकृष्ण प्रद्युम्न का परिचय देते हुए उसे ' मे सुत " मेरा पुत्र कहकर स्वय गौरवान्वित होने का सर्वदा स्वाभिमान करते थे। वस्तुत योग्य पिता ही योग्य सन्तान का ऐसा अभिमान कर सकता है। इस एक घटनाक्रम से ही सम्यक् सिद्ध है कि ऋचा मे वर्णित "वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि" का श्रीकृष्ण ने अपने जीवन काल मे पूर्णतया व्यावहारिक पाठ किया।

इस प्रकार महाभारत मे आलोक से श्रीकृष्ण जीवन चरित्र का निष्पक्ष अवलोकन से पता चला है कि श्रीकृष्ण ने प्रभु को वैदिक उपासना द्वारा सहनशीलता ईश्वरीय गुणों के धारण से पूर्ण ऐश्वर्य सम्पन्न ही मानवता की सेवा-साधना का सच्चा आदर्श प्रस्तुत किया था। इसी से वे महान् तेजस्वी कहलाए और मानवों के कोटा-नुकोटि कष्टों को हरते हुए स्वय को धन्य एवं अमर कर गए। अत पाठकवृन्द ! आइये—

"महाजनो येन गत स पन्था " के अनुसार हम भी अपने पूर्ववर्ती अनुकरणीय महान् तेजस्वी आदर्श पुरुष श्रीकृष्ण के लोकोज्ज्वल चरित्र का अनुकरण करते हुए कृतकृत्यता को प्राप्त कर तेजस्वी बनें।

वह शहर-शहर गीता व वेद पढ़ने का संदेश देता है

शामली—शामली के मित्तल का एक ही शुगल है शहर-शहर घूमना और खड़िया मिट्टी से उसकी दीवारो पर 'गीता पढो' की इबारत लिखते जाना।

किसी देवी प्रेरणा से अनुप्राणित होकर मित्तल पूरे देश की खाक छानते रहे हैं। उनकी जेब मे चाक के घिसे-पिटे टुकडे होते हैं और जहा कही उन्हे थोडो भी जगह नजर आई, वह पलभर के लिए ठिठक कर अपना चार शब्दो का सदेश लिख कर अपना नाम और शहर का नाम भी दर्ज कर देते है।

मुजफ्फरनगर के शामली शहर को, जो अपनी मण्डी के लिए प्रसिद्ध है, रामकृष्ण मित्तल ने शोहरत दिलाई है। दरो-दीवार पर उनकी इबारत को देखकर कितने लोगो ने गीता पढा या कितनो ने वेद पढा, इससे भी वह सर्वथा असपृक्त हैं। वह गीता के एक श्लोक के सदेश को चरितार्थ करते हुए केवल अपना कर्म किए जा रहे है, इसका फलितार्थ चाहे जो हो।

मित्तल पिछले साठ महीनो से हर महीने एक सौ रुपए के इन्दिरा विकास पत्र खरीदते रहे हैं ताकि इनके परिपक्व होने पर इनसे प्राप्त होनेवाली दुगुनी राशि वह निर्धन छात्रो को बाट सकें। यह राशि दिसम्बर से मिलनी शुरु हो जाएगी और मित्तल इसी निष्ठा से अपनी पसद के किसी निर्धन को दे दिया करेंगे उनका सकल्प है कि यह सिलसिला वह जीवन पर्यन्त चलायेंगे।

दीवारो पर लिखा उनका सदेश कभी धुल जाता है, कभी मिट जाता है लेकिन तब तक फिर किसी नए शहर की किसी दीवार पर वे इसे दर्ज कर चुके होते है।

जिगर मुरादाबादी मित्तल के शहर के पडोस के ही मुमजिज शायर रहे हैं। उनका एक शेयर मित्तल की जिन्दगी के फलसफे की तर्जुमानी लगता है—

"जो उनका काम है वह अहले सियासत जाने,
मेरा पैगाम मुहब्बत है, जहां तक पहुचे।"

(पजाब केसरी से)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के परिद्रष्टा तथा कुलपति का अभिनन्दन

रोहतक ३१ जुलाई ९३ (केदारसिंह आर्य द्वारा)। आज यहा दयानन्दमठ रोहतक की दादा बस्तीराम यज्ञशाला मे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरद्वार के नव परिद्रष्टा न्यायमूर्ति महावीरसिंह (अध्यक्ष सार्वदेशिक न्यायसभा) तथा कुलपति डा० धर्मपाल (मन्त्री दिल्ली प्रतिनिधि सभा) का आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से हार्दिक स्वागत तथा अभिनन्दन किया गया।

सभा के कार्यालय सिद्धान्ती भवन पधारने पर दोनो आर्य विद्वानो का सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह, मन्त्री श्री सूबेसिंह, उपमन्त्री डा० सोमवीर, प्रो० प्रकाशवीर विद्यालकार मन्त्री विद्यासभा तथा सभा के अन्य विशिष्ट व्यक्तियो ने स्वागत किया। उनके साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी पधारे। जलपान के पश्चात् यज्ञशाला मे आर्यजगत् के त्यागी तपस्वी वयोवृद्ध संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे अभिनन्दन समारोह सभा के भजनोपदेशक प० रतनसिंह आर्य के स्वागत गीत, "स्वागत करते हैं धन्य भाग आपका आना" के साथ प्रारम्भ हुआ। इस अवसर पर आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर, श्री महेश्वरसिंह शास्त्री गुरुकुल भैंसवाल, श्रीमती प्रियवदा कन्या गुरुकुल खानपुर, श्री हरीसिंह गुरुकुल वेद मन्दिर फतेहाबाद, श्री आशार्सिह गुरुकुल आर्यनगर, हिसार श्री हुकमचन्द राठी गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, आचार्य हरिदेव गुरुकुल गौतम नगर, आचार्य कर्णसिंह गुरुकुल ज्योति टटेसर, कप्तान यज्ञपाल कन्या गुरुकुल पचगांव, श्री पूर्णचन्द्र आजाद स्वतन्त्रता सेनानी, श्री उमरावसिंह जाट स्कूल रोहतक, श्री वेदव्रत शास्त्री आर्यसमाज झज्जर रोड रोहतक श्री रामसिंह आर्यसमाज नारनौल, श्री देवराज विद्यालकार आर्यसमाज आवली, प्रि० लालसिंह आर्य विद्या परिषद् हरयाणा, श्री धर्मचन्द्र शास्त्री आर्यसमाज पाथरी, मा० बद्रीप्रसाद आर्य आर्यसमाज जीन्द शहर, मा० मागेराम आर्य आर्यसमाज बाकनेर, श्री भद्रसेन शास्त्री आर्यसमाज आर्यनगर सोनीपत, डा० हरिश्चन्द्र आर्यसमाज माडल टाउन रोहतक, श्री अमेरसिंह आर्यसमाज स्वरूपगढ, डा० विजयकुमार आर्यसमाज मातनहैल, डा० सत्यवीर आर्यसमाज चरखी दादरी, श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी आर्यसमाज नलवा, वैद्य टेकराम आर्यसमाज सिवाना, श्री सुखदेव शास्त्री आर्यसमाज आसन, श्री मातुराम प्रभाकर आर्यसमाज रेवाडी, श्री जयपाल आर्य, प० ईश्वरसिंह तूफान, पं० चिरञ्जीलाल आर्य (सभा भजनोपदेशक) श्री केदारसिंह आर्य (सभा कार्यालय), वानप्रस्थी श्री वेदप्रकाश साधक (दयानन्दमठ) की ओर से पुष्पमाला पहनाकर स्वागत किया गया।

सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने तीनो महानुभावों का सक्षिप्त परिचय कराते हुए बताया कि न्यायमूर्ति महावीरसिंह ऐलम (मुज्जफर नगर) के एक किसान आर्य परिवार से सम्बन्धित हैं। ये भारत के कानून के प्रकाण्ड विद्वान् हैं। इन्होंने सर्वप्रथम भारतीय सविधान की ३, ४ खण्डो में हिन्दी में व्याख्या की है और इलाहाबाद उच्च न्यायालय मे हिन्दी भाषा में अपने निर्णय लिखकर हिन्दी भाषा तथा ग्रामीण जनता की महान् सेवा की है। इस उपलक्ष्य में उत्तरप्रदेश सरकार ने इन्हे सम्मानित किया था। कई वर्षों से सार्वदेशिक न्याय सभा के न्यायाधीश भी हैं। अत इस प्रकार के विद्वान् को गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय का परिद्रष्टा (विजीटर) बनाकर हमे आशा बन्धी है कि ये सादगी तथा विद्वत्ता के प्रतीक गुरुकुल कागडी के स्वामी श्रद्धानन्द जी के स्वप्नो का गुरुकुल बनवाने में ऐतिहासिक योगदान कर सकेंगे। डा० धर्मपाल जी नव कुलपति का परिचय करवाते हुए प्रो० शेरसिंह ने बताया कि यह भी एक आर्य किसान परिवार से सम्बन्धित हैं और आजकल दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री हैं। वर्षों से गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के शिष्ट-परिषद् तथा अन्य महत्त्वपूर्ण विभागों मे योग्यता पूर्वक कार्य कर रहे हैं। आर्यसन्देश के सम्पादक भी हैं और अनेक पुस्तकों के लेखक भी हैं। इनके सद्व्यवहार तथा सज्जनता का लोहा इनके विरोधी भी मानते हैं। इस प्रकार गुरुकुल के परिद्रष्टा तथा कुलपति आर्य जगत् के ख्याति प्राप्त नेता हैं। इन दोनो के परिश्रम, लगन तथा कार्यकुशलता से विश्वविद्यालय अपने पूर्व काल की भाति उन्नति के शिखर पर अग्रसर होगा, इसमें सन्देह नही है। इनके परम सहयोगी श्री सूर्यदेव जी दिल्ली सभा के प्रधान भी यहा उपस्थित हैं। ये गुरुकुल विद्या सभा के प्रधान हैं और गुरुकुल की उन्नति में इनका योगदान सराहनीय है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा इन तीनो महानुभावो को प्रत्येक क्षेत्र में सहयोग देती रहेगी।

प्रो० शेरसिंह ने गुरुकुल को उन्नत करने की भावी योजना का उल्लेख करते हुए बताया कि एक प्रसिद्ध दानवीर विश्वविद्यालय में वेद अनुसन्धान विभाग को सफल करने हेतु एक करोड रुपये दान दे रहे हैं। स्वामी दयानन्द की इच्छा तथा स्वामी श्रद्धानन्द के स्वप्नो के अनुसार यहा वैज्ञानिक आधार पर वेदो पर अनुसन्धान किया जावेगा।

डा० सूर्यदेव जी ने हरयाणा सभा के अधिकारियो का आभार प्रकट करते हुए कहा कि मेरे पूर्वज हरयाणा के ग्राम जैतपुर (कोसली) में है। हमारे परिवार पर आर्यसमाज की छाप है। मैं हरयाणा सभा की आर्यसमाज को गति देने की योजनाओ का समर्थक तथा सहयोगी रहूगा।

सभा मन्त्री श्री सूबेसिंह ने गुरुकुल कागडी के एक समारोह को देखा है जिसमे अनुशासनहीनता का दृश्य देखकर चकित रह गया था। कुलपति कुलाधिपति से निर्देश न लेकर पूर्व कुलाधिपति के संकेत पर स्वामी ओमानन्द जी सरीखे सन्यासियो का निरादर कर रहा था और गुरुकुल की करोडो रुपये की भूमि बिकवाकर पजाब सभा के कोष मे जमा करवा रहा था। आज हमे प्रसन्नता है कि गुरुकुल की सुचारू रूप से रक्षा करनेवाले हमे मिल गये हैं। हरयाणा की सभा इन्हे पूर्ण सहयोग देगी।

स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने दोनो विद्वानो के चुनाव की सराहना करते हुए पूर्व कुलाधिपति आर्य मर्यादा मे प्रकाशित सम्पादकीय जिसमें डा० धर्मपाल जी तथा न्यायमूर्ति महावीरसिंह जी को एक ही वर्ग का लिखा है की निन्दा की कि जब श्री वीरेन्द्र गुरुकुल के सर्वेसर्वा थे तो उन्होने अपने वर्ग के ही कुलपति, उपकुलपति, मुख्याधिष्ठाता, प्रस्तोता, व्यवाध्यक्ष, परिद्रष्टा, कोषाधिकारी चुने थे। जबकि आर्यसमाज के अधिकारियो को जातपात नही अपितु योग्यता देखनी चाहिए। गुरुकुल स्वामी श्रद्धानन्द जी की भावनाओ का गुरुकुल बने यही मेरी कामना है। प्रो० प्रकाशवीर विद्यालकार ने कहा है कि स्वामी जी के निर्देश पर गुरुकुल मे बाहर से आनेवाले अतिथियों के आवास तथा भोजन की पूरी व्यवस्था की जावेगी। न्यायमूर्ति महावीरसिंह डा० धर्मपाल जी ने अपने अभिनन्दन का उत्तर देते हुए कहा कि मैं आर्यजनता की इच्छाओ को पूरा करने के लिए गुरुकुल की पुरानी परम्परा तथा सम्पत्ति की रक्षा करने का पूरा प्रयत्न करूगा।

वर्षा का प्रकोप

—'नाज' सोनीपती

बचा के निकले हैं जो अपनी जान पानी से।
गुजर रहे है, वही कारवान पानी से॥
जमी तो डूब गई है, जहा-तहा देखो।
भरा हुआ है अभी आसमान पानी से॥
छतो मे पानी है, आगन मे, घर मे पानी है।
कि भर गई है किसी की दुकान पानी से॥
बरस पडा है यकायक जो बे जबानो पर।
कि तग आने लगे हैं, किसान पानी से॥
गमों का बोझ सिरों पर उठाए फिरते हैं।
निकल के भागे हैं, बूढे जवान पानी से॥
मिले न पीने को पानी तो जान जाती है।
कि अबके आई है मुश्किल मे जान पानी से॥
पता नही है कि कितनो का खूं बहा होगा।
कि बेशुमार गिरे हैं मकान पानी से॥
न जाने ! जाने भी कितनो फना हुई होगी।
घिरा हुआ है अभी इक जहान पानी से॥
गुजर हो जाएगा सबके सिरो से पानी 'नाज'।
शुरू हुई है अभी दास्तान पानी से॥

धर्म का तत्त्व अर्थात् धर्म क्या है ?

—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष, वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ०प्र०)

(गतांक से आगे)

प्रमाण दो प्रकार के होते हैं, एक स्वत प्रमाण और दूसरा परत प्रमाण। स्वत प्रमाण उसे कहते हैं, जो स्वय पर आधारित हो अर्थात् जिसके लिये अन्य किसी प्रमाण की आवश्यकता नही तथा परत प्रमाण वह होता है, जो किसी दूसरे पर आधारित हो अर्थात् जब वह स्वत प्रमाण से प्रभावित हो जाय, तब उसे प्रमाण माना जाता है। जैसे सूर्य के लिए किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता नही। सूर्य स्वय अपना प्रमाण है। सूर्य निकलता है तो उससे कोई नकार नही करता। ठीक इसी प्रकार वेद भी स्वत प्रमाण है, अन्य स्मृति आदि ग्रन्थ वेद के अनुसार होने से ही प्रमाण कोटि मे आते है, वेद से विरोधी होने पर वह प्रमाण नही माने जाते। वेद से जो अनभिज्ञ हैं, उनकी बात जाने दीजिये। जो वेद के विचारो के किसी भी विषय मे जानकार हो जाते हैं, वह स्वय ही वेद भक्त हो जाते हैं, क्योकि सूर्य की भांति वेद-ज्ञान का प्रकाश मिलते ही मन से उसे स्वीकार लेते हैं, वेद की विचारधारा के सम्मुख अन्य सभी विचारधाराये उसी प्रकार फीकी पड जाती है, जैसे सूर्य के सामने चन्द्रमा, अन्य नक्षत्र तथा मानव द्वारा प्रज्वलित किये गये लैम्प, मिट्टी दीप तथा विद्युत-प्रकाश आदि फीके पड जाते हैं, मन्द हो जाते तथा लुप्त हो जाते हैं। परन्तु समान्यत तो—

वेद स्मृति सदाचार स्वस्य च प्रियमात्मन ।
एतच्चतुर्विध प्राहु साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम् ।। (२/१२)

वेद स्मृति सत्पुरुषो का आचार और स्वय को अच्छा लगने वाला व्यवहार—यह चार साक्षात् धर्म के लक्षण कहे जाते हैं। जो वेद मे निर्देश हैं, स्मृति मे जिसका विधान और विवेचन है, समाज के सम्मानित व्यक्ति ऋषि, मुनि तथा धर्म तत्वो के ज्ञाता जिस प्रकार का व्यवहार करते हैं और धर्म की जिज्ञासा रखनेवाला व्यक्ति जिस प्रकार के व्यवहार को पसन्द करता है—यह चार प्रकार वह हैं, जिनसे धर्म का साक्षात् अर्थात् वास्तविक ज्ञान होता है।

समस्या यह है कि सर्व साधारण वेद को तो जानते नही, जान भी जायें तो समझते नही। स्मृति आदि शास्त्रो के विषय मे भी नितान्त अनभिज्ञ हैं। जिनके आचरण अनुकरणीय होते हैं, ऐसे व्यक्ति प्रत्येक स्थान पर उपलब्ध नही होते, ऐसे प्रमाण-कोटि के व्यक्ति तो अपवाद ही होते हैं और अल्पबुद्धि तथा ज्ञानहीन लोगो के मन को पसन्द आनेवाली बात भी नही जचती। कारण यह है कि स्व-बुद्धि और सूझ-बूझ के अनुसार ही उनकी पसन्द होगी तब अधिक सम्भावना इसी बात की रहेगी कि वह अनुचित मार्ग अपना बैठे तथा अनुचित कार्य करे, जो धर्म के विरुद्ध हो। ऐसे लोगो की पसन्द धर्मानुकूल होगी, यह न तो आशा ही की जा सकती है और न विश्वास हो। इस दृष्टि से महर्षि वेदव्यास के उपदेश को महाभारत से उद्धृत किया जाता है। उनका कहना है—

श्रूयता धर्मसर्वस्व श्रुत्वा चैवावधार्यताम् ।
आत्मन प्रतिकूलानि परेषा न समाचरेत् ।।

अर्थ—धर्म के सर्वस्व को सुनो और सुनकर उसे धारण करो जो व्यवहार आप किसी अन्य के द्वारा अपने साथ किया जाना पसन्द नही करते, वह अर्थात् उस प्रकार का व्यवहार आप भी किसी के साथ मत करो। इसमे संक्षिप्त धर्म का सार, धर्म का तत्व और क्या हो सकता है ?

इतना सब जानने पर भी कुछ लोग यह कहेगे कि जब कोई समस्या सम्मुख आती है, तब यह सब विचारने का समय कहा होता है ? तुरन्त प्रश्न उठे और उसी क्षण उत्तर भी तैयार मिले, इतने प्रत्युत्पन्नमति भी तो सब नही होते अत धर्म की कुछ मुख्य-मुख्य धाराओ का ज्ञान तो हो ही जाना चाहिए तो फिर सुनिये और कष्ट करके अन्त करण पर अंकित कर लीजिये, उन्हीं महर्षि मनु के शब्दो मे—

धृति क्षमा दमोऽस्तेय शौचमिन्द्रियनिग्रह ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशक धर्मलक्षणम् ।। (६।१२)

धृति=धैर्य धारण करना अर्थात् समस्या सामने आने पर विचलित न होना, घबराना नही तथा गम्भीरतापूर्वक समय की चुनौती को स्वीकार कर समस्या को सुलझाना।

क्षमा=समर्थ होते हुए भी विरोधियों पर प्रहार न करना।

दम=दमन करना अर्थात् अपनी वृत्तियो को अन्तर्मुखी बनाना मन मे बुरे विचारो को स्थान न देना, आये भी तो उन्हें दबा देना अर्थात् मन को वश में रखना।

अस्तेय=चोरी न करना। ऐसा नही कि चोरी को जीविका का माध्यम ही न बनाना अपितु बिना आज्ञा किसी की कोई वस्तु कदापि न लेना।

शौच=पवित्रता शारीरिक व मानसिक दोनों ही प्रकार की पवित्रता वास्तविक पवित्रता है। तन शुद्धि भी हो किन्तु मन में अशुद्धिया, अपवित्रताये, गन्दे विचार घर किये हुए हों तो जीवन पवित्र नही बन सकता। वस्त्रो की पवित्रता भी अत्यन्त आवश्यक है, परन्तु मन को पवित्रता वस्त्रों और तन की पवित्रता से भी आवश्यक है।

इन्द्रिय निग्रह=इन्द्रियों को अपने विषयों अर्थात् प्रत्येक इन्द्रिय को अपने विषय मे भटकने, उसके लिए प्रयुक्त होने से रोकना अथवा इस प्रकार कह लीजिए कि इन्द्रियो का विषय सेवन के लिए प्रयोग न करना। यह इन्द्रिय समूह अत्यन्त बलवान् है, इसे अतीव कठोरता पूर्वक विषय सेवन से रोकना होता है।

बलवानिन्द्रियग्रामो विद्वासमपि कर्षति। (२/२६)

अर्थात् इन्द्रियो का समूह बलवान् है, यह विद्वान् को भी आकर्षित कर लेता है, अपनी ओर खीच लेता है, साधारण मनुष्य की तो बात ही क्या है ?

धी=बुद्धि, बुद्धि भी साधारण नही धारणावती। विषय के उपस्थित होने पर उसे तुरन्त समझ लेनेवाली बुद्धि। ऐसी बुद्धि ही धैर्य धारण करने, समस्याओं के समाधान खोजने, धर्म के सूक्ष्म तत्वो तथा वेदादि शास्त्रो को समझने मे समर्थ होती है।

विद्या=जिससे किसी पदार्थ के तत्वस्वरूप को, वास्तविक स्वरूप को ज्यो का त्यो, जैसा वह है जाना और समझा जा सके, उसे विद्या कहते हैं।

सत्य=जो बात जैसी है और जो पदार्थ जैसा है, उसे वैसा ही स्वीकार करना तथा प्रत्येक क्षेत्र मे और प्रत्येक अवसर पर सत्य का ही व्यवहार करना।

अक्रोध=क्रोध न करना। क्रोध का अर्थ होता है, आवेश में कुछ का कुछ असयत और अनर्गल बकने लगना तथा अनुचित और अवैध कार्य कर बैठना। ऐसी स्थिति उत्पन्न न होने देना अक्रोध कहलाता है।

इस प्रकार यह धर्म के दस लक्षण महर्षि मनु के द्वारा निर्धारित किये हुए हैं। इन्हे जीवन में धारण करना चाहिए अर्थात् इनके अनुसार आचरण करना चाहिये। इनके विरुद्ध आचरण कदापि नहीं करना चाहिये। इनके विरुद्ध आचरण करना, धर्म का हनन करना, धर्म की हत्या करना कहलाता है। शास्त्र का मत है—

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षित ।
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतोऽवधीत ।।

अर्थ—जो धर्म का हनन करता है, वह स्वय मारा जाता है और जो धर्म की रक्षा करता है, वह स्वय रक्षित रहता है। इसलिए धर्म का हनन नहीं करना चाहिए क्योंकि मारा हुआ धर्म मानव को मार डालता है।

मनुष्य जिस-जिस अश में धर्म के तत्वो का पालन करता है अर्थात् जितने धर्म के लक्षण उसमे हैं, उसके आचरण और व्यवहार में पाये जाते हैं, उतने हो अश में वह धर्मात्मा है और धर्म के लक्षण जो उसमें नहीं पाये जाते अर्थात् धर्म के तत्वों का जिन अशों में वह पालन नहीं करता, उतने अश में वह अधर्मी, पापी है। जैसे अग्नि का गुण कहो या लक्षण जलाना और प्रकाश देना है। जब तक यह लक्षण पाये जायेंगे, वह अग्नि कहलायेगी और जब यह लक्षण समाप्त हो

(शेष पेज ७ पर)

पारिवारिक यज्ञ सम्पन्न

दिनाक १६-७-९३ को आर्यसमाज नलवा (हिसार) मे प्रात ८ बजे पारिवारिक यज्ञ किया गया। वायु सेना मे सैनिक श्री सुरेन्द्रसिह आर्य एवं श्रीमती सरोज आर्या(दम्पति) ने यजमान का स्थान ग्रहण किया। सभा उपदेशक श्री अतरसिह आर्य क्रान्तिकारी जी ने दोनो बच्चो को सत्यार्थ प्रकाश तथा सस्कार विधि पुन पढने और कुसग से बचने तथा सत्सग में बढचढ कर भाग लेने का सुझाव दिया। भगवान् से अच्छे स्वास्थ्य व लम्बी आयु को कामना की। स्वामो सर्वदानन्द जी कुलपति गुरुकुल धीरणवास ने पश्चमी आन्धी से दूर रहकर आध्यात्मिक की ओर ध्यान देने का सुझाव दिया। जड प्रकृति मे न चोपक कर त्याग पूर्वक भोग करना चाहिए। धर्म के साथ धन कमाना चाहिए। आदि महत्वपूर्ण पहलुओ पर प्रकाश डाला। हवन पर आशीर्वाद देने श्री सूबेदार, हरचन्द आर्य प्रधान आर्यसमाज बालावास भी पधारे।

भलेराम आर्य
ढाणी निवासी नलवा

शोक समाचार

आर्यसमाज मन्धार जिला यमुनानगर के मन्त्री श्री अशोक के भाई श्री विजयकुमार जी का दिनाक ८-७-९३ को ट्रक-बस दुघटना मे मृत्यु होगई। श्री विजयकुमार जो आर्यसमाज के कार्यो मे बहुत रुचि रखते थे। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे तथा परिवारजनो को धैर्य प्रदान करे।

शेरसिह आर्य सभा भजनोपदेशक

शोक समाचार

आर्यसमाज बरहोद जिला रोहतक के मन्त्री मास्टर छतरसिह जी को धर्मपत्नी श्रीमती रामकोर जी का ६० वर्ष की आयु मे दिनाक १६ जुलाई ९३ को निधन होगया। वे आर्यसमाज के कार्यों मे बहुत सहयोग देती थी और अतिथियो की श्रद्धापूर्वक सेवा करती थो।

—केदारसिह आर्य

शराबबन्दी आन्दोलन मे सार्वदेशिक आर्य वीर दल निर्णायक भूमिका निभाएगा

नई दिल्ली। यदि देश मे अथवा किसो भी प्रान्त मे शराबबन्दी आन्दोलन प्रारम्भ हुआ तो उस प्रान्त को आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देश तथा तत्वावधान में सार्वदेशिक आर्य वीर दल सक्रिय भाग लेगा। यह महत्वपूर्ण निर्णय सुनाते हुए डा० देवव्रत आचार्य प्रधान सेनापति सार्वदेशिक आर्य वीर दल ने यह घोषणा भी की कि पहले जत्थे का नेतृत्व वह स्वय करेगे।

आज सारा राष्ट्र शराब की बुराइयों से त्रस्त है। गरीब आदमी अपनी कमाई का बडा भाग परिवार के भरण-पोषण पर न लगाकर शराब पर लगा देता है तथा इस प्रकार उसका परिवार अनेक प्रकार की आर्थिक दुविधाओ से घिर जाता है। आज युवा पीढी तो शराब के प्रयोग से अनेक रोगो से ग्रस्त होकर जवानी खो रही है।

उन्होने यह भी रहस्योद्घाटन किया कि इस बार पूरे देश में ग्रीष्मकालीन शिविरो का जाल बिछ गया था। इन ब्रह्मचर्य, चरित्र-निर्माण शिविरो के माध्यम से हजारो नौजवानो ने शराब, अण्ड, धूम्रपान, मासाहार आदि अनेक बुराइयो को छोडने का सकल्प लिया।

श्री उमेदसिंह शर्मा, सचालक आर्य वीर दल हरयाणा एव श्री वेदप्रकाश आर्य मन्त्री आर्य वीर दल हरयाणा ने इस बात पर खेद व्यक्त किया कि जो प्रान्त कभी दूध-दही के खाने से प्रसिद्ध था आज शराब के बढते प्रचलन से ग्रस्त है। इस सामाजिक बुराई के निदान से ग्रामीण क्षेत्र खुशहाल हो जाएगा। परिवार टूटने से बच सकेंगे।

रुकिये—शराब के सेवन से परिवार की बर्बादी होती है। अत· अपने निकट के शराब ठेको पर अपने साथियो सहित धरणे पर बैठकर शराब-बन्दी लागू करावें।
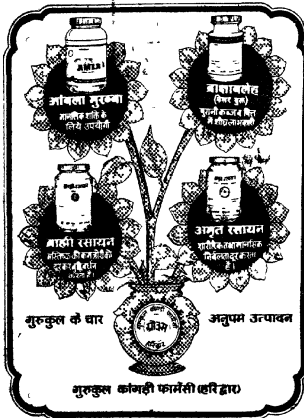
समीक्षा : सूरजमल-शौर्य-गाथा

समीक्षक प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार

डा० धर्मचन्द्र विद्यालंकार द्वारा विरचित प्रबन्ध काव्य पढने को मला। 'सूरजमल शौर्य-गाथा' नामक महाकाव्य विशेष रूप से पठनीय गा। इसमें भरतपुर नरेश महाराजा सूरजमल को लेखक ने उत्तर-मध्य-ालीन भारत के महानायक के रूप में निम्नलिखित शब्दों के साथ स्तुत किया है—

वह आर्य जाति का शौर्य-शिखर, दिनकर की सी वह प्रभा प्रखर।
उसके ही चरणो मे अर्पित, मेरा सज्जित यह शब्द निकर॥

यह महाकाव्य ओजपूर्ण काव्य-शैली मे लिखित है। काव्य की भाषा परम्परागत होते हुए भी विचार-दर्शन समीचीन बन पड़ा है। इस महाकाव्य मे विशेष रूप से राष्ट्रीय एकता और अखण्डता, कृषकों के शोषण से मुक्ति और साम्प्रदायिक सद्भाव पर बल दिया गया है। महाराज सूरजमल का चरित्र अत्यन्त उदात्त एव गरिमापूर्ण है। वे ध्यकाल के प्रथम राजनैतिक थे जिन्होंने उस जमाने मे बजाय हिन्दू मुसलमान के देशी और विदेशी की बात कही थी। हरयाणा विजय त्मक नवम सर्ग विशेष रूप से पठनीय है। क्योंकि इसमे हरयाणा की वतन्त्रता का सघर्ष अकित है। कुल मिलाकर महाकाव्य प्रशसनीय है। ल पृष्ठ २५६, मू० पु० सस्करण=२००, जन-सस्करण-मात्र १०० रु० काशक- अदन प्रकाशन महरौली।

स्तक प्राप्ति स्थान वीर साहित्य प्रकाशन शोरा कोठी, पलवल जिला-फरीदाबाद।

गुरुकुल विराट नगर नेपाल को धन भेजें

नेपाल देश एक अकेला ही हिन्दू देश है जो वैदिक सस्कृति का हामी है। वहां किसी हिन्दू को हिन्दुत्व छोडने, धर्म छोडने की आज्ञा नही है। अर्थात् वहां कोई मुसलमान या ईसाई नही बन सकता। नेपाल मे पहले आर्यसमाज द्वारा वैदिक धर्मप्रचार पर पाबन्दी रही है। अब कई र्षों से पाबन्दी नही है। तीन वर्ष पहले विराट नगर से कुछ दूर गुरुकुल की स्थापना की थी जो अब बहुत अच्छा चल रहा है। एक सौ स बालक वहा पर शिक्षा पा रहे हैं। शिक्षा देनेवाले वहा योग्य आठ ध्यापक साधारण वेतन लेकर कार्य कर रहे हैं। आर्यसमाजो को, धनी आर्य सज्जनो को वहा गुरुकुल की सहायता करनी चाहिए। इस गुरुकुल पाच मील फासले पर लडकियो के गुरुकुल की आधारशिला श्री वामी ओमानन्द जी महाराज के करकमलो से रखी है। नेपाल देश कुछ आर्यसमाज भी बनी हैं। आर्यसमाजो तथा आर्यसज्जनो को, 'वयो को गुरुकुल के लिए पर्याप्त धन देना चाहिए। दानी सज्जन हा कही दान देना चाहे उसमे नेपाल गुरुकुल का भाग अवश्य रखे।

(चेक ड्राफ्ट बनाने के शब्द)
गुरुकुल विद्यालय विराट नगर
(स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, जोगवनी)

ड्राफ्ट और और चेक इस पते पर भेजा जाए —
आचार्य गुरुकुल विद्यालय विराट नगर
पोस्ट—विराट नगर-18 आर्यनगर (जतुआ)
जनपद—मोरङ्ग कोशी अचल (नेपाल)

—सर्वानन्द सरस्वती अध्यक्ष वैदिक यति मण्डल

आर्यसमाज, सैक्टर-२२ चण्डीगढ़ का चुनाव

१) श्री राजेन्द्र सेठी प्रधान, २) श्री ओमप्रकाश सेठी उपप्रधान,) श्री प्रेमचन्द मनचन्दा उपप्रधान, ४) श्री बुधराम आर्य मन्त्री, ५) श्री महावीर शर्मा कोषाध्यक्ष, ६) श्री कृष्णलाल सचदेवा पमन्त्री, ७) श्री कमलकृष्ण महाजन उपमन्त्री, ८) श्री वेदप्रकाश हाजन पुस्तकालय अध्यक्ष, ९) श्री विश्वामित्र महाजन आडिटर।

—बुधराम आर्य मन्त्री

शोक समाचार

ग्राम मकडौली कला के पूर्व सरपंच स्व० बलवन्तसिंह के सबसे टे पुत्र आनन्दसिंह की तेरहवी पर गाव के हजारों लोगों ने उनको श्रद्धाजलि दी। सुखदेव शास्त्री ने वेदों के प्रमाण देकर मृत्यु के सम्बन्ध अपने विचार रखे। गाव के सरपच चौ० धर्मपाल ने शोक सभा में मल लोगो का आभार व्यक्त किया। आनन्दसिंह की मृत्यु दिनाक जुलाई २६ को कार दुर्घटना मे हुई थी।

—सत्यवान आर्य मकडौली कलां

आर्यसमाज नीलोखेड़ी द्वारा बाढ़पीड़ितों की सेवा

दिनाक २९-७-९३ को आर्यसमाज नीलोखेडी के मन्त्री जी व अन्य कार्यकर्त्ताओं ने बाढपीडित लोगों को खाद्य सामग्री (आटा, चावल, सब्जी व दाले) वस्त्र एव अन्य सामग्री बाटी। आज आर्यसमाज नीलोखेडी के आर्यवीरो ने जिला करनाल के बाढ से प्रभावित गांव निसग, बास, डाचर व गोन्दर में सामग्री का वितरण किया। उन्होंने इसी प्रकार कैथल, पटियाला, सिरसा आदि जिलों में भी सामग्री का वितरण किया।

सुरेश आर्य, आर्यसमाज गोन्दर जिला करनाल

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

प्रवेश सूचना सत्र १९९३-९४

निम्नाकित पाठ्यक्रमों मे प्रवेश हेतु आवेदन-पत्र आमन्त्रित किये जाते हैं—

१ विद्या विनोद (इण्टर) २- अलकार (बी० ए०)

३ बी०एस०सी० (गणित, बायो, कम्प्यूटर, दर्शन तथा मनोविज्ञान ग्रुप)

४ एम०ए० (वेद, सस्कृत, दर्शन, हिन्दी, अग्रेजी, मनोविज्ञान, प्रा० भा० इतिहास, सस्कृति एव पुरातत्व तथा योग)

५ एम०एस०सी० (गणित, माइक्रोबायोलोजी, मनोविज्ञान, रसायन तथा भौतिकी)

६ एम०सी०ए० (मास्टर आफ कम्प्यूटर एप्लीकेशस) नया पाठ्य-क्रम १९९३-९४ से प्रारम्भ।

७ पी०एच०डी० (वेद, सस्कृत, दर्शन, हिन्दी, अग्रेजी, मनोविज्ञान, प्रा०भा० इतिहास, संस्कृति एव पुरातत्व, गणित, वनस्पति, जन्तु-विज्ञान तथा माइक्रोबायोलोजी।

८. योग डिप्लोमा (एक वर्षीय)

९ स्नातकोत्तर डिप्लोमा कम्प्यूटर साइंस एण्ड एप्लीकेशन।

१० वैदिक यज्ञ विधान कर्म काण्ड (डिप्लोमा एक वर्षीय)

११. सस्कृत प्रवेश तथा सस्कृत प्रवीण (एक वर्षीय डिप्लोमा)

१२. अग्रेजी दक्षता (एक वर्षीय डिप्लोमा)

१३ हिन्दी पत्रकारिता डिप्लोमा (एक वर्षीय)

सामान्य सूचना—अलकार (बी०ए०) मे दिवस छात्रा (डे स्कालर) के रूप मे भी प्रवेश हेतु छात्राये, प्रिंसिपल कन्या गुरुकुल महाविद्यालय ६० राजपुर रोड, देहरादून को अपने आवेदन पत्र भेजें।

२ अनुसूचित जाति/जनजाति के छात्रो को भारत सरकार के नियमानुसार आरक्षण।

३ एम०ए० वेद, सस्कृत तथा दर्शन के छात्रों को छात्रवृत्ति उपलब्ध।

४. महिलाओं के लिए विज्ञान विषयों मे नियमित प्रवेश की सुविधा नहीं है। नियमित/व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप मे महिलायें एम०ए० (योग के अतिरिक्त) सभी विषय तथा एम०एस०सी० (केवल मनोविज्ञान) तथा पी—एच०डी० के लिए (एम०ए०,एम०एस०सी० सभी विषयों) आवेदन पत्र दे सकती हैं।

५ विवरण पत्रिका (प्रास्पेक्टस) तथा आवेदन पत्र २०-०० रु० नकद मूल्य पर कुल सचिव कार्यालय से उपलब्ध होंगे। डाक से मगवाने पर कुलसचिव गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के पक्ष में देय ३०-०० रु० का बैंक ड्राफ्ट भेजें।

आवेदन पत्र प्राप्त होने की अन्तिम तिथि (नियमित छात्र)

एम०सी०ए० के अतिरिक्त सभी विषय	३१-८-१९९३
ए०सी०ए०	२०-८-१९९३
पी—एच०डी०	३०-९-१९९३

—डा० जयदेव, वेदालंकार, कुलसचिव

वर्ष १६, अंक ४२ रविवार, ८ अगस्त १९९३ विक्रमी सम्वत् २०५० दयानन्दाब्द १६९ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३
मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक—२५ रुपये आजीवन २५० रुपये विदेश मे ५० पौण्ड, १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

वेद जयन्ती कार्यक्रमो की धूम

हैदराबाद के आर्य बलिदानियों ने एक नया इतिहास रचा है

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती

नई दिल्ली २ अगस्त। राजधानी के आय समाज मन्दिरो एव आय शिक्षण सस्थाओ मे श्रावणी उपाकम धूमधाम मे मनाया गया। मन्दिरो मे हजारो आर्य नर नारियो ने सामूहिक यज्ञोपवीत परिवर्तन किये एव नवीन जनेऊ धारण किये। सन् १९३९ के हैदराबाद आय सत्याग्रह के उपलक्ष्य मे सम्मान एव श्रद्धाजलि समारोह आयोजित किये गये। आय समाज मन्दिरो मे दस दिवसीय विशेष यज्ञ तथा रात्रि को वेद कथाओ का आयोजन शुरू हुआ। देश के विभिन्न राज्यो मे भी श्रावणी उपाकम श्रद्धापूवक मनायी गयी।

आय समाज दीवान हाल राजधानी के प्रमुख आय समाज मन्दिर दीवान हाल में आज प्रात श्रावणी उपाकर्म एव सत्याग्रह बलिदान दिवस समारोह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती की अध्यक्षता मे श्रद्धापूवक मनाया गया। प० महेन्द्र कुमार शास्त्री एव श्री नेत्रपाल जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में वृहद यजुर्वेदीय यज्ञ प्रारम्भ हुआ। सैकडो आय नर-नारियो व ब्रह्मचारियों ने सामूहिक यज्ञोपवीत धारण किया।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने हैदराबाद सत्याग्रहियो को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुये कहा कि १९३९ मे हैदराबाद के निजाम के अत्याचारो एवं अनुचित धार्मिक प्रतिबन्धो के विरोध में हजारो आर्य वीरो न निजाम की जेलो मे भीषण यातनायें सही थी तथा अनेक आर्य महानुभावों ने उस धम युद्ध मे बलिदान देकर एक नया इतिहास रचा था। उन सभी बलिदानो व सत्याग्रहियो को मैं आदरपूवक श्रद्धासुमन अर्पित करता हू जिन्होने धम की मशाल जलाये रखी।

स्वामी जी ने आगे कहा कि आज लोग धर्म को ठीक प्रकार से परिभाषित नही कर पा रहे हैं। धम सत्य व सनातन है परन्तु मजहब अपूर्ण है, उसमे धर्म का केवल कुछ अश होता है। मनु महाराज ने धर्म के दश लक्षण इस प्रकार बताये है —धृति क्षमादमोऽस्तेय शोचमिन्द्रिय निग्रह। धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशक धम लक्षणम्॥

स्वामी आनन्दबोध जी ने आह्वान किया कि आय सत्याग्रहियो व शहीदो से प्रेरणा लेकर हमे सत्य सनातन वैदिक धर्म पर चलते हुये वेद प्रचार काय मे निष्ठापूवक योगदान देते रहना चाहिये।

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के स्वतन्त्रता सैनानी प० ब्रह्मदत्त जी स्नातक, सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द जी शास्त्री एव दीवान हाल आय समाज के प्रधान श्री मूलचन्द गुप्त ने भी आय सत्याग्रहियो के प्रति भावाजलि अर्पित की।

दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूयदेव ने इससे पूव प० ब्रह्मदत्त स्नातक श्री वटुकेश्वर दयाल एव श्री वटुकृष्ण वर्मन सहित कुल २४ आय सत्याग्रहियो का शाल ओढा कर एव पुष्प मालायें पहना कर करतल ध्वनि से स्वागत

शेष पृष्ठ ६ ७पर)

स्वा. समर्पणानन्द सरस्वती की ९८वी स्मृति जयन्ती

वैदिक शिक्षाओं पर चलने से ही आतंकवाद एवं समस्त बुराइयों का उन्मूलन किया जा सकता है

जी. राम-रेड्डी

नई दिल्ली, १ अगस्त समपण शोध सस्थान, साहिबाबाद के तत्वावधान मे विद्यावारिधि स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती की ९८वो स्मृति जयन्ती हिमाचल भवन नई दिल्ली मे आर्य जगत के तपोनिष्ट सन्यासी स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में आज धूमधाम से मनाई गई।

इस अवसर पर समारोह के मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष श्री जी० राम रेड्डी ने समपण शोध सस्थान द्वारा प्रकाशित स्वा० समपणानन्द कृत शतपथ ब्राह्मण भाष्य (तृतीय काण्ड) एव श्री प० रामनाथ वेदालकार कृत 'सामवेद भाष्य (उत्तरार्चिक)' का करतल ध्वनि के बीच लोकार्पण किया।

श्री जी० राम रेड्डी ने कायक्रम में अपने उद्गार व्यक्त करते हुये कहा कि ऋग्वेद विश्व के पुस्तकालय का प्राचीनतम ग्रन्थ है। वेद ही विश्व का सस्कृति के उदगम माने जाते हैं। गुरुकुलों में गुरुओ के मुख से सुनकर शिष्य वेद कठस्थ कर लेते थे और ये श्रुति कहलाये। गुरु-शिष्य परम्परा ने हमारी अमूल्य वैदिक धरोहर को इस प्रकार जीवित रखा। तत्पश्चात् निघटु ब्राह्मण ग्रन्थ, वेदाग आदि की रचना हुई। असीम ज्ञान का भडार वैदिक साहित्य हमारे गौरव का प्रतीक है।

मध्यकाल मे महीधर, सायन, माधवाचाय, भट्ट भास्कर, भारत स्वामी आदि ने वेदो के भाष्य किए। जर्मन मे मेक्समूलर, लुडविग व आर टी एच ग्रिफ्थ ने भी वेदो के भाष्य किए। भारतीय व विदेशी विद्वानो द्वारा वेदभाष्य का काय वेदो की महत्ता को प्रतिपादित करता है।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

वेद जयन्ती व यज्ञशाला का उद्घाटन

आय समाज मन्दिर बी०एन० पूर्वी शालीमार बाग मे ९ से १४ अगस्त तक वेद जयन्ती कायक्रम के अन्तगत प शिवाकान्त उपाध्याय द्वारा यजुर्वेदीय यज्ञ व रात्रि को वेद कथा का सुन्दर आयोजन किया गया है।

१५ अगस्त को यज्ञ की पूर्णाहुति होगी। यज्ञशाला का उद्घाटन स्वामी विद्यानन्द सरस्वती द्वारा होगा। वैदिक विचारधारा का सन्देश विषय पर वैदिक विचार रखेंगे। शान्ति पुरस्कार भी वितरण होगा। सभी सादर आमन्त्रित हैं।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव सहसम्पादक—विमलकान्त शर्मा

योगीराज श्री कृष्ण का आज के मनुष्यों को सन्देश

ऐ मनुष्यो !

तुम पिछले ५ हजारो वर्षों से मेरे जन्म दिवस को श्री कृष्ण जन्माष्टमी के रूप में मनाकर मुझे स्मरण करते रहे, यो भी प्रतिदिन तुम मेरे नाम से बनाए मन्दिरो मे जाकर मेरी आराधना करते हो, पर मुझे बहुत दुख पूर्वक लिखना पड़ा रहा है कि इस सबसे मैं प्रसन्न नही हू। यह सच है कि तुम हृदय से मुझे चाहते हो और मेरे आदर्शों और कार्यों को तुम भी जीवन व व्यवहार में उतार लेना चाहते हो, पर उससे भी बड़ा सच यह है कि यह केवल तुम्हारी इच्छा है, तुम समझते हो कि केवल मुझे स्मरण करने अथवा मेरा नाम लेने ही वे सब काम सम्पन्न हो जायेंगे, जिसे मैं सम्पन्न करना या करवाना चाहता हू। इसमे तुम्हारी भूल भी नहीं है, तुम्हें पिछली कई शताब्दियो से सिखाया ही यही गया है कि कृष्ण तो भगवान थे और जब ससार मे सकट के बादल घिर कर आते हैं, तब-तब वे स्वय उत्पन्न हो जाते है।

यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत,
अभ्युत्थानाय धर्मस्य तदात्मान सृजाम्यहम् ।

मेरे मुख से वेद व्यास ने अर्जुन को दिये गीता के ज्ञान के रूप में उक्त कथन भी कहलवा दिया था, मैंने कहा था—'हे अर्जुन ! जब जब धर्म की ग्लानि होती है, तब धर्म के उत्थान के लिए मै उत्पन्न होता हू। पर इसका यह अर्थ नही है जो तुम समझ कर बैठ गये हो। मुझे मालूम है कि अकर्मण्य ब्राह्मणों ने जीवन को सरल और सुगम बनाने के लिए अवतार की कल्पना की और मुझे भी अवतारो की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया। सामान्य मनुष्य यह समझ बैठा कि सांसारिक विषमताओं विघ्न बाधाओं और कष्टो को तथा अन्याय, उत्पीड़न व शोषण को समाप्त करने का सामर्थ्य केवल भगवान के पास है और सामान्य मनुष्य की समाप्ति के लिए कुछ भी नहीं कर सकता। पर यह एक भ्रान्त धारणा है। पहला भ्रम तो यह है कि मैं भगवान था। सच यह है कि मैं भी आपकी तरह सामान्य मनुष्य था। आचार्य सन्दीप ने मेरा निर्माण किया था। मुझे शक्ति सम्पन्न भी बनाया था और मेरा मनोबल भी ऊचा किया था। मुझमे यह वृत्ति जागरित की थी कि मैं विश्व मे कहीं भी अन्याय, अत्याचार हो तो उसको साम-दाम-दण्ड और भेद नीति से समाप्त करने में जुट जाऊ। उस समय कंस की क्रूरता, जरासंध की जड़ता, शिशुपाल की धृष्ठता और दुर्योधन का कुण्ठा से विश्व त्रस्त था। मुझमे यह विवेक जागरित हुआ और मैं इन सबको समाप्त करने मे सफल रहा। इसके लिए मुझे अर्जुन की सहायता भी लेनी पड़ी। वह मोहग्रस्त हो गया। उसे अपने कर्तव्य की सुध न रही। मैंने उसे "गीता" का ज्ञान देकर उसे उसका कर्त्तव्य स्मरण करवाया।

तुम सब भी मेरे अर्जुन हो। मैं देख रहा हू तुम सभी मोहग्रस्त हो गये हो। तुम्हे अपना कर्तव्य भूल गया है। अपनी शक्ति का भी ज्ञान नहीं। अपने समाज व सम्प्रदाय के मोह मे तथा अपने व्यक्तिगत स्वार्थ मे पड़कर तुम अन्याय और अत्याचार को समाप्त करने के लिए कुछ भी नहीं कर रहे हो। आज मैं तुम्हें फिर से गीता का सच्चा ज्ञान स्मरण करवा कर मोह और स्वार्थ से हटकर कर्मयोग का उपदेश देता हू।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन,
मा कर्म फल हेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ।

स्मरण रखो ! तुम्हारा केवल कर्म करने का ही अधिकार है। तुम कभी उस किये कर्म के फल पर ध्यान मत दो। तुम किसी अच्छे व्यक्तिगत स्वार्थ से सम्बद्ध फल को मत देखो। तुम्हारे कर्तव्य से जो सृष्टि का कल्याण रूपी फल तुम्हें प्राप्त होगा, उसकी ओर तुम देख भी नहीं पा रहे। इसी स्वार्थ बुद्धि के ही कारण तुम अकर्म मे, दुष्टकर्म में लीन हो जाते हो, उसमे कभी प्रवृत मत होओ। स्वार्थ के ही कारण तुम केवल अपने तक देखते हो। तुम अपने शरीर को ही अपना सब कुछ समझते हो। हर याद रखें, यह शरीर नित्य नहीं है, हमेशा रहने वाला नहीं है। यह शरीर तो एक कपड़े की तरह है, जिसके जीर्ण-शीर्ण होने पर मनुष्य इसे बदल कर नया शरीर धारण कर लेता है।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय,
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।

वस्तुत तुम्हारा आत्मा नित्य है, यह कभी नहीं मरता, मैंने गीता में अर्जुन को बताया —

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः,
न चैनं क्लेदयन्त्यापो, न शोषयति मारुतः ।

उस आत्मा को कोई नहीं मार सकता। जब तुम्हें यह आत्मज्ञान हो जायेगा तब तुम निर्भय होकर अपने कर्मों मे प्रवृत्त होगे। तब तुम स्वार्थवश कार्य नहीं करोगे, वरन कर्तव्य को समझते हुए सारे ससार के लिए कार्य करोगे।

आत्म ज्ञान न होने के कारण मनुष्य उद्विग्न रहता है। वह अकारण ही भयभीत और त्रस्त रहता है। अनेक प्रकार के तनाव उसे घेरे रहते हैं। उसका मनोबल क्षीण हो जाता है। परिणाम स्वरूप वह रक्तचाप और अन्य शारीरिक व्याधियों का शिकार हो जाता है। यदि तुम सब प्रकार की शारीरिक व मानसिक व्याधियों से बचना चाहते हो तो तुम्हें अपने वास्तविक स्वरूप को समझना होगा तुम्हें स्थित-प्रज्ञ रहकर अपनी इन्द्रियों को अपने मन को, अपनी बुद्धि को, अपने कर्म को सन्मार्ग में प्रवृत्त करना होगा। स्मरण रखो, जब तक तुम स्थित प्रज्ञ होकर आत्म कल्याण नही कर लेते तब तक मानव कल्याण के महान काम मे भी प्रवृत्त न हो सकोगे।

आज मनुष्य परेशान है, उसकी परेशानी से उसका परिवार, समाज और उससे सम्पूर्ण राष्ट्र व विश्व ही सकट ग्रस्त हो गया है। उसे सकट से मुक्त करने के लिए कोई कृष्ण अवतार नहीं लेगा वरन तुम्हें स्वय कृष्ण बनकर अपने कष्टो को दूर करना होगा। तुम्हीं में वह शक्ति है, उसे पहचानो और विवेक पूर्वक कर्म करो। मेरा कोई रूप तुम्हें प्रेरणा देता तो उसे स्मरण करो। मेरी गीता का ज्ञान तुम्हें प्रेरणा देता है तो उसे स्मरण करो। मेरी गीता का ज्ञान तुम्हे ठीक मार्ग दर्शाता है तो उसका मनन करो। मेरा सुदर्शन चक्र यदि तुम्हे अपराधी को नष्ट करने की शक्ति देता है तो उसे धारण करने का प्रयत्न करो।

मेरा एक रूप है, दुष्ट दलन का। मैंने किसी निरपराध को तग नहीं किया। मैने केवल उसी का विरोध किया, जिसने विश्व मे अन्याय करने का प्रयत्न किया है। अन्यायी को मारना हिंसा नहीं अहिंसा है। सब प्राणियो के प्रति अभेद बुद्धि है, पर स्वार्थी और लोक-संहारक व्यक्ति के प्रति मैं भेद बुद्धि रखता हू। मैंने सदा उसका विरोध किया है, और यदि तब भी उसने दुष्ट कर्म नहीं छोड़ा तो मैंने उसे समाप्त किया है। मेरे इसी रूप को तुम मेरा लोकरक्षक रूप कहते हो। मेरा यह रूप तुम्हें भी लोक रक्षक होने की प्रेरणा देता है तो उससे तुम अवश्य प्रेरणा प्राप्त करो। आज भी कंस हैं, जरासंध और दुर्योधन हैं। उन्हें पहचानो और उन्हें समाप्त करो।

मध्यकाल मे कुछ लोगो ने मेरे एक अन्य रूप की कल्पना की। मुझे गोपिकावल्लभ बताया और मेरे साथ विविध रासलीलाओ को जोड़ दिया। यह सच है कि मेरा एक रूप लोकरंजक का है। मैं ससार के प्रत्येक प्राणी से स्नेह का सम्बन्ध रखता रहा हू और उनका मनोरंजन करने मे मुझे आनन्द की अनुभूति हुई है। पर मैंने कभी लाम्पटता वासना या इन्द्रिय लोलुपता की सहायता नहीं ली। न मेरी एक से अधिक पत्नियां थीं और न मेरी कोई ऐसी प्रेमिका थी जिससे मेरा शारीरिक सम्बन्ध रहा हो। मुझे एक ओर भगवान बताकर और दूसरी ओर मुझे वासनाप्रिय कहकर मेरा अपमान ही किया गया है। मैं सयम को इन्द्रियनिरोध को महत्त्व देता हू और तुम्हें भी संयमी होने का उपदेश देता हू। बिना सयम के मनुष्य का चित स्थिर नहीं होता, और बिना चित के स्थिर हुए मनुष्य अपने जीवनलक्ष्य को पूरा नहीं कर सकता।

मध्यकालीन आचार्यों ने मुझे भगवान बताया। गोप-गोपियों को जीव कहा। जीव और भगवान के भक्ति सम्बन्ध को उन्होंने रूपक बना कर प्रस्तुत किया। पर यहां लोगों ने उसके ठीक अर्थ को न समझा। भगवान को सर्वशक्तिमान कहकर उसके साथ सभी प्रकार के कर्म जोड़ दिये।

वस्तुत मुझे भगवान कहना ही गलत है। मुझे सर्वशक्तिमान मानना ही भूल है। मुझे भगवान समझकर तुम अपने को मुझसे अलग कर लेते हो।

वस्तुत मैं तुममें से ही एक हू। जो तुम हो, वही मैं हू। यदि तुम इस वास्तविकता को जान लो तो तुममें भी वही बनने की प्रेरणा उत्पन्न होगी जो मैं था मैं योगी था तो तुम भी योग को धारण कर सकते हो। मैं शक्ति सम्पन्न था, तो केवल अपनी शक्ति को पहचानने में ही तुम भी अपने को वैसा शक्ति सम्पन्न अनुभव करने लग जाओगे। मैं यदि विवेकी और स्थित-प्रज्ञ था वह विवेक और स्थित-प्रज्ञता तुममें भी है। उसे पहचानो।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

वैदिक शिक्षाओ पर चलने

(पृष्ठ ६ का शेष)

आतंकवाद, भ्रष्टाचार, कालाबाजारी, तस्करी, अपहरण, बलात्कार, लूटमार व हत्यायें तथा युद्ध रोका जा सकता है। विधि व कानून के क्षेत्र मे भी वेद व मनुस्मृति का बहुत महत्व है।

स्वामी सर्वानन्द जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि धर्म ही मनुष्य के जीवन का लक्ष्य है। ईश्वर प्रदत्त वेद ज्ञान एव सत्य ही सच्चा धर्म है और इसी पर चलकर मनुष्य का कल्याण हो सकता है। धर्म व मजहब दो अलग तत्व हैं। मजहब में धर्म का कुछ अश होता है परन्तु धर्म सनातन व पूर्ण है। वेद व धर्म से मथ को समझने के लिए अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन व मनन आवश्यक है संस्कृत के महत्व पर जोर देते हुए स्वामी जी ने कहा कि संस्कृत का पठन पाठन ही हमारी संस्कृति को जीवित रख सकता है।

समर्पण शोध संस्थान के संस्थापक स्वामी दीक्षानन्द जी ने संस्थान की गतिविधियों का परिचय देते हुए कहा कि वेद ही धर्म का मूलाधार है और मूलशंकर ने धर्म के मूल को जानकर मानव के मंगल व कल्याण के लिए वेद मार्ग पर चलने का आह्वान किया। स्वामी जी ने शतपथ ब्राह्मण को वेदो की कुंजी बताया।

गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ के आचार्य स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा कि पूज्य गुरु स्वामी समर्पणानन्द (श्री बुद्धदेव विद्यालंकार) ने कहा था कि वेदो को समझने के लिए अलंकार शास्त्र का ज्ञान जरूरी है। दयानन्द का कार्य वेद का कार्य है और हमे ऋषि के मार्ग पर चलना चाहिए।

कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रभात आश्रम के छात्रो द्वारा वैदिक मगलाचरण से हुआ। भव्य कार्यक्रम का कुशल मंच संचालन श्रीमती प्रभात शोभा ने किया। गुरुकुल कागड़ी के कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह ने कहा कि वेदो का अन्य भाषाओ मे अनुवाद कराकर जन जन तक पहुचाया जाना चाहिए और इसके लिये विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को सहायता देनी चाहिए। इससे पूर्व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने स्वामी सर्वानन्द तथा गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डा० धर्मपाल ने श्री जी० रेड्डी व अन्य अतिथियो का पुष्पहारो द्वारा स्वागत किया।

गान्धर्व महाविद्यालय के उपाचार्य श्री महादेव गो० देशपाण्डे एव श्री पन्नालाल पीयूष के निर्देशन में स्वामी समर्पणानन्द जी के गीतो पर आधारित "समर्पण-संगीत संध्या" का भी आयोजन किया गया।

आर्य सन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
No 32387/77 Posted at N D P S O on 5-6-8-1993 Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 13/93
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (एल-११०२४/९३
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू (सी०) १३१/९३
"आर्यसन्देश" साप्ताहिक
८ अगस्त १९९३

श्री कृष्ण [illegible] नायक

प० नन्दलाल निर्भय सिद्धान्तशास्त्री
ग्राम, पोस्ट बहीन जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

हमे धर्म का पाठ पढाने, जन्म-अष्टमी आई है।
श्रीकृष्ण की महिमा, स्वामी दयानन्द ने गाई है॥

वैदिक पथ को भूल गई थी, सुनो-सुनो दुनिया सारी।
आपा-धापी मची हुई थी, व्याकुल थे नर नारी॥
खाओ पीओ मौज उड़ाओ, कहते थे भ्रष्टाचारी।
भेद भाव और ऊच-नीच की पनप गई थी बीमारी॥

पढो महाभारत को जिसमें लिखी कहानी पाई है।
श्रीकृष्ण की महिमा स्वामी दयानन्द ने गाई है॥

जरासन्ध, शिशुपाल, कंस से करते थे अत्याचार यहां।
देता था चहु ओर सुनाई, जग में हा हाकार यहा॥
ऋषियो मुनियो को आतंकित करते थे गद्दार यहां।
सज्जन छुपते फिरते थे, थी दुष्टो की भरमार यहां॥

सत्यार्थ प्रकाश पढो यह, बात स्पष्ट दर्शाई है।
श्रीकृष्ण की महिमा, स्वामी दयानन्द ने गाई है॥

श्रीकृष्ण ने ठोस कदम निर्भय हो सुनो उठाए थे।
वे महावीर, बलशाली थे, दुष्टों से ना दहलाए थे॥
शिशुपाल, कंस को मारा था, निर्बलो के कष्ट मिटाए थे।
मरवाया जरासन्ध पापी केशव प्रजा मन भाए थे॥

सम्राट युधिष्ठर बनवाया, ये दुनिया समझ न पाई है।
श्रीकृष्ण की महिमा, स्वामी दयानन्द ने गाई है॥

जीवन भर लडे पापियो से, यदुनन्दन सत-सहायक थे।
पर हितकारी, त्यागी, सच्चे, श्रीकृष्णचन्द्र युग नायक थे॥
लेकिन हमने की कृतघ्नता, योगी को भोगी बना दिया।
पर स्त्री गामी, चोर, मान करके है भारी पाप किया॥

घुंघरू पहना कर नचा रहे, यह देख शर्म शर्माई है।
श्रीकृष्ण की महिमा, स्वामी दयानन्द ने गाई है॥

यदि श्रीकृष्ण की बातो को, ये दुनिया आज मान जाए।
दुष्टो का कही न नाम रहे, धरती पर स्वर्ग उतर आए॥
जागो जगके सब नर नारी, वैदिक पथको तुम अपनाओ।
दानव दलका सहार करो, निज नाम अमर तुमकर जाओ॥

जो जिए धर्म के लिए सदा, उनकी हो रही बडाई है।
श्रीकृष्ण की महिमा, स्वामी दयानन्द ने गाई है॥

सेवा में—

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागज, नई दिल्ली-११०००२ मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन - ३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (एल-११०२४/-९३

श्रीकृष्ण की राष्ट्र को देन

योगिराज श्री कृष्णचन्द्र महाराज का हमारे महापुरुषों में एक अद्वितीय और अनुपमेय स्थान है। इस शताब्दी के खरे आलोचक महर्षि दयानन्द से प्रशंसा-परक प्रमाण-पत्र पाना बहुत कठिन बात थी। किन्तु ऋषि ने जो विचार श्री कृष्ण के लिए अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखे बस वही एक सबसे बड़ी कसौटी है।

अत आज के सन्दर्भ मे श्री कृष्ण से हम क्या सीखे, और दुनिया को उन्होंने क्या सिखाया, और हमारे पवित्र देश भारत को उनसे क्या मिला।

सर्वप्रथम महाभारत युद्ध के समय अर्जुन को दिया गया उपदेश जो भगवद्गीता के नाम से प्रसिद्ध है। इसमे ज्ञान, कर्म और उपासना का अद्भुत उपदेश है, जिसको पढकर दुनिया के बड़े-बड़े विद्वान् भूरि-भूरि प्रशसा करते हैं और नतमस्तक होते हैं। जिससे भारतवर्ष अपने इस महापुरुष की कृति पर गर्व से सिर ऊचा किए हुए है।

निर्लोभता—श्रीकृष्ण जी ने राज्य क्रांतिया करवाई परन्तु किसी लोभ-लालच से नहीं। श्रीकृष्ण ने जो भी देश जीता, उसे अपने अधीन करने की चेष्टा नहीं की और न उन्होंने किसी देश को जीतकर अपने भाई-बन्धु मित्रादि को वहा का राजा बनाया। कस का वध करके उसके पिता उग्रसेन को राज्य दे दिया। इसी भाति जरासध का वध करके उसके पुत्र सहदेव को राजा बनाया और भौमासुर को मारकर उसके पुत्र भगदत्त को राज्य पर नियुक्त किया।

निर्भीकता—श्रीकृष्ण के प्रत्येक कार्य मे निर्भीकता और आत्म-सम्मान जागृत रहता था। कौरवो की सभा मे चारों तरफ से शत्रुओ से घिरे रहने पर भी उन्होंने आत्म सम्मान की रक्षा की और किसी भी प्रकार दुर्योधन के न मानने पर धृतराष्ट्र को सलाह दी—राजन्! आप दुर्योधन को बाधकर पाण्डवो से सन्धि करलो। हे क्षत्रिय श्रेष्ठ! ऐसा न हो कि आपके कारण क्षत्रियो का विनाश हो जाय।

सहिष्णुता—सहिष्णुता के श्रीकृष्ण साकार स्वरूप थे। कस के अत्याचार झेले, जरासन्ध के प्रहार और शिशुपाल को वचन रूपी तलवार के कठोर वार सहे परन्तु श्रीकृष्ण अडोल रहे।

अधर्मी को अधर्म से मारना धर्म—युद्ध के समय कर्ण के रथ का चक्का गड्ढे मे फसने पर कर्ण ने अर्जुन से चक्का निकालने तक युद्ध बन्द करने को कहा, किन्तु श्रीकृष्ण के कहने पर अर्जुन ने कर्ण को बाण मारा जिससे आहत होकर कर्ण ने अर्जुन को उपालम्भ दिया और कहा अर्जुन तुझे धिक्कार है, तूने युद्ध धर्म का त्याग कर दिया। इसका जवाब श्रीकृष्ण ने इस प्रकार दिया—कर्ण! तुमने भीम को विष खिलाकर मूर्च्छित अवस्था मे बाधकर गगा नदी मे फेंक दिया था, उस समय तुम्हारा धर्म कहा था? द्रोपदी को भरी सभा मे नग्न करके कुचेष्टा की थी उस समय तुम्हारा धर्म कहा था? निहत्थे अभिमन्यु को सात महारथियों ने मिलकर मारा था उस समय तुम्हारा धर्म कहा था? लाक्षागृह में पाण्डवो को जिन्दा जलाने की योजना की थी उस समय तुम्हारा धर्म कहा था? अब तुम्हे मरते समय धर्म याद आया है। इसलिए अधर्मी को अधर्म से मारना ही धर्म है।

नैतिकता—श्रीकृष्ण का सम्पूर्ण जीवन नैतिकता के आधार पर प्राणिमात्र का हितचिन्तन करते हुए व्यतीत हुआ। अन्तिम बार श्रीकृष्ण एक विकट धर्म सकट मे फस गए। उनके बन्धु-बाधव और परिवार के सदस्य और सजातीय उद्दण्ड हो गये। विश्व मे वे घोर अशान्ति का कारण बनते जारहे थे। जीवन पर्यन्त श्रीकृष्ण ने विश्व कल्याण किया। इस बार भी वह न चूके। यादव कुल का अपने देखते-देखते अपने ही हाथों उन्होंने अन्त करा दिया। इस प्रकार हम देखते हैं श्रीकृष्ण महाराज अनेक महान् गुणो के आगार थे और यही गुण हमारे राष्ट्र के लिए श्रीकृष्ण महाराज की महान् देन हैं।

आओ हम श्रीकृष्ण महाराज के पवित्र जन्म दिवस पर श्रीकृष्ण के पवित्रतम गुणों को धारण करके पवित्र भारत भूमि को गौरवान्वित करें।

—मातुराम शर्मा प्रभाकर

यदि आप हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी लागू करवाना चाहते हैं तो अपने क्षेत्र के निकट के ठेकों पर चल रहे धरणों में सम्मिलित होवें।

(पृष्ठ ४ का शेष)

जायगे, जब अग्नि दाहकत्व और प्रकाश से रहित हो जायगी तो वह अग्नि नहीं रह जायेगी अपितु राख हो जायेगी अर्थात् जब तक अग्नि अपने धर्म दाहकत्व और प्रकाश को धारण किये रहती है, उनकी रक्षा किये रहती है तब वह स्वय रक्षित रहती है और जब वह अपने इन धर्मों का पालन-रक्षण नहीं करती, इनका हनन कर देती है तब वह स्वय भी मर जाती है।

यही दशा मानव की भी है। धर्म के आचरण से हटकर धर्म को तिलाञ्जलि देकर अथवा यो कह लीजिये की हत्या करके मानव भी मृतक के समान हो जाता है। जिसमे मानवता के तत्व हो नहीं जिसमे मानवता के लक्षण, मानव धर्म के लक्षण नहीं पाये जाते, वह तो जीते जी मृतक है। मानव तो तब तक है, जब तक उसमे मानवता के लक्षण पाये जाये। मानवता छोडी तो मनुष्य रूप मे पशु—नरपशु—रह जाता है। एवमेव मानव के द्वारा मानवता के लक्षणो का त्याग अर्थात् धर्म का हनन नहीं होना चाहिये। हा, यह आवश्यक है कि धर्म के मर्म को, धर्म के रहस्य को भलीभाति समझ लेना चाहिये। शमित्योम्।

'वही हमारा आर्यसमाज'

जिसने महिमण्डल को फिर से, वेदो का सन्देश दिया,
भ्रमित जनो को मार्ग दिखाकर, पावनतम उपदेश किया,
जिसके संस्थापक थे ऋषिवर, दयानन्द से विज्ञाता,
जो आगे बढ बना देश का, प्रहरी, गौरव उद्गाता,
मनुष्यता सम्पूरित जो है, सत्य-अहिंसा जिसकी साज।
सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् जिसमें, वही हमारा आर्यसमाज॥

लेखराम-श्रद्धानन्द जैसे मिले इसे हैं बलिदानी,
भारत के इतिहास पृष्ठ पर, अंकित गाथा लासानी,
जिसके अमर सपूतो ने तोडा भारत मा का बन्धन,
जिसने नष्ट किया भारत की अबलाओ का दारुण क्रन्दन,
सोती जाति जगाई जिसने, बढती प्रगति पथ पर आज।
सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् जिसमे वही हमारा आर्यसमाज॥

भूले भारत के जनगण को, जिसने मार्ग दिखाया है,
वैदिक संस्कृति पुराकाल की, पुन धरा पर लाया है,
जिसने भूमण्डल भर मे, अज्ञान तिमिर को ललकारा,
बीच भवर मे फसी मनुजता, को है जिसने उद्धारा,
ढोगी ठगो उचक्को का खोल दिया जिसने सब राज।
सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् जिसमें वही हमारा आर्यसमाज॥

आर्यसमाज बढे उन्नति पथ, स्वर्ग बनेगी वसुन्धरा,
कण-कण प्रमुदित होगा निश्चय, हर्षित होगी दिव्य धरा,
बढो सपूतो ! ओ३म् ध्वज, सारे जग मे फहराना है,
शांति-सफलता-समृद्धि के संगीत हमे अब गाना है,
उन्मेष कर रही दिशाए जाग उठा है अब गिरिराज।
सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् जिसमे वही हमारा आर्यसमाज॥

राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

आर्यसमाज खेल बाजार पानीपत का वार्षिक निर्वाचन

संरक्षक—श्री उत्तमचन्द जी 'शरर' तथा श्री जमनादास जी
प्रधान—सेठ रामकिशन जी
कार्यवाहक प्रधान—श्री कृष्णलाल जी
उपप्रधान—श्री देसराज जी तथा श्री आत्माराम जी
मन्त्री—राजेश आर्य
प्रचार मन्त्री—श्री कस्तूरीलाल जी
उपमन्त्री—श्री जयकिशन जी
कोषाध्यक्ष—श्री राजेन्द्रप्रसाद आर्य
लेखानिरीक्षक—श्री मदनलाल जी डावर
पुस्तकाध्यक्ष—श्री राजेन्द्रपाल जी
भण्डारी—श्री कस्तूरीलाल जी

—आर्यसमाज खल बाजार, पानीपत (हरयाणा)

आर्यसमाज नलवा की मीटिंग मे महत्वपूर्ण निर्णय

दिनाक १४-७-९३ को आर्यसमाज मन्दिर नलवा मे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी द्वारा हवन किया गया। यज्ञ का महत्त्व तथा स्कूली बच्चो को नैतिक शिक्षा माता पिता, अध्यापक को नमस्ते करनी चाहिए आदि पर विचार रखे।

तत्पश्चात् श्री क्रान्तिकारी नलवा आर्यसमाज के महामन्त्री के न ते उनकी अध्यक्षता मे एक मीटिंग हुई। जिसमे सर्वसम्मति से निम्न निर्णय लिए गए।

१) ७-८ अगस्त को गाव मैं वेदप्रचार एव हवन करवाना।
२) गाव मे पूर्ण शराबबन्दी के लिए ग्राम पंचायत एव विशेषकर श्री महेन्द्रसिंह सरपच का आर्यसमाज नलवा की ओर से धन्यवाद किया गया।
३) शराबबन्दी सत्याग्रह मे बढ चढ कर भाग लेना।
४) बच्चो से गाव मे सायकाल शराबबन्दी नारे लगवाना।

रामचन्द्र आर्य (नलवा)

ओम नाम गुणगान

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

तर्ज (बहुत प्यार करते हैं तुमको)

मधुर ओम का नाम जप सुन्दरम्।
प्रिय नाम ईश्वर का है सर्वोत्तम॥
किसी शुभ कर्म की कली ये खिली है।
बडे भाग्य से मनुज देही मिली है॥
गवाना नही ये है हीरा जनम।
मधुर ओम का नाम जप सुन्दरम्॥१॥

भटकता हिरण की तरह मारा मारा।
वह एक विधाता सभी का सहारा॥
वही दूर सारे करे रजोगम।
मधुर ओम का नाम जप सुन्दरम्॥२॥

यही नाम ऋषि मुनि योगियो ने गाया।
दयानन्द स्वामी ने कभी न भुलाया॥
रहे करते जप ओम का मरते दम।
मधुर ओम का नाम जप सुन्दरम्॥३॥

रहेगा नही यह अमर चोला तेरा।
दो दिन का इस सराय मे बसेरा॥
अटल जग मे 'राघव' प्रभु का नियम।
मधुर ओम का नाम जप सुन्दरम्॥४॥

परीक्षा परिणाम

आर्य सीनियर सैकण्ड्री स्कूल सिरसा के वर्ष 1992-93 के आठवी दसवी एव 10+2 कामर्स के परीक्षा परिणाम अति श्रेष्ठ रहे।

VIII	67 प्रतिशत
X	77 प्रतिशत
10+2 (कामर्स)	78 प्रतिशत

नोट—10+2 कामर्स का हमारे स्कूल का छात्र श्रीचन्द सुपुत्र श्री बदरीराम 346/500 अक (69 2%) प्राप्त करके जिले मे प्रथम स्थान पर रहा।

प्रिंसिपल
आर्य सीनियर सेकण्ड्री स्कूल सिरसा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, गोहाना रोड, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०/७३ रजि० न० P/RTK-१९ फोन नं०

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २० अंक ३३ १४ अगस्त, १९९३ वार्षिक शुल्क ४०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति ८० पैसे

हरयाणा के कोने-कोने में शराबबन्दी सत्याग्रह की तैयारी आरम्भ

रोहतक ७ अगस्त (केदारसिंह आर्य द्वारा)—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से शराबबन्दी सत्याग्रह की तैयारी जोर-शोर से कर दी गई है। हरयाणा शराबबन्दी समिति के संयोजक चौधरी विजयकुमार जी पूर्व उपायुक्त अब स्वस्थ होगये हैं और उन्होंने पूर्व की भांति अपना सारा समय शराबबन्दी के कार्यों में लगाना आरम्भ कर दिया है। ३ अगस्त को रक्षाबन्धन पर्व के अवसर पर सभा के मन्त्री श्री सूबेसिंह प्रधान प्रो० शेरसिंह के साथ गुरुकुल झज्जर गये। वहां हरयाणा शराबबन्दी सत्याग्रह के प्रथम सर्वाधिकारी श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में एक सम्मेलन आयोजित हुआ। आर्य नेताओं ने हरयाणा की जनता को हरयाणा प्रदेश की पवित्रता की रक्षा करने के लिए शराबबन्दी सत्याग्रह के युद्ध में अधिक से अधिक संख्या में भर्ती होने की अपील की गई। श्री विजयकुमार ने उपस्थित कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल ने आर्यसमाज द्वारा धरने आदि देकर ठेके बन्द करवा दिये थे, वहां पुनः [illegible] के स्थान पर लोहे के खोखे लगवा दिये हैं। अतः [illegible] हरयाणा सरकार की इस नई चाल के विरुद्ध लोहा लेगी।

सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने एक वक्तव्य मे घोषणा करते हुए कहा है कि ५ सितम्बर को अध्यापक दिवस के अवसर पर अध्यापक स्कूलों में छात्रों को शराब आदि सामाजिक बुराइयों से दूर रहने की शिक्षा देने का संकल्प लेंगे। इसी प्रकार गान्धी तथा श्री लालबहादुर शास्त्री के जन्म दिवस पर २ अक्तूबर को दिल्ली में राजघाट पर भारी संख्या में महिला तथा पुरुष एकत्रित होकर अनशन पर बैठेंगे तथा राष्ट्रपति को शराबबन्दी लागू करवाने का ज्ञापन देते हुए चेतावनी देंगे कि यदि एक नवम्बर हरयाणा दिवस से पूर्व शराबबन्दी लागू करने की मांग पूरी नहीं की गई तो एक नवम्बर से सत्याग्रह आरम्भ करते हुए हरयाणा में गिरफ्तारियां दी जावेंगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा ने हरयाणा के अन्य जिलों में शराबबन्दी सत्याग्रह की [illegible] कर दी है। सत्याग्रह के द्वितीय सर्वाधिकारी स्वामी [illegible] भी हरयाणा का भ्रमण कर रहे हैं। पालहावास जिला रेवाड़ी तथा [illegible] जिला फरीदाबाद में शराबबन्दी की पचायतें आयोजित की गई हैं।

ग्राम बड़ा तहसील पलवल के शराब के ठेके का २० ग्रामों की पचायत ने बहिष्कार कर दिया है। ग्राम मडकोला, महेशपुर, मण्डोरी, राजौला, फैराका, नंगली, [illegible] आदि ग्रामों में भी शराबबन्दी की पंचायतें सभा के उपदेशकों के सहयोग से हो चुकी हैं। इन ग्रामों के सरपंच भी इस परोपकारी कार्य में योगदान कर रहे हैं तथा आगामी वर्ष इन ग्रामों में शराब की दुकानें न खोली जाने हेतु शराबबन्दी प्रस्ताव पास करके हरयाणा सरकार को भेज रहे हैं। श्री भजनलाल आर्य सभा प्रचारक पचायतों से सम्पर्क कर रहे हैं। सभा के उपदेशक प० चन्द्रपाल आर्य सिद्धान्त शास्त्री तथा स्वामी देवानन्द जी, प० मुरारीलाल बेचैन एवं प० शेरसिंह आर्य भजनोपदेशक जिला कुरुक्षेत्र, यमुनानगर मे शराबबन्दी प्रचार करके सत्याग्रह की तैयारी कर रहे हैं। प० चिरन्जीलाल आर्य की भजन मण्डली जिला कैथल, करनाल तथा पानीपत में शराबबन्दी प्रचार कर रही है। श्री रतनसिंह आर्य जि० रोहतक तथा सोनीपत में आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं से सम्पर्क कर रहे हैं।

१६ अगस्त को जि० महेन्द्रगढ के ग्राम छिलरोली मे तथा २१, २२ अगस्त को ग्राम निजामपुर, २२, २३ अगस्त को ग्राम खटोटी सुलतानपुर तथा २४ से २९ अगस्त को आर्यसमाज नारनौल में शराबबन्दी प्रचार द्वारा सत्याग्रह की तैयारी की जावेगी। निजामपुर मे शराब के ठेके पर धरनों का उद्घाटन सभा के अधिकारी करेंगे।

१५ अगस्त को रोहतक के सुभाषिया चौक पर स्वामी ओमानन्द सरस्वती की अध्यक्षता मे स्वतन्त्रता दिवस मनाया जावेगा वे शराब से मुक्ति पाने के कार्यक्रम का सन्देश देंगे। २१ से २७ अगस्त तक आर्यसमाज बहु अकबरपुर जि० रोहतक में वेद सप्ताह के अवसर पर शराबबन्दी सत्याग्रह की तैयारी की जावेगी।

बाढ़पीड़ित क्षेत्रों में सभा की ओर से औषधियों द्वारा मुफ्त इलाज

हरयाणा प्रदेश के अनेक क्षेत्रों में भयंकर बाढ़ आजाने से बुखार, खांसी, जुकाम, पेट दर्द आदि रोग फैल गये हैं। गत वर्षों की भांति आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा गुरुकुल झज्जर की ओर से बाढ़-पीड़ित क्षेत्रों में आयुर्वेदिक औषधि नि:शुल्क वितरण का कार्यक्रम बनाया गया है। श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के निर्देशन में गुरुकुल के कार्यकर्ता तथा उपदेशक एवं आर्यसमाज के कार्यकर्ता भ्रमण करके औषधियों का नि:शुल्क वितरण करेंगे।

गुरुकुल कांगड़ी हरद्वार में श्रावणी पर्व सम्पन्न

गुरुकुल विद्यालय विभाग में श्रावणी पर्व डा० महावीर जी ने पर्व के महत्त्व पर प्रकाश डाला तथा छात्रों को यज्ञोपवीत बदलवाते हुए इसका महत्व बताया। प० जनेश्वर शास्त्री ने ब्रह्मचर्य के पालन करने की शिक्षा दी। सहायक मुख्याधिष्ठाता श्री महेन्द्रकुमार जी ने भी इस पर्व पर राष्ट्ररक्षा करने पर बल दिया।

वेदप्रचार सप्ताह के पवित्र अवसर पर—"सामयिक लेख"

"वेदों का महत्त्व एवं रहस्य"

लेखक—सुखदेव शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक।

वेदों की महिमा अपार है। अतएव वेद आर्यजाति का सर्वस्व है। वेद मानव मात्र का प्रकाश स्तम्भ और शक्ति का स्रोत है। वेद का प्रकाश संसार भर में फैलकर मानव जीवन में व्याप्त निराशा, अज्ञान, अन्धकार, दुर्विचार, अनाचार, व्यभिचार, बलात्कार, दुर्गुण, मानसिक आधि-व्याधि और जीवन में विचार दिशा भ्रम को दूर कर सकता है। वेदों के पठन पाठन से संयम और सभ्यता एवं वैदिक संस्कृति तथा पवित्र आलोक सर्वत्र फैल सकता है। वेद विश्ववारा प्रथमा संस्कृति है। विश्व को सर्वप्रथम ज्ञान देने का श्रेय वेदों को ही है। जहां वेदों की ज्योति है, वहां ज्ञान विज्ञान का प्रकाश है। वहां उन्नति है, सुख है, शान्ति है, और है सतत विकास।

वेदों का स्वाध्याय प्रत्येक व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व की उन्नति का साधन है, विश्व बन्धुत्व का प्रेरक है, और विश्वधर्म का संस्थापक है।

वेद ईश्वरीय ज्ञान है, यह परमात्मा की पवित्र वाणी है अतएव वेद सामाजिक क्रान्ति का संदेशवाहक है। राष्ट्रीय एकता का प्रचारक है, विश्व धर्म, विश्व वैदिक संस्कृति का आदिम उपदेष्टा है। मानवधर्म का सर्वप्रथम संस्थापक है।

मानव सृष्टि के आरम्भ में वेद का ज्ञान परमात्मा ने ऋषियों को दिया। इसके प्रमाण के लिए ऋग्वेद के दशम मण्डल के मन्त्रों द्वारा यहां पर कुछ प्रमाण प्रस्तुत किये जाते हैं—

ऋग्वेद, मण्डल १० सूक्त ७१, मन्त्र १

'बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं यत्प्रैरत नामधेयं दधाना'।
यदेषां श्रेष्ठं यद् अरिप्रमासीत् प्रेणा तदेषां निहितं गुहाविः॥

अर्थात्-बृहस्पते-वेद के स्वामिन् परमात्मन्! सबसे पूर्व सृष्टि के आरम्भ में विभिन्न पदार्थों के नामकरण की इच्छा रखते हुए आदि ऋषियों ने जो वचन उच्चारण किए वह वाणी का प्रथम प्रकाश था। जो सर्गारम्भ में ऋषियों में श्रेष्ठ होता है और जो निर्दोष, पापरहित होता है, इनके गुहा-हृदय गुफा में रखा हुआ वह ज्ञान तेरी ही प्रेरणा से और प्रेम से प्रकट होता है।

तदेषां निहितं गुहाविः—इनके हृदय में रक्खा हुआ वही ज्ञान आदि ऋषियों द्वारा अन्यों के लिए प्रकट हुआ अर्थात् ऋषि लोग उस ज्ञान को दूसरों को सिखाते हैं।

यदेषां श्रेष्ठं यदरिप्रमासीत्—जो ज्ञान सबसे श्रेष्ठ और निर्दोष था, भ्रम आदि से रहित था वह ज्ञान इन ऋषियों को दिया गया। अर्थात् ईश्वर व्यापक है उसने यह वेद का ज्ञान अपनी प्रेरणा और प्राणियों की हित कामना से ऋषियों के पवित्र हृदयों में प्रकट किया। यह ज्ञान ऋषियों का अपना नहीं था, ईश्वरप्रदत्त था, अतएव श्रेष्ठ, निर्दोष एवं भ्रमरहित था। वेदों का आविर्भाव जिन ऋषियों के हृदय में सर्वप्रथम हुआ, उनके नामों का उल्लेख, ऋग्०, १०, ९२, १४ में किया गया है। यस्मिन् आश्वास० इस मन्त्र के अन्तिम भाग में—

कीलालपे सोमपृष्ठाय वेधसे हृदा मतिं जनये चारुमग्नये॥

अर्थात् वही ईश्वर, अग्नये–अग्नि के लिए, कीलालपे–वायु के लिए वेधसे–आदित्य के लिए, सोमपृष्ठाय–अंगिरा के लिए, हृदा–उनके हृदय के लिए, चारुम्–सुन्दर, मतिम्–वेद ज्ञान, जनये–प्रकट करता है।

इसी विषय को लेकर महर्षि दयानन्द सरस्वती सातवें समुल्लास के वेदेश्वर विषय में अथर्व० १०, ७, २० का मन्त्र उद्धृत करते हुए लिखते हैं—

यस्मादृचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकषन्। सामानि यस्य लोमानि-अथर्वाङ्गिरसो मुखम्। स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः।

जिस परमात्मा से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद प्रकाशित हुए हैं वह कौनसा देव है? इसका उत्तर—जो सबको उत्पन्न करके धारण कर रहा है वह परमात्मा है। इसी प्रकार यजुर्वेद ४०, ८ में भी आया है।

'स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधात् शाश्वतीभ्यः समाभ्यः'

जो स्वयम्भू, सर्वव्यापक, शुद्ध, सनातन निराकार परमेश्वर है वह सनातन जीवरूप प्रजा के कल्याणार्थ यथावत् रीतिपूर्वक वेद द्वारा सब विद्याओं का उपदेश करता है। परमेश्वर के सर्वशक्तिमान् और सर्वव्यापक होने से जीवों को अपनी व्याप्ति से वेद विद्या के उपदेश करने में कुछ भी मुखादि की अपेक्षा नहीं करनी पड़ती। जब परमेश्वर निराकार सर्वव्यापक है तो अपनी अखिल विद्या का उपदेश जीवस्थ स्वरूप से जीवात्मा में प्रकाशित कर देता है। इसी प्रकार ईश्वर ने जीवों को अन्तर्यामी रूप से उपदेश किया है। यह प्रथम उपदेश सर्वप्रथम पवित्रात्मा चार ऋषियों के हृदय में प्रकट करता है। प्रमाण के रूप में देखिये—ऋग् मण्डल १०, सूक्त १०५, मन्त्र ६ में—

प्रास्तौत् ऋष्व-ओजा ऋष्वेभिः ततक्ष शूर शवसा०—१

अर्थात् ऋष्व-ओजा—दर्शनीय महान् पराक्रमवाला प्रभु, ऋष्वेभि—ज्ञान का साक्षात् दर्शन करनेवाले ऋषियों द्वारा, प्रअस्तौत्-ज्ञान का उपदेश करता है। जगत् का निर्माता प्रभु ही, ततक्ष—इस जगत् को बनाता है। इसी प्रकार ऋग्०, मण्डल १०, मन्त्र ४ में बहुत ही स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है—

प्राचीनं बर्हिः प्रदिशा पृथिव्या वस्तोरस्या वृज्यते अग्रे अह्नाम्।
व्युप्रथते वितरं वरीयो देवेभ्यो अदितये स्योनम्॥

अर्थात्—अह्नां अग्रे—दिनों के आरम्भ में, अस्या पृथिव्या वस्तो-इस पृथिवी के बसाने के लिए, प्र-दिशा—परमात्मा के निर्देश से, प्राचीन बर्हि—पूर्व में प्रकट हुए सूर्य के तुल्य वेद ज्ञान, वृज्यते—प्रदान किया जाता है। यह वेदज्ञान, वि-तरं—विविध प्रकार से शिष्य परम्परा से दिया जाने योग्य एवं, वि-तर—विशेष रूप से जीवों को दुःख से तराने वाला, वरीयः—सर्वश्रेष्ठ होकर, विप्रथते—विविध रूपों में विस्तृत होता है, और, देवेभ्य—मनुष्यों के लिए और, अदितये—समस्त जगत्, पृथिवी माता पिता पुत्र आदि के लिए, स्योनम्—सुखकारी होता है।

इस सर्वहितकारी ज्ञान को परमात्मा चार ऋषियों पर प्रकट करता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थप्रकाश के सातवें समुल्लास में वेदेश्वर विषय में म० मनु का श्लोक प्रस्तुत करते हुए लिखा है—

अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्म सनातनम्। दुदोह यज्ञसिद्ध्यर्थमृग्यजुःसामलक्षणम्। अर्थात् "जिस परमात्मा ने आदिसृष्टि में मनुष्यों को उत्पन्न करके अग्नि आदि चारों महर्षियों के द्वारा चारों वेद ब्रह्मा को प्राप्त कराए। और उस ब्रह्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा से ऋग्, यजुः, साम और अथर्व वेद का ग्रहण किया। इसी बात का समर्थन करते हुए म० याज्ञवल्क्य ने शतपथ ब्राह्मण ११, ४, २, ३ में लिखा—"अग्नेर्ऋग्वेदो वायोर्यजुर्वेदः सूर्यात् सामवेदः, अर्थात् प्रथम सृष्टि के आदि में परमात्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा इन ऋषियों की आत्मा में एक-एक वेद का प्रकाश किया।

सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा उन मन्त्रद्रष्टा ऋषियों को हजारों वेदों के मन्त्रों को देता है जैसा कि ऋग् मण्डल १० सूक्त ८० के मन्त्र ४ में आता है—अग्निर्दात् द्रविणं वीरपेशा अग्निर्ऋषिं यः सहस्रा सनोति।

अर्थात् वह अग्निरूप तेजस्वी प्रभु, ज्ञानद्रष्टा ऋषि को, सहस्रा-सनोति—हजारों वेदवाणियां प्रदान करता है। इसी प्रकार ऋग्० मण्डल १०, सूक्त ८० के मन्त्र ५ में आया है कि—अग्निं उक्थैः ऋषयो विह्वयन्ते०—उस ज्ञानस्वरूप प्रभु को, ज्ञानदर्शी लोग अनेक वेदों के वचनों से उसकी स्तुति करते हैं।

इस प्रकार प्रतिदिन वेदों के मन्त्र पढ़ने से मनुष्य की ऊर्ध्वगति होती है—ऐसा ऋग्०, मण्डल १, सूक्त ८८, मन्त्र चार में कहा गया है—

'अहानि गृध्राः पर्या व आगुरिमां धियं वार्कार्यां च देवीम्।
ब्रह्म कृण्वन्तो गोतमासो अर्कैरूर्ध्वं नुनुद्र उत्सधिं पिबध्यै।

(क्रमशः)

ठेका बंद करवाने के लिए अलेवा वालों ने कमर कसी

जींद, ५ अगस्त (जनसत्ता)। अलेवा गाव के लोगों मे यहा शराब का सब बेड (मिनी ठेका) खोले जाने को लेकर तीव्र रोष है। गाव के लोग इस ठेके को बद कराने के लिए कमर कस रहे हैं।

जींद-असंध मार्ग पर जींद से लगभग २० किलोमीटर दूर स्थित अलेवा गाव में पिछले दिनो आबकारी व कराधान विभाग ने शराब सब-वेंड खोल दिया है। यह सब-वेंड खोनने के लिए गाव को पचायत ने प्रस्ताव पारित किया था। गाव में पिछले साल शराब का ठेका था, लेकिन गाव वालों ने इस बार ठेका नही खलने दिया क्योकि गाव के लोग शराब से बहुत अधिक दुखी थे।

गाव को शराब के ठेके की बीमारी से निजात दिलाकर खुश हुए अलेवा गांव के लोगों पर एकाएक उस समय बिजली-सी गिरी जब गांव मे सरकार ने शराब का सब-वेंड खोल दिया। गाव को पचायत ने चोरी-छिपे एक प्रस्ताव पारितकर सब-वेंड खोने जाने की अनुमति दी है। इससे गाव के लोगों में अपने निर्वाचित प्रतिनिधियों के प्रति गुस्सा है। गांव के लोगों का आरोप है कि ठेकेदार से पैसे खाकर सरपच व पंचायत ने यह सब-वेंड खुलवाया है। पचायत द्वारा गाव के लोगों के साथ इस कथित धोखे को लेकर मंगलवार को गांव मे पचायत भी हुई जिसमें सरपच को खूब खरी खोटी सुनाई गई।

गाव के लोग अब अपने यहा से शराब के इस सब-व ड को हटवाने के लिए आन्दोलन करने का मन बना रहे हैं। इसके लिए लोगों ने प्रारम्भिक भागदौड आरम्भ भी कर दी है। मंगलवार को गांव के कुछ लोग इस मामले में पुलिस अधीक्षक से मिले और उपायुक्त से भी मिलने की बात भी उन्होने कही।

अलेवा गांव के लोगो का कहना है कि उनके यहा शराब का सब बेंड खुलने से तो उनका चोनहराम हुआ ही है गाव को गलियो मे दुकानों पर बिकने वाली शराब ने तो गाव का जीवन नरक ही बना छोडा है। गांव के लोगो का कहना है कि शराबी रात को गलियो मे हुडदग मचाते फिरते हैं।

नोट—यह ठेका बन्द करवाने के लिए शराबबन्दी सत्याग्रह के द्वितीय सर्वाधिकारी स्वामी रत्नदेव जी तथा सभा के उपदेशक प० चन्द्रपाल सिद्धान्त शास्त्री आर्यसमाज के कार्यकर्ताओ के साथ प्रयत्नशील हैं।

ग्राम चानौत जिला हिसार का प्रथम वार्षिकोत्सव सम्पन्न

मा० हरिराम आर्य चानौत एवं ब्र० रामफल आर्य धिराय के पुरुषार्थ से ग्राम चानौत में आर्यसमाज का प्रथम वार्षिक उत्सव दिनाक ४-५ अगस्त को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर निम्न विद्वान् वक्ताओ ने भाग लिया। स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, स्वामी सवदानन्द जी, सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी, श्री हरिसिंह सैनी, श्री होरानन्द जो आर्य, पं० रविदत्त शास्त्री, चौ० विजयकुमार सयोजक शराबबन्दी समिति हरियाणा, चौ० सूबेसिंह सभा मन्त्री, सभा उपदेशक श्री अतरसिह आर्य क्रांतिकारी, श्री धर्मवीर आर्य, मा० ज्ञानीराम आर्य, महात्मा रामुमुनि, श्री चिन्तामणि शास्त्री ने भाग लिया। उपरोक्त विद्वानों ने शराबबन्दी सम्मेलन, वेद रक्षा सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, आर्यसमाज के कार्यों पर विस्तार से विचार रखे। विशेषकर सभी वक्ताओं ने गाव से शराब को बन्द करवाने पर बल दिया।

प्रो० साहब ने अनेक प्रान्तों के उदाहरण देकर बताया कि सारे देश में शराबबन्दी आन्दोलन चल पडा है महिलाये भी इसमे सक्रिय भाग ले रही हैं। हरयाणा में सरकार शराब की नदिया बहा रही है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भारतीय किसान यूनियन अनेक संगठन शराबबन्दी आन्दोलन चला रहे हैं। उन्होंने कहा कि कर्मचारी रिश्वत की शराब पीते हैं। राजनेता चन्दे की शराब पीते हैं तथा बडे सेठ चोरी की शराब पीते हैं। सिर्फ मजदूर-किसान अपने खून-पसीने की कमाई की पीते हैं। अब हमें आजादी को दूसरी लडाई लडनी है। अब शराब रहेगी या आर्य समाज रहेगा। स्वामी ओमानन्द जी ने अपने पूर्वजो का हवाला देकर बताया कि हमारा चरित्र कितना ऊचा था। एक-एक सेर घो खाते थे गाव पहलवान होते थे। लम्बी आयु होती थी। भीष्म पितामह १७५ वर्ष का लडाई में लडा। महर्षि व्यास की ४०० वर्ष की आयु थी। इतिहास के अनेक उदाहरण देकर शराब से होने वाले नुकसान से अवगत कराया। शराबबन्दी सत्याग्रह मे बढ-चढकर भाग लेने की प्रेरणा की। प्रातःकाल हरिजन चौपाल मे यज्ञ किया गया। एक नवयुवक सत्यपाल ने शराब न पीने का व्रत लिया। श्री तेजपाल आर्य धाणा निवासी की घडवा पार्टी तथा गुरुकुल झज्जर के ब्र० जयदेव आर्य के प्रेरणादायक भजन हुए। मच का सचालन मन्त्री आर्य समाज चानौत श्री क्रांतिकारी जी ने किया।

—मन्त्री आर्यसमाज चानौत

श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर—

हे कृष्ण ! तुम्हे शत-शत प्रणाम

राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ० प्र०)

दिव्य महानतम सत्कर्मों से,
बने तुम्हीं भारत भगवान्।
सद्विवेक व सद्वृत्तियों का,
तुमने ताना जयी वितान।

डका बजा पुन गीता का,
धर्म-सत्य का ग्राम-ग्राम।
हे कृष्ण ! तुम्हें, शत-शत प्रणाम्।

भ्रष्ट तथा अन्याय राजा,
जो थे, उनको मार गिराया।
भारत की धरती पर फिर से,
सत्य धर्म का ध्वज लहराया।

बाध एकता की डोरी मे,
किया राष्ट्र यह ललित ललाम।
हे कृष्ण ! तुम्हें, शत-शत प्रणाम॥

द्रोपदियो की लाज बचाकर,
दिया हमे गीता का ज्ञान।
धर्म तथा स्वराष्ट्र की खातिर,
हमे सिखाया देना प्राण।

मोह भग का वीर पाथ का,
पथ दिखलाया था निष्काम।
हे कृष्ण ! तुम्हें, शत-शत प्रणाम्॥

"वेदों का महत्त्व एवं आदर्श"

चिरन्तनकाल से वेद भारतीय सस्कृति के प्रकाशस्तम्भ रहे हैं। भारतीय समाज के सगठन और उसकी जोवनचर्या के नियमन तथा व्यवस्थापन के साथ-साथ उसकी आध्यात्मिक उदात्त भावनाओं की प्रेरणा मे भी वेदो का प्रमुख स्थान रहा है—

"व्यवस्थितार्यमर्याद कृतवर्णाश्रस्थिति ।
त्रय्या हि रक्षितो लोक प्रसीदति न सीदति ॥

इस तरह सामाजिक व्यवस्था के द्वारा वेद के लोक कल्याणकारी प्रभाव का वर्णन आचार्य कौटिल्य ने किया है। इसी प्रभाव से अभि-प्रेरित होकर न केवल भारत के क्षत्र मे, अपितु देश-देशान्तरो मे भी सच्ची शान्ति, सहिष्णुता, आध्यात्मिक भावना, एव प्रेम का सन्देश दिया है। वेद वास्तविक रूप मे भारतीय सस्कृति के प्राण हैं, और यही कारण है कि भारतीय सस्कृति ससार मे अजर और अमर है। इन्ही मौलिक कारणो से अभिप्रेरित होकर ही वेदो के स्वाध्याय की महिमा हमारे प्राचीन स्मृतिकारो तथा शास्त्रविदो ने की है—

पितृदेवमनुष्याणा वेदश्चक्षु सनातनम् ।
अशक्य चाप्रमेय-च वेदशास्त्रसमिति स्थिति ॥
य कश्चित्कस्यचिद्धर्मो मनुना परिकीर्तित ।
स सोऽभिहितो वेदे सर्वज्ञानमयो हि स ॥
वेदोऽखिलो धर्ममूलम् ॥

धर्म जिज्ञासमानाना प्रमाण परम श्रुति ॥

भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता मे वेद के महत्त्व का प्रतिपादन इन शब्दो मे किया है—

य शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारत ।
न स सिद्धिमाप्नोति न सुख न परा गतिम् ॥

इस प्रकार ब्राह्मण (द्विज) का यह परम पावन कर्त्तव्य कर्म है कि वह समस्त वेदो का अध्ययन करें और उसके वास्तविक रहस्य को समझे। वेदाभ्यास ब्राह्मण का सबसे बडा तप है। यही नहीं, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द एव ज्योतिष वेदागो का तो प्रयोजन ही वेदो की रक्षा, वेदार्थ ज्ञान की योग्यता तथा वैदिक कर्मों का सुचारू रूप से सपादनादि बतलाना है। जैसे सूर्य के प्रकाश के लिए दूसरे किसी प्रकाश की आवश्यकता नही होती, ठीक वैसे ही वेदो की महत्ता को सिद्ध करने के लिए वेदो की ही सहायता लेनी चाहिए। अत इसी आधार पर परीक्षण प्रारम्भ करते हैं —

वैदिक देवतावाद

वैदिक देवतावाद का लक्ष्य यही है कि विश्वप्रपच को प्रत्येक विभूति मे उसके द्वारा उस परमतत्त्व का साक्षात्कार किया जाये, जिसका मुनि (योगी) लोग बडो तपस्या और साधना से अपने अन्त करण मे साक्षात्कार (तादात्म्य) करना चाहते हैं। पर साक्षात्कार कर पाते हैं अथवा नही यह सदिग्ध है।

वैदिक उदात्त भावनाए

वेदो की महत्ता एवं अद्वितीय वैशिष्ट्य इस बात मे है कि वे एक अत्यन्त ही ऊचे, विशाल और अत्यन्त व्यापक स्तर पर मानव को बिठाकर उपदेश देते हैं। उनकी दृष्टि यावद विश्वप्रपच मे व्याप्त है अर्थात् वह सत्य तथा आदर्श समाज की कल्पना करते हैं। यही कारण है कि वेदो को हम विश्वबन्धुत्व, भद्र भावना, आशावाद, समष्टियोजना, विश्व शान्ति श्रद्धा, निर्भयता तथा सामनस्य के महान् आदर्शों और उदार भावनाओ से सर्वतोभावेन ओतप्रोत पाते हैं। समाज के परिप्रेक्ष्य मे —

"अनुव्रत. पितु पुत्रो मात्रा भवतु समना"

विश्वबन्धुत्व और विश्वशान्ति

वेदो मे मित्रस्याह चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥ यजुर्वेद ३६/१८
पुमान् प्रमास परिपातु विश्वतः ॥ ऋक् ६/७५/१४
जैसे विश्वबन्धुत्व और

"श न सूर्य उरुचक्षा उदेतु श नश्चतस्र प्रदिशो भवन्तु ॥ ऋक् ७/३५/८ जैसे विश्व शान्ति के भाव भरे पडे हैं। आधुनिक युग मे वेदों के इस सन्देश की परमावश्यकता है।

समष्टि भावना

वैदिक प्रार्थनाओं की यह विशेषता यत्र-तत्र-सर्वत्र दृष्टि गोचर होती है कि वे प्रायेण बहुवचन मे होती है और उसमें समष्टि कल्याण की भावना निहित रहती है :—

"धियो यो न प्रचोदयात्" समानो मन्त्र
यद् भद्र तन्न आसुव
सर्वे भवन्तु सुखिन सर्वे सन्तु निरामया ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु म कश्चिद् दु खभाग भवेत् ॥

वर्तमान हिन्दू धर्म और हिन्दू समाज की परमोन्नति तथा रक्षा के लिए यह समष्टिभावना नितान्त आवश्यक है।

जसे एक फूल के सौन्दर्य और सुगन्ध किसी बाह्य कारण से न होकर उसके स्वरूप का अङ्ग है, ठीक वैसे ही एक कल्याण मार्ग के पथिक का निरपेक्षया अनासक्त होकर कर्तव्य पालन करना उसके स्वरूप का अङ्ग होता है। उसके जीवन का सार्थक्य जीवन की पूर्णाङ्गिता ही इसमे होती है।

'आनो भद्रा क्रतवो यन्तु विश्वत"
"भद्र भद्र न आ भर"
"यद् भद्रं तन्न आसव"
"भद्र कर्णेभि .... ।

भद्रं नो अपि वातय मन इत्यादि प्रकार से शतश वेदों के मन्त्र भद्र भावना से ओत-प्रोत है।

आशावाद

वैदिक धर्म की विशेषताओं में एक विशेषता उसका आशावाद भी है। वैदिक साहित्य आशावाद के ओज पूर्णभावों से परिपूर्ण ही नहीं अपितु ओत-प्रोत है।

"पश्येम शरद शतम् जीवेम शरद शतम्"
"अदीना स्याम शरद शतम्'
"पूषेम् शरद शतम्"
"ओजोऽस्योजो मयि धेहि"

'विश्वदानी समनस स्याम" इत्यादि सभी प्रार्थनाये आशावाद की ही समुज्जवल प्रतीक है। वर्तमान युग मे जबकि विश्व पर युद्ध के बादल मडरा रहे हैं, जिस युग मे मानवता,ईर्ष्या, द्वेष, वैमनस्य, आतक, भय इत्यादि आक्रान्त है, तथा मानव-मानव न रहकर दानव बन गया है, ऐसे समय मे वेदवाणी रूपी निर्मल गगा की पावन धारा व्यक्ति के मानस-पटल को पवित्र करने मे नितान्त सक्षम है।

"आनो भद्रा क्रतवो यन्तु विश्वत·" अर्थात् सभी प्रकार के अच्छे विचार हमें चारों दिशाओं से प्राप्त हों। यदि हम भव्य समाज का निर्माण करना चाहते हैं, यदि हम मानव को मानव बनाना चाहते हैं, तो हमें वेदों की ओर चलना होगा, (move to Vedas, मूव टु वेदाज) तभी हम अपने अतीत के गौरव को पहचान पायेंगे।

डा० पुरुषोत्तम शर्मा शास्त्री प्रवक्ता, स्नातकोत्तर संस्कृत
विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय जम्मू (तवी)-180004

आर्यसमाज खटौटी सुल्तानपुर जिला महेन्द्रगढ़ का वार्षिक चुनाव

प्रधान—बशीधर आर्य, उपप्रधान—शेरसिंह, मन्त्री—डा० सुलतानसिंह, उपमन्त्री—रणधीरसिंह, कोषाध्यक्ष—मनोहरलाल पुस्तकाध्यक्ष—म० गोकलचन्द्र।

शोक समाचार

आर्यसमाज नारायणगढ जिला अम्बाला के प्रधान डा० वैणीप्रसाद आर्य का ८४ वर्ष की आयु मे दिनाक २७ जुलाई ९३ को निधन होगया। उन्होंने अपना सारा जीवन आर्यसमाज की सेवा तथा शिक्षाप्रसार मे लगा दिया। वे आर्यसमाज के स्तम्भ थे तथा सभा के परम सहयोगी थे। प्रत्येक आंदोलन मे बढ-चढकर भाग लेते थे।

आर्यसमाज नारायणगढ की ओर से एक शोकसभा का आयोजन किया गया।

सभामन्त्री श्री सूबेसिंह तथा हरयाणा शराबबन्दी समिति के सयोजक श्री विजयकुमार ने इनके निधन पर गहरा शोक प्रकट किया।

—रामनिरजन आर्य मन्त्री

शोक समाचार

दिनाक १५-७-९३ को श्री सूरतसिंह कोषाध्यक्ष आर्यसमाज राजलू गढी गढी के भाई व जगबीरसिंह के पिता चौ० कर्णसिंह राठी का अचानक स्वर्गवास होगया। परिवारवालो ने उनकी शोकसभा पर प० रतनसिह आर्य उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को बुलाकर २६-७-९३ को यज्ञ करवाया। आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा हाल मे पूरे सघर्ष से शराबबन्दी आन्दोलन चलाने पर रोशनी डाली और लोगों का आह्वान किया और अन्त मे उनके परिवार को इस चोट के सहन करने की शक्ति और उस आत्मा को शान्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की यज्ञ पर ५०-६० स्त्री-पुरुष थे। सब पर बडा प्रभाव पडा और उनके परिवार ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को २६२ रु० दान दिया।

शराबबन्दी पर भजन

टेक—दारु जैसी चीज बुरी ना, तज दो इसी बीमारी नै।
बच्चो तक का खून पी लिया, देखो इस हत्यारी नै॥

१ पीकर लहू मदिरा रूपी, यहा मन बहलाया जाता है।
बहन-बेटी की इज्जत से, इसका कर्ज चुकाया जाता है।
लुच्चा गुडा नीच शराबी, पास बिठाया जाता है।
दो घूट पीकर गन्दगी, उसे खास बताया जाता है।
फिर बेटी तक की शान चली जा पीने की लाचारी मैं।
बच्चो तक का खून पी लिया।

२ दारू पीनै वालो को अक्सर भूखे मरते देखा है।
सौ-सौ एकड बेच के, बर्तन गिरवी धरते देखा है।
सातबास में इज्जत थी, दारू से गिरते देखा है।
उनके बच्चो को कपड बिन नगे फिरते देखा है।
ओ इज्जत वालो! कैसे पत्थर पड गए अकल तुम्हारी मैं।
बच्चो तक का खून पी लिया।

३ सच्च बतलाओ पीने से कुछ आनो जाना हुई के ना।
बिना बात का बनै बतगड, बडी कहानी हुई के ना।
दारू पीकर फिर राड छिडी, फिर कुनबा घाणा हुई के ना।
दारू से इज्जत, सेहत, धन की हानि हुई के ना।
दो भाईयो का जूत बजा दे, खो दे रिस्तेदारी नै।
बच्चो तक का खून पी लिया।

४ पीनो और पिलानो छोडो, मत ज्यादा नुकसान करो।
राजपूत यदुवश मिटे, इस दारू कारण ध्यान धरो।
दूध-दही, घी, मक्खन से, प्यारे मित्रो का मान करो।
किसी धर्म मे दारू पीना लिखा हो प्रणाम करो।
"दलाल" सोचना चाहिए, कुछ भारत सरकार हमारी।
बच्चो तक का खून पी लिया देखो इस हत्यारी नै।

प्रेषक—अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी संयोजक
शराबबन्दी समिति, जिला हिसार

स्वाधीनता दिवस पर

अमर रहे यह दिवस महान

बन्धन मुक्त किया था मा को,
तोड गुलामी की जजीर।
नव आशा अभिलाषा लेकर,
बदला भारत की तकदीर॥

स्वतन्त्रता का गौरव मण्डित—
बना विहसता यह प्रतिमान।
अमर रहे यह दिवस महान॥

अगणित वीरो ने इसके हित,
त्याग-तपो का पथ अपनाया।
प्राणो का उत्सर्ग स्वत कर,
अपना-अपना रक्त बहाया॥

अमर शहीदो के शोणित से—
धन्य बना था फिर बलिदान।
अमर रहे यह दिवस महान॥

आओ! भारत के पुत्रो! फिर,
भारत को मजबूत बनाएं।
त्यागी बलिदानी बन करके,
धरती पर हम स्वर्ग रचाए॥

महिमण्डल पर गूज उठे फिर—
भारत मा की जय का गान।
अमर रहे यह दिवस महान।

राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति,
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ० प्र०)

शराबबन्दी सत्याग्रह के प्रथम सर्वाधिकारी स्वामी ओमानन्द सरस्वती की आर्य जनता के नाम अपील

यदि आप हरयाणा के माथे से शराब का कलंक मिटाना चाहते हैं तो—

१ अपने निकट की ग्राम पंचायतो को प्रेरणा करके ३० सितम्बर तक शराबबन्दी के प्रस्ताव करवाकर हरयाणा आबकारी विभाग के आयुक्त को चण्डीगढ़ भिजवावें।

२. अपने निकट के शराब के ठेकों पर धरणें दिलवाने मे योगदान करें।

३. शराबबन्दी सत्याग्रह की तैयारी हेतु प्रत्येक ग्राम से ११-११ सत्याग्रहियो की सूची तथा ११००-११०० रु० की दान राशि निम्न पते पर भिजवाकर रचनात्मक सहयोग करें।

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ
रोहतक (हरयाणा)

बालसमन्द धरने पर आर्य नेताओं का आह्वान

बालसमन्द मे २७-७-९३ से नाटकोय ढंग से सरकार ने शराब का ठेका पुन खोल दिया। उसके ३ घण्टे बाद सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी के नेतृत्व मे धरना आरम्भ कर दिया गया। नवयुवक बहादुरी तथा उत्साह से मैदान मे डटे हुवे हैं। शराब पीने वालो और खरीदने वालो को समझा रहे हैं न मानने पर बोतल फोड दी जाती हैं। ठेकेदार बुरी तरह डरा हुआ है। बार-बार पुलिस का आसरा ले रहा है। पुलिस ठेकेदारों की सहायता कर रही है। नवयुवक नारे लगा रहे हैं, ठेकेदारों ने टूक दिखाया—पुलिस प्रशासन भागा आया। शराब का ठेकेदार देश का गद्दार, शराब क्या करती है बेटी बाप से डरती है। शराब पीना छोड दो, शराब का ठेका बन्द करो। शराब पिलाए जो सरकार वह सरकार निकमी है। गली-गली में जाएगें शराब बन्द करायेगें आदि बच्चे सायकाल गाव मे नारे लगाते हैं। दिन-प्रतिदिन गाव में ठेकेदार एव सरकार के विरुद्ध वातावरण बनता जा रहा है। नवयुवकों मे काफी उत्साह है महाशय रामजीलाल तथा बिरसालाराम आर्य का भी पूर्ण सहयोग एवं आशीर्वाद मिल रहा है। एक तारीख को ठेकेदार ने एक शराबी को मुफ्त शराब पीलाकर धरने पर झगडा करवाने का षडयन्त्र रचा। लेकिन उमेद शराबी ने पुन ठेकेदार से शराब मांगी इन्कार करने पर उस शराबी ने ठेकेदार फूलाराम की ही पिटाई कर दी।

दिनाक ५-८-९३ को साय ५ बजे धरना स्थल पर आर्य नेता पधारे। स्वामी सर्वदानन्द गुरुकुल धीरणवास के कुलपति की अध्यक्षता में शराबबन्दी सम्मेलन हुआ। इस अवसर पर स्वामी ओमानन्द सरस्वती, सभा प्रधान प्रो० शेरसिह, चौ० विजयकुमार संयोजक शराबबन्दी समिति हरयाणा, चौ० सूबेसिंह जी सभा मन्त्री गुरुकुल झज्जर के विद्यार्थी धरने पर आए। प्रो० साहब ने लोगों को बताया कि सरकार ने आपके साथ विश्वासघात किया है। यदि थूककर चाटा है। एक बार ठेका बन्द करके पुन खोल दिया। हिम्मत रखो ठेका अवश्य बन्द होगा। सभा आपके साथ है। स्वामी ओमानन्द जी ने कहा कि आप घबराओ मत। आपकी जीत होगी। भजनलाल ने आर्यसमाज से टकर ली है। अब उसे पता चल जाएगा। अगर सरकार बाज नही आई तो हम शराबबन्दी सत्याग्रह बालसमन्द से ही आरम्भ करेगें। जेल भरने के लिए सारे गुरुकुल तथा सारे हरयाणा से जत्थे आएगें। सभी वक्ताओं ने सरकार की शराब बढावा नीति की आलोचना की। श्री अतरसिंह आर्य ने दोहराया कि ठेका हर कीमत पर बन्द होगा। हम ठेके से एक भी बून्द शराब नहीं बिकने देगें। बालसमन्द के नवयुवकों ने प्रतिज्ञा की है कि न हम पीएगें न पीने देंगे। जब तक ठेका बन्द नही होगा धरना जारी रहेगा। इन आर्य नेताओं के आने पर गाव मे अच्छा माहोल बना है। लोगों मे काफी उत्साह है। काम का समय होते हुवे भी दिन में २०-२५ लोग धरने पर बैठते है। रात्रि को सैकडों नवयुवक प्रतिदिन धरने पर आते हैं। मा० फूलकुमार रामायण का पाठ करते हैं।

सभा की भजन मण्डली श्री जयपाल बेधड़क, श्री रामकुमार आर्य तथा श्री खेमसिंह आर्य बालसमन्द तथा निकट के ग्रामों में धरणों को सफल कराने के लिए प्रचार कर रहे हैं।

प्रतापसिंह आर्य सचिव
शराबबन्दी समिति बालसमन्द (हिसार)

बाढ़पीड़ितो के लिए विशेष सहायता शिविर

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की ओर से चरखी दादरी में डा. सोमवीरसिंह की देखरेख में तथा बिरही कलां में डा. सत्यवीरसिंह की देखरेख में बाढपीड़ितों की सहायता के लिए दो निःशुल्क विशेष शिविर चार-चार दिन के आयोजित किए गए जिनका उद्घाटन पूर्व उपायुक्त श्री विजयकुमार ने किया तथा सभामन्त्री श्री सूबेसिंह ने दोनो शिविरों का निरीक्षण किया। इन शिविरों के लिए स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने निःशुल्क औषधियां प्रदान करके विशेष सहायता की। —प्रकाशवीर विद्यालंकार

दूसरी किस्त

शराब : आज और कल

अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् के चेयरमैन माननीय बख्शी टेकचन्द (पजाब हाईकोर्ट के पूर्व जज) सारे भारत का दौरा करके १८ मार्च १९९१ को हिसार पधारे थे और सर्वोदय भवन हिसार में एक प्रेस कान्फ्रेंस रखी जिसमें सयोग से मैं भी सम्मिलित था। चेयरमैन महोदय दुनिया के ३५ देशों का दौरा करके लौटे थे-यह जानने के लिए कि दूसरे देश खास कर अमेरिका, योरुप और एशियाई देशों मे नशाबन्दी के कार्यक्रम कैसे कैसे चलाए जा रहे हैं। उन्होंने नशाबन्दी के बारे मे हमें विस्तार से जानकारी दी और बताया कि योरुप अमेरिका, एशिया के सभी देश अलकोहल से बडे दुःखी हैं। इन देशों के बडे-बुजुर्ग, बुद्धि-जीवी वर्ग, सामाजिक व धार्मिक सस्थाएं और खुद सरकारे भी "नशाबन्दी" के कार्यक्रम बनाकर, यह बुराई मिटाने मे लगी हुई हैं।

विशेषकर फ्रास देश, जो शराब पीने में दुनिया में बदनाम था, के बारे में बताया कि वहा की सरकार ने इस घातक बुराई से राष्ट्र को उबारने के लिए कई कारगर कदम उठाए हैं। जैसे कि फ्रास के समाचार-पत्रों, रेडियो, टी. वी आदि पर शराब के विज्ञापनों की मनाही करना (यहा के सभी अखबारो में व्हिस्की, ब्राण्डी और बियर आदि शराबों के विज्ञापनों की भरमार होती थी)। सार्वजनिक स्थानो, गिरजाघरों, बस अड्डो, रेलवे स्टेशनों और चौरास्तों पर शराब की दुकानें खोलने पर पाबन्दी और मेहमान-निवाजी के लिए शराब के 'पैग की बजाये, अंगूरों के रस का गिलास' पेश करने की प्रथा डालना।

२ रूस में भी—इसी तरह रूस में जहा "वोदका" (रूसी-शराब) खाने की मेज पर खाने के साथ रखी जाती और कि हर रूसी अपनी कुल आय का १/३ भाग शराब की नजर कर देता था। राष्ट्रपति गोर्बाचेव ने अलकोहल के जहर से ग्रस्त राष्ट्र को नष्ट-भ्रष्ट होते देख' प्रतिज्ञा की कि मैं इस "हरे साप (Green Snake) को मारकर दम लूंगा" (रूस में शराब को "हरे-साप" के नाम से पुकारते हैं) और इस सच्चे देश-हितैषी राष्ट्रपति ने राष्ट्र को 'हरे-सांप' की तबाही से बचाने के लिए, फौरी तौर पर कई कदम उठाए। जैसे—

१) सरकारी भोजों में शराब परोसना बन्द करना।

२) शराब पीकर सडकों पर गिरनेवालों, शोर-शराबा करने वालो को सख्त सजायें मुकर्रर करना।

३) २१ वर्ष से कम आयु के नौजवानों को शराब पीने, पिलाने, लाने और खरीदने-बेचने की मनाही करना।

४) कम्युनिस्ट पार्टी के १८५ लाख सदस्यों/वर्करों को शराब के खिलाफ प्रचार करने और खुद को शराब न पीने के आदेश देना और यह भी वार्निग (Warning) दी गई कि जो सदस्य शराबी है, उसे पार्टी से निकाला भी जा सकता है।

५) ५०,००० डाक्टरो का शराब की बुराई तथा इसके प्रयोग से स्वास्थ्य पर पड़नेवाले कुप्रभावों के विरुद्ध अभियान चलाया जाना।

६) रेडियो, टेलीविजन तथा समाचार-पत्रों में शराब के विज्ञापन बन्द कर, शराब के खिलाफ प्रचार-प्रसार के आदेश देना।

७) शराब की दुकानों के खुलने का समय (२ से ७ बजे साय) मुकर्रर करना।

८) ३०% शराब की बिक्री एकदम कानूनन घटाना आदि-आदि।

और नतीजे के तौर पर रूस में ३-४ वर्षों में ही १५% लोगों ने शराब छोड़ दी। अगर यह जनहितैषी राष्ट्रपति पूरे ५ (पांच) वर्ष रह जाता, तो अवश्य ही ५०% शराब और शराबी कम हो जाते!! काश! हमारे देश के कर्णधार—रूस, फ्रांस जैसे देशों के जन-हितैषी शासकों से कुछ सीख लें!!!

महर्षि-मुनियों, सन्त-महात्माओं का देश, राम-कृष्ण, दयानन्द-गांधी का देश आज कहां खड़ा है? जनता, जनता की नुमाइन्दा सरकार, नेतागण, दल और नौकरशाही (ब्यूरोक्रेसी) देश के प्रति क्या जुम्मेवारी निभा रहे हैं? देश की क्या सेवा कर रहे हैं। देश में किस किस्म की तरक्की और विकास हो रहा है? ऐसे प्रश्न हैं, जिन पर गम्भीरता से विचार करना देश के हर होशमन्द नागरिक का फर्ज है।

वरना, कहीं ऐसा न हो कि हम मुगलिया खानदान के आखिरी बादशाहों की तरह, नशे और विलासिता का शिकार होकर, देश को गारत कर डालें। यहां शायरे-आजम इकबाल का यह शेर,

"ना सम्भलोगे तो मिट जाओगे ऐ! हिन्दोस्ता वालो।
तुम्हारी दास्ता तक ना रहेगी, दास्तानो में॥"

चेतावनी के तौर पर लिखे बगैर नहीं रह सकता।

—सग्राम आर्य, ग्राम व पोस्ट दडौलो (हिसार)

नोट—एक शराबी की पत्नी अपने पति से शराब छोडने के लिए कहती है।

भजन शराब विरोधी

टेक—सजना छोड दे दारू नै। सजना छोड दे दारू नै।
मैं कहू जोड के हाथ, मान मेरी बात हो सजना छोड दे। सजना

१ दारू पीके आता है सब तेरे को बिसरावें पिया।
नफरत करते तेरे से ना कोई पास बिठावे पिया।
बदबू से तन सड रहा सारा कैसे पास बुलावै पिया।
इतना बुरा लगे लोगो को दूर-दूर सब चाहवें पिया।
सजना फोड दे बोतल नै।
सब कहें तेरे को ऊत, मारते जूत। हो सजना छोड दे। सजना

२ नशा हो रहा इतना ज्यादा, गिर गया गन्दो नाली मे।
मुर्दे जैसी ल्हास पडी देखी तो घणी शर्माली मैं।
मेरे से तू नहीं उठा। रामू नै बुलावण चाली मैं।
समाज मे बदनाम हुए यह गुण शराब की प्याली मे।
सजना छोड दे प्यालो नै॥ तेरे मुह से पड रही लार,
मैं हुई लाचार, हो सजना छोड दे॥ सजना

३ ईश्वर ने चोला मनुष्य दिया, किया इसका नही विचार पिया।
धर्म कर्म का पता नही हुआ पशुओ मे शुम्मार पिया।
चाहे जिसमे करें लडाई ना अच्छा व्यवहार पिया।
सखिया ताने मार रही मैं सब तरिया गई हार पिया।
सजना छोड दे शीशी नै। तू नही आ रहा बाज, गई सब लाज,
हो सजना छोड दे। सजना

४ सारो धरती मोल बेच दो, मकान भी बिक जावेगा।
रहने को कोई ठोड बचे ना बता फिर कहा जावेगा।
बच्चे रुल रहे बुरो तरह ना तेरी समझ मैं आवेगा।
रामदुलारी स्यानी हो गई कैसे विवाह रचावेगा।
सजना तू मत पी दारू नै। हम फिरे मागते भीख मान मेरी सीख
हो सजना छोड दे दारू नै। सजना

५ बुद्धि नष्ट हुई तेरी, पागल कुत्ते ज्यो डोल रहा।
हड्डी, मास, रक्त सब सूखा, तुतला करके बोल रहा।
काम नही कुछ भी बन पाता, बैठा छाती छोल रहा।
लत्ते गाभे दे ठेके पै, चुका सुरा का मोल रहा।
सजना तू मत जा ठेके पै। मर जायेगा 'प्रह्लाद' मान फरियाद,
हो सजना छोड दे। सजना
मैं कहू जोड के हाथ मान मेरी बात हो सजना छोड दे।
सजना छोड दे दारू नै। सजना छोड दे दारू नै।
मैं कहू जोड के हाथ

लेखक—प्रह्लाद आर्य प्रभाकर, ग्राम=नगली,
डा०—भुगारका, जिला महेन्द्रगढ (हरयाणा)

स्वास्थ्य चर्चा—

नजला—जुकाम

डा० सोमवीर उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
रिटायर्ड आ० चिकित्साधिकारी,
चिकित्सक स्वामी स्वतन्त्रानन्द धर्मार्थ औषधालय

वैसे देखने मे अनेक रोग ऐसे होते हैं जो साधारण प्रतीत होते हैं और थोडी सावधानी से जल्दी ही बिना दवाई के ठीक हो जाते हैं, किन्तु यदि लापरवाही की जावे तो भयंकर रोग का रूप धारण कर लेते हैं। नजला-जुकाम भी ऐसा ही रोग है। यदि हम थोडी सावधानी बरते तो बिना दवाई के दो-तीन दिन मे ठीक हो जाते हैं।

शायद ही कोई ऐसा आदमी होगा जिसे कभी न कभी यह बीमारी न हुई हो।

यदि इस रोग के प्रति हम लापरवाही करें—विषम भोजन व प्रतिकूल आहार विहार करे तो नजला बढकर खासी, दमा तथा तपेदिक जैसी भयंकर व्याधि का रूप धारण कर सकता है। अत हमे सावधानी के साथ रहकर आवश्यकतानुसार दवाई का प्रयोग करना चाहिए।

आयुर्वेद के मतानुसार इसे वातज, पित्तज, कफज और सन्निपातज चार प्रकार का मानते हैं।

कारण—मलमूत्र के वेग को रोकने से, नाक मे धूल जाने से, अजीर्ण से, रात को अधिक जागने से, बहुत चिल्लाकर बोलते रहने से, क्रोध से, ऋतु बदलने से, सिर में बहुत धूप लगने से, दिन मे सोने से, नया पानी पीने से जैसे वर्षा के बाद तालाब या जोहड का पानी पीने से, ठण्डे जल मे अधिक देर तक स्नान करने से, धुआ लगने से, वर्षा में अधिक भीग जाने से, तेज ठण्डी हवा मे स्कूटर या मोटर साईकल पर नगे सिर सफर करने से, रात को ठण्ड लगने से या ओस मे रहने आदि कारणो से सिर मे कफ एकत्रित हो जाता है, जिससे वायु बढकर नजला-जुकाम उत्पन्न होता है। नासिका मल मे रोगाणु उत्पन्न हो जाते हैं जो अधिक बढने पर नाक की अन्दर की झिल्ली को प्रभावित करके व्याधि का उग्ररूप धारण कर लेते हैं। जिसके कारण गला भी प्रभावित हो जाता है। खासी व दमा तथा तपेदिक भी हो जाता है।

जिन लोगों की धातु क्षीण होती है उनमे रोग प्रतिरोधक शक्ति कम होती है। इसलिए बार-बार जुकाम की शिकायत होती है।

जुकाम होने से पूर्व शरीर मे सुस्ती-सी अनुभव होती है। रोम खडे होते हैं, बार-बार छींक आती हैं, सिर भारी हो जाता है और कनपटियो मे दर्द होता है, आखो से पानी आना, भूख कम लगना तथा नाडी की गति थोडी तेज होती है।

वायु का प्रकोप अधिक होगा तो नथुनो मे मल भरा रहता है और सास लेने मे भी कष्ट होता है। सुर भी बढकर कनपटियो मे दर्द होता है, गला बैठ जाता है। यदि पित्त का प्रभाव होगा तो प्यास अधिक लगती है, नाक से गर्म धुआ-सा निकलता है नाक मे पपडी-सी जम जाती है। कफ का प्रभाव अधिक होने पर सिर का भारीपन, गले में खुजली पैदा होना, गला बैठ जाना तथा मल खुश्क होकर रुकावट व भारीपन होता है। छोटे बच्चों में पसलिया चलने लगती हैं।

उपचार—जिन कारणो से जुकाम होता है वे नहीं करने चाहिए। जैसे, अधिक सफर करना, तेज हवा मे घूमना, ठण्डे जल से स्नान करना, नगे सिर घूमना, जुकाम से पीडित रोगी का तौलिया व रूमाल प्रयोग मे लाना आदि कार्य जुकाम मे नही करने चाहिएं। सिर को ढककर रखें तो अच्छा है। रात सोने के लिए है। अत रात्रि जागरण करने से दोष कुपित होकर रोग पैदा करते हैं। जुकाम से पीडित रोगी को दिन मे सोना व रात को बहुत देर तक जागना उचित नहीं है।

जिन लोगो को सदा ठण्डे पानी से स्नान करने व शुद्ध ठण्डी हवा मे नगे सिर घूमने की आदत है उनको प्राय जुकाम नही होता। रोगों का प्रभाव सदा ऐसे व्यक्तियो पर ही होता है जिनके दोष धातु और मल दूषित होते हैं तथा रोगप्रतिरोधक शक्ति अर्थात् Imminity कम होती है।

कई लोगो का मत है कि जुकाम होते ही कफ को रोकने वाली दवाई नहीं देनी चाहिए इससे जुकाम बिगड जाता है। [illegible] को बाहर निकालना चाहिए। वायु की वृद्धि न हो ऐसे पदार्थ खाने चाहिए। एक-दो दिन गर्म पानी पीने को देवें, भोजन करें तो अच्छा है।

कुछ नुस्खे :

बनफशादि क्वाथ—फुल बनफशा ४ ग्राम, गावजबां ४ ग्राम, रेशाखतमी ४ ग्राम, मुलहटी ४ ग्राम, अजीर जर्द ३ दाने, लिसोडा ५ दाने, मुनक्का दाख ७ दाने, काली मिर्च ५ दाने, सबको २५० ग्राम पानी मे मिलाकर पकावें, चौथाई शेष रहने पर उतारकर छानकर थोडी चीनी या खस-खस का सर्वत मिलाकर रोगी को दिन मे २-३ बार गर्म-गर्म पिलाने से २-३ दिन मे सभी तरह का जुकाम ठीक हो जायेगा।

● सौंफ १० ग्राम, बिहिदाना ४ ग्राम, मुलहटी ४ ग्राम, नीलोफर के फूल ४ ग्राम इन सबका काढा बनाकर प्रातः सायं तीन दिन लेने से जुकाम ठीक हो जाता है।

● पिप्पली, सोंठ, कालीमिर्च, कुठ, बिल्व मूल प्रत्येक १ ग्राम लेवें, ४०० ग्राम पानी मे काढा बनाकर चौथाई पानी रहने पर उतारकर छानकर दिन में २-३ बार ३ दिन पिलाने से जुकाम मे लाभ होगा।

● सोंठ, कालीमिर्च, पिप्पली, चीते की जड, तालीस पत्र, अम्लबेतस, जीरा प्रत्येक १० ग्राम, छोटी इलायची, तेजपत्र इनका चूर्ण २ ग्राम सबको मिलाकर कूट-छानकर रखें। इसकी १ ग्राम मात्रा प्रातः साय गर्म पानी से लेने से जुकाम ठीक होता है।

कफकेतु रस—२-२ गोली गर्म पानी या शहद के साथ प्रयोग करने से सभी प्रकार के नजला-जुकाम में आराम होता है।

● बेसन को घी में भूनकर उसमें अद्रक या कण्टकारी का क्वाथ छानकर चीनी व किशमिश डालकर हलवा बनाकर प्रात. सायं खाने से जुकाम अवश्य ठीक होगा। हलवा खाकर कुछ देर हवा में न निकलें।

● नासिका रुक जाने पर कोई नसवार जैसे कटफलादि नस्य सूघने से लाभ होगा।

● व्याघ्री तैल, षड्बिन्दु तैल, करवीरादि तैल नाक में २-३ बार ३ बूद डालने से पके हुए जुकाम में लाभ होगा। यदि झिल्ली पकी हुई हो तो उसमें इस दवा से बडा लाभ होगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, गोहाना रोड, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२० ७३ रजि०

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २० अंक ३४ २१ अगस्त, १९९३ वार्षिक शुल्क ८०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति ८० पैसे

वैदिक धर्म

(एक संक्षिप्त परिचय)

सम्पादक—ज्ञानेश्वरार्य दर्शनाचार्य
दर्शन-योग विद्यालय, आर्यवन,
पो० सागपुर साबरकांठा (गुजरात)

वैदिक धर्म का आधार चार वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) हैं। इसमें मानवोपयोगी समस्त ज्ञान विज्ञान मूल रूप मे विद्यमान है। इनके अतिरिक्त वेदों की व्याख्या के ऋषिकृत ग्रन्थ (४ ब्राह्मण, ४ उपवेद, ६ दर्शन, १० उपनिषद तथा ६ वेदांग) भी वैदिक धर्म का विस्तार से परिज्ञान कराते हैं।

१- वैदिक धर्म संसार के सब मतो और सम्प्रदायो से अधिक प्राचीन है। यह सृष्टि के प्रारम्भ से अर्थात् १९६०८५३०९४ वर्ष से है।

२- संसार भर के अन्य मत, पन्थ किसो पीर, पैगम्बर, मसीहा, गुरु, महात्मा आदि के द्वारा चलाये हुए है किन्तु वैदिक धर्म ईश्वरीय है, किसी मनुष्य का चलाया हुआ नही है।

३- वैदिक धर्म मे एक, निराकार, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, न्यायकारी, ईश्वर को ही पूज्य-उपास्य माना जाता है, उसी की उपासना की जाती है, अन्य देवी-देवताओं की नही।

४- ईश्वर अवतार नही लेता अर्थात् कभी भी शरीर धारण नहीं करता।

५- जीव और ईश्वर (ब्रह्म) एक नही है बल्कि दोनो अलग-अलग हैं, और प्रकृति इन दोनो से अलग तीसरी वस्तु है। ये तीनों अनादि हैं।

६- वैदिक धर्म के सब सिद्धान्त सृष्टिक्रम के नियमो के अनुकूल हैं तथा वैज्ञानिक हैं। जबकि अन्य मतों के बहुत से सिद्धान्त विज्ञान की कसौटी पर खरे नहीं उतरते।

७- हरिद्वार, काशी, मथुरा आदि तीर्थ नहीं हैं, तीर्थ तो विद्या का अध्ययन, यम-नियमो का पालन, योगाभ्यास, सत्संग आदि हैं, जिससे मनुष्य दुःख से तैर जाता है।

८- भूत, प्रेत, डाकिन आदि के प्रचलित स्वरूप को वैदिक धर्म मे स्वीकार नहीं किया जाता है, यह सब कल्पनामात्र है तथा मिथ्या है।

९- स्वर्ग और नरक किसी स्थान विशेष मे नहीं होते। जहा सुख है वहा स्वर्ग है और जहां दुःख होता है वहा नरक है।

१०- स्वर्ग के कोई अलग से देवता नही होते। माता, पिता गुरु, विद्वान् तथा पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु आदि ही स्वर्ग के देवता होते हैं।

११- राम, कृष्ण, शिव, ब्रह्मा विष्णु आदि महापुरुष थे। न ही ईश्वर थे और न ही ईश्वर के अवतार थे।

१२- जो मनुष्य जैसा शुभ या अशुभ कर्म करता है, उसको वैसा ही सुख या दुःख फल अवश्य मिलता है। ईश्वर किसी भी मनुष्य के पाप को किसी भी परिस्थिति मे क्षमा नही करता है।

१३- मनुष्यमात्र को वेद पढने का अधिकार है, चाहे वह स्त्री हो या शूद्र।

१४- कर्म के आधार पर, मानव समाज को चार भागों मे बांटा जाता है जिन्हे चार वर्ण भी कहते हैं—१ ब्राह्मण, २ क्षत्रिय, ३ वैश्य, ४ शूद्र।

१५- व्यक्तिगत जीवन को भी चार भागो में बांटा गया है, इन्हें चार आश्रम भी कहते हैं। २५ वर्ष की अवस्था तक ब्रह्मचर्याश्रम, ५० वर्ष की अवस्था तक गृहस्थाश्रम, ७५ वर्ष की अवस्था तक वानप्रस्थाश्रम, और इसके आगे संन्यासाश्रम माना गया है।

१६- जन्म से कोई भी व्यक्ति ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र नही होता, अपने-अपने गुण, कर्म, स्वभाव से ब्राह्मण आदि कहलाते हैं। चाहे वे किसी के भी घर मे उत्पन्न हुए हो।

१७- भंगी चमार आदि कोई भी मनुष्य जाति या जन्म के कारण अछूत नही होता। जो गन्दा है वह अछूत है, चाहे वह जन्म से ब्राह्मण हो या भंगी या अन्य कोई।

१८- वैदिक धर्म पुनर्जन्म को मानता है। अच्छे कर्म अधिक करने पर अगले जन्म मे मनुष्य का शरीर और बुरे कर्म अधिक करने पर पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि का शरीर मिलता है।

१९- गंगा यमुना आदि नदियों मे स्नान करने से पाप नही छूटते। वेद के अनुसार उत्तम कर्म करने से व्यक्ति भविष्य मे पाप करने से बच सकता है, किन्तु किये हुए पापो के फल से नही बच सकता।

२०- पंच महायज्ञ करना प्रत्येक वैदिक धर्मी के लिए आवश्यक है—१ ब्रह्मयज्ञ (ईश्वर की उपासना करना), २ देव यज्ञ (हवन करना), ३ पितृ यज्ञ (माता, पिता, सास, ससुर आदि की सेवा करना), ४ बलिवैश्वदेव यज्ञ (गाय, कुत्ता, चिड़िया, चींटी आदि तथा विधवा अनाथ विकलांग आदि को भोजन देना), ५-अतिथि यज्ञ (विद्वान्, सन्यासी, उपदेशक आदि से उपदेश ग्रहण कर और उनकी सेवा सत्कार आदि करना)।

२१- जीवित माता, पिता, गुरु, विद्वान् आदि की सेवा करना ही श्राद्ध कहलाता है। मृत पितरो के नाम पर ब्राह्मणों को दिया हुआ भोजन वस्त्र धनादि मृत पितरो को नही मिलता।

२२- मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा को सुसंस्कारी (उत्तम) बनाने के लिए नामकरण, यज्ञोपवीत इत्यादि १६ संस्कारो का करना कर्त्तव्य है।

२३- मूर्ति पूजा, छुआछूत, जाति-पाति, जादू टोना, डोरा, धागा, ताबीज शकुन, जन्मपत्री, फलित ज्योतिष, हस्तरेखा, नवग्रह पूजा, अन्धविश्वास, बलिप्रथा, सतीप्रथा मांसाहार, मद्यपान, बहुविवाह आदि बातो का वैदिक धर्म मे निषेध है।

२४- वेद के अनुसार जब मनुष्य सत्यज्ञान को प्राप्त करके निष्काम भाव से शुभ कर्मों को करता है और शुद्ध उपासना से ईश्वर के साथ सम्बन्ध जोड लेता है तब उसकी अविद्या (राग द्वेष आदि की वासनाए) समाप्त हो जाती हैं, तभी जीव की मुक्ति होती है। मुक्ति मे जीव ३१ नील, १० खरब, ४० अरब वर्ष तक सब दुःखो से छूटकर केवल आनन्द का ही भोग करके फिर लौटकर मनुष्य जन्म लेता है।

२५- वैदिक धर्मी मिलने पर परस्पर 'नमस्ते' शब्द बोलकर अभिवादन करते हैं।

२६- वेद मे परमेश्वर के अनेक नामो का निर्देश किया गया है 'जनमे मुख्य नाम ओ३म् है।

विशेष—उपर्युक्त सिद्धान्तो मे सम्बन्धित विशेष जानकारी के लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती लिखित सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, संस्कारविधि आदि ग्रन्थो का स्वाध्याय करे।

वेदप्रचार सप्ताह के पवित्र अवसर पर—"सामयिक लेख"

"वेदों का महत्त्व एवं रहस्य"

लेखक—सुखदेव शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक।

(गताक से आगे)

अर्थात् अहानि ब्रह्म कृण्वन्त —प्रतिदिन वेद का स्वाध्याय करने वाले, व गृध्रा गोतमास वेद ज्ञान को प्राप्त करने के लिए अत्यन्त इच्छुक ज्ञानवान् विद्वान् पुरुष—इमा वाका आर्या देवी व—जल के समान स्वच्छ धारणावती बुद्धि की देवी को, पर्या आगु —चारो ओर से प्राप्त कर लेते हैं। तथा नुनुद्र—जीवन को उत्कृष्ट करने के हेतु, अकं ऊर्ध्वम्—वेदज्ञान की रश्मियों से ऊपर उठ जाते हैं और ज्ञान की पिपासा को ऐसे मिटा लेते हैं, जैसे—पिबध्यै उत्सधिम्—जल पीने के लिए प्यासे मनुष्य कुआ खोद कर प्यास मिटा लेते हैं।

मन्त्र का अभिप्राय यह है कि वेद ज्ञान की तीव्र इच्छा वाला विद्वान् मानव प्रतिदिन वेद का स्वाध्याय करके, उन पवित्र वेद की ऋचाओ के गहन मनन से धारणावती बुद्धि को प्राप्त कर, वह वेद की पवित्र आर्या देवी के प्रकाश द्वारा जीवन मे उत्तरोत्तर उन्नति को प्राप्त होने लगता है। धन-अन्न आदि की समस्या को सुलझाकर वह हृदय की गुफा मे गहरा उतरकर ब्रह्म के परम् शान्त आनन्दप्रद पद को प्राप्त कर लेता है।

इन्ही शिक्षाओ एव भावनाओ के द्वारा वेद की पवित्र ऋचाओ का महत्व बहुत अधिक बढ जाता है। प्रत्येक वेद के मन्त्रो में मानव जीवन की प्रत्येक समस्या का समाधान किया जा सकता है। वेदो के पठन-पाठन एव उनके अनुसार जीवन मे आचरण करने से कोई भी समस्या आने ही नही पाती। सयमी जीवन नियमित रूप से व्यतीत करने से सारी शारीरिक समस्याएं समाप्त हो जाती हैं। आत्मिक व सामाजिक उन्नति के आधार तो वेद स्वय ही है।

इस सम्बन्ध मे सामवेद मन्त्र सख्या १२२४ मे बहुत ही उत्तम आदेश दिया गया है—गिरा वज्रो न सम्भृत सबलो अनपच्युत। ववक्ष उग्रो अस्तृत.।

अर्थात् वेद वाणी के अनुकूल चलने से शरीर वज्र तुल्य बन जाता है। इन्द्रिया शक्ति सम्पन्न बन जाती हैं। मन सबल तथा अविचलित होता है। मनुष्य उदात्त व अजेय बनकर उन्नत होता जाता है।

वेदो मे राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओ का निदान एव समाधान भी अन्यन्त सरल, सहजभाव से प्रकट किया गया है। किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय समस्या के समाधान का मार्ग, ऋग्वेद के दशममण्डल के सूक्त १९१ के, वेद के समाप्त होते-२ चार मन्त्रो मे प्रकट किया गया है, जिससे आर्य लोग अपने साप्ताहिक सत्सगों मे सगठन सूक्त के नाम से पाठ करते हैं, विश्वशान्ति के लिए ये मन्त्र आधार रूप से माननीय हैं। मन्त्र हैं—

"संगच्छध्वं सवदध्व स वो मनासि जानताम्।
देवा भाग यथा पूर्वे सजानाना उपासते।

अर्थात्—हे मनुष्यो! आप सब लोग, संगच्छध्वम्-परस्पर अच्छी प्रकार मिलकर रहो। सवदध्वम्—परस्पर मिलकर प्रेम से बातचीत करो। व मनासि—आप लोगो के मन, सजानताम्—एक समान होकर ज्ञान प्राप्त करें। यथा—जिस प्रकार, पूर्वे देवा—पूर्व के विद्वान् जन, भाग—सेवनीय और भजन करने योग्य प्रभु का, जानाना —ज्ञान सम्पादन करते हुए, सम् उपासते—अच्छी तरह उपासना करते रहे, उसी प्रकार आप लोग भी ज्ञान सम्पन्न होकर, भार्ग स उपासते—सेवनीय प्रभु की उपासना करो। इसी प्रकार विश्वशान्ति के लिए अगला मन्त्र कितना सफल एवं सहायक सिद्ध हो सकता है। इसके विषय मे यदि सयुक्त राष्ट्र सघ के प्रतिनिधि देश विचार कर सकें तो विश्व को युद्धों से सदा के लिए छुटकारा हो सकता है। मन्त्र है—

"समानो मन्त्र समिति समानी समान मन सह चित्तमेषाम्।
समान मन्त्रमभि मन्त्रये व समानेन वो हविषा जुहोमि।

अर्थात्—(शान्ति स्थापना के लिए) एषा मन्त्र समान —इन सबका विचार एक समान हो। समिति समानी—परस्पर सगति, सभा व मेल जोल भी एक समान हो। मन समानम्—इनका अन्त करण एक समान हो। एषा चित्त सह—इनका चित एक-दूसरे के साथ हो। व समानं मन्त्र अभिमन्त्रये—मैं आप लोगों को एक समान विचारवान् करता हू। व समानेन हविषा जुहोमि—एक समान अन्न से आप लोगों को पालित पोषित करता हू। ये मन्त्र विश्व शान्ति के लिए सन्देश वाहक का कार्य करते हैं। यदि इनके ऊपर शान्ति के साथ विश्व के नेता विचार करके कार्य कर सकें तो कोई भी आपसी विवाद भी न रहे। आपस में हथियारों की होड भी समाप्त हो जाये। ये मन्त्र परमाणु बमो के खतरे को भी समाप्त करने मे सहायक हो सकते हैं। अगला मन्त्र भी देखिये—

"समानी व आकूति समाना हृदयानि व।
समानमस्तु वो मनो यथा व सुसहासति।

अर्थात्—आकूति समानो अस्तु—आप लोगों के सकल्प, निश्चय और भाव अभिप्राय एक समान रहे। व. मन समानं अस्तु—आप लोगों के मन समान हो। यथा—जिससे। व —आप लोगों का, सह सु असति—परस्पर का कार्य सर्वत्र एक साथ अच्छी प्रकार से हो सके।

यह वेदों का ही पवित्र उपदेश है कि जिसका प्रत्येक मन्त्र एकता, सद्भावना का शुभ सन्देश देता है। ससार को किसी भी मजहबी पुस्तक मे इतना महत्त्वपूर्ण उपदेश नही मिलता। इसके अतिरिक्त यदि मुसलमानों की मजहबी किताब कुरान को देखा जाय तो वह ससार में ईर्ष्या, द्वेष-घृणा, छल, कपट, लडाई-झगडा, मारकाट का आदेश देती है। जब कि वह भी खुदाई किताब कहलाती है उसके मुसलमानों को आदेश के कुछेक उदाहरण देखिये—

कुरान की आयत—५-४-१०१ में लिखा है—अय! इमान वालो (मुसलमानो) उन काफिरो से लडो जो तुम्हारे आस पास हैं। और चाहिए कि वे तुम से सख्ती पायें।

१०-९-३७ मे लिखा है—अल्लाह काफिर लोगो को मार्ग नही दिखाता। इस प्रकार की हजारो आयतें हैं जिनके कारण ससार मे मुस्लिमो और अमुस्लिमो मे दगें हुआ करते हैं। जब तक मुस्लिमों द्वारा कुरान की इन आयतो में सशोधन अथवा निष्कासन न किया जायगा, तब तक ससार मे शान्ति स्थापित नही हो सकती है। इस विषय को सत्यार्थप्रकाश के १४वें समुल्लास में विस्तार से लिखा गया है वहीं ही पढना चाहिए। यही अवस्था बाईबल की भी है। ये ईश्वरीय पुस्तक नही हो सकते। वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है। परमेश्वर प्रोक्त है।

इसमें महर्षि दयानन्द लिखते हैं—"जैसा ईश्वर पवित्र, सर्वविद्यावित्, शुद्ध गुण कर्म स्वभाव, न्यायकारी, दयालु आदि गुणवाला हैं वैसे जिस पुस्तक मे ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के अनुकूल कथन हो वह ईश्वरकृत, अन्य नहीं, और जिसमे सृष्टि कर्म प्रत्यक्षादि प्रमाण आप्तो के और पवित्रात्मा के व्यवहार से विरुद्ध कथन न हो वह ईश्वरोक्त। जैसा ईश्वर का निर्भ्रम ज्ञान वैसा जिस पुस्तक में भ्रान्ति रहित ज्ञान का प्रतिपादन हो वह ईश्वरोक्त। जैसा परमेश्वर है और जैसा सृष्टिक्रम रक्खा है वैसा ही ईश्वर, सृष्टि कार्य कारण और जीव का प्रतिपादन जिसमें होवे वह—परमेश्वरोक्त पुस्तक होता है। और जो प्रत्यक्षादि प्रमाण विषयों से अविरुद्ध-शुद्धात्मा के स्वभाव से विरुद्ध न हो, इस प्रकार के वेद हैं। अन्य बाइबल-कुरान आदि पुस्तकें नहीं। महर्षि दयानन्द की इन पक्तियों से वेदों के ईश्वरोक्त होने के महत्त्व का पता लगता है।

इसके अतिरिक्त छ दर्शनों के महर्षियो की साक्षी भी वेदों के महत्त्व एव उनके ईश्वरोक्त होने के विषय में देख लीजिए—वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है इसमें ऋषियों की सम्मतिया वेदान्त—"शास्त्रयोनित्वात्। १-१-३। इसपर शाकरभाष्य मे लिखा है—
म० वेदव्यास—

"ऋग्वेदादे शास्त्रस्यानेकविद्यास्थानोपबृंहितस्य प्रदीपवत्सर्वार्थविद्योतिनः सर्वज्ञकल्पस्य योनिः कारण ब्रह्म। न हीदृशस्य सर्वज्ञादन्यत सम्भवोऽस्ति यत् विस्तारार्थं शास्त्र यस्मात् पुरुषविशेषात् सम्भवति० अर्थात् अनेक विद्याओं से युक्त प्रदीपवत् सब अर्थों का प्रकाश करने वाला सर्वज्ञ शास्त्र का कारण ब्रह्म है। ऐसे सर्वज्ञ गुणो से युक्त शास्त्र को सर्वज्ञ परमात्मा के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं बना सकता।

(क्रमश.)

पाठकों के पत्र—

'आर्यसमाज के अधिकारियों से'

आर्यसमाज की स्थापना महर्षि दयानन्द ने अपने गुरु को दिए वचन की पूर्ति के लिए की थी। महर्षि से पूर्व अनेक धर्म और विशाल साहित्य था, फिर भी "जितने मुह—उतनी बातें" वाली स्थिति थी। सारे साहित्य के आधार पर एक सुसगत विचारधारा फैलाने का कार्य ही महर्षि ने आर्यसमाज को सौंपा। आर्यसमाज के सदस्य होने का अर्थ है, कि अपने जीवन मे उस सुसगत विचारधारा को अपनाना तथा आर्यसमाज के अधिकारी होने का भाव है, महर्षि की सुनिश्चित विचार-धारा को फैलाने का काम अपने हाथ मे लेना।

आज विज्ञान के साथ विज्ञापन का युग है, अत प्रचार को बात को जचा कर फैलाना चाहिए। आज ऐसी अनेक समृद्ध आर्यसमाजें हैं, जो प्रचार के कार्य को सरलता से कर सकती हैं। हमारे यहा अनेक त्योहार मनाये जाते हैं उस दिन अवकाश भी रहता है। अत आर्यसमाज के अधिकारियों को चाहिए, कि जहा अपने पर्वों को बड़े उत्साह से मनायें, वहा ऐसी छोटी-छोटी पुस्तिकायें भी छपायें, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि आर्यसमाज को दृष्टि से इस पर्व का असली रूप क्या है? इसके साथ उस समाज को आगे बढाने के लिए जिन-जिन आर्यबन्धुओं ने महान् कार्य किया है, उनका वर्णन भी हो। ये किश्ती को तूफान से निकालकर लाये है। —भद्रसेन (होशियारपुर)

स्वतन्त्रता दिवस समारोह मे अग्रेजी अनिवार्यता हटाओ का नारा बुलन्द

रोहतक, १६ अगस्त (निज सवाददाता)। हरयाणाभर मे स्वतन्त्रता दिवस पर अंग्रेजी अनिवार्यता हटाओ समिति के तत्वावधान में अंग्रेजी अनिवार्यता के विरुद्ध जनजागरण अभियान चलाया गया। रोहतक मे डा० पकज, डा० सुरेशकुमार के सयोजन मे अंग्रेजी मानसिकता पर चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया तथा हस्ताक्षर अभियान चलाया गया। समिति के वरिष्ठ सदस्य डा० श्याम ने बताया कि समिति १४ सितम्बर को हिन्दी दिवस पर सभी जिला मुख्यालयो पर धरने आयोजित करेगी।

पानीपत मे महावीरसिंह फौगाट तथा श्री हरिचन्द भूकर ने जनजागरण अभियान चलाया। ज्यो ही मंत्राणी श्रीमती शान्ति राठी ने तिरंगा झण्डा फहराया समिति के सदस्यो सहित अनेक लोगो ने "अग्रेजी अनिवार्यता हटाओ—भाषा की आजादी दो—जब तक अग्रेजी जरूरी है—आजादी अधूरी है।" शहीदो की चिताओ से आवाज यह आती है—क्यो भारत मे आज भी अंग्रेजी राज चलाती है। मातृभाषा करे पुकार—हमको दो हमारा अधिकार आदि के नारे गुजा दिए। पुलिस प्रशासन ने श्री फौगाट को कार्यक्रम बन्द करने की चेतावनी दी। श्री फौगाट सयम बरतते हुए बाहर आए तथा समिति का बैनर लगाकर हस्ताक्षर अभियान मे जुट गए। समिति के सदस्यो ने अनुशासन व सयम का परिचय देते हुए शिवाजी स्टेडियम मे चल रहे कार्यक्रम मे लोगो को शातिपूर्वक समिति का साहित्य वितरित किया। श्रीमती राठी सहित जिले के सभी अधिकारियो को समिति का साहित्य भेंट किया गया। लोगो ने उत्साह से लिया तथा हस्ताक्षर किए।

चरखी दादरी मे श्री प्रतापसिंह, महावीरसिंह आजाद तथा मनुदेव जी ने अनेक छात्रो तथा गणमान्य नागरिकों के सहयोग से जनजागरण अभियान चलाया। श्री मनुदेव जी ने बताया कि समिति ने २१ अगस्त को दादरी मे भाषा मुद्दे पर गोष्ठी बुलाई है जिसमें आगामी कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की जाएगी। जींद में श्री ओमप्रकाश भारद्वाज ने जनजागरण अभियान का सयोजन किया। गोहाना, करनाल, कुरुक्षेत्र से भी जनजागरण अभियान का आयोजन डा० प्रदीप, संदीप शर्मा व प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य द्वारा चलाने का समाचार है।

श्री फौगाट के अनुसार समिति ने कर्नाटक व बिहार प्रदेशो को बधाई सहित सभी मुख्यमन्त्रियो को पत्र डालकर अनुरोध किया है कि वे दृढता से प्रान्तीय व राष्ट्रीय भाषाओं मे कार्य करें तथा केन्द्र को अंग्रेजी अनिवार्यता हटाने पर विवश करें दबे नही। पत्र में मुख्यमन्त्रियों को सम्बोधित करते हुए कहा गया है कि भाषा का विषय राज्य अधिकार क्षेत्र मे है। राजनैतिक सत्ता प्राप्त सरकार अपनी भाषा मे राज्य तथा केन्द्र से सब कार्य निपटाने मे केन्द्र से [illegible] और साहस से अपनी भाषा में कार्य करे। प्रत्येक राज्य केन्द्र से मिलकर एक अनुवाद विभाग की स्थापना अलग करे जिससे भारतीय भाषाओ मे अधिकाधिक साहित्य निर्माण हो सके।

स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती 'वेद-वेदांग पुरस्कार' से सम्मानित

स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती को आर्यसमाज सान्ताक्रुज द्वारा संचालित वेद-वेदांग पुरस्कार से १ अगस्त १६६३ को सुलतानपुर (उ०प्र०) मे एक भव्य समारोह में सम्मानित किया गया। आठवें वेद-वेदांग पुरस्कार प्राप्त करने वाले स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती आर्यजगत् के उच्चकोटि के विद्वान्, सर्वप्रथम चारो वेदों के अंग्रेजी अनुवादक एवं रसायन एवं भौतिकी के क्षेत्र मे शोध कार्य करने वाले है। इन दिनों अस्वस्थ स्वामी जी प० दीनानाथ शास्त्री के निवास मे स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज मे प्रतिनिधि के रूप में स्वामी जी को सम्मानित प्रधान श्री रामचन्द्र आर्य एव मन्त्री श्री [illegible] शर्मा सुलतानपुर गये थे। वहा उन्हें आर्यसमाज सान्ताक्रुज की ओर से रुपये २५००१ का ड्राफ्ट, शॉल, श्रीफल एव चादी की ट्राफी मुख्य अतिथि प० नारायणदत्त तिवारी (पूर्व मुख्यमन्त्री, उत्तर प्रदेश) के करकमलो द्वारा भेंट की गयी।

मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए स्वामी जी के शिष्य रहे प० एन डी तिवारी ने आर्यजनता का आह्वान किया कि वे गुरु-शिष्य परपरा को आगे बढाए एव युवाओ ने इस सस्कार को बढाये। वे आज भी प्रासगिक है। स्वामी जी विज्ञान एव कर्म को साथ लेकर चले हैं। स्वागताध्यक्ष श्री सजयसिंह सासद, अखिल भारतीय डी०ए०वी० के अध्यक्ष श्री दरबारीलाल, मन्त्री श्री रामनाथ सहगल, उ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो० कैलाशनाथसिंह, श्री रामचन्द्र आर्य, डा० प्रशस्यमित्र शास्त्री एव कैप्टन देवरत्न आर्य ने भी सम्बोधित किया। समारोह का सयोजन डा० ज्वलन्तकुमार शास्त्री ने किया।

महामन्त्री—आर्यसमाज सान्ताक्रुज

शराबबन्दी सत्याग्रह के प्रथम सर्वाधिकारी

स्वामी ओमानन्द सरस्वती की आर्यजनता के नाम अपील

यदि आप हरयाणा के माथे से शराब का कलंक मिटाना चाहते हैं तो—

१ अपने निकट की ग्राम पंचायतो को प्रेरणा करके ३० सितम्बर तक शराबबन्दी के प्रस्ताव करवाकर हरयाणा आबकारी विभाग के आयुक्त को चण्डीगढ़ भिजवावें।

२. अपने निकट के शराब के ठेको पर धरणे दिलवाने मे योगदान करें।

३. शराबबन्दी सत्याग्रह की तैयारी हेतु प्रत्येक ग्राम से ११-११ सत्याग्रहियो को सूची तथा ११००-११०० रु० की दान राशि निम्न पते पर भिजवाकर रचनात्मक सहयोग करें।

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ
रोहतक (हरयाणा)

हरयाणा में शराबबन्दी आन्दोलन की गतिविधियां

ग्राम-गडानिया जिला-महेन्द्रगढ़ उप ठेके पर धरना जारी

ग्राम—गडानिया में १२ जुलाई १९९३ से शराबबन्दी धरना जारी है। इसके लिए उपमण्डल अधिकारी (नागरिक) महेन्द्रगढ से प्रार्थना की गई थी कि ठके को बन्द किया जाए परन्तु इसके लिए कोई सन्तोष जनक उत्तर न मिला तो पाच गावो के लोग तथा महिलाओ ने दिनांक ९ अगस्त १९९३ को जिला उपायुक्त नारनौल (श्रीमती जयवन्ती श्योकन्द) के निवास स्थान पर धरना दिया तथा उपायुक्त को विज्ञापन दिया गया उस दिन जिला उपायुक्त अवकाश पर थी। जनता ने ADC नारनौल से शराब का ठका उठाने के लिए कहा तो उन्होंने कहा कि हम कानूनी कार्यवाही कर देगे। इसके लिए उपायुक्त कार्यालय से भी कोई सन्तोषजनक उत्तर न मिला। इस धरने मे श्री हीरालाल प्रधान आयसमाज खेडकी, श्री बलबीरसिंह मन्त्री, श्री फूलचन्द (स्वर्णकार) पूर्व मन्त्री तथा आर्यसमाज के सभी सदस्य एव श्री जोगेन्द्रसिंह यादव प्रधान जिला रेवाडी, श्री रामसिंह प्रधान जिला-महेन्द्रगढ, श्री महेन्द्र सिंह वर्मा प्रधान हल्का महेन्द्रगढ़, श्री सुभाष यादव प्रधान जिला युवा महेन्द्रगढ, श्री निरजनलाल सैनी, श्री रिसालसिंह चौधरी, सरदार गुरमेलसिंह, श्री अमरसिंह DSP रिटायर (CRP) तथा श्री पवनकुमार मालडा प्रेस सचिव आदि भी धरने मे शामिल हुए। ग्रामवासियो के द्वारा यह सकल्प रखा हुआ है कि जब तक ठेका नही उठेगा तब तक हम अपना धरना जारी रखेंगे।

बलबीरसिंह मन्त्री आर्यसमाज खेडकी, पोस्ट बैरावास
जिला महेन्द्रगढ (हरयाणा)

पाल्हावास मे शराबबन्दी हेतु २५ गावों को पचायत

दिनांक १-८-९३ को चार मास से चले आरहे शराबबन्दी धरणो मे और गति प्रदान करने को हुई २५ ग्रामो की पचायत ने वास्तव में सरपच लखमोचन्द राडाहो वाले की अध्यक्षता मे महत्वपूर्ण निर्णय लिए हैं।

२५ ग्रामो के लोगो में पच और सरपच भी थे जिन्होंने पाल्हावास ग्राम के धरणे पर बैठने वाले उन लोगो का धन्यवाद किया जो चार मास से निरन्तर तपती लूओ में अपने सारे घर के काम काज को छोडकर बैठे थे। अनेक वक्ताओ ने अपने भाषणो में सरपच राजेन्द्र सिंह को कठोर शब्दो मे लताडा। पचायत के अध्यक्ष सरपच लखमोचन्द ने माइक से ऊची आवाज मे बोलते हुए कहा कि भाई सरपच राजेन्द्रसिंह आप अपने खेत से ठेका उठवाकर जहा पहले था वही भिजवा दें।

२५ ग्रामो के जो प्रतिनिधि आए हुए थे, उन्होने धरणों पर बैठने के लिए महीने में एक दिन-रात अपने दस-दस व्यक्तियो के जत्थे के साथ बैठने का वचन दिया।

वक्ताओ मे—महात्मा धर्मवीर गुरुकुल घासेडा, भक्त मगतूराम जाटौली, वेदप्रकाश विद्रोही, प्रो० ओंकार यादव झज्जर, राजेन्द्र कामरेड, मास्टर खूबराम, अनिल आर्य तथा कैप्टन प० मातूराम शर्मा प्रभाकर ने आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा चलाए शराबबन्दी आन्दोलन की जानकारी दी और शराब से मनुष्य कैसे नष्ट हो जाता है यह बताया। लोगों पर इस पचायत का बहुत अच्छा प्रभाव पडा।

प्रेषक—मातूराम शर्मा प्रभाकर सभा उपदेशक

धरणे को सफल करने हेतु बैठक

रेवाडी, १४-८-९३, दिनाक १३-८-९३ को पाल्हावास शराब ठेका विरुद्ध धरणा स्थल पर क्षेत्रीय शराबबन्दी सघर्ष समिति की एक महत्त्वपूर्ण बैठक आर्यसमाज के नेता स्वामी ओमानन्द सरस्वती की अध्यक्षता मे हुई जिसमे पाल्हावास के आस-पास दूर दूर के गाव लुहारी, नूरगढ़, जैनाबाद, कुलाना तक के सदस्यों ने भाग लिया। कार्यवाही की शुरुआत में नारनौल काण्ड की भर्त्सना करते हुए वहां दिनाक १०-८-९३ को पुलिस के दमन चक्र से चोट खाने वाले, मरने वालो और उनके परिवारों के प्रति उपस्थित सभी सदस्यों द्वारा गहरी सवेदना प्रकट की गई।

श्री अनिलकुमार आर्य ने मुख्यमन्त्री भजनलाल को लानत दी कि इस प्रदेश मे वह जीने के लिए वह पानी तो नही दे रहा अपितु उसकी एवज में पीने के लिए शराब दे रहा है ताकि लोग मदमस्त पागल बनकर सगठित न हो सकें और अपनी आवाज बुलन्द करना नही सीखे और बिना खतरे उनका विनाशकारी राजकाज चलता रहे। चुनावों मे विकास कार्यों का लेखा जोखा मागने को बजाए जनता शराब की बोतलें मागने लगे और सहजता से उन्हे सफलता मिलती रहे। यही कारण है कि पाल्हावास क्षेत्रवासियों द्वारा इतना लम्बा शराब ठेका के विरुद्ध धरना, अनेक बार विरोध प्रदर्शन, औपचारिक व वैधानिक कार्यवाहियो के बावजूद उनके कानो पर जू तक नही रेंग रही है। और यहां को जनता व समाज की भावना से उन्हे कोई लेना देना नही है।

स्वामी ओमानन्द ने कहा कि देश की आजादी का यश लेने वाली कांग्रेस ही आज अपनी सरकार को बचाने के लिए अपनी जनता पर अंग्रेजों से बढ-चढ कर जोर-जुल्म ढाने पर तुल गई है। यह अन्याय और अत्याचार कितना भी क्यो न कर ले, जिस तरह अंग्रेज और औरगजेब जैसे क्रूर शासक नही रहे, इनका भी अन्त उनकी तरह बुरा होगा। उन्होंने आगे कहा कि अबतक जितने गाव धरने पर आने के लिए जुड़े हैं इनमे अपने प्रयास से वे २० गावो का और सहयोग जोड देंगे, इस तरह अब धरना ५१ गांव चलाएगे।

परन्तु ठेकेदार धरने के बदले हुए प्रभाव को देखकर अब कुटिलता पर उतर आए हैं और उनके इशारे पर बैठक की ही रात को ठेके पर एक सेलमैन (शराब विक्रेता ने) शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं पर झूठा आरोप लगाने की धमकी दी तथा उसने गाली-गलोच की और शराब खोखे पर मिट्टी का तेल छिडकर आग लगाने की कोशिश दिखाई ताकि धरनेवाले फसाने के डर से पलायन कर जाए। जिसकी सूचना लिख कर थाना अध्यक्ष जाटूसाना को कर दी गई है। धरने पर आनेवाले गाव के अन्दर और बाहर से सभी साथी अदम्य साहस से डटे हुए हैं और हर स्थिति से निपटने के लिए कृतसकल्प हैं।

बालसमन्द गाव मे शराबबन्दी नारो की गूज

दिनाक २७-७-९३ को गाव में पुन ठेका खोलने पर नवयुवको ने सयोजक शराबबन्दी समिति जि० हिसार के नेतृत्व मे धरना जारी है। धरना शान्तिपूर्वक जारी है। नवयुवक शराब पीने व खरीदनेवालो को हाथ जोडकर समझा रहे हैं। न मानने पर बोतल फोडते हैं और उसकी पिटाई करते हैं। शराबियों में भगदड मची हुई है। ठेकेदार सारे हथकडे अपना चुका है। पुलिस का सहयोग ले चुका और ५५ रुपये की बोतल ३५ रुपये मे बेच रहे हैं, मुफ्त भी शराब पिला चुका। लेकिन नवयुवको के सगठन के आगे दाल नही गली। अब बुरी तरह बौखलाया हुआ। ६-७-९३ को फूलसिंह साहूकार को चार बोतल फोडी और पिटाई की। सूबेसिंह की एक बोतल फोडी। ठेकेदार के ड्राईवर वजीरसिंह ने शराब पीकर प्रचार के समय हुल्लडबाजी की। नवयुवक बाज की तरह टूट कर पडे। वह डर का मारा ठेके में जा घुसा। क्रान्तिकारी ने माईक पर घोषणा कर नवयुवको को जोश के साथ होश रखने की अपील की। नवयुवक शान्ति से अपने स्थान पर आकर बैठ गए। शान्ति से प्रचार हुआ। आर्य जी ने गाव के बुजुर्गों को लताडा बाद मे आपको रोना व पछताना पडेगा। ठेकेदार १०० प्रतिशत गूदड बाध कर जावेगा।

दिनाक ७-८-९३ को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की तीन प्रसिद्ध भजन मण्डली पं० खेमसिंह आर्य क्रान्तिकारी, प० जयपालसिंह

(शेष पृष्ठ ५ पर)

संस्कारों का महत्व

ये संस्कार ही अलंकार है,
जीवन को सुशोभित करते हैं।।
वह सन्तान बडा भाग्यवान् है"
जिसके माता-पिता दोनों विद्वान् हैं।
प्राय मा-बाप बच्चों की शिकायत करते हैं,
बिगड रहे उनके बच्चे, कहने मे नहीं चलते हैं।
इसका कारण समझ गये तुम,
वो बच्चो का सस्कार नहीं करते हैं।
उत्तम सन्तान पाने के लिए,
पहले गर्भाधान करना चाहिये।
बच्चा जन्म ले इससे पहले,
पुसवन और सीमन्तोन्नयन करना चाहिये।
शिशु के उत्पन्न हो जाने पर,
जात कर्म व नामकरण यथाविधि होने चाहियें।
चाहे पुत्र हो या कन्या हो,
दोनो को प्यार बराबर दो।
दोनो के पालन पोषण मे,
कोई भेद भावना मत रखो।
बच्चों का भाग्य बनाने मे, जननी समर्थ होती है।
वह चाहे जैसा बना देवे, माता निर्माता होती है।

—देवराज आर्य मित्र आर्यसमाज बल्लभगढ-१२१००४

रुकिये—शराब के सेवन से परिवार की बर्बादी होती है। अत. अपने निकट के शराब ठेको पर अपने साथियो सहित धरणे पर बैठकर शराबबन्दी लागू करावें।

शराबबन्दी (भजन)

ऐ इन्सानो कहना मानो।
मत ना पिओ शराब बुरी बिमारी सै।
१ दारू पीने वाला भई इज्जतदार रहा कोना।
ना कोई पास बैठ के राजी उसका इतबार कोना।
बच्छो बात कह कोना चेहरे की उतरी आब
बुरी बिमारी सै।
२ दारू पीके पडा रह तैने रह गात का होश नही।
औरत ने भी बेबे कह दे, के तेरे लागे दोष नही।
अब कुछ सन्तोष नही ना मानै किसी को दाब
बुरी बिमारी सै।
३ दारू पीकर राजपूतो नै खत्म करे है रजवाडे।
रण पीठ दिखा कर भागे वृथा बकते लगवाडे।
देखो कर्म करै है माडे कहा करे थे साहब—
बुरी बिमारी सै।
४ दारू मतना पीओ भाई जो दारू के मतवाले सै।
अमृत पीते देव असुर नर दारू के मतवाले मैं।
पृथ्वीसिंह कह मत पीओ भाई क्यू इज्जत करो खराब
बुरी बीमारी सै।

प्रेषक —शराबबन्दी बालसमन्द

(पृष्ठ ४ का शेष)

बेधडक, प० रामकुमार के प्रेरणादायक सामाजिक बुराइयो के खिलाफ भजन हुवे। धरना स्थल पर प्रचार मे हजारो लोगो ने रात्रो मे भाग लिया। लोगो मे काफी उत्साह है, गाव मे सरकार व प्रशासन के प्रति रोष बढता जा रहा है। बच्चे गाव मे घूम-घूमकर जोश के साथ नारे लगा रहे हैं। निम्न नारे हैं प्रत्येक गाव मे लगाने चाहिए। इसमे शराबबन्दी का वातावरण तयार होगा। १) शराब पीना छोड दो। २) शराब की बोतल फोड दो आदि।

स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती की ९८वीं स्मृति जयन्ती

वैदिक शिक्षाओं पर चलने से ही आतंकवाद एवं समस्त बुराइयों का उन्मूलन किया जा सकता है

जी राम-रेड्डी

नई दिल्ली, १ अगस्त समर्पण शोध संस्थान, साहिबाबाद के तत्वावधान में विद्यावारिधि स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती की ९८वीं स्मृति जयन्ती हिमाचल भवन, नई दिल्ली में आर्यजगत् के तपोनिष्ठ सन्यासी स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में आज धूमधाम से मनाई गई।

इस अवसर पर समारोह के मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष श्री जी० राम रेड्डी ने समर्पण शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित स्वा० समर्पणानन्द कृत शतपथ ब्राह्मण भाष्य तृतीय (काण्ड) एवं श्री प० रामनाथ वेदालंकार कृत 'सामवेद भाष्य (उत्तरार्चिक)' का करतलध्वनि के बीच लोकार्पण किया।

श्री जी० राम रेड्डी ने कार्यक्रम में अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि ऋग्वेद विश्व के पुस्तकालय का प्राचीनतम ग्रन्थ है। वेद ही विश्व की संस्कृति के उद्गम माने जाते हैं। गुरुकुलों के गुरुओं के मुख से सुनकर शिष्य वेद कंठस्थ कर लेते थे और ये श्रुति कहलाये। गुरु-शिष्य परम्परा ने हमारी अमूल्य वैदिक धरोहर को इस प्रकार जीवित रखा। तत्पश्चात् निघटु, ब्राह्मण ग्रन्थ, वेदांग आदि की रचना हुई। असीम ज्ञान का भण्डार वैदिक साहित्य हमारे गौरव का प्रतीक है।

मध्यकाल में महीधर, सायण, माधवाचार्य, भट्ट भास्कर, भरत स्वामी आदि ने वेदों के भाष्य किए। जर्मन में मेक्समूलर लुडविग व आर टी एच ग्रिफिथ ने भी वेदों के भाष्य किए। भारतीय व विदेशी विद्वानों द्वारा वेदभाष्य का कार्य वेदों की महत्ता को प्रतिपादित करता है।

१९वीं शताब्दी में वेदों के मर्मज्ञ महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ऋग्वेद, यजुर्वेद आदि के अनुपम भाष्य किये। उन्होंने वेद मन्त्रों के आधार पर बताया कि शूद्र व नारी सहित सभी को वेद पढ़ने का अधिकार है। स्वामी जी ने एक ईश्वर की आराधना की बात कही और समाज सुधार के क्षेत्र में भी क्रान्तिकारी काम किए। आर्यसमाज के मूर्धन्य वैदिक विद्वानों को महर्षि के पद चिह्नों पर चलते हुए वेदों की ज्योति जलाये रखा है।

वेद आज भी प्रासंगिक है। अहिंसा, सत्य, योग, राष्ट्रभक्ति, विश्वशान्ति आदि की वैदिक शिक्षायें समस्त मानव जाति के कल्याण व उत्थान का सन्देश देती हैं। आज वेद के आदेशों पर चलने से ही विश्व में व्याप्त आतंकवाद, भ्रष्टाचार, कालाबाजारी, तस्करी, अपहरण, बलात्कार, लूटमार व हत्याएं तथा युद्ध रोका जा सकता है। विधि व कानून के क्षेत्र में भी वेद व मनुस्मृति का बहुत महत्व है।

स्वामी सर्वानन्द जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि धर्म ही मनुष्य के जीवन का लक्ष्य है। ईश्वर प्रदत्त वेदज्ञान एवं सत्य ही सच्चा धर्म है और इसी पर चलकर मनुष्य का कल्याण हो सकता है। धर्म और मजहब दो अलग तत्व हैं। मजहब में धर्म का कुछ अंश होता है परन्तु धर्म सनातन व पूर्ण है। वेद व धर्म के मर्म को समझने के लिए अमर ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश का अध्ययन व मनन आवश्यक है। संस्कृत के महत्व पर जोर देते हुए स्वामी जी ने कहा कि संस्कृत का पठन-पाठन ही हमारी संस्कृति को जीवित रख सकता है।

समर्पण शोध संस्थान के संस्थापक स्वामी दीक्षानन्द जी ने संस्थान की गतिविधियों का परिचय देते हुए कहा कि वेद ही धर्म का मूलाधार है और मूलशंकर ने धर्म के मूल को जानकर मानव के मंगल व कल्याण के लिए वेद मार्ग पर चलने का आह्वान किया। स्वामी जी ने शतपथ ब्राह्मण को वेद की कुंजी बताया।

गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ के आचार्य स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा कि पूज्य गुरु स्वामी समर्पणानन्द (श्री बुद्धदेव विद्यालंकार) ने कहा था कि वेदों को समझने के लिए अलंकार शास्त्र का ज्ञान जरूरी है। दयानन्द का कार्य वेद का कार्य है और हमें ऋषि के मार्ग पर चलना चाहिए।

कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रभात आश्रम के छात्रों द्वारा वैदिक मंगलाचरण से हुआ। कार्यक्रम का कुशल मंच संचालन श्रीमती प्रभात शोभा ने किया। गुरुकुल कांगड़ी के कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह ने कहा कि वेदों का अन्य भाषाओं में अनुवाद कराकर जन-जन तक पहुंचाया जाना चाहिए और इसके लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को सहायता देनी चाहिए। इससे पूर्व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने स्वामी सर्वानन्द तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डा० धर्मपाल ने श्री जी० रेड्डी व अन्य अतिथियों का पुष्पहारों द्वारा स्वागत किया।

गान्धर्व महाविद्यालय के उपाचार्य श्री महादेव गो० देशपांडे एवं श्री पन्नालाल पीयूष के निर्देशन में स्वामी समर्पणानन्द जी के गीतों पर आधारित "समर्पण-संगीत सन्ध्या" का भी आयोजन किया गया।

(आर्य सन्देश से साभार)

वेद बिना

जो कुछ भी है आज जगत् में हर परेशानी वेद बिना।
अलिफ से एम० ए० तक की है शैतानी वेद बिना॥
आज भाई का भाई बन रहा दुश्मन जानो वेद बिना।
मनुष्य और पशु-पक्षी आज दुखी हर प्राणी वेद बिना॥
विषयों के चंगुल में फंस रही नादान जवानी वेद बिना।
चरित्र की चटनी कर बैठी आवो भगवानी वेद बिना॥
बेशर्मी खुदगर्जी की चली हवा तूफानी वेद बिना।
श्रद्धा और विश्वास न्याय पर फिर गया पानी वेद बिना॥
पिता-पुत्र और सास बहू में खेचातानी वेद बिना।
आर्यराज समाप्त हुये, गये राजा-रानी वेद बिना॥
बादशाह बेगम मेम साहब बने हिन्दुस्तानी वेद बिना।
रूस चीन अमरीका अरब और इंगलिस्तानी वेद बिना॥
मानवता की चौपट होगई आज कहानी वेद बिना।
समय के ऊपर बर्षाता ना बादल पानी वेद बिना॥
कहीं सूखे से कहीं बाढ़ से हो रही हानि वेद बिना।
हर एक [illegible] के अन्दर पड़ रही [illegible] वेद बिना॥
आज तबाही जगत् में भाई आई सारा वेद बिना।
अज्ञान अविद्या का घर-घर छाई अंधियारी वेद बिना॥
ढोंगी पाखण्डी पनप रहे हैं अत्याचारी वेद बिना।
अन्धविश्वास के दास [illegible] कर हुए नर-नारी वेद बिना॥
सरमायेदार इधर, उधर बढ़ी बेरोजगारी वेद बिना।
मार-काट और लूट-पाट की [illegible] सारी वेद बिना।
ब्लैक मार्किट रिश्वतखोरी चोरबाजारी वेद बिना।
झूठ-कपट छल बेईमानी और गद्दारी वेद बिना॥
निर्दोषों पर निर्दयता से चले कटारी वेद बिना।
सीना तान मचलकर चलते हैं दुराचारी वेद बिना॥
प्रदूषण की घोर घटायें बढ़ती [illegible] वेद बिना।
नई-नई नित बढ़ती जा रही है बिमारी वेद बिना॥
मानवता को मिटाना चाहती [illegible] सारी वेद बिना।
विश्व के कोने-कोने में है [illegible] वेद बिना॥
भय के मारे कांप रही है दुनिया सारी वेद बिना।
कर लो यत्न हजार मगर है बचना भारी वेद बिना॥
वेद धर्म बिन श्रेष्ठ कर्म का हो मानव को ज्ञान नहीं।
श्रेष्ठ ज्ञान बिन मानव जाति का होगा कल्याण नहीं॥
कल्याण की चाह नहीं जिसमें उसको समझो इन्सान नहीं।
वह क्या इन्सान है जिसको धर्म कर्म का ध्यान नहीं॥
ध्यान समाधि के बिना बुराई कर सकती प्रस्थान नहीं।
प्रस्थान बुराई हुई नहीं तो होगा सुखी जहान नहीं॥
कर्म किया [illegible] माफी दे भगवान् नहीं।
बात "सुधारक" दयानन्द की राहे अनाडी मान नहीं॥

नवयुवकों को चेतावनी

जब मैं अपने देश के सामाजिक ढाचे पर नजर डालता हू तो मुझे बडा दुःख होता है। मैं यह सोचने पर विवश हो जाता हू कि भविष्य में मेरे देश की क्या हालत होगी। आज जहा मेरे देश में दहेज प्रथा, बलात्कार, रिश्वतखोरी तथा जमाखोरी जसे भ्रष्टाचार फैल रहे हैं वहा एक और रोग पनप रहा है वह है मेरे नौजवानो मे नशे की बढती हुई आदत।

प्रतिदिन देखने में आता है कि आज का नौजवान नशे में चूर रहता है। वह दिन में बीडी व सिग्रेट के पैकेट के पेकेट खाली कर देता है। साप के विष से भी भयंकर शराब की बोतलें आख बन्द करके पी जाता है। जब उसे रात को नीद नही आती है तो नशे की गोलियो का सेवन करता है।

आज मेरी भारत मा चौराहे पर खडी आंसू बहा रही है। जब वह अपने पुत्रो को नशे में चूर लडखडाते कदमो से चलते हुए देखती है और उनके मुह से निकले हुए अपशब्दो को सुनती है तो वह चीखती-चिल्लाती है। अपनी रक्षा के लिए सहायता की भीख मागती है। आज भारत मा को इस सोचनीय अवस्था मे ईमानदार मेहनती तथा सदाचारी वीरो की आवश्यकता है। मैं नौजवानो को चेतावनी देना चाहता हू—

जवानो जवानी मे चलना सम्भलकर,
ये आती नही फिर एक बार जाकर।

मेरे दोस्तो! यह शरीर परमात्मा की अमानत है। इसे सही सलामत रखना ही एक इबादत (भक्ति) है। इसको बुराइयो से और बीमारियो से बचाकर रखना चाहिए। आपको मालूम होना चाहिए कि नशा देनेवाली वस्तुए शरीर को जर्जर बना देती हैं। इनके सेवन से बल, बुद्धि आयु व धन का नाश होता है। लाखो घर उजडकर बरबाद हो गये हैं।

मेरे युवा साथियो! दुर्दशा और दुर्गति से बचने के लिए आओ, आज हो सब मिलकर प्रतिज्ञा करो कि हम कदापि नशा नही करगे। यदि सुबह का भूला हुआ शाम को घर आ जाय तो वह भूला हुआ नही माना जाता। यदि आपने अभी से अपने को सुधारने की कोशिश नही की तो बरबाद होने के बाद पछताने से कोई लाभ नही होगा, जैसा उर्दू मे शायर ने लिखा है—

होश अब आया है घर का घर उजड जाने के बाद,
शौक उडने का हुआ है, पर कतर जाने के बाद॥

देवराज आर्य मित्र, आर्यसमाज,
बल्लभगढ़, जि० फरीदाबाद

वेदप्रचार समिति फरीदाबाद द्वारा प्रचार

वेदप्रचार समिति ११९२/१८ फरीदाबाद की ओर से ११ से १८ अगस्त ९३ को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व ग्राम महमूदपुर तिगाव मे मनाया जा रहा है जिसमें आयसमाजो विद्वान् पहुच रहे हैं।

—राजसिह आर्य

आर्यसमाज जगाधरी वर्कशाप का चुनाव

प्रधान—श्री धर्मवीर, उपप्रधान—श्री जयप्रकाश, श्री दिलबाग राय, मन्त्री—श्री केशवदास आर्य, उपमन्त्री—श्री गोपालकृष्ण, कोषाध्यक्ष—श्री प्रकाशकुमार गुप्त, पुस्तकाध्यक्ष—श्री शारदाकुमार, लेखानिरीक्षक—श्री हरद्वारीलाल शर्मा, श्री बैजनाथ आर्य।

—केशवदास आर्य मन्त्री

आवश्यक सूचना

ब्र० ओमदत्त आर्य जो कि आर्यसमाज झज्जर रोड रोहतक में रहता है, मेरा उसके आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा झज्जर रोड आर्यसमाज के विवाद से कोई किसी प्रकार का सम्बन्ध नही है। यह ब्रह्मचारी मेरे शिष्य के रूप मे मेरे नाम का यत्र-तत्र दुरुपयोग कर रहा है। उसे यह लिखित सूचना दी जाती है कि वह भविष्य मे मेरे नाम का कहीं भी उपयोग न करे।

सुदर्शनदेव आचार्य
हरिसिंह कालोनी, रोहतक

आर्यसमाज कुन्जपुरा जि० करनाल का चुनाव

प्रधान—वैद्य रोहिताश्व आर्य, उपप्रधान—श्री सतीशकुमार आर्य मन्त्री—राधेश्याम आर्य सरपच, उपमन्त्री—श्री मनोजकुमार आर्य प्रचारमन्त्री—श्री ब० गजराजसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री शिवकुमार आर्य।

शोक समाचार

प० सुदर्शनदेव आचार्य की बहिन हरदेई का दिनाक १४-८-७३ को लम्बी बीमारी के पश्चात् स्वर्गवास होगया है। परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोकाकुल परिवार को शान्ति प्रदान करे।

—वेदव्रत शास्त्री

शोक समाचार

आर्यसमाज पूठर जिला पानीपत के प्रधान महाशय वेगराज आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती चलती देवी का ४-८-९३ को निधन होगया। वे धर्मपारायण महिला थी। आर्यसमाज के प्रचार काय मे सहयोग देती थी।

उनकी स्मृति मे १९-२० को हवन-यज्ञ तथा वेदप्रचार का आयोजन किया गया है। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सद्गति तथा उनके दुखी परिवार को धैर्य प्रदान करे। —व्यवस्थापक

छत्तीसगढ़ मे शराबबंदी का जोश

रायपुर जिले के मानसौज गांव ने राह दिखाई

तपती दुपहरी गांव के बाहरी इलाके मे एक कच्चे मकान मे बनी देशी शराब की दुकान की जाली लगी खिड़की के आगे खरीददार खड़े हैं बोतल बिक रही हैं तभी दुकान के सामने सड़क के उस पार बने खपरैलो वाले कच्चे मकान से एक औरत दौड़ती हुई दुकान तक जाती है तेज छत्तीसगढ़ी मे शराब के खरीददारो को कोसने लगती है, वे मुंह बिचकाते हैं वह झपट्टा मारकर एक के हाथ से उनकी बोतल छीनकर फोड़ देती है, वे आगबबूला हो उठते हैं इससे पहले कि वे उस औरत से कोई दुर्व्यवहार करें, दूसरी दिशा से २५०-३०० ग्रामीणो का हुजूम आता दिखाई देता है, २६ वर्षीया मानकुवर का बेटा गाव वालो को मोर्चे पर बुला लाया है अब शराब खरीदने वाले शराब को हाथ न लगाने की कसमे खा रहे हैं।

यह दृश्य है मध्य प्रदेश के पिछड़े छत्तीसगढ इलाके के रायपुर जिले के मानसौज गाव का, देशी शराब के दुकान के सामने स्थित खेतिहर मजदूर मानकुवर का घर गाव वालो की मद्य निषेध कमेटी का दफ्तर है और मानकुंवर तथा उसका मजदूर पति रामजी शराब की दुकान की नाकेबन्दी को चौबीसो घटे कारगर रखनेवाले जागरूक चौकीदार हैं। मानसौज गाव मे करीब ढाई महीने पहले स्वयप्रेरणा से शुरू हुआ यह शातिपूर्ण आन्दोलन अब आस-पास के बाईस गावो मे फैल गया है और देशी शराब की बिक्री बन्द हो गई है। सबसे बडी बात यह है कि आन्दोलन का कोई एक नेता नही है और कोई राजनैतिक पार्टी इसमे शामिल नही है मानसौज के ७२ वर्षीय रोमनाथ चद्राकार कहते हैं "शराब इस क्षत्र के गावो को बरबादी की राह पर ले जा रहा था। झगडे-फसाद तो बढे ही, खुलेआम जुआ भी होने लगा, गाव की औरतो का बाहर निकलना मुश्किल हो गया"।

सो इस साल मार्च मे ठेके की नई नीलामी होने से पहले ही गाव के लोगो ने कलेक्टर और आबकारी विभाग को आवेदन-पत्र देकर चेतावनी दी थी कि इस बार मानसौज मे देसी शराब की दुकान न खोली जाए इसके बावजूद ५ लाख ८० हजार रु पर ठेका दे दिया गया सरकारी आकडे बताते हैं कि पूरे रायपुर जिले मे १९८८-८९ मे १६ करोड लीटर देशी शराब बिकी जबकि १९९२-९३ मे खपत करीब २४ करोड लीटर हो गई एक अनुमान के अनुसार अकेले मानसौज मे ही पिछले दो वर्षों मे रोजाना पाच से सात हजार रुपये की दारू बिकती थी।

प्रशासन के कान पर जूं न रेंगते देख समझदार लोगो ने खुद ही पहल की रोमनाथ कहते है, 'होली के त्योहार पर गाव के लोगों ने मिलकर तय किया कि अब शराब की दुकान से एक भी बोतल नही नही बिकने दी जाएगा" रामजी और मानकुवर का मकान शराबबंदी आन्दोलन का मुख्य केन्द्र बन गया–गाव की महिलाये भी सक्रिय हो उठी, मानसौज और दूसरे गाव के लोगों ने राम जी के आगन में बैठकर नाकेबन्दी शुरू कर दी हाट के दिन जुलूस भी निकलने लगा पंचायतो ने पीनेवालो पर जुर्माना लगाना शुरू कर दिया टेकरी गांव के रामानन्द पटेल कहते हैं 'हमने १५०० रु० का जुर्माना रखा और गाव वालो का दारू पीना बन्द हो गया।

नतीजतन मानसौज की दुकान से शराब बिकनी बन्द हो गई इस पर ठेकेदारो के कारिन्दों ने पिछले महीने धौंस डपट का रास्ता अपनाया गांव के बाहरराम कहते हैं 'दुकान के ठेकेदार ने खुद ही बोतलें तुड़वा दी और हमारे खिलाफ डकैती की रिपोर्ट लिखवाई वे हमें झगड़े के लिए उकसाना चाहते हैं लेकिन आन्दोलन अब भी अहिंसक है।

राजनैतिक पार्टियां आन्दोलन से नही जुड़ी हैं इसलिए जिला प्रशासन [illegible] की कोई बक्त नही रायपुर के कलेक्टर देवराज मिह [illegible] भी अचानक उठकर शराब की दुकान हटा [illegible] कम माना जा सकता है।

लेकिन मानसौज के आंदोलनकारी दुकान बन्द करवाकर ही मानेंगे टकारी गांव के नौजवान टैसर विश्वनाथ शर्मा कहते हैं "अब न शराब बिकने देंगे से किसी को पीने देंगे आन्दोलन कब तक चलेगा यह पूछते ही कई आवाज एक साथ उभरती हैं 'जब तक एक भी आदमी पीता दिखेगा'। —जगदीश उपासने, छत्तीसगढ़ में

सर्वहितकारी का प्रभाव

सभा के भजनोपदेशक ने श्री मानसिंह ग्राम नयाबास (नौएडा) को प्रेरणा करके सर्वहितकारी साप्ताहिक का सदस्य बनाया था। इससे पूर्व वे शराब के नशे मे फसने पर अनेक रोगों से दुखी रहते थे। प्रति सप्ताह सर्वहितकारी में शराब के विरुद्ध लेख तथा कविताए पढ़ने से उन्होने साहस करके शराब का सेवन छोड दिया। छोडे दिन के पश्चात् उसको सभी रोगों से छुटकारा मिल गया। वे जिस डाक्टर से उपचार करवाया करते थे, उसने अन्य रोगियों को भी शराब छोड़ने का परामर्श दिया है।

शराबबन्दी भजन

टेक—ठेकेदारो बात विचारो।
हम कहते बारम बार, यो ठेका ठाणा सै।

१ आख उठा के देख लिए, लगा आवागमन का चक्र सै।
एक दिन सब को जाना होगा, के राजा से फक्र सै।
अपनी इस मैं के टकर सै, या मौत करे इन्तजार।।
यो ठेका ठाणा सै...

२ औरा का रहा बुरा सोच, अपनी भलाई चाहवे स।
बडा ठेकेदार बन कै, दारू प्याणी चाहवै सै।
करो कमाई चाहवे सै, तू करले और ब्योपार।।
यो ठेका ठाणा सै

३ आपस मैं रिस्तेदारी सै, इस कारके समझावा सां।
रिस्तेदारी के नाते, बात बतानी चाहवा सा।
ना मन मैं घबरावा सां, हम करा वेद प्रचार।।
यो ठेका ठाणा सै

४ गांव गुवाण्ड मे खबर फैलगी, अतरसिंह तेरे आने की।
घरने ऊपर खुशी हुई सै, पृथ्वीसिंह तेरे गाने की।
या ना सै बात छुपाने की, लग्या ऋषि दयानन्द का दरबार।।
यो ठेका ठाणा सै

प्रेषक—शराबबन्दी समिति बालसमन्द

[illegible] के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, गोहाना रोड, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०/७३   रजि० न० P/m-   ७७२२   सृष्टिसवत

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २०   अंक ३५   २८ अगस्त, १९९३   वार्षिक शुल्क ४०)   (आजीवन शुल्क ५०१)   विदेश मे १० पौंड   एक प्रति ८० पैसे

वेद में मधु विद्या

स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, गुरुकुल कालवा

अथर्ववेद ९।१।२२ में मधु विद्या के सात रूप इस पृथिवी पर हैं, यह बताया है। एक मधुरता ब्राह्मणो मे ज्ञान रूप से है, दूसरी मधुरता क्षत्रियो में पराक्रम के रूप से विद्यमान है, इसी प्रकार गौ, बैल चावल, जौ और शहद मे भी मधुरता है। अत जो मनुष्य यह बात जानता है वह इन सात पदार्थों से अपनी उन्नति करता है। वेद का मन्त्र कहता है—

यो वै कशाया सप्त मधूनि वेद मधुमान् भवति।
ब्राह्मणश्च राजा च धेनुश्चानड्वाश्च व्रीहिश्च यवश्च मधु सप्तमम्॥
(अथर्व० काण्ड ९ सूक्त १। मन्त्र २२)

अर्थ—(य वै कशाया सप्त मधूनि वेद) जो इस प्रकार के सात मधु जानता है, वह (मधुमान् भवति) मधुवाला होता है। (ब्राह्मण च राजा च) ब्राह्मण और राजा, (धेनु च अनड्वान् च) गाय और बैल, (व्रीहि च यव च) चावल और जौ तथा (मधु सप्तमम्) सातवा मधु है।

भावार्थ—जो इस गौ के सात मीठे रूप जानता है मधुर बनता है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, गाय, बैल, चावल, जौ और शहद सातवा है। गौ के ये सात मीठे रूप हैं।

इन सात मधुओं का स्वरूप—

"ब्राह्मण" पहिला मधु है। इसके पास ज्ञान का मीठा रस रहता है। यही साक्षात् अमृत है, ज्ञान और विज्ञान इसमे सम्मिलित है। अभ्युदय और निश्रेयस की सिद्धि इस ज्ञान पर अवलम्बित है। ब्राह्मण के अधीन राष्ट्र का अध्ययन अध्यापन है। अर्थात् यही राष्ट्र की भावी सन्तान उदयोन्मुख करता है। यह 'ज्ञानमधु' है। हर एक मनुष्य और प्रत्येक युवा इसका सेवन करे।

'राजा' दूसरा मधु है। (रञ्जयति इति राजा) प्रजा का रजन करनेवाला राजा होता है। जो प्रजा के उत्साह को कुचलता है उसका नाम राजा नही। राजा शब्द से सब क्षत्रियो का ग्रहण हो जाता है। दुख से प्रजा की रक्षा करना और उसका रञ्जन करना, यही राज्यशासन का काय है। यहा (प्रजा रञ्जन रूप) मधु देनेवाला राजा होता है। राष्ट्र का प्रत्येक मनुष्य इस रक्षा कार्य करने में समर्थ चाहिए, तभी यह मधु प्रजा को प्राप्त होता है। जहा ब्राह्मण और क्षत्रिय मिलजुलकर राष्ट्र की उन्नति करने में तत्पर होते हैं वही राष्ट्र उन्नत होता है।

इसके पश्चात् तीसरा मधु "गौ" है ज्ञान और रक्षा होने के पश्चात् गाय का दूध रूपी अमृत प्रत्येक मनुष्य को प्राप्त होना चाहिए। यह अमृत है और यही जीवन है।

चतुर्थ मधु "बैल" (साण्ड) है। उत्तम गौ की उत्पत्ति साण्ड पर है इसलिए बैल की गणना मधु मे की है। इसके अतिरिक्त हमारी खेती भी बैल पर निर्भर है।

आगे के तीन मधु चावल, जौ और शहद हैं। ये उत्तम भक्ष्यान्न हैं ये चावल और जौ बुद्धिवर्धक हैं और शरीर की स्वस्थता के लिए यह उत्तम है। मधु अर्थात् शहद तो सर्वोत्तम स्वादु पदार्थ है। वनस्पतियों मे उत्तम फूल और फूलों में मधु उत्तम। ऋषियों का यही चावल, जौ और शहद अन्न था, इसीलिए उनकी बुद्धि अत्यन्त कुशाग्र होती थी। इस प्रकार यह सात मधुओं का विषय है।

ऋग्वेद मण्डल १, सूक्त ९०, मन्त्र ६, ७, ८ मे मधु विद्या का माहात्म्य वर्णित है। वे मन्त्र इस प्रकार हैं—

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धव। माध्वीर्न सन्त्वोषधी॥
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव रज। मधु द्यौरस्तु न पिता॥
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमा अस्तु सूर्य। माध्वीर्गावो भवन्तु न॥
(ऋग्वेद १।९०।६ ७-८)

हम सत्य की खोज करनेवालो के लिए—वायु मधुर बहे, नदियो में हमें मधुर जल प्राप्त हो, औषधिया मधुरता से परिपूर्ण हो, रात, प्रात और सन्ध्या मधुरता का सचार करे। धरती का प्रत्येक रजकण मधुमय हो। आकाश जो पितास्वरूप है दूध की वर्षा करे। वृक्षो से मधुमय फल मिले, सूर्य मधु का प्रसार करे और गाय हमे मधुमिश्रित दूध दे। यह है मधु के माहात्म्य का वर्णन ऋग्वेद मे। जिस मधु के पान के लिए देवता भी लालायित हो उसके बारे मे आज हम सब कुछ भूल बैठे हैं यह हमारा दुर्भाग्य नही तो क्या है? केवल भारतीय संस्कृति मे ही मधु की महानता का उल्लेख या वर्णन नहीं है अपितु इस अमृत तुल्य सुवासित महौषधि की प्रशस्ति में ससार के अन्यान्य अनेक धर्मग्रन्थो में उल्लेख मिलता है। बाईबिल और कुरान मे इसका गुणगान किया है।

अथर्ववेद ९।१।२३ मे कहा गया है—

मधुमान् भवति मधुमदस्याहार्यंऽभवति।
मधुमतो लोकान् जयति य एव वेद॥

जो इस बात को जानता है, वह मधुर होता है, मधुवाला होता है और मीठे स्थान प्राप्त करता है।

आर्यसमाज सिवाह जिला पानीपत का चुनाव

दिनाक १-८-९३ को प्रात आर्यसमाज सिवाह की कार्यवाही यज्ञ हवन से प्रारम्भ हुई। सत्सग मे काफी सख्या मे आर्यसमाज के सदस्यो ने भाग लिया। यज्ञ के पश्चात् प० चिरजीलाल के भजन तथा प्रिंसिपल लाभसिंह ने अपने विचार रखे। इसके पश्चात् प० चिरजीलाल की अध्यक्षता में आर्यसमाज सिवाह का चुनाव निम्न प्रकार से हुआ।

१) सरक्षक—प्रिंसपल लाभसिंह जी, २) प्रधान—श्री वेदपाल सिंह वकील, ३) उपप्रधान श्री बलवन्तसिंह, ४) मन्त्री—श्री बलवीरसिंह, ५) कोषाध्यक्ष—श्री ईश्वरचन्द, ६) प्रसारमन्त्री—ला० पन्नालाल, ७) उपमन्त्री—सूरजभान, ८) पुस्तकालय अध्यक्ष—मास्टर धारीसिंह।

वेदप्रचार सप्ताह के पवित्र अवसर पर—"सामयिक लेख"

"वेदों का महत्त्व एवं रहस्य"

लेखक—सुखदेव शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक।

(गतांक से आगे)

२- मीमांसा दर्शन—म० जैमिनि—औत्पत्तिकस्तु शब्दस्यार्थेन सम्बन्धस्तस्य ज्ञानमुपदेशोऽव्यतिरेकश्चार्थेऽनुपलब्धे तत्प्रमाण बादरायणस्यानपेक्षत्वात् ।१।१।५

शब्द का अर्थ के साथ स्वाभाविक सम्बन्ध है। इसका ज्ञान वा उपदेश परमात्मा ने किया है। जो अर्थ किसी भी प्रमाण से उपलब्ध न हो उसका उपदेश भी वेद द्वारा परमात्मा ने किया है। अत वेद स्वत प्रमाण एव ईश्वरीय ज्ञान है।

३- वैशेषिक दर्शन—म० कणाद—तद्वचनात् आम्नायस्य प्रामाणयम् ।१।१।३

ईश्वर का वचन होने से वेदचतुष्टय प्रमाण हैं।

४- न्यायदर्शन—म० गौतम—मन्त्रायुर्वेदप्रामाण्यवच्च तत्प्रामाण्यमाप्तप्रामाण्यात् ।२।१।६८

मन्त्र विचार तथा आयुर्वेदवत् वेदो का प्रमाण है। ऐसा ही सब आप्तो ने माना है।

५- योग—म० पतञ्जलि—स पूर्वेषामपि गुरु कालेनावच्छेदात् ।१।२६।

यह भगवान् सर्वप्रथम ऋषियो का भी गुरु है, क्योंकि वह सर्वकाल मे ज्ञानी है।

६- साख्यदर्शन—म० कपिल—निजशक्त्यभिव्यक्ते स्वत प्रामाण्यम् ।५।५१।

वेद परमात्मा की अपनी शक्ति से प्रकट हुआ है अत स्वत प्रमाण है। उसमे कोई त्रुटि नही है।

न पौरुषेयत्व तत्कर्त्तु पुरुषस्याभावात् ।५।४६।

वेद अनित्य वा मनुष्यकृत नही है, क्योकि उनका कर्त्ता कोई पुरुष नही है।

मुक्तामुक्तयोरयोग्यत्वात् ।५।५।७।

मुक्त तथा अमुक्त किसी मे भी वेद के रचने की शक्ति नही है।

इस प्रकार छ दर्शनो के रचयिता ऋषि, वेदो को नित्य, अपौरुषेय तथा परमात्मा का ज्ञान मानते हैं।

महर्षि वेदव्यास ने महर्षि पतजलि के 'योग दर्शन' पर अपना 'व्यास भाष्य' लिखा, धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र मे ही बैठकर वेदान्त दर्शन की रचना की थी, और वही कुरुक्षेत्र हरयाणा मे महाभारत की रचना की थी, योगेश्वर श्रीकृष्ण का अर्जुन को 'गीता का उपदेश' भी पवित्र कुरुक्षेत्र की धरती पर युद्ध के मैदान मे ही दिया गया था। महर्षि वेदव्यास का आश्रम कुरुक्षेत्र मे ही था। जो आज भी 'व्यास टीले' के नाम से प्रसिद्ध है। उसी अपने आश्रम मे महर्षि हजारो शिष्यों को वेदान्त का प्रवचन देते थे। महाभारत के युद्ध से कुछ पूर्व ही महर्षि वेदव्यास ने अपने शिष्यो को 'वेदो का महत्त्व एव रहस्य पर अपना प्रात कालीन प्रवचन देते हुए बहुत ही भावविभोर होकर प्रवचन के अन्त मे कहा था—

> "वेदा मे परम चक्षु, वेदा मे परमं बलम्।
> वेदा मे परम धाम, वेदा मे ब्रह्म चोत्तमम् ॥

इसी प्रकार महाभारत के युद्ध पर्यन्त सरस्वती नदी के किनारे कुरुक्षेत्र के इस ब्रह्मर्षि देश हरयाणा मे ही अट्ठासी हजार ऊर्ध्वरेता ऋषि निवास करते थे। जहा से वेदो का 'मनुर्भव' का सन्देश सारे ससार मे फैल जाता था। सारे संसार मे सुख शान्ति का साम्राज्य था।

महाभारत के पश्चात् वेदो का पठन-पाठन छूटने से सारे ससार मे अविद्या का गहरा अन्धेरा छा गया था। ऐसे गहरे अन्धेरे को हटाने के लिए महर्षि दयानन्द वेदो का मानवता का सन्देश लेकर सूर्य बनकर भारत के भाग्य आकाश पर चमके। उन्होने पुन वेद की ज्योति फैलाई वेदोद्धार किया। आर्यसमाज के तीसरे नियम मे सशोधन १८७७ मे लाहौर में महर्षि ने आर्यो को आदेश दिया था वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है, वेद का पढना पढाना और सुनना सुनाना सब परम धम है। इसे आर्यों का परम धर्म घोषित किया था।

अत आओ! आज इस श्रावणी के पुण्य पर्व पर एव वेद प्रचार सप्ताहो के पवित्र अवसर पर वेद के स्वाध्याय का पवित्र सकल्प ले। प्रतिदिन वेद पढने का सकल्प ले। उसके अनुसार आचरण कर जीवन उच्च बनाए।

इस प्रकार मानव निर्माण के हजारो वेद मन्त्र प्रस्तुत किए जा सकते है। इस वेद मार्ग पर चलकर सारे विश्व का उद्धार हो सकता है। परस्पर की ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थपरता, काम, क्रोध, लोभ की दुर्भावना समाप्त हो सकती है। सारे ससार मे शान्ति का साम्राज्य छा सकता है। सारे देशो मे आपसी भाईचारा बढाकर मानव को सुखी किया जा सकता है। जब वेद का 'मनुर्भव' का पवित्र सन्देश सारे विश्व में पहुंच जाय तो संसार के सारे क्लेश, सकट कट सकते है। जब ससार मे 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का पवित्र लक्ष्य सामने रखकर आर्य साम्राज्य का सपना साकार हो जाय तो संसार मे दानवता समाप्त होकर सर्वत्र सुख शान्ति का वातावरण तैयार हो जाय। जिसके कारण से ससार से हाहाकार मिटाकर स्वाहाकार हो जाय, जिससे सब रोग शोक समाप्त होकर सारा ससार सुख से बस जाय। सारे ससार मे प्रात साय हवन यज्ञ के मन्त्रो से यज्ञवेदी मे से उठा पवित्र यज्ञ का धुआ मनुष्य मात्र के स्वास्थ्य को सुन्दर बनाकर ससार को सुखी कर सकता है रोग रहित करके सभी प्रकार की आपदाओ से मुक्ति दिला सकता है। यह तभी सभव हो सकता है जब ससार में वेदो का प्रचार हो और कोई रास्ता ही नही है।

शराबबन्दी सत्याग्रह के प्रथम सर्वाधिकारी स्वामी ओमानन्द सरस्वती की आर्यजनता के नाम अपील

यदि आप हरयाणा के माथे से शराब का कलंक मिटाना चाहते हैं तो—

१ अपने निकट की ग्राम पंचायतों को प्रेरणा करके ३० सितम्बर तक शराबबन्दी के प्रस्ताव करवाकर हरयाणा आबकारी विभाग के आयुक्त को चण्डीगढ़ भिजवावें।

२. अपने निकट के शराब के ठेकों पर धरणें दिलवाने में योगदान करें।

३ शराबबन्दी सत्याग्रह की तैयारी हेतु प्रत्येक ग्राम से ११-११ सत्याग्रहियो की सूची तथा ११००-११०० रु० की दान राशि निम्न पते पर भिजवाकर रचनात्मक सहयोग करें।

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ
रोहतक (हरयाणा)

पूर्ण नशाबन्दी बिना आजादी अधूरी

प्रभातशोभा पंडित, अतिरिक्त महामन्त्री, अ० भा० नशाबन्दी परिषद

प्रतिवर्ष की तरह भारत का 'स्वाधीनता-दिवस' १५ अगस्त फिर फिर मनाया गया। लोकपर्व के रूप में नहीं, राजपर्व के रूप में। हालांकि स्वाधीनता संग्राम मे भारत की ही जनता ने बढ़-चढ कर भाग लिया लेकिन 'स्वाधीनता दिवस' लोकपर्व नहीं बन पाया। क्यों? क्योंकि दुर्भाग्य से भारत की आजादी का पावन यह पर्व दरिद्र और पद-दलित दीन जनों की आशाओं के विपरीत, चन्द शक्तिशाली वर्गों की महत्वाकांक्षा एवं स्वार्थों की पूर्ति का साधन बनकर रह गया। अंग्रेज लूट खसोट करके जो धन साधन इंग्लैण्ड ले जाते थे वही भारतीय राजनेताओं और उद्योगपतियों के विदेशी-देशी खातो मे जमा होने लगा और उच्च राज्याधिकारियो ने भी अपना हिस्सा जम कर खाया। इस षड्यन्त्र मे लगी तिकडी ने भारत की जनता के साथ सरासर छल किया है। भारत की भोली भाली बेसहारा जनता के शोषण मे जो निर्लज्जता इन्होंने बरती है उससे साफ जाहिर है कि भारत की कोटि-कोटि जनता को ये वर्ग भेड-बकरियो से ऊपर दर्जा नही देते और देश की जनता जो पहले 'विदेशी अंग्रेजों' की गुलाम थी आज भी 'देशी अंग्रेजों' की गुलाम है।

'अहिंसा' और 'सत्याग्रह' के सार्थक प्रयोग मे गांधी जी के सम्मोहक एवं निर्भीक नेतृत्व मे स्वाधीनता संग्राम के कठिन और लम्बे संघर्ष में जिन अनगिनत नर-नारियो ने मातृभूमि हित अपने प्राण न्योछावर किये, हम चाहे तो उनकी लाशो से पूरे देश की परिक्रमा बिछा सकते हैं, बहुत कीमत चुकाकर हमने पाई थी आजादी। उन आत्म-बलिदानी वीर-सेनानियो मे से अनेक आज दुनिया मे नही रहे। हम उन्हे अपनी भावना से भीगी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। लेकिन जो स्वतन्त्रता सेनानी आज भी जीवित हैं उन्हे साक्षी बनाकर हम देश के नेताओ से अवश्य पूछना चाहेंगे कि क्या 'गांधी के सपनो का भारत' यही है? 'स्वराज्य' क्या इसी को कहते हैं कि भारत की सरकारे डण्डे के जोर पर शराब पिलाकर किसान और मजदूर का शोषण करें? देश के विकास के नाम पर गरीबी का नाश करे। सत्ता और सरकार के गलियारे दलालों की मण्डी बनकर रह गये हैं जहा आम आदमी का सुख रोज नीलाम होता है। राजमद में डूबे सत्ताधारी, भ्रष्ट राज्याधिकारी और स्वार्थ के लोभी धनपतियो से मिलकर महारथियो से घिरे अभिमन्यु के समान देश की जनता की हालत बना दी है। 'बंसीलाल' हो या 'देवीलाल' या फिर 'भजनलाल', भारत के लालो मे से किसी का कोई सरोकार नही, सब अपने अपने 'लालो' के मोह में मस्त है। किसान अपने बच्चो के मुह मे रोटी का निवाला डाल सके इससे पहले सरकारी सुरा की राक्षसी उसे अपने बहाव मे डुबोकर तबाह कर देता है। हरयाणा मे पुलिस की ड्यूटी लगी है शराब पिलाने की। दिल्ली सरकार भी अपनी दुकाने खोल कर बैठी है इस पवित्र कर्त्तव्य का निर्वाह करने। यह सब कुछ संविधान के विरुद्ध है यह सिद्ध करने के लिए सर्वोच्च न्यायालय मे केस दायर करना पड़े, यह 'स्वराज्य' नही, स्वाधीनता का उपहास है?

स्वाधीनता-सेनानियों के परिवार मे जन्म लेने का गौरव हमें मिला। क्या हमारे साथियो को भूल गया कि आजादी के गीतों और नारों में नशामुक्ति के तराने भी एक हिस्सा थे गांधी जी ने एक तावीज दिया था—

अपने कार्यों के मूल्यांकन की कसौटी के रूप मे वह तावीज अब खो गया है! तो प्रश्न है कि करना क्या होगा? उत्तर है अपनी मुक्ति के लिये फिर से लडना होगा। हमारे पूर्वजो की स्वतन्त्रता की लडाई अधूरी रह गई है। वे स्वाधीनता के महाकाव्य का पूर्वार्द्ध ही लिख पाये, लेकिन 'आजादी के बाद आजादी की लडाई का' अध्याय लिखना अभी बाकी है। बाणभट्ट जब "कादम्बरी" महाकाव्य को अपने जीवनकाल मे पूरा न कर सके तो उत्तरार्ध लिखने का भार उन्होंने अपने दो पुत्रो में से एक, उस पुत्र पर छोडा जो भाव-भाषा और काव्य कला में उनके समान ही प्रवीण था। स्वाधीनता को सार्थक बनाने का काम हमे भी करना होगा।

वर्तमान राजनीति या अर्थनीति के चिन्तकों से छुटकारा पाकर यदि हमने गांधी जी द्वारा निर्देशित लोक-कल्याण परक नीतियो का सहारा न लिया तो हम कभी भी आजाद नही होंगे। आजाद होना है तो देश-वासियो! उठो और जागो। 'प्रह्लाद' को सतानेवाले पिता 'हिरण्यकश्यप" का मुकाबला करो—दीवार मे से प्रगट होनेवाले "नरसिंह" का अवतार बनो और दिखा दो गांधी के झूठे नाम लेवाओ को यदि हम उस राज की गुलामी से मुक्ति पा सकते थे जिसमे सूर्य नही छिपता था तो हम भ्रष्टाचारी, अन्यायी, बलात्कारी और व्यभिचारी संस्कृति के पोषकों को भी दण्डित कर सकते है, कहना यही है कि—

"चश्मे नाजिम ने तो देखा है के तूफानो मे
नाखुदा, तुझको जो आज पुकारे, डूबे।

उठाओ चप्पू और अपनी नाव सम्भालो! जो शराब की बाढ मे करोड़ों का सुख बहा ले गये उन्हे मरुभूमि मे पैदल चलने का प्रायश्चित करना ही होगा।

गांधी जी का तावीज

"मैं आपको एक तावीज देता हू। जब कभी आप दुविधा मे हो या आपको अपना स्वार्थ प्रबल होता दिखाई दे तो यह नुस्खा आजमाकर देखियेगा अपने मन की आखो के सामने किसी ऐसे गरीब और असहाय व्यक्ति का चेहरा लाईये जिसे आप जानते हो और अपने आपसे पूछिये कि क्या आपकी करनी उसके किसी काम आयेगी? क्या उसे कुछ लाभ होगा? क्या उस काम से उसे अपना जीवन और भविष्य बनाने मे कुछ मदद मिलेगी? दूसरे मानो मे क्या आपकी करनी हमारे देश के लाखो करोड़ों भूखे नगे लोगो को स्वराज्य की राह दिखायेगी? बस इतना सोचते ही आपको सारी दुविधाए दूर हो जायेंगी और स्वार्थ मोम की तरह पिघलकर बह जायेगा।"

हिन्दू-धर्म भी वैदिक-धर्म नहीं है

डा० धर्मचन्द्र विद्यालंकार

सर्वप्रथम तो हिन्दू नाम का तो कोई धर्म ही दुनिया में नहीं है, क्योंकि हिन्दू शब्द धर्म या मत वाचक न होकर जाति वाचक है। अखण्ड भारत के सिन्ध प्रान्त से लगने वाले अरबी देश भाषा भेद के कारण हिन्दू देश बोलते थे और यहां के निवासियों को हिन्दू कहते हैं। आज भी फारसी अरबी मे सप्ताह को हफ्ताह कहा जाता है। प्रत्येक देश के लोगों की अपनी एक जीवन शैली अथवा पद्धति विशेष होती है जिसे हस्कृति कहते हैं। इस अर्थ मे हिन्दू आज भी कोई धर्म या मत न होकर एक सस्कृति विशेष है। प्रत्येक मत या पन्थ का अपना एक प्रवर्तक महापुरुष होता है। एक उसका पूज्य ग्रन्थ होता है। एक उसका निश्चित आराध्य देव होता है। उसकी अपनी एक भाषा या बोली भी स्थान भेद से हो सकती है। परन्तु आजकल जिस हिन्दू धर्म को दुहाई दी जा रही है। वह मत या पन्थ को किसी भी कसौटी पर खरा नहीं उतरता। फिर भी उस हिन्दू-धर्म की एकता या रक्षा पर इतना अधिक बल क्यों दिया जा रहा है ? यह हमारी समझ से बाहर की बात है।

दुनिया का और विशेषकर भारत का यदि सर्वाधिक पुराना धर्म किसी को माना जा सकता है तो यह वैदिक धर्म ही हो सकता है। क्योंकि उसका अपना आदि ग्रन्थ वेद दुनिया की पहली पुस्तक है। उसका एकमेव परन्तु नाना नामधारी उपास्यदेव ओम् है। उसकी अपनी भाषा विश्व को पुरातन भाषा सस्कृत है। लेकिन आज का हिन्दू धर्म वैदिक-धर्म कदापि नहीं कहा जा सकता। वैदिक-धर्म एक सार्वभौमिक और शाश्वत सत्य की नियमावली का नाम है। वैदिक-धर्म के सिद्धान्त धर्म और भाषा तथा जाति और प्रदेश के भेदभाव से ऊपर उठकर व्यापक मानवीय धरातल पर अवस्थित थे। परन्तु वर्तमान का कट्टरतावादी हिन्दुत्व किसी भी अर्थ में वैदिक ऋषि परम्परा का एक मात्र और सच्चा उत्तराधिकारी नहीं हो सकता। अथर्ववेद के बारहवें काण्ड का एक मन्त्र इ गित करता है कि 'एक देश में बहुभाषी और बहुधर्मी लोग एक परिवार की तरह सामंजस्य और स्नेह के साथ रह सकते हैं।' परन्तु वर्तमान का हिन्दू धर्म तो एक देश मे केवल एक ही धर्म और भाषा को मानने वालो की वकालत करता है। इतना ही नहीं वेद ने तो धार्मिक क्षेत्र मे भी मानव मात्र को पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान की। इसका जीता जागता उदाहरण वेद का 'एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' वाला आदर्श-वाक्य है। जिसके अनुसार प्रत्येक मनुष्य को अपने आराध्य को किसी भी नाम से पुकारने और ध्याने का पूरा-पूरा अधिकार है। लेकिन आज का हिन्दू धर्म बहुत कुछ एकलवादी होता जा रहा है। उसमे बहुलवाद की सभावनाए क्षीण होती जा रही हैं। ऐसी स्थिति में उसके उग्र स्वरूप के प्रति हिन्दू इतर मतावलम्बियों का आशकित होना स्वाभाविक है।

धर्म आत्मा के उत्थान का मार्ग है। यह व्यक्तिगत वस्तु है, क्योंकि अनुभव पर आधारित है। जिसको ईश्वर का जो भी स्वरूप ग्राह्य लगे वह उसकी उपासना कर सकता है। जैसा कि गीता मे भी कहा गया कि मे 'यथा मार्ग प्रपयन्ते ताम्स्तथैव भजाम्यहम्' अर्थात् मुझे जो जिस रूप मे जपता है, मैं उसको उसी रूप मे प्राप्त होता हूं। लेकिन यह स्वतन्त्रता आज के हिन्दू धर्म मे नहीं दिखाई देती उसका आराध्य एकमात्र 'राम' है। जबकि राम एक राजा थे-मनुष्य थे। लेकिन पुरोहित वर्ग ने आजीविका के लिए इस देश के महापुरुषों को अवतार बनाकर एक धर्म-विशेष से जोड दिया। जबकि महानपुरुष किसी एक जाति या मत विशेष के न होकर सभी के होते हैं। फिर राम तो वैसे भी भारत के अधिसख्य सूर्यवंशी क्षत्रियों के पूर्वज हैं जिनमें से बहुत अब मतान्तर करके मुस्लिम या ईसाई बन गए हैं। मत या पन्थ विशेष के साथ जोडने से राम जैसे महापुरुष आज केवल एक वर्ग विशेष की बपौती बनकर रह गये। उनके ही बहुत सारे धर्मान्तरित वशजो से पुरोहित वर्ग ने उनको दूर कर दिया। व्यक्ति का विश्वास बदल सकता है लेकिन खून नहीं। लेकिन आज विश्वास खून से ऊपर दिखाई है। यह गलती इस देश के हिन्दू और मुसलमान दोनों ही सम्प्रदाय के लोगों ने की है। हिन्दू कहलाने वालों ने यदि राम और कृष्ण को अपना ही धर्म पुरुष (अवतार) मान लिया तो यहां के मुसलमान-ईसाइयों ने भी उनको परधर्मी मानकर त्याग दिया। राम की यह सब दुर्गति हिन्दू-धर्म की अवतारवादी अवधारणा के चलते हुए हुई है। वेद में कहीं भी अवतार की परिकल्पना नहीं थी। यह तो कालान्तर मे पुरोहित वर्ग ने अपनी स्वार्थ साधना एव आजीविका के लिए पनपाई। न ही वैदिक-धर्म मे कहीं पर भी मूर्ति पूजा का कोई विधान या स्थान था। लेकिन स्वार्थी पुरोहित वर्ग ने अपनी पेट पूजा के लिए अवतारों की मूर्तियां पुजवनी शुरू कर दी। उनपर भेंट पुजापा चढने लगा। एक वर्ग विशेष का अच्छा खासा व्यापार चल गया वरना वैदिक-धर्म मे कहीं पर भी किसी प्रकार से मूर्ति पूजा का प्रावधान नहीं मिलता। क्योंकि यहा पर परमात्मा को अनादि अनुपम और अजन्मा तथा अजर एव अमर कहा है। इन विशेषणों से युक्त सत्ता जन्म-मरण जरा-व्याधि के बन्धनों मे क्यों बधेगी ? आश्चर्य तो यह है कि आज के हिन्दूवादी वेद को मानकर भी नहीं मानते।

जब तक वैदिक-धर्म मे ऋषि-परम्परा (सत्यान्वेषकों) का क्रम जारी रहा तब तक वह शुद्ध गंगोत्री की गंगा की तरह से और पवित्र रहा। लेकिन जैसे ही उस परम्परा का अन्त होकर जन्मजात ब्राह्मण वर्ग के हाथों में धर्म की ठेकेदारी आ गयी तो एक वर्ग विशेष का एकाधिकार धर्म के विषय मे हो गया। उसके चलते मनमानी कपोल कल्पित यातनाए और व्यवस्थाए धर्म के नाम पर समाज पर थोप दी गयी। इसी एकाधिकार के कारण वैदिक-धर्म की वर्ण-व्यवस्था भी गुण-कर्म पर आधारित न रहकर जातिपरक हो गयी और समाज में ऊंच-नीच का भेदभाव उत्पन्न हुआ। वैदिक धर्म के पुराणवादी ब्राह्मणवादी संस्करण के आडम्बरों की प्रतिक्रिया स्वरूप ही बौद्ध और जैन मतों का उदय हुआ। ब्राह्मणों के जटिल और हिंसापरक कर्म-काण्ड का जमकर विरोध हुआ। जैन और बौद्ध मत ने ऊंच-नीच के भेदभाव को भुलाकर मानव मात्र की एकता का प्रतिपादन किया। इतना ही नहीं वैदिक धर्म के विकृत स्वरूपवाले कर्म काण्ड कुटिल कुलिश कठोर धर्म को इन मतों ने करुणा और परदु खकातरता की उदार भावना दी। बाद में इसी तत्व को अपनाकर वैष्णव मत का उदय हुआ। वह जैन और बौद्ध मत रूपी शैल-शिखरों से नितृत करुणा रूपी निर्झर का ही निर्मल जल था।

जैन और बौद्धों की करुणा को भक्ति का स्वरूप प्रदानकर वैदिक-धर्म के पौराणिक सस्करण ने अवतारवाद और मूर्तिपूजा का ओर भी अधिक पोषण किया। भारतीय जन गण को भाग्यवादी और अकर्मण्य बनाया। सामाजिक व्यवहार व श्रम कार्य को हेय बताया। कर्म करने वाली जातियों को कमीन और शूद्र कहा और उनके शोषण पर पलने वाली परजीवी जातियों को उच्च बताया। नारी को शूद्र की कोटि में रखा। उससे अध्ययन और धर्म कार्य का अधिकार छीना। यह सब कुछ वेद विरुद्ध था। अध्ययन और रक्षण तथा व्यापार का कार्य वर्ग-विशेषों के लिए आरक्षित कर दिया गया। वहीं वर्ग आजकल आरक्षण का सबसे मुखर आलोचक है। शूद्रों और अन्त्यजों को सारे समाज के सम्मान और समाज से वंचित रखा। आज भी वही तथाकथित हिन्दू-वादी लोग समाज में उसी अन्याय और विषमता के पक्षधर हैं। लेकिन आश्चर्य की बात तो यह है कि वही आज राजनीतिक निहित स्वार्थों के कारण हिन्दू मात्र की एकता की बात करते हैं। अपने ही स्वधर्म बन्धुओं को वे आज भी समाज में धार्मिक या आर्थिक अथवा राज-नैतिक समानता देने के पक्ष में नहीं है। लेकिन जब यह वर्ग देखता है कि इन वर्गों में शोषण और दमन तथा विषमता के विरुद्ध चेतना उद्बुद्ध हो रही है तो यही तथाकथित द्विज वर्ग आज हिन्दू मात्र की एकता का नारा देता है। हम हिन्दू हिन्दू की एकता के हिमायती है उसके विरोधी नहीं है। लेकिन भेड़-बकरियोंवाली एकता नहीं चाहते। हम समाज में मत्स्य-न्याय नहीं चलते रहने देना चाहते। धर्म के नाम

(शेष पृष्ठ ५ पर)

सामाजिक सुधार कार्यों मे सहयोग प्राप्ति हेतु हरयाणा के अध्यापकों की आवश्यक बैठक

माननीय महोदय, नमस्ते।

हरयाणा ऋषि-मुनियो की पवित्र धरती है। यहा के गुरुजनो से शिक्षा प्राप्त करने के लिए विदेशो से भी भारी सख्या मे छात्र आते रहते थे और वैदिक शिक्षा प्राप्त करके इसका प्रसार तथा प्रचार करते थे। परन्तु आज सारे राष्ट्र मे पाश्चात्य शिक्षा का महत्त्व बढ जाने से शराब, मांस, दहेज आदि सामाजिक बुराइया दिन-प्रतिदिन बढ रही हैं और हरयाणा प्रदेश की पवित्रता नष्ट होने का खतरा हो रहा है। स्कूलो में भी छात्र इन भयकर व्यसनो मे फसते जा रहे है। छात्र ही भविष्य के निर्माता होते हैं। यदि छात्रो तथा साधारण जनता को इन बुराइयों से नहीं बचाया गया तो हरयाणा का भविष्य अन्धकारमय होगा।

आप जैसे अध्यापक इन सामाजिक बुराइयो को दूर करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। अत आर्य प्रतिनिधिसभा हरयाणा ने निश्चय किया है कि शराब, मास, धूम्रपान तथा दहेज आदि सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने के लिये तथा समाज मे गिरते हुए अध्यापक के सम्मान को पुन बहाल करने के लिए अध्यापको का सहयोग प्राप्त किया जावे।

इसी कार्यक्रम पर विचार करने के लिए सभा की ओर से हरयाणा के अध्यापकों की एक आवश्यक बैठक अध्यापक दिवस पर ५ सितम्बर ९३ रविवार को प्रात १० बजे दयानन्दमठ,गोहाना रोड, रोहतक में रखी गई है। इस बैठक मे आपके अमूल्य सुझावो पर विचार करके सामाजिक बुराइयो को समाप्त करने का कार्यक्रम तैयार किया जावेगा और जो सेवानिवृत्त अध्यापक समाज सुधार तथा सभा की आर्य शिक्षण सस्थाओ मे अपनी सेवाये देना चाहेंगे, उस पर भी विचार किया जावेगा।

अत आप अपने अन्य साथी अध्यापको के साथ इस बैठक में सम्मिलित होने की कृपा करें।

आपके सहयोग का इच्छुक

दिनाक २७-८-१९९३ भवदीय—सत्यवीर शास्त्री, सभा उपमन्त्री

आर्यसमाज सिवाह (पानीपत) में जन्माष्टमी उत्सव सम्पन्न

दिनाक १०-८-९३ को आर्यसमाज सिवाह की ओर से कृष्ण जन्माष्टमी पर्व बडी धूम-धाम से मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ भजन तथा वेद प्रवचनों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रिंसिपल लाभसिंह, बाबू रामगोपाल वकील तथा हुडा कालोनी आर्य समाज पानीपत के अधिकारी उपस्थित थे। प्रिंसिपल लाभसिंह, रामगोपाल जी ने कृष्ण के जन्म पर अपने विचार रखे। यज्ञ के ब्रह्मा श्री रणवीरसिंह शास्त्री आचार्य भारतीय शिक्षा सस्थान समालखा का ओजस्वी भाषण हुआ यह कार्यक्रम पचायत भवन सिवाह मे आयोजित किया गया गाव तथा आस-पास के नागरिक बडी सख्या मे उपस्थित हुए आर्यसमाज के नव निर्वाचित प्रधान श्री वेदपालसिंह ने सबका धन्यवाद किया।

(पृष्ठ ४ का शेष)

पर शोषण और विषमता की विष बेल को नही पनपने दिया जा सकता।

हमारी यह मान्यता है कि हिन्दू मात्र के सगठन की बजाय हमें उनके सुधार पर ज्यादा जोर देना चाहिए। उनमे जात-पात की भावना को दूर करना चाहिये। दहेज प्रथा समाप्त करनी चाहिए। नशाखोरी को दूर करना चाहिए। गरीबो-अमीरो का खाई को मिटाना चाहिए। सबसे बडी बात भ्रष्टाचार को समाप्त करना चाहिए। विदेशी सौदो और बैंक-घोटालो मे रुपया डकारनेवाले तथाकथित हिन्दू ही है कोई अहिन्दू नही है। तब क्या हिन्दू के नाम पर इन बिन वड्डाओ हर्षद मेहताओं की भी एकता का नारा दिया जाता रहेगा। आज का हिन्दू-धर्म वैदिक धर्म ल गगोत्री नहीं, वह तो बगाल की हुगली नदी है। अतएव आज आवश्यकता इसके शुद्धिकरण की है। एकीकरण तो शुद्धिकरण होने पर स्वय हो जायेगा। बिना आत्मशुद्धि के एकीकरण का नारा महज राजनीतिक छलावा है। शोषक वर्गों का प्रपच है। शुद्धिकरण वैदिक शरण के अनुसरण से ही सभव है।

नान्यपन्था विद्यते ऽयनाय।

हरयाणा में शराबबन्दी सत्याग्रह की गतिविधियां

निजामपुर मे शराबबन्दी सम्मेलन सम्पन्न

ग्राम निजामपुर तहसील नारनौल जिला महेन्द्रगढ में शराब का ठेका खोले जाने पर सारे क्षेत्र मे रोष फैला हुआ है। आर्यषमाज के अधिकारियो ने इस शराब के ठेको को बन्द करवाने के लिए सहायता करने की माग की। सभा की ओर से प० धर्मवीर आर्य को वहा भेजा गया और उन्होंने आर्यसमाज नारनौल तथा निजामपुर के कार्यकर्ताओ से सम्पर्क करके २२ अगस्त को शराबबन्दी सम्मेलन रखने का कार्यक्रम बनाया। इसकी तैयारी के लिए सभा के उपदेशक पडित मातूराम प्रभाकर तथा प० खेमसिंह आर्य भजनोपदेशक का प्रचारार्थ कार्यक्रम बनाया गया। इस प्रकार १९ अगस्त को श्री कुलडाराम जी के सहयोग से ग्राम निजामपुर, २० अगस्त को श्री भागीरथा ने ग्राम नापला मे तथा २१ अगस्त को श्री भानाराम पूर्व पुलिस अधीक्षक ने ग्राम पवेरा मे शराबबन्दी प्रचार करवाया। २२ अगस्त को ग्राम निजामपुर मे शराबबन्दी सम्मेलन श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे आरम्भ हुआ। श्री स्वामी जी ने यज्ञ के अवसर पर शराब मे होनेवाली बुराइयो पर विस्तार से प्रकाश डाला। उनके उपदेश से प्रभावित होकर श्री प्रभुदयाल सुपुत्र श्री कुरडाराम ग्राम मारौली, डा० धानौता जिला महेन्द्रगढ आदि अन्य नवयुवको ने भविष्य मे शराब न पीने की प्रतिज्ञा की। स्वामी ओमानन्द जी जो कि शराबबन्दी सत्याग्रह के सर्वप्रथम अधिकारी ने उपस्थित नर-नारियों का आह्वान करते हुए कहा कि यदि वैदिक सस्कृति तथा हरयाणा की रक्षा करनी हैं तो सत्याग्रह की तैयारी के लिए स्वयसेवकों की भर्ती मे अधिक सख्या मे अपने नाम लिखावे तथा जो भाई शराब पीने के चक्कर मे फसे हैं, उनसे शराब छुडवाकर रचनात्मक कार्य करें। ग्राम निजामपुर के शराब के ठेके पर शीघ्र ही धरणा आरम्भ किया जा रहा है। इसे सफल करने के लिए तन, मन तथा धन से सहयोग देना होगा।

इस अवसर पर सभा के मन्त्री श्री सूबेसिंह ने सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए सभा द्वारा चलाये जा रहे शराबबन्दी कार्यक्रम की विस्तार मे चर्चा की तथा ग्रामीण नर-नारियो से अपने ग्राम निजामपुर के शराब के ठेके पर धरणा देने मे सहयोग देने की अपील की। आपने ग्राम बालसमन्द जिला हिसार के शराब के ठेके पर धरणा का ब्यौरा दिया और बताया कि सभा के उपदेशक प० अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी काफी लम्बे समय से सरकार से साहस के साथ टक्कर ले रहे हैं। इसी प्रकार ग्राम पाल्हावास जिला रेवाडी मे भी श्री अनिल आर्य अपने साथियो के साथ धरणा दे रहे हैं। आपने ग्राम पचायतो से भी अपील की कि वे ३० सितम्बर तक शराबबन्दी के प्रस्ताव पास करके सरकार तथा सभा को भेज देवें। इस सम्मेलन मे श्री ताराचन्द वैदिक तोप तथा श्री विश्वमित्र की भजन मण्डली के भी प्रभावशाली गीत हुए।

—केदारसिंह आर्य

ग्राम आसौदा मे शराबबन्दी लागू

ग्राम आसौदा जिला रोहतक ने शराबबन्दी के लिए बहुत ही सराहनीय कदम उठाया है। प्रत्येक शराब पीनेवाले पर एक सौ रुपये से लेकर ५०० रुपये दण्ड लिया जाता है। स्मैक पीनेवाले पर ग्यारह सौ रुपये और स्मैक बेचनेवाले पर ५१०० रुपये दण्ड लिया जाता है।

अब तक पचायत समिति ने शराबबन्दी नियम भग करने पर अनेक शराबियो से दण्ड वसूल किया है। इस प्रकार ग्राम में पूर्ण शाति है। कोई भी शराब पीकर गलियो मे नही घूमता। ता० १२-८-१९९३ को एक नशा करनेवाले को समिति ने पकड लिया और समिति ने उस पर ५१०० रुपये दण्ड कर दिया परन्तु उसने दण्ड देने से इन्कार कर दिया। उसको चौपाल में भी बुलाया परन्तु वह चौपाल मे नहीं आया। समिति ने अपना निर्णय लेकर उसको जात मे से निकाल दिया और सारे गाव मे इस बात की चर्चा है।

—अनूपसिंह, आर्यसमाज आसौदा

जिला हिसार में शराबबन्दी प्रचार की धूम

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की तीन प्रसिद्ध भजन मण्डलियों द्वारा निम्न गांव मे प्रचार किया गया। ७-८ अगस्त को बालसमन्द में ठेके धरने पर प० जयपालसिंह, प० खेमसिंह, पं० रामकुमार के समाज सुधार के भजन हुवे। ८ता ग्राम बुडाक, ९ को बाण्डा हेडी, १० को डोभी मे प० जयपालसिंह तथा प० खेमसिंह के भजन हुए।

१० को प० रामकुमारजी द्वारा ग्राम सरसाना में प्रचार किया। प्रचार मे काफी लोगो ने भाग लिया। सभी ग्रामों में बालसमन्द में पुन ठेका खुलने पर धरना दिया गया है। बालसमन्द के नवयुवकों में काफी उत्साह, धरने पर तन-मन धन से सहयोग करने की अपील की गई।

अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी सयोजक शराबबन्दी समिति,
जिला—हिसार

आर्यसमाज घिराये का कार्यकर्त्ता प्रशस्ति पत्र द्वारा सम्मानित

गत दिनों आर्य समाज घिराये जि० हिसार का प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री प्रीतमसिंह आर्य जो कि मुख्य डाकघर हिसार मे कार्य करता है को मुख्य डाकघर हरयाणा ने प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया है। श्री प्रीतम सिंह आर्य ने डाकघर मे कभी रिश्वत नही ली तथा नशा सेवन नही किया जिससे प्रसन्न होकर पोस्ट मास्टर मुख्य हरयाणा ने उनको प्रशस्ति पत्र द्वारा सम्मानित किया।

रामफलसिंह आर्य मन्त्री आर्यसमाज

धरने पर पुलिस के साथ शराबबन्दियों का टकराव होते-होते टला

बालसमन्द का ठेका सरकार व प्रशासन ने लोगों से विश्वासघात करके २७-७-९३ को पुन खोल दिया। सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रातिकारी के नेतृत्व मे नवयुवकों ने उसी दिन से धरना आरम्भ किया गया। ठेकेदार ५५ की बोतल ३५ में २८ का आधा २० रुपये १५ का पव्वा १० रुपये का कर दिया और साथ मे कुछ असामाजिक तत्वो को मुफत शराब पिलाकर हुल्लडबाजी करवाने पर तुला हुआ था। वीर नवयुवकों ने उनका डटकर मुकाबला किया। शराबियों में भगदड मच गई। ठेकेदार भी बौखला गया। गाव की जनता ९० प्रतिशत धरने की ओर होगई है।

दिनाक १२-८-९३ को श्री क्रातिकारी के नेतृत्व में ३ ट्रैक्टर एक टोका पुरुष तथा महिलाओं का नारे लगाते हुए हिसार के उपायुक्त को ज्ञापन देने गए। लघु सचिवालय हिसार में प्रदर्शन किया। महिलाओं ने उपायुक्त तथा मुख्यमन्त्री भजनलाल के विरुद्ध स्यापा किया। आर्य जी ने प्रशासन एवं सरकार की कटु आलोचना की। सरकार से तुरन्त ठेका बन्द करने तथा ठेकेदारों की गुण्डागर्दी रोकने पर बल दिया। प्रशासन को चेतावनी दी कि आज ६ बजे ठेके ताला बन्द करेंगे। ज्ञापन देकर आगए। ठीक ५ बजे क्रांतिकारी जी के नेतृत्व में ठेके ताला लगा दिया। साढ़े छः बजे सदर थाना का इन्चार्ज तथा सिवानी मण्डी का पुलिस अधिकारी सैकड़ों पुलिसवालों के साथ पहुंचे। ६-७ गाड़ी थी बन्दूक, स्टेनगन, आसूगैस, बाबड़ी लठ लेकर आए। पुलिस की खबर गांव में आग की तरह फैल गई। हजारों नर-नारी धरने पर आगए। नवयुवकों व स्कूली बच्चों ने शराबबन्दी नारे लगाए। सडक से एक ओर पुलिस दूसरी ओर हजारों नर-नारी जमा होगए। पुलिस अधिक्षक तथा इन्सपैक्टर ने श्री अतरसिंह को अलग बुलाया। उन्होंने कहा बच्चों को रोको तथा आपकी क्या समस्या है बताओ। हम ठेका बन्द कराना चाहते हैं और ठेकेदार अपनी खिडकी मे बेच सकता है। जीप व मोटर साईकिल पर बोतलें नहीं ले जाने देंगे। सरकार ने अहाते बन्द कर रखे हैं। ठेकेदार शराबियों को ठेके में बैठाकर शराब नहीं पिला सकता। बस अड्डे पर तथा गाव में शराब नहीं डालने देंगे।

प्रतापसिंह सचिव शराबबन्दी समिति, बालसमन्द

पर्यावरण प्रदूषण और यज्ञ विज्ञान

हमारे चारों ओर जो आवरण है जिससे हम जीवन धारण करते हैं, उसे पर्यावरण कहते हैं। (परि+आवरण) यह पर्यावरण प्रदूषित हो चुका है। हमे जीवन शक्ति नही मिल रही है। पर्यावरण प्रदूषण आज केवल भारत की ही नही विश्व की समस्या बन गई है। सभी प्रदूषण निवारण के उपाय ढूंढने में लगे हैं आज विश्व स्वास्थ्य खतरे मे है। ऋतुएं प्रतिकूल होती जा रही है। अतिवृष्टि, अनावृष्टि भूकम्प आदि प्रकोप बढ रहे है जिसका मुख्य कारण पर्यावरण प्रदूषण है। प्रदूषण निवारण प्रकृति का स्वभाव है किन्तु आज कारखाने व मोटर गाडियो का इतना विकास हुआ है। जो जहरीली गैसें लगातार फेंक रहे है जिसके कारण प्रकृति की स्वाभाविक शक्ति क्षीण हो चुकी है।

प्रदूषण निवारण के उपाय ढूंढने मे विश्व के वैज्ञानिक लगे हुए हैं कोई यंत्र का आविष्कार भी किये हैं जो कारखानो व मोटरो से निकलने वाली गैस को शुद्ध करके छोडेगा। किन्तु इसमें इतनी सफलता नही मिली है। वृक्षारोपण पर सबसे अधिक बल दिया जा रहा है। आकाशवाणी, दूरदर्शन व समाचार पत्रो मे विशेष चर्चा का विषय बना हुआ है। 'पेड लगाओ जीवन पाओ'। सरकार की ओर से हजारों-लाखो वृक्ष प्रत्येक राज्यो मे लगवाए जा रहे है किन्तु कितने तैयार होते है। ५०से७५ प्रतिशत पौधे मर जाते है। क्योकि कारखानो की जहरीली गैसो से आक्सीजन हो नही कार्बनडाई आक्साइड भी प्रदूषित हो गया है। जो वृक्षो का जीवन है। इसालए पौधे मर जाते हैं या जो जीवित रहते हैं वे बढ नही पाते। उसमे शोषक शक्ति नही आ पाती इसलिए वृक्षारोपण प्रदूषण निवारण के लिए उचित उपाय सिद्ध नही होता। आज के वैज्ञानिक प्रदूषण निवारण करने मे असफल हैं। क्योंकि ये रिसर्च (पुन –खोज) कर्ता हैं किन्तु सफल सर्च (शोध) कर्ता युगद्रष्टा ऋषियो के पास इसका उपाय था। और वह है 'यज्ञ विज्ञान' अग्निहोत्र जो अद्वितीय है। जिसे युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हमारे लिए सरल और सुगम बना दिया और सत्यार्थ प्रकाश मे लिखते हैं कि 'आर्यवरशिरोमणि ऋषि-महर्षि राजे-महाराजे लोग बहुत सा होम (यज्ञ) करते और कराते थे। जब तक इस होम करने का प्रचार रहा तब तक आर्यावर्त्त देश रोगो से रहित और सुखो से पूरित था। अब भी प्रचार हो तो वसा ही हो जाए।' यह ध्रुव सत्य उस वर्ष उजागर हुआ जब भोपाल (म०प्र०) मे गैस रिसाव हुआ। जिसमे हजारो मनुष्य और पशु मारे गए किन्तु एक याज्ञिक परिवार पूर्ण स्वस्थ बचा रहा। समाचार पत्रो मे भी प्रकाशित हुआ। आज भारत का कर्त्तव्य है कि ऋषियो की बात को माने। विश्व का गुरु बनकर रहे। मनुष्य हो नही बल्कि सम्पूर्ण प्राणियो को जीवन सकट से उबारे। हमारी शिक्षा आज विदेशो मे फैल रही है। और हम पीछे हैं ये कसी विडम्बना है। अमेरिका मे जाकर देखिए जहा १ सितम्बर १९७८ से अखण्ड यज्ञ चल रहा है यह अग्निहोत्र विश्वविद्यालय वाशिंगटन में स्थित है। भारत मे भी इसी प्रकार अग्निहोत्र विश्वविद्यालय बनाए जाएं। हर प्रांत मे सरकार की ओर से बड़ी-बडी यज्ञशाला बनाकर नित्ययज्ञ प्रारंभ किया जाए तो निश्चय ही शीघ्रता पूर्वक प्रदूषण निवारण होगा और विश्व मे शान्ति होगी। सुख एव जीवन देने वाली वायु सर्वत्र बहेगी। पदार्थ विद्या जानने वालो को यह ज्ञात है कि कोई भी पदार्थ कभी नष्ट नही होता। सूक्ष्म अवश्य हो जाता है इसलिए अग्नि के माध्यम से पदार्थों (घृत सामग्री) को सूक्ष्म करके पर्यावरण मे प्रसारित करेंगे तो वह जहा भूमि वृक्षों, अन्नादि में प्रविष्ट होकर विश्व को स्वास्थ्य प्रदान करेगा वही वायुमण्डल मे आर्द्रता एव भार की वृद्धि होगी। हवामान मे परिवतन होने से ऋतु अनुकूल होंगे। पौष्टिक एव मिष्ठ पदार्थों को अग्नि में जलाने से रोगाणुओ का नाश होगा। वायु के भार मे वृद्धि होने से आधी तूफानो का नाश होगा। वर्षा की वृद्धि होगी। जो वृष्टि यज्ञो से प्रमाणित है। सुगधित औषधियो के अग्नि मे प्रयोग से वायुमण्डल में सुगंधित एव पवित्र वायु फलने से दुर्गन्ध का नाश होगा इस प्रकार से अग्नि मे सुगन्धित पौष्टिक एव रोगनाशक पदार्थों के जलाने से वृक्षो में पर्यावरण शोषक शक्ति बढेगी। प्राणत्व (आक्सीजन) अधिक उत्पन्न होगा। पदार्थजन्य प्रदूषण दूर होने के साथ साथ वेद मन्त्रो (स्वाभाविक एव शब्दमय छन्दो की ध्वनि) से यज्ञ करने से ध्वनि प्रदूषण का भी निवारण होगा जिससे मानसिक क्रूरता निष्क्रिय होकर सार्वजनिक शान्ति का क्षेत्र विस्तृत होगा।

शिवकुमार आर्य, एम०ए०
आर्यसमाज हासी (हरयाणा)

गांधी जयंती पर अनशन होगा

भिवानी। हरयाणा मे बाढ तथा अन्य कई कारणो से पिछड़े शराबबन्दी आंदोलन मे नई जान डालने एव इसे नये सिरे से शुरू करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा ने अपने हजारो कार्यकर्ताओ से २ अक्तूबर को दिल्ली मे राजघाट पर अनशन करने के लिए पहुचने का आह्वान किया है। उसी दिन हरयाणा मे पूर्ण नशाबन्दी लागू करने के लिए एक ज्ञापन राष्ट्रपति को दिया जायेगा।

यह जानकारी हरयाणा शराबबन्दी समिति के आयोजक एव भूतपूर्व भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारी विजयकुमार ने यहा आयोजित एक पत्रकार सम्मेलन मे दी। उन्होने शराबबन्दी को आजादी की तीसरी लडाई की सज्ञा देते हुए इस जीतने के लिए सभी वर्गों के लोगो से सहयोग की अपील भी की।

आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा ने प्रदेश भर की पचायतो मे पत्र लिखकर अनुरोध किया है कि वे ३० सितम्बर तक अपने गाव मे ठेका न खोलने का प्रस्ताव पास करके हरयाणा सरकार को भेजें। ग्राम पचायत एक्ट की धारा २६ मे व्यवस्था की गई है कि जो पचायत अपने यहा शराबबन्दी करना चाहे तो वह ३० सितम्बर तक प्रस्ताव पास करके सरकार को भेज सकती है।

श्री विजयकुमार ने हरयाणा सरकार पर पचायतो को गुमराह करने का भी आरोप लगाया क्योंकि गत दिनों हरयाणा के समाज कल्याण मन्त्री हुकमसिंह ने गाहाना मे एक सार्वजनिक सभा मे घोषणा की थी कि हरयाणा सरकार शीघ्र ही प्रदेश मे पूर्ण नशाबन्दी लागू करने जा रही है परन्तु इस घोषणा के महीनो बाद भी हरयाणा के मुख्यमन्त्री भजनलाल की तरफ से इस बयान पर कोई टिप्पणी नही की गई। श्री विजयकुमार ने कहा कि सरकार असमजस की स्थिति उत्पन्न करके निर्धारित तिथि ३० सितम्बर को निकालना चाहता है ताकि अधिकतर पचायतें अपने प्रस्ताव को न भेज सकें। उन्होंने आदमपुर हलके के गाव वालसमन्द मे, जहां ८० दिन धरने के बाद ठेका बन्द हुआ, उस ठेके को फिर से खुलवाने के लिए भी मुख्यमन्त्री की आलोचना की।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व

गुरुकुल कांगडी विद्यालय के तत्वावधान मे आयोजित योगिराज श्री भगवान् श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर बोलते हुए कुलपति डा० धर्मपाल आर्य ने ब्रह्मचारियो का अपने आचार्यों के संरक्षण में शिक्षा-दीक्षा देकर एक योग्य चरित्रवान्, अनुशासित, आदर्श नागरिक बनकर सत्यपथ पर चलते हुए राष्ट्र की सेवा करने के लिए आवेदन किया। भारत छोडो आन्दोलन के सम्बन्ध मे कुलपति जी ने भगवान् श्रीकृष्ण की नीतियो का अनुसरण कर राष्ट्र रक्षा की अपील की।

सहायक मुख्याधिष्ठाता श्री महेन्द्रकुमार ने भगवान् श्रीकृष्ण की कर्मप्रधान जीवनपद्धति को अपनाकर मानव सेवा के लिए अपील की। भारत छोडो आन्दोलन के बलिदानियो को सार्थक करने के लिए भारत राष्ट्र की स्वाधीनता, स्वाभिमान, गरिमा व गौरव प्रतिष्ठा की रक्षा करने की अपील की।

सर्वश्री डा० दीनानाथ, जनेश्वरपाल शास्त्री वीरेन्द्र दीक्षित एव अमरनाथ दुबे ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर बृहद् यज्ञ का आयोजन भी किया गया।

सहायक मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल कांगडी (हरिद्वार)

दक्षिण अफ्रीका मे यजुर्वेद महायज्ञ सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा, दक्षिण अफ्रीका (पीटरमेरित्सबर्ग क्षेत्रीय परिषद्) द्वारा २५ जुलाई १९९३ को, स्थानीय रेस्थोप सेकेण्ड्री स्कूल के विशाल मैदान मे यजुर्वेद महायज्ञ का हर्षोल्लास के साथ सफल आयोजन किया गया। यह महायज्ञ, राष्ट्रीय एकता तथा विश्वशान्ति के पवित्र उद्देश्य को लेकर किया गया था।

महायज्ञ अनुष्ठान के प्रारम्भ मे प्लेसेस्ला आर्यसमाज के प्रधान श्री दशरथ बन्धु ने ओ३म् का ध्वज फहराया। डा० वीरदेव बिष्ट आचार्य के ब्रह्मत्व मे पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न इस २१ यज्ञकुण्डीय महायज्ञ मे १६० यजमान, वैदिक मन्त्रोच्चारण के साथ आहुतिया दे रहे थे। यज्ञारम्भ में इन सबने यज्ञोपवीत धारण करके, राष्ट्रीय एकता तथा विश्वशान्ति के लिए आजीवन सक्रिय रहने की प्रतिज्ञाएं कीं।

आर्य प्रतिनिधि सभा, दक्षिण अफ्रीका के अध्यक्ष, श्रीमान् शिशुपाल रामभरोस ने—जिनके सुयोग्य नेतृत्व मे सभा प्रगति के पथ पर अग्रसर है—इस अवसर पर शान्ति व समृद्धि के लिए एकजुट हो जाने के लिए जनता का आह्वान किया।

आर्य विद्यासभा गुरुकुल कांगड़ी का चुनाव

गुरुकुल कांगडी कन्या गुरुकुल देहरादून, गुरुकुल कांगडी फार्मेसी, कालेज आफ फार्मेसी आदि अनेक महत्त्वपूर्ण सस्थाओ को स्वामिनी सभा 'आर्य विद्या सभा' का (जिसमे पंजाब, हरयाणा, दिल्ली व सार्वदेशिक सभा के प्रतिनिधि होते हैं) त्रिवार्षिक चुनाव दिनाक २१-८-९३ को आर्य-समाज मन्दिर हनुमान रोड नई दिल्ली मे श्री सूर्यदेव की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसमे सर्वसम्मति से श्री सूर्यदेव को प्रधान, डा० रणजीतसिंह व श्री वीरेन्द्र को उपप्रधान, प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार को मन्त्री, श्री वेदव्रत शर्मा व श्री बालमुकुन्द को उपमन्त्री तथा डा० सच्चिदानन्द को कोषाध्यक्ष चुना गया। कार्यकारिणी के लिए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, स्वामी ओमानन्द सरस्वती, श्रीमती प्रभातशोभा पंडिता तथा श्री हरवंशलाल शर्मा को चुना गया। डा० रणजीतसिंह का फार्मेसी के व्यवसाय पटल के अध्यक्ष पद पर भी चुनाव किया गया। डा० धर्मपाल की गुरुकुल कांगडी के मुख्याधिष्ठाता पद पर नियुक्ति की भी सपुष्टि की गई। संस्थाओं में आचार्या/आचार्य की नियुक्ति के लिए एक चयन समिति का भी गठन किया गया जिसमे सभा प्रधान, सभा मन्त्री के अतिरिक्त डा० धर्मपाल, डा० रणजीतसिंह, श्री सूबेसिंह, श्री चन्द्रदेव व श्री हरवंशलाल शर्मा को सदस्य के रूप मे रखा गया। एक शिक्षा निरीक्षण समिति का भी गठन किया गया जो समय-समय पर शिक्षा के स्तर का निरीक्षण करेगी तथा अपनी रिपोर्ट सभा को प्रस्तुत करेगी।

कन्या गुरुकुल देहरादून के मैनेजर को नामजद करने का भार सभा प्रधान को सौपा गया जिसे आपसी विचार विमर्श के बाद में पूरा किया जावेगा। इस अवसर पर आर्य विद्या सभा की ओर से गुरुकुल कांगडी के भवनो की मरम्मत करवाने वा ब्रह्मचारियो के लिए नए स्नानागार व शौचालय बनवाने के लिए ५०,००० रु० की विशेष सहायता दी गई तथा वेद की शिक्षा की उन्नति के लिए सभा की ओर से ५००-५०० रु० की पाच छात्रवृत्तिया भी स्वीकृत की गई। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा व दिल्ली ने भी इनमे एक-एक छात्रवृत्ति देने की घोषणा की। विद्या सभा कन्या गुरुकुल देहरादून को पहले ही आर्थिक सहायता दे चुकी है।

—प्रो० सत्यवीर शास्त्री
सदस्य आर्य विद्या सभा

हिसार मे प्रान्तीय आर्यवीर महासम्मेलन

आर्य वीर दल हरयाणा का सोलहवा प्रान्तीय आर्यवीर महासम्मेलन २५-२६ सितम्बर को सी० ए० वी० हाई स्कूल हिसार में उत्साहपूर्वक आर्यजगत् के प्रसिद्ध संन्यासी "योगनिष्ठ स्वामी सत्यपति परिव्राजक" जी की अध्यक्षता में मनाया जायेगा। इस समारोह में आर्यजगत् के उच्चकोटि के विद्वान्, संन्यासी युवा क्रांतिकारी वक्ताओं तथा कई राजनैतिक नेताओं को आमन्त्रित किया गया है।

विशेष आकर्षण —२५ सितम्बर को दोपहर १ बजे विशाल शोभा यात्रा हिसार नगर के प्रमुख बाजारों में निकाली जायेगी।

आर्य वीर दल की प्रान्तीय बैठक दिनाक २८ अगस्त शनिवार को रात्रि ८ बजे आर्यसमाज नागोरी गेट हिसार में होगी। समस्त अधिकारीगण इस बैठक में पधारकर संगठन का परिचय देवें।

देवप्रकाश आर्य प्रान्तीय मन्त्री
आर्यवीर दल हरयाणा
प्रधान कार्यालय आर्यसमाज
शिवाजी कालोनी, रोहतक

रुकिये—शराब के सेवन से परिवार की बर्बादी होती है। अतः अपने निकट के शराब ठेकों पर अपने साथियों सहित धरणे पर बैठकर शराबबन्दी लागू करावें।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, गोहाना रोड, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०/७३ रजि० नं० P/RTK- सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,०९४

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २० अंक ३८ २८ सितम्बर, १९९३ वार्षिक शुल्क ४०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति ८० पैसे

हरयाणा आर्यवीर दल के सम्मेलन के अवसर पर एक सुझाव

हे ! युवको तुम स्वयं बदलो और संसार को बदल डालो

प्राय: आजकल युवक जब देखता है कि ससार में लोग चर्चा तो बडे ऊचे से ऊचे आदर्शों की करते हैं, परन्तु व्यावहारिक जीवन में बुराई पनप रही होती है और कि यहा प्राय न इन्साफ है न सुनवाई है, न सत्यता है न मन की सफाई है तो उसके मन में एक विद्रोह की भावना उठती है। वह नवयुवक सोचता है कि ससार का ढाचा ही बदलकर रख दू। परन्तु जब उसे यह अनुभव होता है कि बुराई तो चारो तरफ ही फैली हुई है तब या तो उसमे आक्रोश उत्पन्न होता है या वह निराश होकर सोचता है कि अगर इस ससार मे रहना है, और जीना है तो जैसे और चल रहे हैं वैसे मुझे भी चलना पडेगा। अत वह या तो उत्तेजित हो उठता है या बुराई से मेल कर लेता है। परन्तु वास्तव मे बुराई को देखकर मन मे आक्रोश का विस्फोटित होना तो बुराई को हटाने की बजाय एक और दूजी बुराई को मन में पालना है। बुराई को देखकर निराश होना या उससे समझौता कर लेना भी दुर्बलता का प्रतीक है और हिम्मत हारने का सूचक है। अत हे युवको बुराई के प्रति ये दोनों ही दृष्टिकोण स्थिति को सुधारने वाले नहीं हैं, पहले इसी सत्य के प्रति स्वय बदलो फिर दूसरो को बदलो। बुराई को देखकर पहले तो मनुष्य के मन मे मिटाने की चेष्टा उत्पन्न होती है। इसका अर्थ यह हुआ कि बुराई मनुष्य की नैतिकता को जगाने का निमित्त बन सकती है। इसलिए उत्तेजना आने की बजाये तो युवा वर्ग मे जागृति आनी चाहिए और बुराई से समझौता करने की बजाय मनुष्य को बुराई की चुनौती स्वीकार करनी चाहिए। वह "युवक" कैसा जो चुनौती से भागता है ? वह जवानी कैसी जिसमें कुछ कर गुजरने की इच्छा की बजाय हथियार डाल देने की चेष्टा उत्पन्न हो ? अत न आक्रोश करने की जरूरत है, न बुराई के आधीन होने की बात सोचनी है बल्कि जो बुराई अन्तरात्मा को चोट पहुचा रही है, उसके द्वारा जागने और जगाने का दृढ सकल्प लेना ही युवा शक्ति का सदुपयोग है। अब यदि ससार मे बुराई बहुत बढ गयी है तो युवको तुम भागो मत, स्वयं जागो और दूसरे को जगाओ। ससार में बुराई को युवक नहीं मिटायेंगे तो और कौन मिटायेगा ?

जो छोटे बच्चे हैं, वे संसार को बदलने में अभी सक्षम नही हैं। उनके प्रति भी युवकों का ही यह उत्तरदायित्व है कि वे ससार से शराब जैसी भयकर बुराई को मिटायें ताकि ये छोटे बच्चे जब तक बडे हों तब तक इस ससार से निर्दयता, अन्याय, निरीहता, स्वार्थपन और पाप मिट चुके हों। जो अतिवृद्ध हैं, उनकी तो शक्ति दिनों दिन समाप्त होती जा रही है। अत उन वृद्धजनो की भुजा भी तो युवको को ही बनना होगा। अत जैसे युवक ही घर की आशा का दीप होता है। आज उसी प्रकार युवक ही ससार की आशा के दीपक हैं। युवा शक्ति बदलेगी तो युग बदलेगा। इसलिए युवको स्वयं जागो और दूसरों को भी जगाओ। बदलो और ससार को बदलकर रख दो ! सबकी निगाहें तुम पर ही लगी हैं।

संसार को पलटने की जो शुभ इच्छा है, ढाचे को बदलने का जो शुभ संकल्प है, एक नया दौर लाने की जो तमन्ना है, जागृति का वह पहला चिन्ह है। परन्तु इस शुभ सकल्प को पूरा कैसे करें ? क्या नये विधि और विधानों से यह जग बदलेगा ? क्या कानून को कडा बनाने और सख्त दण्ड से, राजनीतिक नेता और राजनीतिक दल बदलने से या विध्वंसात्मक कार्यों द्वारा अपने क्रोध को प्रकट करने से यह ससार सुखमय बनेगा ? नही, नही। कानून और डण्डे के जोर से तो किसी भी समाज को बदला नही जा सकता। आक्रोश या क्रोध से कभी भी बिगड़े काम सवारे नही जा सकते। विध्वसात्मक कार्यों से तो विध्वस ही होता है, उससे एक नये समाज की रचना नही हो सकती। राजनीतिक नेता या दल के बदलने से देश के लोगो की वृत्ति और प्रवृत्ति नहीं बदल जाती। इस सबके लिए तो एक नई क्रान्ति की आवश्यकता है जो हर एक इन्सान मे इन्सानियत को जगा दे, और हर विकृत मन में भलाई को उजागर कर दे। अत हे युवको तुम स्वय जागो, और ऐसी क्रान्ति के लिए दूसरों को भी जगाओ। यह ससार हमारा है, इसे ठीक रखना हम सभी का कर्त्तव्य है।

यह ससार कैसे बदलेगा ? यह सोचने से पहले यह सोचना जरूरी है कि मैं स्वय कैसे बदलू ? दूसरो को जगाने के पहले स्वय को जागना होता है। विशेष रूप से ससार मे नैतिक जागृति लाने के लिए तो पहले अपनी नैतिकता को जगाना जरूरी है। विश्व परिवर्तन की शुरूआत स्व परिवर्तन से ही हो सकती है। यदि मैं स्वय ठीक न होऊ तो दूसरे को ठीक होने के लिए किस अधिकार से कह सकता हू ? ससार मे भलाई फैलाने के लिए पहले स्वय मुझे अपने [illegible] व्यवहार और सस्कारो को दिव्य बनाना आवश्यक है।

आज युवक ससार मे परिवर्तन चाहते हैं—ऐसा परिवर्तन जिसमे एक मनुष्य का दूसरे के प्रति स्नेह हो, भ्रातृत्व भाव हो और शुभकामना हो तथा इस ससार में सभी सुख-शान्ति एव आनन्द से जीवन बितायें। इसका अर्थ यही तो हुआ कि ससार मे मानवता रूपी अमूल्य रत्न की पुनःस्थापन हो। परन्तु आज तो ससार मे मानवता का ह्रास हो रहा है और इनकी शिक्षा भी स्कूलो और कालेजों [illegible] नही दी जा रही है। आज साक्षरता को बढ़ाने की ओर तो लोगों का ध्यान है परन्तु ऐसे 'ईश्वरीय ज्ञान" या "दिव्य गुणों को धारण" की ओर समाज का कोई सफल प्रयत्न नहीं होता जिससे कि बाल एवं युवा वर्ग के मन का शुद्धिकरण हो सके, उनके चरित्र का निर्माण हो, उनके व्यवहार एवं संस्कारों का दिव्यीकरण हो और उनका आचार तथा जीवन श्रेष्ठ बने। जब आपसे बडे आपको कोई ऐसी बात करने के लिए कहते हैं जो नैतिकता के विरुद्ध है, जो सदाचार को भग करनेवाली है, जो संसार की भलाई को सामने न रखकर स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए प्रवृत्त करती है अथवा जो ससार मे घृणा, द्वेष, वैमनस्य, मन-मुटाव, तोड-फोड, हिंसा, लूट-खसूट, अन्याय, अत्याचार या पापाचार मे प्रवृत्त होने का सुझाव देती है तो समझ लो कि वे अपनी बडाई मे से नीचे उतर कर आपको ऐसा निकृष्ट कर्म करने की राय दे रहे हैं। अत उस समय विनम्र भाव से एवं आदरपूर्वक रीति से उनसे कह दो कि आपकी

(शेष पृष्ठ ७ पर)

सब मतों का आदिमूल

वैदिक धर्म

संसार में सबसे प्राचीन पुस्तक वेद है। जैसा कि प्रो० मैक्समूलर महोदय ने लिखा है—"The Rigvaeda is the oldest book in the librery of the world" अर्थात् संसार के पुस्तकालय में सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद है।

यूरोप के विद्वान् वेदो को ६-७ हजार वर्ष पुराना मानते हैं। आर्यों का सिद्धान्त है कि वेद सृष्टि-रचना के समय ही अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा इन चार ऋषियो के पवित्र हृदयों मे ईश्वर के द्वारा प्रकाशित किए गए। १९६०८५३०९३ सृष्टि संवत मानते हैं और इसका संकल्प मे पाठ भी करते हैं—"द्वितीयप्रहरार्धे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टा-विंशतितमे चतुर्युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे" अर्थात् यह सृष्टि का दूसरा पहर चल रहा है, जिसमें वैवस्वतमन्वन्तर अब है और उसकी २८वी चतुर्युगी बीत रही है तथा उसका यह कलियुग है जिसको आरम्भ हुए पाच हजार वर्ष से अधिक हो चुके हैं।

इससे यह सिद्ध होता है कि वैदिक धर्म सृष्टि-रचना के साथ ही आरम्भ हुआ। अतः संसार का सबसे पुराना धर्म है। वैदिक धर्म का प्रचार भूमण्डल मे महाभारत काल तक रहा और उस समय तक संसार मे कोई अन्य मत (धर्म) पैदा नही हुआ था। अतः सभी मत महाभारत काल के पश्चात् पाच हजार वर्ष के अन्दर ही प्रचलित हुए हैं। ये वैदिक धर्म के ही एक-दो सिद्धान्तो को लेकर और उनमें कुछ अपनी बातें मिलाकर आगे बढे हैं।

पारसी मत

वैदिक धर्म के पश्चात् सबसे पुराना पारसी मत है, जिसको लगभग ४५०० वर्ष होते हैं। इसके प्रवर्तक श्री जरदुश्त महोदय थे, जो हजरत मूसा से ५०० वर्ष पहले उत्पन्न हुए थे। उनकी बनाई हुई पारसियों की पवित्र पुस्तक "जिन्दावस्ता" है, जो कि वेदों को आधार मानकर लिखी गई है। सर विलियम जोंस ने लिखा है,—"जब मैंने जिन्दावस्ता की शब्दावली को देखा तो मैं महान् आश्चर्य मे पड गया कि उसके प्रत्येक १० शब्दों मे से ७ शब्द शुद्ध संस्कृत भाषा मे हैं।" विद्वानों का मत है कि जिन्दावस्ता के बहुत से वचनों को शुद्ध संस्कृत-भाषा मे बदला जा सकता है।

पारसी लोग स्वयं को आर्य मानते थे और आर्यों का बड़ा मान करते थे। जिन्दावस्ता मे लिखा है कि—"हम आर्यों का मान करते हैं जिनको मजद (मेघ=यज्ञ) ने उत्पन्न किया। पारसी धर्म के निम्न-लिखित सिद्धान्त वैदिक धर्म से लिए गए हैं—

१) जिन्दावस्ता चार वर्ण मानते हैं—पुरोहित, योद्धा, व्यापारी और मजदूर। ये आर्यों के ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र नही तो और क्या है।

२) पारसी लोग यज्ञोपवीत-संस्कार बडे धूम-धाम से करते हैं।

३) पारसी लोग प्रतिदिन अग्नि में अपने मन्त्रों से होम करते हैं वे वैदिक सोम को 'होम इटो' कहते हैं।

४) पारसी लोग एक ईश्वर को ही पूज्य मानते हैं।

५) पारसी लोग पुनर्जन्म के सिद्धान्त में विश्वास करते हैं।

६) पारसी लोग सृष्टि को प्रवाह से अनादि मानते हैं चार युगों की मान्यता वैदिक धर्म के समान ही है।

७) वे गोरक्षा करना अपना धर्म समझते हैं।

८) 'अग्नो देवी' और गायत्री मन्त्र थोडे से परिवर्तन के साथ जिन्दावस्था मे मिलता है। पारसी लोग इनका सन्ध्या के रूप में पाठ करते हैं।

यहूदी मत

पारसी मत के प्रवर्तक श्री जरदुश्त महोदय के समाकालीन श्री हजरत इब्राहीम थे। श्री इब्राहीम सेमिटिक वंश के थे। श्री इब्राहीम के बाद ही सेमिटिक वंश के लोगों में यहूदी मत प्रचलित हुआ। इस मत के चलते हुए लगभग ४००० वर्ष होते हैं। सेमिटिक लोगों का जब पारसी लोगों से सम्पर्क हुआ तब उनकी बहुत सी बातों को लेकर हजरत मूसा ने यहूदी मत का विस्तार किया। बाइबल की पुरानी किताब ही उनका धर्मग्रन्थ है। शैतान का मानना, देवताओं का विचार, जगत् की उत्पत्ति, स्वर्ग और नरक आदि के सिद्धान्त यहूदी मत में पारसी मत से लिए गए हैं।

बौद्ध मत

महाभारत के युद्ध के बाद वैदिक धर्म का ह्रास होने लगा। व्यक्ति को जन्म के आधार पर छोटा-बड़ा माना जाने लगा। शूद्र और स्त्री के लिए वेदो का पढना-पढाना बन्द कर दिया गया। देवताओ के नाम पर पशुओ का बलिदान किया जाने लगा। वैदिक यज्ञो में रक्त की धारा बहने लगी। ऐसे समय मे आज से लगभग २५०० वर्ष पूर्व भारत मे भगवान् बुद्ध का जन्म हुआ। उन्होंने अपने समय मे प्रचलित अवैदिक प्रथाओ का जोरदार खण्डन किया। यज्ञ मे हिंसा का विरोध किया।

अभिमानी तथा पाखण्डी ब्राह्मणों को मुहतोड उत्तर दिए। महात्मा बुद्ध के शब्दो मे ब्राह्मण का लक्षण पढिए—

न जटाहि न गोत्तेन न जच्चा होति ब्राह्मणो।
यहि सच्चं च धम्मो च सो सुखी स च ब्राह्मणो॥

(धम्मपद)

अर्थ—कोई मनुष्य जटा रखने, गोत्र अथवा जाति से ब्राह्मण नही हो सकता। सच्चा ब्राह्मण वह होता है जिसमे सत्य और धर्म है।

महात्मा बुद्ध का कथन है कि मैं कोई नया धर्म नही चला रहा हू। मैं तो प्राचीन वैदिक धर्म का ही प्रचार कर रहा हू। महात्मा बुद्ध ने सत्य पर बहुत बल दिया है। उनके आठ सत्य ये हैं—सत्य विश्वास, सत्य कामना, सत्य वचन, सत्य व्यवहार, जीवन निर्वाह का सत्य उपाय, सत्य उद्योग, सत्य विचार और सत्य संकल्प।

"अहिंसा परमो धर्म ।" महात्मा बुद्ध के उपदेशों का मूल मन्त्र है। पुनर्जन्म, पितृसेवा, दया, सदाचार आदि के सिद्धान्त वैदिक धर्म के समान बौध मत मे भी माने जाते हैं।

ईसाई मत

ईसाई मत को लगभग २००० वर्ष हुए हैं। इसके प्रवर्तक हजरत ईसामसीह थे। ये फिलिस्तान के जेरुसलम नगर में उत्पन्न हुए थे। उनके जन्म से पहले सम्राट् अशोक द्वारा भेजे गए बौद्धभिक्षु और उपदेशक लोग फिलिस्तान, सीरिया और मिश्र आदि देशों मे प्रचारार्थ पहुँच चुके थे। इसलिए हजरत ईसामसीह पर बौध मत का प्रभाव था। हजरत ईसामसीह ईसाई मत को आरम्भ करने से पहले भारत में आए थे। वे पंजाब और काशी मे भ्रमण करने के बाद बौद्धों के प्रसिद्ध केन्द्र गया मे बौध भिक्षुओ से भी मिले थे। तत्पश्चात् वे तिब्बत में भी गए थे। इसलिए ईसाई मत के अनेक सिद्धान्त बौद्ध मत से मिलते हैं।

१) ईसाई मत को ग्रहण करते समय 'बपतिस्मा' दिया जाता है। यह हजरत ईसामसीह का चलाया हुआ नहीं है। यह तो बौद्ध धर्म की रीति है। बौद्ध धर्म में प्रवेश-संस्कार जल से किया जाता है। जिसका नाम 'अभिषेक' है। यह अभिषेक वास्तव में वैदिक धर्म से ही बौध धर्म में गया है।

२) बौद्ध धर्म और ईसाई मत दोनो मे बडी समानता दिखाई देती है। महात्मा बुद्ध का उपदेश है—क्रोध को प्रेम से जीतना चाहिए, बुराई को भलाई से, लालच को उदारता से और झूठ को सत्य से (धम्मपद) हजरत ईसामसीह का उपदेश है—अपने बैरियो को प्यार करो। जो तुम्हें श्राप दे उनको आशीष दो। जो तुम से बैर करे उनकी भलाई करो। जो तुम्हारा अपमान करे और सतावे उनके लिए प्रार्थना करो। (बाईबल)

इस्लाम मत

हजरत मुहम्मद साहब के जन्म से पहले अरब देश में यहूदी और ईसाई मत का प्रचार था। हजरत मुहम्मद ने आज से लगभग १४०० वर्ष पहले अरब में जन्म लेकर वहा इस्लाम मत का प्रचार किया। उस समय में प्रचलित यहूदी और ईसाई मत का प्रभाव इस्लाम मत पर पड़ा। इस विषय में श्री सर सैय्यद अहमद खा ने लिखा है

(शेष पृष्ठ ७ पर)

२ अक्तूबर जन्मदिवस पर विशेष—

"महान् स्वतन्त्रता सेनानी, प्रधानमन्त्री लालबहादुर शास्त्री"

प्रस्तुतकर्ता—सुखदेव शास्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

भारत के महान् सपूत, महान् स्वतन्त्रता सेनानी, प्रधानमन्त्री लालबहादुर शास्त्री को कौन नहीं जानता ?

अपने स्वल्पकालिक प्रधानमन्त्रित्व में उन्होंने भारत की विजय पताका विश्व में फहराई। १९६५ में पाकिस्तान के साथ हुए युद्ध में उन्होंने अपूर्व साहस से काम लेकर पाकिस्तान के छक्के छुड़वा दिए। पर्वतीय ऊंची चोटी करगिल की घाटी से लेकर राजस्थान की सीमा चौकी गडरा तक एकदम युद्ध का विस्तार करके उन्होंने पाकिस्तान को पराजित किया। लाहौर से भी आगे बरकी चौकी तक सारा पाकिस्तान का हिस्सा भारतीय सेना ने अपने कब्जे में ले लिया था। पाकिस्तानी इच्छोगिल नहर को भी पारकर भारतीय सेनाएं पाकिस्तानी भूभाग को कब्जे में लेती हुई आगे बढी। स्वयं युद्ध के अग्रिम मोर्चे पर जाकर शास्त्री जी ने इच्छोगिल नहर के पुल के ऊपर खड़ा होकर सारा युद्ध अपनी आंखों से देखा। और सेना के जवानों को उत्साहित किया। उस समय सारा भारत संगठित होकर शास्त्री जी के आदेश के अनुसार युद्ध के लिए सहायता में जुट गया। बड़े बलिदानों के पश्चात् भारत विजयी हुआ। जे एन चौधरी की कमान में यह युद्ध लड़ा गया। उनकी युद्ध की नीतियों से भारत को विजय प्राप्त हुई।

शास्त्री जी का जन्म १९०४ में २ अक्तूबर को मुगलसराय उत्तरप्रदेश में हुआ था। इनके पिता शारदाप्रसाद धनाढ्य नहीं थे। परन्तु उत्तरप्रदेश के कायस्थ परिवारों की उच्च सांस्कृतिक परम्परा, बौद्धिक विकास तथा उच्च जीवन व्यतीत करने के आदर्श से प्रेरित एक कुलीन परिवार के सदस्य थे। वे शिक्षक थे। शास्त्री जी अभी डेढ वर्ष के थे कि उनके पिता जी का देहान्त हो गया। किसे पता था कि पिता के संरक्षण के बिना ही यह बालक इतने उच्च पद पर पहुंच जायेगा। इनकी माता रामदुलारी अल्प अवस्था में ही विधवा हो गई। धर्मपरायण माता ने ही इसे अच्छी प्रकार पाला पोषा।

माता के उपदेश व उत्तम संस्कारों के कारण ही उनका जीवन उत्तम बना। आज भी उनका व्यक्तिगत पवित्र जीवन भारतीय इतिहास की पवित्र धरोहर है। उनके जीवन का अनुकरण कर प्रत्येक भारतीय देश-भक्ति का पाठ पढ सकता है और अपने जीवन को धन्य बना सकता है।

शरीर से छोटे कद के पर, कर्म एवं उत्साह से आकाश की ऊंचाइयों को छूने वाले लालबहादुर शास्त्री का नाम आज भी इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखित है। भारतीय राजनीति को नई दिशा देकर भारत को गौरवान्वित करने वाले महापुरुष लालबहादुर शास्त्री का देश के नाम जयघोष—"जय जवान-जय किसान" सदा सार्थक रहेगा।

शास्त्री जी के जीवन की महत्त्वपूर्ण तिथियां नीचे दी जा रही हैं—जिनसे आप उनके जीवन का एकदम ही अवलोकन कर सकें—

१९०४ में २ अक्तूबर को जन्म। मुगलसराय उत्तर प्रदेश में।
१९२१ में—विद्यापीठ में अध्ययनार्थ प्रवेश और और १६ वर्ष की अवस्था में ही असहयोग आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया।
१९२६ में—लाला लाजपत द्वारा स्थापित लोकसेवक मण्डल के आजीवन सदस्य बने।
१९२७ में—श्रीमती ललिता शास्त्री से विवाह।
१९३० में—इलाहाबाद कांग्रेस कमेटी के मन्त्री नियुक्त किए गए।
१९३७ में—इलाहाबाद कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष नियुक्त हुए।
१९३५ में—उत्तर प्रदेश कांग्रेस के मन्त्री निर्वाचित हुए।
१९३७ में—प्रान्तीय विधानसभा के सदस्य निर्वाचित हुए।
१९५१ में—कांग्रेस पार्टी की ओर से चुनाव के संचालक बनाए गए।
१९५२ में—राज्यसभा के सदस्य मनोनीत हुए।
१९५२ मई में—केन्द्रीय सरकार के मन्त्रिमण्डल में रेल मन्त्री बने।
१९५६ में—रेल दुर्घटना के कारण केन्द्र सरकार से त्यागपत्र दे दिया।
१९५७ में—पुन. कांग्रेस के चुनाव संचालक बने।
१९५७ अप्रैल में—परिवहन-संवहन मन्त्री नियुक्त हुए।
१९५८ मार्च में—केन्द्र में उद्योगमन्त्री नियुक्त हुए।
१९६१ अप्रैल में—पन्त जी के निधन के बाद स्वराष्ट्रमन्त्री (गृहमन्त्री) बने।
१९६३ में—नेपाल की पहली विदेशयात्रा की।
१९६४ जनवरी १४ में—नेहरु जी के अस्वस्थ होने पर बिना विभाग के मन्त्री नियुक्त हुए।
" जून २ में—कांग्रेस संसदीय दल के नेता निर्वाचित हुए।
" जून ९ में—प्रधानमन्त्री पद की शपथ ली। नेहरु जी की मृत्यु के बाद।
" अक्तूबर ४ में—मार्शल टीटो से वार्त्ता की।
" अक्तूबर ८ में—लन्दन में राष्ट्रमंडल सम्मेलन में पांच सूत्री कार्यक्रम प्रस्तुत किया।
" अक्तूबर १२ में—कराची में अयूब से वार्त्ता की। जिससे दोनों देशों में युद्ध न हो।
" दिसम्बर ३ में—लन्दन में ब्रिटिश प्रधानमन्त्री से बातचीत की।
१९६५ फरवरी १८ में—अफगानिस्तान के प्रधानमन्त्री से दिल्ली में बातचीत की।
" अप्रैल २३ में—नेपाल की सद्भावना यात्रा पर गए।
" मई १२ में—८ दिन की रूस की यात्रा की। (आपसी हितों पर) जून १० में—कनाडा की यात्रा पर ओटावा पहुंचे।
" जून १७ में—राष्ट्रमण्डलीय सम्मेलन में लन्दन पहुंचे।
" जून २७ में—मिश्र के राष्ट्रपति नासिर से काहिरा में वार्त्ता की।
" जुलाई १० में—वियाना में मार्शल टीटो से मिले।
" अगस्त १४ में—राष्ट्र के नाम संदेश में कहा कि ताकत का जवाब ताकत से देंगे।
" सितम्बर १२ में—उथान्ट से वार्त्ता की।
" सितम्बर १८ में—चीन के अल्टीमेटम को अस्वीकृत किया।
" सितम्बर २४ में—रूस के निमन्त्रण को स्वीकार कर अयूब से वार्त्ता की।
" अक्तूबर ११ में—किसानों से अन्न की उपज बढाने की अपील की।
" अक्तूबर १३ में—अग्रिम मोर्चे पर गए।
" नवम्बर २७ में—नेपाल के महाराजा से बात की।
" दिसम्बर २१ में—रगून के राष्ट्रपति नै विन से आपसी हितों पर बातें की।
१९६६ जनवरी ३ में—पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खान से बातचीत करने के लिए ताशकन्द पहुंचे।
" जनवरी १० में—ताशकन्द समझौता हुआ।
" जनवरी ११ को ताशकन्द में अकस्मात् ही मृत्यु होगई।

भगवान् जाने मृत्यु का क्या कारण बना ?

इस प्रकार शास्त्री का सारा जीवन देश सेवा में ही व्यतीत हुआ। उन्होंने बड़ी लगन से देश की समस्याओं का समाधान किया था। अपने जीवन में उन्होंने कोई कोठी, कार नहीं खरीदी। उनके पास अपना कोई मकान भी न था। बैंकों में एक पैसा भी जमा न था। जब उनकी मृत्यु हुई, तब सुनते हैं—उनके ऊपर कर्जा था। सरकारी कामकाज में अपने पुत्रों व रिश्तेदारों को दूर ही रखते थे। अपने १८ महीने के प्रधानमन्त्री के कार्यकाल में शास्त्री जी ने देश को बहुत ऊंचा स्थान दिया था। देश का दुनिया में सम्मान बढा। अनाज की कमी के कारण सारा देश उनके आदेशानुसार सोमवार को व्रत रखता था। उन्होंने किसी देश के सामने सिर न झुकाया। यदि शास्त्री जी भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री होते तो देश की इतनी समस्याएं न होतीं।

उनके जन्म दिवस पर आज सारा आर्यसमाज व समग्र देश उन्हें स्मरण करके श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा है। शास्त्री जी के दिखाए गए मार्ग पर चलकर ही पाकिस्तान को ठीक किया जा सकता है। कोई और मार्ग ही नहीं है।

इंद्रवेश, अग्निवेश अब अपने-आपको आर्यप्रतिनिधि सभा के पदाधिकारी नहीं लिख सकेंगे

सहारनपुर, २४ सितम्बर (गौतम) दिल्ली हाई कोर्ट ने आर्यसमाजी नेता स्वामी अग्निवेश, इन्द्रवेश तथा प्रोफेसर कैलाशनाथसिंह को अतरिम आदेश जारी करके अपने आपको सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारी लिखने पर प्रतिबंध लगा दिया है।

यह जानकारी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महासचिव सच्चिदानद शास्त्री ने यहा पत्रकारो को दी।

उन्होने बताया कि इन लोगो ने एक नई सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का गठन कर लिया था जिससे पूरा आर्यजगत् भ्रमित था। श्री कैलासनाथसिंह को इस नवगठित आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान बनाया गया था।

श्री शास्त्री ने बताया कि इन लोगों के इस अवैध कार्य को श्री सोमनाथ मरवाहा तथा श्री रामफल ने चुनौती देते हुए दिल्ली हाईकोर्ट मे एक याचिका प्रस्तुत की, जिसमे कहा गया था कि ये सभी व्यक्ति आर्यसमाज से निष्कासित हैं, इन्हे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा गठित करने का कोई वैधानिक अधिकार नही है। याचिका मे यह भी कहा गया कि सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, जिसके वर्तमान प्रधान स्वामी आनदबोध सरस्वती हैं, सोसायटी एक्ट १८६० के अतर्गत रजिस्टर्ड सस्था है, जो सम्पूर्ण विश्व के आर्यसमाजो का प्रतिनिधित्व करती है। इस सभा का निर्वाचन १९९१ मे तीन वर्ष के लिए सम्पन्न हो चुका है। इस बीच नई कार्यकारिणी बनाने का किसी को कोई सवैधानिक अधिकार नही है।

न्याय मूर्ति श्री पी एन नाग ने याचिका स्वीकार करते हुए सुनवाई की अगली तिथि २९ अक्तूबर तय की है।

—दैनिक पजाब केसरी

आर्यों की कहानी याद आती है

हमे तो आज भारत की पुरानी याद आती है।
रही जो शान आर्यों की वो कहानी याद आती है। टेक

१ कभी हम एक थे सारे, आज ऊच और नीच कर बैठे,
धर्म मजहब की दीवारें, हम अपने बीच कर बैठे।
बताई है जो वेदो ने कहानी याद आती है॥
रही जो शान

२ यही वो देश है जिसमे गऊए पूजी जाती थी,
जन्मदाता मां की जसी मां समझी जाती थी।
मगर अब सडकों पर इनकी निलामी याद आती है।
रही जो शान

३ जहा होते थे यज्ञ नित्य वहा आज ठेके जारी हैं,
सिनेमाघर की खिडकी पर वो देखो भीड भारी है।
नही इनको शहीदो की कुर्बानी याद आती है॥
रहो जो शान आर्यों की वो कहानी याद आती है।

—हरपालसिंह आर्य, उपप्रधान आर्यसमाज क्योडक (कैथल)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का प्रस्ताव

इस सभा को कुछ समाचार पत्रो मे यह समाचार पढकर आश्चर्य हुआ कि आर्यसमाज को शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यसमाज से अनुशासनहीनता के कारण पूर्व निष्कासित इन्द्रवेश, अग्निवेश, आदित्यवेश तथा श्री कैलाशनाथसिंह आदि ने आर्यसमाज के नियमो को अनदेखा करके सावदेशिक सभा के नाम का अवैध चुनाव किया है। सावदेशिक सभा का चुनाव नियमानुसार प्रान्तीय आ. प्रतिनिधि, समाजो के चुने हुए प्रतिनिधियो द्वारा होता है। हरयाणा सभा के किसी भी प्रतिनिधि को सार्वदेशिक सभा के चुनाव की सूचनादि नही भेजी गई। अत इन्होने सार्वदेशिक सभा के नाम का जो चुनाव करने का षडयन्त्र रचा है, यह अवैध है। हमारी सभा उनको इस कार्यवाही की घोर निन्दा करती है। हमारी सभा सार्वदेशिक सभा से सम्बन्धित है और सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती को प्रधान तथा श्री सच्चिदानन्द शास्त्री को मन्त्री विधिवत् निर्वाचित अधिकारी मानती है। अत इनकी चुनाव कथित प्रक्रिया कानूनी तौर पर अमान्य है और इस प्रकार की गतिविधिया आयसमाज के हित मे नही हैं।

—सूबेसिंह, सभामन्त्री

शराबबन्दी सत्याग्रह के प्रथम सर्वाधिकारी स्वामी ओमानन्द सरस्वती की आर्यजनता के नाम अपील

यदि आप हरयाणा के माथे से शराब का कलंक मिटाना चाहते हैं तो—

१. अपने निकट की ग्राम पंचायतों को प्रेरणा करके ३० सितम्बर तक शराबबन्दी के प्रस्ताव करवाकर हरयाणा आबकारी विभाग के आयुक्त को चण्डीगढ़ भिजवावें।

२. अपने निकट के शराब के ठेको पर धरणे दिलवाने मे योगदान करें।

३. शराबबन्दी सत्याग्रह की तैयारी हेतु प्रत्येक ग्राम से ११-११ सत्याग्रहियों की सूची तथा ११००-११०० रु० की दान राशि निम्न पते पर भिजवाकर रचनात्मक सहयोग करें।

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ
रोहतक (हरयाणा)

वेदालकार के छात्रों के लिए छात्रवृत्तियां

आर्य विद्यासभा, गुरुकुल कागडी हरिद्वार के आर्यसमाज, हनुमान रोड, नई दिल्ली मे २१ अगस्त १९९३ को सम्पन्न हुए त्रैवार्षिक साधारण अधिवेशन मे यह निर्णय लिया गया है कि गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार में वेदालकार कक्षा के प्रथम वर्ष में प्रवेश लेनेवाले छात्रों को ५०० रु० की मासिक छात्रवृत्ति आर्य विद्यासभा की ओर से दी जायेगी। आर्यसमाज के सिद्धान्तो में निष्ठा रखने वाले तथा वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार की भावना वाले तथा सस्कृत विषय लेकर इन्टरमीडिएट अथवा समकक्षा परीक्षा उच्चश्रेणी मे उत्तीर्ण छात्रो को यह छात्रवृत्ति दी जायेगी। ऐसे सुयोग्य छात्रो को वेदालंकार करने के पश्चात् समुचित वेतनमान मे धर्माचार्य धर्मशिक्षक अथवा उपदेशक आदि पदो पर नियुक्त किया जायेगा। छात्रों की संख्या अधिक होने पर एक-एक इसी प्रकार की छात्रवृत्ति दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से भी दी जायेगी।

छात्रवृत्ति के लिए अर्हता प्राप्त छात्रों से निवेदन है कि वे अपने आवेदन पत्र आचार्य रामप्रसाद वेदालकार, अध्यक्ष वेद विभाग एव उपकुलपति गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के नाम भेजें तथा उनकी सतुष्टि पर ही यह छात्रवृत्ति दी जायेगी।

सूर्यदेव प्रधान, प्रकाशवीर विद्यालकार मन्त्री, डा धर्मपाल कुलपति एव मुख्याधिष्ठाता, पं महेन्द्रकुमार सहायक मुख्याधिष्ठाता
आर्य विद्यासभा गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार

नेपाली भाषा मे सत्यार्थप्रकाश के प्रकाशित करने की अत्यन्त आवश्यकता

भारत की कई भाषाओ मे महर्षि दयानन्द का अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश कई बार प्रकाशित हो चुका है। नेपाल एक हिन्दू राज्य है। कुछ समय पहले वहा आर्यसमाज के प्रचार पर प्रतिबन्ध रहे हैं। शास्त्री शुक्रराज जी को आर्यसमाजी होने और महर्षि दयानन्द के बताये सिद्धान्तो उनके ग्रन्थों के प्रचार के अपराध मे मृत्यु दण्ड दिया गया था किन्तु अब वहा का वातावरण बिल्कुल बदल गया है। अब नेपाल में लगभग २५ आर्यसमाज बन चुके हैं। अब से ७५ वर्ष पूर्व दिलू सग राई दार्जिलिंग निवासी ने सत्यार्थप्रकाश के ११ समुल्लास प्रकाशित किये थे। अब सम्पूर्ण सत्यार्थप्रकाश नेपाली भाषा में प्रकाशित होना चाहिए। आर्य सभाओ, आर्यसमाजो और सम्पन्न धनी, उदार दान देने की प्रवृत्तिवाले सज्जनो से अनुरोध है कि वह नेपाली भाषा में अपने नगर से सत्यार्थप्रकाश प्रकाशित करने के लिए उदारता-पूर्वक धन लगाकर यह पुण्य कार्य अवश्य करे। यह बहुत बड़ा पुण्य कार्य है। जिससे दानियो का नाम भी अमर हो जायेगा।

कृपया निम्न पते पर नेपाली सत्यार्थप्रकाश हेतु दान व ड्राफ्ट भेजे।

१) स्वामी सर्वानन्द सरस्वती दयानन्दमठ, दीनानगर।
२) श्री सीताराम अग्रवाल प्रधान आर्यसमाज विराटनगर, नेपाल नेपाल कम्पनी रानी मार्ग कोशी आचल विराट नगर नेपाल।
३) नेपाल आर्यसमाज केन्द्रीय कार्यालय बत्तीस पुतली काठमाण्डौ। नई दिल्ली स्थित नेपाल राष्ट्र बैंक लिमिटेड के नाम से ड्राफ्ट भेजा जा सकता है।

निवेदक

स्वामी सर्वानन्द सरस्वती	स्वामी ओमानन्द सरस्वती
अध्यक्ष	कार्यकर्ता प्रधान
वैदिक यतिमण्डल दयानन्दमठ दीनानगर,	वैदिक यतिमण्डल
जिला गुरदासपुर	गुरुकुल झज्जर

टेकबहादुर राम माझी, पूर्व प्रधान
नेपाल आर्यसमाज, बत्तीस पुतली काठमाण्डौ

बालसमन्द धरने पर शराबबन्दी प्रचार की धूम

दिनांक १२, १३, १४ सितम्बर १९९३ को धरने पर वेद प्रचार एवं शराबबन्दी प्रचार का आयोजन किया गया। प० जबरसिंह खारी की भजन मण्डली द्वारा शिक्षाप्रद भजन मण्डली द्वारा शिक्षाप्रद भजन हुवे। साथ मे प० लेखराम आर्य, गोपीचन्द, वीर उधमसिंह का इतिहास भी रखा। धरना सचालक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने ठेकेदार के ड्राइवर को एक्सरे रिपोर्ट मिलने पर भी पुलिस द्वारा गिरफ्तार न करने तथा शान्तिपूर्वक बैठे धरना धारियो पर झूठे मुकदमे दर्ज करने की निन्दा की। २४ अगस्त से ठेके पर ताला बन्द होने पर भी आज तक जन भावनाओ का आदर करते हुवे ठेका न उठाने के बारे सरकार व प्रशासन की कटु आलोचना की। नवयुवको मे काफी जोश है। दिन प्रतिदिन लोगो मे सरकार एव प्रशासन के प्रति रोष बढता जा रहा है। सायकाल बच्चे गाव मे शराबबन्दी तथा सरकार के विरुद्ध जमकर जोश से साथ नारे लगा रहे है। इस समय ९५ प्रतिशत माहौल लोगो का धरने की ओर है। कल धरने पर भारतीय किसान यूनियन के जिला प्रधान श्री जयलाल तथा आचार्य प० रामस्वरूप शास्त्री (गुरुकुल आर्य नगर) अपने अध्यापक वर्ग एव १५ विद्यार्थियो के साथ वाहन लेकर पधारे। उन्होने धरने पर तन, मन, धन से सहयोग करने का आश्वासन दिया। २० नवयुवक एव ५ बुजुर्ग रातदिन धरने पर बैठे हुये हैं। अब बालसमन्द में कोई भूला भटका शराबी तत्व चोरो की भाति छिपकर शराब पीता है। शराबबन्दी समिति के सदस्यो के भय से डरे हुवे हैं। बस अड्डे पर तथा गलियो मे कोई शराबी नजर नही आएगा। धरने के कारण इस क्षेत्र में बालसमन्द गाव शराबबन्दी प्रचार का केन्द्र बना हुआ है। जब तक पाप का अड्डा पूर्ण बन्द नही होता धरना जारी रहेगा। इस समय पृथ्वीसिंह चौहान रात दिन लठ लेकर धरने पर विशेष रूप से सहयोग दे रहा है।

—पहलवान महावीरसिंह, प्रचारमन्त्री
शराबबन्दी समिति बालसमन्द

छात्रों के चारित्रिक विकास की अनूठी मिसाल

—सतरंसिंह

मनुष्य को धर्म-अधर्म, नैतिक-अनैतिक और अच्छे-बुरे मे अन्तर समझने के लिए शिक्षा प्राप्त होना जरूरी है। अपने देश, संस्कृति, साहित्य, भाषा तथा इतिहास की पूर्ण जानकारी शिक्षा के बिना सम्भव नही है। मनुष्य मे राष्ट्रीयता के गुण शिक्षा द्वारा ही पैदा किए जा सकते हैं। इन्ही उद्देश्यो को लक्ष्य बनाकर आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने १९वी शताब्दी मे देश भर मे गुरुकुलो की स्थापना करने की एक कल्पना सत्यार्थप्रकाश मे की थी। अपने समय मे उन्होने इस दिशा मे महत्वपूर्ण कदम उठाये लेकिन स्वामी दयानन्द के सपनों को साकार रूप दिया गुरुकुलो के प्रवर्तक कहलाने वाले हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द ने।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की व्यवस्था बढाने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द ने १३ अप्रैल १९१२ को बैसाखी के पुण्य पर्व पर कुरुक्षेत्र में गुरुकुल की स्थापना की। उस अवसर पर स्वामी जी ने कहा था कि 'जिस धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र की पवित्र भूमि मे एक दिन भारत के विनाश का बीज बोया गया था उसी भूमि मे आज विकास का बीज बोया गया है। भगवान् की कृपा से इस ज्ञानतरु से ऐसे सुगन्धित, फूल उत्पन्न होंगे जो भारत भूमि को फिर से अपनी पुरानी गौरवमय उन्नत अवस्था मे लाने मे सहायक सिद्ध होगे।' स्वामी दयानन्द के सपनो को साकार करने के लिए थानेसर शहर के आर्य दानवीर लाला ज्योतिप्रसाद ने १०४८ बीघा जमीन तथा १० हजार रुपये की नकद राशि गुरुकुल की स्थापना के लिए स्वामी श्रद्धानद के चरणो मे भेंट कर दी। तब से लेकर आज तक यह गुरुकुल निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर है। पिछले ८१ वर्षों से लगातार मानव कल्याण के लिए समर्पित गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा शिक्षित छात्र, शिक्षा, क्रीडा, समाज सेवा और व्यापार के क्षेत्र मे राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त कर चुके है।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की पीठ से सटा हुआ तथा कुरुक्षेत्र-कैथल मार्ग पर स्थित गुरुकुल के छात्रो की दिनचर्या प्रात चार बजे प्रारम्भ हो जाती है। ब्रह्मचारी कहलाने वाले छात्र व्यायामशाला में खेल-कूद, दौड, योग आदि व्यायाम करते हैं। स्नान के पश्चात् सध्या हवन का आयोजन किया जाता है। हवन प्रात और साय दोनो समय होता है। दिन भर कक्षाओ मे अध्ययन करने के पश्चात् शाम को सभी छात्र खेल के मैदान मे शारीरिक व्यायाम करते हुए विभिन्न खेलो मे महारथ हासिल करते हैं। दिनचर्या रात १० बजे शयन कक्ष मे जाकर समाप्त होती है। छात्रो को भोजन देने के अतिरिक्त अत्यन्त सतुलित खुराक भी दी जाती है, जिसमे तीन सौ ग्राम दूध व फल आदि शामिल है। सुबह के नाश्ते मे दलिया दिया जाता है। चटपटी और मिर्च-मसाले वाली चीजें छात्रो को नही दी जाती। विद्यार्थियो को हृष्ट-पुष्ट रखने के लिए दिनचर्या मे आहार-विहार को नियमित और सतुलित बनाये रखने की व्यवस्था है। गुरुकुल कुरुक्षेत्र दुनिया के विकासशील देशो के उन गिने चुने विद्यालयो मे से एक है जहा छात्रो को गाय का दूध दिये जाने की विद्यालय की व्यवस्था है।

गुरुकुल की अपनी गऊशाला है जहा देसी-विदेशी नसल की दर्जनो गाय हैं। लगभग ३०० लीटर दूध रोजाना देती हैं। गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा दी जा रही शिक्षा का महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यहां विद्यार्थियों की सुप्त प्रतिभा को जागृत करने के लिए शिक्षा को सही सार्थकता के वास्ते केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के अतिरिक्त छात्रो को वैदिक तथा भारतीय संस्कृति की शिक्षा भी दी जाती है। इस तरह यह गुरुकुल प्राचीन और आधुनिक शिक्षा का अद्भुत सगम है। गुरुकुल शिक्षा, व्यावहारिक जीवन में भारतीय समाज से पूरी तरह जुडी है। इसके लिए गुरुकुल मे रहने वाले ५०० से अधिक छात्रो की सम्पूर्ण शिक्षा के लिए २२ पूर्ण प्रशिक्षित प्राध्यापक कार्यरत हैं। छात्रो मे बिहार जैसे दूर-दराज के पिछडे इलाको से आये छात्र भी शामिल हैं।

इस संस्था का उद्देश्य छात्रों तथा शिक्षको को एक साथ रहने का अवसर प्रदान करके उनमे एकता की अनुभूति पैदा करना है। इसलिए सभी छात्रो को गुरुकुल छात्रावास मे रहना अनिवार्य है। छात्रावास मे रहनेवाले छात्रो की देखभाल के लिए दस सरक्षक नियुक्त हैं जो उनकी देखभाल के अतिरिक्त छात्रो के चरित्र निर्माण के लिए उनमे भारतीय सस्कृति के सस्कार भी पैदा करते हैं। छात्रों को पांच-छः साल की आयु से ही ब्रह्मचर्य व्रत पालन के लिए अनिवार्य रूप से आश्रम मे रखा जाता है। बालक छात्रावास में स्वच्छ वातावरण में रहकर अपने व्यक्तित्व के पूर्ण विकास के लिए सदेव प्रयासशील रहता है। छात्रो मे सादा जीवन उच्च विचार, सयम और जीवन मे ठीक से रहने की कला पैदा की जाती है।

जहा गुरुकुल कुरुक्षेत्र मे छात्र चरित्र निर्माण काय जारी है वहां शिक्षा के अलावा अन्य सास्कृतिक खेलकूद तथा अकादमी प्रतियोगिताओ मे भी समय-समय पर नये कीर्तिमान गुरुकुल के छात्रो द्वारा स्थापित किए गए हैं। छात्रो को ललित कलाओ जैसे सवेदनशील विषयों को पढाया जाता है तथा योग शिविरों का भी आयोजन किया जाता है।

इस प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा लगाया गया यह पौधा अब वट वृक्ष बनकर समाज को शीतल छाया दे रहा है। इस गुरुकुल की स्वामिनी सस्था दयानन्द मठ रोहतक मे स्थित आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, गुरुकुल की प्रबन्धक समिति का चुनाव करती है जो इसका संचालन करती है।

(नवभारत टाइम्स)

वेदोपदेश :—

न किल्विषमत्र नाधारो अस्ति, न यन्मित्रैः समममान एति।
अनून पात्र निहित न एतत्, पक्तारम् पक्वः पुनराविशाति॥

(अ० १२/३/४८)

भजन (व्याख्या)

परमेश्वर की न्याय व्यवस्था, सबको है सुखदायी।
जैसे कर्म करे हम वैसा, फल मिलता है भाई॥

उसकी न्याय-व्यवस्था में कुछ दोष नही होता है।
इसीलिए तो भक्तजनों को रोष नही होता है॥
पर अज्ञानी परमेश्वर को कोस-कोस रोता है।
सुख सौरभ से वञ्चित हो, सन्तोष नही होता है॥
अज्ञानी को कमी हमेशा, देती रहे दिखाई॥१॥

नही खुशामद चलती है वहा नही सिफारिश चलती।
रिश्वतखोरो की उस दर पे दाल नहीं है गलती॥
परमेश्वर की न्याय-व्यवस्था बिल्कुल नही बदलती।
पूरा दण्ड मिलेगा उसको, जो करता है गलती॥
शुभ कर्मों मे रत मानव की, होती सदा भलाई॥२॥

मित्र भी नही कर पाएंगे कुछ सहयोग हमारा।
मात-पिता का बन्धु-जनों का नहीं चलेगा चारा॥
एक हमारे शुभ कर्मों का, हमको मिले सहारा।
किए कर्म सब पडें भोगने, मिले नहीं छुटकारा॥
इसीलिए कुछ शुभ कर्मों की, करलें आज कमाई॥३॥

शुभ कर्मों मे जीवन का, यदि बाकी भाग लगालें।
और साथ में अपने सारे, दुर्गुण दूर भगालें॥
सोई पडी जो दिव्य शक्तिया, उनको आज जगालें।
सीधा सरल वेद का मारग, जीवन में अपनालें॥
कहे "सहदेव" हमारा होगा, फिर भगवान् सहाई॥४॥
जैसे कर्म करें हम वैसा, फल मिलता है भाई॥

—सहदेव शास्त्री
आदर्श नगर, जीन्द-१२६१०२

ये शराब पीने वाले

मर मर के जी रहे हैं, ये जहर पीने वाले,
कुकर्म कर रहे हैं, ये दारु पीने वाले।
देखो शराब पीकर, ठेके से आ रहा है,
गायब हैं होश इसके ये लड़खड़ा रहा है।

बेशर्म हो रहे हैं मदिरा के पीने वाले। मर मर के
जब चल सका न आगे तो गिर गया जमी पर,
टट्टी निकल गई है और उल्टिया वहीं पर।
कुत्ते ने चाट करके पेशाब कर दिया है,
जिसने भी देखा इसको बच करके चल दिया है।

बरबाद हो रहे हैं, ये जाम पीने वाले। मर-मर के
दफ्तर मे इसको कोई रिश्वत दे गया था,
जब आ रहा था घर को, कही ठेका शराब का था।
पैसे हराम के थे, बोतल खरीद लाया,
आ करके इसने घर मे, वाइफ को बुलाया।
कहा गई वो मुजिया, कल ही था मैं लाया,
खा गए होंगे बच्चे, बीवी ने यह बताया।
कल ही तो तूने पी थी, आज फिर ले आया,
घर मे नही है आटा, बच्चो को क्या खिलाऊ,
मैं रोज-रोज जाकर, किससे उधार लाऊ।

बच्चे तडप रहे हैं, दुर्गनिश के पीने वाले। मर-मर के
पीकर शराब घर से, साईकल से जा रहा था,
आगे था मोड मुडना, एक ट्रक आ रहा था।
ये बच सका न उससे, कुचला गया वही पर,
ये कौन है कि जिसका खू बह रहा जमी पर।
बेमौत मर रहे हैं, ये नशा करने वाले। मर-मर के

ले०—देवराज आर्यमित्र
आर्यसमाज बल्लभगढ, जि० फरीदाबाद

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अन्तरात्मा आपकी गवाही नही देती कि आप उस बुरे काम को करे। युवको, आप उनसे यह निवेदन कर दें कि "आप उनकी हर बात अपने सिर-माथे पर लेने को तैयार हैं और उनका हर हुक्म मानने को तैयार हैं परन्तु आपने अपनी अन्तरात्मा को बुराई के पास गिरवी नही रखा हुआ है। युवको ! उस समय आप शारीरिक रूप से भले ही जागृत होते हो परन्तु अपनी अन्तरात्मा को तो मत सुलाओ ! अत हे युवको आध्यात्मिक रूप से स्वय बदलो और ससार को भी बदल डालो ! अच्छाई और बुराई के सग्राम मे जो सो जाता है अर्थात् अन्तरात्मा की आवाज को सुला देता है, वह बुराई से घायल हो जाता है। इसलिए युवको अब स्वय को बदलो और ईश्वरीय ज्ञान द्वारा स्वय मे आध्यात्मिक बल भरो। आप तो ईश्वरीय सन्तान हो, सर्वशक्तिमान् परमात्मा के अमृत पुत्र हो ! यही बात सबको समझाकर उन्हें भी जगाओ। युवाशक्ति एक वह शक्ति है जो देश की दिशा को बदल देती है, ससार मे परिवर्तन ला देती है। अत हे युवको ! अब समय आगया है। इस महान् परिवर्तन की प्रतीक्षा हुई सभी की आशा आप पर टिकी है। आप आगे आइये पहले स्वय को बदलो और सारे ससार को बदल डालो।

रामसुफल "शास्त्री" विद्यावाचस्पति

शोक समाचार

ढाकला जिला रोहतक निवासी म० नेहपाल की धर्मपत्नी श्रीमती तेजकौर ८० वर्ष की थी, लम्बी बीमारी के बाद ११-९-९३ को स्वर्गवास होगया। वह आर्यसमाज के काम में बडी रुचि लेती थी तथा अतिथि सेवा के बडे भाव थे। २१-९-९३ को ग्राम ढाकला मे शान्तियज्ञ करवाया। ब्र० ओमप्रकाश, ब्र० विजयपाल तथा फतहसिंह द्वारा यज्ञ करवाया। १०१) रुपया गुरुकुल को दान तथा ११००) का वचन दिया। प्रो० हरिसिंह तथा ग्राम के गणमान्य आर्यसमाजी यज्ञ में सम्मिलित हुए तथा सभी ने दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करने की प्रार्थना की।

म० फतहसिंह भण्डारी, गुरुकुल झज्जर

शराबबन्दी भजन

टेक—बालसमन्द के धरने पर छोरों की करामात देखलो।
या सरकार हठीली इसकी जात देखली।।

१ लग्या ८० दिन पहले धरना ठेका उठ लिया था,
दारू पीवण आला तै, सबका पेडा छुट लिया था।
ठेकेदारो को बदमासी का, भाण्डा फूट लिया था
मुख्यमन्त्री पचायत तै बिलकुल रूठ लिया था।।
देवो से असुरो की होती मात देख ली
या सरकार हठीली इसकी जात देखली।

२ दुबारा खुला ठेका, लाग्या धरना यू लोग बतावण लागे,
सरकार बिना ठेका नही खुलता न्यू हाल जतावण लागे।
बढा दबाव पचायत पुलिस पर यू लोग जतावण लागे,
फर्जी बिक्री फूल पुलिसवाले और दिखावण लाग।।
क्रान्तिकारो नै भी होती दिन तै रात देखलो।
या सरकार हठीली इसकी जात देखलो।

३ डी० सी० के पास गए ३०० आदमी, अब सुनो हवाला सारा,
सैंकडो माता बहिनें साथ थी, था क्रान्ति जनून बडा भारा।
डी० सी० साहब छुप गए, कहो कि सबका एक इशारा,
क्रान्तिकारो अतरसिंह आय ने सरकार को यू ललकारा।।
ये भगतसिंह मिशन काले अग्रजो, थारो हवालात देखली।
या सरकार हठीली इसकी जात देखली।

४ खून मागती है अब धरती, ना कलकित होने दो इतिहास,
यहा घी दूध की नदिया बहा करे थी, क्यू शराब बहाकर
रास बिलास।
ऋषि ओमानन्द का हो सपना, जड माफ करो हो इसका नाश,
अग्रणी हो हरयाणा देश मे, बन्द शराब बिल होज्या पास।
कहे महावीर सच्ची ईश्वराय खुभात देखलो।
या सरकार हठीली इसकी जात देखलो।

शोक समाचार

ग्राम महराणा जिला रोहतक निवासी म० रिसालसिंह आयु ८० वर्ष की लम्बी बीमारी के बाद ६-९-९३ को स्वर्गवास होगया। वह पुराने आर्यसमाजी तथा स्वाध्यायशील थे। उनके भाई ज्ञान ने २१-९-९३ को शान्ति यज्ञ करवाया और गुरुकुल के पुरोहित जसवन्तसिंह व ब्र० मनुदेव तथा फतहसिंह द्वारा यज्ञ करवाया और १०१) रु० दान दिया। सभी ने दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करने की प्रार्थना की।

स्वस्थ रहने के नियम

साथ साथ न खाइये, मूली दही पनीर।
ध्यान अगर दोगे नही, बढे पेट मे पीर॥
भोजन करने पर तुरन्त, करो नही व्यायाम।
त्याग दीजिए हृदय से, चिन्ता शोक तमाम॥
सोते समय न लीजिए, दुग्ध, मिठाई नीर।
मूत्र त्याग कर सोइये, रहेगा स्वस्थ शरीर॥
मालिश करिये तेल की, उठकर प्रात काल।
ब्रह्मचर्य पालन करो, जीवन हो खुशहाल॥
मल मूत्र के वेग को, नही रोकना ठीक।
पेट गैस का रोग फिर, आये न नजदीक॥
स्वास नाक से लीजिए, पिओ न काफी चाय।
पाचन शक्ति बिगडकर, नीद विदा हो जाय॥
भूखे रहो अजीर्ण मे, कर लीजे उपवास।
औषधि बिना आपके, रोग न आये पास॥
चबा-चबा कर खाइये, ले भोजन का स्वाद।
फाका करो अजीर्ण मे, रखो हमेशा याद॥

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

(पृष्ठ २ का शेस)

कि—"इस्लाम धर्म मे दूसरे किसी को पूजनीय मानना, और मूर्तिपूजा निषेध यहूदी मत के समान है। सबसे उत्तम शिक्षाए यहूदी मत और इस्लाम मे एक ही हैं, जैसे चोरी न करना, व्यभिचार से बचना, माता-पिता का आदर करना, झूठी साक्षी न देना आदि। नमाज का समय और सख्या भी यहूदी मत से मिलती है। नमाज के बुलाने के लिए यहूदियो में नरसिंहा बजाया जाता है ईसाइयो मे घण्टा बजाया जाता है, और मुसलमानों में अजा लगाई जाती है।"

इस्लामी मत में जो बलिदानो का विधान है, रोजे रखे जाते हैं, जुम्मा को पवित्र दिन मानते हैं, खतना कराते है, निकाह करते हैं। शैतान का अस्तित्व, पापों का दण्ड, स्वर्ग और नरक आदि का वर्णन ये सब बाते यहूदी मत से मिलती हैं।

इस ऊपर लिखित विवेचन से पता चलता है कि इस्लामी मत का मूल यहूदी आदि मत हैं। ईसाई मत का मूल यहूदी मत और बौद्ध मत है। बौध मत और यहूदी मत का मूल पारसी मत है। पारसी और बौद्ध मत का मूल प्राचीन वैदिक धर्म है।

आज ससार मे पारसी मत, यहूदी मत, इस्लामी मत, बौद्ध मत और ईसाई मत ये बडे धर्म माने जाते हैं। शेष छोटे-छोटे मत तो भारत मे ही उत्पन्न हो रहे हैं। इन सबका आधार प्राचीन वैदिक धर्म है।

वैदिक धर्म का उद्धार

वैदिक धर्म महाभारत काल तक अपने शुद्ध अस्तित्व में रहा तत्पश्चात् अन्य मतो के प्रचलन से वह धूमिल हो गया। आज से लगभग १६८ वर्ष पूर्व सन् १८२४ में गुजरात के टकारा नामक ग्राम में महर्षि दयानन्द का जन्म हुआ। उन्होंने अपने अतुल योग बल से तथा अनुपम ब्रह्मचर्य की साधना से लुप्त वैदिक धर्म का पुनरुद्धार किया। अवैदिक मतो का बहिष्कार तथा वैदिक धर्म का सत्कार किया। महर्षि के तप से ही आज केवल भारत मे ही नही अपितु विदेशों में भी वैदिक धर्म का प्रचार बढता जा रहा है। गुरुकुल, पाठशाला, विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, आर्यसमाज मन्दिर, सार्वदेशिक तथा प्रान्तीय आर्य सभाए प्राचीन वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार के कार्य में लगी हुई हैं।

यदि ससार के सब प्रचलित मत अपने मूल वैदिक धर्म को पहचान कर इसे स्वीकार कर लें तो आज हमारे सारे विवाद समाप्त होकर ससार मे सुख और शान्ति का साम्राज्य स्थापित हो सकता है।

सुदर्शनदेव आचार्य
हरिसिह कालोनी, रोहतक

शराब के ठेकेदारों को जमीन दी तो बहिष्कार

मंडी अटेली—निकटवर्ती गांव काठूवास (राजस्थान) की ग्राम विकास सघर्ष समिति ने फैसला किया कि शराब के ठेकेदारों को शराब का ठेका खोलने के लिए अगर किसी ग्रामवासी ने जमीन दी तो उसे ११ गावों की पंचायत बुलाकर जाति-बिरादरी से बाहर कर दिया जायेगा और यदि गाव में कोई भी शराब पीकर घूमता पाया जायेगा तो उसे २५१ रुपये का दण्ड दिया जायेगा।

गौरतलब है कि राजस्थान का यह गांव रेवाडी नारनौल सडक मार्ग के दोनों ओर आबाद है। सघर्ष समिति के इस फैसले का महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती रेवती देवी ने भी समर्थन किया है।

सघर्ष समिति तथा महिला समिति ने सरकार से आग्रह किया है कि गांव काठूवास को आदर्श गाव घोषित किया जाये। इस गाव के मिडिल स्कूल को मैट्रिक तक अपग्रेड किया जाये।

देश की एकता हिन्दी से ही सम्भव

कानपुर—देश को एकता और समृद्धि के लिए यह अति आवश्यक है कि देश के समस्त काय केवल राष्ट्रभाषा हिन्दो में हो हो। तभी हम विश्व में अपने देश को गौरवपूर्ण स्थिति मे प्रतिष्ठित कर सकेंगे। परन्तु आज हिन्दी बोलने के लिए प्रधानमन्त्री को पर्ची भेजकर आग्रह करना पडता है। उपरोक्त विचार आर्यसमाजी नेता व केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने आर्यसमाज गोविन्द नगर में हिंदी दिवस पर आयोजित सभा की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किए।

सभा में अन्य वक्ताओ ने कहा कि आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द संस्कृत के महान् विद्वान् थे तथा उनकी मात्र भाषा गुजराती होते हुए भी उन्होंने अपने समस्त ग्रन्थ हिन्दी में लिखे और आर्यसमाज मे हिन्दी का ज्ञान अनिवार्य कर दिया। आर्यसमाज ने सदैव ही हिन्दी के उत्थान के लिए संघर्ष किया।

सभा की अध्यक्षता श्री देवीदास आर्य तथा सभा का संचलन आर्यसमाज के मंत्री श्री बालगोविन्द आर्य ने किया।

बालगोविन्द आर्य, मन्त्री

रुकिये—शराब के सेवन से परिवार की बर्बादी होती है। अतः अपने निकट के शराब ठेकों पर अपने साथियों सहित धरणे पर बैठकर शराब-बन्दी लागू करावें।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, गोहाना रोड, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०/७३ रजि० नं० P/RTK-४ वर्तृ १, ६६ ०८ ८३, ०१४

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २० अंक ४२ २१ अक्तूबर, १९९३ वार्षिक शुल्क ४०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति ८० पैसे

चलो बालसमन्द
शराब हटाओ देश बचाओ

चलो बालसमन्द

चलो बालसमन्द
शराब के ठेके व कारखाने बन्द करो

हरयाणा के माथे से शराब के कलंक को मिटाने के लिए १-११-९३ को

चलो बालसमन्द [हिसार]

शराब बुद्धि का नाश करती है —स्वामी दयानन्द
शराब शरीर व आत्मा दोनों का नाश करती है —महात्मा गांधी
शराब सब पाप व अनाचार की जननी है —महात्मा बुद्ध
शराब क्या करती है, बेटी बाप से डरती है।

तरह-तरह की बुराइयों को जन्म देनेवाली शराब तथा दूसरे पदार्थों का आज प्रचलन इस कदर बढ गया है कि मानो सारा समाज ही तबाही की ओर जारहा है। भविष्य की आशा युवापीढी विशेषकर इस भयकर सामाजिक बुराई का शिकार होती जारही है।

हरियाणा राज्य भी नशों के इस जाल मे बुरी तरह फसा है और जिसे दूध दही की धरती कहा जाता था, आज उस पर शराब की नदियां बह रही हैं। महात्मा गांधी का नाम लेनेवाली सरकार आज लोगों को शराबी बनाने मे लगी है जबकि राष्ट्रपिता ने शराबबन्दी कार्यक्रम को स्वतन्त्रतासग्राम का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अग माना था। अब हालत यह है कि सरकार शराब के सेवन को कम करने की बजाय, नित्य नये-नये आकर्षण दे, लोगो को पियक्कड बना रही है। सरकार को अनैतिक व अन्यायपूर्ण राजस्व बटोरने का एक ऐसा चस्का पड गया है कि इसकी आड लेकर सरकार शराब पर पाबन्दी लगाने की बात तक नही करती। शराब पीकर लोग बर्बाद हो रहे हैं, लेकिन सरकार को इसकी कतई चिन्ता नही।

ऐसी भयकर स्थिति से अब जनता को स्वय निपटना होगा। जब परिवारो की सुख, शान्ति व चैन शराब की भेंट चढ गया हो तो ऐसे जीवन से क्या लाभ? पिछले वर्ष से, हरयाणा राज्य के लोगों में शराब के विरुद्ध इतना जोश पदा हुआ है कि वे अब इस नशे से छुटकारा पाना चाहते हैं। स्वामी दयानन्द ने सामाजिक बुराइयों से लोहा लेने के लिए आर्यसमाज की स्थापना की थी और इसलिये शराबबन्दी आन्दोलन की पहल आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने की है और इसे लोगो का इसमे लगातार भरपूर सहयोग मिल रहा है। इस सभा ने राज्य में शराब के विरुद्ध एक जबरदस्त वातावरण तैयार करने मे बडी अहम् भूमिका निभाई है। जिन नेताओ ने हरयाणा को अलग राज्य बनाने हेतु वर्षों तक लगातार कडा सघर्ष किया, उनके मन में एक कल्पना थी कि यह नवोदित राज्य दूसरों के लिए एक आदर्श होगा तथा यहा शराब जैसी खतरनाक चीज के लिए कोई जगह नहीं होगी। परन्तु दुर्भाग्य से हरयाणा में ऐसे व्यक्ति सत्ता मे आते रहे जिन्होने इस नये राज्य की शक्ल ही बिगाड दी और शराब को खूब खुलकर बढ़ावा दिया।

इसलिए आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा ने यह निर्णय लिया कि आगामी हरयाणा स्थापना दिवस, एक नवम्बर १९९३ को नशाबन्दी दिवस के रूप में मनाते हुए इस अवसर पर राज्य स्तर के एक विशाल शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन किया जाये। इसके लिए जिला हिसार के गांव बालसमन्द को ही सभा ने क्यो चुना? वह इसलिए कि हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल के विधानसभा के अपने हल्का आदमपुर का सबसे बडा गाव बालसमन्द है और आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अगवानी मे स्थानीय आर्यसमाज द्वारा, वहा पर खुले शराब ठेके के सामने दिनाक २७ जुलाई ९३ से धरना दिया जारहा है इससे पहले अप्रैल-मई जून, ९३ मे भी इसी ठेके पर लोग ८० दिन तक धरने पर बैठे रहे थे। सरकार को यह ठेका बन्द करना पडा परन्तु कुछ दिन बाद, गाव के लोगों से विश्वासघात कर, यहा की ९० प्रतिशत जनता जो शराब के ठेके के विरुद्ध है की उपेक्षा करते हुए इसे फिर से चालू कर दिया। धरने पर बैठे युवको एव बुजर्गों मे इतना जोश है कि दिनाक २९ अगस्त, ९३ से उन्होंने ठेकेदार के ताले के ऊपर अपना ताला लगाकर इसकी चाबी, धरना के कुशल एव सघर्षशील सचालक तथा सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रातिकारी को सौंप रखी है। इस धरने के माध्यम से आसपास के लोगो मे इतना जोश पैदा होगया है कि अब वे, हिसार स्थित, श्री भजनलाल के दामाद के शराब के कारखाने के विरुद्ध भी आर-पार की लडाई लडने की मूड मे हैं। क्योकि श्री भजनलाल ने भी हरयाणा मे शराब को बहुत बढावा दिया है, इसलिए सभा ने बालसमन्द के लोगो से विचारविमर्श करके यह उचित समझा कि आगामी १ नवम्बर को हरयाणा स्थापना दिवस पर, शेर को उसकी मांद मे ही ललकारते हुए, मुख्यमन्त्री के हल्के के सबसे बड़े गाव बालसमन्द मे ही राज्यस्तर का एक बहुत बडा शराबबन्दी सम्मेलन करते हुए, शराब के विरुद्ध सत्याग्रह का बिगुल बजाया जाये। यह गाव हिसार—नाहरा मार्ग पर, हिसार से २५ किलोमीटर की दूरी पर है। हिसार से बालसमन्द के लिए बहुत अच्छी बससेवा उपलब्ध है।

सभा द्वारा अपनी भजन मण्डलिया भेजकर, सब जिलो में इसके लिए प्रचार शुरु कर दिया गया है। इस सम्मेलन मे प्रदेश के कोने-कोने

(शेष पृष्ठ ४ पर)

स्वस्थ रहने के नियम

साथ साथ न खाइये, मूली दही पनीर।
ध्यान अगर दोगे नही, बढ़े पेट मे पीर॥
भोजन करने पर तुरन्त, करो नही व्यायाम।
त्याग दीजिए हृदय से, चिन्ता शोक तमाम॥
सोते समय न लीजिए, दुग्ध, मिठाई नीर।
मूत्र त्याग कर सोइये, रहेगा स्वस्थ शरीर॥
मालिश करिये तेल की, उठकर प्रात काल।
ब्रह्मचर्य पालन करो, जीवन हो खुशहाल॥
मल मूत्र के वेग को, नही रोकना ठीक।
पेट गैस का रोग फिर, आये न नजदीक॥
स्वास नाक से लीजिए, पिओ न काफी चाय।
पाचन शक्ति बिगडकर, नींद विदा हो जाय॥
भूखे रहो अजीर्ण मे, कर लीजे उपवास।
औषधि बिना आपके, रोग न आये पास॥
चबा-चबा कर खाइये, ले भोजन का स्वाद।
फाका करो अजीर्ण मे, रखो हमेशा याद॥

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

(पृष्ठ २ का शेष)

कि—"इस्लाम धर्म मे दूसरे किसी को पूजनीय मानना, और मूर्तिपूजा निषेध यहूदी मत के समान है। सबसे उत्तम शिक्षाए यहूदी मत और इस्लाम मे एक ही हैं, जैसे चोरी न करना, व्यभिचार से बचना, माता-पिता का आदर करना, झूठी साक्षी न देना आदि। नमाज का समय और सख्या भी यहूदी मत से मिलती है। नमाज के बुलाने के लिए यहूदियो में नरसिंहा बजाया जाता है ईसाइयो मे घण्टा बजाया जाता है, और मुसलमानो में अजा लगाई जाती है।"

इस्लामी मत में जो बलिदानो का विधान है, रोजे रखे जाते हैं, जुम्मा को पवित्र दिन मानते हैं, खतना कराते हैं, निकाह करते हैं। शैतान का अस्तित्व, पापों का दण्ड, स्वर्ग और नरक आदि का वर्णन ये सब बाते यहूदी मत से मिलती हैं।

इस ऊपर लिखित विवेचन से पता चलता है कि इस्लामी मत का मूल यहूदी आदि मत हैं। ईसाई मत का मूल यहूदी मत और बौद्ध मत है। बौध मत और यहूदी मत का मूल पारसी मत है। पारसी और बौद्ध मत का मूल प्राचीन वैदिक धर्म है।

आज ससार मे पारसी मत, यहूदी मत, इस्लामी मत, बौद्ध मत और ईसाई मत ये बड़े धर्म माने जाते है। शेष छोटे-छोटे मत तो भारत मे ही उत्पन्न हो रहे हैं। इन सबका आधार प्राचीन वैदिक धर्म है।

वैदिक धर्म का उद्धार

वैदिक धर्म महाभारत काल तक अपने शुद्ध अस्तित्व में रहा तत्पश्चात् अन्य मतो के प्रचलन से वह धूमिल हो गया। आज से लगभग १६८ वर्ष पूर्व सन् १८२४ में गुजरात के टकारा नामक ग्राम में महर्षि दयानन्द का जन्म हुआ। उन्होंने अपने अतुल योग बल से तथा अनुपम ब्रह्मचर्य की साधना से लुप्त वैदिक धर्म का पुनरुद्धार किया। अवैदिक मतो का बहिष्कार तथा वैदिक धर्म का सत्कार किया। महर्षि के तप से ही आज केवल भारत में ही नही अपितु विदेशों में भी वैदिक धर्म का प्रचार बढता जा रहा है। गुरुकुल, पाठशाला, विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, आर्यसमाज मन्दिर, सार्वदेशिक तथा प्रान्तीय आर्य सभाए प्राचीन वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार के कार्य में लगी हुई हैं।

यदि ससार के सब प्रचलित मत अपने मूल वैदिक धर्म को पहचान कर इसे स्वीकार कर ले तो आज हमारे सारे विवाद समाप्त होकर ससार मे सुख और शान्ति का साम्राज्य स्थापित हो सकता है।

सुदर्शनदेव आचार्य
हरिसिंह कालोनी, रोहतक

शराब के ठेकेदारों को जमीन दी तो बहिष्कार

मंडी अटेली—निकटवर्ती गांव काठूवास (राजस्थान) की ग्राम विकास सघर्ष समिति ने फैसला किया कि शराब के ठेकेदारों को शराब का ठेका खोलने के लिए अगर किसी ग्रामवासी ने जमीन दी तो उसे ११ गावों की पचायत बुलाकर जाति-बिरादरी से बाहर कर दिया जायेगा और यदि गाव में कोई भी शराब पीकर घूमता पाया जायेगा तो उसे २५१ रुपये का दण्ड दिया जायेगा।

गौरतलब है कि राजस्थान का यह गाव रेवाडी नारनौल सडक मार्ग के दोनों ओर आबाद है। सघर्ष समिति के इस फैसले का महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती रेवती देवी ने भी समर्थन किया है।

सघर्ष समिति तथा महिला समिति ने सरकार से आग्रह किया है कि गाव काठूवास को आदर्श गाव घोषित किया जाये। इस गाव के मिडिल स्कूल को मैट्रिक तक अपग्रेड किया जाये।

देश की एकता हिन्दी से ही सम्भव

कानपुर—देश को एकता और समृद्धि के लिए यह अति आवश्यक है कि देश के समस्त कार्य केवल राष्ट्रभाषा हिन्दी में हो हो। तभी हम विश्व में अपने देश को गौरवपूर्ण स्थिति में प्रतिष्ठित कर सकेंगे। परन्तु आज हिन्दी बोलने के लिए प्रधानमन्त्री को पर्चो भेजकर आग्रह करना पडता है। उपरोक्त विचार आर्यसमाजी नेता व केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने आर्यसमाज गोविन्द नगर मे हिंदी दिवस पर आयोजित सभा की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किए।

सभा में अन्य वक्ताओं ने कहा कि आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द संस्कृत के महान् विद्वान् थे तथा उनकी मात्र भाषा गुजराती होते हुए भी उन्होंने अपने समस्त ग्रन्थ हिन्दी में लिखे और आर्यसमाज में हिन्दी का ज्ञान अनिवार्य कर दिया। आर्यसमाज ने सदैव ही हिन्दी के उत्थान के लिए संघर्ष किया।

सभा की अध्यक्षता श्री देवीदास आर्य तथा सभा का संचलन आर्यसमाज के मंत्री श्री बालगोविन्द आर्य ने किया।

बालगोविन्द आर्य, मन्त्री

रुकिये—शराब के सेवन से परिवार की बर्बादी होती है। अतः अपने निकट के शराब ठेकों पर अपने साथियों सहित धरणे पर बैठकर शराब-बन्दी लागू करावें।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, गोहाना रोड, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०/७३ रजि० नं० P/RTK-४ वत १, ९६ ०८ ९३, ०१

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २० अंक ४२ २१ अक्तूबर, १९९३ वार्षिक शुल्क ४०) (आजीवन शुल्क ४०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति ८० पैसे

चलो बालसमन्द चलो बालसमन्द चलो बालसमन्द

शराब हटाओ देश बचाओ शराब के ठेके व कारखाने बन्द करो

हरयाणा के माथे से शराब के कलंक को मिटाने के लिए १-११-९३ को

चलो बालसमन्द [हिसार]

शराब बुद्धि का नाश करती है —स्वामी दयानन्द

शराब शरीर व आत्मा दोनों का नाश करती है —महात्मा गांधी

शराब सब पाप व अनाचार की जननी है —महात्मा बुद्ध

शराब क्या करती है, बेटी बाप से डरती है।

तरह-तरह की बुराइयों को जन्म देनेवाली शराब तथा दूसरे पदार्थों का आज प्रचलन इस कदर बढ गया है कि मानो सारा समाज ही तबाही की ओर जारहा है। भविष्य की आशा युवापीढी विशेषकर इस भयकर सामाजिक बुराई का शिकार होती जारही है।

हरियाणा राज्य भी नशों के इस जाल मे बुरी तरह फसा है और जिसे दूध दही की धरती कहा जाता था, आज उस पर शराब की नदिया बह रही हैं। महात्मा गांधी का नाम लेनेवाली सरकार आज लोगों को शराबी बनाने मे लगी है जबकि राष्ट्रपिता ने शराबबन्दी कार्यक्रम को स्वतन्त्रतासग्राम का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अग माना था। अब हालत यह है कि सरकार शराब के सेवन को कम करने की बजाय, नित्य नये-नये आकर्षण दे, लोगो को पियक्कड बना रही है। सरकार को अनैतिक व अन्यायपूर्ण राजस्व बटोरने का एक ऐसा चस्का पड गया है कि इसकी आड लेकर सरकार शराब पर पाबन्दी लगाने की बात तक नही करती। शराब पीकर लोग बर्बाद हो रहे हैं, लेकिन सरकार को इसकी कतई चिन्ता नही।

ऐसी भयकर स्थिति से अब जनता को स्वय निपटना होगा। जब परिवारो की सुख, शान्ति व चैन शराब की भेंट चढ गया हो तो ऐसे जीवन से क्या लाभ ? पिछले वर्ष से, हरयाणा राज्य के लोगों में शराब के विरुद्ध इतना जोश पदा हुआ है कि वे अब इस नशे से छुटकारा पाना चाहते हैं। स्वामी दयानन्द ने सामाजिक बुराइयों से लोहा लेने के लिए आर्यसमाज की स्थापना की थी और इसलिये शराबबन्दी आन्दोलन की पहल आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने की है और इसे लोगो का इसमें लगातार भरपूर सहयोग मिल रहा है। इस सभा ने राज्य में शराब के विरुद्ध एक जबरदस्त वातावरण तैयार करने में बडी अहम् भूमिका निभाई है। जिन नेताओ ने हरयाणा को अलग राज्य बनाने हेतु वर्षों तक लगातार कडा सघर्ष किया, उनके मन में एक कल्पना थी कि यह नवोदित राज्य दूसरों के लिए एक आदर्श होगा तथा यहा शराब जैसी खतरनाक चीज के लिए कोई जगह नहीं होगी। परन्तु दुर्भाग्य से हरयाणा में ऐसे व्यक्ति सत्ता मे आते रहे जिन्होने इस नये राज्य की शक्ल ही बिगाड दी और शराब को खूब खुलकर बढावा दिया।

इसलिए आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा ने यह निर्णय लिया कि आगामी हरयाणा स्थापना दिवस, एक नवम्बर १९९३ को नशाबन्दी दिवस के रूप में मनाते हुए इस अवसर पर राज्य स्तर के एक विशाल शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन किया जाये। इसके लिए जिला हिसार के गांव बालसमन्द को ही सभा ने क्यो चुना ? वह इसलिए कि हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल के विधानसभा के अपने हल्का आदमपुर का सबसे बडा गाव बालसमन्द है और आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अगवानी मे स्थानीय आर्यसमाज द्वारा, वहा पर खुले शराब ठेके के सामने दिनाक २७ जुलाई ९३ से धरना दिया जारहा है इससे पहले अप्रैल-मई जून, ९३ मे भी इसी ठेके पर लोग ८० दिन तक धरने पर बैठे रहे थे। सरकार को यह ठेका बन्द करना पडा परन्तु कुछ दिन बाद, गाव के लोगो से विश्वासघात कर, यहा की ९० प्रतिशत जनता जो शराब के ठेके के विरुद्ध है की उपेक्षा करते हुए इसे फिर से चालू कर दिया। धरने पर बैठे युवको एव बुजर्गों मे इतना जोश है कि दिनाक २९ अगस्त, ९३ से उन्होंने ठेकेदार के ताले के ऊपर अपना ताला लगाकर इसकी चाबी, धरना के कुशल एव सघर्षशील सचालक तथा सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रातिकारी को सौंप रखी है। इस धरने के माध्यम से आसपास के लोगो मे इतना जोश पैदा होगया है कि अब वे, हिसार स्थित, श्री भजनलाल के दामाद के शराब के कारखाने के विरुद्ध भी आर-पार की लडाई लडने की मूड मे हैं। क्योकि श्री भजनलाल ने भी हरयाणा मे शराब को बहुत बढावा दिया है, इसलिए सभा ने बालसमन्द के लोगो से विचारविमर्श करके यह उचित समझा कि आगामी १ नवम्बर को हरयाणा स्थापना दिवस पर, शेर को उसकी मांद मे ही ललकारते हुए, मुख्यमन्त्री के हल्के के सबसे बडे गाव बालसमन्द में ही राज्यस्तर का एक बहुत बडा शराबबन्दी सम्मेलन करते हुए, शराब के विरुद्ध सत्याग्रह का बिगुल बजाया जाये। यह गाव हिसार—माहरा मार्ग पर, हिसार से २५ किलोमीटर की दूरी पर है। हिसार से बालसमन्द के लिए बहुत अच्छी बससेवा उपलब्ध है।

सभा द्वारा अपनी भजन मण्डलिया भेजकर, सब जिलो मे इसके लिए प्रचार शुरु कर दिया गया है। इस सम्मेलन मे प्रदेश के कोने-कोने

(शेष पृष्ठ ४ पर)

विजय दशमी

विजय दशमी का दिन हिन्दुओं का एक पवित्र दिन है, क्योंकि इसी शुभ मुहूर्त में मर्यादापुरुषोत्तम राम ने विजय यात्रा की थी और कुछ समय में ही लंकापति रावण का वध कर असंख्य प्राणियों को उसके अत्याचारों से मुक्त किया था। राम की यह विजय धर्म की अधर्म पर अपूर्व विजय थी। राम ने रावण का राज्य छीनने के लिए लंका पर चढ़ाई नहीं की थी और न लंका की प्रजा को दास बनाकर उसका दोहन शोषण करने के लिए ही, अपितु आर्यपरम्परा के अनुसार अत्याचार के उन्मूलन और धर्म की प्रतिष्ठा के लिए। उन्होंने अपनी विजय से सच्चे वीर का आदर्श उपस्थित करके आर्य प्रथानुमोदित क्षत्रिय धर्म की महिमा का भव्य दिग्दर्शन कराया था। यूरोप और अमेरिका के वर्तमान युद्ध-देवता इस आदर्श को जितना शीघ्र अपनाकर क्रिया में लायें उतना ही विश्व शांति के लिए श्रेयस्कर है।

मर्यादापुरुषोत्तम राम ने लंका पर चढ़ाई करने के लिए अयोध्या या मिथिला से सैनिक सहायता प्राप्त न की थी। उन्होंने स्वयं अपने बल पर युद्ध किया था। विजय दशमी का दिन हमें उस दिन का स्मरण कराता है जब आर्य जाति का जाति-सुलभ तेज मौजूद था, जब वह अत्याचार के उन्मूलन और पीड़ितों के रक्षण के लिए शक्तिशाली अत्याचारी के मुकाबले में संगठनात्मक प्रतिभा के बल पर जंगली जातियों को ला खड़ा करना जानती थी। भगवान् राम का हम सत्कार करते हैं क्योंकि उन्होंने आर्य जाति की मर्यादा के अनुरूप नेतृत्व और शौर्य प्रदर्शित किया और आर्य विश्वास की भावना को गौरवान्वित किया था।

राम हमारे पूज्य हैं इसलिए नहीं कि वह भगवान् के अवतार थे, वह दुनिया को मनचाहा नाच नचा सकते थे, उनके नाम का जाप करने मात्र से मनुष्य भवसागर से तर जाता है, वह सूर्य को पश्चिम में उदय कर सकते थे, मुर्दे को जिला सकते थे, समुद्र को सुखा और सूर्य-चन्द्र को पृथ्वी पर उतार सकते थे इत्यादि-इत्यादि। हम उनकी पूजा इसलिए करते हैं कि वह आदर्श पुरुष थे और आर्य संस्कृति के मूर्तिमान् प्रतीक थे।

इटली के पन्द्रहवीं शताब्दी के कूटनीतिज्ञ मेकावली ने अपने देश के सीजर बोर्जिया को आदर्श पुरुष बताया और अपनी संसार प्रसिद्ध पुस्तक 'राजा' में तत्कालीन यूरोपीय शासकों को उसका अनुकरण करने का परामर्श दिया।

इसके कई शताब्दियों बाद एक जर्मन दार्शनिक का जन्म हुआ जिसका नाम निट्शे था। इसने भी सीजर बोर्जिया को आदर्श पुरुष माना और आशा प्रकट की कि जर्मन युवक उसके अनुरूप होगा। निट्शे ने नेपोलियन को भी संसार का आदर्श पुरुष बताया और कहा कि संसार में वही जाति अन्य जातियों के ऊपर शासन कर सकेगी जिसके युवकों में इन दोनों पुरुषों के गुण विद्यमान होंगे।

सीजर बोर्जिया और नेपोलियन में आकाश, पाताल का अन्तर है। नेपोलियन के प्रतिभावान् योद्धा होने में कोई सन्देह नहीं किया जा सकता, पर सीजर बोर्जिया अपने समय का सबसे अधिक घृणित और पतित व्यक्ति था। उसने अपने भाई को मरवा दिया था। एक महिला का सतीत्व नष्ट किया था और अपनी माता के अपमान का बदला लेने के लिए निर्दोष विवश जनता को तलवार के घाट उतार दिया था। वह विष की उपयोगिता में विश्वास रखता था और अपने शत्रुओं पर विजय पाने की चिन्ता में उचित और अनुचित का ध्यान रखना आवश्यक न समझता था। उसकी तुलना अरबिस्तान के हसन बिन सब्बाह से की जा सकती है जिसने शत्रु से छुटकारा पाने के मामले में छुरे के उपयोग को धर्मादेश की पवित्रता प्रदान की थी।

मेकावेली और निट्शे किसी व्यक्ति के आदर्श या देवोपम होने के लिए उसमें जिन गुणों की उपस्थिति आवश्यक समझते थे उनमें भौतिक बल, कूटनीति, साम्राज्यलोलुपता और नृशंसता को विशेष रूप से महत्त्व दिया गया था। मेकावेली स्वयं कूटनीतिज्ञ था, इसलिए उसे सीजर बोर्जिया का चरित्र विशेष रूप से रुचा। निट्शे का प्रादुर्भाव तब हुआ जब फ्रेडरिक महान् और उसके कृपण पिता के द्वारा प्रूशिया में सैनिकवाद का प्रतिपादन हो चुका था। निट्शे को प्रूशियन सैनिक के कायदे कानून की पाबन्दी और निर्दयता विशेष रूप से रुचि और आशा प्रकट की कि संसार का भविष्य प्रूशियन सैनिक के हाथ में है। परन्तु चूंकि वह उसे पूर्णरूपेण देवोपम पुरुष के रूप में देखना चाहता था इसलिए उसने सीजर का मित्रघात करने की मनोवृत्ति और नैतिक चरित्र हीनता को भी अपनाने की सलाह दी।

यह कहना आवश्यक है कि दूसरे महासमर के जर्मन नेताओं के कार्यकलाप और विचार बिन्दु पर निट्शे की शिक्षा की गहरी छाप लगी हुई थी।

परन्तु मेकावेली ने यूरोप के शासक वर्ग को सीजर बोर्जिया के जिन गुणों को अपनाने की सलाह दी थी और निट्शे ने प्रूशियन सैनिक को उसके जिन गुणों के कारण संसार का भावी शासक पूर्ण या देवोपम पुरुष समझा था वे गुण कहीं अधिक विकसित मात्रा में एशियाई विजेताओं में या मंगोल और तुर्क सैनिकों में विद्यमान थे।

आर्य संस्कृति के देवोपम पुरुष की विभावना इन मध्य एशियाई, इटालियन या प्रूशियन विभावनाओं से बिल्कुल भिन्न प्रकार की रही है। सीजर बोर्जिया ने अपने पिता का अनुराग स्वयं अपनाये रहने की इच्छा से अपने भाई की हत्या करवा दी। भरत ने राज्य मिलने पर भी उसे तिरस्कारपूर्वक ठुकरा दिया और भाई का अनुगामी रहकर ही संतोष किया। नेपोलियन ने रूस के तत्कालीन जार एलेक्जेंडर से चिरकालीन मित्रता की सन्धि की जिस प्रकार हिटलर ने स्टेलिन से अमर सन्धि की थी और अवसर पाते ही मित्र के साथ विश्वासघात किया। राम ने एक बहुत कमजोर आदमी का पक्ष ग्रहण किया और अन्त तक उसका साथ निभाया। औरंगजेब ने अपने पिता को कैद में डाला और भाइयों को मरवा दिया, ठीक उसी तरह जिस तरह उसके पिता ने राज्य प्राप्ति के लिए अपने भाइयों को मरवाया था। राम ने अपने दुर्बल, शक्तिहीन और स्त्रैण पिता की आज्ञा का सहर्ष पालन किया और अपने भाई भरत के विरुद्ध षड्यन्त्र करने के गन्दे विचार को भी मन में न आने दिया।

तो संसार का देवोपम पुरुष होने के लिए किसी व्यक्ति के भीतर किस प्रकार के गुणों की उपस्थिति आवश्यक है? उन गुणों की जो उसकी बर्बर प्रवृत्ति को क्रीडा करने का अवसर देते हैं या उन गुणों की जो व्यक्ति को सद्वृत्ति को विकसित करके समाज के हित और निर्धारित नियमों उपनियमों का पालन करने और उनमें विकास करने की प्रेरणा देते हैं? सीजर ईसाई था, नेपोलियन भी ईसाई था। मूसा के दस आदेश वाक्य प्रत्येक ईसाई को उस समय भी मान्य थे जैसे आज मान्य हैं परन्तु मेकावेली और निट्शे के आदर्श पुरुषों ने इन सभी आदेश वाक्यों के विरुद्ध आचरण किया। भारतीय समाज में भी नियम उपनियम समाज के सृजन के आरम्भकाल से चले आ रहे हैं और हम राम को परम श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं, उन्होंने उन नियमों का साधारण व्यक्ति की भांति पालन किया। उसी प्रकार हम बाली और रावण को घृणा और तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं क्योंकि उनमें से एक ने अपने भाई की स्त्री पर अधिकार करके और दूसरे ने समाज की रक्षा करने के स्थान पर उसमें आतंक फैलाकर सामाजिक नियमों और आर्यमर्यादाओं का उल्लंघन किया। इस प्रकार जहां मेकावेली और निट्शे के दृष्टिकोण से बाली और रावण ही देवोपम पुरुष सिद्ध होंगे हमारी संस्कृति हमें ऐसे व्यक्तियों से समाज को मुक्त करनेवाले व्यक्तियों को उसका रक्षक या पिता कहना सिखाती है।

राम को आर्य संस्कृति की विशिष्ट देन कहने में जरा भी अत्युक्ति नहीं है। जहां आर्य संस्कृति में मानवी विकास को प्राधान्य दिया गया है वहां अर्द्धविकसित एशियाई और यूरोपीय समाज में भौतिक विकास और पशुबल को ही अपना आदर्श समझा गया है। यही कारण है कि अनेक तूफानों और बवण्डरों की भयंकर चपेटों में से गुजरने के बाद भी आर्य संस्कृति आज जीवित है। कोई जाति तभी तक जीवित रह सकती है जब तक वह मानवी विकास के प्राकृतिक कार्यकलाप में योग देती रहे। इतिहास बताता है कि जिन जातियों ने हत्या, व्यभिचार और मक्कारी को त्यागकर आगे बढ़ने से इंकार किया और इन्हीं को अपनी उन्नति और तुष्टि का साधन समझा वे नष्ट हो गईं।

आर्य संस्कृति के प्रतीक राम को हम नमस्कार करते हैं, हम पूज्या सीता के अज्ञात चरणों में भी अपनी श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हैं, क्योंकि वह अपने आचरण की आर्य ललना के चरित्र पर अमिट छाप छोड़ गई है। उनका पातिव्रत्य और त्याग आर्यललना को अपना सारा जीवन ही त्यागमय बनाने को प्रोत्साहित करता आरहा है। लक्ष्मण का संयम और भरत का भ्रातृप्रेम अब भी हममें चरित्रबल उत्पन्न करते और स्फूर्ति प्रदान करते हैं।

हमारा आदर्श पुरुष मेकावेली या निट्शे या हसन बिन सब्बाह के देशवासियों के आदर्श पुरुष से सर्वथा भिन्न है। —रघुनाथ प्रसाद पाठक

आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव १९ दिसम्बर को निश्चित

आर्यसमाजें अपने प्रतिनिधि चुनकर ३० नवम्बर तक भेजें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक का आगामी चुनाव १९ दिसम्बर १९९३ को होना निश्चित हुआ है। अत हरयाणा सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजें आर्यसमाज के नियम उपनियम की धारा ८ (५) के अनुसार अपने अन्तरग सभा द्वारा स्वीकृत आर्यसभासदो को १५ दिन पूर्व प्रतिनिधियो के चुनाव का नोटिस (विज्ञापन) भेजकर ११ आर्यसभासदो पर एक उसके पश्चात् प्रत्येक २० आर्यसभासदों पर एक, सभा के लिए प्रतिनिधि अपनी साधारण सभा की बैठक में चुन लेवे और सभा द्वारा भेजे गए प्रतिनिधि फार्म को पूरे ध्यान से पूरा भरकर सभा कार्यालय दयानन्द मठ, गोहाना मार्ग रोहतक मे ३० नवम्बर १९९३ तक अवश्य भेज देवे। अन्यथा आप चुनाव मे भाग नही ले पायेंगे।

आर्यसमाजें इस वर्ष (अप्रैल ९३ से प्रारम्भ वर्ष) का वार्षिक वेद प्रचार, आर्यसभासदों से वार्षिक सभासद शुल्क की राशि का १०वा भाग जो भी बनं दशाश तथा सर्वहितकारी का ४० रु० वार्षिक सभा को धनादेश (मनीआर्डर) अथवा सभा के उपदेशको, भजनोपदेशको द्वारा सभा को शीघ्र भेज देवे, जिससे आर्यसमाजो के सभा के लिए प्रतिनिधियो को स्वीकार करके उन्हे समय पर चुनाव का एजण्डा भेजा जा सके। सभी आर्यसमाजो को प्रतिनिधि फाम भेजे जा चुके हैं जिन आर्यसमाजो के पास प्रतिनिधि फार्म किसी कारणवश नही पहुच सके हों वे तुरन्त सभा को पत्र लिखकर मगवा लेवें।

आशा है आर्यसमाजें हरयाणा मे आर्यसमाज के सगठन को सुदृढ करने के लिए अपने सुयोग्य प्रतिनिधि चुनकर भेजकर अपना योगदान देंगे। 	—सूबेसिह, सभामन्त्री

भूकम्प पीड़ित सहायता हेतु दानदाताओ की सूची

गतांक से आगे—

आर्य कन्या उच्च विद्यालय सोनीपत	१००१-००
आर्यसमाज नगर सोनीपत	५०१-००
श्री कप्तान बिरखाराम याज्ञवल्क्य, फ्लेग स्टाफ हाउस सुभाष मार्ग, शाहजहापुर (उ०प्र०)	२००-००
प्रो० प्रकाशवीर विद्यालकार चाणक्यपुरी, निकट शीला टाकीज रोहतक	१०१-००
प्रो० प्रकाशवीर विद्यालकार चाणक्यपुरी, निकट शीला टाकीज रोहतक (शराबबन्दी)	२५१-००
अध्यापक एव कर्मचारी वर्ग गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (फरीदाबाद)	५००-००
मन्त्री आर्यसमाज जि० हिसार	१०१-००
श्री रामजीलाल आर्य पूर्व सरपच बालसमन्द (हिसार)	१००-००
स्वामी सर्वदानन्द जी सचालक गुरुकुल धीरणवास(हिसार)	१२५-००
मन्त्री आर्यसमाज होडल जि० फरीदाबाद	५०१-००
,, ,, बोबा जि० गुडगाव	१०१-००
,, ,, बसई जि० गुडगांव	१०१-००
,, ,, फिरोजपुर झिरका जि० गुडगाव	१५१-००
,, ,, पिनगंवा जि० गुडगाव	१०१-००
,, ,, कनीना जि० महेन्द्रगढ	५१-००
,, ,, पुनहना जि० गुडगाव	५१-००

रामानन्दसिह सभा कोषाध्यक्ष

शोक-समाचार

प० सुदर्शनदेव आचार्य सभा वेद प्रचाराधिष्ठाता के पूज्य धर्मपिता (श्वसुर) श्री दीपचन्द आर्य सांघी (रोहतक) का दिनाक १६-१०-९३ को ८० वर्ष की अवस्था में स्वर्गवास हो गया। उनकी अन्त्येष्टि में स्थानीय आर्यसमाज के अधिकारी तथा आदरणीय वेद प्रचाराधिष्ठाता तथा ग्राम के गणमान्य सज्जनो ने भाग लिया। परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोकाकुल परिवार को शान्ति प्रदान करे। 	—केदारसिंह आर्य

हरयाणा में शराबबन्दी सत्याग्रह की गतिविधियां—

१. बालसमन्द जि० हिसार मे शराब के ठेके पर धरणा चालू

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उत्साही एव कर्मठ उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी के प्रयत्नो तथा ग्रामवासियों के सहयोग से ग्राम बालसमन्द जिला हिसार मे शराब के ठेके पर धरणा पुन चालू है। इससे पूव ठेका सरकार ने बन्द कर दिया था, परन्तु ग्रामीण जनता से विश्वासघात करके तथा ठेकेदार के प्रभाव मे आकर पुलिस ने ठेका अचानक चालू करवा दिया है। अत २७ जुलाई से धरणा पूर्व की भाति चालू है। ठेकेदार ने पुलिस की सहायता से शराबियो को सस्ते रेट मे तथा बाद मे मुफ्त शराब पिलानी आरम्भ की और शराबियों द्वारा धरणे को असफल करने हेतु दगा करवाने का यत्न किया। परन्तु श्री क्रान्तिकारी के नेतृत्व मे १०० से अधिक नवयुवक मैदान से नही हटे। उन्होने झगडा करनेवाले शराबियो जिनमे कुछ पुलिसकर्मी भी थे, की पिटाई की। पुलिसवालो ने अपनी नौकरी बचाने के लिए धरणेधारियो से क्षमा मागी। परन्तु जब आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता २ अक्टूबर को राजघाट दिल्ली राष्ट्रपति को ज्ञापन देने जा रहे थे तो पुलिस ने उन्हे बसो से बलात् उतारकर पकड लिया और उनको मनघडन्त मुकद्दमे मे फसा दिया। आय कार्यकर्ता जमानत पर आगये, परन्तु स्थानीय थानेदार जिस किसी भी नवयुवक को जनेऊ पहने देखता है, उसे बस से उतार देता है और नाजाइज हिरासत मे रखकर डराने का यत्न कर रहा है। इसकी सूचना मिलने पर सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह, मन्त्री श्री सूबेसिंह तथा हरयाणा शराबबन्दी समिति के संयोजक श्री विजयकुमार १४ अक्तूबर को बालसमन्द पहुचे और वहा धरणा दे रहे कार्यकर्त्ताओ, नवयुवको तथा आर्यसमाज के अधिकारियो से मिलकर सारी जानकारी प्राप्त करके ग्राम मे शराबरूपी जहर को हटाने के लिए हरयाणा दिवस पर एक नवम्बर ९३ को प्रान्तीयस्तर का यहा शराबबन्दी सम्मेलन रखने का सुझाव रखा, जिसे सभी कार्यकर्त्ताओं ने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

सभा अधिकारियों ने कार्यकर्त्ताओ को धरणा चालू रखने के लिए एक हजार रु० का अनुदान देते हुए उन्हे विश्वास दिलाया कि इस ठेके को हटवाने के लिए सभा की ओर से पूरा सहयोग दिया जावेगा। इसके बाद सभा के अधिकारी हिसार आकर जिला उपायुक्त से मिले तथा उन्हें बालसमन्द मे पुलिस तथा ठेकेदार द्वारा की जा रही धीगामस्ती करने की शिकायत की और एक नवम्बर को प्रान्तीय शराबबन्दी सम्मेलन करने की सूचना दी। इस सम्मेलन को सफल करने के सभा की ओर से उपदेशको तथा भजनमण्डलियो को जिला हिसार मे शराबबन्दी प्रचार करने का कार्यक्रम दिया है।

३ पाल्हावास (रेवाडी) में शराब का ठेका हटवाने हेतु सघर्ष जारी

ग्राम पाल्हावास जिला रेवाडी मे भी शराब के ठेके पर शराबबन्दी का कार्यक्रम पूरे वर्ष भर से चल रहा है। यहा का सरपच शराब के ठेकेदार से मिला हुआ है जब ग्राम के किसी व्यक्ति ने ठेका रखने हेतु अपना मकान तथा भूमि नही दी तो सरपंच ने अपने खेत मे शराबरूपी जहर का ठेका खुलवा दिया और ग्रामीण भाइयो को भलाई करने का अपना कर्त्तव्य छोडकर पापकर्म जहर बिकवाने में लग गया। इसकी इस अलोकतान्त्रिक कार्यवाही के विरुद्ध ५१ ग्रामो की पचायत भी बुलाई गई जिसमे श्री ओमानन्द जी सरस्वती भी पधारे परन्तु सरपंच को सरकार का सरक्षण होने पर उसने शराबबन्दी का प्रस्ताव नहीं किया। ग्राम के उत्साही कार्यकर्त्ता श्री अनिल आर्य ने ग्राम के प्रमुख नर-नारियो के सैकडो हस्ताक्षर करवाकर ३० सितम्बर को हरयाणा के कराधान एव आबकारी उपायुक्त को चण्डीगढ जाकर ग्राम से शराब का ठेका बन्द कराने हेतु प्रस्ताव तथा ज्ञापन दे आये हैं और ग्रामवासियो को तैयार कर रहे हैं कि आगामी वष से किसी भी मूल्य पर ठेका न खुलने देव। श्री अनिल आर्य को सभा ने शराबबन्दी कार्य चालू रखने तथा ग्रामो मे आर्यसमाज का प्रचार करने के लिए प्रचारक नियुक्त किया है। सभा के अधिकारी तथा प्रचारक शराबबन्दी सत्याग्रह की तैयारी हेतु आर्यसमाजो का भ्रमण कर रहे हैं। 	—केदारसिंह आर्य

हरयाणा दिवस को नशाबन्दी रूप में मनाया जावे

पिछले कई मास से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा इस प्रयास में लगी है कि हरयाणा मे लगे शराब के कारखानो के विरुद्ध एक शक्तिशाली जनमत तैयार किया जाये ताकि राज्य मे शराब के निर्माण को ही बन्द कराया जा सके। सभा की यह सोच है कि इस प्रयास में शराब कारखानो के आस-पास रहने वाले लोगो की भूमिका अपेक्षातर अधिक महत्वपूर्ण एव निर्णायक सिद्ध हो सकती है। बाहर के लोगो का कुछ समय तक तो सहयोग हो सकता है जिससे स्थानीय लोगो का मनोबल एव उत्साह बढेगा। इस सारे प्रयास में महिलाओं के योगदान को सुनिश्चित किया जाना बडा जरूरी है। इस सम्बन्ध मे सभा द्वारा कई विशाल शराबबन्दी सम्मेलनों एव जन जागरण अभियान का कार्यक्रम शुरु किया गया है। भिवानी रोहतक दिलो में ऐसे सम्मेलन किये गये हैं जो बडे सफल रहे हैं। सभा के उपदेशक, भजनमण्डलियो व अन्य कार्यकर्ता एव अधिकारी, शराब के विरुद्ध लोगों को शिक्षित एव जागृत करने मे सक्रिय रूप से लगे हैं। बडे-बडे ग्रामों मे शराबबन्दी सभाओ के माध्यम से लोगो को सत्याग्रह के लिए तैयार किया जा रहा है। सभा ने दो मास पहले यह निश्चय भी किया था कि आगामी हरयाणा स्थापना दिवस (१ नवम्बर) को नशाबन्दी दिवस के रूप मे मानते हुये राज्य स्तरीय एक बडे शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन किया जाये क्योकि जिन नेताओ ने हरयाणा को एक अलग राज्य बनाने मे लगातार कई वर्ष तक सघर्ष किया था उनका एक स्वप्न था कि इस नये राज्य मे शराब के लिए कोई जगह न हो। इस समय हरयाणा के मुख्यमन्त्री के आदमपुर विधानसभा हल्का के सबसे बडे गाव बालसमन्द के शराब ठेके के सामने, सभा के उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी के सचालन मे धरना चल रहा है। पहले इस गाव के लोगो ने ठेके के सामने ८० दिन तक धरना दिया। जन आक्रोश को देखते हुये, स्वय मुख्यमन्त्री ने बालसमन्द के अपने दौरे के समय, इस ठेके को बन्द करने के आदेश दिये। परन्तु बाद में अपनी बात से मुकर कर तथा लोगो के साथ विश्वासघात करके, दिनांक २७-७ ९३ से इस ठेके को फिर से चालू कर दिया। गाव के अनेक बुजुर्ग, नवयुवक उस दिन से फिर लगातार धरने पर बैठे हैं। लोगो का बहुत बडा बहुमत ठेके को बन्द कराने हेतु कृतसंकल्प है। पुलिस ने ९ व्यक्तियो के विरुद्ध झूठे मामले दर्ज करके इन्हें परेशान किया ताकि लोग डर जाये और धरना खत्म हो जाये। लेकिन पुलिस को इस गलत हरकत से, लोग धरने को जारी रखने के लिए और ज्यादा मजबूत हुये हैं। लोगों मे जोश तो इतना है कि अपने अपने गाव के ठेके को बन्द करने के लिए कुछ भी कर गुजरने को तैयार हैं।

दिनांक २९-८-९३ से ठेकेदार द्वारा ठेके पर लगाये गये ताले के ऊपर, गाव के लोगो ने अपना ताला लगाकर उसकी चाबी, धरना के कुशल सचालक श्री अतरसिंह क्रान्तिकारी की जेब में डाल रखी है। सारे देश मे अपनी तरह की यह पहली मिशाल है। यहां के लोग तो अब हिसार में, श्री भजनलाल के दामाद द्वारा चलाये जा रहे शराब के कारखाने के विरुद्ध, आर-पार संघर्ष छेडने के मूड में हैं। इस जनमत को और व्यापक व मजबूत बनाने की दृष्टि से, सभा ने यह निर्णय लिया है कि हरयाणा स्थापना दिवस के अवसर पर आगामी एक नवम्बर को जिला हिसार के गाव बालसमन्द में ही प्रान्तीय स्तर का एक विशाल शराबबन्दी सम्मेलन किया जाये जिसमें प्रदेश के सब जिलों से नर-नारी शामिल हों। उक्त निर्णय, सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह, सभा मन्त्री श्री सूबेसिंह व मेरे द्वारा, बालसमन्द गांव में जाकर तथा वहां के लोगों से विचार-विमर्श करके व इनकी सलाह के बाद ही लिया गया।

सभा ने यह भी निश्चय किया है कि हरयाणा दिवस के अवसर पर जिला मुख्यालयो पर, शराब के विरुद्ध बडे पैमाने पर प्रदर्शन किये जाए। सिरसा जिला मे शराब व दूसरे नशीले पदार्थों का प्रचलन इतना बढ गया है कि इससे चिन्तित होकर, सभा द्वारा इस जिला में एक व्यापक अभियान चलाया जाएगा। आगामी शिवरात्रि (ऋषिबोध उत्सव) के पावन अवसर पर गुरुकुल झज्जर में एक और विशाल शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन किया जायेगा। इस प्रकार के सम्मेलन भिवानी, यमुनानगर, सिरसा, कुरुक्षेत्र, कैथल, जींद आदि जिलों मे भी किये जायेंगे। जिससे सारे हरयाणा राज्य में शराब के विरुद्ध एक शक्तिशाली माहोल बने और लोग इस नशे को गुलामी से मुक्त हो सकें।

(विजय कुमार)
आई० ए० एस० (रि०)
सयोजक, हरयाणा शराबबन्दी समिति

श्री सिद्धान्ती की ९३वीं जयन्ती पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

प्रतिवर्ष की भाति आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् तथा नेता, स्वर्गीय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती शास्त्री पूर्व लोकसभा की जयन्ती पर मनायी जाती है। इस बार उनकी ९३वी जयन्ती २४ अक्तूबर ९३ को प्रात ९ बजे सभा कार्यालय की प० रघुवीरसिंह शास्त्री यज्ञशाला में हवन से आरम्भ होगी। उसके बाद छात्र तथा छात्राओं की भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। इसका विषय नशाबन्दी तथा दहेजबन्दी है। कार्यक्रम के अन्त मे श्री सिद्धान्ती जी को श्रद्धाजलि अर्पित का जावेगी। अतः जो छात्र अथवा छात्राएं इस प्रतियोगिता मे सम्मिलित होना चाहें वे अपने नाम सभा कार्यालय मे दिनाक २३ अक्तूबर साय तक भेज देवें। प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर आने वालो को पुरस्कार दिया जावेगा।

—सत्यवीर शास्त्री, सभा उपमन्त्री
सयोजक

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

से हजारों की सख्या मे नरनारी, युवक, विद्यार्थी, गुरुकुलों के ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिणी, स्वतन्त्रतासेनानी, फोजी भाई, शराबबदी कार्यकर्त्ता तथा इस कार्यक्रम से जुड अनेक सगठन जसे महिला सांस्कृतिक सगठन, नौजवान सभा, भारतीय किसान यूनियन आदि भाग लेंगे। इस अवसर पर शराबबन्दी आन्दोलन से जुडे अनेक सघर्षशील नेता एव कार्यकर्त्ता अपने विचार एवं सुझाव रखेंगे। सबसे अनुरोध है कि वे कृपया बडी सख्या मे आने का कष्ट करें जिससे हरयाणा मे शराब व इसे बनानेवाले कारखानो को बन्द कराने हेतु एक मजबूत जनमत तैयार करते हुए, हरयाणा की पावन धरती से शराब को सदा के लिए विदा किया जा सके।

भोजन, पानी, चाय आदि का सारा प्रबन्ध, बालसमन्द गाव के लोगो ने सहर्ष अपने जिम्मे लिया ताकि बाहर से आनेवालो को कोई दिक्कत न हो।

सम्मेलन का समय—प्रात. ११ बजे से ४ बजे तक।

स्थान—बस अड्डे के पास अनाज मण्डी में।

कृपया न भूलिये, १-११-९३ को प्रात ११ बजे तक, बालसमन्द (जिला हिसार) पहुचना।

निवेदक

स्वामी ओमानन्द सरस्वती
प्रथम सर्वाधिकारी
शराबबन्दी सत्याग्रह

स्वामी रत्नदेव
द्वितीय सर्वाधिकारी
शराबबन्दी सत्याग्रह

प्रो० शेरसिंह
प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एव अध्यक्ष, अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद्

सूबेसिंह
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा

स्वामी सर्वदानन्द
कुलपति, गुरुकुल धीरनवास (हिसार)

आचार्य [illegible] शास्त्री
गुरुकुल आर्यनगर (हिसार)

विजयकुमार
सयोजक, हरयाणा शराबबन्दी समिति

शराबबन्दी समिति एवं आर्य समाज बालसमन्द

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार मे प्रथम कक्षा से स्नातकोत्तर तक विभिन्न विषयो मे अध्ययन/अध्यापन की व्यवस्था है। यहा पर वेद, दर्शन, भारतीय संस्कृति एवं इतिहास के अध्ययन के साथ-साथ माइक्रोबायलाजी तथा कम्प्यूटर एप्लीकेशन जैसे आधुनिक ज्ञान विज्ञान के विषयों के अध्ययन/अध्यापन की व्यवस्था की गई है।

यहां पर स्वच्छ एव प्राकृतिक वातावरण में गुरुकुल परम्परा के अनुसार आश्रम व्यवस्था भी उपलब्ध है। ब्रह्मचारियों के लिए आश्रम मे आधुनिक प्रणाली का भोजनालय, शौचालय एव स्नानागार की सुविधा है।

महाविद्यालय स्तर पर कम्प्यूटर प्रशिक्षण की व्यवस्था पहले से ही है। इस वर्ष यह व्यवस्था कक्षा ८ से कक्षा १२ तक के छात्रो के लिए भी कर दी गई। इस समय विद्यालय विभाग के ब्रह्मचर्य आश्रम मे २०० छात्र रह रहे हैं। अभिभावको की माग पर तथा कम्प्यूटर प्रशिक्षण व्यवस्था की नई सुविधा को देखते हुए प्रवेश की अन्तिम तिथि को बढाकर ३० सितम्बर १९९३ कर दिया है। अपने बच्चो को इस वैदिक संस्था म प्रवेश कराने के इच्छुक अभिभावको से निवेदन है कि मुख्य अध्यापक, गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय (विद्यालय विभाग), हरिद्वार से सम्पर्क करे।

(सूर्यदेव) प्रधान आर्य विद्या सभा	(प्रकाशवीर विद्यालकार) मन्त्री आर्य विद्या सभा
(डा० धर्मपाल) कुलपति एव मुख्याधिष्ठाता	(प० महेन्द्रकुमार) सहायक मुख्याधिष्ठाता

आर्य महाकवि सम्मेलन

सोनीपत—आर्यसमाज ऋषिनगर के वार्षिकोत्सव पर जो १-११-९३ से ७-११-९३ तक हो रहा है। इस मौका पर ५-११-९३ शुक्रवार रात्रि ८ बजे एक तरही कवि सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इस में आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध आर्य कवि भाग लेगे। इस बहुभाषी कवि सम्मेलन के मिसरा तरह इस प्रकार हैं।

१ हिन्दी —सदा सत्यपथ पर चलो, चलने वालो ?

क

२ सारे जहा को आर्य बनाते हुए चलो

क र

३ सिरायकी (मुल्तानी) सच आखणतो मूल न डर

क

भजन मण्डली चाहिए (गायक व ढोलक वादक)

आर्य केन्द्रीय सभा गुडगाव का एक अनुभवी आर्य भजन मण्डली की आवश्यकता है जो देहात व शहर मे भजनोपदेश के माध्यम से प्रचार कर सके तथा यज्ञ आदि कर्मकाण्ड कराने मे भी दक्ष हो वेतन कार्य एव योग्यता के अनुसार। पूर्ण विवरण सहित सम्पर्क स्थापित करें।

—ओमप्रकाश चुटानी महामन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा गुडगाव
उप कार्यालय आर्यसमाज रामनगर, गुडगाव

आवश्यकता

ग्रामीण शिक्षा निकेतन कावरा (फरीदाबाद) को अतिशीघ्र ऐसे नवयुवक को आवश्यकता है जो कर्मठ, मेहनती, ईमानदार हो और नर्सरी से पाचवी कक्षा तक अध्यापन कार्य कर सके। वेतन योग्यतानुसार। अतिशीघ्र लिखे या सम्पर्क करे।

—राकेश कुमार मुख्याध्यापक

स्वतंत्रतासंग्राम का बहादुर जनरल—नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

जिनकी आजाद हिन्द फौज बनाने की अर्ध शताब्दी सारे देश में २१ अक्तूबर को मनाई जारही है।

लेखक डा० शान्तिस्वरूप शर्मा, पत्रकार कुरुक्षेत्र

पचास वर्ष बीत गये वर्मा मे २१ अक्तूबर सन् १९४३ तालियों की गूज और भारतमाता की जय के नारो के बीच इण्डियन नेशनल आर्मी के हैड के तौर पर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने परमात्मा के नाम पर शपथ लेकर हजारों देशभक्तो के सामने शपथ ग्रहण करते हुए घोषणा की कि भारत और उसमे रहनेवाले ३८ करोड देशवासियो को आजाद कराने के अपने जीवन के अन्तिम श्वास तक युद्ध जारी रखूंगा और भारत को आजाद कराने के लिए अपने खून की एक-एक बूद बहाने को अपना प्रमुख कर्त्तव्य समझूगा। इसके पश्चात् २१ सदस्यों ने भारत की अन्तरिम सरकार के सदस्यो की हैसियत से शपथ ग्रहण की।

इस अवसर पर नेताजी ने घोषणा की कि अब आजादी की पो फटनेवाली है। इसलिए हम सब भारती जो भारत मे हैं या भारत से बाहर हैं को एक जुट होकर ब्रिटिश साम्राज्य को समाप्त करने में अपना पूरा योगदान देना है। आओ हम सब देशभक्त प्रतिज्ञा करें कि हम इस ब्रिटिश साम्राज्य जिसने भारत को परतन्त्र बनाया हुआ है को देश से बाहर निकाल दें। आपका नारा था। देहली चलो, तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूंगा।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ससार के इतिहास मे पहला देशभक्त विद्रोही था जिसने बडे साहस और निडरता से विदेशो मे एक मजबूत देशभक्तों की सेना का इतना मजबूत सगठन खडा करके ससार की बडी राजनैतिक शक्ति अग्रेजी साम्राज्य के दात खट्टे कर दिये। आजाद हिन्द फौज ने अग्रेजी फौजों से जबरदस्त टक्कर ली और कई स्थानो पर सफलता प्राप्त की। ऐसा मालूम होता था कि नेताजी देहली पहुचकर लालकिले पर तिरगा झण्डा जल्दी लहरायेंगे परन्तु यह देश का दुर्भाग्य था कि मित्र देशो जिनमें इग्लैंड भी सम्मिलित था की जीत से नेताजी की योजना सफल न हो सकी परन्तु देश के स्वाधीनता इतिहास में जो गौरवपूर्ण अध्याय सुभाष बाबू ने जोडा वह अमर रहेगा।

नेताजी सन् १९३९ मे काग्रेस अध्यक्ष महात्मा गाधी जी की इच्छा के विरुद्ध महात्मा जी के उम्मीदवार डा० सीताराम भोर्या को हराकर चुन लिये गये थे। आप क्रान्तिकारी विचारो के लीडर आरम्भ से ही रहे थे। उन्होने हरीपुर काग्रेस के मच से अध्यक्षीय भाषण में ब्रिटिश साम्राज्य को चेतावनी दे दी थी कि उसे देश से भागना पडेगा। गाधी बापू से नेताजी के विचार भिन्न थे। इसलिए आपने काग्रेस से त्यागपत्र देकर फारवर्ड ब्लाक पार्टी बनाई जिसने आन्दोलन अग्रेजो के विरुद्ध आरम्भ कर दिया और गिरफ्तार करके नजरबद अपने ही मकान कलकत्ते मे कर दिये गये।

अग्रेज सरकार के कूटनीतिज्ञ एव विश्वप्रसिद्ध गुप्तचरों का जाल तोडकर जनवरी सन् १९४१ मे कलकत्ता मे अपने मकान से बडी बहादुरी और चतुरता से बाहर निकलने और काबुल के रास्ते इटली के दूतावास द्वारा मास्को और वहा से जर्मनी पहुचने में सफल होगये। आपने बर्मा के रेडियो से ब्राडकास्ट करते हुए अपने पहले भाषण मे कहा था—

ब्रिटिश साम्राज्य के पीठू मेरे विरुद्ध प्रोपेगेंडा करनेवाले मुझे दुश्मन के एजेंट के नाम से बदनाम कर रहे हैं। मेरे सभी देशवासी मुझे भली प्रकार जानते हैं कि मैं ब्रिटिश साम्राज्य का दुश्मन हूं। मेरा सारा जीवन देश के लिए अर्पण है। मैं अग्रेजी सरकार को भारत से भगाने में लगा हुआ हू। मैं अपने देशवासियो का सेवक हू। मैं देश प्रेमी हू चाहे भारत मे या ससार के किसी भी कोने में हू। दुश्मन जिसने तलवार निकाली है उसका उत्तर तलवार से दूगा। हम आग से खेलकर सिद्ध करेंगे कि आजादी हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

आप जर्मन पनडुब्बी मे बैठकर १० दिन रात समुद्र में सफर करते हुए २ जुलाई १९४३ को जापान पहुचे। आपने टोकियो रेडियो से बोलते हुए कहा था—दोस्तो मैंने कई बार आपको विश्वास दिलाया था कि जब भी आवश्यकता पडेगी मैं और मेरे साथी लडाई व मुसीबत के समय आपका साथ देंगे। हम आपके साथ उस सफलता में सम्मिलित होंगे क्योंकि भारत अब आजाद अवश्य होगा। आजादी अब दूर नही है।

सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी रासबिहारी बोस जो अंग्रेजों के विरुद्ध प्लान बनाने के लिए पहले ही जापान पहुचे हुए थे २००० सैनिक जो जापान सिंगापुर और थाइलैंड और बर्मा में जापानियो द्वारा कैद थे, की अपार बाधाओ को पार करके आजाद हिन्द फौज बनाई थी। जब सुभाष बाबू जापान पहुचे तो उसका चार्ज उसको सौंप दिया था।

२३ जनवरी सन् १८९७ को कटक के एक सरकारी वकील जानकीदास के घर एक बालक का जन्म हुआ जिसने सन् १९१९ में आई०सी०एस० की परीक्षा लदन मे पास की। भारत लौटने पर आप उस समय के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी सी आर दास के सम्पर्क में आगये और क्रान्तिकारी बन गये। आपको कई बार जेल भेजा गया। आपका विश्वास था कि अग्रेज केवल बापू गाधी की अहिंसा की पोलिसी से नही भगाया जा सकेगा। उनका सारा जीवन सघर्ष का रहा।

हम उस स्वतन्त्रतासग्राम के जरनैल को अपनी श्रद्धाजलि भेट करते हैं।

संस्कार प्रशिक्षण शिविर

आजकल समाज मे शास्त्रीय पण्डितों का अभाव है। उनमे भी कर्मकाण्ड के विद्वान् तो गिने चुने ही हैं। जिसके कारण जाने अनजाने आधे अधूरे यज्ञ, सस्कार आदि कार्य पुरोहितो द्वारा सम्पन्न कराये जाते हैं और इस प्रकार अज्ञानपरम्परा आगे बढती जाती है। इस बात को ध्यान मे रखकर परोपकारिणी सभा द्वारा नवम्बर मास की एक तिथि से दस तिथि तक दस दिन का एक सस्कार प्रशिक्षण शिविर ऋषि उद्यान पुष्कर रोड अजमेर मे आयोजित किया गया है। इस शिविर का निर्देशन स्वामी मुनीश्वरानन्द जी महाराज करेंगे।

सयोजक—संस्कार प्र.शि शिविर, प सभा, अजमेर

बामपुर के पास बूचड़खाना

नरेला के पास ही ५०० बीघे भूमि पर दिल्ली सरकार एक बहुत बडा आधुनिक बूचडखाना बना रही है। जिसका विरोध क्षेत्र के लोग बडी तीव्रता से कर रहे हैं और एक सघर्ष समिति चौ० हीरासिंह जी की अध्यक्षता में बनाई गई है, जिसके तहत नरेला के सतरह की पंचायत, पालम के बारह की पंचायत और खेडे मे मान और जटराणा खापों की पचायत हो चुकी है और बवाने की बावनी और बखतावरपुर के देहात की पचायतें होने जा रही है और इसी बारे में एक बहुत बडी ३६० की ३६ कौमो की पचायत जी० टी० रोड बामपुर के पास, बूचड—खाना बनाए जानेवाली जगह पर २३-१०-९३ शनिवार को एक बडे यज्ञ के बाद हो रही है जिसमें सभी जातियों, धर्मों व सस्थाओं को आमन्त्रित किया गया है।

—पूर्णसिंह आर्य

चौ० नन्दराम जी का स्वर्गवास

मेरे बडे भाई नन्दराम जी सु० चौ० धर्मसिंह जो मामूरपुर नरेला निवासी का स्वर्गवास दि० १-१०-९३ को सायंकाल हो गया था जोकि बडे ही सरल हृदय भ्रातृप्रेम की अद्वितीय मूर्ति थे। उनका शाति यज्ञ (तेरहवी) दि० २३-१० ९३ को है।

—पूर्णसिंह आर्य

नशाबन्दी—समय की पुकार

—श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

नशाखोर व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र का प्रबल शत्रु है। मादकता से विभिन्न रोग, दरिद्रता, कमजोरी और लड़ाई-झगड़े पैदा होते हैं। नशों के सेवन से नैतिक पतन हो जाता है और राष्ट्र एक सभ्य नागरिक से वंचित हो जाता है। इस तरह मानवता का अस्तित्व ही खतरे मे पड जाता है। वैदिक काल मे शराब आदि मादक द्रव्यों का सेवन नही किया जाता था। महाभारत काल मे शराब के सेवन से यदुवंश के विनाश का वर्णन मिलता है। इसके बाद मुगल और ईसाई संस्कृति ने शराब को और भी पनपने के लिए खुलकर प्रचार किया।

वर्तमान में शराब पीने की आदत समाज में इतनी अधिक फैल गई है कि सारा समाज रोगग्रस्त होगया है। सरकार भी इसके दुष्परिणामों से बहुत चिंतित है परन्तु शराब के विक्रय से होनेवाली आय सरकार की सबसे बड़ी मजबूरी है जबकि इससे होनेवाले जान-माल के नुकसान की राशि सरकारी आमदनी से अधिक है।

वैदिक साहित्य मे शराब के पीने व इसके प्रचार-प्रसार का कही भी वर्णन नही है। शराब पीने वालों की दुर्दशा का वर्णन करते हुए ऋग्वेद ८-२-१२ में कहा गया है '—

ह्रत्सु पीतासो युध्यन्ते दुर्मदासो न सुरायाम्।
ऊधर्न नग्ना जरन्ते ॥

(न) जैसे (सुराया) शराब (हृत्सु पीतास) दिल खोलकर पीनेवाले (युध्यन्ते) आपस मे लडते हैं और (न) जैसे वे (नग्ना) नगे होकर (ऊधः) रातभर (जरन्ते) बडबडाते हैं, वे (दुर्मदास) दुष्ट बुद्धि वाले लोग होते हैं।

'दुर्मदास' का अर्थ 'दुष्ट मद वाले' होता है अर्थात् आनन्द करने की रीति जिनकी बहुत बुरी होती है, जो शराब आदि पीकर नाचना खुशी का चिन्ह समझते हैं, वे 'दुर्मद' होते हैं। 'सुमद' ऐसे नहीं हुआ करते, वे सभ्यता से रहते हैं। 'सुमद' लोग नारियल का पानी तथा केवल शुद्ध जल पीते हैं और आनन्द से हृष्ट-पुष्ट होते हैं। हर एक मनुष्य को 'सुमद' होना चाहिए। 'दुर्मद' होना योग्य नहीं है। मद्यपान की इस प्रकार निन्दा की गई है, अत मद्यपान करना किसी को भी उचित नही है।

वेद मे जुआ खेलने और शराब पीने का बडा विरोध किया गया है और इनकी बुराइयो को गिनाया गया है। कुछ लोगो का मत है कि शराब पीने मे कोई हानि नही है क्योकि वेद मे सोमरस पान करने का उपदेश है और यह शराब ही सोमरस है तथा देवता लोग भी इसका सेवन करते थे। यहा प्रसगवश वेद के मन्त्र के प्रमाण से सोमरस का वर्णन इस प्रकार है—

प्रावेपा मा बृहतो मादयन्ति प्रवातेजा इरिणे वर्वृताना।
सोमस्येव मौजवतस्य भक्षो विभीदको जागृविर्मह्यमच्छान् ॥
ऋ० १०-३४-१

(मौजवतस्य सोमस्य) स्वच्छतायुक्त सोमरस के (भक्ष इव) पान के समान (विभीदक) विशेष प्रिय और (जागृवि) जागृति देने वाला (मह्य अच्छान्) मेरे लिए यह जुआ है।

इस मन्त्र में सोमरस को जागृति देने वाला कहा गया है और शराब को पीकर व्यक्ति अपनी चेतना, सूझ-बूझ को खोकर मद से अन्धा हो जाता है उसकी वाणी सयम से बाहर हो जाती है शरीर लडखडाने लगता है। शराबी अपनी मा, बहिन और बेटी को भी नही पहचानता है पत्नी की पिटाई कर डालता है। ऐसे मे प्रश्न पदा होता है कि क्या यही है सोमरस जिसे पीकर देवता लोग आनदित होते थे। नहीं। यह वह सोमरस नही है। यह तो केवल जहर है। सोम क्या है? यह निम्न मन्त्र मे देखें।

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह।
सोमो मा तत्र नयतु पय सोमो दधातु मे ॥
अ० १९-४३-५

(यत्र) जिस लोक को (ब्रह्मविद) वेदों को जानने वाले सन्यासी लोग अपने (दीक्षया) व्रतादि तथा (तपसा सह) तप द्वारा (यान्ति) प्राप्त करते हैं, उसी में (सोम) सोमस्वरूप परमात्मा (मा) मुझे (नयतु) ले जाए और (मे) मुझमें (पय) दुग्धादि उत्तम पदार्थों को (दधातु) धारण कराए।

यहा सोम परमात्मा को कहा गया है जिसे साधक तप और व्रत के द्वारा प्राप्त करके दिव्य पदार्थों को प्राप्त कर लेता है।

उक्त मन्त्रो से स्पष्ट होता है कि सोम शब्द वेद मे परमात्मा, जीवात्मा के लिए प्रयोग किया गया है और 'सोमरस' शब्द सोमलता के रस के लिए जो कि इस शराब से सर्वथा भिन्न है आनन्द, बल, पराक्रम को प्रदान करता है और सद्बुद्धि, भक्तिभावना तथा आस्तिकता देता है जबकि शराब से मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और वह नीच से नीच कर्म करने मे भी संकोच नही करता। शराब का नशा उतर जाने पर शराबी अपने किए हुए व्यवहार पर पश्चाताप करता है। सोमरस का पान आध्यात्मिक आनन्द के लिए किया जाता था जबकि शराब का पान आत्महनन के लिए, कामुकता के लिए, किसी के मन के भेद के लिए किया जाता है।

भूकम्प पीड़ितों की सहायता के लिए दान भेजने की अपील

आप सभी को ज्ञात है कि गत सप्ताह महाराष्ट्र, कर्नाटक तथा आन्ध्रप्रदेश के ग्रामो मे भयकर तथा विनाशकारी भूकम्प आने के कारण ३५ हजार के लगभग नर-नारियो एव बच्चो की अचानक मृत्यु हो गई और लाखो परिवार बेघर हो गये हैं। उनके पास सिर छिपाने के लिए घर नही तथा पेट भरने के लिए भोजन तक नही रहा। लाखो बच्चे तथा बूढे जख्मी होकर जीवन मृत्यु के साथ सघर्ष कर रहे हैं। इस दयनीय अवस्था को दृष्टि मे रखते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने भूकम्प पीडितो को सहायता का कार्यक्रम बनाया है। सभा के अधिकारी तथा कार्यकर्त्ता शीघ्र ही उनकी सहायता करने के लिए उन क्षेत्रो मे जाकर आप द्वारा दी गई सामग्री वितरण करेंगे।

आर्यसमाज ने अपने प्रारम्भकाल से ही पीडितो की सहायता करने मे पूरी शक्ति लगाकर ऐतिहासिक सेवा कार्य किये हैं। दानी महानुभावो के नाम सभा के साप्ताहिक पत्र सर्वहितकारी मे प्रकाशित किये जावेंगे।

अत आर्यसमाज तथा आर्य शिक्षण सस्थाओ के अधिकारियो से सानुरोध अपील है कि वे अति शीघ्र अधिक से अधिक धन राशि व वस्त्र आदि सग्रह करके सभा को भेजकर पुण्य के भागी बने। सभा को दिया गया दान आयकर से मुक्त है।

निवेदक

ओमानन्द सरस्वती

कार्यकर्त्ता प्रधान परोपकारिणी सभा

प्रो० शेरसिंह प्रधान **सूबेसिंह मन्त्री**

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक

विद्यालय मे नैतिक शिक्षा पर बल

दिनाक २५-९-९३ को आर्य विद्या मन्दिर अमीपुर (फरीदाबाद) में अतिथि स्वामी देवानन्द जी सभा भजनोपदेशक द्वारा आर्यसमाज की परिभाषा, आर्यसमाज के नियम व शिक्षा प्रद भजन, गीतों का कार्यक्रम किया गया। स्वामी जो ने ज्ञानवर्द्धक बाते भी बच्चो को सिखाई। मुख्याध्यापक श्री कृष्ण दहिया ने यह सकल्प लिया कि हम भविष्य मे इसी प्रकार आर्यसमाज का प्रचार करते रहेंगे। इस कार्यक्रम में ब्रह्मचारिणी मनोजवती व पूनम कुमारी ने शिक्षाप्रद गीत सुनाये।

—श्रीकृष्ण दहिया, मुख्याध्यापक

अनमोल जिन्दगी

जवानो यह है जिन्दगी अनमोल इसे रखना सम्भाल कर।
यह हर पल धोखा देती है इससे रहना सम्भल कर॥
जो पैदा हुआ उसे एक दिन जाना यह संसार छोड़कर।
यह संसार छोड़ने से पहले कोई न कोई परोपकार कर॥
जवानो यह जिन्दगी है अनमोल इसे रखना सम्भाल कर।
औरत से सम्भलना जरा जवानो तुम औरत के कहने पर न चलना॥
औरत का काम है जिन्दगी से भी ज्यादा दगा देकर चलना।
जवानो जवानी में चलना सम्भल कर।
यह आती नहीं फिर एक बार जाकर॥
जवानो यह जिंदगी है अनमोल इसे रखना सम्भाल कर।
जवानो अगर तुम धोखा जिन्दगी में किसी से खा जाओ॥
मौत आने से पहले अगर हो सके तो उसका बदला जरूर कर जाओ।
जवानो यह उस ओ३म् की ही दी हुई है जिंदगी।
त्याग और कुर्बान होने के लिए ही बनी है जिंदगी॥
जवानो यह है जिन्दगी अनमोल इसे रखना सम्भाल कर।
कहे डा० ओमप्रकाश आर्य ऐ आर्य नौजवानो तुम अब होश में आ जाओ॥
इस आर्यसमाज के लिए तुम कुछ करके दिखलाओ।
मुझे होश आया है फिर कहना घर उजड़ जाने के बाद॥
मुझे शोक उडने का हुआ है कहना पर कतर जाने के बाद।
जवानो यह जिन्दगी है अनमोल इसे रखना सम्भाल कर॥
यह हर पल धोखा देती है इससे रहना सम्भल कर॥

—ओमप्रकाश आर्य

आर्यसमाज महरौली पालम कालोनी नई दिल्ली-४५

राज्यस्तरीय क्रीड़ा प्रतियोगिता

हिसार मे सम्पन्न हुई राज्यस्तरीय क्रीडा प्रतियोगिता में जगन्नाथ आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल हिसार की वालीबाल टीम ने जिला स्तरीय प्रतियोगिता में १० हजार रुपये का पारितोषिक जीतकर सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया।

जीतने वाली टीम कु० नीलम आर्या (सुपुत्री आचार्य दयानन्द जी शास्त्री), कु० मुकेश, कु० रूपा, कु० शालु, कु० मोहना, कु० शालिनी थी तथा टीम की सहयोगिनी अनीता, नेहा, सुशीला, सुनीता, मोनिका, रूपाली, कन्यायें थी।

—आचार्य दयानन्द शास्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन ' ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०/७३ रजि० नं० P/RTK-४ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, ०९४

ओ३म् सर्वहितकारी कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २० अंक ४९ २८ अक्तूबर, १९९३ वार्षिक शुल्क ४०) (आजीवन शुल्क ४०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति ८० पैसे

हरयाणा दिवस पर १ नवम्बर को बालसमन्द जि० हिसार मे

हरयाणा प्रान्तीय विशाल नशाबन्दी सम्मेलन की तैयारी

चारों ओर ग्रामों मे भजनमण्डलियो द्वारा शराबबन्दी प्रचार की धूम

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा हरयाणा दिवस पर एक नवम्बर ९३ को नशाबन्दी के रूप मे मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल के चुनाव क्षेत्र के सबसे बडे ग्राम बालसमन्द (आदमपुर) जिला हिसार में समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है। दैनिक समाचार पत्र तथा सर्वहितकारी के पाठको को ज्ञात ही है कि ग्रामवासियों के नरनारियो के बहुमत की अवहेलना करते हुए ग्राम पंचायत के सदस्य को लालच देकर ग्राम में शराबरूपी जहर का ठेका खुलवा रखा है। सभा के क्रान्तिकारी उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य जिनकी ससुराल का यह ग्राम है, के प्रयत्नो तथा ग्रामवासियो के तन, मन तथा धन के सहयोग से यहा काफी समय से ठेके को हटवाने के लिए धरणा तथा सघर्ष चल रहा है। शराब के ठेके पर बिक्री बन्द है। ग्राम में भी किसी की शराब पीने की हिम्मत नही है। इससे पूर्व ठेके पर शराबी तत्वों के उत्पात के कारण बहू-बेटियों के लिए शराब के ठेके के पास से गुजरना कठिन हो गया था। परन्तु श्री अतरसिंह आर्य तथा इनके सैकडों आर्य वीरो ने ठेकेदार के जहर पिलाने के षड्यन्त्र को विफल कर दिया। ठेकेदार ने सरकार तथा पुलिस का सहारा लेकर ग्राम मे दमनचक्र चलवाया। जीप से आर्य कार्यकर्ताओ को कुचलने का असफल यत्न किया। ग्राम से बाहर शराब की बोतल अनुचित रूप मे भेजने का कार्यक्रम बनाया। परन्तु आर्य कार्यकर्ताओ ने डटकर ठेकेदार का मुकाबला किया। पुलिस ने झूठे मुकदमे बनाकर गिरफ्तार करने की धमकिया दी गईं। सारे हथकडे विफल होने पर ठेकेदार अपनी दुकान बन्द करके भाग गया और जिला अधिकारियो ने भी ग्राम की एकता से प्रभावित होकर शराब का ठेका बन्द करने की घोषणा करनी पडी। परिणामस्वरूप धरणा उठा लिया गया। सभा की ओर से विजय दिवस मनाकर शराबबन्दी कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया।

जिला अधिकारियो तथा शराब के ठेकेदार ने ग्रामवासियो के साथ विश्वासघात करते हुए थोडे दिन के पश्चात् पुन ग्राम मे शराब का ठेका चालू कर दिया और पुलिस के पहरे में शराब बिकवानी आरम्भ कर दी और शराबियो को लालच में फंसाकर बोतल आधे मूल्य पर तथा बाद में मुफ्त में पिलानी आरम्भ की। सरकार तथा शराब के ठेकेदार की चुनौती को स्थानीय शराबबन्दी समिति तथा सभा ने स्वीकार करते हुए पुन. ठेके पर धरणा आरम्भ कर दिया। सभा के अधिकारियों ने वहा पहुचकर कार्यकर्ताओ को प्रोत्साहित किया तथा आर्थिक अनुदान भी दिया। सभा के भजनोपदेशकों द्वारा शराबबन्दी प्रचार करवाया। पुलिस ने फिर दमनचक्र चलाना आरम्भ किया और बालावास से बसों में बाहर जाने वाले जनेऊधारी नवयुवकों को बुलाकर उतारा जाने लगा।

इस पर ग्रामवासियो ने पचायत करके शराब के ठेके पर ठेकेदार के ताले के साथ अपना ताला लगाकर ताली श्री क्रान्तिकारी को सौप दी और सघर्ष करने का निश्चय करते हुए पुन एकता का परिचय दिया।

इस प्रकार कार्यकर्ताओं का उत्साह देखकर सभा के अधिकारियो ने गत सप्ताह बालसमन्द पहुचकर ग्रामीण नरनारियो से सम्पर्क किया और ग्राम से शराब के ठेके का कलक मिटाने का आह्वान किया और सभा की ओर से पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन देते हुए कहा कि हरयाणा दिवस एक नवम्बर को बालसमन्द मे प्रान्तीय स्तर का शराबबन्दी सम्मेलन रखने का कार्यक्रम बनाया। हरयाणा सरकार यह न समझे कि ग्रामवाले अकेले हैं। परन्तु बालसमन्द के साथ सारे हरयाणा के आर्यसमाज तथा आर्यशिक्षण संस्थाए हैं। इतिहास साक्षी है कि आर्यसमाज के साथ जो भी टकराया है उसे झुकना पडता है। हैदराबाद, लोहारू के नवाब तथा पजाब के पूर्व मुख्यमन्त्री श्री प्रतापसिंह कैरो इसके उदाहरण हैं। ग्रामवासियो ने सभा के कार्यक्रम का स्वागत किया है और सम्मेलन की पूरे उत्साह के साथ गत सप्ताह से तैयारी की जा रही है। श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, स्वामी रतनदेवजी महाराज, प्रो० शेरसिंह सभाप्रधान, श्री सूबेसिंह सभामन्त्री तथा श्री विजयकुमार सयोजक हरयाणा शराबबन्दी तथा श्री अतरसिंह आर्य सयोजक शराबबन्दी समिति बालसमन्द आदि आर्यनेताओ ने हरयाणा के आर्यसमाजो से अनुरोध किया है कि एक नवम्बर को सारे कार्यक्रम स्थगित करके बालसमन्द बाया भिवानी, तोशाम, नलवा के मार्ग से अधिक से अधिक सख्या मे पहुचकर आर्यसमाज की शक्ति तथा सगठन का परिचय देकर शराब का ठेका बन्द करवाने मे ऐतिहासिक योगदान कर। सभा की ३ भजन मण्डलिया बालसमन्द के चारो ओर शराबबन्दी प्रचार द्वारा सम्मेलन को सफल करने मे लगी हैं याद रखे लोहा गर्म है एक हथोडा और मार दो।

केदारसिंह आर्य

सरगथल मे पूर्ण नशाबन्दी

पूर्ण नशाबन्दी के पथ पर उत्तरोत्तर अग्रसर इस अचल के सरगथल गाव (सोनीपत) ने भी अपने शब्दकोश से 'लालपरी' शब्द निकाल फेका है। सरपच रणबीरसिंह के अनुसार गाधी जयन्ती से गाव में मदिरा का प्रवेश शत प्रतिशत निषिद्ध है और रिटायर्ड कैप्टन लक्ष्मीचन्द की अध्यक्षता में बनी ३१ सदस्यो की समिति की 'सख्ती' आशावर्धक का परिणाम ला रही है। यह समिति प्रथम बार गाव की सीमा मे पकडे गये शराबी को ५०० रु, दूसरी बार ११०० रु व तीसरी व अन्तिम बार सामाजिक बहिष्कार से दडित करेगी। विक्रेता को पहली बार ११००, दूसरी बार २१०० रुपये दण्ड चुकाना होगा। रामचन्द्र पुत्र सोभाराम को बेचते पकडे जाने पर ११०० रुपये चुकाने के बाद से न किसी की हिम्मत बेचने की हुई है, न ही खरीदने की।

(साभार दैनिक ट्रिब्यून)

धर्म बनाम सम्प्रदाय

सभी व्यक्तियों को विदित ही है कि वर्तमान सरकार आरम्भ से ही धर्मनिरपेक्षता की पोषक रही है और वर्तमान में तो सीमा का उल्लंघन कर या राजनीति को धर्म से सर्वथा मुक्त कर देना चाहती है। साथ ही दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि धर्म और सम्प्रदाय को एक ही मान रही है, जबकि ये दोनों ही शब्द अपने को अलग-अलग अभिव्यक्त कर रहे हैं। धारणात्मक शक्तियों को धर्म कहा गया है।

धारणाद् धर्म इत्याहु धर्मो धारयते प्रजा ।
यत स्यात् धारणसंयुक्त स धर्म इति कथ्यते ॥

जो प्रजाओं को धारण करता है उसे धर्म कहा गया है यह प्रश्न महाराज युधिष्ठिर ने दादा भीष्म से पूछा कि आरम्भ में प्रजाओं की रक्षा के निमित्त क्या व्यवस्था थी, किस प्रकार का राज्य था, कैसा दण्ड विधान था इसे स्पष्ट कीजिये। भीष्म ने उत्तर दिया .—

न वै राज्य न राजा आसीत् न दण्डो न च दाण्डिक ।
धर्मेण वै प्रजा सर्वा रक्षन्ति स्म परस्परम् ॥

न कोई राजा था, न कोई राज्य, न दण्ड देनेवाला, न ही दण्ड व्यवस्था क्योंकि कोई दण्ड पानेवाला ही न था। क्योंकि प्रजायें धर्म के आधार पर एक-दूसरे की रक्षा करती थी। स्वय वेदों में भी कहा गया है — पृथिवी धर्मणा धृता' यह सब पृथिवी धर्म पर ठहरी हुई है।

आदि विधान निर्माता राजर्षि मनु धर्म का लक्षण करते हुए अन्तिम लक्षण "स्वस्य च प्रियमात्मन" किया है। जो तुम्हें अपने लिए प्रिय है वही तुम दूसरे के साथ वर्तो। बस इसी धर्मतत्त्व ने सृष्टि के आरम्भ मे प्रजाओ को परस्पर रक्षित किया हुआ था। यदि आज भी उस धर्म तत्त्व को लागू किया जाये तो सभी प्रजाय परस्पर एक दूसरे को रक्षा करगी। न कही भय होगा न कही आतक, न कोई कलह न परस्पर युद्ध, वतमान परिस्तिथियो का दायित्व सम्प्रदाय पर है सम्प्रदाय ही मानव जाति को परस्पर बाटनेवाला है। जिससे न केवल पृथिवी ही बटी हुई है राष्ट्र भी बट गये हैं। जनता बंट गई है। जब तक यह रहेगा तब तक विश्व मे अशान्ति बनी रहेगी।

भगवान पाणिनि मुनि ने सम्प्रदान कारक का जो लक्षण किया हैं वह सम्प्रदाय पर अक्षरश लागू होता है। उनका कहना है 'कमणा य अभिप्रैति स सम्प्रदानम्" कर्म के द्वारा जिसको अभिप्रेत समझता है वह सम्प्रदान है, इस कसौटी पर यदि राष्ट्र की जनता और उसमे विद्यमान व्यक्तियां यदि किसी अपने अभीष्ट व्यक्ति को अभिप्रत समझकर कर्म अथवा चेष्टा करती हैं वह सम्प्रदाय हैं। इस दृष्टि से राष्ट्र को कोई भी राजनीतिक पार्टी सम्प्रदायरहित नही।

जिन्हे सम्प्रदाय कहा जाता है। उसे वर्तमान में वाद कहा जा रहा है जैसे मार्क्सवाद गांधीवाद, पूंजीवाद। यदि भारत राष्ट्र में राम का नाम लेना सम्प्रदाय है तो मार्क्स अथवा गांधी का नाम लेकर कोई कर्म करना भी सम्प्रदायवाद है यदि किसी व्यक्ति विशेष को अभिलक्ष्य करके किया गया आन्दोलन सम्प्रदाय है।

भगवान् बुद्ध, महावीर को आधार बनाकर किया गया निर्मित समुदाय भी सम्प्रदाय की कोटि में सम्मिलित होगा।

हजरत ईसा को आधार बनाकर किया गया आन्दोलन सम्प्रदाय की कोटि में आता है। हजरत मुहम्मद साहब को आधार बनाकर बनाया गया सगठन सम्प्रदाय है, इसी प्रकार श्री गुरुनानकदेव जी को आधार बनाकर बनाया गया सगठन सम्प्रदाय है। यदि आर्यसमाज भी महर्षि दयानन्द को आधार बनाकर अपने क्रियाकलाप करता है तो सम्प्रदाय कोटि मे सम्मिलित होगा। इस कसौटी पर कोई भी राजनीतिक पार्टी खरी नही उतरती। अत इन सब वादों को समाप्त कर आत्मवाद को जन्म देना चाहिए। और इन सब सम्प्रदायों को जड पर ही कुठाराघात करना चाहिए, और वह जड है, जनगणना में अभीष्ट सम्प्रदायों का लिखाया जाना। एक राष्ट्र के सम्प्रदायवाद को राजनीति से पृथक् करना ही पर्याप्त नहीं है। विश्व से सम्प्रदायवाद का उन्मूलन होना चाहिये। वर्तमान सरकार के राजनैतिक नेताओं के पिछली जनगणना में लिखाये गये सम्प्रदायों का अवलोकन करना चाहिये, जिससे पता चल सके कि वह कितने पानी में है।

लेखक प्रस्तुति
स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती दिल्ली

कविता (एकता बालसमन्द की)

बालसमन्द में बूटने टेके हरयाणा सरकार ने।
हार के न थापना पड़ा शराब के ठेकेदार ने॥
शराब पिलाई, जीप चढ़वाई, पुलिस बलाई ठेकेदार ने।
तानाशाही करे थी पुलिस, छीने थी गांव के अधिकार ने॥
कमाल किया पुलिस भगाई, लोगों की एकता की तलवार ने।
ताला लगाया ठेके पर, देदी चाबी मतरसिंह सरदार ने॥
धन्यवाद देते सारे युवकों की ललकार ने।
आशीर्वाद दिया, बुजुर्गों की जय-जयकार ने॥
सब कुछ हिला दिया, माताओं की पुकार ने।
शराबबन्दी लहर चला दी, आर्यों के प्रचार ने॥
सारे याद करेंगे, मनफूल, फूलसिंह, फतेसिंह,
बिरसालाराम के किरदार ने।
रामजीलाल, दिवानसिंह और रघुबीर सिखवाण को करतार ने॥
गांव का सुधार कर दिया, मतरसिंह तेरे बचने के विचार ने।
धरने वलो पे झूठे मुकदमे किए ठेकेदार ने॥
आंधी चलगी, तूफान उठग्या, ले बैठग्या सरकार ने।
पाखण्ड छोडो, भजो ओ३म् निराकार ने॥
आर्यों ने तोड भगाया, पाखण्डियो के गुमान ने।
भीमसिंह की याद करेगा, 'सुशील' तेरे अहसान ने॥

—मा० भीमसिंह 'सुशील
प्रधान शराबबन्दी समिति, बालसमन्द

ठेका बालसमन्द से उठाणा भूल मत जाणा

टेक मैं समझाऊं हे समझ मेरी बहिना।
वैदिक धर्म निभाणा भूल मत जाणा॥

१ थे जुल्म पोपो ने किन्हे।
हक पढाणे के थे बारे छीने॥
पोती दादी और सभी बहिना।
एहसान योगी का जताणा भूल मत जाणा॥

२ अज्ञानो पापी फिरै होते खराब।
खावै मास और फिरै पीते शराब॥
सब मानो उस ऋषि का कहना।
बरतो यथा योग जूते उनको लगाना भूल मत जाणा॥

३ विदुषी सुलक्षणी हों सब नारी।
बाले बाली पढें वेद बने ब्रह्मचारी॥
मेरा मान इतना लो कहना।
गुरुकुल में पढ़ाणा भूल मत जाणा॥

४ करो तैयार उधम भगतसिंह फते और जोरावर।
चन्द्रशेखर बिस्मिल और लेखराम से दिलावर॥
जो दमन से कभी पीछे हटे ना।
ठेका बालसमन्द से उठाणा भूल मत जाणा॥

५ यह सही रामजीलाल का है विचार।
हमें धोखा देती हमारी यह सरकार॥
चाहते हैं हम बनाना शराई हरयाणा।
कदम आगे बढ़ाणा भूल मत जाणा॥

प्रेषक —बालसमन्द शराबबन्दी समिति

पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती शास्त्री की ९३वीं जयन्ती सम्पन्न

आर्यजगत् के विख्यात विद्वान् नेता प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती शास्त्री पूर्व लोकसभा सदस्य, पूर्व कुलपति गुरुकुलकांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, गुरुकुल किरठल (उ० प्र०) पूर्व प्रधान एवं मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, पूर्व प्रधान सर्वखाप पंचायत, पूर्व सम्पादक सम्राट, आर्य, आर्यमर्यादा तथा अनेक पुस्तकों के लेखक की ९३वीं जयन्ती आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक में विजय दशमी पर्व पर २४ अक्तूबर ९३ को प० रघुवीर सिंह शास्त्री स्मृति यज्ञशाला में यज्ञ की कार्यवाही के साथ मनाई गई। इसकी अध्यक्षता सभा के मन्त्री श्री सूबेसिंह पूर्व उपमण्डल अधिकारी (नागरिक) ने की। यज्ञ आचार्य राजकुमार शास्त्री ने करवाया। सर्वप्रथम सभा के भजनोपदेशक श्री खेमसिंह आर्य ने सिद्धान्ती जी के महान् व्यक्तित्व पर प्रभावशाली गीत सुनाया।

श्री सिद्धान्ती जी के प्रथम शिष्य तथा स्वतन्त्रतासेनानी श्री महासिंह वर्मा, वैद्य फतेसिंह आर्य उपप्रधान दयानन्द मठ रोहतक, श्री वेदव्रत शास्त्री शिष्य श्री सिद्धान्ती जी एवं सम्पादक सर्वहितकारी, सभा के उपमन्त्री श्री सोमवीरजी, श्री रणवीर शास्त्री अध्यक्ष संस्कृत अध्यापक संघ जि० रोहतक उनकी सुयोग्य सुपुत्री कु० सुमन एम० ए० संस्कृत तथा सभा के उपमन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री ने श्री सिद्धान्ती जी की जीवनी तथा उन द्वारा किये गये सामाजिक कार्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि श्री सिद्धान्ती जी वैदिक सिद्धान्तों के मर्मज्ञ, ऋषि दयानन्द द्वारा लिखित विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य, संस्कार विधि आदि के सरलभाषा में व्याख्याकार तथा प्रचारक थे। उनसे पूर्व हरयाणा, उत्तरप्रदेश, राजस्थान तथा दिल्ली की ग्रामीण जनता विद्वानों के व्याख्यान सुनने में रुचि नहीं रखती थी। वे केवल भजन मंडलियों द्वारा भजन सुनने के अभ्यासी थे। श्री सिद्धान्ती जी ने इन प्रदेशों के ग्रामों में वेदप्रचारार्थ भ्रमण करके ग्रामीण सरल भाषा में व्याख्या करके विद्वानों के व्याख्यान भी सुनने में रुचि उत्पन्न की और वहां नगरों की आर्यसमाजों की स्थापना की और उनका आर्य प्रतिनिधि सभाओं के साथ सम्बन्ध स्थापित करवाया। वक्ताओं ने श्री सिद्धान्ती जी की पूर्व सैनिक जीवनी की चर्चा करते हुए बताया कि जब वे सेना में थे तो अंग्रेज अधिकारी भारतीय सैनिकों को शराब तथा मांस बलात् सेवन करने का आदेश देते हुए अवज्ञा करने पर गोली मारने की धमकियां देते थे, श्री सिद्धान्ती जी के नेतृत्व में भारतीय सैनिकों ने अंग्रेज अधिकारियों के कठोर आदेश की परवाह न करते हुए शराब मांस के सेवन करने से इन्कार कर दिया और कठोर दण्डों को सहन करके आदेश में परिवर्तन करवाया कि जो मांस तथा शराब का सेवन नहीं करना चाहते उन्हें दूध तथा देशी घी दिया जावे।

प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती

आर्य विद्वानों ने यह भी बताया कि श्री सिद्धान्ती जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मन्त्री तथा प्रधान बनकर हिन्दी रक्षा आन्दोलन का सफलतापूर्वक संचालन किया तथा पंजाब सभा के जालन्धर स्थित कार्यालय के लिए वर्तमान गुरुदत्त भवन को जो आजकल एक करोड़ रुपये की सम्पत्ति है, बोली में केवल ३५ हजार रु० में खरीदा था। उन्होंने अपने काल में प्रभावशाली विद्वान्, उपदेशक तथा भजनोपदेशकों की नियुक्तियां करके सारे पंजाब, हिमाचल, हरयाणा तथा दिल्ली में वेदप्रचार की धूम मचा दी। वक्ताओं ने उनके त्याग तथा आदर्श जीवन का उल्लेख करते हुए बताया कि पंजाब उच्च न्यायालय द्वारा करवाये गये पंजाब सभा के १९७३ के चुनाव में जब वे ५७ मतों से विजयी हो गये तो हारने वाले प्रत्याशी स्वामी इन्द्रवेश द्वारा की गई आपत्ति (एक स्वर्गवासी प्रतिनिधि के मतदान होने) पर पुन चुनाव करवाने पर सहमत हो गये और उसके पश्चात् आर्यसमाज दिवानहाल दिल्ली में हुए समझौता स्वा० रामेश्वरानन्द जी का (सर्वसम्मति से चुनाव करने के लिए श्री सिद्धान्ती जी तथा स्वामी इन्द्रवेश प्रधान पद की उम्मीदवारी से अपने नाम वापिस ले लेंगे) के अनुसार श्री सिद्धान्ती जी ने श्री रघुवीरसिंह फुलका चुनाव अधिकारी के समक्ष स्वयं उपस्थित होकर अपना नाम वापिस ले लिया। परन्तु स्वामी इन्द्रवेश ने प्रधान बनने की पदलोलुपता के कारण वचन देकर भी अपना नाम वापिस न लेकर आर्य नेताओं के साथ विश्वासघात किया। श्री सिद्धान्ती जी ने जालन्धर कार्यालय में मन्त्री तथा प्रधान पद पर रहते हुए अपने खर्च पर अपनी चारपाई तथा बिस्तर खरीदा तथा अपनी जेब के खर्च से भोजन करके एक सादगी का आदर्श स्थापित किया। श्री सिद्धान्ती जी ने लोकसभा का सदस्य बनने पर हरयाणा प्रदेश बनवाने में विशेष योगदान दिया और सारे भारत का भ्रमण करके वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार किया।

जयन्ती के शुभ अवसर पर महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के छात्र संघ के चुनाव में श्री रणवीर शास्त्री गढ़ी बोहर निवासी की सुपुत्री तथा कानून की छात्रा कु० राकेशकुमारी आर्या के उपप्रधान चुने जाने पर सभा उपमन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री ने सभा की ओर से स्वागत किया। कु० राकेश ने अपने स्वागत करने पर धन्यवाद देते हुए विश्वास दिलाया कि मैं महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय की छात्राओं को महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों की जानकारी देकर उन्हें दहेज तथा शराबबन्दी के कार्यों के लिए तैयार करूंगी।

नशाबन्दी तथा दहेजबन्दी विषय पर एक भाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। इसमें कु० मंजू आर्या प्रथम, कु० सुमन आर्या द्वितीय, श्री प्रवीण आर्य, श्री जितेन्द्र आर्य तथा श्री श्यामसुन्दर आर्य तृतीय स्थान पर रहे। सभा मन्त्री श्री सूबेसिंह ने इन्हें सभा के वैदिक साहित्य के अतिरिक्त १०१, ५१, तथा २१-२१ रु० पारितोषिक देकर प्रोत्साहित किया। इस सारी कार्यवाही का संचालन सभा उपमन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री ने बड़ी कुशलतापूर्वक किया। यज्ञशेष के वितरण के पश्चात् समारोह सम्पन्न हुआ।

इसी प्रकार श्री सिद्धान्ती जी का जयन्ती ग्राम बरहाणा जिला रोहतक में आर्यसमाज मन्दिर सिद्धान्ती भवन में २२ से २४ अक्तूबर तक प्रो० राजपाल शास्त्री के संयोजन में धूमधाम से मनाई गई। सभा की ओर से प० विश्वामित्र आर्य की भजनमण्डली द्वारा तीनों दिन ग्राम में वेदप्रचार तथा यज्ञ किया गया तथा श्री सिद्धान्ती जी द्वारा किये गये समाज सुधार के कार्यों पर प्रकाश डाला गया सभा की वेद प्रचारार्थ ५०१ रु० दिया गया।

—केदारसिंह आर्य

भोरा रसूलपुर में हवन यज्ञ

दिनाक ६-१०-९३ को भोरा रसूलपुर मे यज्ञ, हवन किया गया व यज्ञ में शराब छोडने, मास न खाने की आहुतिया दिलवाई गई। उसके उपरान्त एक विशाल पचायत का आयोजन किया गया उसकी अध्यक्षता चौ० मुख्तयारसिंह पट्टी कल्याणा ने की।

१९८१ मे इस गाव को शुद्ध किया गया था। आज तक इनके साथ हुक्का-पानी रोटी बेटी का कोई सबध नही था। श्री हवीसिंह प्रधान आर्यसमाज भोरा रसूलपुर व श्री ज्ञानीराम मन्त्री आर्यसमाज भोरा रसूलपुर ने यह बात पचायत मे रखी। सभी लोगों ने उस पर विचार कर निर्णय लिया गया कि आज से इन परिवारों के साथ हुक्का-पानी रोटी-बेटी का सबध खोल दिया। मौके पर श्री लालचन्द हुडराम ने अपनी पोती के रिश्ते के बारे में सकल्प लिया।

इसके उपरान्त श्री ओमप्रकाश सरवाहा ने भी अपनी पोतियों का रिश्ता करने का संकल्प लिया।

इस कार्य की निम्नलिखित उपस्थित व्यक्तियो ने भूरि भूरि प्रशंसा की। श्री दीपचन्द मलिक भूतपूर्व चेयरमैन सोनीपत, चौ० ओमप्रकाश सरोहा सोनीपत, श्री वेदप्रकाश समालखा,चौ० बलवानसिंह मालपुर, श्री सुमेरचन्द जैन समालखा, मथूराराम आर्य समालखा, ब्रह्मचारी जितेन्द्र गुरुकुल डिकाडला आदि सभी उपस्थित लगभग चार व्यक्तियो ने समर्थन किया व इसके उपरान्त सामूहिक सहभोज किया। इस कार्य के प्रेरणादाता स्वामी सेवानन्द सरस्वती हैं।

—डा० देवेन्द्र मलहोत्रा, समालखा

(गताक से आगे)

भूकम्प पीड़ित सहायता दानदाताओं की सूची

आर्य केन्द्रीय सभा गुडगाव द्वारा सार्वदेशिक सभा नई दिल्ली	२५०००)००
मन्त्री वैदिक भक्ति साधन आश्रम आर्यनगर रोहतक	५३२१)००
प्राचार्य आय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नरवाना जिला जीन्द	५०००)००
मन्त्री आर्यसमाज नारायणगढ जिला अम्बाला	४०००)००
श्रीमती विमला महता प्रधान महर्षि दयानन्द शिक्षण सस्थान फरीदाबाद	२१००)००
मन्त्री आर्यसमाज बीगोपुर डा० धोलेडा जि० महेन्द्रगढ	१७५०)००
मन्त्री आर्यसमाज बालसमन्द जिला हिसार	५००)००
प्रबन्धक मुसद्दीलाल आर्य कन्या उच्च विद्यालय अम्बाला छावनी	५००)००
डा० परमानन्द अम्बा बी ३८ गली गोल तालाब नीलोखेडी (करनाल)	५००)००
महर्षि दयानन्द विद्या मन्दिर आर्यसमाज सफीदों जि० जींद	३५५)००
प्रो० प्रकाशवीर विद्यालकार मन्त्री आर्य विद्या सभा गुरुकुल कागडी हरद्वार	१०१)००
प्रबन्धक भारत स्टील रोलिंग मिल गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जिला फरीदाबाद	२०१)००
प्रबन्धक एस के वी उद्योग गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जि० फरीदाबाद	१०१)००
वैद्य बोधेन्द्रदेव प्रधान आयसमाज भुरथला जिला रेवाडी	१५१)००
श्री चतरसिंह सुपुत्र श्री उजालाराम ग्राम सिवाह जि० जीन्द	५१)००
श्री बिरखाराम आर्य ग्राम सिवाह जिला जीन्द	१०५)००
चौ० धर्मचन्द मोरवाले लालचन्द कालोनी रोहतक	१०१)००
मा० निहालसिंह आर्य ग्राम दिसावर खेडी जिला रोहतक	१०१)००
श्री जगमालसिंह सुपुत्र श्री ईश्वरसिंह यादव ग्राम सिलोढ जिला रेवाडी	५१)००
प्रधाना आर्यमहिला आर्यसमाज काठमण्डी सोनीपत	७५०)००

सभा की ओर से सभी दानदाताओं का हार्दिक धन्यवाद। आशा है अन्य दानी महानुभाव भी इस सूची में अपना नाम लिखवायेंगे।

रामानन्द सिंहल सभा कोषाध्यक्ष

ऐतिहासिक ग्राम बालसमन्द जिला हिसार में

प्रान्तीय शराबबन्दी महासम्मेलन

१ नवम्बर १९९३ को हरयाणा दिवस पर आयोजित
समय प्रातः १० बजे से सायं ४ बजे तक

दिन प्रतिदिन हरयाणा प्रान्त में बढ रहे शराबखोरी, अन्याय, अज्ञान, अभाव, स्मैक, हिरोइन, अत्याचार एव भ्रष्टाचार को रोकने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वाधान में शराबबन्दी समिति जिला हिसार की ओर से आदमपुर हल्के के सबसे बड़े ऐतिहासिक गांव बालसमन्द मे नवनिर्मित अनाज मण्डी मे १ नवम्बर को हरयाणा दिवस पर प्रान्तीय शराब बन्दी महासम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। इस सम्मेलन में हरयाणा प्रान्त को शराब रहित घोषित करवाने बारे रणनीति तैयार की जाएगी। सम्मेलन की अध्यक्षता आर्य जगत् के मूर्धन्य सन्यासी एव हरयाणा मे शराबबन्दी सत्याग्रह के प्रथम सर्वाधिकारी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती करेंगे।

इस सम्मेलन मे आर्यसमाज के अनेक विद्वान, सन्यासी, महात्मा उपदेशक, वक्ता तथा आर्यनेता पधारेंगे एव सम्बोधित करेंगे। इसके अतिरिक्त अनेक गुरुकुलों, आर्य विद्यालयों, कालेजों के छात्र, आर्य वीर दल के सैनिक, नशाबन्दी परिषद्, शराबबन्दी समिति, भारतीय किसान यूनियन, सर्वोदय मण्डल के नेता व कार्यकर्ता, महिला सगठन स्त्री आर्यसमाज, आर्यसमाजों के अधिकारी एवं कार्यकर्ता तथा अन्य धार्मिक व सामाजिक सगठनो के कार्यकर्ता भाग लेंगे। नजदीक के गाव-गुवाण्ड के नर-नारी भी ट्रैक्टर आदि लेकर आएंगे।

ज्ञातव्य है कि लगभग ६ महीने से बालसमन्द मे ठेका बन्द करवाने के लिए धरना जारी है।

आप सभी से नम्र अनुरोध है कि आप अपने गाव से अपने परिवार एव मित्रो के साथ ज्यादा से ज्यादा सख्या मे पधार कर सम्मेलन की शोभा बढाये।

नोट —गुरुकुल झज्जर (रोहतक) के ब्रह्मचारी व्यायाम प्रदर्शन भी करेंगे (कार रोकना, छाती पर पत्थर तोडना, बेल तोडना, मलखम आदि)।

भोजन व्यवस्था ऋषि लगर मे होगी। प्रसिद्ध भजनोपदेशक भी पधारेंगे। निवेदक

मा० भीमसिंह आर्य प्रधान शराबबन्दी समिति बालसमन्द, पहलवान महावीरसिंह मन्त्री, अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी धरना संचालक व सयोजक शराबबन्दी समिति जिला हिसार, दीवानसिंह आर्य संरक्षक एव प्रधान आर्यसमाज बालसमन्द, महाशय रामजीलाल जी आर्य पूर्व सरपन्च कोषाध्यक्ष।

हरयाणा मे आर्यसमाजों के उत्सव तथा शराबबन्दी सम्मेलन

आर्यसमाज जगाधरी वर्कशाप यज्ञोत्सव	२८ से ३१ अक्तूबर
" कन्या गुरुकुल पंचग्राम जिला भिवानी	३० से ३१ "
रोजगार्डन निकट बस अड्डा चरखी दादरी जिला भिवानी (शराबबन्दी पंचायत)	३० "
आर्यसमाज जीन्द शहर	५ से ७ नवम्बर
" धोलेडा जिला महेन्द्रगढ	६ से ७ "
" सधीवाडा नारनौल जिला महेन्द्रगढ़	८ से १० "
" छतीर जिला फरीदाबाद	१३ से १४ "
" बडा बाजार पानीपत	१९ से २१ "
" फिरोजपुर झिरका (गुडगांव)	२० से २१ "
" होडल जिला फरीदाबाद	२६ से २७ "
मेला कपाल मोचन बिलासपुर जि० यमुनानगर	२६ से २९ "
गुरुकुल शुक्रताल जिला मुजफ्फरनगर	२६ से २८ "
आर्यसमाज बिगोपुर जिला महेन्द्रगढ़	४ से ५ दिसम्बर
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ सराय ख्वाजा जि० फरीदाबाद	२२ से २३ "

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का अधिवेशन १९ दिसम्बर को होना निश्चित हुआ है। अतः आर्यसमाज तथा आर्यसंस्थाएं १९ दिसम्बर को अपने उत्सवादि रखने का कष्ट न करें। जिससे आर्यसमाजों के प्रतिनिधि सभा के अधिवेशन में भाग ले सकें।

—सुदर्शनदेव आचार्य, वेदप्रचाराधिष्ठाता

बालसमन्द में धरणाधारियों के आगे ठेकेदार के सब हथकण्डे असफल

ग्राम बालसमन्द जिला हिसार में मुख्यमन्त्री के हल्के मे १७ लाख के ठेके के आगे सभा उपदेशक एवं संयोजक शराबबन्दी समिति जिला हिसार के श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी के नेतृत्व में उत्साहित नवयुवकों ने ८० दिन पहले और प्रशासन ने २ महीने बन्द करके २७-७-९३ से पुन ठेका खोलने पर अब पुन धरना जारी है। आज धरना ९०वे दिन में प्रवेश कर गया है। ठेकेदार ने धरणा असफल करने के लिए कई हथकण्डे अपनाए। श्री क्रान्तिकारी जी की सूझ-बूझ से सब फेल हो गए। समिति के सैकडों नवयुवकों ने सिर पर कफन बाध रखा है। रात व दिन सख्त पहरा दे रहे हैं। शराबी, ठेकेदार, पुलिस प्रशासन तथा सरकार डरे हुये हैं। किंकर्तव्यमूढ बने हुए हैं। अब तो २९ अगस्त से ठेके को ताला बन्द कर रखा है। ठेकेदार धमकाकर भगा रखे हैं। लेकिन फिर भी ठेकेदारों की ओछी हरकत तथा गाव में फूट डालने जैसी कार्यवाही जारी है। लेकिन गाव का ९५ प्रतिशत समर्थन धरने वालों के साथ है।

प्रथम ठेकेदारों ने मुफ्त शराब पिलाई। फिर रेट कम किए। उसके बाद घरों में डालनी आरम्भ की। बस अड्डे पर जीप मे घर-घर बेचने का यत्न किया। कुछ गाव गुवाण्ड के शराबी गुण्डे तत्वो को शराब पिलाकर धरने वालो को गाली दिलवाना। धरने का बोर्ड पडवाना, श्री क्रान्तिकारी की टक्कर में ठेके पर से बुलाकर उनके एक साढ़ू को बैठाना। पुलिस को ठेके पर बैठाना। आदि सारे हथकण्डे अपनाए। एक न चली।

२९-८-९३ को धरने पर प्रचार मे बैठे लोगो पर शराब पीकर ठेकेदार के ड्राईवरो द्वारा जीप चढाना, धरने धारियो पर झूठे केश बनवाना, बस अड्डे पर शराब पीकर जीप घुमाना। २६-९-९३ को कुछ शराबियो को पैसे देकर हवन का ढोग रचकर लोगो को बहकाकर धरना पडवाने का षड्यन्त्र रचना। धरना के सामने हवन करना फिर जुआ खेलना, जीप द्वारा एक महिला के चोट लगना, एक शराबी द्वारा नजदीक के गाव डोभी मे एक ४५ वर्षीय महिला से छेड़खानी करना। उपरोक्त सब घटनाओं से ठेकेदार व शराबी फेल हो गये। और धरने वालो का समर्थन बढ गया। रातदिन क्रान्तिकारियो के कैसट चल रहे हैं। गाव मे अमन चैन है। ठेके के सामने उनका सामान बिखरा पडा है। धरने पर रात्री को सत्संग जारी है। बच्चे सायंकाल जोश के साथ शराब का ठेका बन्द करो, आर्यसमाज अमर रहे। आवाज दो हम एक है। युवा समिति जिन्दाबाद। चौ० अतरसिंह आर्य जिन्दाबाद आदि नारो से आकाश गुजा रहे हैं।

—मा० भीमसिंह आर्य, प्रधान शराबबन्दी समिति, बालसमन्द।

शोक समाचार

श्री टेकन आर्य सुपुत्र श्री कन्हैया गाव मकडौली कला जिला रोहतक का दिनाक ११ अक्टूबर १९९३ को लम्बी बीमारी के उपरान्त स्वर्गवास हो गया। उन्होने आर्यसमाज के सम्पर्क में आने पर अपना सम्पूर्ण जीवन सर्वथा निर्व्यसनी और त्यागमय व्यतीत किया। वे समय-समय पर आर्यसमाज की तन-मन-धन से सहायता करते रहे और कुछ समय तक आर्यसमाज के प्रधान पद पर भी कार्य किया। दुर्भाग्य से वे निस्सन्तान गृहस्थी थे पुनरपि द्वितीय विवाह न करके सादा और सयमी जीवन व्यतीत किया। उन्होने आर्यसमाज मकडौली कलां को १६१०० रुपये और शेष सम्पूर्ण चल सम्पत्ति २४४१० रुपये गोशाला खडवाली को दान कर दी।

उनकी अन्तिम इच्छानुसार वैदिक रीति से ३३ किलो घी, ५० किलो सामग्री चन्दन के बुरादे एव पर्याप्त समिधाओ से अन्त्येष्टि सस्कार किया गया। उनके इस निधन से आर्यसमाज मकडौली कलां को गहरा आघात एव शोक है और परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा को कर्मानुसार सद्गति एव शान्ति की प्रार्थना करते है।

—महाशय बलवन्तसिंह आर्य
आर्यसमाज मकडौली कला

राजस्थान मे भी शराबबन्दी आन्दोलन की तैयारी

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के तत्वावधान में २ अक्तूबर १९९३ गांधी जयन्ती के दिन राज्य के विभिन्न आर्यसमाजो के लगभग डेढ हजार प्रतिनिधियो के एक विशाल जुलूस का नेतृत्व करते हुए सभा प्रधान श्री विद्यासागर शास्त्री एव सभा मन्त्री श्री स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती राज्य मे पुन पूण शराबबन्दी लागू किये जाने एव गोहत्या को प्रभावी रूप से प्रतिबन्धित करने के विषय मे दो ज्ञापन राज्यपाल महोदय को देने राजभवन गये। जुलूस मे नशाबन्दी समिति राजस्थान एव खादी सस्थाओ के भी प्रतिनिधि सम्मिलित थे।

राजभवन मे जो शिष्टमण्डल गया इनमे सभा प्रधान व सभा मत्री के अतिरिक्त सर्वश्री जुगलकिशोर चतुर्वेदी, मा० आदित्येन्द्र, त्रिलोकचन्द जैन, महबूब अली (तीनो पूर्व मन्त्री राजस्थान), केशवदेव वर्मा, छोटूसिह आर्य, प्रो० नेतिराम शर्मा, सत्यव्रत सामवेदी, धर्मसिह कोठारी, स्वामी केवलानन्द, रवीन्द्र कुलश्रेष्ठ, छीतरमल गोयल (खादी सघ) के अतिरिक्त श्रीमती उजला अरोडा (पूर्व विधायिका), कमलेश कुच्छल एव सुमित्रा बत्रा सम्मिलित थे। राज्यपाल के जयपुर से बाहर होने के कारण उनकी ओर से ज्ञापन उनके उपसचिव ने ग्रहण किये।

यह जुलूस रामनिवास उद्यान से दोपहर १२ बजे प्रारम्भ होकर जयपुर नगर के बापू बाजार, जोहरी बाजार, त्रिपोलिया बाजार, किशनपोल बाजार, एम० आई० रोड होता हुआ सुभाष मार्ग से बगडिया भवन होकर रेलवे फाटक पर ३ बजे पहुचा। फाटक के पार धारा १४४ लगी हुई थी। परन्तु आर्य नेताओ ने उपर्युक्त शिष्टमण्डल से क्रम को राजभवन ले जाना अस्वीकार किया और सडक पर धरना दिया। तदुपरान्त शिष्टमण्डल को जाने दिया गया। जुलूस की शोभा ओ३म् के झण्डो तथा शराबविरोधी बैनरो से बहुत भव्य लग रही थी। अनेक व्यक्तियो ने मार्ग मे इस बात पर हर्ष प्रकट किया कि आर्यसमाज ने शराबबन्दी लागू करने एव गोहत्या को प्रभावी तौर पर प्रतिबन्धित रखे जाने के मुद्दो को उठाया है।

सुमेधानन्द, मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान

शराबबन्दी सत्याग्रह के प्रथम सर्वाधिकारी स्वामी ओमानन्द सरस्वती की आर्यजनता के नाम अपील

यदि आप हरयाणा के माथे से शराब का कलंक मिटाना चाहते हैं तो—

१. अपने निकट के शराब के ठेकों पर धरणें दिलवाने मे योगदान करें।

२. शराबबन्दी सत्याग्रह की तैयारी हेतु प्रत्येक ग्राम से ११-११ सत्याग्रहियो की सूची तथा ११००-११०० रु० की दान राशि निम्न पते पर भिजवाकर रचनात्मक सहयोग करें।

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ
रोहतक (हरयाणा)

हरयाणे का इतिहास

टेक—हरयाणे का इतिहास र, सौरम में देखले जाकै।
जिला है मुजफ्फर नगर यू पी मे है सौरम गाम।।
चौ० कबूलसिंह का जाकै बूझ लिए नाम।
महामन्त्री सब खापो का जिसने जाणै देश तमाम।।
पुराणा रिकार्ड उसने राखण में ना घाली घाट।
१२ धडी वजन कहै तोलले चढाकै बाट।।
हिन्दी उर्दू लेख फारसी न्यारी भाषा लिखगे भाट।
मुश्किल त करा तलास र, दुनिया मे धक्के खाकै।।१।।
हर-हर महादेव ने हरयाने की धरी थी नीम।
दो सौ कोस चौगिरदै दिल्ली क बताते सीम।।
यही पर पैदा हुए अर्जुन, कृष्ण, बलि, भीम।
महा ऋषि मुनि देवता थे मल्ल राजा क्षत्री जाट।।
कविता और लेख मिलते प्रमाण देते कई भाट।।
शिवजी की जटा के कारण शब्द बना सुनियो जाट।
यहा ६ ऋतु १२ मास र, भूगोल देखले ठाकै।।२।।
लम्बा चौडा वर्णन यहा प मल्ल योद्धा हुए बेशुम्मार।
हर्ष के जमाने पाछै गिनकै देख लगातार।।
वीरागनाए फौज न्यारी लिखी हुई कई हजार।
लाखो मल्ल योद्धा कर गए भारत मां की ऊंची शान।।
कितने वीर इस भूमि को देकर गए प्राणदान।
कितनी वीरागनाए देश प हुई कुर्बान।।
जो तज क न रणवास र रण बीच लडी थी आकै।
हरयाणे का इतिहास र, सौरम में देखले जाकै।।३।।
सुनकै अचम्भा आवै ६३ धडी का शेर।
गऊवों का दूध पिया करता एक बार में २२ सेर।।
४ किलो आटा खाता, ३ पाव घी गेर।
३ पाव शहद भी साथ एक टैम की खुराक थी।।
झूठ मतना जाणै है इतिहास इसका साक्षी।
हरिद्वार के पास गाम नाम योगराज जी।।
३ हजार गऊ थी जिसके पास र, लावै था रोज चराकै।।४।।
जींद धोरै बतलाते हैं शायद हो कन्डेला गाम।
लडकी होगी रेढूवो की भागीरथी लिखा नाम।।
मुगलों से लडाई हुई लिखै घोर सग्राम।
२९ वर्ष की योद्धा ३६ धडी लिखा बोझ।।
ब्रह्मचारिणी घुडसवारी सन्ध्या यज्ञ करती रोज।
सरहिन्द के मैदान मे मामूर का मिटा दिया खोज।।
भाट लिखता है देवप्रकाश र, मारे चंगेज भगाकै।।५।।
सर्वखाप पचायत का सब हाल के बताया जासै।
न्यारा-न्यारा कथना होगा न्यू सारा के सुनाया जासै।।
गावणिया त सू कोण्या पर चिकताणै त गाया जासै।
सच्चा है इतिहास सारा झूठी नही बात छेडी।।
आर्य निहालसिंह प बूझ जा दिसौरखेडी।
कथा भजन सुनने हों त पहुंच जा लोहारहेडी।।
उडै रहै सब कवियों का दास र. बदलेराम सुनादे गाकै।
हरयाणे का इतिहास र, सौरम में देखले जाकै।।६।।

—बदलेराम रेढू लोहारहेडी, जिला- रोहतक।

गुरुकुल ५० अनाथ बच्चों को गोद लेगा

पानीपत, २२ अक्तूबर (सो अ) महाराष्ट्र की भूकम्प त्रासदी में अनाथ हुए ५० बच्चों को गोद लेने की पेशकश गुरुकुल डिकाडिला ने की है। गुरुकुल के सचालक ब्रह्मचारी ओमस्वरूप ने इस आशय की घोषणा करते हुए कहा कि इन अनाथ बच्चो की स्नातक तक शिक्षा, भोजन व आवास का व्यय गुरुकुल वहन करेगा।

पानीपत जिले की समालखा तहसील के गाव डिकाडिला में चल रहे इस गुरुकुल ने भूकम्पग्रस्त उस्मानाबाद और लातूर जिलों के अधिकारियों से इस आशय की पेशकश की है। ब्रह्मचारी ओमस्वरूप ने कहा कि इन अनाथ बच्चों को स्नातक तक शिक्षा उपलब्ध कराने के साथ आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने में भी गुरुकुल सहयोग करेगा।

ब्रह्मचारी ओमस्वरूप ने समाज में अन्य वर्गों से भी भूकम्पग्रस्त गावों मे विकास कार्य शुरू करने में मदद की अपील की।

एकमात्र आशा की किरण—आर्यसमाज

स्व० डॉ० गंगाप्रसाद विद्यार्थी, जबलपुर

भारत देश में इस समय जितना अधिक भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, तस्करी, आतंकवाद, महगाई, असुरक्षा की भावना और मानसिक अशांति जन सामान्य में है उतनी पहिले कभी भी न थी। जनता कसमसाती तो है पर प्रभावकारी ढग से कर कुछ भी नही पाती, ऐसी परिस्थितियों में आर्यसमाज ही एकमात्र ऐसी संस्था है जिसके प्राय सभी सदस्य इन पाखण्डों और पापपूर्ण व्यवहारों से पृथक् हैं। यदि कहीं कोई काली भेड़ दिखलाई पडे तो निश्चय ही वह नकली आर्य-समाजी है और ध्येयनिष्ठ व्यक्ति नहीं है।

आर्यसमाज का अब तक का इतिहास और अनुभव बहुत ही अच्छा रहा है। देश की स्वतन्त्रताप्राप्ति की लड़ाई में ८० प्रतिशत से भी अधिक योगदान आर्यसमाजियो का ही था। यह तथ्य देश के इतिहासकारों ने भी स्वीकार किया है। अनेक क्रांतिकारियो का जन्म व उद्भव आर्यसमाजियों द्वारा हुआ था। इस ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में यह आशा करना अनुचित न होगा कि यदि एक बार देश का शासन आर्यसमाज के बलिष्ठ हाथों में आ जाये, तो ये समस्त बुराइया मिटाने में बहुत अधिक समय नही लगेगा। इसके लिए तुर्की के कमाल आतातुर्क की तरह सभी सुधारवादी क्रांतिकारी कानून बिना किसी पक्षपात के पूर्ण दृढता से लागू करने होंगे। कुछ लोग ऐसा सोच सकते हैं कि बिल्ली के गले में घंटी कौन व कैसे बाध पाएगा। परन्तु मुझे वीर नायक सुभाषचन्द्र बोस के वे शब्द याद आते हैं जिनमे उनने कहा था कि नेता जनता का नेतृत्व करता है वह जनता या बहुमत द्वारा नियत्रित नही होता। वह स्वय अपनी नीतिया बनाता व कार्यान्वित करता है और बहुमत उसका अनुसरण करता है। इस विषय मे महात्मा गाधी, सरदार पटेल और रफी अहमद किदवई को भी याद किया जा सकता है। वे अपनी नीतिया स्वय बनाते व कार्यान्वित करते थे बहुमत उनका समर्थन करने को मजबूर होता था। वे अपने कार्यों व नीतियो का ढिंढोरा नही पीटते थे, करके दिखला देते थे।

जैसे डाकू से सभी डरते हैं, वैसे ही कठोर शासन का सभी सम्मान करते हैं या करना पडता है। कुंवर सुखलाल जी कहा करते थे कि राजनीति मे सच्चाई वह नही है जो मानी जाती है वह तो मजबूरन मनवा ली जाती है। परन्तु जो शासन अपने व्यक्तियों या अपने दल के प्रति पक्षपात करता है उसका शासन शिथिल हो जाता है और भ्रष्टाचार उत्पन्न हो जाता है। पुलिस और मजिस्ट्रेट भी अपनी जान बचाने के लिए दल के लोगों से डरने लगते हैं। सरकार की ढिलमुल नीतिया ही पिलपिलेपन और भ्रष्टाचार को जन्म देती हैं। महात्मा गाधी का स्वप्न था कि स्वराज्य मिलते ही कलम की एक नोक से शराब और गौ हत्या रोक दी जाएगी, पर क्या ऐसा हुआ। काम न करने के बहाने हजार हैं और काम करने का तरीका एक ही है कि उसे कर डालो। सविधान मे देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी मानी गई परन्तु ४६ वर्ष बाद भी अंग्रेजी का ही बोलबाला है जबकि अच्छी तरह या मातृभाषा के रूप में अंग्रेजी जाननेवाले सम्पूर्ण देश में एक प्रतिशत भी व्यक्ति नहीं हैं। अर्थात् सरकारें १ प्रतिशत से भी कम लोगो के हित के लिए ९९ प्रतिशत से अधिक के हितों का बलिदान कर रही हैं। तमिलनाडु में, सभी पढाई व शासकीय सभी काम तमिल भाषा में और पश्चिम बगाल मे सभी काम बगला भाषा में करने में कोई दिक्कत नहीं है पर दिक्कतों के पहाड़ खड़े किए जा रहे हैं। स्वतन्त्रता से पहिले गुरुकुल कांगड़ी में सभी ज्ञान विज्ञान हिन्दी मे पढाया जाता था और हैदराबाद में उर्दू में। तब भी उनको दिक्कते न थीं अब अनेक प्रकार की दिक्कतें उत्पन्न कर दी गई हैं।

हम इस बात की चिन्ता करते हैं कि संसार में कुछ देश बहुत अमीर हैं और कुछ गरीब। परन्तु हम इस बात की चिन्ता नही करते कि भारत के कुछ लोग दिनानुदिन बहुत अमीर होते जाते हैं और सामान्य नागरिक बहुत गरीब। एम एल ए और एम. पी तो अपनी तनख्वाहें और भत्ते इत्यादि लगातार बढाते रहते हैं क्योंकि इनको बढाना उनके ही हाथ में है। अब उनके सभी भाई बन्दों का साथ है तो विरोध कौन करे जैसे चोर-चोर मौसेरे भाई। सगठित कर्मचारी भी लड-भिडकर कुछ प्राप्त ही कर लेते हैं परन्तु सामान्य व्यक्ति क्या करे। सरकार महगाई बढाने के लिए पेट्रोल, डीजल, डाक, गेहू, चावल, इत्यादि सभी वस्तुओं का भाव बढाती रहती है क्योंकि इससे जिनका लाभ होता है उनका धन व वोट पार्टी को चाहिए।

प्रत्येक व्यक्ति को अपनी बुद्धिमत्ता व परिश्रम से अधिक से अधिक धन कमाने व उपभोग का अधिकार तो हो परन्तु गरीब व असहाय जनता को चूसकर नही। फिर प्रत्येक के लाभ की सीमा निश्चित होनी चाहिए जो १५ से २५ प्रतिशत से अधिक किसी भी हालत में न हो और कोई व्यक्ति अपनी आगामी पीढियो के लिए धन व सम्पत्ति एकत्रित करके न रख सके। यदि कानूनो सज्जनता से साम्यवाद नही लाया जाएगा तो एक दिन वह खूनी क्राति भी ला सकता है। समय से पूर्व चेतने में ही बुद्धिमत्ता है।

वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द का तीसरा वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

इस वर्ष वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द का तीसरा वार्षिकोत्सव १७, १८, १९ सितम्बर को गाव घोगडिया मे आयोजित किया गया। शुक्रवार १७ सितम्बर को दोपहर बाद यज्ञोपरात भव्य शोभायात्रा गाव घोगडिया की मुख्य-मुख्य गलियो मे से निकाली गई जिसमे गाव के युवको, गुरुकुल कुम्भाखेडा के ब्रह्मचारियो और अन्य व्यक्तियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इसका सफल नेतृत्व मा० रामसिह जी आर्य तथा दिलबागसिह शास्त्री ने किया। तत्पश्चात् रात्रि मे कर्मठ आर्य नेता सेठ जयकिशन आर्य ने सम्मेलन का विधिवत् उद्घाटन किया। पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने अत्यत प्रेरणाप्रद मार्ग-दर्शन किया तथा पूज्य स्वामी रत्नदेव जी सरस्वती, सयोजक वेद-प्रचार मण्डल, जिला जीन्द ने अपना आशीर्वाद दिया। मा० रामसिह जी आर्य, प्रो० इन्द्रदेव शास्त्री, प्रो० ओमकुमार आर्य ने भी अपने विचार रखे। फिर सर्वश्री रामनिवास जी आर्य, हैडमास्टर (सेवा-निवृत्त) ओमप्रकाश जी, रमेशकुमार जी तथा महाशय चन्द्रभान जी के बहुत ही शिक्षाप्रद भजन भी लगातार तीन दिन तक होते रहे। भव्य व्यायाम प्रदर्शन के साथ सितम्बर १९ के उत्सव का समापन हुआ। इसकी सफलता के लिए पूज्य स्वामी रत्नदेव भजनमण्डली, युवक राजेन्द्रसिह सुरेन्द्रकुमार, राजबीर आदि ने दिन-रात अनथक प्रयास किया। गाव के सरपच साहब अन्य ग्रामवासी, इलाके की जनता ने अपने सहयोग से वेदप्रचार के आयोजन को सफल बनाया। जीन्द, नरवाना, उचाना आदि के आर्यजनो ने भी बढ-चढकर सहयोग दिया। वैद्य दयाकृष्ण आर्य ने भोजन व्यवस्था को ग्रामवासियो की मदद से सफलतापूर्वक सम्भाला।

उल्लेखनीय है कि वेदप्रचार मण्डल, जिला जीन्द अगस्त १९९० से सक्रियतापूर्वक प्रचार कार्य में जुटा हुआ है और जिला जीन्द मे वेद-प्रचार के माध्यम से अभूतपूर्व जन-जागरण पैदा करने तथा सामाजिक बुराइयों एव दुर्व्यसनो के विरुद्ध सशक्त जन-चेतना निर्माण करने मे सफल हुआ है। इसका श्रेय आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक के मार्गदर्शन, स्वामी रत्नदेव जी सरस्वती के सफल नेतृत्व एवं इलाके की समस्त जनता के सहयोग को जाता है।

उत्सव के उपरात वेदप्रचार की एक व्यापक योजना बनाकर मण्डल पुन प्रचार कार्य में जुट गया है। हम सहयोग के लिये सबके आभारी हैं।

प्रो० ओमकुमार आर्य

रुकिये—शराब के सेवन से परिवार की बर्बादी होती है। अतः अपने निकट के शराब ठेको पर अपने साथियों सहित धरणे पर बैठकर शराब-बन्दी लागू करावें।

भूकम्प पीड़ितों की सहायता के लिए दान भेजने की अपील

आप सभी को ज्ञात है कि गत सप्ताह महाराष्ट्र, कर्नाटक तथा आन्ध्रप्रदेश के ग्रामो मे भयकर तथा विनाशकारी भूकम्प आने के कारण ३५ हजार के लगभग नर-नारियो एव बच्चो की अचानक मृत्यु हो गई और लाखो परिवार बेघर हो गये हैं। उनके पास सिर छिपाने के लिए घर नही तथा पेट भरने के लिए भोजन तक नही रहा। लाखो बच्चे तथा बूढे जख्मी होकर जीवन मृत्यु के साथ सघर्ष कर रहे हैं। इस दयनीय अवस्था को दृष्टि मे रखते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने भूकम्प पीडितो को सहायता का कार्यक्रम बनाया है। सभा के अधिकारी तथा कार्यकर्त्ता शीघ्र ही उनकी सहायता करने के लिए उन क्षेत्रो मे जाकर आप द्वारा दी गई सामग्री वितरण करेंगे।

आर्यसमाज ने अपने प्रारम्भकाल से ही पीडितो की सहायता करने मे पूरी शक्ति लगाकर ऐतिहासिक सेवा कार्य किये हैं। दानी महानुभावो के नाम सभा के साप्ताहिक पत्र सर्वहितकारी मे प्रकाशित किये जावेंगे।

अत आर्यसमाज तथा आर्य शिक्षण सस्थाओ के अधिकारियो से सानुरोध अपील है कि वे अति शीघ्र अधिक से अधिक धन राशि व वस्त्र आदि सग्रह करके सभा को भेजकर पुण्य के भागी बनें। सभा को दिया गया दान आयकर से मुक्त है।

निवेदक

ओमानन्द सरस्वती

कार्यकर्त्ता प्रधान परोपकारिणी सभा

प्रो० शेरसिह प्रधान **सूबेसिह मन्त्री**

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक

सोनीपत सपा का शराबबन्दी आन्दोलन को समर्थन

सोनीपत २१ अक्तूबर (जनसत्ता)। बुधवार को गम्भीर धर्मशाला में जिला समाजवादी पार्टी को एक बैठक जिलाध्यक्ष ओमप्रकाश सरोहा की अध्यक्षता मे हुई, जिसमे शराबविरोधी आन्दोलन को समर्थन देने का ऐलान किया गया। बैठक मे सरकार द्वारा बस भाडे में की बढोत्तरी को भी वापस लेने की मांग को गई।

इस मौके पर सपा कार्यकर्ताओ को संबोधित करते हुए पार्टी के जिला प्रधान ओमप्रकाश सरोहा ने कहा कि भजनलाल सरकार शराब को बढ़ावा देकर जनता को शराब पीने का आदी बनाना चाहती है। उन्होने कहा कि अनेक गांव पंचायतों ने अपने गांव में शराब के ठेके खोलने का विरोध किया था, पर आबकारी व कराधान विभाग के अफसरो ने गांवों मे शराब के ठेके खोल दिए। सरोहा ने कहा कि सरकार गांवों में बिजली व स्वच्छ पानी के इन्तजाम में तो नाकाम है, लेकिन शराब के ठेके धड़ाधड खोल रही है। जो लोग शराबबन्दी कराना चाहते हैं, उन्हें गिरफ्तार कर पुलिस से पिटवाया जाता है।

सरोहा ने कहा कि ग्रामीण इलाकों में पिछले एक महीने से बिजली सप्लाई मे भारी कटौती की जा रही है।

शराब का दुष्परिणाम

—रचयिता स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती (दिल्ली)

हम लिखते है तुम पढते हो, पढकर कुछ होश सभालो।
ऋषि मुनियों की सन्तान, सभी भारत के रहने वालो॥
खुशियों के बाग बगीचे इस व्हिस्की ने पतझड कर डाले।
मण्डीरा, बीयर, रम्मी, बरांडी, रम ने फूल मसल डाले॥
कर दिया बरबाद पापिनी ने यह गुलशन सारा।
जिसने इससे प्यार किया उसको ही इसने मारा॥
ये अपनो शौकत शान नेकी को कुए मे मत डालो।
ऋषि मुनियों की सन्तान सुनो भारत के रहने वालो॥१॥

फटकारो दुतकारो यहा क्या आस लगाये बैठी ये।
जाने क्यों अंगद सम यहा पर पैर जमाये बैठी ये॥
भारत को तूने समझ लिया यह निशाचरों की लका है।
यहां भक्त विभीषण बैठे एक दिन बजे विजय का डंका है॥
करो गौर शिक्षा बतौर जीवन साचे में ढालो।
ऋषि मुनियो की सन्तान सुनो भारत के रहने वालो॥२॥

सूर्पणखा की तरह वीर बन नाक काट लो जर से।
विष भरी छुरी ये बहुत बुरी इसे दूर लताडो घर से॥
जहा जहा ठेके खुले वहा ठेको को तोड गिरा दो।
बन पवनपूत हनुमान लक मे जाकर आग लगा दो॥
ये व्रत अटल आत्मबल हो सबल अब बिगडी बात बनालो।
ऋषि मुनियों की सन्तान सुनो भारत के रहने वालो॥३॥

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ, गोहाना रोड, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०/७३ रजि० नं० P/RTK-४१ फोन नं० ७२ ६, ०८, ५३, ६४

ओ३म् कृण्वन्तो

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सह-सम्पादक—[illegible] एम०ए०

वर्ष २० अंक ४७ ७ नवम्बर, १९९३ वार्षिक शुल्क ४०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति ८० पैसे

ऋषि निर्वाण विशेषांक

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस दीपावली के अवसर पर

ऋषिवर की पावन स्मृति में

—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष—वैदिक संस्थान नजीबाबाद—

विक्रमी वर्ष १९४० की दीपावली को सायंकाल पांच बजे जब देश-देशान्तर में बसे भारतीय अपने-अपने घरों में दीपमाला के दीप प्रज्ज्वलित कर रहे थे, तब विश्व-मानवता के हितार्थ ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण वेद-दीप प्रज्ज्वलित कर महर्षि दयानन्द का जीवन-दीप अनन्त आकाश में विलुप्त हो गया।

उस महामानव के महाप्रयाण की सूचना जहां-जहां पहुंची———न केवल भारत और आर्य जाति में ही अपितु समस्त भूमण्डल पर निवास करने वाले मनीषियों के मन और मस्तिष्क पर शोक छा गया।

यद्यपि वह महान् विभूति १९४० विक्रमी की दीपावली को सायंकाल से इस संसार में कहीं दिखाई नहीं देती किन्तु उसके द्वारा प्रकाशित किया गया वह ज्ञान-विज्ञान परिपूर्ण दीप, अनादि पुरुष का वह शाश्वत ज्ञान—जो शताब्दियों से लुप्त प्राय था और जिसके विषय में अविद्यान्धकार के गर्त में भटकती आर्य जाति में यह किंवदन्ति प्रसिद्ध थी कि "वेद को शंखासुर लेकर पाताल चला गया"—उस महामानव ने पुनः प्रकाशित कर विश्व-मानवता के विशाल प्रांगण में उसका प्रकाश फैला दिया। केवल उस प्रकाश को स्वयं ही फैलाया हो, ऐसी बात भी नहीं अपितु युगयुगान्तर तक इस विशाल पृथिवी पर उसे प्रज्ज्वलित करते रहने के लिए अपने उत्तराधिकारी के रूप में आर्य समाज का संगठन बनाकर "वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम् धर्म है" इस सूत्र के रूप में उसे दायित्व सौंप दिया।

महर्षि के उत्तराधिकारी आर्य समाज ने भी उस दायित्व के निर्वहन में अपनी पूर्ण सामर्थ्य का उपयोग किया और निरन्तर कर रहा है। महर्षि की इस घोषणा के अनुरूप कि "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है" आर्य समाज ने वेद के विविध विज्ञानों से सम्बद्ध अब तक सैकड़ों ग्रन्थ प्रकाशित कर संसार के पुस्तकालय की भी वृद्धि की हैं।

आर्य समाज का ऐसा मन्तव्य नहीं है कि यान्त्रिकीय ही विज्ञान है अपितु आर्य समाज की यह मान्यता है कि प्रत्येक विषय का अपना विज्ञान होता है। यह तो सभी जानते है कि प्रत्येक विषय का अपना ज्ञान होता है किन्तु इससे आगे बढ़कर प्रत्येक विषय के विज्ञान तक सब नही पहुंच पाते हों, ऐसी ही बात नहीं है अपितु प्रत्येक विषय का ज्ञान भी होता है, ऐसा विचार भी सब नहीं कर पाते तथा तथ्य तो यह है कि सर्व सामान्य की तो बात ही क्या, बड़े-बड़े ज्ञानी मनीषियों का भी इस ओर ध्यान नही जाता। वास्तविकता यह है कि प्रत्येक विषयक ज्ञान का विवेचन और विश्लेषण तथा उसके परिणाम-स्वरूप होने वाली उपलब्धि उस विषय का विज्ञान होता है।

यदि केवल यान्त्रिकीय दृष्टि से भी देखा जाये तो भी वेद में इस परिमाण में विज्ञान भरा पडा है कि न केवल हमारी पृथिवी पर अपितु विश्व ब्रह्माण्ड में "यावत् चन्द्रदिवाकरौ" जब तक चन्द्रमा और सूर्य सहित यह सृष्टि रहेगी, तब तक उस प्रभु प्रदत्त ईश्वरीय ज्ञान में से विज्ञान के सूत्रों की उपलब्धि होती रहेगी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ही वेद को 'सब सत्य विद्याओं का पुस्तक' कह कर वेद की अज्ञानिकता की चर्चा की हो, ऐसी बात भी नहीं है अपितु अब से दीर्घ समय पूर्व महर्षि भारद्वाज के "यन्त्र सर्वस्व" नामक ग्रन्थ के टीकाकार श्री बोधानन्द ने अपने द्वारा की गई टीका के मंगलाचरण में लिखा है —

> निमथ्य तद्वेदाम्बुधिं भारद्वाजो महामुनि ।
> नवनीतं समुद्धृत्य यन्त्र सर्वस्व रूपकम् ॥

अर्थात् महामुनि भारद्वाज ने वेदरूपी समुद्र को मथकर उसमें से "यन्त्र सर्वस्व" ग्रन्थ के रूप में नवनीत (मक्खन) निकाल लिया है। यदि यन्त्र सर्वस्व को ही हम उद्धृत करने लग जाये तो लेख का कलेवर बहुत बढ जाएगा। किन्तु फिर भी इतना कह देना अनुचित न होगा कि उक्त ग्रंथ के केवल वैज्ञानिक प्रकरण को ही लिया जाए तो भी वैज्ञानिक यान्त्रिकी के साथ-साथ उसमें युद्धोपयोगी अन्य भी अनेक यान्त्रिकीय उपकरणों के निर्माणार्थ उनके तन्त्र भी वर्णित किए गए हैं, जिनमें प्रयुक्त होने वाली धातुओं तथा वनस्पतियों के अतिरिक्त आग्नेय आदि पदार्थों के प्रयोग का भी वर्णन है और शत्रु के विमानों में आग लगाकर उन्हें नष्ट कर देने के लिए तैयार किए गए दर्पण तथा भूगर्भ में छिपा कर रक्खे गए भयंकर आग्नेय गोलों का पता लगाने वाले यन्त्रों (राडारों) को तैयार किए जाने के लिए प्रयोग में लाए जाने वाले तापमान के अंश तक वर्णित है।

इसके अतिरिक्त भी हम वेद में दैवी अर्थात् अणुचालित नावों और पनडुब्बियों तक का वर्णन "गर्भे अन्तः समुद्रे" अन्दर समुद्र के गर्भ में तथा "सिन्धुरूपी कार विभ्रत" समुद्र की लहरों पर कार को चलाने का वर्णन पाते हैं।

आकाश में सूर्य के चारों ओर 'शकमयं धूमं सूर्यमारात्' सूर्य को चारों ओर से घेरे हुए श्वेत धूम (हीलियम गैस) वर्णित है तो सूर्य में खाद्य पदार्थों के भरे होने की बात कह कर सूर्य की ऊर्जा तथा उसकी किरणों के माध्यम से प्राप्त होने वाली भोज्य सामग्री की भी चर्चा है। यहां इस लघु निबन्ध में इन सब उद्धरणों को वेद से प्रस्तुत करने का हम प्रयत्न नही कर रहे। वह तो पृथक् से एक ग्रंथ का विषय है, फिर कभी किसी लेख में वेद-विज्ञान विषय पर पृथक् से चर्चा की जाएगी।

ऋषिवर दयानन्द सरस्वती के दिवगत होने के पश्चात् अभी तक एक ही महापुरुष योगिराज अरविन्द घोष ऐसे भारतीय मनीषी है, जिन्होंने महर्षि दयानन्द की वेद में विज्ञान होने की घोषणा का यह

(शेष पेज ९ पर)

शारदीय नवशस्येष्टि-दीपावली की प्राचीनता (अनादित्व-अनन्तत्व)

मानव उत्सवप्रिय प्राणी है और सदा से ही उत्सवप्रिय रहा है। जब उसकी यह उत्सवप्रियता सामाजिक-सामूहिक रूप धारण कर लेती है, तो पर्वरूप में प्रस्फुटित हो जाती है। मानव की इस उत्सव-प्रियतारूप प्रस्फुरणा से ही अनेक पर्वों का सृजन हुआ है, जिनकी आर्यों में लम्बी शृंखला है। किन्तु दीपावली पर्व के विषय में मानव की यह प्रस्फुरणा-कल्पना मूलाधार नहीं है, सहायक है और उतनी ही पुरानी है, जितना कि मानव हृदय को प्राप्त ईश्वरीय ज्ञान वेद। ईश्वरीय ज्ञान वेद शाश्वत-सनातन है। इसलिए वेदमूलक-वेदाधार होने से दीपावली भी शाश्वत-सनातन है।

वेद ईश्वरीय ज्ञान-काव्य का सिद्धान्तरूप है और संसार क्रियात्मक रूप। वेद में कहा है—

इषे त्वोर्जे त्वा श्रेष्ठतमाय कर्मणे (यजु १।१)

यदि तुम ऊर्जा (शक्ति - बल - विद्या - बुद्धि) प्राप्त करना चाहते हो तो अग्नि के द्वारा श्रेष्ठतम कर्म अर्थात् यज्ञ करो।

वर्ष में दो बार नवान्न पैदा होता है। आर्य यज्ञशेष खाते हैं। आर्यों में आज भी यज्ञशेष खाने की परम्परा है।

मोघमन्नं विन्दते अप्रचेता सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य।
नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी॥
(ऋग्वेद)

विघसाशी भवेन्नित्यं नित्यं वाऽमृतभोजनः।
विघसो भुक्तशेषं तु यज्ञशेषं तथाऽमृतम्॥
॥ मनु ३/२८५॥

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्॥ (गीता)

यज्ञशेष खाने का विधान एवं महत्त्व दर्शाया है। 'अन्नं वै प्राणः' अर्थात् अन्न मानव का प्राण है और कृषिकर्म अन्न का प्राण (आधार) है। इसलिए कृषिप्रधान—कृषि-जीवनाधार आर्यावर्त्त भारत देश में आर्यों ने अपनी उर्वरा भूमि में सबको पुलकित करती शस्यश्यामल पकी फसल देखकर अत्यन्त उल्लसित होकर कहा—

"अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्॥ (ऋग्वेद १/१/१)

यज्ञ के पुरोहित ऋत्विक् होता सबके धारक अग्नि देव की हम स्तुति करते हैं, उसकी आज्ञा का पालन—होम करते हैं। क्योंकि

"अग्निर्देवो देवानामभवत् पुरोहितः (ऋग्वेद)

वह अग्नि सब देवताओं का पुरोहित है। नवीन पक्वान्न का होम-समर्पण करने के लिए हम उस देवपुरोहित अग्नि को बुलाते हैं, अपने घरों में सादर आमन्त्रित करते हैं—

अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये।
नि होता सत्सि बर्हिषि॥ ॥ साम १/१/१॥

हे स्तुति किए हुए होता-हविर्दाता अग्ने! वायु आदि देवों को हवि (अन्न धृत शाकल्य-आदि अणुरूप सूक्ष्मपदार्थ) प्रदान करने—पहुंचाने के लिए तुम हमारे यज्ञों में आओ। अग्निदेव के प्रकट हो जाने पर मानो गहन अन्धकारमयी कार्तिक अमावस्या के अवसर पर मानव ने अपनी उत्सवप्रियता अग्निदेव के सामने हृदय खोलकर रख दी और वेद की दवी भाषा में कहा—

व्रीहयश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च मेऽणवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् स्वाहा॥ यजु १८/१२॥" चतुर्दिक् हर्षमय वातावरण में "अग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदन्न मम", "प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदन्न मम"—इत्यादि मन्त्रों का पाठ करते हुए धान, चावल, उडद, तिल, मूंग की हवि. से घर-चौपाल, हर जगह, जहा देवो वही, अग्निहोत्र की सप्तरङ्गी ज्वालायें मानसपटल को आलोकित-पुलकित करने लगी, तो मानो स्वयं अग्निदेव भगवान् बोले—"देहि मे ददामि ते (यजु)" मैं तुझे देता हूं, तू मुझे दे। तू एक देगा, मैं तुझे एक-दो-तीन अनेक असंख्य दूंगा। इस प्रकार धन और अन्नवान् में होम-दान-भोजन का क्रम चल पड़ा। अन्नवान् ने अन्न का भण्डार भर दिया तो वह प्रकम्पित होकर प्रभु का धन्यवाद करने लगा—

अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्र प्र दातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे॥ (यजु. ११/८३)

हे अन्नपते! अन्न आदि पदार्थों के स्वामी परमेश्वर! आप ही रोगरहित, सुखकारी, बलवर्धक अन्न आदि पदार्थ द्विपद-चतुष्पाद सब जीवों को देने वाले हैं। यह सब आपकी ही कृपा का फल है। बस, नवशस्येष्टि यज्ञ प्रारम्भ हो गया, जो निरन्तर चल रहा है, पहले भी चल रहा था, आगे भी चलता रहेगा। किन्तु कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि महाभारत के बाद यज्ञों का प्रचार न्यून होने से यह पर्व दीपावली या दीपोत्सव मात्र बनकर रह गया और यदि प्रारम्भ में भी घृतदीप जलायें जाते हों तो कोई अतिशयोक्ति आश्चर्य नहीं, क्योंकि यज्ञ में घृतदीप जलाने का विधान तो वैदिक ही है। तो फिर कालांतर में लोगों ने यज्ञ न करके घृतदीप जलाकर ही यह पर्व मनाना प्रारम्भ कर दिया होगा। खैर जो भी हो, पर इतना तो निश्चित ही है कि वेद की संस्कृति त्यागप्रधान है। वहां "तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा", "युवं जीव्यास्म वय जीव्यास्म", "केवलाघो भवति केवलादी" (वेद) का दिव्य सन्देश दिया गया है। इसलिए यह पर्व वैदिक है, सांस्कृतिक है। इस पर्व पर नवान्न का होम सर्वथा उचित ही है।

"आर्य ईश्वरपुत्र (निरुक्त)" आर्य अर्थात् श्रेष्ठजन ईश्वरपुत्र होते हैं और वेद ईश्वरप्रदत्त सनातन-अनादि-अनन्त ज्ञान है। जोकि आर्यों का प्रेरणास्रोत एवं कर्त्तव्यपथ-प्रदर्शक है। इस प्रकार वसुन्धरा पर जब तक एक भी आर्य (श्रेष्ठ-धर्मात्मा-वेदानुयायी) मनुष्य रहेगा, तब तक वह अपने परम प्रेरक परमपिता की आज्ञा पालन के रूप में शारदीय नवशस्येष्टि-दीपावली का पावन पर्व मनाता रहेगा।

सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् परमेश्वर ने "धाता यथापूर्वमकल्पयत् (ऋग्वेद)" पूर्व कल्प के समान ही यह सृष्टि रची है। प्रत्येक प्रलय के अनन्तर इसी रूप में वह सृष्टि-रचना करेगा तथा वेदज्ञान भी देगा, जिसमें एतत् तुल्य ही नवशस्येष्टि-दीपावली आदि सांस्कृतिक पर्व ईश्वरपुत्र आर्यों द्वारा पुनः पुनः मनाए जाते रहेंगे और पूर्व सृष्टियों में भी मनाये गए होंगे। इसलिए नवशस्येष्टि-दीपावली पर्व प्रवाह से अनादि-अनन्त सृष्टि में अनादिकाल से प्रचलित है और अनन्तकाल तक चलता रहेगा। यही स्थिति अन्य सांस्कृतिक पर्वों होली आदि के विषय में भी समझनी चाहिए।

कुछ लोगों का आज लोक में ऐसा मत है कि श्री रामचन्द्र जी लंका विजयोपरांत कार्तिक अमावस्या के दिन वनवास से अयोध्या वापिस लौटे थे-तो लोगों ने हर्षोल्लास में घर-घर घृत के दीप जलाए, तभी से यह दिन दीपावली के रूप मे मनाया जाने लगा। किन्तु यह मान्यता इतिहास (वाल्मीकि रामायण एवं तुलसीकृत रामचरित मानस) सम्मत न होने से कपोलकल्पित ही है। श्रीराम का अयोध्या आगमन एवं दीपावली का तो परस्पर कोई सम्बन्ध ही नहीं है। हां! यह तो सम्भव है कि इतिहास वर्णित जिस किसी तिथि को भी श्री रामचन्द्र जी वन से अयोध्या वापस आए हों, तो उस दिन लोगों ने उनके स्वागत-सत्कार-प्रसन्नता में घृतदीप जलाये हों। लेकिन यह तो निश्चित ही है कि वे कार्तिक अमावस्या के दिन वन से अयोध्या वापस नहीं लौटे थे। इसी प्रकार रावणवध एवं विजयादशमी का भी कोई ऐतिहासिक सम्बन्ध नहीं है पता नहीं, इन निर्मूल-निराधार विचारों को कहां से जन्म मिला इसमें कुछ विदेशी चाल भी रही हो, ऐसा सम्भव है। इस प्रकार के प्रचार ने वर्तमान आर्यों को उनके अपने पूर्वजों के सत्य इतिहास से गुमराह कर रखा है। इसके लिए विशेष रूप से स्वाध्याय एवं श्री अमर स्वामी जी महाराज का "क्या रावणवध विजयदशमी को हुआ था?" ग्रन्थ द्रष्टव्य है।

—मनुदेव भारद्वाज आचार्य,
आर्यसमाज बावला कालोनी,
बल्लभगढ़-फरीदाबाद (हरयाणा)

शराबबन्दी आंदोलन के कर्मठ योद्धा सभा के क्रांतिकारी आर्य उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य के नवयुवक पुत्र श्री सुरेन्द्रसिंह आर्य का निधन

बालसमन्द में शोकपूर्ण वातावरण में हरयाणा नशाबन्दी दिवस सम्पन्न

आर्यसमाज तथा शराबबन्दी क्षेत्रो में यह जानकार अत्यन्त दु ख होगा कि हरयाणा में शराबबन्दी आन्दोलन के कर्मठ तथा सफल योद्धा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उत्साही क्रांतिकारी उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य के नवयुवक सुपुत्र वायुसेना मे सेवारत श्री सुरेन्द्रसिंह आर्य का निधन २९ अक्तूबर ९३ को हो गया। सभा द्वारा आयोजित बालसमन्द मे हरयाणा नशाबन्दी दिवस की तैयारी के लिए श्री क्रातिकारी जी अपने साथी नवयुवको तथा सभा की भजन मण्डलियो के साथ दिन-रात परिश्रम कर रहे थे। सभा के निर्देशन मे श्री क्रान्तिकारी जी १८० दिन से निरन्तर बालसमन्द (हिसार) मे शराब के ठेके को बन्द करवाने के लिए अपने जीवन को खतरे मे डालकर सघर्ष कर रहे थे। यह ग्राम हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल के चुनाव क्षेत्र का सबसे बडा ग्राम है। शराब के ठेकेदार का सरक्षण स्थानीय पुलिस तथा सरकारी अधिकारी कर रहे हैं। ग्राम का सरपंच भी सरकारी दलाल है और ग्राम की ९०% जनता के जोर देने पर भी शराबबन्दी प्रस्ताव नही कर रहा।

सभा के सर्वहितकारी पत्र तथा सभा के सभी उपदेशक, भजनोपदेशक तथा शराबबन्दी एव आर्यसमाज के नेताओ द्वारा १ नवम्बर को अधिक से अधिक जनता को बालसमन्द पहुचने की प्रेरणा कर रहे थे। अचानक सेना के कर्मचारी बालसमन्द धरणे पर दु खद समाचार लेकर श्री क्रान्तिकारी जी के पास पहुचे। उन पर वज्रपात होगया। यदि कोई साधारण व्यक्ति होता तो अपने होनहार सुपुत्र की मृत्यु का समाचार सुनकर गश खाकर बेहोश हो जाता, परन्तु आर्य मुसाफिर प० लेखराम के उत्तराधिकारी क्रान्तिकारी जी इस संकट के समय विचलित नही हुए और धर्य का दामन नहीं छोडा और अपने नवयुवको को यह कहकर कि "किसी भी अवस्था मे धरना तथा नशाबन्दी दिवस के कार्यक्रम को स्थगित न करें। मैं अपने सुपुत्र का अन्तिम सस्कार करके आपके पास लोटकर आरहा हू" और वे सभा प्रधान प्रो० शेरसिह जी से उनके निवास स्थान साकेत नई दिल्ली अवकाश तथा निर्देश लेने के लिए तुरन्त चल दिये और अपने दो साथियो को सभामन्त्री श्री सूबेसिह जी को इस दु खद समाचार से अवगत करने के लिए ३० अक्तूबर की रात्रि को रोहतक भेजा। उन्होने सभा कार्यालय के कर्मचारियों को सोते हुए उठाया और इस दुर्घटना की जानकारी दी। सभा कार्यालय की ओर से उसी समय रात्रि ११ बजे सभा प्रधान प्रो० शेरसिह तथा प० शोभा जी से दूरभाष से सम्पर्क किया और क्रान्तिकारी जी के साथियों की बात करवाई। वे इस अवस्था मे नशाबन्दी दिवस के कार्यक्रम को स्थगित करने पर जोर दे रहे थे। सभा प्रधान जी असमजस मे पड गये कि कार्यक्रम को स्थगित करके एक दिन की अवधि मे बालसमन्द न पहुचने की सूचना किस प्रकार दी जावे। सभामन्त्री जो भी इस दु खद समाचार को सुनकर सहम से गये और प्रात काल ही बालसमन्द जाने का कार्यक्रम बना लिया। स्मरण रहे वे दो घण्टे पूर्व ही बालसमन्द से अपने घर पहुचे थे।

श्री क्रातिकारी जी भी अपने छोटे भाई के साथ ३१ अक्तूबर की प्रात सभा प्रधान जी के आवास पर दिल्ली पहुच गये और अनुरोध किया कि मैं आसाम अपने सुपुत्र की लाश लेने सेना के हवाई जहाज से जा रहा हू। आपने प्रार्थना करते हुए कहा कि बालसमन्द का कार्यक्रम स्थगित न करें। सभा प्रधान जी ने बालसमन्द के कार्यकर्त्ताओं का सन्देश सुनाते हुए समझाया कि वे इस दु खद समाचार के कारण समारोह स्थगित करने पर जोर दे रहे हैं, परन्तु श्री क्रातिकारी ने दृढतापूर्वक कहा "प्रधान जी मेरे सुपुत्र की मृत्यु के कारण नशाबन्दी का समारोह स्थगित नही होना चाहिए क्योकि परमात्मा की व्यवस्था के आगे किसी की पार नही बसाती। अनहोनी होगई, परन्तु नशाबन्दी समारोह न हो सकने पर मेरे जीवन के उद्देश्य (समाज सुधार कार्यक्रम) को झटका नही लगना चाहिए"। बालसमन्दवासियो के नाम एक पत्र लिखते हुए उन्होने प्रो० शेरसिह जी से प्रार्थना की कि इस पत्र को यथाशीघ्र उनके पास भेजकर तैयारी जारी रखने की व्यवस्था की जावे। उन्हे अपने एक सुपुत्र के निधन के साथ बालसमन्द के हजारों नर-नारियो के भविष्य की भी चिता सता रही थी। इस ऐतिहासिक पत्र को अविकल रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

ओ३म्

३१-१०-९३

आदर एवं सम्मान के योग्य,

महाशय रामजीलालजी आर्य पूर्व सरपच सादर नमस्ते। ईश्वर कृपा एव गाव के सभी बहादुर नवयुवको व बुजुर्गो एव पवित्र मातृशक्ति तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सहयोग से हमारा १८० दिन तक ठेके के सामने धरना सफल चल रहा है। यह आपके गाव मे बहुत ही ऐतिहासिक कार्य हुआ है। इतना लम्बा धरना चलाना, ठेके मे ताला बन्द करना, चौकी मे जाकर शराबी पुलिस वालो की पिटाई करना, यह सारे भारत वर्ष में एक मिशाल है। अगर आपके गाव के नवयुवको की भाति प्रत्येक गाव मे नवयुवक शराबबन्दी कार्य मे जुट जाए तो शराब बन्द हो सकती है। मुझे आप सब ग्रामवासियो ने प्यार व सम्मान दिया इसके लिए मैं सदा सभी सज्जनो, नवयुवको, मातृशक्ति का आभारी रहूगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप मेरी भावनाओ की कदर करते हुए १ नवम्बर को शराबबन्दी सम्मेलन करोगे। जब तक पाप का अड्डा स्थायी रूप से खत्म नही होता तब तक धरना जारी रखेंगे। चाहे कुछ भी दु ख, तकलीफ उठानी पडे, चाहे कुर्बानी देनी पडे। स थ मे अगर भ्रष्ट भजनलाल मुख्यमन्त्री जनता की भावनाओ की कदर कर ठेका नही उठाता तो जब भी गाव मे आए काले झण्डो से अपमान करो और भविष्य मे उसे वोट न देने की कसम खाओ। सघर्ष ही जीवन है। हमारे ऊपर महर्षि दयानन्द जी का ऋण है। अनेक ज्ञात-अज्ञात वीरो ने अपनी जीवन ल ल। कुर्बान कर देश को आजाद करवाया था। उनका भी ध्यान रखना। मैं कोई राजनीतिक नही हू, सिर्फ महर्षि दयानन्द जी का सनिक तथा आर्यसमाज का सेवक हू।

भगवान् जो करता है ठीक ही करता है जन्मना-मरणा प्रभु की व्यवस्था है ईश्वर न्यायकारी, सर्वशक्तिमान्, सर्वरक्षक है कर्मफलदाता है। हमे उस पर दृढ विश्वास रखना चाहिए। तभी कल्याण होगा अज्ञानता ही दुःख है और कुछ नही। भगवान् को ऐसा ही मजूर था। मैं १ ता० का आपके बीच नही रह सका, भविष्य मे तन-मन धन से आपके साथ रहूगा, चिंता मत करना, निरुत्साहित मत होना। भगवान् समय समय पर

मनुष्य की अग्निपरीक्षा लेता है। मेरा २५ वर्ष का नवयुवक श्री सुरेन्द्रसिंह जी आर्य बी० ए० हमारे बीच नही रहा। उनकी धर्मपत्नी बेटी सरोज जिसके फरवरी मे बच्चा होने वाला है। मैं आज एक नवयुवक के साथ उसे व बेटे की लाश दिल्ली से हवाई जहाज मे लाने गोहाटी (आसाम) डीगारू से लाने जा रहा हू। शायद कल तक आऊगा। यानी नलवा आर्य निवास पर पहुच पाऊगा। आप सभी को सरपच श्री धर्मसिह जी, रणजीत चेयरमैन, मा० प्रेमसिह आदि को नमस्ते। सभा आर्यजनो व विद्वानो तथा स्वामी ओमानन्द जी, प्रो० साहब आदि को भी नमस्ते कहना।

आपका सेवक—अतरसिंह आर्य, क्रातिकारी धरना सचालक

श्री अतरसिह आर्य के उक्त पत्र तथा उनकी भावनाओ को दृष्टि मे रखते हुए सभामन्त्री श्री सूबेसिह जी ३१ अक्तूबर को प्रात ८ बजे श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती से सम्पर्क एव मार्ग दर्शन हेतु गुरुकुल पचगाव जिला भिवानी गये तथा वहा से सीधे ग्राम बालसमन्द पहुचकर एक नवम्बर के समारोह की तैयारी मे व्यस्त हो गये। रात भर ग्रामवासियो तथा आर्य युवको के सहयोग से नई अनाज मण्डी मे पण्डाल तथा मच का निर्माण करवाया। १ नवम्बर को प्रात ९ बजे धरना स्थल पर सभी उपस्थित महानुभावो ने यज्ञ करने पर श्री क्रातिकारी के सुपुत्र श्री सुरेन्द्रसिह आर्य की आत्मा की सद्गति के लिए परमात्मा से प्रार्थना की गई। सभी की आखो में अश्रुधारा थी। इसके पश्चात् ११ बजे मच पर शोक सभा की कार्यवाही सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी की अध्यक्षता में आरम्भ हुई।

इस अवसर पर हरयाणा के कोने-कोने से आर्य कार्यकर्त्ता, आर्यसमाज के अधिकारी, आर्यविद्यालयो तथा गुरुकुलो के अधिकारी एव छात्र, छात्राए हजारों की सख्या मैं उपस्थित थे। सभा प्रधान प्रो० शेरसिह जी भी सभा के अन्य अधिकारियो के साथ समय पर उपस्थित हो गये। मच का संचालन अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् नई दिल्ली की अतिरिक्त महामन्त्री श्रीमती प्रभात शोभा पडित ने करते हुए श्री क्रातिकारी जी के सुयोग्य सुपुत्र के अचानक निधन का विस्तृत समाचार सुनाया और बताया कि गाधी जी के कारण जिस प्रकार वार्धा का नाम ऐतिहासिक हुआ है, उसी प्रकार श्री अतरसिह आर्य द्वारा बालसमन्द मे शराब के ठेके पर १८० दिन तक निरन्तर धरणा देने के कारण ऐतिहासिक बन गया है। उन्होने गुरु गोविन्दसिह जी तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपदेशक आर्य मुसाफिर प० लेखराम जी के उदाहरण देते हुए श्री अतरसिंह आर्य क्रातिकारी का उनका उत्तराधिकारी बताया क्योकि जिस प्रकार उक्त दोनों महापुरुषो ने जिस प्रकार अपने लडको के स्थान पर दूसरो के लडको की रक्षा को प्राथमिकता दी। श्री क्रातिकारी जी अपने परिवार की देखभाल का कार्य परमात्मा के भरोसे पर छोडकर शराबबन्दी धरणो पर निरन्तर सघर्ष करते रहे। उनके सुपुत्र का सेना से पत्र आया कि "पिता जी मैं बीमार हू एक बार आजावे, परन्तु श्री क्रातिकारी ने पत्रोत्तर मे कहा कि प्रिय बेटे भगवान् पर भरोसा रखकर उपचार करवाते रहो। मैं नहीं आ सकता क्योकि मेरा धरणों पर दिन-रात रहना अत्यन्त आवश्यक है। यदि मैं दो-तीन दिन तक इससे दूर रह गया तो सरकार तथा शराब का ठेकेदार षड्यन्त्र करके धरण को समाप्त करवायेंगे, जो मेरे लिए जीवन मरण का प्रश्न है।" इस प्रकार श्री क्रातिकारी ने अपने पूर्वज महापुरुषों का इतिहास अपने नवयुवक पुत्र के बलिदान से दोहरा दिया। श्रीमती शोभा जी ने श्री अतरसिंह जी द्वारा बालसमन्दवासियो के नाम लिखा ऐतिहासिक पत्र जब पढकर सुनाया तो वहा उपस्थित जनसमूह अपनी आखों के आसू नही रोक सके।

शराबबन्दी सत्याग्रह के प्रथम सर्वाधिकारी श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने श्री क्रातिकारी के सघर्ष की चर्चा करते हुए कहा कि मुसीबत को बुलाना नहीं चाहिए और यदि आजावे तो घबराना नही चाहिए। क्रातिकारी जी ने अपने माता-पिता, सभा तथा सभा उपदेशको एव ग्राम बालसमन्द का नाम ऊचा किया है। इन्हें अपने पुत्र की चिन्ता न रहकर शराब के कारण मर रहे प्रतिदिन सैकडो भारतमाता के पुत्रों की की है। जवान बेटे की मृत्यु पर भी यही चिंता सताती रही कि धरणा तथा नशाबन्दी दिवस का कार्यक्रम स्थगित न हो। इससे पूर्व भी क्रातिकारी ने बालावास आदि मे अनेक ग्रामो मे सघर्ष करके शराबरूपी जहर के ठेके बन्द करवाये हैं। गिरफ्तारी दी, जेल मे अनशन किया। सरकार तथा किसी भी धनी के लालच तथा धमकी के आगे झुके नही। हरयाणा सभा का यह सौभाग्य है कि उसे इस प्रकार का सघर्षशील, ईमानदार तथा चरित्रवान् उपदेशक मिला है। स्वामी जी ने राष्ट्रपति महोदय को अपील करते हुए कहा कि हरयाणा सरकार शराब बन्द करवाने वाले कार्यकर्त्ताओ पर लाठीचार्ज करवाती है और उन्हे अपराधियो की भाति जेल मे बन्द करती है, जबकि न्याय के अनुसार हरयाणा के मुख्यमन्त्री भजनलाल तथा उसके सम्बन्धियो को जेल मे बन्द करना चाहिए जो अपने स्वार्थ हेतु शराबरूपी जहर के कारखाने खुलवाकर पुलिस के सहारे शराब की बिक्री करवा रहे हैं। शराब बेचने पर सरपचो को (जिनका काम ग्राम की भलाई होता है) प्रति बोतल पर इनाम दिया जा रहा है। ऐसे राष्ट्र तथा समाज विरोधियो का स्थान मुख्यमन्त्री की कुर्सी नही अपितु जेल होनी चाहिए। यदि राष्ट्रपति जी ने न्याय नही किया तो परमात्मा के न्यायालय से इस प्रकार के अपराधी कभी नही बच सकेगे। देश की आजादी आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओ के बलिदानों से आई। ५० हजार आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता १९५७ मे जेल गये और उन्ही के सघर्ष के कारण हरयाणा बना। परन्तु भजनलाल जसे गद्दार शासक उस समय हरयाणा बनाने का खुलकर विरोध कर रहे थे। हरयाणा इस भावना से बनवाया था कि यहा पूर्व की भाति दूध-दही की नदिया बहेगी। परन्तु हरयाणा के तीनो लालो ने गली-गली मे शराब की नदिया बहाकर हरयाणा के इतिहास को बिगाड दिया है। आनेवाली पीढी इन्हे क्षमा नही करेगी।

आर्यसमाज बालसमन्द के प्रधान श्री दीवानसिंह ने इस शोक सभा मे अपने विचार रखते हुए कहा कि अपने ग्राम के भानजे की मृत्यु की सूचना सुनकर ग्रामवासी स्तब्ध रह गये। किसी के घर खाना नहीं बना। श्री रामचन्द्र जी के बन जाने की सूचना मिलने पर दशरथ बेहोश हो गये थे। परन्तु वीर अतरसिंह आर्य धरनो पर बठे जब अपने सुपुत्र की सूचना अचानक मिलने पर विचलित नही हुए और हमे धरना चालू रखने का सुझाव देकर अपने बेटे की लाश लेने आसाम चले गये और अन्तिम सस्कार करने के बाद तुरन्त वापिस आने का वचन दिया। यह एक महापुरुष है। इन्होने बालसमन्द ग्राम में शराबबन्दी करके हम पर उपकार किया है। १५० नवयुवको की एक ऐसी सेना तैयार की है जो भगतसिंह की भाति राष्ट्ररक्षा हेतु बलिदान होने के लिए तैयार हैं। यदि श्री क्रातिकारी जैसे १०० आर्य कर्मठ नेता मैदान में आजावें तो हरयाणा मे सभी शराब के ठेके बन्द हो सकते हैं।

इन वक्ताओं के बाद शोकप्रस्ताव के समर्थन में उपस्थित जनसमूह खडा हो गया और दो मिनट का मौन धारण करते हुए परमपिता परमात्मा से दुखी परिवार को धैर्य तथा दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करने की प्रार्थना की।

इसके पश्चात् हरयाणा नशाबन्दी दिवस की कार्यवाही आरम्भ हुई। इसके मुख्य अतिथि अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् के महामन्त्री तथा कांग्रेस के राज्य सभा सदस्य तमिलनाडू के श्री एस० के० जी, श्री रामचन्द्र जी थे। इनका परिचय करवाते

हुए सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने कहा कि श्री रामचन्द्रन उस प्रदेश के नेता हैं जहां शराबबन्दी की घोषणा हो चुकी है। अन्य प्रदेशों मे शराबबन्दी करवाने के सघर्ष के लिए इन्हे अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् का महामन्त्री बनाया गया है। इनकी मातृभाषा तमिल है। अत हिन्दी में नही बोल सकते। अत इनके अग्रेजी भाषण का अनुवाद श्रीमती शोभा करके सुनावेंगी। शराबबन्दी आन्दोलन के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इस आन्दोलन के इतिहास मे जिला हिसार के ग्राम बालावास तथा बालसमन्द प्रथम तथा जिला कैथल के ग्राम कयोडक द्वितीय तथा जिला सोनीपत के ग्राम नाहरी तथा कनलपुर का नाम तृतीय स्थान पर इतिहासकार लिखेंगे। जहा सभा के मार्गदर्शन मे शराब के ठेके बन्द करवाये गये हैं। सभा के उपदेशको ने स्थानीय कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से प्रमुख भूमिका निभाई है। इस आन्दोलन मे प्रथम स्थान श्री अतरसिंह आर्य क्रातिकारी का है। सभा द्वारा चलाई गई शराबबन्दी की लहर से राजनैतिक दल लाभ उठाना चाहते हैं, परन्तु आज काग्रेस, भाजपा तथा साम्यवादी दल जिन प्रदेशों मे सत्ता मे हैं, वहा राजस्व कमाने के लालच मे शराबबन्दी नहो कर रहे। हरयाणा तो पूव ही आयाराम गयाराम के कारण सारे ससार मे बदनाम है और अब सरपचो तथा पुलिस द्वारा, जिनका काम कल्याण कार्य तथा जनता की रक्षा करना है, शराब रूपी जहर बिकवाकर इन्हे इनाम दिये जाने पर बदनाम हो रहा है। यह सर्वनाश की निशानी है। अत इस सर्वनाश से सावधान करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ८ वर्ष से निरन्तर सघर्ष कर रही है। ससार के अनेक राष्ट्र शराब तथा नशीले पदार्थों से छुटकारा पाने के लिए कार्यक्रम तैयार कर रहे हैं। भारत के शत्रु पडोसी देश पाकिस्तान मे शराब पर पाबन्दी है, परन्तु भारत मे शराब बिक्री का विस्तार किया जा रहा है। हमारे वीर सैनिक तथा कृषि करने वाले नवयुवक शराब के जाल मे फस गये तो देश की रक्षा कौन करेगा? आज सरकार तथा राजनैतिक दल शराब के गुलाम हो चुके हैं। सभी शराब का सहारा लेकर राजनीति चला रहे हैं। अत आर्यसमाज आजादी की दूसरी लडाई लड रहा है। बालसमन्द से सारे भारत को प्रकाश मिलेगा। अत आर्यसमाज के सगठन को सुदृढ करना होगा। सभा के क्रान्तिकारी भजनोपदेशक श्री खेमसिंह ने अपने जोशीले गीत उठो नौजवानो, खाओ कसम, दारू का अड्डा करना है खतम सुनाकर सभी को प्रभावित किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मन्त्री स्वामी सुमेधानद जी ने इस समारोह मे बोलते हुए कहा कि हरयाणा के बालसमन्द से एक बुराई को समाप्त करने का आन्दोलन अब राजस्थान मे भी चल पडा है। आपने जिन राज्यो मे चुनाव हो रहे हैं वहा की जनता से अपील करते हुए कहा कि शराब का सहारा लेने वाले उम्मीदवारो को हरावें चाहे वे किसी भी दल के हो। आबादी में ५० प्रतिशत सख्या महिलाओ की है जो प्राय शराब नही पीतीं। २५ प्रतिशत पुरुष भी शराब नही पोते। इस प्रकार ७५ प्रतिशत जनता शराब नही पीती। बहुमत के हिसाब से सरकार ने शराबबन्दी करके लोकतन्त्र की रक्षा करनी चाहिए। आपने हरयाणा सभा के अधिकारियों को शराबबन्दी आन्दोलन चलाने पर बधाई दी।

शराबबन्दी सत्याग्रह के द्वितीय सर्वाधिकारी तथा गुरुकुल कुम्भाखेडा, कन्या गुरुकुल खरल के सचालक स्वामी रतनदेव जी ने अपने भाषण मे कहा कि प्राचीन काल से हरयाणा ऋषि, मुनियो की पवित्र धरती रही है, परन्तु वर्तमान सरकार जनता को शराब के नशे में बेहोश करके हरयाणा को रावण तथा कस का राज्य बनाना चाहती है। हमारा शराबबन्दी आन्दोलन एक शराबबन्दी धर्म युद्ध है। हरयाणा मे अन्य प्रदेशो से अधिक गोशाला तथा गुरुकुल हैं। सरकार इन्हे हानि पहुचवाकर वैदिक सस्कृति समाप्त करवाने का षड्यन्त्र रच रही है। मुर्गी खाना तथा शराबखाना खोलने पर सहायता दे रही है। हमने स्वामी ओमानन्द जी जैसे आन्दोलनो के सफल योद्धा के नेतृत्व मे शराब बन्द करवाने हेतु बडा से बडा बलिदान देना है। ऋषि दयानन्द के अनुसार राजाओ का राजा किसान है। परन्तु सरकार किसानो को शराब पिलाकर सत्ता से बाहर रख रही है।

गुरुकुल धीरणवास के सचालक स्वामी सवदानन्द जी ने कहा है कि सभा द्वारा चलाये जा रहे शराबबन्दी आन्दोलन के कारण ग्रामो मे प्रभाव हो रहा है। जहा पहले लोग खुलेग्राम शराब पीते थे, वहा अब चोरी छिपे शराब पीते हैं। अनेक ग्रामो मे शराबियो को पचायते दण्ड दे रही हैं। उनकी पिटाई भी हो रही है। श्री क्रान्तिकारी वास्तव मे क्रान्तिकारी हैं। वह जो कहता है, उसे करके ही दिखाता है चाहे उसे कितने दुख सहने पडे।

इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप मे अयंजनता को सम्बोधित करते हुए मद्रास के काग्रेस के सासद श्री एस के जे रामचन्द्रन ने कहा कि काग्रेस सरकार महात्मा गान्धी का नाम लेकर राज्य कर रही है, परन्तु वह गान्धी जी की शराबबन्दी की बात नही मान रही है। इस कारण मुझे अब स्वय को काग्रेसी कहने मे शर्म आने लगी है। शराब के कारण राष्ट्र विनाश की ओर जा रहा है। आपने हरयाणा प्रदेश मे शराबबन्दी आन्दोलन की सराहना करते हुए कहा कि हरयाणा प्रदेश के कुरुक्षेत्र मे महाभारत का युद्ध केवल १८ दिन तक चला था। परन्तु हरयाणा के ही बालसमन्द ग्राम मे १८० दिन से शराब समर्थक हरयाणा सरकार के विरुद्ध युद्ध चलाकर अपनी पुरानी वीरता का परिचय दे दिया है। उन्होंने कहा कि मैं राज्यसभा के सदस्य के रूप मे शराबबन्दी लागू करने की माग के लिए बडे से बडा बलिदान देने के लिए कार्य करूगा। आपने हरयाणा की महिलाओ से आह्वान करते हुए कहा कि झासी की रानी की शक्ति प्राप्त करके इस धर्म युद्ध मे कूद जावे। प्रो० शेरसिंह तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शोभा एव उनके छोटे भाई श्री विजय कुमार जी की प्रशसा करते हुए कहा कि अब समय आगया है कि इनके परिवार की भाति शराबबन्दी आन्दोलन को सफल करने मे लग जावें। हमे लोक शक्ति के माध्यम से सरकार को शराबबन्दी करने पर बाध्य करना होगा। सरकार अन्य अपराधों की भाति शराब बनाने, बेचने तथा पीनेवालो को दण्ड देवे। यदि वे सरकारी पदो पर हो, तो कानून बनाकर उन्हे हटावे। सरकार को राजस्व कमाने के लालच मे अपनी जनता को बर्बाद नही करना चाहिए। लाडवा के स्वतन्त्रता सेनानी श्री भगतराम ने आयसमाज के नेताओ को विश्वास दिलाया कि हम श्री अतरसिंह आर्य के नेतृत्व मे बालसमन्द मे शराब के ठेके का कलक मिटाकर ही दम लेंगे।

पूर्व विधायक श्री बलवीरसिंह ग्रेवाल ने बताया कि जब हरयाणा बना तो १२ करोड रुपये की शराब बिकती थी, परन्तु अब ४८५ करोड रुपये की सरकार शराब बेचने पर गर्व का अनुभव करती है। राजनैतिक नेता जब सत्ता मे होते हैं तो शराब का प्रचार करते हैं और सत्ता से बाहर होने पर शराबबन्दी की माग करते हैं। अतः ऐसे नेताओ को सत्ता से दूर रखने मे लाभ है।

हरयाणा किसान यूनियन के उपप्रधान प्रिंसिपल नारायणसिंह पलवल ने कहा आय प्रतिनिधि सभा हरयाणा के नेताओ द्वारा चलाये जा रहे आन्दोलन को किसान यूनियन द्वारा पूरा समर्थन तथा सहयोग दिया जावेगा। यह निर्णय यूनियन ने अपनी पानीपत की बैठक मे किया है। इसी प्रकार श्री पृथ्वीसिंह गोरखपुर निवासी ने किसान यूनियन की ओर से तन मन तथा धन से सहयोग देने की घोषणा की।

श्री रामजीलाल आय ने भी सभा के अधिकारियो को वचन दिया कि हम भजनलाल या उनके किसी एजेन्ट के सामने झुकेंगे नही और बालसमन्द मे शराब का ठेका नही चलने देंगे।

नशाबन्दी दिवस समारोह के अध्यक्ष एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह का धन्यवाद करते हुए कहा कि सार्वदेशिक सभा ने त्रिसूत्री कार्यक्रम (शराब हटाओ, अंग्रेजी हटाओ, गो रक्षा करो) को आरम्भ करने का श्रेय प्रो० शेरसिंह को ही है। मैं इन्हें सच्चा नेता मानता हू और हरयाणा की वीर जनता को विश्वास दिलाता हू कि इस शराबबन्दी आन्दोलन को सफल कराने के लिए सहयोग दिया जावेगा। यदि सरकार हमारी न्यायोचित माग को स्वीकार नही करती तो भारत वर्ष की सभी आर्यसमाजो को आन्दोलन में सम्मिलित होने को तयार किया जावेगा। हरयाणा मे श्री अतरसिंह आर्य जैसे शराबबन्दी के कर्मठ योद्धा हैं तो इस धर्म युद्ध में सफलता अवश्यमेव मिलेगी।

श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने पुन उपस्थित जनता को सम्बोधित करते हुए कहा कि मैं अपने गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियो को साथ लेकर आज सत्याग्रह करने के लिए तैयार होकर आया हू। परन्तु शराबबन्दी आन्दोलन के कर्मठ योद्धा के सुपुत्र की अचानक मृत्यु हो जाने पर कुछ समय के लिए गिरफ्तारिया देने का कार्यक्रम स्थगित करना पडा है। हम शीघ्र ही आगामी कार्यक्रम बनाकर सत्याग्रह आरम्भ करेंगे। देरी करने से सरकार अनुचित लाभ उठाने का यत्न करेगी। हमारा जब तक सास है, सघर्ष करते रहेगे। बालसमन्द शराबबन्दी समिति के नेता श्री महावीरसिंह तथा श्री भीमसिंह ने बाहर से आनेवाले सभी नेताओ तथा कार्यकर्त्ताओ का आभार प्रकट करते हुए कहा कि हम सभा का आदेश मिलने पर शराब का ठेका बन्द करने हेतु बलिदान देने को तैयार हैं। स्थानीय पुलिस चौकी वाले हमारे साथियो पर झूठे मुकदमे बनाकर विचलित करना चाहते है, परन्तु हम केवल भगवान् से डरते हैं। अत्याचार करनेवालो का मुह तोड जवाब देगे।

सभा प्रधान जी, सभा मन्त्री जी तथा श्रीमती शोभा जी समारोह के बाद पुलिस चौकी के इन्चार्ज से मिले तथा उन्हें सावधान किया कि यदि शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं के साथ दुर्व्यवहार किया अथवा दमनचक्र चलाया तो सभा की ओर से इसका जमकर विरोध किया जावेगा। शराबबन्दी कार्यकर्त्ता समाजसेवक हैं, कोई अपराधी नहीं है। अत पुलिस की गैर-कानूनी तथा अनुचित कार्यवाही को सहन नही किया जावेगा।

नशाबन्दी दिवस की समाप्ति पर सभा के अधिकारी तथा स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी रतनदेव जी, स्वामी सुमेधानन्द जी, स्वामी सर्वदानन्द जी, गुरुकुलो एव आर्य विद्यालयो के छात्र और आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता अपने-अपने वाहनो द्वारा बालसमन्द से हिसार होते हुए श्री अतरसिंह आर्य के ग्राम नलवा मे पहुचे जिससे उनके सुपुत्र की अन्त्येष्टि में सम्मिलित हो तो उनके दुखी परिवार तथा रिश्तेदारों को सवेदना दे सकें। श्री क्रातिकारी का आर्य निवास नलवा से दो किलोमीटर दूर खेतों में है। जहा जाने के लिए रतीला तथा कच्चा मार्ग है। वहा जाकर पता चला कि साय ५ बजे तक श्री अतरसिंह जी लाश लेकर नही पहुच सके। अत सभी निराशा तथा शोक के वातावरण मे वापिस चले गये। सभा प्रधान जी ने दिल्ली जाकर वायुसेना के कार्यालय से इस सम्बन्ध मे जानकारी प्राप्त करने का यत्न किया परन्तु सही जानकारी नहीं मिल सकी।

श्री क्रातिकारी जी के पत्र दिनाक ३ नवम्बर की सूचना के अनुसार वे १ नवम्बर को रात्रि १ बजे वायुयान से अपना बच्चा कर दिल्ली से नलवा पहुच सके और २ नवम्बर को हजारो नर-नारियो की उपस्थिति मे स्वामी सर्वदानन्द जी आचार्य दयानन्द जी ने वैदिक रीति के अनुसार अन्तिम सस्कार शोकपूर्ण वातावरण मे करवाया।

शान्ति यज्ञ तथा शोकसभा आर्य निवास नलवा जि० हिसार मे १२ नवम्बर को प्रात १० बजे होगी।

—केदारसिंह आर्य

बालसमंद में नशाबंदी दिवस पर पारित प्रस्ताव

१ मुगलो अथवा अंग्रेजो के शासन तथा अत्याचारों के सामने हरयाणा की जनता कभी नही झुकी और अपनी संस्कृति तथा स्वाधीनता की रक्षा के लिए बड़े से बड़े बलिदान देने मे उनके पैर कभी नही डगमगाये हरयाणा के पृथक् प्रान्त बनाने मे आयसमाज का सबसे बडा योगदान रहा है, वास्तव मे उस आन्दोलन का अग्रणी आर्यसमाज ही था। जिन भावनाओं के साथ हरयाणा का निर्माण करवाया गया था, उसमे मुख्य मुद्दा यही था कि हरयाणा शराबखोरी, मासाहार आदि मे मुक्त रहेगा और एक आदर्श प्रान्त के रूप मे विकसित होगा। परन्तु हरयाणा का दुर्भाग्य रहा कि जो नेता हरयाणा निर्माण के आदोलन से जुडे हुए थे उन्होंने भी शराबखोरी को बढावा देने के लिए एक बोतल के पाछे एक रुपया और दो रुपये देकर खुले आम शराब के सेवन को प्रोत्साहित किया। जिन्होने इस प्रदेश के निर्माण का विरोध भी किया था, उनको भी प्रदेश के निर्माताओ का आदर करना चाहिए था। परन्तु आज तो वे उन पवित्र भावनाओ को रोदने मे लगे हुए हैं।

यह सम्मेलन हरयाणा की जनता के सकल्प को दोहराते हुए यह घोषणा करता है कि इस आदोलन से जुडे हुए किसान, मजदूर, आयसमाज, नशाबन्दी कार्यकर्ता अपने पूर्ण नशाबन्दी के लक्ष्य को प्राप्त करके रहेंगे यदि इसके लिए सत्याग्रह करना आवश्यक हुआ तो करेंगे।

२ हरयाणा ही ऐसा प्रदेश है जहा शराब की एक बोतल की बिक्री पर पचायत को एक रुपया और दो रुपये देती है। सविधान, लोकसभा के सर्वसम्मत प्रस्ताव और भारत सरकार के दस सूत्री कार्यक्रम की खिल्ली उड़ाकर तथा इस प्रकार का प्रोत्साहन देकर, यहा की सरकारो ने हरयाणा को कलकित किया हैं। सम्मेलन यह माग करता है कि हरयाणा के माथे पर लगे इस कलक को हरयाणा सरकार तुरन्त धोते हुए अपने इस सविधानविरोधी तथा जनविरोधी आदेश को वापिस लेने की घोषणा करे।

३ वीर भूमि हरयाणा राष्ट्र की सुरक्षा के लिए सदा से बलिदान देता आया है, आज भी सेना मे इसके जवान राष्ट्र की सीमाओ की सुरक्षा के लिए सब जगह तैनात हैं। विज्ञान और इलैक्ट्रोनिक्स के इस युग मे शराब पीने वाला सैनिक गलत बटन दबाकर देश की सुरक्षा को ही खतरे मे नही डाल सकता है बल्कि घोर सकट उपस्थित करके युद्ध में हार का कारण बन सकता है। इस तथ्य के प्रकाश मे भी यदि सरकार सैनिको को शराब पिलाए और उसे प्रोत्साहन दे तो यह राष्ट्रविरोधी कदम ही कहा जाएगा। परन्तु यह खेद का विषय है कि सेना मे सेवारत जवानो को ही शराब नही पिलाई जाती बल्कि सेवानिवृत्त होने पर भी जवान को २ बोतल प्रतिमास और अफसरो को १० बोतल तक, आधी कीमत पर देकर उन्हे पियक्कड बनाया जा रहा है, और कुछ जवान उससे पैसा कमाने के लिए मिलावट करके भी जनता को बेचते हैं। युद्ध होने पर अवकाश प्राप्त सैनिको को कभी भी बुलाया जा सकता है। अनुशासन मे बन्धे हुए ऐसे राष्ट्र की सुरक्षा करनेवाले सैनिको को पियक्कड बनाना और शराब बेचने के धन्धे मे डालना किसी भी सरकार के लिए शर्म की बात है। यह सम्मेलन भारत सरकार से माग करता है कि विज्ञान के इस युग की आवश्यकताओं और खतरों को ध्यान मे रखते हुए सेवारत तथा सेवानिवृत्त सैनिको को इस बुराई से बचाये, और कम कीमत पर शराब की बोतल देने की बजाय उनके परिवारो के लिए दूसरे साधन उपलब्ध कराए।

४ सरकार की आर्थिक नीति के तथाकथित उदारीकरण के सचालको ने बहुदेशीय कम्पनियों को यहा आकर शराब के कारखाने लगाने की छूट दे दी है। निर्यात के नाम पर विदेशी मुद्रा कमाने के बहाने सरकार यह पाप करने जा रही है। यह सम्मेलन भारत सरकार से पूरे जोर से माग करता है कि अपने इस घृणित कदम को तुरन्त वापिस ले और शराब तथा नशीले पदार्थों के आयात और निर्यात पर कडी पाबदी लागू करे। इस मुद्दे पर देशव्यापी आदोलन की तैयारी हो रही है।

५ भारत सरकार को यह नही भूलना चाहिए कि विदेशी मुद्रा की बचत करना भी विदेशी मुद्रा कमाना ही है। अत विदेशी मुद्रा कमाने के लिए जरूरी नही जनविरोधी और राष्ट्रघाती कदम उठाए जाएं। यदि Molasses (शीरा) का उपयोग शराब बनाने के लिए न करके पावर अल्कोहल या इण्डस्ट्रियल अल्कोहल बनाने मे किया जाए, तो सैकडो नही हजारो करोड रुपए की विदेशी मुद्रा बचाई जा सकती है, तेल के आयात को कम किया जा सकता है। यह सम्मेलन भारत सरकार से माग करता है कि समूचे देश मे शराबबन्दी लागू करके, शराब के कारखानो को तुरन्त पावर अल्कोहल और इण्डस्ट्रियल अल्कोहल के कारखानो मे बदलाकर देश को और विदेशी मुद्रा दोनो को बचाए। यदि हरयाणा सरकार इसमे पहल करे तो सही दिशा मे वह देश का मार्गदर्शन कर सकता है और गौरवान्वित हो सकती है।

—केदारसिंह आर्य

नरवाना मे भाषण प्रतियोगिता

आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, नरवाना जिला जीन्द मे भाषण एव सगीत प्रतियोगिता दिनाक १९-११-९३ को हो रही है।

आपसे सविनय निवेदन है कि इन प्रतियोगिताओ के लिए अपनी सस्था से छात्र/छात्राओ का दल भेजने का कष्ट करे।

कीमत क्रांतिकारी की

दारू का जब नाम सुणा दिया बोल अत्तरसिंह नें।
बुराई दूर करण का चढग्या कौल अत्तरसिंह नें॥
१ कामकाज छोड करके, तज दिया घरबार तनें।
मोह माया का जाल छोड कै, छोड दिया सब परिवार तनें।
पर स्वार्थ की राह पकड कै, बटन दिए खोल अत्तरसिंह नें॥
दारू का जब नाम।
२ हरयाणे का शेर कह इसनें ठेकेदार सभल जा।
दारू नही बिकणे देगें, बदकार यहा से बिगज्या।
बुढो और जवानो की मदद से करया घरने का रोल अत्तरसिंह नें।
दारू का जब नाम।
३ वीरो की है जन्मभूमि यहा दूध दही का खाणा।
बुराई यहा फैलाण लागरे कै से यो धिगताणा।
पुलिस के आगे बोलण की, करी थो ना टाल-मटोल अत्तरसिंह नें।
दारू का जब नाम।
४, पाप का अड्डा पाडन खातिर आर्य टोली है।
ठेका बन्द करण की घरने पै कसम खाई है।
शराबबन्दी आंदोलन चला दिया पाटया यो तोल अत्तरसिंह नें।
दारू का जब नाम।
५ लोभी और चाण्डाल भतेरे जयचन्द बणे फिरते हैं।
सच्चाई की होवे जीत, हमेशा भवसागर से तिरते है।
परस्वार्थ का कोई चुका सका ना मोल अत्तरसिंह नें।
दारू का जब नाम सुणा दिया बोल अत्तरसिंह नें।

—देसराज बालसमन्दिया

शोक सन्देश

अखिल भारतीय नशाबंदी परिषद् के सदस्य, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपदेशक, शराबबन्दी आंदोलन मे हिसार क्षेत्र के अग्रणी नेतृत्व करने वाले श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी के २५ वर्षीय युवा आर्य पुत्र श्री सुरेन्द्रसिंह बी०ए० जो वायु सेना मे आसाम (गोहाटी) नायक के पद पर कार्यरत थे, का २८-१०-९३ को प्रात ७-३५ बजे आकस्मिक निधन केवल क्रातिकारी की ही आपत्ति नहीं है अपितु यह एक सामाजिक आपत्ति है। हिसार जिले की सभी ग्रामीण आर्यसमाजे तथा शहरी आर्यसमाजे व सस्थाए (छाजूराम स्मारक जाट सस्थाएं आर्यसमाज की शिक्षण सस्थाएं, महर्षि दयानन्द वेदप्रचार धर्मार्थ ट्रस्ट आदि) इस दु खद अवसर पर उस आर्य नवयुवक (दिवगत आत्मा) को सद्‌गति व शाति के लिए श्रद्धाजलि अर्पित करते हैं।

श्री क्रांतिकारी की इस दु खद आपत्ति मे हम सब उनके साथ हैं और परमपिता परमात्मा से प्रार्थी हैं कि वे क्रातिकारी को असीम शक्ति सामर्थ्य धैर्य प्रदान करे ताकि वे इस महान् आपत्ति को सहन कर सकें और आयसमाज के पवित्र कार्यों मे पूर्ववत् अपना जीवन व समय लगा सकें। श्री सुरेन्द्रसिह आर्य (दिवगत) वास्तव में सच्चे आर्य सपूत थे, हाकी के खिलाडी थे। वायुसेना मे कार्यरत रहते हुए भी शराब, बीडी, सिगरेट, अण्डे, मास आदि दुर्व्यसनो से सदैव दूर यज्ञ, हवन, सत्सग—आर्यसमाज के कार्यक्रमो आदि मे उस युवक की विशेष रुचि थी। समाज को उनसे बडी-बडी आशाए थी। किन्तु सर्व-व्यापक, दयालु, न्यायकारी परमात्मा की ऐसी ही व्यवस्था है कि उस व्यवस्था में इस आकस्मिक निधन से समाज भविष्य में उस युवक की सेवाओ से वंचित हो गया। क्रातिकारी जी को अपने युवा आर्य बेटे पर सच्चा गर्व था। इस निधन से आर्य परिवारो में जो एक रिक्तता आई है यह क्षति अपूरणीय है। किन्तु आर्यजनो द्वारा परमात्मा से यही प्रार्थना है, वेद के अनुसार ऐसी आपत्तिया किन्ही भी मनुष्यो पर न आए।

शाति यज्ञ तथा शोक सभा का आयोजन आर्य निवास वाटर वर्क्स मार्ग नलवा, जिला हिसार मे दिनाक १२ नवम्बर, १९९३ को प्रात १० बजे किया गया है।

—प्रतापसिंह शास्त्री, पत्रकार
पूर्वमन्त्री आर्यसमाज नागोरी गेट, हिसार
मन्त्री, महर्षि दयानन्द वेद प्रचार धार्मिक ट्रस्ट, हिसार

वेद-वेदांग पुरस्कार एवं वेदोपदेशक पुरस्कार १९९४

आर्यसमाज सान्ताक्रुज १९९४ में निम्न लिखित पुरस्कारो से आर्य विद्वानो को सम्मानित करेगा।

वेद वेदां पुरस्कार -

जिस विद्वान् ने जीवन पर्यन्त वेद-वेदागों पर अनुसधान किया हो एव ग्रथ लिखे हैं उन्हे वेद-वेदाग पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। पुरस्कार राशि २५,००१/- रुपये दी जायेगी।

वेदोपदेशक पुरस्कार -

वेद-वेदाग के अनुसधानकर्त्ताओं के अतिरिक्त जिस विद्वान् ने जीवन पर्यन्त आर्यसमाज के उपदेशक, भजनोपदेशक अथवा कार्यकर्ता के रूप में सेवा की हो उन्हे वेदोपदेशक पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा। पुरस्कार की राशि १५००१/- रुपये दी जाएगी।

उपरोक्त पुरस्कार राशि के अतिरिक्त जिस विद्वान् को पुरस्कृत किया जाएगा उन्हें अभिनन्दन पत्र, शाल एव रजत ट्राफी से भी सम्मानित किया जायेगा। उपरोक्त पुरस्कार हेतु आर्यसमाज सान्ताक्रुज बम्बई योग्य विद्वानो के प्रस्ताव को आमन्त्रित करती है। जो आर्यबन्धु विद्वान् के नाम उपरोक्त पुरस्कारों हेतु प्रस्तावित करना चाहते हैं वे विद्वानो के जीवन परिचय, कार्य एवं लिखे गए ग्रथो की सूची सहित विस्तृत पत्र दिनाक ३०-११-९३ तक भेजने की कृपा करे।

जो विद्वान् अपने नाम का स्वयं प्रस्ताव करेंगे वे अयोग्य माने जाएगे। वेद-वेदाग पुरस्कार एव वेदोपदेशक पुरस्कार के नियम सलग्न कर प्रेषित किए जा रहे हैं। गत वर्ष तक वेद-वेदाग पुरस्कार एव वेदोपदेशक पुरस्कार के लिए जो नाम पुरस्कार समिति को प्राप्त हुए है उनमे से या इसके अतिरिक्त यदि आप किसी अन्य विद्वान् को पुरस्कार के लिए उपयुक्त समझते हैं, तो उन विद्वानो के नाम आप प्रस्तावित करे। आपके द्वारा प्रस्तावित नामो के आधार पर निर्णायक मण्डल १९९४ के लिए वेद-वेदांग एव वेदोपदेशक पुरस्कार के लिए विद्वान् का चयन करेगा। पुरस्कार के अन्तिम निर्णय का अधिकार आर्यसमाज सान्ताक्रुज के पास सुरक्षित होगा।

—विश्वभूषण
महामन्त्री-संयोजक, वेद-वेदाग पुरस्कार समिति

शराबबन्दी सत्याग्रह के प्रथम सर्वाधिकारी स्वामी ओमानन्द सरस्वती की आर्यजनता के नाम अपील

यदि आप हरयाणा के माथे से शराब का कलंक मिटाना चाहते हैं तो—

१. अपने निकट के शराब के ठेकों पर धरणें दिलवाने मे योगदान करें।

२. शराबबन्दी सत्याग्रह की तैयारी हेतु प्रत्येक ग्राम से ११-११ सत्याग्रहियों की सूची तथा ११००-११०० रु० की दान राशि निम्न पते पर भिजवाकर रचनात्मक सहयोग करें।

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ
रोहतक (हरयाणा)

आर्य केंद्रीय सभा रोहतक का चुनाव

संरक्षक-श्री रमण मुनि, आर्यनगर, रोहतक, प्रधान-श्री एस आर विनायक, माडल टाउन रोहतक, उपप्रधान-श्री निहालचन्द गुगनानी, समीप स्टेट बैंक हिसार रोड रोहतक, उपप्रधान-आचार्य बलवीरसिंह सैक्टर 1 हुड्डा कंम्पलैक्स रोहतक, उपप्रधान-मा घनश्याम शिवाजी कालोनी रोहतक, मन्त्री-श्री देशराज आर्य, ४७/३ सुभाष नगर रोहतक उपमन्त्री-श्री सुरेश कुमार आर्य, आर्यसमाज, सैनीपुरा रोहतक, कोषाध्यक्ष-मा मेघराज आर्य दयानन्द नगर रोहतक, प्रचारमन्त्री-श्री वेदप्रकाश आर्य शिवाजी कालोनी रोहतक, लेखानिरीक्षक-श्री रामचन्द्र बतरा, सुभाष नगर रोहतक।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कहकर समर्थन किया है कि "महर्षि दयानन्द ने वेद मे विज्ञान होने की बात कहकर कुछ अतिशयोक्ति नही का है अपितु न्यूनोक्ति से ही काम लिया है, क्योंकि वेद के असख्य विज्ञानो के रहस्य तो अभी तक अज्ञात ही हैं।" यह स्मरण रहे कि श्री अरविन्द घोष आर्यसमाजी नहीं थे किंतु उन्होंने जब वेद का अध्ययन किया तो आधुनिक युगप्रवर्त्तक तथा वेदोद्धारक देव दयानन्द के वेदभाष्य के अतिरिक्त उनकी ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका भी—जिसमे "तार विद्या" तथा "नौविमानादि विद्या" प्रकरण है, अवश्य पढी होगी। परिणामस्वरूप उन्होने उक्त घोषणा करके महर्षि दयानन्द के वेद मे विज्ञान होने के दृष्टिकोण का उनसे भी आगे बढकर समर्थन किया।

पश्चिमी जगत् मे महर्षि दयानन्द के समकालीन जर्मन निवासी प्रोफेसर ने ऋग्वेद के नासदीय सूक्त का जब अध्ययन किया तो वह आश्चर्यचकित रह गए और वेद मे प्रलयावस्था की वैज्ञानिकता के वर्णन को स्वीकार किया। उन्होने अपनी "भारतीय दर्शन के छ सिद्धात" नामक पुस्तक मे लिखा है कि "मैं अब तक वेदो को ऋषियों की खोज मानता था किन्तु ऋग्वेद के नासदीय सूक्त को पढ़कर इस परिणाम पर पहुचा कि प्रलयकाल में क्योंकि ऋषि आदि कोई भी प्राणी नहीं था, अतएव यह ऋषियों की खोज नही हो सकती। प्रलयकाल मे मानवो की उपस्थिति न होने पर भी उस काल के इतने स्पष्ट आखो देखे जैसे वैज्ञानिक वर्णन के होने से तो यह ज्ञान परमात्मा की ओर से ऋषियो की ओर आता प्रतीत होता है।" इस प्रकार ऋषिवर दयानन्द ने वेद को शंखासुर द्वारा पाताल ले जाने की भ्रान्ति का निवारण कर वैदिक विज्ञान की दुन्दुभि बजाकर विश्व मनीषियो का ध्यान वेद की ओर आकर्षित किया।

महिला मण्डल अध्यक्षा बालसमन्द शराबबन्दी धरने पर

गत २३-१०-९३ को दोपहर बाद अखिल भारतीय महिला मण्डल की अध्यक्षा श्रीमती प्रभात शोभा जी पंडित ने धरना स्थल का दौरा किया तथा पूर्व सरपंच महाशय रामजीलाल आर्य की अध्यक्षता मे एक सभा हुई। शोभा जी ने नारी शिक्षा पर बल दिया। लोगो से शराब छोडने की अपील की और सरकार की शराब बढावा नीति की कटु आलोचना की, साथ में बालसमन्द के लोगों का धन्यवाद किया।

बालसमन्द गांव को एक तीर्थ की संज्ञा दी। सभा मे महिलाए भी सैकडो की सख्या मे पहुची। धरना सचालक श्री मस्तसिंह आर्य क्रांतिकारी जी ने प्रारम्भ से अन्त तक धरने की गतिविधियों की जानकारी दी। प्रधान श्री धर्मसिंह जी आर्य ने भी विचार रखें।

—प्रतापसिंह, मन्त्री
शराबबन्दी समिति, बालसमन्द

महर्षिदयानन्दनिर्वाण और आर्यसमाज

ऋषिराज दयानन्द आये थे वैदिक सन्मार्ग बताने को।
अज्ञान अंधेरे मे भटको को वैदिक ज्योति दिखाने को॥
वेद सूर्य सम बनकर जिसने किया प्रकाशित था जग को।
अस्त हुआ वह दीपावली की काली कुटिल अमावस को॥
ईश्वर इच्छा हो पूर्ण तेरी मुख मे यह शब्द सुनाने को॥ ऋषिराज

ईश्वर की इच्छा है यह ही कि वैदिक धर्म प्रचार करो।
इसके लिए ही जियो आर्यगण इसके प्रति अति प्यार करो।
हे आर्यो यह तन पाया है ऋषिवर के ऋण चुकाने को॥ ऋषिराज

दयानन्द ने गुरुवर विरजानन्द के ऋण को चुकाने में।
भीषण सकट सहन किये थे गुरु आदेश निभाने मे॥
सन्देश वेद का गुरु आज्ञा से जन-जन तक पहुचाने को॥ ऋषिराज

कहा गुरु ने दयानन्द हो रहा वेद का सूर्य अस्त।
अज्ञान अन्धविश्वास के कारण सारा जग हो रहा त्रस्त॥
तू ही आगे बढ जा अब जग का अधकार मिटाने को॥ ऋषिराज

ईश्वर की वैदिक अमृतवाणी का प्रकाश किया ऋषि ने।
मिथ्या मत सम्प्रदायो के पाखड का नाश किया ऋषि ने॥
सत्यार्थप्रकाश रचा ऋषि ने सत्यज्ञान का बोध कराने को॥ ऋषिराज

सत्यार्थप्रकाश समान जगत् मे कोई ग्रथ महान् नही।
ईश्वर, जीव व देश धर्म का इस जैसा कही ज्ञान नही॥
ससार को सच्ची सुख शान्ति व मुक्ति मार्ग समझाने को॥ ऋषिराज

सर्वप्रथम स्वराज्य की चर्चा स्वामी दयानन्द ने की।
इससे पहले यह काग्रेस इस भारत मे न जन्मी थी॥
आर्य राष्ट्र बनाने को भारत मे बिगुल बजाने को॥ ऋषिराज

ढोल गवार शूद्र नारी को पशु समान बताया था।
तुलसीकृत रामायण ने यह मिथ्या पाठ पढाया था।
पर वेद पठन का अधिकार दिला नारी सम्मान बढाने को॥ ऋषिराज

दयानन्द ने करके दया वेदामृत पान कराया था।
पर इसके बदले दुष्टो ने उनको जहर पिलाया था॥
ऋषिराज वेद की वेदी पर आये थे प्राण चढाने को॥ ऋषिराज

परउपकारी दयानन्द ने जगहितकारी काज किये।
शेष कार्य करने को पूर्ण स्थापित आर्यसमाज किये॥
हे आर्यजनो आगे बढिये ऋषिवर की बात निभाने को॥ ऋषिराज

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का हमने जो लगाया था नारा।
सोचो उसके अनुसार बने क्या स्वय और यह जग सारा॥
क्या पुरुषार्थ किया जग से अज्ञान-अधम मिटाने को॥ ऋषिराज

चहु ओर देश मे फैल रहे हैं हत्यारे विघटनकारी।
भारत खण्डित करने की कर रहे हैं फिर से तयारी॥
राम कृष्ण ऋषियों का देश इस्लामी राज्य बनाने को॥ ऋषिराज

हे आर्यजना शीघ्र बढो स्वधर्म बचाने को।
जो इन्हे मिटाना चाहते हैं उनके षडयन्त्र मिटाने को॥
इनकी रक्षा करने को, तन-मन-धन सभी लगाने को॥ ऋषिराज

निर्वाण दिवस ऋषि दयानन्द का हमको यही सिखाता है।
धर्म देश की रक्षा का यह हमको पाठ पढाता है॥
सन्देश दयानन्द स्वामी का वैदिक घर-घर पहुचाने को॥ ऋषिराज

इससे बढकर हे आर्यजनो कोई कार्य महान् नही।
इस हेतु समर्पित जीवन से कोई बडा बलिदान नही॥
"भास्कर" इससे न बडी कोई जग मे भेंट चढाने को॥ ऋषिराज

—भगवतीप्रसाद सिद्धात भास्कर
प्रधान नगर आर्य समाज
१४३०, प. शिवदीन मार्ग, कृष्ण पोल,
जयपुर।

दीपावली की अंधेरी रात की अमर ज्योति— महर्षि दयानन्द सरस्वती

(लेखक —डा० शान्तिस्वरूप शर्मा पत्रकार कुरुक्षेत्र)

युगपुरुष—महर्षि दयानन्द सरस्वती जिसने ससार में धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक तीनों क्षेत्रों में भारी काम किया। सन् १८८३ दीपावली की शाम जब सारा देश दीपावली के चराग रोशन कर रहा था, उस समय ५६ वर्ष का एक महान् पुरुष सन्यासी महर्षि दयानन्द सरस्वती अजमेर के बाग मे लाखों लोगो के सामने प्राण त्यागने के लिए प्राणायाम करने बैठ गया। उसका शरीर जहर से फूटा पड़ा था। परन्तु मुख पर आह् का कोई शब्द न था। उसके मुख पर शान्ति दिखती थी। उस महान् आत्मा को बडा तीक्ष्ण विष जोधपुर मे दिया गया था। सारे ससार के डाक्टरो का कहना था कि ऐसा तीक्ष्ण विष किसी ओर को दिया जाता तो वह उसी वक्त मर जाता परन्तु इस महान् पुरुष, जो सारे जीवन का ब्रह्मचारी था इस विष को इतने दिन तक सहन करता रहा। वह जोधपुर से अपनी इच्छा के अनुसार अजमेर के एक बाग मे जहाँ आज सन्यास आश्रम है, प्राण त्यागने के लिए आये थे। सारे ससार के समाचार-पत्र बडा आश्चर्य मान रहे थे कि ऐसा युगपुरुष ससार में पैदा हुआ है जो अपने प्राण त्यागने से १५ दिन पहले घोषणा कर दी थी कि वह दीपावली जो उस वर्ष ३० अक्टूबर को पडती थी कि वह ३० अक्टूबर की शाम जब सारा देश दीपावली की खुशियां मना रहा होगा उसी दिन प्राण छोड देंगे। उसे जोधपुर (राजस्थान) मे २९ सितम्बर सन् १८८३ को एक साजिस मे रात को सोने के समय विष दिया गया। उस युगपुरुष ने प्राण छोडने से आधा घण्टा पहले वेद मन्त्रों का उच्चारण किया और फिर सब उपस्थित भारतवर्ष के कोने-कोने से आये हुए लाखों लोगो के सामने अन्तिम शब्दो मे कहा कि यदि आप इस वैदिक प्रचार को आर्यसमाजो के द्वारा जीवित रखें तो अच्छा होगा। उसने तीन बार उच्चारण किया। "ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो" कहकर प्राण छोड दिये। उस महान् पुरुष के यह शब्द वायुमण्डल मे घूम रहे हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती सचमुच एक व्यक्तित्व थे। ऊचाई ६ फुट ६ इच पर अद्वितीय तेजस्विता, अखण्ड ब्रह्मचर्य तथा अनुभूत योगसिद्ध ने उनके व्यक्तित्व को अपूर्व क्रान्ति, आकर्षण प्रभाव तथा तप अभिभूत कर लिया था। भीष्म पितामह के बाद उनसे बडा दूसरा कोई ब्रह्मचारी नही हुआ। जगद्‌गुरु शकराचार्य के बाद उनसे बडा विद्वान् नही हुआ।

प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द ने महर्षि दयानन्द को ऐसा तैयार किया कि जैसे रामानन्द के लिए कबीर, समर्थ रामदास के लिए छत्रपति शिवाजी महामति प्राणनाथ के लिए महाराज छत्रसाल, परमहस रामकृष्ण देव के लिए स्वामी विवेकानन्द और महात्मा गाधी के लिए जवाहरलाल नेहरु। स्वामी जी ने वैदिक धर्म प्रचार शास्त्रार्थ तथा भीषण प्रहारो से आक्रान्त हिन्दू धर्म को समुचित कर उसकी रक्षा की। वे हिन्दू धर्म की तलवार थे। उनको गर्जना से भारतीय सस्कृति के घोर आलोचको तथा विरोधियों के कान खडे हो गये। वे सत्य के शहीद थे। उन्हे सत्य से कोई डिगा न सका। इसकी कीमत उन्हें चुकानी पडी। उन्हे १७ बार विष दिया गया था। वे जिन्दा शहीद थे।

महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तो का सिरमौर तथा सर्वोपरि सत्य है। वे समस्त मनुष्यो को एक ईश्वर की सन्तान मानते थे। एकमात्र परमेश्वर ही उनका उपास्य देव था। वेद उनके लिए समस्त विज्ञान तथा विद्या की अपौरुषेय कृति है।

उन्होने काग्रेस की स्थापना के पूर्व स्वराज्य, स्वदेशी, स्वभाषा, स्वसस्कृति तथा ऐक्य का सूत्रपात किया। उनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व और उनके द्वारा सस्थापित आर्यसमाज से भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन तथा हिन्दी साहित्य प्रभावित हुआ। स्वामी जी ने ही सर्वप्रथम भारतीय इतिहास के आधुनिक काल मे भारत भारतीयो का हक है की चर्चा हमे प्रदान की थी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने एक चतुर सर्जन की भांति देश की अज्ञानता का आप्रेशन किया। अधकार में भटके हुए लोगों ने उस पर पत्थर फेंके। उसे गालिया दो। उसको कई बार मारने के लिए विष दिया। परन्तु वह हसता रहा और कहा कि तुम मुझे पत्थर मारो मैं तुम्हे फूल दूगा। तुम मुझे विष दो मैं तुम्हें जीवन दूगा।

गुजरात के नगर टकारा में एक ब्रह्मण घर मे लालजी कृष्णजी मूलशंकर बालक का जन्म हुआ। बाप टकारा में एक अच्छे अधिकारी थे। बालक को सस्कृत और दूसरी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कराया। उसके मन में शका उत्पन्न हुई कि ईश्वर कौन है। कहा रहता है। दूसरे मृत्यु क्या है। क्या उसे भी मरना होगा। उसके प्रश्नो का उत्तर कोई भी न दे सका। जब मा-बाप ने देखा कि उनका पुत्र २४ घण्टे शंकाओं में उलझा रहता है। उन्होंने विवाह करने को सोची। जब उन्होंने अपने विवाह की बाते सुनी तो वह घर से निकल भागा और सच की तलाश मे देशभक्त आयुर्वेद विद्वान् संन्यासी स्वामी पूर्णानन्द से सन्यास लेकर सत्य की खोज में पहाडो जगलों में घूमता रहा। परन्तु कही भी उसकी शका दूर न हुई। स्वामी विरजानन्द चक्षुहीन सन्यासी के पास धक्के खाता हुआ मथुरा पहुचा। तीन वर्ष वहा पढता रहा और उसको शका का समाधान होगया।

अपने गुरु की आज्ञा से वह अज्ञानता के अंधकार से टकरा गया। उससे बडे-बडे मुसलमान, मौलवियों, ईसाइयों, पादरियों और पौराणिक पडितो से मुकाबला करके सिद्ध किया कि वेद ही सच्चा ज्ञान है। उसने सन् १८७४ में सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ की रचना की और सिद्ध किया कि वेद ही सच्चा धर्म है जो जन कल्याण के लिए है। युगपुरुष दयानन्द ने घोषणा की कि "वेद ही सच्चा धर्म है।" सामाजिक क्षेत्र मे उसने कुरीतियो का डटकर खण्डन किया। राजनीति मे उसने स्वय लिखा और भाषण दिया कि स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

ब्रिटिश साम्राज्य उस समय अपने पूर्ण यौवन पर था। अग्रेजी गवर्नर जनरल ने अपनी रिपोर्ट मे लिखा था कि भारत देश में एक लगोट बन्द स्वामी दयानन्द कभी भी राज के विरुद्ध बगावत करा सकता है। अग्रेजों ने एक बडे षड्‌यन्त्र से स्वामी जी को रास्ते से हटाने के लिए विष दिलवाकर शहीद करा दिया।

हम आज उस अमर शहीद को अपनी सच्ची श्रद्धांजलि भेंट करते हैं।

प्रगति के पथ पर

देख मेरा हरयाणा प्रगति के पथ पर,
जहा पीते थे दूध, दही के कटोरे भर-भरकर।
वहा पीते हैं लोग अब शराब जम-जमकर,
जीना हुआ मुश्किल शरीफ का यहा पर ॥१॥

मरते हैं भाई-भाई इच-इच जमी पर,
नही निपटाते समस्या ये प्यार से बैठकर।
हुये अब तो खूब स्याने लोग पढ़-लिखकर,
फिर भी लेते-देते दहेज शादी मे बढ़-चढ़कर ॥२॥

अयोग्य करते नौकरी भारी रिश्वत देकर,
योग्य रह जाते योग्यता के भरोसे पर।
हो जाते हर काम चाहे हो कितना दुष्कर,
हाथ में रहे जब धन, लाठी और लीडर ॥३॥

मेहर करे आह्वान युवाओं से विशेषकर,
गीत, कविता राष्ट्र हित के सदा लिखकर।
लडो तुम आज फैली हुई कुरतीयों से डटकर,
चमकाओ हरयाणे का नाम पुन गगन पर ॥४॥

लेखक —मेहरचन्द जाटौली, गुडगावा

अजमेर में ऋषि मेला

अजमेर में प्रतिवर्ष महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण की स्मृति में आयोजित होने वाले वैदिक ऋषि मेले के उपलक्ष्य में इस साल पहली तारीख से ही विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम आयोजित होंगे। इसमें देश-विदेश के बड़ी संख्या में आर्यसमाजी एवं श्रद्धालुजन भाग लेंगे।

परोपकारिणी सभा के संयुक्त मंत्री डा० धर्मवीर ने बताया कि ऋषि-मेले के उपलक्ष्य में इस बार आगामी एक नवम्बर से ही विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन शुरू हो जाएगा। इनका समापन २९ नवम्बर को होगा। एक नवम्बर से आनासागर तट स्थित महर्षि दयानन्द के ऐतिहासिक स्मारक ऋषि उद्यान में दस दिवसीय संस्कार प्रशिक्षण शिविर प्रारम्भ होगा। इसमें देशभर से आए अनेक प्रशिक्षणार्थियों को वैदिक विद्वान स्वामी मुनीश्वरानन्द धार्मिक कर्मकाण्ड संबंधी संस्कारों का प्रशिक्षण देंगे। शिविर का समापन दस नवम्बर शाम को होगा। ऋषि उद्यान में एक नवम्बर से ही चतुर्वेद पारायण यज्ञ का शुभारम्भ होगा। इसके ब्रह्मा पण्डित भीमसेन वेदवागीश होंगे और गुरुकुल गौतम नगर के छात्र वेदपाठी के रूप में भाग लेंगे। यज्ञ का समापन २१ नवम्बर को प्रातः होगा।

इस वर्ष ऋषि मेले के मुख्य कार्यक्रम २७, २८, २९ नवम्बर को होंगे। इनमें वैदिक यति मण्डल के अध्यक्ष स्वामी सर्वानन्द महाराज, पंजाब प्रकाशित 'आर्य' के संपादक और प्रमुख आर्य विद्वान् वेदप्रताप वैदिक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मन्त्री स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती प्रधान विद्यासागर शास्त्री, पूर्व केन्द्रीय मन्त्री प्रो० शेरसिंह, आचार्य हरिदेव गुरुकुल गौतमनगर तथा मोहनकुमार शास्त्री दिल्ली के नाम शामिल हैं।

उल्लेखनीय है कि आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण सन् १८८३ में अजमेर में हुआ था। इसलिए यहां प्रतिवर्ष उनकी स्मृति में परोपकारिणी सभा की ओर से ऋषि मेले का आयोजन होता है। इसमें देश विदेश के आर्यसमाजी मेले में भाग लेते हैं।

का० मन्त्री
परोपकारिणी सभा, अजमेर

शराब का ठेका खोलने के मुद्दे को लेकर गांव कवि में तनाव

पानीपत— जिले के मतलौडा खंड के गांव कवि में शराब का ठेका खुलने के मामले को लेकर तनाव है। गांव के लोग शराब का ठेका खुलने नहीं देना चाहते। ग्राम पंचायत ठेका खुलवाने पर आमादा है। इससे लोगों में पंचायत के खिलाफ गुस्सा है।

गांव के लोगों का कहना है कि इसी पंचायत ने पिछले दिनों सरकार को शराब का ठेका न खोलने का प्रस्ताव भेजा था। प्रस्ताव भेजे जाने के बाद गांव में शराब का ठेका नहीं खुला था। इससे गांववासियों ने राहत की सांस ली थी।

पर इतना होने के बाद पंचायत ने गांवों में शराब का ठेका खुलवाने की फिर मंजूरी दे दी है। गांव के लोग गांव के आसपास ठेका नहीं खुलने दे रहे। इससे ग्राम पंचायत, शराब के ठेकेदारों और गांव वासियों के बीच तनाव चल रहा है।

कुछ लोगों का कहना है कि शराब के ठेके को मंजूरी बाद में दिए जाने से ग्रामपंचायत की नीयत पर शक होता है। गांववासियों ने प्रशासन से शराब का ठेका न खोलने की मांग की है।

(जनसत्ता से साभार)

देवियों—शराब के सेवन से परिवार की बर्बादी होती है। अतः अपने निकट के शराब ठेको पर अपने साथियों सहित धरणे पर बैठकर शराब-बन्दी लागू करावें।

मेवात क्षेत्र में गौकशी रुकवाने के लिए मुख्यमन्त्री से भेंट

हरयाणा के बदनाम क्षेत्र मेवात के जिला फरीदाबाद व गुड़गांव में गौकशी रुकवाने के लिए दिनांक २६-१०-९३ को चण्डीगढ में हरयाणा गोशाला संघ का एक शिष्टमण्डल मुख्यमंत्री भजनलाल से मिला और उनको अपनी ओर से एक ऐसा आवेदनपत्र दिया जिसमें दिन-प्रतिदिन बढ़ती हुई गौकशी के आंकड़े थे। आवेदन-पत्र में यह भी आरोप था, कि पुन्हाना कस्बे में तीन ठेकेदार ऐसे हैं जो ऐसी गऊओं का चमड़ा बूट बनाने के लिए कानपुर भेजने के धन्धे में संलग्न हैं जिन गऊओं के चारों पैरों को बांध कर उनमें लोहे की कीलें ठोक कर उनके मुंह में लकड़ अथवा पत्थर रखकर ताकि वह आवाज न करे, पहले उनको लाठियों से खूब पीटा जाता है। जब पिटते-पिटते उनका चमड़ा फूल कर मुलायम हो जाए, तब तेज छुरी से जीवित ही खाल उधेड़ी जाती है। ऐसी खाल का मूल्य १४०० रुपए और मरी हुई गाय की खाल का मूल्य ४०० रुपए होता है।

यह सब बात गोशाला संघ के उपप्रधान रघुबीर गोप्रमी ने अपनी वाणी से अपना रोष प्रकट करते हुए कहा है और यह भी कहा है यदि सरकार ने गोहत्या बन्द नहीं की तो उसका राज्य नहीं रहेगा। मुख्यमन्त्री ने इस बड़ी फाईल को आवश्यक एवं तुरन्त कारवाई हेतु गुड़गांव के डी०आई०जी० महोदय को लिख दिया है। इस शिष्टमण्डल में संघ के प्रधान बाबू रामगोपाल जी एडवोकेट पानीपत महामन्त्री श्री देशराज जी वर्मा कुरुक्षेत्र, कार्यालय सचिव श्री रतनकुमार जी पानीपत शामिल थे।

—रघुबीर गोप्रमी, उपप्रधान हरयाणा गोशाला संघ
संचालक—अखिल भारतीय गोशाला पहरावर,
रोहतक-१२४००१

धन्य-धन्य ऋषिराज हमारा

—राधेश्याम आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ प्र)

गहन तमिस्रा का अवगुण्ठन,
जिसने निर्भय होकर तोड़ा।
शौर्यशील बन शक्तिशील बन,
दानवता का गला मरोड़ा।
चला दिया जिसने ढोंगों पर—
पाखण्डों पर कठिन दुधारा।
धन्य धन्य ऋषिराज हमारा॥

स्वतन्त्रता का नवल मंत्र दे,
जगा दिया भारत तरुणाई।
जिसके सिंह निनादों से थी
फटी द्वष ईर्ष्या की काई।
वेद-विरोधी मत पन्थो को—
जिसने डटकर फटकारा।
धन्य धन्य ऋषिराज हमारा॥

विधवाओं दलितों पतितो को
बिल्कुल गले लगाया।
नारी तथा शूद्रों को जिसने
वेद पठन अधिकार दिलाया।
ओज तेज साहस से सहसा—
ब्रिटिश शासकों को ललकारा।
धन्य धन्य ऋषिराज हमारा॥

सारे जग को आर्य बनाने—
का पावन संदेश दिया।
सत्य धर्म वेदों की महिमा—
का स्वर्णिम उपदेश दिया।
जिसके बलिदानों से गूंजा—
मनुष्यता की जय का नारा।
धन्य धन्य ऋषिराज हमारा॥

महर्षि दयानन्द ने प्रथम क्रांति का बिगुल बजाया

महर्षि दयानन्द से पहले कई महापुरुष आये, किन्तु उन्होंने देश भक्ति व स्वतन्त्रता की नींव रखी थी। स्वामी जी का जन्म सन् १८२४ ई को टंकारा ग्राम में हुआ था। लेकिन स्वामी जी की मूर्तिपूजा से आस्था हटी थी वह दिन शिवरात्री थी। सच्चे शिव की खोज में अपना गृह त्यागकर निकल गए, जब देश की विदेशी भाषा, वेशभूषा विदेशी, व्यवहार, विदेशी संस्कृति हर मानव के रग-रग का रम गई है। एक नये भारत की खोज और गुलाम देश को स्वतन्त्रता दिलाने में स्वामी जी ने बीड़ा उठाया। महर्षि जी को राजा-महाराजा बागी-फकीर कह कर उनके पीछे गुप्तचर लगा देते थे और इसी बागी फकीर के प्रभावित रहते थे।

स्वामी दयानन्द को रग-रग में और खून की हर एक बूंद में स्वतन्त्रता स्वदेश प्रेम कूट-कूटकर भरा था। उनके हृदय में गुलामी के प्रति घृणा थी और स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए बड़ी प्रबल ज्वाला प्रज्वली थी। बागी फकीर के बजाए गए क्रान्ति के बिगुल ने असंख्य नेताओं को प्रेरित किया जिन्होंने हंसते-हंसते स्वतन्त्रता की वेदी पर प्राण न्यौछावर कर दिए और देश ने नया मोड़ लिया। जब लाला लाजपतराय, श्री भाई परमानन्द, श्री स्वामी श्रद्धानन्द आदि स्वामी जी के अलख अनुयाइयो ने देश की स्वतन्त्रता के लिए अपना सर्वस्व स्वाहा कर दिया। यह सत्य है कि महर्षि दयानन्द जी से प्रेरणा पाकर सर्वश्री दादा भाई नोरोजी, गोपाल कृष्ण गोखले, लोकमान्य तिलक, सरदार भगत सिंह, आजाद बिस्मिल, प मदनमोहन मालवीय, नेता सुभाष चन्द्र बोस महात्मा गांधी, सरदार पटेल आदि महान् नेताओं ने ऋषि के मिशन को आगे बढ़ाया लेकिन ईश्वर को यही मन्जूर था कि हमारा प्रेरणा-स्रोत ३० अक्तूबर को शाम ६ बजे दीपावली के दिन अन्धेरी रात में बदल जायेगा और हमेशा-हमेशा के लिए विदा हो जायेंगे। लेकिन स्वामी का बजाया क्रान्ति का बिगुल उनके दिलों पर अग्नि की तरह जल रहा था और हमारे देशभक्त अन्तिम सांस तक मुकाबला करते रहे और अन्त में लड़ते-लड़ते जग में हमें स्वतन्त्रता प्राप्त हुई।

हमें इस स्वतन्त्रता को कायम रखना है तभी हम आर्य कहलाने मे गर्व चाहेंगे और कृण्वन्तो-विश्वमार्यम् का नारा दे पायेंगे।

—अशोक कुमार आर्य

लम्बी आयु पाने के लिए दिमाग ठंडा रखें

टोक्यो—यदि आप लम्बी आयु चाहते हैं तो दिमाग ठण्डा रखिए। जी हां, जापान के शतायु नागरिकों के बारे मे यहां की सरकार द्वारा कराए गए एक सर्वेक्षण का यही निष्कर्ष है।

स्वास्थ्य एव कल्याण मन्त्रालय द्वारा कराए गए इस सर्वेक्षण में १०० वर्ष या उससे अधिक आयु के २८५१ नागरिकों से उनकी लम्बी आयु का रहस्य पूछा गया। सबसे अधिक वृद्धों ने कहा कि जीवन को सामान्य तरीके से जीना सबसे अहम् बात है। इसके अलावा खान-पान, जल्दी सोना, जल्दी जागना और कड़ी मेहनत तथा भगवान् में विश्वास जीवन के लिए अच्छी बात है। इससे व्यक्ति की आयु लम्बी होती है।

सर्वेक्षण के निष्कर्ष से लगता है कि महिलाओं की आयु पुरुषों से औसतन लम्बी होती है। जापान में सौ वर्षों से अधिक आयु वालों में अस्सी प्रतिशत महिलाएं हैं। किसानों की आयु भी अपेक्षाकृत लम्बी होती है। क्योंकि सौ वर्ष से अधिक आयु के नागरिकों में ४२ प्रतिशत किसान थे।

जापान में सौ वर्ष से अधिक आयु के ४८०२ व्यक्ति हैं। जापान के लोगों का औसत आयु विश्व में सबसे अधिक है।

सदा सत्य पथ पर चलो, चलने वालो!

[illegible]

[illegible] को [illegible] [illegible]
[illegible]

दयानन्द के साथ तुम [illegible] [illegible] [illegible]
दयानन्द स्वामी की [illegible] [illegible]
सदा सत्य पथ पर, चलो, चलने वालो!

ये अल्फाज सब महर्षि के निराले। [illegible] में [illegible] [illegible]
यह किश्ती तुम्हारी, तुम्हारे हवाले। [illegible] है [illegible] को [illegible]
यही वक्त है, पार इसको लगा लो।
सदा सत्य पथ पर, चलो, चलने वालो!

हवा अब जमाने की बदल रही है। [illegible] की [illegible] [illegible]
फिर अज्ञानता फैलती जा रही है। दिमागों को [illegible] है [illegible] रही है॥

संभल कर जरा, पाप खुद को [illegible]।
सदा सत्य पथ पर, चलो, चलने वालो!

फरेबी, हकीकत को झुठला रहे हैं। जुआरी भी पासों को पकड़ा रहे हैं।
शराबी, बहकते, चले जा रहे हैं। मगर [illegible] [illegible] यह फरमा रहे हैं॥
बुराई से सब अपना दामन छुड़ा लो।
"सदा सत्य पथ पर चलो, चलने वालो!

है देना यदि कुछ तो निष्काम देना, जो बेदाम हैं, उनको कुछ दाम देना।
सभी बेकरारों को आराम देना। मुहब्बत का दुनियां को पैगाम देना।
न अपने पराए पे [illegible] उछालो।
सदा सत्य पथ पर चलो, चलने वालो।

सुनो, मेहरबानों, सुनो पासबानो, बिगड़ते हो क्यों? कुछ तो [illegible] की ठानो।
यदि जानना है, हकीकत को जानो। दयानन्द स्वामी का फरमान मानो॥
गलत रास्ते पर किसी को न डालो।
सदा सत्य पथ पर चलो, चलने वालो!

पढ़ो वेद खुद दूसरों को पढ़ाना। यह कर्तव्य है आज तुम को निभाना।
है पहले तुम्हें अपना जीवन बनाना। सफल होवे निर्वाणोत्सव मनाना॥
भले एक सप्ताह इसको मना लो।
सदा सत्य पथ पर चलो, चलने वालो!

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : [illegible]) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, गोहाना रोड, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०/७३ रजि० नं० P/RTK-८६ सृष्टिसंवत् १, ९६ ०८, ५३, ९४

ओ३म् सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २० अंक ४८ १८ नवम्बर, १९९३ वार्षिक शुल्क ४०) (आजीवन शुल्क ४०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति ८० पैसे

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से सम्बन्धित आर्यसमाजों से आवश्यक निवेदन

आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा (पजीकृत) से सम्बन्धित आर्यसमाजों के अधिकारियो से निवेदन है कि सभा के पूव निर्देशानुसार अपने आर्यसमाजो की ओर से सभा के लिए आर्यसमाज के नियमों के आधार पर योग्य प्रतिनिधि चुनकर ३० नवम्बर ९३ तक फार्म भरकर सभा के कार्यालय दयानन्द मठ रोहतक में भेजने का कष्ट करें।

आशा है आर्यसमाज के नियमानुसार अपनी साधारण सभा में अपने प्रथम ११ आर्यसभासदो पर एक तथा उसके पश्चात् २० आर्यसभासदों पर एक-एक और प्रतिनिधि चुन लिए होंगे। जिन आर्यसमाजों के पास किसी कारणवश प्रतिनिधि फार्म नहीं पहुंचे हों वे यथाशीघ्र सभा कार्यालय रोहतक से पत्रव्यवहार अथवा सम्पर्क करके मंगवा लेंवे, जिससे फार्म भरकर ३० नवम्बर ९३ तक सभा कार्यालय में प्राप्त हो जावें और उनकी जांच-पड़ताल आदि करके स्वीकार करके प्रतिनिधि महानुभावों को साधारण अधिवेशन (चुनाव) का एजेण्डा तथा वार्षिक बजट आदि भेजा जा सके।

महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित सबसे अधिक आर्यसमाज के सिद्धांतों के माननेवाले हरयाणावासी हैं। स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित सबसे अधिक गुरुकुल हरयाणा प्रदेश मे हैं। आर्यसमाज द्वारा चलाए गए आंदोलनों में सबसे अधिक भाग लेने वाले हरयाणा वासी हैं। अत इस ऐतिहासिक परम्परा को चालू रखने के लिए आवश्यक है कि हरयाणा में आर्यसमाज के सगठन को और अधिक सुदृढ किया जावे। सभा द्वारा गत वर्षों से चालू शराबबन्दी आंदोलन को सफल किया जावे। अत आर्यसमाज के अधिकारियों से निवेदन हैं कि अपने प्रतिनिधि चुनकर हरयाणा सभा के अधिवेशन मे भेजकर पूर्व की भांति सहयोग प्रदान करें।

—शेरसिंह सभा प्रधान

शराबबन्दी करानें के लिए सत्याग्रह की धमकी

हिसार हरयाणा में शराबन्दी कराने के लिए सघर्ष कर रहे किसान मजदूर, आर्यसमाजी व नशाबंदी कार्यकर्त्ता राज्य को नशामुक्त करवाकर ही रहेंगे चाहे उन्हे इसके लिए कितनी ही बडी कुर्बानी क्यों न देनी पड़े। इसके लिए सत्याग्रह करना आवश्यक हुआ तो, किया जाएगा। यह घोषणा नशाबंदी समिति के प्रांतीय सयोजक विजय कुमार ने दी।

पत्रकारों से बातचीत करते हुए उन्होंने कहा कि यह बडे शर्म की बात है कि हरयाणा ही देश का ऐसा राज्य है जहां हर बोतल शराब की बिक्री पर पंचायत को एक व दो रुपए का कमीशन दिया जाता है। सरकार ने पंचायतों को शराब का दलाल बनाकर रख दिया है। श्री विजयकुमार ने इस बात पर कडा रोष जताया कि जिन ग्राम पंचायतों ने पिछले साल उनके गांव मे शराब के ठेके बन्द करने के प्रस्ताव पास किए थे, उन सरपचों को सरकार द्वारा डराया-धमकाया जा रहा है। सरकार ने पुलिस व ठेकेदारों की मिलीभगत से सौ से ज्यादा ऐसे गांवों में शराब के ठेके खोल दिए हैं जिन्हें पहले बन्द किया जा चुका था।

शराबबन्दी समिति के सयोजक ने कहा कि सरकार को शराब के कारखानों को अल्कोहल पावर व इडस्ट्रियल अल्कोहल बनाने के कारखानों में परिवर्तित कर दिया जाना चाहिए, इससे हजारों करोड रुपए की सालाना विदेशी मुद्रा बचायी जा सकेगी।

(साभार—दैनिक ट्रिब्यून)

दारू स्नान

ये कोई राजाओ-महाराजाओ के शौक की बात नही हो रही है बल्कि आज के उन दौलतमद-मौकापरस्त राजनीतिज्ञों की बात हो रही हैं जिन्होंने वोट हासिल करने के लिए झुग्गी झोपडी क्षेत्र मे रहनेवाले गरीब लोगों को शराब से नहला दिया।

"पायनियर" के रहस्योद्घाटन के अनुसार हाल ही मे राजधानी में सम्पन्न मतदान से मात्र १० घण्टे पहले दिल्ली भर की झुग्गी-झोपडी क्षेत्रों में बेहिसाब दारू, नोटो की बरसात और उपहारो की अचानक लगी झडी से सकपकाए 'गरीब' मतदाता तो जैसे धन्य हो गए।

बीते शुक्रवार प्रात ९-३० बजे तक सब कुछ सामान्य था। लेकिन तभी सीमापुरी झुग्गीबस्ती, कालकाजी, यमुनापुश्ता, मोतिया महल और शाहबाद डेरी बस्ती क्षेत्रों में एक दल विशेष के सैकड़ों कार्यकर्ता कारों, टेम्पुओं मे लदे फंदे आ पहुंचे और देखते-ही-देखते शराब की बोतलें टाफियों की तरह बंटने लगीं। जेबों में नोट ठूस दिए गए और उपहारो के पैकेट्स बांटे गए।

प्रश्न उठता है कि यह सब कौन करा रहा था? जब एक झुग्गी वाले मियां अख्तर से यह रहस्य जानने का प्रयास किया गया तो चौंकाने वाला किंतु अपेक्षित उत्तर मिला—"कांग्रेस वाले थे, वोट लेने आए थे। लेकिन कहते हैं न कि 'प्रेम और युद्ध मे सब उचित है' तब भाजपा वाले भी पीछे कहा रहते। सावन पार्क झुग्गी कालोनी मे कांग्रेस प्रत्याशी के विरुद्ध खडे भाजपा प्रत्याशी मागेराम गर्ग ने कलाई घडियां बांटी, यह बात भी छुपी नहीं रह सकी। इस कालोनी के लोगों की फरमाईश पर 'सन्तरा' ब्रांड दारू की सैकडों बोतल जुटाई गयी। नतीजतन शनिवार दोपहर तक दारू पीकर टुन्न हुए मतदाता मतदान केन्द्र हो नहीं पहुंच पाए।

साभार—दैनिक ट्रिब्यून

गांवों में खुल रहे मिनी ठेकों पर भ्रष्टाचार की कुंडली

(जसमेर मलिक द्वारा)

जींद जिले में एक के बाद एक गांव में खुले शराब के मिनी ठेके पचायतों में व्याप्त भ्रष्टाचार का तो नतीजा है ही, इससे जिले में शराबबन्दी समिति के नेताओं की भी पोल खुल गई है।

गौरतलब है कि जींद जिले में साल के शुरू होने से पहले अधिकाश गावो की पचायतो ने अपने यहा ठेके नहीं खोलने के प्रस्ताव पारित कर आबकारी विभाग को दे दिए थे। जिस समय इस जिले में ९३-९४ के लिए शराब के ठेकों की नीलामी हुई थी, उस समय शराब के ठेको की सख्या पिछले वर्ष की तुलना में एक-तिहाई भी नहीं रह गई थी। ग्रामीण क्षेत्रों में तो शराब के ठेको का एक तरह से सफाया ही हो गया था। शराब के ठेको की नीलामी के दौर में जिले मे शराबबन्दी आदोलन का काफी जोर था और ग्राम पंचायतों ने लोगो के दबाव मे आकर ही शराब के ठेके बन्द करने के प्रस्ताव पारित किए थे।

लेकिन इसके बाद अब धीरे-धीरे गावों में शराब के सब-वेंड, जिन्हे देशी भाषा मे मिनी ठेका कहा जाता है, की सख्या तेजी से बढी है। एक के बाद एक पचायत ने धडाधड़ अपने यहा शराब के मिनी ठेके खोलने के प्रस्ताव पारित किए हैं। १९९२-९३ में जीद जिले में शराब के मिनी ठेको की गिनती जहा मात्र चार थी, वह अब १९९३-९४ में, बढ़कर १८ हो गई है। शराब के ठेकों की जगह अब मिनी ठेको ने ले ली है। इन १८ मिनी ठेको मे करीब एक दर्जन मिनी ठेके तो उन गावो मे खुलवा दिए गए हैं, जिनकी पचायतों ने इस वर्ष अपने यहा शराब के ठेके नही खोलने के प्रस्ताव सरकार व विभाग को दिए थे। जिले के नगूरा, अलेवा, हथो, दनौदा, धमतान साहब, बागडू आदि गावो की पचायतो ने बाकायदा प्रस्ताव पारित कर अपने यहा शराब के ठेके बन्द करने को कहा था, मगर आज इन गावो की उन्हीं पचायतों ने अपने यहा मिनी ठेके खोलने के प्रस्ताव देकर मिनी ठेके खुलवा दिए हैं।

गावो मे शराब के ये मिनी ठेके खुलवाने के पीछे गाव की पचायत पचायत विभाग के अफसरो व शराब के ठेकेदारों की मिलीभगत बताई जाती है। ठेकेदारो से मोटी रकम ऐंठने का भी पता चला है। मिनी ठेका खुलवाने पर सहमति के लिए ठेकेदार से ली गई रकम पंचायत के मेम्बर आपस मे बाटकर डकार गए हैं। पचायत विभाग के ब्लाक लेवल के लोग भी इसमें शामिल बताए जाते हैं। ठेकेदार से पैसे लेकर गाव मे शराब के मिनी ठेके खुलवाने की बात कुछ गावों में तो अब जगजाहिर भी हो गई है।

जिले के दनौदा गांव में तो तीन पचायत मेम्बरो ने बाकायदा हल्फिया बयान देकर आरोप लगाया है कि गाव में मिनी ठेका खुलवाने प्रस्ताव पारित करने के लिए पचायत ने ठेकेदार से एक लाख रुपया ना। गाव के सरपच ने पूरे गाव के सामने यह बात मानकर गाव से यह माफी भी मागी है। पचायत महकमे के अधिकारियों द्वारा ४० हजार रुपया इस राशि में से लेने की बात सामने आई है।

अलेवा गाव मे भी शराब का मिनी ठेका खुलवाने में ठेकेदार से पैसे लिए जाने का मामला प्रशासन के सामने लगाया गया है।

जानकार सूत्रो का कहना है कि पचायतो से मिनी ठेके के प्रस्ताव लेने मे पचायत विभाग के लोगो ने खासी भूमिका निभाई और इसकी एवज मे ठेकेदार से मिली रकम मे इन लोगो का भी हिस्सा रहा। वरना कोई वजह नहीं थी कि जिस गाव की पचायत ने मात्र ६-७ महीने पहले अपने यहा से शराब के ठेके बद करने के प्रस्ताव पारित किए थे, उसी गाव की पचायत अब मिनी ठेका खुलवाने का प्रस्ताव पारित कर रही है। गावो के लोग इस पचायती भ्रष्टाचार से खासे परेशान भी हैं, मगर भ्रष्टतत्र के सामने उनकी कोई सुनवाई नही।

जिले मे शराब के मिनी ठेको की इस कदर बाढ आ जाने से शराबबन्दी आदोलन के उन नेताओ को भी नगा कर दिया है, जो कुछ समय पहले चैम्पियन बने घूमते थे। स्वय को शराबबन्दी का सबसे बड़ा ठेकेदार कहने वाले इंद्रवेश की शराबबन्दी संघर्ष समिति के प्रातीय अध्यक्ष इसी जींद जिले से हैं, लेकिन जिले में शराबबन्दी की जिस प्रकार धज्जियां उड रही है, उससे यह साबित होता है कि शराबबन्दी आंदोलन के नेता कागजी शेर हैं।

(साभार—जनसत्ता)

गुरुकुल-महिमा

तर्ज . आओ बच्चो तुम्हें दिखायें झाकी हिन्दुस्तान की
गुरुकुल में पढने वालों का जीवन बने महान् है।
कुन्दन बनकर बाहर निकलें करते नव-निर्माण हैं॥

अर्जुन, भीम सरीखे योद्धा, कहा पर शिक्षा पाये थे।
ऋषि दयानन्द यति लक्ष्मण, कहो कहां से आए थे,
गुरुकुल की भूमि को ही, मस्तक करता प्रणाम है।
कुन्दन बनकर

तुम्ही बताओ चन्द्रगुप्त मौर्य को किसने बनाया था।
नन्द वश का नाश करेंगे, नारा कहा से आया,
आचार्य चाणक्य के, गुरुकुल का धाता ध्यान है।
कुन्दन बनकर

महाभारत इस भारत को करने की किसने ठानी थी,
साम, दाम और दण्ड, भेद की नीति किसने जानी थी,
श्रीकृष्ण ने सान्दीपन से लिया ज्ञान-विज्ञान है।
कुन्दन बनकर

प्रिय शिष्य अगस्त्य ऋषि के हनुमान कहलाते हैं,
ब्रह्मचर्य का पालन कर यहा, महावीर बन जाते हैं,
आज देख लो जगह-जगह, होता उनका गुणगान है।
कुन्दन बनकर

दुष्ट बाली बलशाली से, किसने सुग्रीव बचाया था,
किसने भक्त विभीषण को, लकासम्राट् बनाया था,
हृदय-हृदय बोल रहा, गुरुकुल का राम सुजान है।
कुन्दन बनकर

अपने प्यारे बच्चों को, गुरुकुल मे आज पढ़ाओ तुम,
'महेश शर्मा' बहुत जरूरी, बात ध्यान में लाओ तुम,
आर्य सस्कृति, सभ्यता, गुरुकुल पहिचान है।
कुन्दन बनकर बाहर निकलें, करते नव-निर्माण हैं॥

—महेश शर्मा, दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार

भूकम्प पीड़ित सहायता दानदाताओं की सूची

दानदाता	राशि
मन्त्री आर्यसमाज सेवा सदन बल्लभगढ़ जिला फरीदाबाद	५०००-००
आर्यसमाज गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ [illegible] जि. कुरुक्षेत्र	३१००-००
आर्य कन्या उच्च विद्यालय कैथल	११०१-००
श्री छोटेराम आर्य ग्राम कावड़ी जिला पानीपत	२००-००
श्री डा मेदाराम आर्य मन्त्री आर्यसमाज माडल कालोनी यमुनानगर	५००-००
आर्यसमाज सरकाना जिला हिसार	३००-००
डा मनोहरलाल आर्य प्रधान आर्य कन्या उच्च विद्यालय कैथल	२०१-००
आर्य समाज जींद जक्शन	५००-००
श्री गिरिराजसिंह व लालाराम औरंगाबाद जि फरीदाबाद	१००-००
आर्यसमाज मीतरौल औरंगाबाद —,,—	१५१-००
श्री बहालसिंह भारद्वाज प्रधान आर्य —,,—	५१-००
श्री म किशोरसिंह आर्य पूर्व सरपच औरंगाबाद—,,—	५१-००
श्री डालचन्द मन्त्री आर्यसमाज औरंगाबाद ,,	५१ ००
श्री विजयसिंह आर्य पूव सरपञ्च ,, ,,	५१-००
श्री बलजीतसिंह वानप्रस्थी ,, ,,	३१-००
श्री म श्रीचन्द आर्य ,, ,,	१००-००
श्री रामचन्द ,, ,,	५१-००
श्री राजसिंह अध्यापक ,, ,,	३१-००
श्री सुमरनसिंह पटवारी मीतरौल ,,	५१-००
श्री बलबीरसिंह शास्त्री ,, ,,	५१-००
श्री कवि रतनसिंह ,, ,,	५१-००
श्री राजपालसिंह ,, ,,	५१-००
श्री बलबीरसिंह पच ,, ,,	५१-००
श्री अमरसिंह मास्टर ,, ,,	५१-००
श्री मा. रघुनाथ ,, ,,	२१-००
आयसमाज नई सब्जीमण्डी, रेवाड़ी	११८४-००
आदर्श विद्यामन्दिर स्कूल, रेवाड़ी	२२१-००
श्री आर के यादव ग्राम व पो सरायख्वाजा जि फरीदाबाद	५१-००
चौ कवरलाल भावईकोट वाले ताजपुर-बदरपुर दिल्ली-४४	५१-००
श्री देवेन्द्रकुमार ग्राम व पो अनगपुर जिला फरीदाबाद	२५-००
श्री गोविन्दराम प्रधानाचार्य विजयभारती पब्लिक स्कूल अनंगपुर डेरी जिला फरीदाबाद	५१-११
,, शादमल आर्य मोल्डबन्द नई दिल्ली-४४	२१-००
,, भगवानसिंह ,, ,,	२०-००
,, देशराज अनगपुर डेरी जिला फरीदाबाद	२०-००
,, राजेन्द्रसिंह सु प्रहलादसिंह ग्राम ऐतमादपुर जिला फरीदाबाद	२१-००
,, वैद्य प्रेमचन्द लक्ष्मीनारायण मन्दिर ग्राम ऐतमादपुर	५१-००
[illegible] हायर सेकेण्डरी स्कूल सटाना जि गाजियाबाद (उत्तरप्रदेश)	३१-००
सरस्वती विद्या मन्दिर [illegible] जि गाजियाबाद ,,	२५-००
श्री सत्यपाल भाटी ग्राम व पो मकोड़ा ,, ,,	११-००
नगरनिगम प्राथमिक सहशिक्षा विद्यालय, मीठापुर दिल्ली-४४	५१-००
आर्यसमाज भाडवा जिला भिवानी	१००-००
मन्त्री आर्यसमाज राजलूवढ़ी जिला सोनीपत	२००-००
श्री रामकुमार भारद्वाज सु श्री हरिसिंह ग्राम शाहपुर जिला जीन्द	१०१-००
आर्यसमाज लाडवा जिला कुरुक्षेत्र	२००-००
आर्यसमाज लालकुर्ती जिला अम्बाला	५१ ००
प्रिंसिपल आर्य गर्ल्ज महिला महाविद्यालय अम्बाला कैंट	२००-००
लक्ष्मीदेवी आर्यसमाज गर्ल्ज हाई स्कूल कच्चा बाजार रामबाग रोड, अम्बाला कैंट	२४०-००
आर्यसमाज प्रेमनगर अम्बाला शहर	१००-००
आर्यसमाज रादौर जिला यमुनानगर	१००-००
श्री जयप्रकाश अध्यापक बराड़ा जिला अम्बाला	५१-००
आर्यसमाज मवार जिला यमुनानगर	२०० ००
श्री रामजीलाल गोदारा ग्रा खाबड़ाकलां जिला हिसार	१००-००
आयसमाज बेरी जिला राहतक	१००-००
आर्यसमाज मुआना जिला जींद	५००-००
आर्यसमाज मण्डी बहादुरगढ़, जिला रोहतक	२५१-००
श्री ला रामकृष्ण आर्य लोहेवाले दुकान ५ बहादुरगढ़, जिला रोहतक	१०१-००
आर्यसमाज बेरी, जिला रोहतक	२७३ ००
महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल बाघपुर, जिला राहतक	२०१-००
श्री रणधीरसिंह शास्त्री मन्त्री आयसमाज शेखपुरा खालसा जिला करनाल	२५०-००
श्री यज्ञदेव शास्त्री मन्त्री आयसमाज लोलोढ जिला रेवाड़ी	२५०-००
श्री ओमप्रकाश चौहान आयसमाज सफीदो, जिला जींद	५१-००
,, ओमप्रकाश आर्य ,, ,, ,, ,,	५१-००
,, राजेन्द्र प्रसाद आर्य ,, ,, ,, ,,	५१-००
,, सुदेशकुमार चौहान ,, ,, ,, ,,	५१ ००
स्टाफ महर्षि दयानन्द विद्या मन्दिर ,, ,, ,,	५१-००
पाचवी कक्षा ,, ,, ,, ,, ,, ,,	३६-००
चौथी कक्षा ,, ,, ,, , ,, ,,	२०-००
तीसरी कक्षा ,, ,, ,, ,, ,, ,,	१९-००
दूसरी कक्षा दयानन्द विद्या मन्दिर सफीदो जिला जींद	१०-००
पहली कक्षा दयानन्द विद्या मन्दिर सफीदो जिला जींद	१[illegible] ००
नर्सरी कक्षा दयानन्द विद्या मन्दिर सफीदो जिला जींद	४-२५
आर्यसमाज श्रद्धानन्द नगर पलवल जिला फरीदाबाद	५१ ००
आर्यसमाज जवाहर नगर पलवल ,, ,,	१५००-००
श्री मा रामजीलाल आर्य ग्राम दयालपुर जि फरीदाबाद	५०-००
श्री वैद्य चन्द्रभान शर्मा पाण्डव नगर दिल्ली-९३	१११-००
आर्यसमाज सुरजपुर जिला गाजियाबाद	२५१-००
श्री विजेन्द्रकुमार आर्य ग्राम मकोड़ा जिला गाजियाबाद	२१-००
श्री जलज अम्बावता पुत्र शिशपाल जिला फरीदाबाद	२५-००
श्री रमणप्रकाश आर्य मन्त्री आयसमाज बादशाहपुर जि गुडगाव	११-००
आर्यसमाज मन्दिर बादशाहपुर जिला गुडगाव	२१-००
कु निशारानी आचार्य एम ए आर्य कन्या गुरुकुल हसनपुर	५१-००
कु सरस्वती शास्त्री ,, ,, ,,	५१-००
स्वामी विजयानन्द ,, ,, ,,	१५१-००
ला सुरेशचन्द गोयल प्रधान ,, ,, ,,	५१-००
आर्यसमाज हसनपुर जिला फरीदाबाद	१०१-००
श्री रामसिंह मधुर नारनौल जिला महेन्द्रगढ	१००-००
श्री छाजूराम शर्मा ,, ,, ,	५१-००
श्री शांगेराम-राजकुमार आर्य नारनौल जिला महेन्द्रगढ	१००-११
श्री अजुध्या प्रसाद ,, ,, ,,	१०० ००
श्री द्वारका प्रसाद ,, ,, ,,	१००-००
श्री सुरेशचन्द्र वैद्य , ,, ,,	१००,००
श्री लक्ष्मीराम अग्रवाल (एडवोकेट) नारनौल जि महेंद्रगढ़	१०१ ००
श्री प्रभुदयाल जी फोरमैन नारनौल जिला महेंद्रगढ	१ ००
श्री कालूराम जी शर्मा नारनौल जिला महेंद्रगढ	१०१ ००
श्री रामनरेश जी [illegible] नारनौल जिला महेंद्रगढ	५१ ००
श्री मोतीराम जी नारनौल जिला महेंद्रगढ	१००-००
बलवीरसिंह सैनी एडवोकेट नारनौल जिला महेंद्रगढ	११-००
श्री शिवचरण गोयल नारनौल जिला महेंद्रगढ	१०-००
श्री वीरेन्द्र सु० श्री जयसिंह स्वतन्त्रता सेनानी ग्राम ढिगाना जिला जींद	२५१-००
श्री रघुवीर इन्स्पेक्टर ग्राम ढिगाना जिला जींद	५१-००
श्री सतबीर जी की माता जी ,, ,, ,,	११-००
श्री बलराज सु० रामचन्द्र ,, ,, ,,	[illegible]१-११
श्री सुरेश मिस्त्री ,, ,, ,,	२१-००
श्री रामकरण मिस्त्री ,, ,, ,,	२१-००
श्री अशोक दुकानदार ,, ,, ,,	२१-००
श्री कमवीर ,, ,, ,,	२१-००

(शेष पेज ४ पर)

आर्यजनता शराबबन्दी के नाम पर धन बटोरने वालों से सावधान रहें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एवं अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह पूर्व केन्द्रीयमन्त्री ने एक प्रैस वक्तव्य द्वारा आयजनता को सावधान करते हुए कहा है कि हरयाणा सभा द्वारा गत ८ वर्षों से चलाये जा रहे शराबबन्दी आंदोलन का अनुचित लाभ उठाने वाले तथाकथित भारतीय आर्य प्रतिनिधिसभा तथा आर्य युवक परिषद् के उन नेताओ की आलोचना की है कि इन्होने शराबबन्दी आदोलन को सफल होते देखकर इसको आड मे आर्यजनता से धन बटोरने की योजना बनाई है। वास्तव मे इनका उद्देश्य शराबबंदी करना कम तथा इसके नाम पर धनसंग्रह करना अधिक है।

इस आरोप की पुष्टि करते हुए प्रो० शेरसिंह ने प्रमाण देते हुए बताया है कि इन्होने शराबबन्दी आदोलन के इतिहास मे किसी एक भी शराब के ठेके पर धरना देकर बन्द नही करवाया। इन्होने हरयाणा की किसी भी एक ग्राम पंचायत से शराबबन्दी का प्रस्ताव करवाकर हरयाणा सरकार को नही भिजवाया। जबकि हरयाणा सभा के ५० से अधिक ग्रामो के शराब के ठेको पर धरना देकर बन्द करवाये हैं और प्रतिवर्ष २५० ग्रामो से अधिक ग्राम पंचायतों के शराबबन्दी के प्रस्ताव करवाकर हरयाणा सरकार को भिजवाये हैं इसका रेकार्ड हरयाणा सरकार के आबकारी एवं कराधान कार्यालय चण्डीगढ मे देखा जा सकता हैं।

प्रो० शेरसिंह ने इन वेशपथ के नेताओं पर धन का अपव्यय तथा हेराफेरी का एक और आरोप लगाते हुए कहा है कि ये आर्यजनता से झूठ बोलकर धनसग्रह करते हैं और उस धन का उपयोग अपने निजी कार्यों तथा राजनैतिक उद्देश्य के लिए करते हैं। आज तक इन्होंने आर्यजनता से संग्रह की गई धनराशि को किसी भी चार्टेड अकाउन्टेण्ट से आडिट करवाकर अपनी सभा की वार्षिक रिपोर्ट तथा समाचारपत्र मे प्रकाशित करवाने का साहस नही किया जबकि हरयाणा सभा प्रतिवर्ष अपना आय-व्यय चार्टेड अकाउन्टेण्ट द्वारा आडिट करवाकर अपने समाचारपत्र मे छपवाती है। तथाकथित आर्य युवक परिषद् के महासचिव श्री महेश अग्रवाल के दैनिक नवभारत मे छपवाये गए वक्तव्य को झूठ का पुलन्दा बताते हुए दावा किया है कि हरयाणा सभा ने गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ तथा करनाल सिरसा आदि मे किसी भी आर्यसंस्था की सम्पत्ति को नही बेचा। इनके विपरीत इन वेशपथियो ने गैरकानूनी रूप मे गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की लाखो रुपये की सम्पत्ति को हजारो रुपये वार्षिक किराये पर देकर संस्था को आर्थिक हानि पहुंचाई है और गुरुकुल की आय से राजनैतिक चुनाव लडकर धन का दुरुपयोग किया है।

अन्त मे सभाप्रधान ने आशा प्रकट करते हुए कहा है कि इन वेशपथियो की मीठी-मीठी बातो मे न आकर आयजनता सावधान रहेगी।

—केदारसिंह आर्य सभा कार्यालय रोहतक

भ्रष्टाचार का अड्डा

आज जिस तरह से हमारी भारतीय राजनीति भ्रष्टाचार का अड्डा बन गई है व इसका निरन्तर अपराधीकरण हो रहा है, यह हमारे लिए बहुत ही चिंतनीय व दुर्भाग्यपूर्ण बात है। वर्तमान राजनीति मे नेताओ और अपराधियो का चोली-दामन का साथ है व इनसे कोई भी पार्टी अछूती नही है। आज प्रत्येक नेता चुनाव मे हर तरह का हथकडा अपना कर किसी भी तरह विजयश्री प्राप्त करना चाहता है। अधिकांश राजनेताओ के पास आज करोडो रुपए की सपत्ति है व ये नेता चुनाव लडने पर लाखो-करोडो रुपए फूंक डालते हैं। क्योकि इन्हे पता होता है कि अगर वे जीत गए तो इससे दुगना रुपया वे बना लगे। सच तो यह है कि आज हमारे देश का लोकतन्त्र समाज के कुछ मुट्ठी भर पूंजीपतियो का दास बन गया है।

हमारे भारत मे अब नैतिकता पर आधारित राजनीति की कल्पना करना दिवास्वप्न बनकर रह गया है। राजनीति मे अब ईमानदारी के लिए कोई स्थान नही है। नैतिकता रसातल मे चली गई है। उसके बजाए राजनीति मे आज चारो ओर धन शक्ति और बाहुबल का बोलबाला है। (साभार—जनसत्ता)

—राजेश शर्मा, पतन बाजार, नादौन

वैदिक भक्ति साधन आश्रम, आर्यनगर रोहतक का ५५वां वार्षिक यज्ञ

इस वर्ष "वार्षिक यज्ञ" १६ नवम्बर से प्रारम्भ होगा तथा २१ नवम्बर महात्मा श्री ओम् आश्रित (श्री पं० लखपति शास्त्री) की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा जिसमे स्वामी दिव्यानन्द महाराज, अध्यक्ष पातञ्जल योगाश्रम, ज्वालापुर हरिद्वार, महात्मा व्यासदेव (पुरोहित), महात्मा चयन मुनि, प० विद्याव्रत शास्त्री, दयानन्द वेद महाविद्यालय (गुरुकुल गौतमनगर) दिल्ली के ब्रह्मचारीगण, प० यशपाल 'आर्यबन्धु' प० प्रणवप्रकाश शास्त्री दिल्ली, महात्मा आशानन्द भजनीक, भक्त मदनलाल पधारेंगे। यज्ञ के कार्यक्रम का महात्मा देवमुनि जी अध्यक्षता मे संचालन होगा।

—महा० प्रशान्त मुनि, महामन्त्री

औलाद वालो कसम उठालो

ना पीयेंगे शराब कभी खाये ना कबाब॥

१—आ जायेगा रूबरू वह रोज भी।
दानो के मोहताज बनोगे॥
खाली होगी गोझ भी।
मिट्टी मे मिले मौज भी।
सर पे होगा बोझ भी॥
आपके जनाब-आपके जनाब॥
ना पीयेंगे शराब

२—हम तुम्हारे सामने हैं हाथ जोडते।
तुम सुलफा गाजा भग तम्बाकू क्यों नही छोडते॥
ना मुखडा मोडते बदी से ना नाता तोडते।
यह आदत है खराब यह आदत है खराब॥
ना पीयेंगे शराब

३—यू तो हम भी खाते हैं दो रोटी चून की।
तुम भर भर पीते प्यालिया बच्चो के खून की॥
अण्डो अफ्यून की करे सूरज जनून को।
जैसे बिगडा हो नवाब जैसे बिगडा हो नवाब॥
ना पीयेंगे शराब

४—पशु-पखेरू भक्षण करते, बनकर के इन्सान।
अपने पेट को बना लिया क्यों तुमने कब्रिस्तान॥
बुरा मानेगा भगवान कहा लो सन्यासी का मान।
वरना मिलेगा अजाब वरना मिलेगा अजाब॥
ना पीयेंगे शराब कभी खायें ना कबाब।
औलाद वालो तुम कसम उठालो॥

—स्वामी प्रेमानन्द महाराज

(पृष्ठ ३ का शेष)

श्री मनफूलमा	ढिगाना जिला जीद	११-००
श्री राम सिंह मिस्त्री	” ” ”	११-००
श्री मन्नु पंजाबी ग्राम ढिगाना जिला जीद		२१-००
श्री नरेश ग्राम ढिगाना जिला जीद		२१-००
श्री विजेन्द्र ग्राम ढिगाना जिला जीद		२१-००
श्री सत्यवीर दुकानदार ग्राम ढिगाना जि० जीद		२५-००
श्री राजवीर ए०डी०ओ० ग्र म ढिगाना जि० जींद		२५-००
श्री महेन्द्र ग्राम ढिगाना जिला जीद		२१ ००
श्री डा० भगतराम ग्राम ढिगाना जिला जीद		११-००
श्री राजमहल सु० श्रीचन्द ” ” ”		१५-००
श्री मास्टर राजकुमार ” ” ”		११-००

सभी दानदाताओं का सभा की ओर से धन्यवाद। आशा है अन्य महानुभाव भी इस सूची मे नाम छपवाकर यज्ञ के भागी बनेंगे।

—रामानन्द सिंगल, सभा कोषाध्यक्ष

शराबबन्दी भजन

ठेका बन्द विरोधी विजय पताका फहराई देखी कै।
हुआ धरने का पलडा भारी या सफल कमाई देखी कै।

१- अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने धरने को नई दिशा दो।
युवा वर्ग को धर्मयुक्त, कार्य करने को नई दिशा दो।
एक बार करे क्षमा दान, पापी को चित हरणे की नई दिशा दी।
जो ना आवे पाप करने ते बाज दण्ड भरने की नई दिशा दी।
हैं चारो नीति भरपूर या कला, स्वाई देखी कै।
काटे अविद्यारूपी गाठ, धो रग जमाई देखी कै।
ठेका बन्द विरोधी।

२- सुनो पुलिस हवाला है नफरत, इन झूठे पहरेदारो से।
धरने के नौ जनो पर झूठा केस बनाया सारे झूठे लारो से।
खुलमखुला डूबा खा रिश्वत इन शराबी ठेकेदारो से।
भगत निवास, महावीर लिए गिरफत म अब है तौबा इन यारों से।
पी के पुलिस स्टाफ ने दो गालो गाव को यहो सच्चाई देखी कै।
थानेदार छुपा सिपाही, पोटा गाव की पुलिस पिटाई देखो कै।
ठेका बन्द विरोधी।

३- हरियाणावासी नर-नारी सुनो अब क्रान्ति आनी चाहिए।
रहे भोली समझ जनता को, खोली तातो आना चाहिए।
लगे मिलोभगत सरकार से स्वामी इन्द्रवेश को, अब दीपक सग बाती आनी चाहिए।
चुप बैठगे साधु दे गिरफ्तारो, बात मनभातो आनी चाहिए।
दुबारा शराब फैक्ट्री आगे, दे धरना नही मिलाई देखी कै।
जनता करे स्वागत वरना, डोर हिलाई देखो कै।
ठेका बन्द विरोधी।

४- शराब फैक्ट्री धरना अब लगे ढोग, दो धरने गाव-गाव मे।
सरकार, पुलिस और ठेकेदार के, ना आना पेचदाव मैं।
यम नियम तप आर्य वीरो, अनुष्ठान करो ना देखो आव ताव मै।
ऋषि ओमानन्द का हो पूरा सपना फिर बैठो धर्म नाव मे।
धूप छाव मे धरे स्वर छन्द, कविताई देखी कै।
महावीर बजे गन्धर्ववेदी साज, आनन्दो छाई देखी कै।
ठेका बन्द विरोधी।

प्रेषक - शराबबन्दी समिति बालसमन्द

रेडियो-वार्ता

प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य दयानन्द जी शास्त्री, एम० ए० प्रा० दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार की एक हिन्दी वार्ता गुरुनानक देव के ५२५वे जन्म दिवस हर २९ नवम्बर, १९९३ को प्रात ७ २५ बजे आकाशवाणी के रोहतक केन्द्र से प्रसारित होगी। वार्ता का शीर्षक रहेगा-'वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे गुरुनानक देव के उपदेशो की प्रासगिकता'

श्री आचार्य जी की विभिन्न विषयो पर अनेक रेडियो-वार्ताए पूर्व भी प्रसारित हो चुकी हैं। आप गुरुकुल झज्जर के सुयोग्य स्नातक हैं। गुरुकुल ने जहा अनेक विद्वान्, वक्ता, लेखक तैयार किये हैं वहा आप रेडियो-वार्ताओ मे सर्वत अग्रणी हैं।

श्री रामलाल मलिक स्मृति-अक

आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध नेता रामलाल मलिक ने विभिन्न सभाओ शिक्षणसस्थाओ, विद्यालयो, गुरुकुलो, साप्ताहिक पत्रो को सराहनीय सेवा की है। उन्होने देश, देशान्तर मे वेदप्रचारयात्राओ का भी आयोजन किया। उनकी स्मृति मे लाला रामलाल मलिक व्यक्तित्व एव कृतित्व नामक पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। आर्यजगत् के माननीय नेताओ, विद्वानो तथा लाला जी के सहयोगियो से विनम्र निवेदन है कि वे उनके सम्बन्ध मे सस्मरणात्मक लेख/कविता आदि "दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा" के नाम १५-हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ पते पर यथाशीघ्र भेजने को कृपा करे।

—डा० धर्मपाल, महामन्त्री

आर्यसमाज मोतीनगर चौक रेवाड़ी का चुनाव

प्रधान श्री प्रभुदयाल आर्य, मन्त्री श्री धर्मसिंह सैनी, कोषाध्यक्ष श्री रामचन्द्र आर्य, सयोजक श्री पोलिया प्रेमी, लेखा परीक्षक- श्री सूरतसिह।

लम्बे और स्वस्थ जीवन के लिए

शाकाहार अपनाइये

हाल मे वैज्ञानिको द्वारा किये गये शोध से यह पूर्णत स्पष्ट हो गया है कि मासाहारियो की अपेक्षा शाकाहारी व्यक्ति अधिक स्वस्थ और दीर्घायु होते हैं। इसी सदर्भ मे 'बेटेल क्रीक सिनैटेरियम' के अधीक्षक जान हरवे लाग का कथन है कि—'मासाहारियो की अपेक्षा शाकाहारी अधिक स्वस्थ होते हैं। मासाहारियों के सारे बहाने धीरे-धीरे समाप्त होते जा रहे हैं। वर्तमान मे उनका कोई भी बहाना किसी भी स्थिति मे स्वीकार नही किया जा सकता क्योकि शाकाहारी भोज्य पदार्थों में भी पौष्टिक पर्याप्त मात्रा मे उपस्थित रहते हैं।

ऐसा ही मानना कुछ और शोधकर्ताओ का भी है। लदन के केसर अस्पताल के मतानुसार 'जिन-जिन देशो मे मास तथा अडे का अधिक उपयोग होता है, वहा के निवासी अधिक रोगी होते हैं।' वस्तुत आज एक आम धारणा यह है कि जितनी अधिक मात्रा मे मास, मछली, अडे आदि का सेवन किया जाएगा, शरीर उतना ही अधिक स्वस्थ और ताकतवर रहेगा। जबकि वास्तव मे मास, कारण यह है कि जब भी किसी जानवर को मास प्राप्ति के लिए मारा जाता है, उस समय जानवर का डाक्टरी परीक्षण नही किया जाता। फलत यदि किसी रोगी जानवर का मांस हम खाते हैं तो मास के साथ साथ रोगजनक कीटाणु भी हमारे शरीर मे प्रवेश कर जाते हैं और हमें भी सक्रमित कर रोगी बना देते हैं। मास का सेवन करने वाले अधिकाश मनुष्यों मे कई खतरनाक और जानलेवा रोग हो सकते हैं। ऐसे मनुष्य को केसर, क्षयरोग, गुर्दे का रोग, उच्च रक्तचाप, त्वचा रोग, मधुमेह आदि कई जानलेवा रोग हो सकते हैं। यही नही, ये कीटाणु मासाहारी मनुष्य के सम्पूर्ण पाचन तंत्र को ही खराब कर सकते हैं। चू कि यह गरिष्ठ भोजन है, जो आसानी से पच नही सकता है तथा आतो मे सडन पैदा कर सकता है।

इसे और अधिक तर्कसगत बनाने के लिए शोधकर्ताओ की एक टीम ने अपनी रिपोर्ट मे यह स्पष्ट तौर पर कहा है कि—'शाकाहारी पशु जैसे घोडा, बैल, ऊट, हाथी, भैसा, गधा आदि मासाहारी पशु जैसे शेर, कुत्ता आदि की अपेक्षा अधिक सहनशील, परिश्रमी, शक्तिशाली तथा दीर्घायु होते हैं।'

वैज्ञानिको ने अनेक अनुसधानों के पश्चात् यह साबित कर दिया है कि एक किलो मास मे १८४० कैलोरी, एक किलो मछली मे ८८० कैलोरी, एक किलो अण्डे में १६३० कैलोरी होती है। जबकि अकेले सिर्फ एक किलो दाल मे ३५०० कैलोरी ऊर्जा सन्निहित होती है। यही नहीं, यदि दोनों का आर्थिक दृष्टि से मूल्याकन किया जाए तब भी शाकाहारी भोज्य पदार्थ ही किफायती और आसानी से सर्वत्र उपलब्ध होते हैं। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि मासाहारी भोजन की अपेक्षा शाकाहारी भोजन में अधिक तथा उच्चकोटि के प्रोटीन, खनिज तथा पोषक तत्व होते हैं।

वैज्ञानिकों ने अनेक अनुसधानो से यह स्पष्ट कर दिया है कि मासाहार करने वालों की अपेक्षा शाकाहारी अधिक स्वस्थ, परिश्रमी, सहनशील व दीर्घायु होते हैं। इसके अलावा शाकाहारी भोज्य पदार्थ किफायती और सर्वत्र उपलब्ध होते हैं। साथ ही, मासाहारी भोजन को अपेक्षा शाकाहारी भोजन मे अधिक तथा उच्चकोटि के प्रोटीन, खनिज तथा पोषक पदार्थ होते हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि मासाहारी भोज्य पदार्थ शक्ति प्रदान करने के बदले मनुष्य को और अधिक निर्बल बनाता है क्योकि इससे नाइट्रोजन—पदार्थ उत्पन्न होते हैं जो स्नायु को विषैला बना देते हैं।

उपर्युक्त बातो को डा सर टी लोड्रब्रण्टन का यह मत और अधिक स्पष्ट करता है कि मासाहारी भोज्य पदार्थ शक्ति प्रदान करने के बदले मनुष्य को और अधिक निर्बल बनाता है, क्योंकि मांस से 'नाइट्रोजन पदार्थ' उत्पन्न होते हैं, जो स्नायु को विषाक्त कर देते हैं।'

आज सबसे अधिक प्रचलन है मुर्गे के मास तथा मुर्गी के अण्डे का। इसे मासाहारी लोग बहुत अधिक पसन्द करते हैं, परन्तु इसके दुष्परिणामो से अधिकाश मासाहारी अनभिज्ञ हैं। मुर्गे का मास तथा मुर्गी के अण्डे बहुत ही गरिष्ठ भोजन हैं। यह पाचन मार्ग में तथा आत मे सडन पैदा कर देते हैं। इस सडन की वजह से सिरदर्द, मुह से दुर्गन्ध आना तथा जी मिचलाना आदि अनेक प्रकार की बीमारिया होती हैं। क्योंकि आधुनिक अनुसधानों से यह स्पष्ट होगया है कि मुर्गे के मास तथा मुर्गी के अण्डे में 'एल्ब्युमिन' नामक विषैला पदार्थ पाया जाता है, जो अतडियों में सडन पैदा करता है तथा जिगर को भी क्षतिग्रस्त करता है। अडे के बीच में पीले रंग की 'जर्दी' होती है जिसमें चूना, लोहा, विटामिन, नमक आदि होता है। यह जितना फायदेमद है उससे कहीं अधिक नुकसानदेह है। यह शरीर को अतिरिक्त ऊर्जा प्रदान करता है, जिसे आसानी से पचा पाना संभव नही होता। अत यह अतडियों में जमा होता रहता और अन्तत सडन पैदा करने लगता है।

इसका एक नया दुष्परिणाम यह सामने आया है कि मुर्गे का मास तथा अडे का सेवन करने वालो को पेचिश तथा कब्ज की शिकायत बराबर बनी रहती है। इसके ठीक विपरीत शाकाहारी भोज्य पदार्थ जहा हमारे लिए मासाहारी भोज्य पदार्थों की अपेक्षा अधिक पौष्टिक तथा शक्तिवर्धक होते हैं। वहीं सुपाच्य भी होते हैं। आधुनिक अनुसधानो से यह पता लगा है कि नौ औंस मक्खनमय दूध से शरीर को उतना 'चूना' तथा 'कैल्सियम' मिलता है जितना एक दर्जन अडे भी प्रदान नही करते। फिर भी विडम्बना देखिए कि यही मक्खनमय दूध यूरोपीय देशो मे जानवरों को पिलाये जाते हैं।

अनुसंधानों से यह भी स्पष्ट हुआ है कि यदि व्यक्ति ८ से ६ औंस दूध का सेवन करे तो उसे किसी प्रकार के अतिरिक्त पौष्टिक पदार्थों के सेवन करने की आवश्यकता नही रह जाती।

यदि गाय का दूध प्रयोग में लाया जाए तो अति उत्तम होगा, क्योंकि इसमें यूरिया, क्रियटिन, ओरोटिक एसिड, विटामिन ए, बी, सी, डी, ई, कैरोटिन, लेक्टोफ्लेविन, वसा, शक्कर, प्रोटीन आदि होता है जो काफी पौष्टिक और सुपाच्य है।

लगभग यही हाल फल तथा हरी सब्जियो के साथ भी है। यदि फलों में सेब, सन्तरा, खजूर, चीकू, अनार, गाजर, बेल आदि का प्रयोग नियमित रूप से किया जाए तो पर्याप्त मात्रा में पौष्टिक पदार्थ शरीर को मिलते रहते हैं। सब्जियों में यदि पालक, लौकी, बथुआ, भिण्डी, टिंडा आदि का प्रयोग किया जाए तो हमें विटामिन की अतिरिक्त आवश्यकता नही होगी।

इन सबके अतिरिक्त तुलसी, नीबू, [illegible], लहसुन, शहद, गुड, [illegible], मूंग, [illegible] आदि का नियमित प्रयोग किया जाए तो हमें आसानी से [illegible] से रोगों से छुटकारा मिल सकता है। यह स्पष्ट है कि शाकाहारी भोजन का प्रयोग करने से हमारे शरीर मासाहारियों की अपेक्षा अधिक स्वस्थ, दीर्घायु तथा शक्तिशाली रहता है अत जितना अधिक संभव हो शाकाहारी भोज्य पदार्थों का प्रयोग कर हम स्वस्थ और दीर्घायु बन सकते हैं। क्योंकि शाकाहारी भोज्य सुपाच्य तथा शक्तिवर्धक होते हैं।

—समीर चन्द (फेम्स)

प्यार नहीं, सत्कार नहीं

—"नाज" सोनीपत

निराधार हैं सारी बातें, जिनमें कोई सार नहीं।
नाम की वंचित है, वह, जिसमें प्यार नहीं, सत्कार नहीं ॥
इन्सानों की दुनियां में अब जीने का अधिकार नहीं।
शैतानों की सरमस्ती है जिनका कुछ आधार नहीं ॥
क्या बतलाएं ? क्या दिखलाएं ? जख्मों की गहराई को।
हरे-भरे इन घावों के, भरने के कुछ आसार नहीं ॥
जंगल-जगल, बस्ती-बस्ती, पीड़ाओं के जमघट हैं।
हाहाकार मची है बेहद जिनका कोई शुमार नहीं ॥
लूटपाट है औ उचाट है, चैन कहां हैं ? दुनिया में।
कोई बिरला होगा, जग में, जग से जो बे-जार नहीं ॥
खून के आंसू, रोना-धोना, लब पर आहें, चिल्लाना।
गम के मारों की दुनिया में कोई भी गमखार नहीं ॥
हाय-हाय और हाऊहू का शोर मचा है आलम में।
कोई नहीं है कोना खाली जिसमें चीख-पुकार नहीं ॥
बात बनानेवाले से अब बात बिगडती जाती है।
बातूनी की बातों में अब शामिल शिष्टाचार नहीं ॥
रोम-रोम में रमा हुआ है, व्यापक जर्रे-जर्रे में।
"राम कसम" कह देने से मिट सकता भ्रष्टाचार नहीं।
'आप जियो और जीने दो' के रटने से क्या होता है ?
असली जामा पहनने को, जब कोई तय्यार नहीं ॥
मानवता अब झुलस रही है दानवता की भट्टी में।
घृणा की वह आग लगी है जिसका पारावार नहीं ॥
अपने हाथों से हम अपना भाग्य बिगाड़े जाते हैं।
मानव-जीवन दुर्लभ है जो मिलता बारम्बार नहीं ॥
"नाज" ! नियाज की बातें छोड़ो, वरना, तुम पछताओगे।
बार-बार जो बात कही है, तुम समझे इकबार नहीं।

आर्यसमाज बयाना जिला करनाल का चुनाव

प्रधान कमेरसिंह आर्य, उप-प्रधान-चौ० लखीराम आर्य, मन्त्री-श्री लालसिंह आर्य, उपमन्त्री-श्री मानसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष-चौधरी गोविन्दराम आर्य, प्रचारमन्त्री-श्री लालसिंह आर्य, सयोजक-चौधरी लालसिंह दताने।

शराबबन्दी सत्याग्रह के प्रथम सर्वाधिकारी स्वामी ओमानन्द सरस्वती की आर्यजनता के नाम अपील

यदि आप हरयाणा के माथे से शराब का कलंक मिटाना चाहते हैं तो—

१. अपने निकट के शराब के ठेकों पर धरने दिलवाने में योगदान करें।

२. शराबबन्दी सत्याग्रह की तैयारी हेतु प्रत्येक ग्राम से ११-११ सत्याग्रहियों की सूची तथा ११००-११०० रु० की दान राशि निम्न पते पर भिजवाकर रचनात्मक सहयोग करें।

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ
रोहतक (हरयाणा)

सभी भाषाएं संस्कृत से मिलती-जुलती हैं — बरस्की

सोनीपत—भारत में पोलेंड के राजदूत एम के बरस्की ने दावा किया है कि विश्व की लगभग सभी भाषाएं संस्कृत भाषा से मिलती जुलती हैं और वह तथ्यों से अपने कथन को प्रमाणित कर सकते हैं।

पिछले दिनों यहां मालवीय शिक्षा सदन में अपने सम्मान में आयोजित एक स्वागत समारोह में उन्होंने शुद्ध हिन्दी में पोलेंड में बोली जाने वाली भाषा के शब्दों में संस्कृत भाषा के साथ मुकाबला करके अपनी बात को सिद्ध कर दिखाया। उन्होंने कहा कि भारत की संस्कृति तथा सभ्यता का आज विश्व में बोलबाला है क्योंकि इस सभ्यता व संस्कृति के कारण विश्व के देश प्रगति के पथ पर अग्रसर हैं परन्तु भारत के लोग अपनी मातृभाषा की बजाय अंग्रेजी के इस्तेमाल को प्राथमिकता दे रहे हैं और यह बात खेदजनक है।

उन्होंने प० मदनमोहन मालवीय द्वारा किए गए कार्यों को सराहना की और स्कूल के प्रबन्धकों का धन्यवाद किया, जिन्होंने इस देशभक्त की शिक्षाओं का प्रचार करने के लिए उनके नाम से शिक्षण संस्थान को स्थापित किया है। उन्होंने इस अवसर पर उनकी प्रतिमा पर फूलमालाएं अर्पित की तथा उनके चरण स्पर्श किए।

इस अवसर पर भारत-पोलेंड मित्रता सघ की हरयाणा शाखा के प्रधान सचिव आई डी वर्मा तथा हरयाणा चेम्बर आफ कामर्स एवं इंडस्ट्रीज के उपप्रधान देवेंद्र मुन्जाल ने भाषण किए तथा पोलेंड के साथ भारत की मित्रता के बारे में जानकारी दी।

इससे पूर्व बरस्की ने सोनीपत-बहालगढ़ रोड पर स्थित हिल्टन रबड़ इण्डस्ट्रीज तथा मुरथल के निकट इण्डो-एशियन फ्यूज गीयर्ज का निरीक्षण किया तथा वहां पर निर्मित वस्तुओं को देखा। उन्होंने इसके प्रबन्धकों को कहा कि वह अपने देश की तकनीकी जानकारी उन्हें उपलब्ध करा सकते हैं।

साभार—दैनिक ट्रिब्यून

भजन

दारू पी पी करके बन्दे, करता क्यू खोटे काम।
दारू का पीना तो बताया है हराम।

१- सुन्दर सो या काया तेरी, क्यू करता है अभिमानी।
दारू पी के भाई तू क्यू खोवे से जिन्दगानी।
नहीं किसी से रहा छानी, फिर क्यू फूके से दाम।
दारू का पीना तो।

२- पल-पल छन-छन रे बन्दे तेरी बीती जाए उमरिया।
दारू पी के मस्त रहे से और नही कुछ खबरिया।
बच्चों खातिर रे अभिमानी, कुछ तो कर इन्तजाम।
दारू का पीना तो।

३- भाई बन्धु कुणबा तेरो, मात-पिता भी शर्माता।
इस धरने पर क्रान्तिकारी सब भाइयों को समझाता।
ना आगा-पाछा देखा जाता, शीत पडो चाहे घाम।
दारू का पीना तो।

४- खाना-पीना और सोना, ये तो पशुओं के भी काम हैं।
मानव मे बस फर्क यही, यह रटे ओ३म् का नाम है।
कह पृथ्वीसिंह तू बदनाम है, तेरे लगे जाम पर जाम।
दारू का पीना तो।

प्रेषक—शराबबन्दी समिति बालसमन्द

रुकिये—शराब के सेवन से परिवार की बर्बादी होती है। अत अपने निकट के शराब ठेको पर अपने साथियो सहित धरणे पर बैठकर शराबबन्दी लागू करावें।

प्रतिज्ञा-पत्र

हे मेरे इष्ट देव परमपिता परमात्मा मैं आपको वचन देता हूँ कि साथ नम्रतापूर्वक प्रार्थना करता हूं/करती हूं कि मुझे निम्नलिखित प्रतिज्ञाएं एक-एक करके पूरी करने की शक्ति तथा आशीर्वाद दें।

१- मैं अपने जीवन मे किसी प्रकार की मादक वस्तु का प्रयोग नहीं करूं गा/नही करू गी।

२- मैं कभी भी किसी पराये स्त्री/पुरुष को बुरी नजर से नहीं देखूगा/नही देखूगी।

३- मैं जीवन मे सभी आने वाले संकटों का धैर्यपूर्वक सामना करू गा/करू गी।

४- मैं अपने हर काम को चाहे जहां भी हूं, अपना कर्तव्य मानकर सच्चाईपूर्वक तथा ईमानदारी से समय पर करू गा/करू गी।

५- मैं ऐसा कोई काम जिससे किसी को कष्ट मायूसी और ठेस लगे जैसे बलात्कार, चोरी, डकैती इत्यादि के कार्य नहीं करुगी/नहो करू गी।

६- मैं उन कामो और असफलताओ की कामना जिससे सारी मानव जाति तथा जीवजन्तुओं की भलाई तथा सेवा होगी करू गा/करू गी।

७- मैं सदा लोकसेवा अर्थात् गरीबों, अन्धो, विकलांगों, विधवाओ, यतीम बच्चो और दीन-दुखियो की सहायता बिना किसी भेदभाव के करना अपना परम धर्म और कर्त्तव्य मानूगा/मानूगी।

८- मैं अपना दर्द दूसरो से छुपाकर स्वयं बर्दाश्त करते हुए दूसरो के दुःख-दर्दों को दूर करने मे लगा रहूगा/लगी रहूगी।

९- मैं भूखे को खाना, प्यासे को पानी, नगे को कपड़ा, रोगी को दवाई जख्मी को मरहम-पट्टी, गऊ रक्षा तथा भूले को राह दिखाना तथा नेक ईमानदारी जैसे काम करता रहूगा/करती रहूंगी।

१०- मैं अपने पड़ौस और क्षेत्र मे शांति के साधन तथा लोगो से हमदर्दी मदद, उत्साहवर्धन काम करने के साथ हानिकारक अफवाहों पर काबू पाने के हर सभव सच्चे दिल से काम करता रहूंगा/करती रहूंगी।

११- मैं सभी धर्मों का सत्कार आपसी भाईचारा बनाने और जातिवाद जैसी दुर्भावनाओं को दूर करने के साथ प्रेम, कौमी एकता और अखण्डता के विचारों का ही प्रचार करने में लगा रहूंगा/लगी रहूगी।

१२- मैं जरूरतमंद लोगों के लिए खून, गुर्दों और आंखों इत्यादि के लिए प्रेरणा करता रहूगा/करती रहूगी।

१३- मैं हर प्रकार के पेशे के लोगो से अपने-अपने काम और कर्तव्य को पूरी ईमानदारी और सच्चाई से निभाने के लिए प्रार्थना तथा वृद्धो की सुशिक्षा को दिल मे बिठाकर कार्य करता रहूंगा/करती रहूगी।

१४- मैं प्रत्येक व्यक्ति के दुःखों मे शामिल होकर प्रेमभाव, सहनशीलता आपसी प्रेम बढाने के लिए हर प्रकार का त्याग, कुर्बानी देने के लिए तैयार रहूगा/रहूगी।

१५- मैं अपने देश की रक्षा, एकता, उन्नति और उच्च चरित्र बनाने के लिए हर प्रकार से बलिदान देने तो तैयार रहूगा/रहूंगी।

१६- मे किसी को गाली-गलौच न देकर मधुर भाषा में दलीलों के साथ लोगो को अपना मित्र बनाऊंगा/बनाऊगी। मैं आभूषण न बनवाकर देश को उन्नति के लिए रुपये बचत खाता में रखूगा/रखूगा।

१७- मैं सदा सच बोलने को ही अपना धर्म मानूगा/मानूगी।

१८- मैं सप्ताह मे केवल एक दिन किसी भी सत्सग मे जाकर शेष सारे दिन समय को नष्ट ना करके परिश्रम करते हुए अपनी और बच्चो की रोजी के लिए कमाई करू गा/करू गी।

१९- मैं सदा सादा रहन-सहन, खाना पीना मगर अपने विचार ऊचे व शुद्ध रखूंगा/रखूंगी।

२०- मैं यात्रियों के लिए पानी के कुएं, ट्यूब-वैल, प्याऊ और ठहरने के लिए धर्मशालाएं बनवाऊँगा/बनवाऊँगी।

२१- मैं धर्म के नाम पर पाखण्डी वैराग्यादियों तथा सम्प्रदाय जाति में द्वेष भावनाओं, भेद-भाव और फूट डालने वालों की किसी प्रकार से धन-दौलत को सहायता नहीं करू गा/नहीं करू गी।

२२- मैं बेरोजगार लोगों के लिए शिक्षा, औद्योगिक शिक्षा, खेतीबाड़ी, बागवानी इत्यादि के स्कूल खुलवाकर रोजी कमाने के काबिल बनाऊंगा/बनाऊ गी।

२३- मैं किसी प्रकार का दहेज अथवा गिफ्ट के बहाने से किसी भी वस्तु की कोई मांग नही करके अपितु मांगने वालों का विरोध करू गा/करू गी।

२४- मैं गृहस्थ आश्रम में रह कर अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी तथा शांतिमयी वातावरण बनाए रखू गा/रखू गी।

२५- मै अलग हुए दम्पत्तियो को फिर से मिलाकर उनके प्रेम और सफलतापूर्वक जीवन बनाने की चेष्टा करू गा/करू गी।

—संग्रहकर्त्ता ज्ञानचन्द धींगड़ा पोस्टल पब्लिसर
५४२, जगदीश कालोनी, रोहतक।

क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर

आर्य गुरुकुल महाविद्यालय, होशंगाबाद मे दिनांक ४ दिसम्बर से ११ दिसम्बर ९३ तक योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है, शिविरार्थी ३ दिसम्बर को सायंकाल तक शिविर स्थल पर पहुंच जायें। आर्यजगत् में वैदिक योग के ख्यातिप्राप्त विद्वान् पूज्य स्वामी सत्यपति परिव्राजक जी महाराज (आर्यवन गुजरात) मुख्य योग प्रशिक्षक होंगे।

शिविर में योगदर्शन के सूत्रों का अध्यापन तथा क्रियात्मक योग साधना सिखाने के साथ-साथ यम, नियम आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, विवेक, वैराग्य, अभ्यास, जप-विधि, ईश्वर प्रणिधान, स्वस्वामि-सम्बन्ध=(ममत्व) को हटाने जैसे सूक्ष्म आध्यात्मिक विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला जाएगा।

—भीमदेवसिंह, शिविर संयोजक/प्रबन्ध सचालक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकरी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, गोहाना रोड, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०/७३ रजि० नं० P/RTK-९१ सृष्टिसंवत् १... १४

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सभामन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २१ अंक १ २१ नवम्बर, १९९३ वार्षिक शुल्क ४०) (आजीवन शुल्क ४०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-००

शराबबन्दी आंदोलन में सर्वप्रथम श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांति ने अपने सुपुत्र की भेंट चढ़ाई—विजयकुमार

नलवा जिला हिसार में १२ नवम्बर ९३ को हरयाणा शराबबन्दी आंदोलन के कर्मठ योद्धा श्री अत्तरसिंह आर्य के होनहार सुपुत्र श्री सुरेन्द्रसिंह आर्य की स्मृति में शांतियज्ञ तथा शोकसभा का आयोजन किया गया। इसमें दूर-दूर से पहुंचे हजारों की संख्या में नर-नारी उपस्थित हुए। शान्तियज्ञ आचार्य दयानन्द शास्त्री एम ए. ने करवाया।

इस अवसर पर श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने अपने सुपुत्र की अचानक सेना में मृत्यु हो जाने का विवरण सुनाते हुए कहा कि मैं निरन्तर १८० दिन से बालसमन्द में शराब के ठेके को बन्द करवाने के लिए धरनों पर कार्यरत था। दिनांक १३-१०-९३ का प्रिय सुरेन्द्रसिंह का लिखा हुआ वायुसेना से एक पत्र प्राप्त हुआ, जिसमे लिखा था—

"पूज्यपिता जी एव माता जी, चरणस्पर्श नमस्ते।

आपके तीन पत्र मिले। पढ़कर शराबबन्दी धरने आदि के समाचार ज्ञात हुए। आशा है अब आपका धरना भी पूरा होने वाला होगा। पिताजी काफी दिन से एक मानसिक परेशानी हो गई है। अब आगे से साहस से काम लूगा। आप जल्दी-जल्दी पत्र डालकर धरने आदि की सूचना भेजते रहें। हमारे विषय में किसी प्रकार की चिन्ता न करें। हम नवम्बर के आखिर अथवा दिसम्बर के प्रथम सप्ताह में आवेंगे। हमारे यहां हर हफ्ते हवन होता है। हम उसमें श्रद्धापूर्वक भाग ले रहे हैं। मेरे साथी मदिरा तथा मांस का सेवन नहीं करते हैं। अब मेरा प्रमोशन भी हो गया है।

श्री अत्तरसिंह आर्य ने भरे हृदय से परन्तु धैर्य रखते हुए कहा कि मुझे क्या पता था यह मेरे पुत्र का अन्तिम पत्र है। मैं उसे वायु सेना मे अच्छे पद पर देखकर अपने घर की ओर से चिन्ता रहित रहता था कि परिवार के पालन-पोषण का भार सुरेन्द्र ने सम्भाल लिया है और मुझे २४ घण्टे आर्यसमाज की सेवा करने का अवसर मिल गया है, परन्तु बालसमन्द के धरने पर मेरे पास मेरा छोटा भाई पहुचा और हृदय विदारक दुखद समाचार सुनाया। मैं ईश्वर के भरोसे और अपने युवा साथियों से धरना चालू करवाने का अनुरोध करके अपने सुपुत्र की लाश तथा पुत्रवधू श्रीमती सरोज को लेने के लिए दिल्ली रवाना हो गया। दिल्ली जाकर प्रो० शेरसिंह जी से विचार विमर्श किया और वायुसेना के विमान से आसाम पहुच गया। सेना के अधिकारियो ने वायुयान के किराए का भुगतान कर दिया और दाह सस्कार में सम्मिलित होने के लिए अनुरोध किया। मैंने जोर देकर कहा कि दाह-संस्कार वैदिक रीति से अपने ग्राम में ही करना है। परन्तु उन्होंने कहा कि आप अपने किराए पर ले जा सकते हैं।

अत मैं सुरेन्द्र आर्य की मित्रमण्डली से १६ हजार रुपए उधार लेकर वायुयान से १ नवम्बर की रात्रि को नई दिल्ली तथा आधी रात्रि को टैक्सी करके नलवा आगया और २ नवम्बर को हजारों ग्रामवासियों तथा आर्य कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से पूर्ण वैदिक रीति से अन्त्येष्टि संस्कार सम्पन्न किया। अपने सगे सम्बन्धियो तथा दुखी परिवार को समझाने-बुझाने में लग रहा हूं कि ईश्वर की न्यायव्यवस्था के सामने सिर झुका कर मत रोवे तथा मुझे भी मत रोने देवें। मैं ने शराबबन्दी का कार्य पूरा करने के लिए यदि इससे अधिक दुख भोगने पडे तो तैयार हूं।

गुरुकुल आर्यनगर के आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री ने सुरेन्द्र को श्रद्धांजलि देते हुए शोक संतप्त परिवार को समझाया कि यह बलिदान की मृत्यु है। वीर अभिमन्यु, वीर हकीकतराय की भांति यह शराबबन्दी के लिए बलिदान हुआ है। सुरेन्द्र अपने शुभकर्मों के कारण इस परिवार के नाम को अमर कर गया है।

प्रसिद्ध आर्य पत्रकार श्री प्रतापसिंह शास्त्री ने कहा कि हमने अपने आपको भगवान् कहलानेवालो को अपने पुत्रो के निधन पर बिलखते सुना है। परन्तु श्री अत्तरसिंह आर्य उपदेशक प्रणाली के अनुसार एक सौ वर्ष के बाद प० लेखराम की भांति अपने नवयुवक सुपुत्र की मृत्यु पर एक भी आसू न बहाकर हजारो नवयुवको को व्यसन से बचाने की चिंता कर रहे हैं। जिस प्रकार ऋषि दयानन्द (मूलशंकर) अपने पूर्वजो की मृत्यु से विचलित नही हुए, उसी प्रकार क्रांतिकारी भी अपने पुत्र की मृत्यु हो जाने पर धर्य तथा साहस का दामन पकडे हुए हैं। ये ऋषि दयानन्द के सच्चे अनुयायी हैं।

हरयाणा शराबबन्दी समिति के सयोजक श्री विजयकुमार जी जो स्वय अस्वस्थ होते हुए भी इस शोक सभा में सम्मिलित हुए, ने श्री अत्तरसिंह आर्य के दुखी परिवार को सात्वना देते हुए कहा कि वास्तव में यह हृदय विदारक मृत्यु है। पिता तथा पुत्र दोनो ही राष्ट्र रक्षा तथा सामाजिक बुराइयो को दूर करने मे लगे हुए थे। परमात्मा ने एक होनहार युवक को अपने पास बुला लिया। यदि श्री क्रांतिकारी जी अपने सुपुत्र के रोगी होने की सूचना मिलने पर उपचार हेतु उसके पास चले जाते तो सम्भव है वे निरोग हो जाते। परन्तु वीरक्षत्री क्रांतिकारी ने शराबबन्दी धरना बन्द न हो जावे, इसकी चिंता को प्राथमिकता देकर शराबबन्दी आंदोलन के इतिहास में अपने सुपुत्र की प्रथम भेंट चढाई है। हम इस परिवार का कभी भी ऋण नही उतार सकेंगे। इन्होंने अपने जीवन में चिन्ता के स्थान पर चिन्तन किया है। इन्होंने अपना क्रांतिकारी नाम सार्थक करके दिखा दिया है। ये एक नवीन इतिहास का निर्माण कर रहे हैं। सुरेन्द्र राष्ट्र रक्षा यज्ञ मे अपनी आहुति दे गया है।

सभा के मन्त्री श्री सूबेसिंह ने सभा प्रधान तथा स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के सन्देश सुनाते बताया कि वे अचानक अस्वस्थ हो जाने के कारण यहां नही आ सके। उनकी आज्ञा के अनुसार मैं श्री क्रांतिकारी को वायुयान से अपने बलिदानी पुत्र को घर पर लाने का खर्च १६ हजार रुपए की थोडी सी सहायता देने आया हूं। मैने आज तक इतिहास की पुस्तको तथा आर्यसमाज के प्रचारको द्वारा बलिदान की गाथाएं सुनी थी। परन्तु हमारी सभा के एक उपदेशक ने अपने पुत्र का

(शेष पेज ४ पर)

फैशन : प्रगति है या पतन ?

—निधि गुप्ता—

'फैशन' अर्थात् 'प्रचलन' यही हो सकता है पाश्चात्य संस्कृति से भारतीय सस्कृति मे सक्रमित इस शब्द का निकटतम पर्याय। मूलत फैशन शब्द का प्रयोग अत्यन्त सीमित अर्थों में मात्र वस्त्राभूषणों में प्रचलन के लिए किया जाता रहा है किन्तु विगत कुछ वर्षों मे इसकी अर्थगत सीमाए अत्यन्त विस्तार पा गई हैं। सामाजिक आचार-संहिता हो या सास्कृतिक मूल्य, शिक्षा हो अथवा खान-पान जीवन का कोई भी क्षेत्र इसके प्रभाव से अछूता नही रहा।

आज के मनुष्य के अधिकाश क्रिया-कलाप फैशन के अनुसार होते हैं। कुछ भी करने से पूर्व 'समाज क्या कहेगा ?' के साथ-साथ वह यह भी देखता है कि यह फैशन के अनुसार है अथवा नही क्योकि 'समाज क्या कहेगा' का जुडाव फैशन से भी काफी गहरे तक हो गया है। समाज की प्रतिक्रिया निर्धारित करने मे फैशन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मासाहार, मद्यपान, धूम्रपान, घर मे तमाम उपभोक्ता सामग्रियों का सग्रहण, बाजार में निर्मित खाद्य-पदार्थों का प्रयोग अक्सर महज फैशन के लिए होता है। विशुद्ध प्रतियोगी परीक्षाओं के दृष्टिकोण से प्रकाशित होने वाला पत्रिकाए पढना, अग्रेजी पत्र-पत्रिकाओ को प्राथमिकता, यहा तक कि पढाई के लिए विषयो का चुनाव भी आज की पीढी अक्सर फैशन के अनुसार करती है। आज के युग मे पैदल चलने का फैशन नही है, थोडा सा सम्पन्न व्यक्ति अपनी आर्थिक क्षमताओं के अनुसार वाहन की कामना अवश्य करता है। पाश्चात्य धुनो पर अन्धाधुध थिरकना, क्लबो में जाना, अग्रेजी फिल्में देखना अक्सर समाज की चाल अर्थात् फैशन से कदम मिलाकर चलने के लिए ही होता है। 'किटी' पार्टिया आज की महानगरीय सस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण अग है और इनमे सम्मिलित होना फैशन में होने का प्रमाण। उच्च वर्ग की महिलाओ के मध्य समाजसेवा का कार्य भी फैशन के तौर पर ही प्रचलित है।

आज फैशन ने अपनी सीमाओं मे भी काफी विस्तार कर लिया है। पहले जहा उच्च वर्ग मे ही इसे अधिक महत्त्व प्राप्त था, वहीं आज मध्यम और निम्न वर्ग मे विशेषकर महानगरीय क्षेत्रों मे भी इसे काफी लोकप्रियता प्राप्त हो चुकी है। पहले फैशन के साथ चलने का शौक सिर्फ उच्च वर्ग में ही हुआ करता था पर आज यह शौक बीमारी बनकर अन्य वर्गों मे भी अपने पाव पसार चुका है।

फैशन के इस प्रकार बढते दायरे का एक महत्त्वपूर्ण कारण यह है कि आज फैशन के अपनाने न अपनाने मात्र से किसी को फारवर्ड अथवा बैकवर्ड ठहराया जा सकता है। इसलिए जो फैशन के अनुसार नही चल पाते अथवा नही चलना चाहते, उन्हे बैकवर्ड ठहरा दिया जाता है।

प्रभुतासम्पन्न होने के कारण समाज में फैशन का निर्धारण प्राय उच्च वर्ग ही करता है। मध्यम व निम्न वर्ग में सदैव ही उच्च वर्ग मे प्रवेश की कामना स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहती है, उससे किसी भी प्रकार चाहे बाह्य तौर पर हो सही सान्निध्य पाने, तादात्म्य का अनुभव करने की कामना विद्यमान रहती है, अत वे सहज ही बैकवर्ड कहलाने से बचने के लिए उसके अनुसरण को उद्यत रहते हैं। किसी गुण विशेष के कारण नहीं वरन् यदि कुछ विशिष्ट प्रचलनो को अपना लेने मात्र से उन्हे उच्च वर्ग में क्षण भर को भी प्रवेश मिल सकता हो तो वे इससे चूकना नहीं चाहते और मात्र इस कारण से समाज मे अनेक बुराइया, निकृष्ट आचार व्यवहारों को प्रश्रय मिल रहा है। इसलिए उच्च वर्ग के आचार व्यवहार अब मध्यम वर्ग में धीरे-धीरे प्रवेश करते चले आ रहे हैं। बच्चे को कावेंट में पढाना और पत्नी का गिटपिट अग्रेजी बोलना भी समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करने के साधन बन जाते हैं। सर्वगुणसम्पन्न होने के बावजूद यदि पत्नी में फैशन के अनुसार रह सकने की योग्यता नही होती तो वह पति की हीनभावना का कारण बन जाती है।

आज के युग की फैशन-परस्ती से एक ऐसी सस्कृति को प्रश्रय मिल रहा है जिसमे दिखावे तथा औपचारिकता को उच्च स्थान प्राप्त है। अन्तरगता का लोप होता जा रहा है। फैशन का उपयोग यदि किसी प्रकार की आत्मिक सन्तुष्टि के लिए हो रहा हो तो भी उसे इस प्रकार महत्त्व दिए जाने की बात कुछ समझ में आती है किन्तु यहा तो दिखावा ही सबसे बडा सत्य है, आत्मिक सतुष्टि जैसी बात को उससे जोडकर देखा ही नही जाता। फैशन है दिखावे के लिए—नवीनतम डिजायनो के आकर्षक परिधान अथवा उपभोक्ता सामग्रियों का होना इसलिए आवश्यक है कि इनसे फैशन के अनुसार चलने का प्रमाण-पत्र दिखाकर सामाजिक प्रतिष्ठा मोल ली जा सकती है। इन सामग्रियो से मिलने वाली सुविधाए, अपनी अभिरुचि, मानसिक सन्तुष्टि आदि तो गौण है। प्राथमिकता तो फैशन की है।

'चलन' का महत्त्व तो हर कालखण्ड में होता रहा है किन्तु इस प्रकार सामाजिक मापदण्डो के अन्तिम निर्धारक की प्रतिष्ठा उसे प्रथमतः इसी युग मे मिली है। पहले जहा यह दायित्व सस्कृति पर था वहीं अब यह फैशन पर आगया है। यही नहीं, फैशन तो अब सांस्कृतिक मूल्यों का निर्धारण भी करने लगा है। इस कारण जो सांस्कृतिक मूल्य फैशन के अनुसार होते हैं वे तो अपना अस्तित्व बनाए रख सकते है किन्तु जो उनके अनुसार नही होते वे अपना अस्तित्व खो बैठते हैं। नमस्कार और राम-राम जैसे सम्बोधनो को पोसती, आन्तरिक ऊष्मा से परिपूर्ण भारतीय संस्कृति इसी कारण हाय-हैलो को नितात औपचारिक आधुनिक संस्कृति को अपना रही है। इसमें व्यर्थ का दिखावा, आडम्बर अधिक होता है। शास्त्रीय विधि जिसे सर्वाधिक समय मिलना चाहिए मात्र १—२ घण्टे में ही तुरत-फुरत निपटा दी जाती है।

फैशन आधुनिकता का पर्याय हो गया है। आम आदमी के लिए फैशन में रहना शर्म की ही बात नहीं असभ्यता की निशानी भी है। हमारे देश मे तो पाश्चात्य सस्कृति अपनाना भी फैशन की बात हो गई हैं, फिर भला भारतीय सस्कृति के सिर पर खतरा क्यों न मण्डराएगा ?

फैशन का सर्वग्रासी प्रभाव औचित्य-अनौचित्य की सीमाओं से बहर जा चुका है। हम तथाकथित आधुनिक मनुष्य कहां भिन्न हैं अपने उन अंधविश्वासी पूर्वजो से ? हम भी तो भेडचाल चल रहे हैं। क्या इसी का नाम प्रगति है ?

साभार—पंजाब केसरी

'शाकाहारी अण्डा' एक भ्रामक नाम एवं फरेब है

मुर्गी अण्डे देती है २१ दिन तक सेयती है फिर उसमें से बच्चे निकलते हैं एक महीने मे स्वाभाविक रूप से १४, १५ अण्डे लगभग देती है। अण्डे खाने वाले मनुष्य अण्डा पैदा होते ही छीनकर खाते रहे हैं। जीवहत्या बराबर करते रहे हैं। ये तो एक प्रकार के व्यक्ति हैं, दूसरे प्रकार के वे व्यक्ति हैं जो इनका उत्पादन कर अधिकाधिक पैसे कमाना चाहते हैं ये व्यक्ति उन व्यक्तियो के समान हैं जो दो या तीन वर्ष में भैंस को अधिकाधिक इसप्रकार का चारा खिलाकर उसके सम्पूर्ण जीवन की ताकत को थोडे समय मे दूध के रूप में अधिक से अधिक प्राप्त करके अधिक से अधिक पैसा कमाते हैं। उसके बाद चाहे भैंस दूध दे या न दे। या उसमे घृत की मात्रा बेशक कम हो लेकिन दूध से पैसा वसूल कर लेते हैं।

यह प्रवृत्ति अण्डो का उत्पादन करने वाले मुर्गी-फार्मों के संचालकों मे भी आयी। जिसके कारण उन्होंने निम्नलिखित स्वरूप अपनाया -

मुर्गी-फार्मों में मादा बच्चों को अलग-अलग कर लिया है। मादा बच्चों को शीघ्र जवान करने के लिए एक खास खुराक दी जाती है और इन्हें २४ घण्टे तेज प्रकाश में जगकर सोने नहीं दिया जाता ताकि ये दिन-रात खा-खाकर जल्दी ही रज स्राव करने लगे और अण्डा देने लायक हो जाये अब इन्हें जमीन की जगह तंग पिंजरो में रखा जाता है इन पिंजरों में इतनी अधिक मुर्गियाँ भर दी जाती हैं कि वे पंख भी नही फडफडा सकती। तंग जगह के कारण आपस में चोंचे मारती हैं, जख्मी होती हैं, गुस्सा करती हैं, कष्ट भोगती हैं। जब मुर्गी अण्डा देती है तो अण्डा जाली में से किनारे पडकर अलग हो जाता है और उसे अपने अण्डे सेयने की प्राकृतिक भावना से वंचित रखा जाता है ताकि वह अगला अण्डा शीघ्र दे।

अत्याचार यहां तक सीमित नही है चोंचे काट दी जाती है। मुर्गी की इस तडफा-तडफी में चूजों की जान भी चली जाती है। आधा घण्टे बाद उन मुर्दा चूजों को मशीनी गर्मी से सुखाकर चूर्ण बनाकर मुर्गियों को आहार के रूप में दिया जाता है। इसके अतिरिक्त हिंसक कोटि का आहार जैसे -

बोन-मील (अस्थि) ब्लड-मील (रक्त आहार), फ्लश-मील (विष्ठा आहार) मीट-मील (मांसाहार), फिश मील (मत्स्याहार) आदि दिया जाता है। परिणामस्वरूप मुर्गी कम से कम समय में अधिक अण्डे मुर्गे के संसर्ग के बिना भी देने लग जाती है। इसकी पूर्ति के लिए मुर्गियों को विशिष्ट हार्मोंस और एग-फार्म्युलेशन के इन्जक्शन भी दिए जाते हैं ताकि मुर्गियां लगातार अण्डे दे सके। अण्डों से चूजे जल्दी बाहर आ जायें इसके लिए उन अण्डो को इक्यूबेटर (सेटर) में डाल दिया जाता है।

उपरोक्त प्रकार के विवरण से पता चलता है कि आधुनिक मशीनी स्वाभाविक अण्डों से अलग होने के कारण ही "शाकाहारी अण्डे" इस नाम से कहे जाने लगे। क्योंकि इनके उत्पादन मे हर बार मुर्गे के संसर्ग की आवश्यकता नही रहती। क्योंकि मुर्गे के शुक्राणु लम्बी अवधि तक मुर्गी में पड़े रहते हैं (लगभग) ६ मास तक) लेकिन वे होते सजीव ही हैं।

इस प्रकार अपनी निष्ठा रखनेवाली, अपने मृत बच्चो का पाऊडर खानेवाली, गला सडा खाद्य खानेवाली, दुःख दर्दों से पीड़ित मुर्गी द्वारा प्राप्त अण्डे ज्यों-ज्यो अपनी स्वाभाविक स्थिति से निकृष्ट होते गए त्यों त्यों अण्डे खानेवालों और अण्डे के व्यवसायियो ने उन्हें 'अहिंसक शाकाहारी' वेज आदि भ्रामक नामों से बताना शुरू कर दिया है। जिस प्रकार नकली घी (चर्बी मिश्रित डालडा घी) बेचनेवाला असली घी का बोर्ड लगाकर ही उसे बेच पाता है और खूब पैसा कमाता है। उसी प्रकार घृणित अण्डो के लिए 'शाकाहारी' अण्डा एक भ्रामक नाम देकर जन-साधारण से फरेब करता है।

जिसके कारण अण्डे खानेवालो को टोकने पर अपना दोष छिपाने के लिए यही बहाना बनाते हैं कि हम तो शाकाहारी अण्डे खाते हैं। परिणामस्वरूप धर्मभीरु लोग भी अपने ही घर में खुल्लम-खुल्ला धडाधड निस्संकोच होकर खाने लग गए हैं। लेकिन वास्तव मे वे स्वयं से फरेब कर रहे हैं वो भी केवल जिह्वा के स्वाद मे।

हम सज्जनो का कार्य वास्तविकता को प्रस्तुत करना है। क्योंकि मनुष्य का जीवन सत्य और असत्य (दूध का दूध पानी का पानी) करने कराने के लिए है न कि वृथा वाद-विवाद के लिए।

जहाँ प्राकृतिक रूप से उत्पन्न अण्डा मानव के लिए अत्यन्त हानिकारक होने के कारण मनीषियो ने उसे अभक्ष्य कहा है वहां आधुनिक मशीनी अण्डे मानवता के पतन को कहा तक ले जा सकते हैं, उसकी कल्पना नही की जा सकती है।

शाकाहारी अण्डो के भुलावे मे आकर ये घृणित मशीनी अण्डे खाकर ऋषि-मुनियो की भारतीय सन्तान निम्नलिखित रोग एवं उनसे उत्पन्न हानियो से नही बच सकती।

रोग :— हृदयाघात (हार्ट अटैक), आंत का कैंसर शरीर मे अति अम्लता गठिया, जोडो में थकके जमना, एलर्जी, पित्ती, दमा रोग, हाई ब्लड प्रेशर, लकवा पाचन शक्ति मे विकार, डी डी टी की अधिकता एवं उससे अनेक रोग, कोलेस्ट्रोल की अधिकता एवं इससे उत्पन्न विविध रोग आदि।

अण्डे मांस से केवल व्याधियाँ (शारीरिक रोग) ही नही बल्कि आधिया (मानसिक रोग) भी बहुत बढ रहे हैं जैसे —

तानाशाही, गुण्डागर्दी, अश्लीलता, बलात्कार, दंगे कत्ल हगामें भ्रष्टाचार चरित्र-हीनता आदि ससार भर मे फैल रहे हैं।

मुझे पूर्ण आशा है कि उपरोक्त विवरण पाठको मे सभी भ्रांतियो का निवारण कर सकेगा। सफलता की प्रतीति मे ही मै अपने लघु प्रयास को निरन्तर जारी रखूगा।

मंगाशरण आर्य, आर्योत्कर्ष वाचनालय,
संचालक-चरित्र-निर्माण-मण्डल
ग्राम शाहबाद मोहम्मदपुर नई दिल्ली-४५

अश्लील फिल्मो पर रोक लगाने की माग

रोहतक यूनिवर्सिटी कालेज छात्र सघ के नव निर्वाचित सचिव बसंतकुमार ने जिला प्रशासन से माग की है कि वह जिले के सिनेमाघरो में चल रही अश्लील फिल्मो पर रोक लगाए और विद्यार्थियो को पहचान-पत्र पर रियायती दरो पर टिकट दिलवाने की व्यवस्था करे।

बसन्तकुमार ने प्रशासन को चेतावनी दी है कि यदि इस ओर शीघ्र कदम नही उठाया गया तो छात्र अपनी इन मागो के समर्थन में आंदोलन चलाने पर मजबूर होंगे।

उन्होंने जिले के सभी नव-निर्वाचित छात्र सघ पदाधिकारियों का आह्वान किया है कि वह मिलकर छात्र समस्याओ और भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाये।

शराब पीना पीकर !

चम्बा—राज्य सरकार प्रदेश के विभिन्न भागों में स्थित लोक निर्माण विभाग के विश्रामगृहो के दुरुपयोग को रोकने मे विफल रही है। इन चुनावों के दिनों में तो अधिकतर विश्रामगृह राजनैतिक दलो के कार्यालय बने हैं। प्रदेश के सभी विश्राम-गृहो के प्रदेश द्वारो पर बडे-बडे अक्षरों में लिखा है 'शराब पीना मना है।' पर इसकी परवाह कौन करता है। अगर शराब पीने पर आपत्ति उठायी जाये तो जवाब मिलता है 'शराब पीना मना है, पीकर आना तो नही। लगता है प्रत्याशियो के समर्थक इन दिनों नशे मे इस कदर चूर रहते हैं कि आखिर क्या लिखा है उन्हे पता ही नही चलता।

साभार—दैनिक ट्रिब्यून

वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज कासण्डी (सोनीपत) का वार्षिक महोत्सव महर्षि-दयानन्दनिर्वाण तथा दीपावली के उपलक्ष्य में ७ से १३ नवम्बर १९९३ तक सोत्साह मनाया गया। स्वामी वेदरक्षानन्द जी गुरुकुल कालवा के ब्रह्मत्व में प्रातः ७ से १० बजे तक यज्ञ तथा वेदोपदेश का कार्यक्रम चला। रात्रि में दो दिनों तक श्री ओमप्रकाश जी (मुख्याध्यापक सेवा-निवृत्त) के भजनोपदेश द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार हुआ जिसमें माता, पिता, आचार्य, अध्यापकों के क्या कर्त्तव्य हैं और पुत्र शिष्यों के क्या कर्त्तव्य हैं यह विस्तार से बतलाया। इसी प्रकार अंतिम तीन दिनों में उत्तर भारत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री प० रामनिवास जी ने महर्षि दयानन्द गुणगान, वीरों की गाथाएं, नारी शिक्षा तथा बीड़ी हुक्का, शराब, मांसादि नशीले पदार्थों का जोरदार खण्डन किया। सभी समाज के अधिकारियों ने महोत्सव की सफलता के लिए अतीव पुरुषार्थ किया तथा ग्रामवासियों ने भी तन-मन-धन से सहयोग प्रदान किया।

वानप्रस्थी महानन्द, आर्यसमाज
कासण्डी (सोनीपत)

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

(पृष्ठ १ का शेष)

बलिदान देकर साक्षात् उदाहरण प्रस्तुत कर दिया। मैंने बालसमन्द के शराब के ठेके पर अपनी आंखों से सुरेन्द्र जैसे सैकड़ों आर्य युवकों को दिन-रात कार्य करते हुए देखा है। ये क्रांतिकारी के अथक प्रयास तथा लगन का ही परिणाम है। ये युवक शराबबन्दी करने के लिए मृत्यु से नहीं डरते। परन्तु अनुशासन में रहकर रचनात्मक योगदान शांतिपूर्वक कर रहे हैं। यदि इस प्रकार के नवयुवक प्रत्येक गांव में तैयार हो जावें तो वर्षभर में हरयाणा में शराबबन्दी हो सकती है।

सर्वहितकारी के सम्पादक आचार्य वेदव्रत शास्त्री ने वेद मन्त्रों के आधार पर श्रद्धांजलि देते हुए क्रांतिकारी के वीर परिवार को सान्त्वना दी। महात्मा नारायण स्वामी जी द्वारा लिखित पुस्तक मृत्यु और परलोक पढ़ने का सुझाव दिया। सभा के आदर्श महोपदेशक प० सुखदेव शास्त्री ने सभा के उपदेशकों की ओर से श्रद्धांजलि दी।

गुरुकुल धीरणवास जिला हिसार के कुलपति स्वामी सर्वदानन्द जी ने इस अवसर पर अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए श्री क्रांतिकारी को लोहपुरुष बताया। श्री क्रांतिकारी को आज शोक सभा करने की इच्छा केवल सहानुभूति प्राप्त करने की नहीं है। वे शोक सभा के आयोजन पर बाहर से आने वाले विद्वानों तथा नेताओं से शराबबन्दी सत्याग्रह चालू रखने का मार्गदर्शन चाहते हैं।

हरयाणा शराबबन्दी सत्याग्रह के द्वितीय सर्वाधिकारी स्वामी रत्नदेव जी महाराज ने श्रद्धांजलि देते हुए कहा श्री क्रांतिकारी की वीर धर्मपत्नी सुनहरी देवी, पुत्रवधू श्रीमती सरोज तथा उनका छोटा पुत्र राजवीर इस संकट की घड़ी में भी शराबबन्दी संघर्ष में यथापूर्व सहयोग देंगे। मुझे आशा है कि इनके परिवार से प्रेरणा लेकर अन्य आर्य परिवार भी हैदराबाद तथा हिन्दी रक्षा आंदोलन की भांति शराबबन्दी को तन-मन धन देकर स्वामी ओमानन्द जी तथा प्रो० शेर सिंह के नेतृत्व में पूरा सहयोग देंगे।

आर्यसमाज बालसमन्द के प्रधान श्री रामजीलाल ने श्री क्रांतिकारी का आभार प्रकट करते हुए कहा कि आर्यसमाज बालसमन्द के गत ७० वर्ष में जो जागृति नहीं ला सका, वह क्रान्तिकारी जी ने ७ वर्ष में संघर्ष करके सारे ग्राम तथा गुहाण्ड में समाज सुधार के लिए जागृति उत्पन्न की है। इन्होंने बालसमन्द ग्राम को ऐतिहासिक बना दिया है। युवा आर्य नेता श्री महावीरसिंह ने बालसमन्द में श्री क्रान्तिकारी के नेतृत्व में कार्य करने का वचन दोहराया।

इनके अतिरिक्त श्रद्धांजलि देने वालों में चौ० चरणसिंह कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति डा० सर्वदानन्द आर्य, हरयाणा के पूर्वमन्त्री श्री जगन्नाथ जी, ला० बलवन्तराय तायल, श्री हरिसिंह सैनी दयानन्द कालिज के प्राध्यापक श्री रामविचार, श्री शमशेरसिंह डाबड़ा, श्री पूर्णसिंह डाबड़ा, मा० शेरसिंह प्रधान अध्यापक संघ हरयाणा, मा० हरिसिंह, मा० अमरसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज धमाना, सूबेदार हरचन्द प्रधान आर्यसमाज बालावास, श्री हेतराम प्रधान आर्यसमाज सरसाना, श्री महेन्द्रसिंह सरपंच नलवा, श्री तुलसीराम आर्य पूर्व सरपंच सहाड़वा, कप्तान चन्दगीराम सरपंच भोजराज, डा० बारूराम मलिक धमरा, डा० सत्यवीर ढाणीपाल, चौ० देवव्रत प्रधान आर्यसमाज हांसी श्री सीताराम आर्य, सेठ रामधारीमल आर्य, पं० रविदत्त शास्त्री (हिसार) जिला भिवानी शराबबन्दी समिति के संयोजक प्रि० बलबीर सिंह, श्री महावीर प्रसाद प्रभाकर बवानीखेड़ा, श्री महावीरसिंह सरपंच कवानी, श्री धर्मसिंह सरपंच बालसमन्द आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

शोकसभा के अन्त में श्री प्रतापसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने आर्य नेताओं को विश्वास दिलाया कि मैं १८ नवम्बर तक अपने घर की व्यवस्था करके बालसमन्द के ठेके पर पहुंचकर यथापूर्व संघर्ष करूंगा आपने हरयाणा के मुख्यमन्त्री से निवेदन किया कि बालसमन्द का ठेका यथाशीघ्र बन्द करके हमारी मांग पूरी करें, अन्यथा इसे बन्द करवाने के लिए जो भी पग उठाया जावेगा, उसका उत्तरदायी वे होंगे।

—केदारसिंह आर्य

ऋषिनिर्वाण दिवस की झलक

यह सर्वविदित है कि युग-प्रवर्तक, अद्वितीय, शक्तिपुंज, परमपूज्य महर्षि दयानन्द जी सरस्वती महाराज सभी के लिए वेदों का अमर पथ-प्रदर्शन करके ज्ञान, कर्म और उपासना की त्रिवेणी प्रवाहित करते हुए स्वयं ज्योतिपर्व दीपमाला की शाम को इस धरती से विदा होकर ज्योति मे ज्योति के समान महाप्रयाण कर गए। महान् ऋषिवर के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य मे दिनाक 13-11-93 दीपावली के दिन आर्यसमाज बुवानिया जिला महेन्द्रगढ तथा श्री मगलजयमोर आध्यात्मिक ज्ञान आश्रम खेडकी में यज्ञ-उत्सव का आयोजन किया गया।

यज्ञ की व्यवस्था श्री प्रभातीलाल जी आर्योपदेशक (प्रधान आर्यसमाज) एव श्री माधोप्रसाद जी आर्य पुरोहित की प्रधानता मे की गई। इस अवसर पर निर्णय लिया कि महर्षि दयानन्द जी सरस्वती द्वारा दिखाए मार्ग पर चलकर समाज से सभी बुराइयो को समाप्त करके ही हम ऋषि-ऋण से मुक्त हो सकते हैं। महात्मा लालचद जी ने पूज्य महर्षि दयानन्द जी के सिद्धातो एव आर्यसमाज की उपादेयता को सम्पूर्ण विश्व के लिए इस समय आवश्यक बताया क्योंकि आज विध्वस की तरफ जा रहे ससार को निर्माण की आवश्यकता है।

महर्षि जी का निर्वाण दिवस इसी निर्माण के लिए हमें आहूत कर रहा है। इन्होने अपने गाना मे महर्षि जी के अन्तिम उपदेश को पद्यबद्ध करके सुनाया। महर्षि जी ने अजमेर नगर मे आर्यों को एकत्र करके अन्तिम समय मे जो अमर सन्देश दिया, जो अमृतमय उपदेश दिया वह इस प्रकार है—

॥ गाना ॥

अब आर्यों मेरी नमस्ते है, इस जग से अब मैं जाता हू ॥ टेक ॥
घृत चन्दन समिधा लेकर दूर नगर से ले जाना है ॥
अन्त्येष्टि सस्कार कर वहां शरीर मेरे को जलाना है ॥
वृद्ध बाल सुनो, कर ख्याल सुनो, मैं जो उपदेश सुनाता हू ।1।
उपजाऊ भूमि मे आर्यों गड्ढा एक बनाना है ॥
हड्डियो सहित भस्म मेरी को पृथ्वी बीच दबाना है ॥
नही स्वार्थ हो, परमार्थ हो, मैं परोपकार फैलाता हू ॥ ।2।
बना समाधि ना पाखण्ड करना आप मेरे श्मशान पर ॥
उसकी लागत धनराशि लगाना किसी होनहार नौजवान पर ॥
यह पूजा जड, होजा गडबड, मैं जड-पूजा छुडवाता हू ॥ ।3।
और नही चाहता यह चाहता मैं करना उन्नत देश को ॥
देकर यह उपदेश ऋषिवर रटने लगने भुवनेश को ॥
हुए बोल बन्द, कह लालचन्द, यह रोना है, नही गाता हू ॥ ।4।

सम्प्रेषक—महात्मा सुशीलदेव
श्री मगल भवन खेडकी (महेद्रगढ)

पुरोहित की आवश्यकता है

1 आर्यसमाज मन्दिर जैकबपुरा गुडगाव छावनी (हरयाणा) को एक पुरोहित की आवश्यकता है। आवास निवास की सुविधा नि शुल्क रहेगी। दक्षिणा योग्यतानुसार होगी।

नोट मन्त्री आर्यसमाज जैकबपुरा गुडगाव से मिलकर या पत्र व्यवहार से सम्पर्क करें।

—धर्मसिंह शास्त्री
मन्त्री आर्यसमाज

आर्यसमाज राजपुर तहसील गन्नौर जिला सोनीपत के लिए एक पुरोहित चाहिए जो वैदिक सस्कार करवा सके। आवास तथा भोजन की व्यवस्था की जावेगी।

—धर्मसिंह आर्य, मन्त्री आर्यसमाज
राजपुर, जिला सोनीपत

आर्यसमाज सैक्टर-9 पंचकूला का वार्षिक उत्सव

दिनाक 25-10-93 से 31-10-93 तक उत्साहपूर्वक मनाया गया इससे पूर्व 21, 22, 23 अक्तूबर को प्रात प्रभातफेरी निकाली गई जिसमे आर्यबन्धु, माताए, बहने और युवक बडे जोश के साथ सम्मिलित हुए। यह प्रभातफेरी पचकूला नगर के विभिन्न सैक्टरो मे घूमी जिसमें आर्यजन भक्ति गीत गाते तथा जयघोष लगाते रहे।

25 अक्तूबर से 28 अक्तूबर तक प्रात गायत्री महायज्ञ होता रहा जिसमे बार-बार दम्पति प्रतिदिन यजमान बनते रहे। विशेषकर नवयुवको तथा नवयुवतियो ने इसमे काफी रुचि ली।

इसी प्रकार 25 से 29 अक्तूबर तक साय श्री सोहनलाल जी पथिक के भक्ति गीत होते रहे और डॉ० आर्य भिक्षु जी के वेद-उपदेश होते रहे।

इस सम्मेलन में आचार्य नरेश आर्य के अतिरिक्त डॉ० मधुकर एव डॉ० जयभारती के प्रवचन हुए। उनमे युवा सम्मेलन भी हुआ जिसकी अध्यक्षता आचार्य नरेश आर्य ने की। डा० विक्रम विवेकी तथा श्रीमती मोनू शर्मा ने युवकों तथा युवतियों को समाज मे व्याप्त कुरीतियो के विरुद्ध सकल्प लेने का आह्वान किया।

—जयदेव आहूजा, मन्त्री

उत्तर-पूर्वी सीमा पर वैदिक सत्संग

एक सुदूर उत्तरपूर्वी सीमा पर भारतीय वायु सेना की एक युनिट में कुछ आर्य प्रमियों ने साप्ताहिक हवन एवम् सत्सग का दिनाक 18 जुलाई को शुभारम्भ किया। इस हवन एवम् सत्सग मे विश्व शान्ति पर्यावरण की शुद्धि एवम् शराब जैसी सामाजिक कुरीतियो से दूर रहने का प्रचार किया जाता है, उपस्थित सदस्यो को कुसग से बचने एवं स्वामी दयानन्द सरस्वती के बताए हुए मार्ग पर चलने पर जोर दिया जाता है, हवन सामग्री एवम् शुद्ध देसी घी न मिलने जैसी कठिनाइयों के बावजूद हवन हर रविवार को किया जाता है। आर्य प्रेमियो की सख्या बढती जा रही है। आशा है शीघ्र ही आर्यसमाज की स्थापना हो जाएगी।

यह साप्ताहिक हवन श्री जगमालसिंह यादव की अध्यक्षता मे आयोजित होता है। श्री जगमालसिंह यादव आर्यसमाज रसूलपुर जिला महेद्रगढ के कर्मठ कार्यकर्त्ता एवम् मार्गदर्शक हैं।

हरयाणा के आर्यसमाज के अधिकारियों से निवेदन

सभा के चुनाव मे भाग लेने के लिए प्रतिनिधि भेजें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (पजीकृत) का आगामी अधिवेशन (चुनाव) दिनांक 19 दिसम्बर 93 को होना निश्चित हुआ है। अत सभा से सम्बन्धित आर्यसमाज के अधिकारियों से पुन निवेदन है कि वे आर्यसमाज के नियम उपनियमो के अनुसार अपनी साधारण सभा करके सभा के लिए प्रतिनिधि चुनकर सभा द्वारा पूर्व भेजे प्रतिनिधि फार्म को भरकर 30 नवम्बर 93 तक सभा के कार्यालय दयानद मठ रोहतक मे अवश्य भेज देवें, जिससे फार्मों की जाच-पडताल करके प्रतिनिधि स्वीकार करके उनकी सेवा मे अधिवेशन का एजेण्डा आदि समय पर भेजा जावे। यदि किसी को प्रतिनिधि फार्म न मिल सके हों तो वे सभा से पत्र-व्यवहार अथवा सम्पर्क करके तुरन्त मगवा लेवें।

—सभामन्त्री

ब्रह्मचर्य का महत्त्व

वेदशास्त्र का कहना ।
तुम ब्रह्मचर्य मे रहना ।।
जिन पर रग कुसंग का है, गन्दे गीत गाते हैं,
सदाचार की शिक्षा, ठहाके मे उडाते हैं।
तन-मन-धन-को मद्य, धूम्रपान से जलाते हैं,
ऐसे जन ब्रह्मचर्य से वचित रह जाते हैं।।
ब्रह्मचर्य को समझो भाई ।
सब रोगो की एक दवाई ।।
वेद अध्ययन करना ब्रह्मचर्य है,
ज्ञान उपार्जन करना ब्रह्मचर्य है ।
ईश्वर चिन्तन करना ब्रह्मचर्य है,
वीर्य की रक्षा करना ब्रह्मचर्य है ।।
बाकी सब बातें झूठी ।
ब्रह्मचर्य अमृत बूटी ।।
रखो तेल दीये के अन्दर, दीपक यदि जलाना है ।
पालन करो ब्रह्मचर्य का करके कुछ दिखलाना है ।
ब्रह्मचर्य से हो भव पार ।
ब्रह्मचर्य जीवन आधार ।।
देव असुर संग्राम हमेशा, जग मे चलते रहते हैं,
असुरो को ब्रह्मचर्य से ही, देव विजय कर लेते हैं ।
प्रचार करें और करवायें ।
वैदिक शिक्षा को फैलायें ।।

—महेश शर्मा, दयानन्द ब्राह्म,
महाविद्यालय हिसार

आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव कार्यक्रम

स्थान	: आर्यसमाज मन्दिर, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली—११०००१
यजुर्वेद पारायण यज्ञ	: सोमवार, २९ नवम्बर से रविवार, ५ दिसम्बर १९९३ तक । प्रात ७-०० से ८-३० बजे तक । ब्रह्मा—वैदिक विद्वान् डा० प्रेमचन्द 'श्रीधर'
वेद प्रवचन	: सोमवार, २९ नवम्बर से ४ दिसम्बर १९९३ तक
संगीत	रात्रि ६ बजे से ७ बजे तक द्वारा श्री वेदव्यास
प्रवचन	: रात्रि ७ बजे से ८ बजे तक द्वारा वैदिक विद्वान् डॉ० प्रेमचन्द 'श्रीधर' ।
महिला सम्मेलन	' शुक्रवार, ३ दिसम्बर १९९३, मध्याह्न ११ बजे से साय ५ बजे तक ।
लाला रामलाल सहदेव भाषण प्रतियोगिता	शनिवार, ४ दिसम्बर, १९९३ प्रात' १० बजे से १ बजे तक । इसमें सीनियर सेकेण्डरी स्कूलों तथा गुरुकुलों के छात्र/छात्राए भाग लेगे । प्रथम, द्वितीय एव तृतीय आने वाले प्रतियोगियों को नकद व आकर्षक साहित्य उपहार श्री रतनलाल सहदेव द्वारा भेंट किए जाएगे ।
स्वास्थ्य सम्मेलन	: शनिवार, ४ दिसम्बर, १९९३, मध्याह्न २ बजे से ५ बजे तक ।
पूर्णाहुति	यजुर्वेद पारायण यज्ञ, रविवार, ५ दिसम्बर १९९३, प्रात ७ बजे से ९ बजे तक । ब्रह्मा—वैदिक विद्वान् डॉ प्रेमचन्द 'श्रीधर'
संस्कृति रक्षा सम्मेलन	रविवार, ५ दिसम्बर, १९९३, प्रातः १० बजे से १-३० बजे तक ।
ऋषि लगर	रविवार, ५ दिसम्बर, १९९३ मध्याह्न १-३० बजे से २-३० बजे तक ।

वेदव्रत शर्मा
मन्त्री, आर्यसमाज, हनुमान् रोड

हिंदी की रक्षा—राष्ट्र की सुरक्षा

हर राष्ट्र मे स्वदेश प्रेम, राष्ट्रीय एकता व अखण्डता और आपसी सद्भाव व सौहार्द के लिए राष्ट्रभाषा की अहम् भूमिका होती है। इतिहास साक्षी है कि राष्ट्र की आजादी में सबसे अहम् भूमिका हिंदी की रही है पर आजादी के बाद से राजनैतिक स्वार्थों व सत्तालोलुपता के कारण हिंदी भाषा को ब्रह्मास्त्र के रूप मे प्रयोग किया जा रहा है। हिंदी भाषा व हिन्दी भाषी राज्यो के लोगो के बारे में गैर हिन्दी भाषी राज्यो के लोगो के बीच गलत धारणाए पैदा की जा रही है। इन दिनो अमेरिका की आँख रूस की प्रभुसत्ता को विखडित कर भारत पर टिकी हुई है।

वह अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए भारत मे मतभेद व कलह पैदा करने के लिए तरह-तरह की योजनाए बना रहा है, जिनमें सर्वाधिक खतरनाक व दुर्भावनापूर्ण योजना भारतवासियों को भाषा के आधार पर लडवाना और उन्हे भारत की प्रभुसत्ता से अलग करना है आज हमें भारत की एकता व अखण्डता को कायम रखने के लिए केवल एक आपसी योजक भाषा की जरूरत है, जो केवल हिंदी ही हो सकती है। इसके लिए हमे सजगता, सतर्कता, जागरूकता, बौद्धिकता, शांति, समर्पण व सबल की जरूरत है ।

इसलिए राष्ट्रहित मे हिन्दी के विकास के लिए राजनैतिक स्वार्थ-परक षड्यन्त्रों से परे हटकर भारत के सभी राज्यो व संघशासित प्रदेशों में प्रथम भाषा के रूप मे क्षेत्रीय भाषा के साथ-साथ दूसरी भाषा के रूप में हिन्दी का शिक्षण स्नातक स्तर तक अनिवार्य रूप से करने और केन्द्र व सभी राज्य सरकारों की नौकरियो में हिंदी का ज्ञान अपरिहार्य करने के लिए केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा ठोस कदम उठाए जाए ।

(साभार—जनसत्ता)

वैदिक यति मण्डल की सूचना

सभी सन्यासी, वानप्रस्थी तथा ब्रह्मचारियों से निवेदन है कि २७, २८, २९ नवम्बर ९३ को ऋषि उद्यान अजमेर में वैदिक यति मण्डल का सम्मेलन तथा बैठक होगी । वहां सभी पहुंचने का कष्ट करें ।

भवदीय
मन्त्री

सम्पादक के नाम पत्र

संग्रहणीय-विशेषांक

सभा के मुख पत्र 'सर्वहितकारी' का "ऋषि निर्माण विशेषांक" प्राप्त हुआ। वास्तव में यह अंक काफी सुन्दर एवं आकर्षक था। इसमें सभी लेख काफी शिक्षाप्रद एव प्रेरणादायक थे ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा आर्यसमाज के सम्बन्ध मे ढेर सारी सामग्री पढने को मिली । इस पत्र का आर्यजगत् की तमाम पत्र-पत्रिकाओं में अपना विशिष्ट स्थान है। इसके सभी विशेषांकों की बडी धूम रहती है। यह भी अपनी उसी शान के अनुरूप निकला है ।

आशा है आप पाठकों को समय-समय पर ऐसे विशेषांक देते रहेंगे विशेषांक की सफलता के लिए बधाई । —रामकुमार आर्य

शोक प्रस्ताव

विशेषांक में सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह क्रांतिकारी के सुपुत्र श्री सुरेन्द्रसिंह आर्य के निधन का समाचार पढ़कर मुझे बडा आघात लगा। ईश्वर उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति दे ।

—रामकुमार आर्य
वाटर सप्लाई वर्क्स कोठी चौहान
पो० बहालगढ़ (सोनीपत) हरयाणा

वेदोपदेश

उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम्।
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं, दृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र॥

भजन (व्याख्या)

मन-वाणी और कर्म शुद्ध कर, प्रभु गुण गाना चाहिए।
अपना जीवन वेदों के अनुकूल बनाना चाहिए ॥ टेक ॥

उल्लू की दो चाल छोड जो अन्धकार को चाहवे।
पर धन, पर सम्पत्ति पर सदा टेढी नजर लखावे॥
नहीं ज्ञान की बातें सुनकर जीवन में अपनावे।
सत्पथ को दे छोड सदा, दुष्कर्मों में मन लावे॥
अच्छी बातें सुनकर जीवन में अपनाना चाहिए॥ १॥

सदा भेडिया ईर्ष्यालु, होकर औरो से जलता।
वही बोल दे धावा देखे, जहां कही निर्बलता॥
औरों का नुकसान करन नै, हरदम रहे मचलता।
बिना क्रूरता कभी भी उसका, काम नही है चलता॥
बिना बात के द्वेषभाव को, नही बढाना चाहिए॥ २॥

रोटी का टुकडा जो दे दे उसके तलवे चाटे।
बने नही भाईचारे से, नही प्रेम से बाटे॥
इसी तरह जो मानव अपना श्वान भाव ना डाटे।
कभी नही सुख पा सकता वो रो-रो जीवन काटे।
परमेश्वर नै दिया है सब कुछ बाट के खाना चाहिए॥ ३॥

चिडा हमेशा कामवासना मे अन्धा रहता है।
अति काम है, त्याज्य हमेशा, वेद हमे कहता है॥
कामवासना आग है मानव जो इसमे दहता है।
मर्यादा से हीन रहै, दु:खसागर मे बहता है॥
सयम को कर धारण इससे लाभ उठाना चाहिए ॥ ४॥

जिसने इस जग के जीवन की नश्वरता पहचानी।
नहीं गरुड सम हो सकता है, वह व्यक्ति अभिमानी॥
नहीं रहे यहा राम-कृष्ण से महाराजा लासानी।
फिर अभिमान भला तू कैसा करता है अज्ञानी।
तजकर के अभिमान पाप, नित ज्ञान बढाना चाहिए॥ ५॥

छठा दोष है लालच का जो सबको है दु:खदाई।
लालच मे फसकर के मानव करता बहुत बुराई॥
इस लालच के कारण भाई का दुश्मन है भाई।
सदा गिद्ध को हर वस्तु मे देता मास दिखाई॥
कहे 'सहदेव' सदा मेहनत से कमा के खाना चाहिए॥ ६॥

—सहदेव शास्त्री, आदर्श नगर, जीन्द-१२६१०२

दयानन्द ने विचारों में क्रांति पैदा की

महर्षिदयानन्दनिर्वाण दिवस पर सभा

कानपुर (गुरुवार) आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक विचारो मे क्राति पैदा की। दयानन्द के आगमन से पूर्व धर्म मे तर्क का कोई स्थान न था, वहा तक बुद्धि के उपयोग करने की मनाई थी। परन्तु दयानन्द ने इसका विरोध किया। यह विचार आर्यसमाजी नेता श्री देवीदास आर्य ने महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस पर आर्य कन्या इण्टर कालेज गोविन्दनगढ कानपुर मे आयोजित सभा में अध्यक्षता करते हुए प्रकट किए।

सभा मे कालेज की छात्राओ ने अपने गीतो तथा भाषणो से श्रद्धाजलि अर्पित की, सभा मे सर्वश्री बालगोविन्द आय, दीवानचन्द खन्ना, श्रीमती बसन्त कुमारी मिश्रा आदि ने भी अपने विचार प्रकट किए। सभा का सचालन श्रीमती राजजीतपाल ने किया। निर्वाण दिवस पर निर्धन छात्राओं मे स्कूल यूनीफार्म एव स्वेटर कालेज के संस्थापक/प्रबन्धक श्री देवीदास आर्य द्वारा वितरित किये गये।

—आर्य कन्या इण्टर कालेज, गोविन्द नगर, कानपुर

नैतिक शिक्षा की परिभाषा का अपमान

"मुख्यमन्त्री आदरणीय चौ० भजनलाल जी ने भारतीय-संस्कृति के महान् सिद्धांतों के प्रचार एवं विकास के लिए शिक्षा संस्थाओं में नैतिक शिक्षा पर बल दिया है ताकि विद्यार्थियो मे ऊचे आदर्श एव श्रेष्ठतम गुण विकसित हों।"

मैं आदरणीय भजन जी से पूछता हू कि इन वाक्यों से वास्तव मे आधुनिक विद्यार्थी के आदर्श गुण होगे? शतपथ ब्राह्मण का वचन है कि उपदेश देने से स्वय उपदेश पर चलना अच्छा है। जब आप किसी कक्षा के विद्यार्थी थे और विद्या ग्रहण करते थे क्या उस समय कोई आप जैसा विद्वान् हरयाणा पर राज करता था या नहीं? जो नाममात्र नैतिक शिक्षा की परिभाषा अंकित कर सके। मेरे विचार से हमारे हरयाणा मे शिक्षा का प्रचार बहुत तेजो से बढ रहा है। इसका उदाहरण निम्नलिखित है—मैं एक प्राइवेट स्कूल में कुछ दिनों के लिए सहायता हेतु गया। वहा एक गरीब वृद्ध व्यक्ति आया। उसकी दशा दयनीय थी। फटे-पुराने वस्त्र पहने हुए था। इस व्यक्ति ने बताया कि मेरा लड़का आपके स्कूल मे पढना चाहता है कृपया इसे इस विद्यालय मे दाखिला दे दो।

मैंने कहा—पिता जी, आप बैठ जाइये और बताओ कि आपका लडका पहले कहा पढता था। उन्होंने प्रमाण-पत्र थमाते हुए कहा कि इस बच्चे के दो गुणों को ध्यान में रखते हुए दाखिला देना। पहला तो यह है कि यह विद्यार्थी आज तक असफल नहीं रहा। निरतर चौथी कक्षा तक सफल होता रहा। मगर दूसरा गुण यह है कि इस विद्यार्थी को पहली कक्षा का कायदा भी पढना नहीं आता। अब आप सोच लो इस सरकारी स्कूल के बिगडे हुए विद्यार्थी को कहा सैट करोगे।

मे मन हो मन कुढता रहा। क्या होगा इस देश का भविष्य? जो लिखित रूप मे यह देते हैं कि शिक्षा के साथ नैतिक शिक्षा अनिवार्य है। लेकिन मैं यह सलाह देता हू कि पहले शिक्षा का तरीका सुनियोजित एवम् सुचारू रूप से करे। शराबी व नशेडी अध्यापको को डण्डे मारकर विद्यालयो से भगा दें। बीडी-सिगरेट पीनेवाले अध्यापको को जूते या चप्पल मारकर स्कूलो से निष्कासित कर दे ताकि नैतिक शिक्षा का सच्चा स्वरूप और शाश्वत नियम साकार हो सके।

महात्मा गाधी के जन्म दिवस पर शिक्षा सस्थाओं में महात्मा गाधी जी द्वारा दिए गये उपदेशो से विद्यार्थियो को परिचित करवाया जाता है। जैसे शराब जैसी बुराइयो से बचना चाहिए ताकि बच्चे यह बाते मन मे गाठ बाध ले और भविष्य मे इस सामाजिक कुरीति से बच सकें और भ्रष्टाचारी सरकार का भी विरोध कर सकें। शराबी सरकारी कर्मचारियो के छक्के छुडवा सकें और स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, आचार्य प्रेमभिक्षु व अन्य विद्वानो द्वारा अपनी विद्वत्ता से लिखी पुस्तको को नैतिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में लगवा दें और सामाजिक बुराई को खत्म करने से पहले अपने अवगुणों को गुणों में चक्रवृद्धि रूप से अतिशीघ्र बदलें। महात्मा गाधी, स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, सरदार बल्लभ भाई पटेल आदि महापुरुषों की जीवनी का पाठ्यक्रम के साथ साथ सरकार उनके उपदेशों पर चले ताकि उनके सपने साकार हो सकें।

—श्रीकृष्ण दहिया, आर्य विद्या मन्दिर
अमीपुर, फरीदाबाद

रुकिये—शराब के सेवन से परिवार की बर्बादी होती है। अतः अपने निकट के शराब ठेकों पर अपने साथियो सहित धरणे पर बैठकर शराबबन्दी लागू करावें।

वेद का पाठ पढ़ाया दयानन्द ने

वेद का पाठ पाया दयानन्द से।
महर्षि दयानन्द से, योगी दयानंद से ॥

१- सत्यार्थप्रकाश लिखाया
लोगों को व्यवहार सिखाया
हवन का लाभ बताया दयानन्द ने
वेद का पाठ ... —

२- नारी को जुल्मों से बचाया
शूद्र का सही अर्थ बताया
दलितों का उठाया दयानन्द ने
वेद का पाठ

३- देश-प्रेम की बात सिखाई
पराधीनता बुरी बताई
स्वर्ग-धन ठुकराया दयानन्द ने
वेद का पाठ ...

४- पाखडियों को दिया ललकारा
उनसे कभी ना वह घबराया
अविद्या को मिटाया दयानन्द ने
वेद का पाठ

५- खाई ईंट, पत्थर और रोड़े
गए प्राण लगे जहर मरोड़े
स्व-कातिल को बचाया दयानन्द ने
वेद का पाठ .....

६- सारे विश्व को आर्य बनालो
शान्ति के सुखधाम बनालो
घर-घर नाद बजाया दयानन्द ने
वेद का पाठ -

प्रेषक : बनीसिंह जांगड़ा
खनक पूनिया, हिसार-१२५००१।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकरी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, गोहाना रोड, रोहतक से प्रकाशित।